ISSN 2229-547X

विदेह सदेह -२०

विदेह-सदेह २०, विदेह www.videha.co.in/ पेटार (अंक २१७-२५०) सँ,
मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- अद्यतन। सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अद्यतन। सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com के मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॊयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

मूल्य : भा. रु. ३०००/- संस्करण: २०१८, २०२२

Videha Sadeha 20: A Collection of Maithili Prose and Verse (source:Videha e-journal issues 217-250 at www.videha.co.in).

अनुकम

गद-िण (पृ १-६७२)

गजेह्र ठाकुर- मैथ्यली सी.डी. एल्बम, मैथ्यलीमे बाल सी.डी अल्बमक सरथ्या अभार (पृ. २-७)

ध्द्दनेि यादर- नेपाल मे“मैथ्यली गीत-संगीतक अरस्था” (८-१५)

पदीप पुष्प- ध्सनेक्ष्या: जगा क’ टीस हृदयमे केहेन कठोर भेलौ (पृ. १६-१९)

योगेह्र पाठक ‘ध्रयोगी’- रह्दनाक स्रर प (पृ. २०-२३)

चंरेि- अध्रपन (पृ. २४-२९)

इरा मध्क्लक- िरदा ध्सह्लाजीक "ध्रराह गीत" (पृ. ३०-३४)

मनीष झा ’बौआभाइ’’- रतमान मैथ्यली गीत-संगीत हमरा नजध्रसँ (पृ. ३५-३९)

रध्र भूषर पाठक- औझका डायरी (पृ. ४०-४२)

डॉ. कैलाि कुमार ि्ार- मैथिली लोक गीत मे पोफेसर चण्डेशर झा केर सी. डी./डी. री. केर पयोग, पितत्यक्ता आ पतिस्थिता: शिथिलाक सह्दभणमे (पिचचा), गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनाि: म्िरररी कथा केर दंद?, लघुकथा- पुरषक नि्ि िशासे, मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई केर रेदना, लोक रेद आ व्यरहारक पाबिि म्िररी मानरािर्ीय िरेचन, मैथिली जोग गीत मे पेम आ तंि केर पभार, तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति, मैथिलानी पर िमिणक अधिकारी के?, महाराजा पंि्िबा: मिपुर केर ग़रीब नबाज (पृ. ४३-१५८)

जगदीि चंर ठाकुर ’अिल’- महाकवि चह्दा झा कृत रामायरक सुह्दरकाण्डक एलबम (पृ. १५९-१६०)

रह्दना अरस्थी दुबे- (रह्दना अरस्थी दुबेजीक िह्दी कथा- अनुराद आिीष अनिह्हार दारा)- (पृ. १६१-१६४)

आिीष अनिह्हार- पो. हिमोहन झाजीक गजल, भाषा केर मनोिजान (तीन टा िंदु), शिथिला स्टूडेट यूनियनक काज पर िपोटण "कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पि्िल उपस्थिति नै अछि (प्. १६५-१९३)

नह्द धलास राय- हमर लॉटरी धाकलल, धि ाक अधक्तम उदेश्य, कठही साइधकल, हमर पतीक मनोरथ, चधर र ककाक बलडपेसर (पृ. १९४-२३२)

रबीन्द्र नारायर धार- यूरोप या ा, अमृतसर या ा, पधल नौकरी, एकसध, असगुन, धा रा धराह, आगा के देखलक अधछ?, नरका पोखैर, इच्छा प , धार अनह्तपुरम, कानूनी आतंकराद (भारतीय दण्ड संधता ारा- ४९८ 'ए', IPC 498 'A'), आजादक अहत्येध , मकर संकाधत, राची चाध दसक बाद, गामक बात, धह्दू मधलाके सम्पैतमे अधकार, रधष नागधक, संगम तीरे, बाल्यकाल, को (पृ. २३३-४५१)

बी.एन. लाल दास- धचडी राली भौजी (पृ. ४५२-४५४)

डॉ. ध र कुमार पसाद- दधत साधत्यके आन साधत्यसँ फुटकेबाक पयोजन (पृ. ४५५-४५९)

ओम पका झा- धहध कथा- धछोहक नोर (पृ. ४६०-४६०)

राजदेर मण्डल- बीहैन कथा (धतधया चोट, छोटकू दोस) (पृ. ४६१-४६४)

सुकेि साहनी- (पख्यात ब्हिन्दी लघुकथाकार री सुकेि साहनीक चयब्यत आ पुरस्कृत लघुकथा "ठंढी रजाइ" क मैथ्यली र पाह्तरर - मुना जी दारा) (पृ. ४६५-४६६)

मुना जी- बीहब्म कथा (बािन, फसाद!, ब्मारहता, हुक्रा) (पृ. ४६७-४७०)

जराहर लाल कशब्यप- बीहब्म कथा- कुकुर (पृ. ४७१-४७१)

अब्दुर रज्जाक- ब्बाहैन कथा (पृ. ४७२-४७३)

बृषेि चह्र लाल- बुब्धिचौ (पृ. ४७४-४७५)

ब्माब्यलेि कुमार ब्सह्हा- बीहब्म कथा (चुप्पी, आजादी, माया) (पृ. ४७६- ४८२)

ध्रिरिंकिर- कंबल (पृ. ४८३-४८४)

कब्मलेशर राउत- चाहबला, गामे बीरान भऽ गेल, तीलके तार, एक चुनौटी तमाकुल, आब कब्छया चेतब, ब्रघटनकारी तत्त्र (पृ. ४७५-५१३)

नारायर यादर- चौदह नम्बर कोटए चौरचनक बरतन, छोटकी पुतोहु, गोबर ब्बाछनी (प्. ५१४-५४३)

राजेि रमा "भराद्धत्य"- बीहध्न कथा (सोगर), बीहध्न लेख (रैध्रि ष य) (पृ. ५४४-५४५)

परर झा- सदाचार क तारीज (मैध्यली लघु नाध्टका), राजा खानदान (संस्मरर), फेसबुक केऽर चकर, चकफास, अरजल जमीन, रध्रिता, सुखैत पोखैर प्यासल गाम (पृ. ५४६-६०३)

कल्पना झा- बीहध्न कथा (ध्नारध्ान, ध्नार र र) (पृ. ६०४-६०४)

अध्नलाष ठाकुर- बीहध्न कथा (साठ गाठ, नोटबध्दी) (पृ. ६०५-६०५)

डॉ. रीरा करण मैध्यलीक िरोहर 'सीता-िील' (खडगबल्लभ दास 'स्वरजन' जीक 'सीता-िील' मैध्यली काव्यक साध्हध्त्यक ध्वरेचना) (पृ. ६०६-६१७)

उमेि मण्डल- 'सगर राध्त दीप जरय'क ९३म आ ९४ म आयोजन, ध्माध्यलाक लोक संगीत/ लोक कला- भगैत गबैया (पृ. ६१८-६४३)

बेचन ठाकुर- दूटा एकाकी (नीिा मुध्क्त आ बरहम बाबा) (पृ. ६४४-६७२)

पद- खण्ड (पृ.६७३-१०४७)

जगदीि चह्र ठाकुर 'अिनल'- पेम-चालीसा, िकछु गजल (पृ. ६७४-७११)

आिीष अनिचह्हार- िकछु जोगीरा, किवता- फेर, रुबाइ, बाल गजल, िकछु गजल (पृ. ७१२-७४३)

अिोक कुमार सहनी- गजल (पृ. ७४४-७४४)

डा. िजयाउर रहमान जाफरी- मुक्तक, आजाद गजल (पृ. ७४५-७४६)

डॉ० ििििर कुमर "िवदेह"- ६ टा किवता, १४ टा बाल किवता, िकछु सििा बाल किवता, ४ टा किवता (बाबू साहेब चौिरी, मैिथली दििा, कुहेस, गीत) (पृ. ७४७-८३४)

बाबा बैदनाथ- आजाद गजल (पृ. ८३५-८३६)

परुर झा- जन-पिािाधि, राईत इजोिरया ताइक रहल अिछ (पृ. ८३७-८४०)

रतन कुमार लाल दास- कोईली बाजी रहल अई (पृ. ८४१-८४१)

पदीप पुष्प- किछु रैलेटाइन स्पोलि... गजल, किछु गजल (पृ. ८४२-८४६)

बृषेि चन्द्र लाल- तप ?! (पृ. ८४७-८४८)

मुनी कामत- बाल कविता (जतरा, अंकक मेल, बिज्ञान) (पृ. ८४९-८५२)

राजेि मोहन झा 'गुंजन'- धीर भजन, ममताक अनुभूति (जूडिीतल पर बिषि), सरस्वती रंदना, रसंत गीत (िनि:- सूर्य याना), िनि र प आ गुर (दहेजक पसाही), काव्य गेल जुटी (हास्य रस) (पृ. ८५३-८६०)

राजीर रंजन झा- फगुआ (मुक्तक), जोगीरा, किछु गजल (पृ. ८६१-८७६)

महेि डखरामी- महेि पदारली- अनुरोि (पृ. ८७७-८७८)

ओम पकाि झा- गजल (पृ. ८७९-८७९)

सत्यनारायर झा- मोनक गीत (पृ. ८८०-८८१)

गुफरान जीलानी- झमटबा गाछ (पृ. ८८२-८८२)

अमरनाथ धार- जुडिीतल-गीत (पृ. ८८३-८८३)

रश्मि ध्करर झा-किछु हाइकू (पृ. ८८४-८८४)

राम विलास साहु- किछु कविता (पृ. ८८५-९४०)

डॉ. कैलाश कुमार ध्धार- गामक कचोट (पृ. ९४१-९४२)

राजेश रमा 'भराध्धात्य'- नरगीत (पृ. ९४३-९४३)

बृषेश चन्द्र लाल- ३ टा बालगीत (पृ. ९४४-९४६)

कमलेश पमेन्द्र- जरल कपार (पृ. ९४७-९४८)

अध्धाकेश कुमार ध्धार- सुतार, ध्धाध्धालाक आह, मौध्धायाहा नैइतन, ध्धल्ली (पृ. ९४९-९५३)

कुमार रवि- रषा मेघक संग एलैय (पृ. ९५४-९५५)

नीलमाणि चौधरी- ५६ टा कविता (पस्तुति- आशीष अनचिन्हार) (पृ. ९५६-१०४७)

गद्य खण्ड

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली सी.डी. एल्बम

मैथिलीक किछु सी.डी. अल्बमक लिस्ट पस्तुत अछि।

गुणक दृष्टिकोणसँ जागे महतो आ जागे राउत क संग बिरासी सदा बेछप छथि। धनीराम महतोक सलेश आदिक दरभंगा रेडियो स्टेशनपर रसास्वादन केनिहार के ओ मोन पड़ि जेता। आब धनीराम महत दरभंगा रेडियो स्टेशनपरसेहो अनुपलब्ध छथि, दरभंगा रेडियो स्टेशन अपन आकाइवसँ हुनका किआ कालत तहूपर संदेह अछि।

मिथिलाक लोकसंगीतक अल्बमक एकटा छोट सूची पस्तुत अछि।

धनीराम महतो (सलेश आदि दरभंगा रेडियो स्टेशन- आब अनुपलब्ध- दरभंगा रेडियो स्टेशन अपन आकाइवसँ एकरा किआ कालत तहूपर संदेह)

कातिक झूमर- जागे महतो आ जागे राउत (गंगा कैसेटस)

सोखा झूमर- जागे महतो आ जागे राउत (टी सीरीज)

https://youtu.be/p-LQS2ZHJ9o?list=PLTwW4p11kfqqUeI442nSqvoKWQ5aFs9bo

https://youtu.be/gZsK3ZwXpYA

https://youtu.be/Vmmighmi3hk

https://youtu.be/sYT5iTsC3a4

गोविन्द झूमर- जागे महतो आ जागे राउत (गंगा कैसेटस)

गहील माता के पूजा- बिरासी सदा (गंगा कैसेटस)

काली माइ के पूजा- बिरासी सदा (गंगा कैसेटस)

भुइंया बाबा के पूजा- बिरासी सदा (गंगा कैसेटस)

गंगा माइ के पूजा- बौरासी सदा (गंगा कैसेटस)

भुइया बाबा -भगैत पसंग- रमाकान्त पथ्मयार (गंगा कैसेटस)

बाबा बखतौर भुइया बाबा- सकलदेव दास आ सािी (सुपीम वीथ्डयो)

भक्त ज्योथ्म (भगैत पसंग)- रंजीत पथ्मयार (नीलम वी.सी.डी.)

बैताली यादव- तपेशर यादव आ कामेशर यादव (गंगा कैसेटस)

कुँवर बृजवान- (गंगा कैसेटस) [गीत मैथ्िली संवाद थ्हन्दी]

भुखना-भुखनी- राम खेलावन महतो, नेिल मण्डल, महीन्दर यादव, राम असेशर दास, हेमू मुथ्खया आ थ्बल्टु मुथ्खया [गीत मैथ्िली संवाद मैथ्िली]

रेशमा चूहथ्मल- रामवृक ठाकुर एण्ड पाटी (गंगा कैसेटस) [गीत मैथ्िली संवाद मैथ्िली आ थ्हन्दी]

राजा सलेश- थ्वदेथ्शया नाच पाटी, देवेन्र साहनी आ पाटी (गंगा कैसेटस) [गीत मैथ्िली संवाद थ्हन्दी]

आलाथ्रदल झगर बध- - थ्वदेथ्शया नाच पाटी, देवेन्र साहनी आ पाटी (गंगा कैसेटस) [गीत मैथ्िली संवाद थ्हन्दी]

संत बाबा कर थ्खरहरी- थ्रदल पथ्मयार (जयशी कैसेटस) [गीत मैथ्िली आ थ्हन्दी संवाद थ्हन्दी]

मैथिलीमे बाल सी.डी अल्बमक सर्वथा अभाव

मैथिलीमे बाल सी.डी अल्बमक सर्वथा अभाव अछि। तैयो एकटा छोट संकलन श्रोताकक संग पस्तुत अछि।
मैथिली नाटक बुधवार छौडा आ राक्स, २५ नोभेम्बर 2011, रशियन कल्चर सेन्टर, कमल पोखरी , काठमाण्डूमे पस्तुत
लेखन रमेश रंजन
https://youtu.be/lbyItMF9STE
http://maithili-drama.blogspot.in/2011/12/blog-post_27.html
कका हौ हमहू जेबै इस्कूल
https://youtu.be/zikDHR8IXXc (धीरेन्द्र पूजा)
https://youtu.be/rRjJmckzhSg
गुरदेव कामत
https://youtu.be/7ZzEsE8XULc
अंजना इस्सर
https://youtu.be/J2FNIeMdopM
रजनी पल्लवी
https://youtu.be/_wlw2gjFyJQ
https://youtu.be/LSDRp1bmE-w?list=PLE58799CC1970F50F
https://youtu.be/3oL_MGVAm2g?list=PLE58799CC1970F50F
https://youtu.be/BiTT330h9ok?list=PLE58799CC1970F50F

ममता गाबय गीत (मैथिली फिल्म) (सौजन्य: केदार नाथ चौधरी)
mamitohar.mp3 (सुमन कल्याणपुर)
https://youtu.be/CcN4w47e4Fg
https://youtu.be/vDMv-qUVDRg
Arr_Bakri_Geeta_Dutt
Kahu_Rame_Ram_Mahendra_Kapoor
विशक पञ्चल देशभक्त गीत (दूवाक्त मंत , शुक्ल यजुवेद अध्याय २२, मंत २२: साभार आइ.आइ.एस.एच.)Doorvakshat_Mantra.mp3
वणमाला (शुद उच्चारणक लेल: साभार संस्कृत भारती)
AtoGya.mp3
(बालमंडली किशोर-जगत) : गजेन्द्र ठाकुर
GajendraThakurI0.mp3

जानकी एफ.एम.
सामाचकेवा पर विशेष रिपोटव२०१०
https://youtu.be/AmLvMzZrfO8
https://youtu.be/3rAcKjUfijw
चना जोर गरम
https://youtu.be/H1vyD058V3Q
https://youtu.be/QUBS5v1Cufk
https://youtu.be/-H278XhHD6g
https://youtu.be/0UjFakZe4BM
https://youtu.be/_26zQlsDLPU
https://youtu.be/Znmt3F7D98M

https://youtu.be/kldDIcnL25k
https://youtu.be/P7k9CnIaLds
https://youtu.be/230RK3DB5SI
https://youtu.be/GiT6oT4yaac
https://youtu.be/V7g6wcp45RQ
https://youtu.be/Ix6QF3fkNOU
बौआ चान सन (श्रजय/ काजोल)
https://youtu.be/3txJOqUySZw
https://youtu.be/SW4fX6Wigrs

दीक्र भारती
http://youtu.be/pTPYg_4a_II
http://youtu.be/25NmustCBPI
http://youtu.be/k43HnEW-TBk
http://youtu.be/LXhMeEPnqys
गीत-गोश्वन्द्रदास (गायन दीक्र भारती)
http://youtu.be/BJEH6Cy4rNk
http://youtu.be/9Jvupm02uHg
http://youtu.be/Sn3H8yuH9PU
http://youtu.be/EpAvkk9Qa40
http://youtu.be/FNWGQz1evRg
http://youtu.be/D2AxSdv8LyA

मैश्थिली गजल (गजल- गजेन्र ठाकुर, गायन दीक्र भारती)
http://youtu.be/WDcPyKqAKIc

http://youtu.be/weA0vk5-d8g (बहरे मुतकारिब)
http://youtu.be/vma-sniQ8zs
http://youtu.be/b2ti1ASefn4
82 म सगर राति दीप जरए, स्थान- गजेन्द्र ठाकुर जीक आवास, गाम- मेहथ, जिला- मधुबनी। दिनाक- 31 मई 2014 (शनि दिन), समए- संध्या छह बजेसँ। गोष्ठीक नाओं- कथा बौद आद मेहथिपा सगर राति दीप जरए।
आयोजनक खेप- ८२ म आयोजन, संयोजक- गजेन्द्र ठाकुर।
विशेषता- बाल साहित्यपर केन्द्रित।
https://www.youtube.com/watch?v=lnu6pf9e7zY

हमर देवानन्द नाम यौ
https://youtu.be/G2DYX8fouNE
माए कनि दे गै बकरी
https://youtu.be/TtnPyo3tJBA

धनेश यादव

नेपाल मे''मैथिली गीत-संगीतक अवस्था''

१. उठू यौ मैथिल भेलैय भोर,
चुनमुन चिड़ैया करैय शोर,
कोशी कमला अमृत जलधारा,
आलस छोड़ु कहे भुरकुवा तारा .....
 प्रभात ठाकुर

२. हम छी मैथिलबाबु, मेड इन मिथिला...
 सुजे मैथिल

३. चल चल रे अपन देश,
स्वर्गवस सुन्दर अपन मधेश.....
 कालीचरण वैठा

नेपालक मिथिला क्षेत्र गीत-संगीत मे कतेक धनी अछि, तकर पमाण थिकैह यी उपर देल गेल तीन रचना । पहिल गीत मे समग्र मिथिलाबासी के उठबाक आगह अछि, दोसर मे पहिचान आ तेसर मे अपन भूमि के बखान कयल गेल अछि । कोनो आन भाषा-भाषी से ई बेजोड अभिव्यक्ति कथमपि दुबर नए अछि । ऐहन रचना कए हजार स'' भरल पुरल अछि नेपालक मिथिला क्षेत्र । गाम गाम आ जन जन के बोली एही'' मे समटल गेल अछि । त''ईयो मिथिला कुहरी काटबाक बाध्य अछि । एकर कारण बहुतो अए, आ भ'' सकैत छैक ।

 मिथिला क्षेत्र मे 'देवराज' सभहक कमी, 'दैत्यराज' आ 'दानवराज'

सभ बढ़ि गेला के कारण समस्या अछि । 'भगवती' नए 'अगाती' सभ बड बेसी भ'' गेल छथिन, मैथिला क्षेत्र मे । त''ई हरेक क्षेत्र मे सम्मान रखैतौ मैथिला हुकहुकी ल'' रहल अछि। नेपालक मैथिला क्षेत्र मे टका के'' लेल बेसी आ मैथिली गीत-संगीत, साहित्य-संस्कृति आ कला-परम्पराक उनति आ प्रगतिक लेल कम काज भ'' रहल छैक । आजू मैथिलाक जन कोकिलकवि विद्यापति किछु खास वर्ग, जाति आ धर्मविशेषक बैन (तनखाह) कमेबाक माध्यम बनल अछि । व्यापारी सभ एतेक बेसी भ'' गेल अछि जे हुनका सभ के मात बैन चाही, आर किछु नए । एहेन गतिविधि नेपालक मैथिला क्षेत्र मे मात नए, भारतक मैथिला क्षेत्र मे सेहो ओतबे भेटत ।

एतेह विद्यापति के नाम पर करोड टाकाके'' अक्षयकोष खडा सरकार केने छए, मुदा नाताबाद, कृपाबाद, गुटबाद आ जातिबाद के कारण कोष सथापना काले स'' विवाद मे फसल अछि । त''ई आब विद्यापति के नाम पर घोषणा होमेवाला पुरस्कार-पदक मे ग्रहण लागल बुझाएत अछि । पुरस्कार प्राप्त कएनिहार सभ के 'मन कोत' भ'' जाए छथिह, ओ सभ मन स'' पुरस्कार लेबाक अवसर मे नए थिकैह । मैथिला रत, वरिष्ठ गायक एवं संगीतकार गुरदेव कामत एही विषय पर अपनेक प्रतिक्रिया देने छथिछ । ओ कहैत छथिह, 'महाकवि विद्यापति के प्रख्याति आ बेजोड विचारी गायन-गायक क्षेत्र स'' भेल रहैए । गायक सभ हुनक गीत गाबी गाबी के हुनका चर्चा मे अनने रहथिह । हुनक नाम मे सथापना भेल पुरस्कार अखनधरि गायक आ संगीतकार के नय, साहित्यकार आ अनुवादक के मात भेटलइए । ई दुखद बात थिक ।' कामत कहैथि छथिह, 'पा''च विद्या मे ७ वर्षवस प्रदान कयल जा रहल इ पुरस्कार सथापना काल स विवाद मे अछि । हम सभ सक्रिय रप स'' एही क्षेत्र मे वर्षौ स लागल छी , नए भेटल

त नया“ पीर्ाी के इ पुरस्कार भेटनाए मुश्किल अए ।’ विदापश्चा के नाम भजेनाए असल मैथिलापेमी के आब बन्द करै पडत । कम स कम आबो मैथिला गीत-संगीत मे दशको लागत आ सर्थिय लोकक्षिह के खोज्न होबाक पक मे ओ छथि । वक्षष गायक कामत आगा कहैथि छथ्रह जे किछु लोक पोखरी मे जन्मल जलकुम्भी जका बश्चा बसल अछि । कश्चाको हावा बहल त एही महार कात स ओही महार कात चश्चा जाएत अछि । एहा“ दुखद बात अछि । हुनक बात किनको बेजाय लाथा सकैत छथ्रह । मुदा वास्तम मे मैथिला क्षेत्र मे पाछा स“ पैर(खुटा) खिचश्चाहार सभहक कारण मैथिली गीत-संगीत के जतेक पगश्चा होबाक चाही से नए भ रहल अछि । किछु स्वनामधारी ‘कलाकार’ सभ वषौवषवअही क्षेत्र मे लागल लोकक्षिह सभ के छुत जका व्यवहार क“ रहल छथ्रह । एहेन अवस्िा मे बहुतो के मन खिन्न होनाए स्वाभाविक छए ।

एतह के मैथिली गीत-संगीत क्षेत्र मे मुठीभरी लोकश्चाक हालीमुहाली छए, ओ सभ के गश्चब, दश्चर आ कलुश्चत एवं संकीणवमानश्चकताक कारण ‘काटेश्चाङ’ के श्चिश्चा देखबा मे आश्चा गेल अछि । एक दोसर के सम्मान त दुरक बात, पुछोताछो होनाए बश्चलता जका भ गेल छैक । युवा पीथि सभ िसनक लेल अही क्षेत्र के पवेश क“ रहल अछि , व्यवसायिक श्चिस किनको श्चिन्ता नए । सभ के सभ मैथिली भाषाक नाम पर अपन अपन खेश्चा मे लागल अछि । त“ई कोनो लोकश्चशेष बेसी काल धश्च एही मे श्चिकबाक श्चिम्मत नए जुटा पाश्च रहल अछि । अपना के ‘सुपरमेसी’ मानएवला लोकक्षिह सभ के कारण यी क्षेत्र श्चिनानुश्चिन दश्चर, श्चासहाय आ मसोमात आ मुहदुब्बारा के शेणी मे पहु“चल जा रहल अछि । एक कहबी अछि जे अपन श्चाजबा के टका स“ तौलबाक पयास नए होबाक चाही। मुदा ई

बात बुझत के ?

दोसर बात, विवादास्पद व्यक्ति सभ स‘‘ नेपालक मैथिली गीत-संगीत जकरल अछि । त‘‘ई एकर उनि आ पगतिक धरातल कमजोर भ‘‘ गेल छैक । एकेटा मनुस जे ‘जेबिए’ पद मे रही सरकारी सेवा क‘‘ रहल छथि आ गीतकार, संगीतकार, नाटककार, विजापनकार, गायक, पतकार, रेडियोकमी, लेखक, विश्लेषक, अधिकारकमी, अभियानकमी, संस्कृतिकमी, राजनीतिकमी, भाषाकमी, एनजीओकमी.......बनि मिथिलाक के नाम पर बनियाथारी क‘‘ रहल अछि । अतठाम ई कही दिई जे ओ हुनक बहुआयामिक पतिभा भ सकैत छथि , मुदा हुनक ‘सिन्डीकेट पि’ अतठाम बिमल होनाए अति आवश्यक अछि । किएत त हुनक ई ‘दुलभवपतिभा’ मिथिला के गीत-संगीत के क्य विश उन्मुख क रहल छैक । मिथिला के ऐतिहासिक गौरव गािं आ पतिष ा मे आ‘‘च पहु‘‘चा रहल छैक । पचार के लेल पचार मे जुटल लोक सभ ‘अलकत गगरी छलकत जाय’ से उपर नए उठि सकैत छैथि । त‘‘ई आब कम से कम ई बनियाथारीक अन्त्य होमाक चाही । रेडियो मे अपने पसतोता,अपने गायक आ अपने गीत बजोनाए जौ बन्द भ जाए त मिथिला सटथान आ सुहगनगर रप से उपर उठि जाएत ।

नेपालक मिथिला केत्त सप्तरी मे जन्मिहार उदितनारायण झा मैथिली गीत-संगीत स‘‘ बेसी भारत मे हिन्दी गायक के रप मे पसिद्धत अछि । सिरहा के मुरलीधर मैथिलीक धरोहर थिकैह, मैथिली गीत-संगीत मे हुनक योगदान अतुलनीय छैक । मैथिली थिल्म स‘‘ ल‘‘के मिथिला कला-संस्कृति के जगेना मे हुनक जोडा नए । मुदा ओहो मिथिला केत्त मे पिछला समय देखल जा रहल गलत पक्षपाटी स

दुखित छथि । किछु वर्षपहिले काठमाण्डू के एक बेर भेट मे ओ कहने छलाह, 'अपन माटीपानी के मौलिक पहिचान आ बोली जाधरि मिथिलाकमीक जूनुन नए बनत, मैथिली के विकास, पवर्धन, उनति आ पगति असम्भव अए । मिथिला मे नटवरलाल सभ बढि रहल अछि, एकरा रोकबाक पियास पहल जररी भ चुकल अछि ।' एही बेरक विदापति पुरस्कारक लेल हुनकर नाम सेहो पस्ताविस भेल। मुदा जे विदा मे ओ कोनियो काज नए केने रहथि ओई के लेल हुनका पुरस्कार देबाक निर्णय भेल । भाषा अनुवादक लेल हुनक नामक चयन कएल गेल । मुदा मुरलीधर मात एहन मिथिलापुत आ योदा छथि जे लाख टका के ओ पुरस्कार पदान कएनिहार सभ के विरोध केलथि ।

अखनपारक मैथिली गीत-संगीत मे महत्वपूर्ण योगदान कएनिहार मे गुरदेव कामत के नाम सबसे उपर अछि । ओ नेपालक शास्त्रीय संगीतक एक धरोहर थिकैह । मिथिला क्षेत्र के दुर दराज गाम मे जन्म के नेपालक राजधानी मे अखन एक स्थापित कलाकार बनल अछि । बहुतो मिथिलाबासी के ओ अपन शिष्य बना के" मैथिली गीत-संगीतक उत्थान आ पगति के अभियान मे जुट छथि । कामत काठमाण्डू मे गुरकूल संगीत महाविदालय खोली बहुतो के संगीत आ गायन क्षेत्र मे अएबाक लेल निपुण बनबैत पिरित केने अछि । हरेक वर्षआ हरेक कार्यक्रम मे अपन माय के बोली मैथिली मे ओ गीत गेबेटा करैत छथि । तहिना नेपाली गीत-संगीत स" अपना के स्थापित कएनिहार विशेष गायक रामा मण्डल के मैथिली भाषाक गायन मे बड बेसी योगदान अछि । हुनक हमेसा पयास रहैत छैक जे मैथिली गीत-संगीत आगा बढि, मुदा किछु मिथिला अभियान हुनका साथ छुत के व्यवहार करैत छथि । आधा दर्जन स बेसी मैथिली

सीडी-एलबम मे हुनक आबाज लोकप्रिय मात नए संगहणीय छथिह । उपर उल्लेख कयल गेल लोकसिह सभ व्यावसायिक रप स एही क्षेत्र मे लागि अपन मु''हक लेल माड(रोटी) जुटा रहल अछि । अही पार मैथिली गीत-संगीतक शीबृद्धि करबा मे गायक हरिशंकर चौधरी, कमल मण्डल, सन्तोष कुमार, अभास लाभक योगदानक चचा नय केनाए अन्याय होइत । एही क्षेत्र मे नवपवेशी सभ सेहो पंक्तिबद भ टाड अछि । भागवत मण्डल, कैलाश झा, अन्जू यादव, अनजली पटेल, रश्मित शमा, संजय यादव, अरण विजया, तनुजा चौरसिया, वीरेन्द्र झा सनक गायक सभ नेपालक मैथिली गीत-संगीत क्षेत्र मे बेजोड योगदान क रहल अछि । ओना त धिरेन्द्र आ रपा सेहो गायन क्षेत्र मे अए, मुदा हुनक गायन 'स्वपचार' अभियानक कारण मात चचा मे अछि । पुरान लोक होइतो ई दुइ गोटा के गीत-संगीत घर घर के नए बिसा सकल अछि । हेल्लो मिथिला कायक्रम आ हुनक श्रोताह जानल लोकसिह के एफएम बाहेक मे हुनका सभहक गीत नहिए के बराबर बजाओल जाएत छैक ।

अही पारक मैथिली गीत-संगीत के विषय मे चर्चित गीत एवं संगीतकार कमल मण्डल के कहबी अए जे ई क्षेत्र अखिन सन्तोषजन नए छैक। नवपवेशी के पोत्साहन कएनिहार लोकसिह के बड अभाव छैक । गीत-संगीत के नशा लागल लोक सभ कोनो धरानी एही क्षेत्र मे पवेश त करैत छैक मुदा बेसी दिन टिक नए पायब रहल अछि । कारण रेडियो-टेलिभिजनलगायतक के संचार माध्यम मे स्थानीय कलाकार सभ पस्तोता के रप मे रहला स ओ सभ अपन आ चिन्ल लोकसिह के मात स्थान दैत छथि । ओ कहथि छथिह, 'मैथिली भाषा क्षेत्र मे धमाधम रेकर्डिङ स्टुडियो सभ खुइल रहल अछि । एकरा सकारात्मक रपमा ल सकैत छि । अही'' क्षेत्रक भविष्य इजोत

अछि ।

नेपालक मिथिला भूमि मे“ मैथिली साहित्यकार, गीतकारक सेहो कमी नए अछि । हुनका सभक योगदान मिथिलाक अनुपम पु“जि कही सकैत छि । काशिकान्त झा ‘तृषित’, धिरेन्द्र ठाकुर, सागरवीर कडारी, अजूना गुप्ता, शिवजे मैथिल,जेएन झा, कालीचरण वैठा सभ के मैथिली गीत रचनामे अतुलनीय योगदान रहलैए आ अइछे । हुनका सभहक गीत मे जन जन के मनभक आबाज सुनल जाएत छैक । ओना त मैथिली गीतकार मे आन लोक सेहो छैथि । ओही मे पमुख नाम राजेन्द्र विमल, अशोक दत, सुनिल मल्लिक आ धिरेन्द्र पेमषी के ल“ सकैत छि । मुदा ओ सभ मैथिली भाषी के लेल कम सरकारी आ गैरसरकारी संस्था के लेल बड बेसी गीत लिखैत छथि। ‘पैसा दिअ आ तमासा देखु’ बला भूमिका मे अही मे स“कछु गोटा के ल सकैत छि । अही म स एकटा मान्यवर मिथिला क्षेत्र मे रही के नेपाली भाषा-साहित्यक मे योगदान करबाक लेल लाख टका के पुरस्कार सेहो गहण क चुलक अछि । रेडियो मे हुनका सभहक पकड भेला के कारण हुन सभक बजाओल जायत अछि मुदा मैथिलीजन के मन स“ गुनगुनाय के कोटी मे नए रहैत छैक ।

युवा गीतकार धिरेन्द्र ठाकुर मिथिला क्षेत्रक एक संभावनायुक्त आ पतिभाभाशाली हस्ताक्षर अए । हुनक गीत सभ ‘इभर गीन’ आ मन के झक्झोरै बाला कोटी मे रहैत छथि । हुनक कहब अछि जे नव नव गायक सभ के इन्ट्री के बाबजूदो नेपाल मे मैथिली गीत-संगीतक अवस्था सन्तोषजनक नए छैक । किएक त बिना पशिक्षण के ओ सभ अही क्षेत्र मे पवेश कर रहल छथि । विचौलिया सभ स नवपवेशी तंग भरहल अछि, कम पाई मे एलबम आ गीत-संगीत उपलब्ध करा देब कही के ठगि सेहो भ रहल छैक । त“ई नव

शब्द आ गीतक विन्यास मे कमजोरी भेला के कारण अश्लील सब्द सभ सेहो पसरल जा रहल अछि । मैथिली गीत-संगीतक मौलिक टेस्ट आ फ्लेभर मे हिन्दी, भोजपुरी आ अंगेजी भाषा के पभाव सेहो बहुत बढि गेल छैक । त''ई मैथिली गीत-संगीत संक्रमण अवस्था मे छैक ।

ठाकुर आगा कहैथि छथि, 'उपर उठेबाक लेल मिडिया के महत्वपूर्ण हात होयत छैक । मुदा मिडिया मे मैथिली के नाम पर किछु गलत व्यक्ति के पहु''च भेला स'' समस्या मे पडल अछि । व्यक्तिबादी सोच हाबी भेला के कारण अपने गीत-संगीत के पचार मे किछु मनुस लागल रहैत छैक । एफएम और केन्द्रिय रेडियो मे काज कएनिहार सभ 'हमही सबा सेर छी, अउर सभ किछु नए' तेहेन अभियान मे छथि । केन्द्रक ई रोग नेपालक तराई मधेस मे संचालन भ'' रहल रेडियो सभ मे से हो पैसरी गेल अछि, देखल जा रहल अछि । अधिकाश स्थानीय एफएम रेडियोमे ओतएह के गायक सभ पस्तोता भेला के कारण अपन गीत-संगीत बाहेक दोसर के बजेनाए मुनासिब नए मानैत छैक ।' एक मुखी हैकम के कारण मैथिली गीत-संगीत के विकास मे समस्या छैक । त''ई एकरा तोडबाक लेल सबगोटा अगसर हउ ।

पदीप पुष्प

श्मनेश्वया: जगा क' टीस हृदयमे केहेन कठोर भेलौ

मैथिली गीत -संगीतमे कुंज श्वहारी श्मशजी खूब पश्वश्चत नाम छथि।श्वनक बहुतो रास गीत बेस लोकश्यय छश्वह। एतय श्वनक 'श्मनेश्वया' नामक अलबमक गीत-संगीतक समीक्ष कयल जा रहल अश्छ। अलबममे कुल सात गोट गीत संकश्वत अश्छ।गंगा कैसेटसँ श्वकलल एश्व अलबमके गीत-गजलक शेणीमे राखल गेल अश्छ मुदा सब रपे ई गीतक संगह अश्छ गजलक नश्वं। गीतकारक नाओ कभरपर स्पष्ट नश्वं देखबामे आयल। स्वर श्मश्थिला रत कुंज श्वहारी श्मशाक छश्वह।गीतक िम श्वसाबे चचा करब बेसी नीक हैत-

१) गोरी सजना श्मनेश्वया जगा त' श्वय- कैसेटक पश्वल गीत हेबाक कारणे ई खूब झमकौआ मैथिली गीत अश्छ।कुंज श्वहारीजी एश्वमे पेम आ श्वंगार रसमे ओत -पोत भाव पकट केने छथि।गायकीमे हुनक जे अपन खास स्टाइल छश्वह तकर नीक उपयोग केने छथि।गीतक शब्द शुरमे सामान्य जनक लेल आसान अश्छ मुदा अंतरामे ई कहब जे' अहा आभा बनल छी श्वाश्वर जालमे,रश्वम सूयक अपन ई देखा त' श्वय' कने कश्वन भ' गेल अश्छ।सायीक श्वसाबे कने मुश्वकल लगैत अश्छ ।संगीत सामान्य लोकगीत स्तरक अश्छ।की बोडवआ िलकसँ रेकडवगीतमे कोनो वाद सजीव बजाओल नश्वं गेल अश्छ। जेना श्मशाजीक गायन अश्छ ताश्व तरहक संगीतक श्वमाण नश्वं कयल गेल अश्छ। हँ, झमकौआ जरर लगैए।

२)सभक पाहुन शरीा लगौलश्वह-मूलत: ई हास्य गीत अश्छ। श्मश्थिलाक परम्परा रहल अश्छ पाहुन संग हास- पश्वहासक।गीतक उदेश्य मात मनोरंजन अश्छ।गीतक सायी आ अंतरामे समान मीटर

राखल गेल अछि।मजकेँ ओकरा गीत हेबा कारणे हाय हाय कहब कने बेसी आनंद दैत अछि।गीतकार हास्यक उत्पत्तिमे कने बेसी अगुता गेल छथि ते शुरमे त ठीक मुदा ई कहब 'सभक पाहुन ......हाइट लेबल थयेलछि,गीन लेबल थयेलछि,सिगरेट थयेलछि,हमर पाहुन एगो बीड़ी थयेलछि' आन अंतराक अपेक्षा ओतेक पभावी नहि लगैत अछि।
३) एक अलोसाया जे मुस्कीकया देखायै-ई बहुत पुरान गीत अछि। बहुतोक लेल गजल कहाओत मुदा गजल नइ अछि, गजलनुमा कहि सकैत छी। ई रोमाससँ सराबोर पेमीक उदगार अछि।कुंज बिहारीजीक गायन नीक अछि। सङ्गीयीक पक्षल पातीमे गायक वेरायटी देबाक नीक पयास केने छथि जाहिसँ हेमकातजीक गाओल यैह गीतसँ छूट लागए मुदा आगू फिर वैह भास आबि जाइत अछि।आलाप गुलाम अलीक पसिद्द 'वो कैसी पागल लड़की थी' सँ मिलैत जुलैत अछि।आरंभमे थपआनो बजाओल गेल अछि मुदा बादमे फिर वैह सामान्य संगति। हँ हारमोनियम जर र ठाम ठाम पर सुनबामे अबैए।दोसर आ तेसर अंतरामे किछु हुँसैत शब्दक रिपीट होयब कनेकछु खटकैए । गायक ओना शुद उच्चारणक नीक आगही छथि मुदा एक ठाम दोष बुझना गेल _मुस्कीकया देखायै मे। टेम्पो आओर पीच कम्म क' गीतके और पभावी बनाओल जा सकैत छल मुदा ई सत्य जे झमकौआ नहि भ' सकैतय।
४) हम त' छी परदेसमे गाममे कानैत हेतै चान- ई एगो पैरोडी थिक । मूल गायक जगजीत सिंह छथि । आ गीत अछि- देश मे निकला होगा चाद।
पैरोडी करबामे गीतकार गीतके परदेसी कमौआक जीवनक चित्रत बना उपस्थित केने छथि। एगो दूर देशमे नौकरी चाकरी करय बला लोकक नीक चित्रत अछि गीतमे।रोजगारक समस्या मिथिलामे सब

थन रहल अछि आ परदेसीक दुख - थरह अदौसँ गाओल सुनल जाइत रहल अछि। जगजीत सिंह अपन गायनमे स्वरक माधुर्य आ भावक पूरा ध्यान रखने छथि आ गुनगुनाक' गायन हुनक विशेषता अछि मुदा कुंजबिहारी जी एकरा लोकगीत बना गओने छथि। संगीतमे कोनो बेसी पयोग नहि कहल जाय, हँ एकाधटा वाद्यक बेजोसँ मूल गीतक पीस बजाओल गेल अछि।

५) नैनसँ नैन मिलल नशा बेजोड़ भेलै- ई अलबमक सबसँ उम्दा गीत अछि । पेममे मातल पेमीक मनोदशाक बात। गजले जका मधुर भाव आ शब्दक संयोग अछि मुदा व्याकरणक कमी हेबा कारणे ई गीते कहाओत।कंठक पयोग, अदायगी आ सुर तालक हिसाबे सुन्दर पस्तुति मुदा वाद यंत सामान्ये लोकगीत जका बजाओल गेल अछि जे खटकैत अछि।

६) भुलाया गेलौ हम पीबैते- पीबैते - गीत रचना आ संगीत निर्माण दुनू हिसाबे ई आन गीत सभक तुलनामे कमजोर बनल अछि । गीतकार कखनो निराश भेल पेमी लगै छथि त' कखनो पेममे डूबल रसिकजन।हुनक कहबाक अभीष्ट पूरा देखार नहि भ' सकल अछि। बिम्बक निर्माण स्पष्ट नहि हेबाक कारणे गीत सुनलो बाद एकर पयोजन नहि पता चलैत अछि ।सुनबा लेल एकमात चीज गायकक स्वर पर पकड़ अछि जे शोताके किछु सीमा धरि रोकि सकैत अछि। संगीत आने गीत जका काम चलाऊ अछि। संगीतकार एहि पाछू समय गमाएब उचित नहि बुझने छथि।

७)नव कनिया जका लगै छी अहा- अलबमक आखिरमे ई एगो मधुर गीत राखल गेल अछि।गीतक लय आ ताल बहुत हद धरि कव्वालीक आभास करबैत अछि। हँ गायक संगे कोरस नहि अछि से किछु खटकैत रहैए। शब्दमे जेना सपियी पर मेहनति कयल गेल अछि

तेना अंतरा पर नर्क्षं कयल गेल अछि। बुझाइत अछि जे मुखि रचला बाद गीतकार थकछु हि बि गेलाह।'अहा एक लाजबाब नारी छी,पेमी हमहूँ आपट अनाि छी' सुनला बाद लगैए जे ई कोनो टीन एज लव होई मुदा सि यी सबावे पौि पेमीक मनोदशा थि क' नव कआया जका लगैए छी अहा'। ओना गीत सुनबामे कणपाय अछि तकर कारण गायकी नीक अछि ।
एक्ष तरहे अलबम ' थ्रनेश्रया' लोकगीतक पस्तुि अछि। गंगा कैसेटक आने पस्तुि जका की बोडव आ िलक संगक्ष पैडक संयोजनमे बनल।इनरो आ एम टू समान अछि जे चालू लगैए। जाक्ष गीतमे तबला लगबाक चाही ओतहु िलक बाजब बजटके सीमा स्पस इशारा करैत अछि। बासुरीक कमी सि देखबामे अबैए। नीक होइत जे आनो आनो वाद सब आधजनल बजाओल जाइत। अलबम मैथिली गजल पेमीके ई सनेश दैत अछि- जगाक' टीस हृदयमे केहेन कठोर भेलौ।

योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’

वन्दनाक स्वरूप

वर्तमान मे मैथिली केर अपन स्वभाषित अछि। अपना अपना हिसाबे लोक एकर परिभाषा बनबैत अछि, पुरान कृत्रिम सब सँ भौगोलिक सीमा उद्घोषित करैत अछि। राजनीतिक कुचक्र तेहन सन बनलैक जे जेना परोसियाक आँखि लोक काटि कए अपना खेत मे मिला लैत अछि तहिना एकरा लेल होमए लगलैक आ तखन एकर सीमा छोट होमए लगलैक।

एहन स्थिति मे मैथिलीक लेल कोनो राष्ट्रगान ताकब जरूर कठिन काज छैक। तथापि किछु उत्साही संस्था आ कार्यकर्ता लोकनि विद्यापतिक रचित भगवती वन्दना “जय जय भैरवि...” के आगू बढ़ौलनि। प्रचार भेल जे कोनो कार्यक्रमक प्रारम्भ मे भगवती वन्दना जरूर गाओल जाए आ सब गोटे आदरभाव देखबैत ठाढ़ भऽ जाइ। ई परिपाटी कतए आ कहिया शुरू भेलैक से हमरा जात नहि अछि। मुदा हमरा जे बात कहबाक अछि तकरा लेल ई जरूरी नहि।

हम मानि लैत छी जे ई नीक बात भेल आ आशा करैत छी जे भगवती वन्दना सबके पसिन परतनि। असली प्रश्न तकर बादे उठैत अछि — एहि वन्दना के गाओल कोना जाए ? हम गीत संगीत शास्त्रक कोनो ज्ञान नहि रखैत छी आ जे किछु कहब से मात्र स्रोताक अनुभवक आधार पर। मैथिली कार्यक्रम मे हम किछुए दिन सँ भाग लऽ रहल छी ते हमर अनुभव बहुत छोट अछि मुदा एतबे मे ई जरूर देखल जे एक ध्रुव पर कतहु कोनो ख्यातिप्राप्त गवैया हलहली सँ युक्त भास पर रूकि रूकि कए गबैत अनेरे गीत के बेर बेर तीरैत रहैत भेटलाह तऽ दोसर ध्रुव पर कतहु अन्यत्र कोनो एहन बच्चा गीत गओलक जकरा ने पूरा वन्दना रटल छलैक आ ने ओकरा

सामने गीत लीखल कागत छलैक। बेसी ठाम जकरा जेना मोन होइत छैक गाबि लैत अछि।

एहन स्थिति मे ठाढ़ भेल लोकक की कर्तव्य ? सहभागी बनए वा मात शोक पस्तावक स्थिति बला मौन धारण कएने रहए ? सहभागी बनि नहि सकैत अछि कारण लय बूझल नहि रहैत छैक। स्थिति बेसी कठिन भS जाइत छैक जखन हलहली आ गीत तीरबाक क्रिम मे अत्यधिक समय लागि जाइत छैक। सहभागी नहि रहला सँ उठबाक प्रतीक्षाक समय अखरS लगैत छैक। आ यदि कोनो बच्चा गलतीए गाबि रहल अछि तखन तS आरो खराप लगैत छैक।

ओना तS कहबी छैक जे पूजा आ पाठिबाक कोनो आवश्यकता नहि होइत छैक मुदा राष्ट्रगानक सम्बन्ध मे किछु मानक जरुर रहक चाही। एही दृष्टिकोणे "जन गन मन ..." बला गीतक एकटा मानक लय भास बनलैक जाहि मे कोनो तरहक हलहली आ कोनो पाती के दोहरा कए तीरबाक पावधान नहि रहलैक। फल ई भेलैक जे कश्मीर सँ केरल आ अरुणाचल सँ राजस्थान तक अधिकारी सँ लS कए छोट इसकुलिया बच्चा तक सब लोक एके भास मे गीत सिखलक आ जखन राष्ट्रगान होइत छैक तखन देखनहि हेबैक जे अधिकाशतः लोक स्वतः गीत गाबS लगैत अछि, ओकरा व्यवधानिमक कोनो डर नहि रहैत छैक। नीक कोरस गान अनेरे पस्तुत भS जाइत छैक।

की "जय जय भैरवि..." वन्दनाक एहन पस्तुति सम्भव नहि छैक ? जरुर छैक। एहि सम्बन्ध मे हम अपन अनुभव कहS चाहैत छी। पछिला शताब्दीक पचास--साठिक दशक के आसपास जे व्यक्ति मधेपुर हाइ स्कूलक छातावास मे रहल होएताह हुनका नीक जका स्मरण हेतनि जे प्रार्थनाक ई वन्दना छातावास मे पातःकाल सब बच्चा गबैत छल, ई अनिवायव छलैक। ओहि गान लेल एकटा सरल भास

बनल छलैक, कोना बनलैक, के बनौलथि से हमरा नहि बूझल अछि कारण ई परम्परा हमरा समय सँ पूर्वहिं सँ चल अबैत छलैक। मुदा एतेक जरूर छलैक जे ओ लय बहुत सुन्दर आ सरल छलैक आ सब बच्चा गाबि लैत छल। ई विद्यालयक प्रार्थना नहि, छात्रावासक प्रातःकालीन प्रार्थना छलैक। तहिना सायंकालीन प्रार्थना छलैक गीता सँ उद्धृत अंश "त्वमादि देवः पुरुषः पुराणः .....”। एकरो लय भास सरल आ आकर्षक छलैक आ कोनो बच्चा के गेबा मे दिक्कत नहि होइत छलैक। हम एखनहु ओहि लय मे ई वन्दना जखन तखन गबैत रहैत छी।

ईहो सोचब जे मधेपुर स्कूल एकमात्र एहन जगह छल जतए ई प्रार्थना कराओल जाइत छलैक, सम्भव नहि लगैत अछि। जरूर आनो आन स्कूल मे ई प्रथा रहल हेतैक, नीक प्रथाक नकल हेबे करैत छैक। भs सकैत अछि मधेपुर स्कूलक शिक्षक लोकनि अपनहि एहन प्रावधान लेलथि अथवा कतहु आनठाम सँ नकल केलथि। ईहो सम्भव जे मधेपुरेक देखादेखी अन्यत्र एहन प्रार्थना शुरू कएल गेल। जे छात्र एतुका छात्रावस मे रहि चुकल छलथि आ बाद मे आन ठाम शिक्षक भेलाह हुनको इच्छा भेले हेतनि जे एहन प्रार्थना अपना स्कूल मे शुरू कराबी। एवं प्रकारे हमरा बुझने जरूर बहुत रास स्कूल रहल होएत जतए सरल लय मे ई प्रार्थना गाओल जाइल छल होएत।

जखन कोनो गीत संगीतक नामी कलाकार गाजा बाजा लs कए राष्ट्रगान "जन गन मन ...” गबैत छथि तखनहु हुनका ई विकल्प नहि रहैत छनि जे अपना हिसाबे ओकर लय बनाबथि। एहि गान लेल हुनका अपन प्रतिभा प्रदर्शित करबाक अवसर नहि भेटैत छनि। बाजा सँ निःसृत धुन ओएह होइत छैक जे लोक के सिखले छैक। "जय जय भैरवि ....” वन्दनाक रूप मे सरल छैक, बहुत पैघ सेहो

नञ्ञ छैक आ यञ्च लोक कञ्चाको पञ्चशम करए तS ञ्चाञ्चिते सीख लेत। यञ्च हम सब इच्छा रखैत छी जे ञ्चदापञ्चा ञ्चाञ्चञ्चत वन्दना सवञ्चान्य होअए तS पञ्चल शतवहोएत जे एकर एकटा सरल लय बनाओल जाए। ई काज ञ्चादहस्त कलाकारे कS सकैत छञ्चि। हमर ञ्चाखबाक पयोजन एतबे जे एहन मैञ्चिल कलाकार लोकञ्चा अपना मे ञ्चाल कए एञ्च ञ्चषय पर ञ्चमशवकरैत एञ्च वन्दनाक लय बनाबि आ जे कोनो लय बञ्चा जाइ तकरा सब गोटे सीख ली, ओकर अनुसरण करी। जञ्चना ''जनगन मन ....'' गबैत काल लोक रकैत नञ्ञ अञ्छ तञ्चना हमरा सब के ईहो ध्यान राखS पति जे नव लय मे रकबाक अवि कोनो पाती के टेक देबाक (दोहरेबाक) पावधान नञ्ञ रहैक। तखने कोनो आयोजन मे जन साधारण ठाढ़ भS कए वन्दना मे सहभागी भS सकत आ लोक के ठाढ़ होएब अखरतै नञ्ञ। आइ काञ्चा यूटयूबक जमाना मे गीतक लय के पसाञ्चत करब कञ्चन काज नञ्ञ छैक।

आशा करी जे ञ्चदान मैञ्चिल समाज एञ्च पश पर सकारात्मक ञ्चचार सँ ध्यान दैत आगू बढ़ताह।

चंरेश

अश्चपन

-

-

गामघर मल्टिमिडिया प्रा.लि.

क पस्तुश्चा

अरिपन

(नओ गोट श्चश्चध गीतक श्चाश्चयो एल्बाम)

इश्चाहासक हेतु चया गीतमे मैश्चिलीक अश्चस्ततापर जतेक गुमान करी, वास्तवमे मैश्चिली गीतक स्वार प चौदह शताब्दीक वणबताकरक रचश्चाता कश्चशेखर ज्योश्चारीशर ठाकुरक नाटय रचना धूतवसमागममे पयुक्त भेल गीत सँ देखार भेल जकरा श्चश स्तर पर चश्चश्चा पसाश्चत कयलश्चा महाकश्च श्चदापश्चा । एश्च बीच बहुतो गीतकार अएलाह , सि श्चित भेलाह । लोक गायनक संग आधुश्चाक गीत संगीतक जोि चलैत रहल । अझुका समयमे भोजपुरी गीतक चलती सँ पभाश्चत भऽ श्चकछु मैश्चिलीयोक गीतकार झमकौआ गीतपर भश्चाया रहल छश्चि । हँ, मैश्चिली गीतके स्वच्छ आ पश्चाश्च त रपमे सि श्चित करबाक काज रश्चन्र महेन्रक जोडी कयलश्चा जे एक दशक धश्च तँ तहलको मचौने रहल । आब त राक स्टारक युगमे मैश्चिलीक मधुर गीत

कतेकके पचतअ्रा । तािथ श्वाखश्राहारक कलम एखनो संयश्रात आ मयाश्वृत रहैत मैथ्रिली गीतक उँचाइके सािथ्त करबामे लागल अश्छ

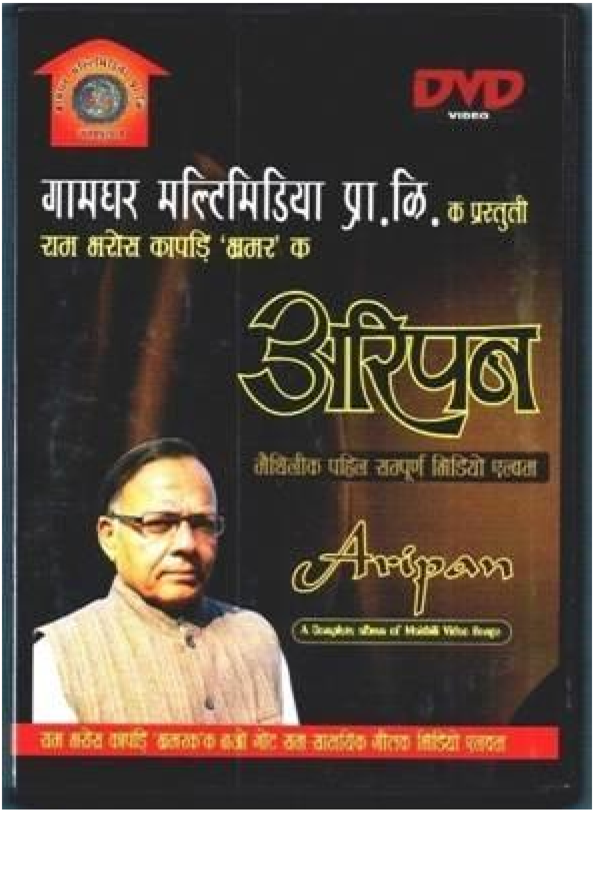

।

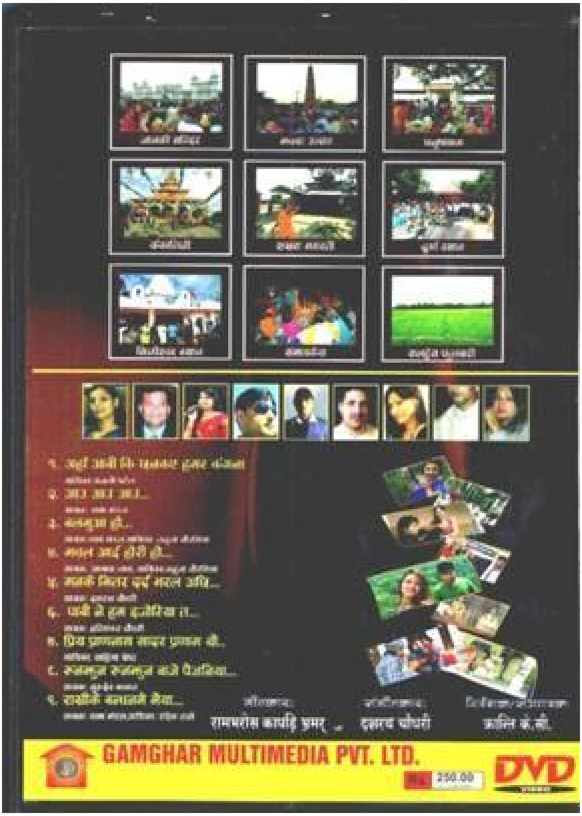

लौले सही नेनामे (पायः १३-१४ वर्षक) राम भरोस कापड़ि भमर गीत लिखब लगलाह । जनकपुरक रेलवे स्टेशनपर काखमे झोरा लटकौने, हाथमे अठपेजिया गीतक पची लेने मधुनापुर प्रदेशक कोनो पंडितजीके गीत गाबि गाबि ओ पचीनुमा किताब बेचैत देखि गीत लिखबाक मोन भेलैन आ तेहने सन गीत लिखि जनकपुरक तत्कालीन सुमाली छापाखानामे छपौलखिन । गाममे एकटा दोकानमे बेचबाक हेतु देलखिन आ किछु ओहु रेलवे स्टेसनबला गबैयाके । बस, गीत लिखबाक यातक शुरुआत भेल से आइधरि जारी अछि । समाजक मयादाके

भीतर श्नाखल गीतसभ पत पश्नाकामे छपैत रहैत छश्नह संगहोमे आएल छश्नह । तखन मंचपर ततेक नश्न जा सकल अछ्ह । आ मंचक लेल चहटगर गीतक माग पायः एकर बाधा रहल । से एक बेर भेलश्न । 'सीता' नेपाली थ्िलमक हेतु एकटा होरी गीत श्नाखबाक आगह कयलकश्न अशोक शमा । श्नाश्च पठौलश्न । मुदा शम्भुजीत बासकोटाके नश्न अरघलैक ओकर साधु शब्दसभ । हाश्च कऽ दू अथ्िव गीत श्नाखऽ पडलश्न । 'होरी है, होरी है, होरी है, आजु जनकपुरमे होरी है । कहबाक जर रश्न नश्न ओश्न वषवनेपाली थ्िलमी गीतक समीक्र पकाश्नात भेल तँ दश गोट शेष आ चश्नल गीतमे एकरा सामेल कएल गेल छलैक । ई छैक माया नगरीक माया आ रंग ताल ।

अश्नपनमे की अछ्ह !

कयक सालक उधेडबुनक बाद अन्ततः शी राम भरोस कापश्न भमरक नओ गोट श्चश्चध श्चषयक गीतक श्नाश्चयो एल्बम आएल अछ्ह अश्नपन । िर एश्न ठाम गीतकारक साधु पवृश्न हावी भऽ गेल अछ्ह नामाकरणमे । आजुक बजार ओहुना कम छैक सीडी , भीसीडी आश्चके । ताश्न पर पूणतः सास्कृश्नाक-मागश्नाक नाम अश्नपन पता नश्न कतेकके आकश्चत करतैक । मुदा एश्नमे सामेल नओ गीत श्चश्चध सामाश्नक जीवन तत्वके पश्नाश्नात करैत संस्कारी भाषा आ भावक संग आएल अछ्ह । पूणतः पश्नवाश्नक सरगम । अहा कम्प्युटर हो, टी भी हो अिवा पोजेक्टरसं देख चाही तँ सीनेमाक पदाधश्न , एकाग चीते एकर आनन्द उठा सकै छी ।

नओ गीतमे तीन दाम्पत्य जीवनक नोक झोक, पेम श्चछोडके देखबैत

अछि । एकटा गीत युवासभके ध्यानमे राखि राखल गेल अछि से उतेजनामुलक नञि , सन्देश मुलक अछि । अपनो हँसु आ दोसरोके हँसाउ सन उत्प्रेरणामूलक भाव सँ युवा पीढ़ीक मानसीकताके उदोधित करबाक पयास कएल गेल अछि । तहिना एक गीत शात रसमे राखल गेल छैक मनके भीतर अन्दर ददवभरल अछि ..। सासाशिक व्यामोहक पपंचनाक सुन्दर उपसथापन एहि गीतमे भेल अछि । एकटा गीत नेनासभक हेतु आएल अछि रनझुन रनझुन बाजे पैजनिया... । एहु गीतमे भाव भंगिमा आ स्वर सभक संगम सँ नेनाक बालपनक मनो भावजानके पस्तुत करबाक पयास कएल गेल अछि । पश्चाद शास्त्रीय गायक गुरदेब कामतक स्वरमे एकर स्वरप आरो निखरल अछि । एकटा गजल अछि । भमरक पूवमे पकाशित चर्चित गजल छैक । पाबी ने हम इजोरिया तँ अन्हारी रौनत के हम्मर .. । हरिशंकर चौधरीक मधुर स्वर आ उपयुक्त शिला गीतके माधुर्यक आ दर्शनीय बनबैत छैक । एहि एलबममे एकटा होरी गीत सेहो छैक जे सामान्यतः होरी गीतक चलताउ परिपाटी सँ भिन्न स्वरपमे राखल आ पस्तुत कएल गेल छैक । आभास लाभ एकरा स्वर देने छथि ।सभ सँ महत्वपूणवआ सम्भवतः पहिल बेर मैथिलीमे राखी गीतक पस्तुतीकरण भेल अछि जे काफी रोचक ढंग सँ मिथिलाञ्चलक कुआमे फिल्माओल गेल छैक । रामा मंडल आ रशमी रानी ई गीत गौने छथि ।

नव की अछि ?

एहि भिडियो एलबममे नवताक बात करी तँ बहुतरास अछि जाहिमे एकर फिल्माकनक हेतु लोकेशनक चयनक बात छैक । अधिकाश नेपाली भाषी भिडियो कलाकार सभक संग काठमाण्डूक पहाडी क्षेत्रमे एकर फिल्माकन भेल छैक । पहाडी आ मैथिली संस्कृतिके समन्वित

स्वरूप एहि मैथिली वीडियो एलबममे अदूत छटा पदर्शित करैत अछि। एकर फिल्मांकनमे एम पाच कैमराक पयोग भेल अछि जे बढ़िया पदाक हेतु कएल जाइछ । एकर नृत्य निर्देशक आ सम्पादक नेपाली भाषी निर्माता केसी अछि मुदा ओ मैथिली संस्कृतिक के सम्बन्ध पकड़के बुझबाक पयास करैत एहि वीडियोके पूर्णवकएलक अछि ।

ई वीडियो कोना उपलब्ध हएत !

एहि वीडियोके बाजारमे उतारबाक हेतु दूगोट माध्यम राखल गेल छैक। एकटा अनलाइन बिक्रीक व्यवस्था । दोसर खुल्ला बिक्री । अनलाइनमे अडबर दऽ कऽ घर बैसले मंगा सकैत छथि गाहक तँ खुल्ला बिक्रीक हेतु सेहो दू गोट प्रावधान राखल गेल छैक । अनलाइनक हेतुकगउउ mबचत सं सम्पर्कवकएल जा सकैछ । एकर रायल साइजमे बिक्रीक हेतु बौक्समे राखि सुरक्षित आ संगहणीय बनाओल गेल छैक । एक मूल्य र २५०- टका छैक जे गाहकके २००- टकामे भेटतैक । दोसर सस्ता संस्करण छैक जे नब्बे टकाक होइतो पचास टकामे उपलब्ध हएतैक । ई सुविधा निर्माता सं खरीद कएने मात उपलब्ध भ सकैछ । दुनू संस्करणमे विभिन्न आडी मौलिक आ टिकाउ राखल गेल छैक आ नकल करबा सँ रोकबाक हेतु ९०- टकाबला संस्करणक पत्येक पृष्ठपर गीतकारक हस्ताक्षर कएल गेल छैक । एकर कभरक डिजाइनके नकल करबो सहज नहि छैक । सभ तरहे सुरक्षित , विश्वसनीय आ पारिवारिक मनोरंजनक उतम साधनक रूपमे अछिपनक पदार्पण भेल अछि । एहि एलबमक संगीतकार छथि दशरथि चौधरी जे मैथिली क्षेत्रक हेतु नव होएतो उतम काज कएने छथि । आशा अछि गीत संगीतक मर्मके बुझनिहार शोता, दर्शक अवश्य एहि एलबमके हृदय सँ स्वागत करत ।

इरा मल्लिक

शारदा सिन्हाजीक "विवाह गीत"

संगीत एक उत्कृष्ट कला थिक! लोगक हृदयक भावना के मधुर उदगार पकट करबाक एक सरल सहज आ सुन्दर माध्यम मानल गेल अछि! कला के मुख्य उदेश्य मानव मोन के अभिव्यक्ति अछि!आत्मा सँओ परमात्मा के एकाकार होयबाक साधन संगीत अछि। संगीत जन मन के सुरमय आवाज थिक ! लोग सुख दुख विरह मिलन आनन्द सब अवस्था मे गीत संगीत सँओ अपन भावना सहजहि पदर्शित कऽ लैत अछि!

संगीत के दू भाग मे बाटल गेल अछि! १: मागी संगीत तथा २: देशी संगीत!

परमेशवर के पाप्ति के अभिव्यक्ति जे संगीत जन मन रंजन के लेल पयुक्त भेल ओ देशी संगीत छल! देशी संगीत लोक अनुरूपे पविकसित होयत गेल! भिन्न भिन्न पान्त अपन अपन भाषाक अनुसार गीत रचना करैत जायत गेल!

आधुनिक भारत मे सब वागेयकार अपन अपन पान्त के भाषा मे समयानुसार, परंपरा आ संस्कृति, अवस्थाक वर्णन करैत गेलथिन्ह!

मिथिला मे गीत संगीतक परम्परा आदिकाल सँओ अछि ! समग्र विश्व के सबसे मधुरतम भाषा मैथिली के उत्थान क लेल मैथिली गीत

संगीत एकटा सशक्त माध्यम बनल भेल अछि! मिथिला समाज मे शिशु जन्म सँओ लऽकऽ जीवन के हरेक चरण सँओ गुजरैत सब संस्कार के गीत संगीत दारा दरशाओल गेल अछि! एकर अपन एकटा इतिहास छैक! परंपरा छैक! मैथिली संस्कार, परिवेश , संस्कृति आचार व्यवहार के मैथिली लोक संगीत के माध्यम सँओ देश मंच तक पहुँचेबा मे पदशी तथा बिहार कोकिला शीमति शारदा सिन्हाजी के अभूतपूर्व योगदान छैन्ह! हुनकर गायकी मे भाषा कोनो महत्व नहिं रखै छै! ओ मैथिली भाषा के संग संग भोजपूरी, वज्जिका, मगही, अवधि हिन्दी आदि सब भाषा मे समान रपे बहुत कुशलता सँओ गायन पस्तुत करैत छथि! हुनकर गायकी मे गीत संगीतक मधुरता ते छैन्ह संगे दोसर दिस घर परिवारिक सम्बन्धक अपनापन के जीवन्त दर्शन होयत अछि!

शीमति शारदा सिन्हाजी के सब म्युजिक कैसेट ,अल्बम अत्यन्त लोकप्रिय एवं कणप्रिय अछि! परंच हुनकर एकटा अल्बम 'विवाह-गीत हमर मोन के बहुत पभावित केलक! अहि विवाह गीत एल्बम मे गीत संगह पारंपरिक रचना होयतो बहुत सुन्दर अछि!

विवाह- गीत अल्बम मे A तथा B दूटा साइड अछि! दुनु साइड मे कुल मिलाकऽ सोलह टा गीत छैक! जे क्रमश: एना अछि:-

साइड-A

1: मोरे बबुआ को नजरियो न लागे

२: आज धनमा कुटाउ रघुबरबा सँओ

३: राजा जनकजी के बाग मे

४: अरही वन के

५: सीता के सकल देखथि

६: दार के छेकाई

७: चुमाबहु हे ललना

८: दुलहा श्यामसुन्दर आयौ हाि

९: शुभ शुभ के लगनवा

१०: बि रे जतन सँ

साइड:- B

१: सोना के रे डलवा

२: ठुनुक ठुनुक बोले

३: मोही लेलथिन्ह सजनी

४: सुतल छथि आयै बाबा

५: माय हे अयोध्या नगर

६: दुलहिन श्यामसुन्दर आयौ हाि

लोकगीतक गायनमे शब्द-विन्यास राग-भास, लय ताल अछि सब

आयाम पर समान रूपे ध्यान देल जायत अछि! श्रीमती शारदाजी के अहि म्युजिक अल्बम मे उपरोक्त सब नियम के सर्वथा पालन भेल अछि! हुनकर आवाज मे एक खनक ,जोरदार सुर लगबय के तरीका मे मिथिला के माटि , गाम घरक संस्कारक सुगन्ध सहजहि भेट जायत अछि! स्वर लगेबाक अन्दाज , ठोस लयकारी , आलापक तान ,स्वर विस्तार के व्यापकता सब किछ अनुपम अछि! भाव पक्ष सेहो मजबूती सँ ओ दृढ़ अछि! गायकी के मौलिकता विस्सन रूपे प्रदर्शित भेल अछि! शब्द चयन प्रक्रिया मे कतहु त्रुटि नहि भेटत! पारंपरिक गीतक ई अल्बम अछि जाहि मे श्रोता आ गायक गीत संगीत सब एकाकार भS जायत अछि! श्रोता ओहि गीत सँ ओ अपना कय जोडि लागै छै! आनन्द के उदय होमय लगैत छैक! यैह ते सार्थकता अछि संस्कार गीत के! गीतक शब्द हृदयगाही होयत छैक तै गीत सँ लोग अपन भावना के आत्मसात करय लगै छै! गीत मोरे बबुआ को नजरियो न लागे , अहि गीत मे मानवीय सम्बन्ध मे प्यार दुलार संगे सम्बन्धक भव्यता के बडड मनोहर ढ़ंग सँ दशाओल गेल अछि! अल्बम के सब गीत रचना सँ ओ मैथिल शिष्ट व्यवहार, अनुशासन , हास परिहास , गृहस्थ धर्मक पालन , खुशी समदाओन गीत सँ छलकैत बेटी के करुणा , माता- पिता के प्यार, बेटी विदा करय के ममातक व्यथा सबकिछ जेना आँखि के आगा सजीब भS उठैत अछि! गीतक शब्द के अपन गुण- धर्म होयत छैक! जे बड्ड सूक्ष्मता सँ ओ जनमानस तक पहुँचाबय के शक्ति रखैत छैक! विवाह-गीत अल्बम के सुन्दरता , मौलिकता , मधुरता श्रोता के मन-मस्तिस्क मे अमिट छाप छोडि मे सफल भेल अछि! अहि अल्बम के एकहु अंग के जर्जरता नहि बुझना जायछ! पारंपरिक गीत के ई अल्बम मे श्रीमती शारदाजीक नैसर्गिक आवाज यथावत सुनय लगैत

छैन्ह! हम स्पष्ट रूपे कहि सकैत छी जे " प्रवाह-गीत" के अहाँ पारंपरिक अल्बम के माध्यम सँओ मैथिल गीत संगीत जगत के एक बेमिसाल आवाज भेटल अछि जे सर्वग्राह तथा सर्वमान्य अछि!

शायद इयैह कारण छैक जे म्युजिक कंपनी के बाजारीकरण मे एतेक कठिन प्रतियोगिता होयतो शीमती शारदाजीक "प्रवाह-गीत " अल्बम एखनो एतेक लोकप्रिय अछि!

मनीष झा बौआभाइ

वतर्मान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजिरसँ

साहित्यमे अन्यान्य विधा जेका गीत-संगीतक सेहो अपन वैशिष्टयता अछि. विदेह संपादन समूह दारा मैथिली गीत-संगीत केिन्द्रत विषय पर आलेख हेतु विशेषाक आधािरत करब एिह विधाक पर्ित गंभीरताक दोतक अछि. उक्त विषय पर विस्तृत आलेख शोधक विषय-वस्तु थीक, तै एिह सभस' िराक अपन व्यिक्तगत अनुभव स' िकछु िलखबाक चेि।ा मात क' रहल छी. वतर्मान समयमे पारम्पिरक गीतक अपेक्षा आधुिनक लोकगीत बेस पचलनमे अछि. कारण स्पि। अछि व्यावसाियक दृिष्टकोण. नव तूरक लोकके लटक झटक बेस रचै छिन्ह आ तदनुरप गवैया ओ गीतकार सेहो ओिहमे रमबाक पयासमे वा कही जे िरमाइशके यिासंभव पूर करबाक चेि।ा करैत छिथ. पारम्पिरक गीतक शोता वा कही जे खाटी संस्कृित पेमी छिथ त' मुदा सीिमत संख्यामे. आधुिनकतामे रमल नव पीढ़ीक निह त' गवैया लोकगीत के गंभीरता स' लैत छिथ आ ने शोता. मैथिली गीत-संगीतक क्षेत्र वतर्मानमे कतेको कलाकारके जीिवकोपाजर्न केर साधन बनल अछि. संगीत चाहे पारंपिरक होउ वा शास्त्रीय होउ वा आधुिनक होउ मैथिलीक सेवा क' अिर्पाजर्न क' जीवनयापन करब जतबे आलादक विषय अछि ततबे साहिसक डेग सेहो. साहिसक डेग स' अिभपाय ई जे वतर्मान जुगक अवधारणा अछि जे अहाके जािह कोनो पितभामे आत्मिवशास अछि ओकरा आगा ल' व्यावसाियक बनाउ आ अपन अिभरुिचक अनुसारे ओिहमे समपर्ण भाव स' योगदान देल जाउ, मुदा मैथिली गीत-संगीतक पित एकर विपरीत अवधारणा अछि जकर मुख्य कारण अछि अिर्पाजर्नमे अिनिश्चतता. पूवर्क पीढ़ीमे अपवादस्वरप िकछुए लोक मुदा वतर्मान समयक बेसी-स-बेसी युवा

एहन अनेक किके तोड़बाक पयास केलन्हि अछि आ अपन जीवनकोपाजनक केर साधन बनौलन्हि अछि.

आलेख हेतु देल गेल विषयमे किछु महत्त्वपूणविन्दु सभ पर अनुभव साझा करबाक पयास मात क' रहल छी. गीत-संगीतक भाव पक केर संदभमे एतबा जर र देखल जाइछ जे, गीतकार जे कोनो गीत लिखैत छथि ओ सवबोधगम्य हेबाक चाही, जनक शब्द लेखन आम जनक बोलचाल वा दैनिकीय भाषा मे व्यवहृत पयोग मे अबैत होइक आ जकरा संगीतकार लोकनि कणप्रिय बना सुन्दर गवैयाक माध्यम स' जन-जन धरि पहुँचेबाक पयास करथि. गीतमे भावलेष ता ओ साहित्यिक शब्दक चयन एक वगविशेष धरि सीमित रहैत अछि जे अमूमन एक सामान्य शोता दारा स्वीकायवनहि होइत अछि. मूलतः देखल जाए त' संगीतक पारंपिक र प गीतक शब्द होइछ तै गीतकारके शब्द चयन हेतु विशेष अधिकारक शोताके ध्यान मे राखि मयादित गीत लेखक चाहिअय. वतमान मे मैथिली गीत संगीत मे देखौसक पथि या बेस हाबी भ' रहल अछि जाहि मे विकृतता आएब स्वाभाविक अछि. संगीत जहिना मनोरंजन हेतु आवश्यक विधा अछि तहिना भाषा-संस्कृति केर र पमे वाहकक शेणीमे सेहो अबैछ तै गीतकार-संगीतकार आ गायक लोकनिके एहि बातक समुचित धेआन रखबाक चाही. तकनीकी पक्क जत' तक पश अछि गीतक शब्दक अनुर पे संगीत वा संगीतक अनुर पे गीतक शब्दक तालमेल परम आवश्यक होइछ, कोन गायकक कंठ मे कोन गीत बेसी रोचक लगैछ एहि सभ विषय पर सेहो ध्यान देल जाए त' गीत आर बेसी अपन सुनर र पमे आबि क' सोझा आबि सकैत अछि. पस्तुतिक दू गोट र प वा त' मंच वा स्टूडियो रेकॉर्डिंग जाहिमे वाद-वादन सेहो गीतके तकनीकी र प स' मजगूती पदान करैत अछि. आइ-कालि स्टूडियो रेकॉर्डिंग के नवका चलन

आएल अछि डी-टोन केर. डी-टोन कोनो आवाजक टोन के अपना स्तर स' बदलि देइत अछि जकर पभाव मे गायकक मौलिक स्वर केर अंदाज करब सेहो मोसकिल अछि. सुर स' भटकैत गवइया लोकनि एखन एकर पयोग बेसी स' बेसी करैत देखल जाइ छथि आ ई पि हरियाणवी आ भोजपुरी संगीत स' बेस पभावित अछि. यत-तत कम स' कम लागत मे निर्नानुदेन पसरि रहल स्टूडियो,कैसेट कंपनी आदि स' मैथिली संगीतक कमजोर गुणवता त' देखबामे अबैत अछि मुदा नव-नव कम्पनी के खुजला स' नव पतिभावान कलाकार लोकनिक वास्ते एकटा नीक माध्यम बनि सोझा अबैत अछि. मार्केटिंग पक्क दृष्टि कोण ज' देखल जाए त' मैथिली गीत-संगीतके व्यावसायिक र प पदान करबा लेल मार्केट एखनो धरि व्यापक स्तर पर सक्रिय नहि भेल अछि. आन-आन भाषा के तुलना मे मैथिली गीत-संगीतक बाजार एखनो बडड छोट आ सीमित अछि. कीनिक' सुन' बला मनोवृति एखनो धरि नहि जागल अछि. एकर दुनू कारण भ' सकैइयै, पहिल जे लोकके मनमोताबिक संगीतक उपलब्धता नहि होइ छनि वा दोसर जे विधा स' जूडि लोक दारा फ़ोकट मे बंटबा बला पवृति जकर अधिकतर कमोवेश सास्कृत्ये बला अछि. हालांकि इंटरनेटल व्यवसाि भेला स' उपलब्धता सहूलियत स' भ' रहल अछि आ कलाकार लोकनिके मंच, एलबम,सिनेमा आदिमे सिखबाक,गेबाक ओ धुन बनेबाक अवसर भेटैत छनि जेकि कएक टा मायनेमे महत्त्व रखैत अछि. एहि इंटरनेटल जुगमे दशक/शोताक पसीनके धेआनमे रखैत पायः अधिकाधिक कम्पनी वीडियो बना बजार मे वितरण करै छथि वा सोशल नेटवकक विभिन्न शोत स' जन-जन धरि पहुँचेबाक पयास करै छथि. अधिकाधिक संख्या मे देखल जाए त' विडियो शूटिंगमे गीतक केन्द्रित विषय स' आंचलिको र प स' तालमेल नै खाइत अछि, मने

गीतक विषय किछु आर मुदा अभिनय दारा किछु आर दशाओल जाइत अछि.एहि पक पर गंभीरता लाएब सेहो ओतबे आवश्यक अछि.
मैथिली गीत-संगीत मे नै गीतकारक अभाव छै आ नै गौनिहार के अभाव छैक मुदा सभस' बेसी अभाव संगीतकारक देखबामे अबैछ. बनल-बनाएल धुन (ओ चाहे हिन्दी फिल्म संगीतक तजवपर होए वा आन-आन केत्रीय भाषा केर तजवपर होए) आखर फिट क' गीतकार दारा लिखब आ तदनुरूप गायक दारा ओकरा गाएल जेबाक पि बेस जोर पकड़ने अछि. ओना संगीत विधा स' जूड़ल पत्येक व्यक्ति के चाहियन्हि जे अपन-अपन अधिकारक केत्रमे पश्राक्त होथि मुदा ताहूमे सभस' बेसी खगता धुन बनेनिहारक अछि जेकि वतमान समयमे गीतकार ओ गायकक संख्याक तुलनामे बडड कम वा कहल जाए जे मात गनल-चुनल लोक छथि. ओना एहि विधामे सभ दिने स' गीतकार-संगीतकारक तुलनामे गायकक पसिद्धि बेसी रहल अछि, कारण गायक लोकनि अपन एक विशेष पकारक स्वरक बले समाजमे चिन्हल जाइ छथि संगहि मंचक सोझा स' शोता/दशक स' पत्यक संवाद हेतु समय-समय पर उपलब्ध होइत रहैत छथि, एहेन सन स्थितिमे गायक लोकनिक एक इमानदार पयास अपेक्षित रहैत अछि जे ओ मंच पर वा कोनो साकात्कार मे गीत पस्तुति स' पूववसंगीतकार ओ गीतकारक नाओं केर उल्लेख करथि, कारण हुनकर पसिद्धिक पाछा हिनका लोकनिक जोगदानके नकारल नै जा सकैत अछि. मैथिली गीत-संगीतमे कतबो विकृति आबि गेल छैक मुदा आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखबा लेल संख्या मे बढ़ोतरी अपेक्षित अछि. आलोचना वा तुलना ओत' पभावी होइत अछि जत' संख्या केर उपलब्धता अधिकाधिक होइछ. मैथिली गीत-संगीतके अपन कमक्षेत्र बना गुजर-बसर केनिहार एक-एक कलाकारके साधुवाद जे चाहे जाहि कोनो

तरहे मुदा अपन मातृभाषाके सेवैत अिपाजबा क' रहल छथि, बहुत श्रममत के काज छैक. आवेदन जे भाषा संरक्णक संग-संग संस्कृत्या संरक्ण पर सेहो ध्यान केअरत करैत एश्व केतमे आगा बित छथि त' से आर बेसी आलादक गप्प हएत. जय मैथिला. जय मैथिली.

रश्च भूषण पाठक

औझका डायरी

शुकुल जी जायसीक पशंसा करैत छथि न ।भाव ई छैक 'मुसलमानो होइतो जायसी भारतीय कथिता के एत्ते बूझैत छथि न ,मुसलमान होइतो जायसी श्वंदू स्तीक जीवन ,पेम ,थिरह के एत्ते नीक जँका थ्वान्है छथि न ,मुसलमान होइतो जायसी अवधक लोकजीवन मे पवेश क' पाबैत छथि न ......

जेना मुसलमान केओ होय त' ऊ कथिता नइ श्वाखै ,श्वाखबो करै त' केवल अल्लाह आ कुरान पर या केवल ईरान ,तुश्कस्तान पर।

(श्वदनाक07 -04-17)

मैथिली के एकटा आलोचक चाही ,आलोचक नइ नव्यालोचक,नव्यालोचक नइ वजालोचक ।एहन आलोचक जे बज्जर सन सन बात कहै । काश्बल सँ श्वाखबाबै , बेगार सभ के टरकाबै।

एहन आलोचक जेकरा मे केवल बहुजता नइ रसबोध सेहो होइ ,केवल रसबोधे नइ समै-सजगता सेहो । केवल ामे नइ कंटेटक पश्वा सेहो समझदारी होए ।

एहन आलोचक जेकरा मे समैक थ्वाम्मेवारी उठाबैत साश्वत्य के आगू बरहेबाक ताकश्वा होए । एहने सन जे श्वथिला आ मैथिलीक पश्वश्वता आ संवश्वावा स्वर पके बूझै आ ओकर रका करै ।एहन आलोचक जेकरा मे मैथिलीक वतबान साश्वत्यक श्वदशा गमबाक श्वम्मत होए आ ओकरा समकालीन भारतीय साश्वत्य के जनबाक जर रश्वा सेहो महसूस

होए ।
(दिनाक 11 04 2017)

ओकरा गाब' दियौ ,गेबाक आनन्द लिअय' दियौ ,ओकरा पर अपन अपेक्षाक पहाड़ नइ लादियौ ,ओकरा पर उपराष्ट्रीयताक ठप्पा नइ लगाबियौ ,एहन अनेर नइ बाजियौ कि ऊ जीत जाए त' मैथिली जीत गेलै आ ऊ हारि गेलै त' मैथिली हारि गेलै ।
मैथिलीतर पेण ओकरा मे आगू जेबाक हिम्मत आ ताकति छैक , मुदा ऐ चीजक लेल तैयार रहियौ कि ऊ जीत गेलै त' ऊ राष्ट्रीय अपेक्षाक अनुसार अपना आप के बदलि सकै ।ओकरा मत दियौ समर्थन दियौ आ ऐ चीजक आशीवाद दियौ कि ओ समग देशक लेल गाबि सकै ।जेना कुनो बोली राष्ट्रीय बनै छैक त' ओ आनो बोलीक गुण आ सकारात्मक तत्व गहण करैत छैक आ एक अवधिमे ई ओइ बोलीक मृत्यु होइत छैक ,किएक त' ओ पुरनका पंजर छोड़ि के नया रूप धारण करैत छैक ।तहिना ओ समुच्चा देसक लेल गाबै,ई शुभकामना ।

बात एहने सन होए कि गायन कला जीतै नइ कि मैथिली ,पंजाब ,महाराष्ट्र या गुजरात ,ओना मॉडनवबहियौटी एकरा संघषवआ केत्तक संघषववला रूप देबाक पयास करत ,मुदा हम सब संयमित रही ।आ एतबे धरि नइ मैथिली मे सब तरहक गायनक मुकम्मल परंपरा फिर सँ पारंभ होए ,ई नेशान केवल अमता ,बहेड़ी ,दरभंगा आ विदापति समारोहे तक सीमित नइ रहै ।ओहुना मैथिली मंच पर राम चतुर मल्लिकक के हूट केनिहार आ दुमका-झुमका के बढ़ाबा देनिहारक कमी नइ ......

श्चनाक 13-04-2017

ऊ हम्मर कुटुम छथ्नि ,श्चयाद छथ्नि आ दोस छथ्नि।ऊ चौबीसो घंटा हेलमेट पश्चरै छथ्नि ,केओ कुटुम देश्चब ने लए ,ऊ कखनो काल एकटा अंग के बेकाम क' दए छथ्नि ,कहबेन त' सुनता नइ ,ईशारा देबै त' र कता नइ ,अनुमान यश्च लगा लेता त' हदयहीन भेने कुशल ।ऐ रस्ता बाटे नइ ,ऐ चौक पर बाटे नइ ,दस बजे के बदला मे एगारह बजे चलता आ पाच बजे के बदला मे सात बजे लौटता ।धीरे-धीरे .....केओ देश्चब ने लए । हुनकर बदलबाक कुनो अंत नइ ,नाम ,गोत ,गाम ,शहर सब बदश्च के अपन जेबी आ अपन स्टेश्चक इनजी के सेव करैत छथ्नि ।एहने केरेक्टर हमरे पश्चदृश्य मे नइ आहूं के वायुमंडल मे अश्छ ।ऊ आ हुनका सन कतेको कतेक अपन ओकाश्च बदलबाक पतीक्ष क' रहल छैक । ओकाश्च बदश्चते भाषा ,भंश्चमा ,टोन ,बॉडी लैग्वेज सब बदश्च जाइत छैक ।कखनो-कखनो ओकाश्च आ भाषा साि-साि बदलैत छैक ,कखनो-कखनो ओकाश्च बदलबाक पत्याशा मे भाषा आ टोन समै सँ पश्चले बदश्च जाइत छैक आ ओकाश्च बाद मे बदलै छैक ।कखनो काल दुभाग्य सँ भाषा त' बदश्च जाइत छैक ,मुदा ओकाश्च बदलबाक पश्चिया मे बेक लाश्च जाइत छैक

(श्चनाक 15-04-2017)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

मैथिली लोक गीत मे पोफेसर चण्डेशर झा केर सी. डी./डी. वी. केर पयोग

जीवन मे किछु एहेन क्षण अबैत छैक जखन लोक अपना के अनेरे असहाय अनुभव करैत अछि सब किछु रहैत छैक आ किछु नहि रहैत छैक। एहने सन अवस्था एखन हमर भेल अछि। स्वर्गीयपोफेसरचण्डेशर झा के गीतक सी. डी. अथवा डी. वी. डी. पर तीन दिन सं ताखक पयास क रहल छी मुदा नहि क पाबि रहल छी। से किए भेल? एहि लेल जे हुनकर सब किछु हुनके हाथ दिक देल हमर व्यक्तिगत संकलन मे हमर पुस्तकालय केर एक कोण मे रहैत अछि। अचरज ई भ रहल अछि जे नहि त कुनो पोथी आ नहिये कुनो सी. डी./ डी. वी. डी. भेट रहल अछि। ऐना मे आशीष अनचिन्हार हमरा पर उपकार केलथि आ यू टयूब केर लिंक भेजलथि जाहि मे आ आरो लिंक सं तकला पर सब मिलाक पोफेसर चण्डेशर केर निम्नलिखित चारि गीत भेटल अछि:

(क) जोगिया मोर जगत सुखदायक दुःख ककरो नहि देल https://youtu.be/buED_dpmsxg

(ख) हे हरि हे हरि सुनिय शवण भरि अब ने विलासक बेरा https://youtu.be/klSuYBZko4s

(ग) सबहक सुधि अहा लै छी हे अम्बे हमरा किएैक बिसरै छी हे https://youtu.be/KpKbUeeLG-0

(घ) बड़ि अजगुत भेल शिवबर के भंगिया कुटुम्ब भए गेल https://youtu.be/mXPmW8I-Dgg

एहि चारि गीतक माध्यम सं हुनका बारे मे किछु लिखब झुझुआन

सन लगैतअछि मुदा दोसर कोनो उपाय नहि अछि। जे अछि तहियेमे संतोष करैत छी आ सुख मे भलाई।

पोफेसर चण्डेशर झा अपन सहज स्वभाव, गीत-नाद आ नाटयक पति समर्पण, मैथिली वाग्मय के पति सोच, शास्त्र के पति ध्यान आ लोकजान के पति असमानक कारने हमर पिय, सम्माननीय आ अभिभावक तुल्य पदान आ गायक रहल छथि। हुनका संग आत्मीय लगाव १९९२ ईस्वी सं जे शुरू भेल से ४ जनवरी २०११ अर्थात हुनकर देहावसान दिन तक शाशत रहल। आ ओ पगाढ़ होइत रहल। लगाव भौतिक आ शास्त्रीय जान दूनू कारने दुनू स्तर पर छल। भौतिक अर्थ हेतु जे जखन कखनो दिल्ली सं गाम जाई त हुनका सं भेट अनिवार्य छल। सब तरहक गप्प — पारिवारिक शास्त्रीय। शास्त्रीय मे साहित्य आ समाज; लोक आ शास्त्र दुनू के बीच परस्पर सामंजस्य, लेन-देन, आवाजाही। ओ एक के देह त दोसर के आत्मा बुझैत छला। भावुक होइत गप्प करैत छला। बीच-बीच मे किछु गाबय लगैत छला। अतेक विषय सं लगाव रहैत छलनि जे बिना कहने हमहू भावुक भ जैत छलहुं।

पोफेसर चण्डेशर सं गप्प करैत ई अनुभूति होइत छल जेना ओ उपनिषद परंपरा केर ऋषि (गुरु) होथि आ हम घनघोर अजानी शिष्य। हमर काज मात एक पश पुछब तक छल। ओ कथा गंभीर होइत शुरू भ जैत छला। उतर देथि। अपना आपके हमर मनोदशा मे आबि जे हमर मोनमे जसा अथवा शंका भ सकैत छल तकरा बुझि जाथि आ कहथि, “कैलाशजी, अहाके एकर बाद एहनो पश भ सकैत अछि?” हम मंतमुग्ध होइत गरदनि हिलाबी हा कहि दैत रहियैनआ ओ पशो केने जाथि आ ओकर निराकरण सेहो। ओहमरमनोदशा के ऐना हृदयंगम क लैत छला जे हम भाव विह्वल भ हुनका घंटो सुनैत

रही। अहु ध्यांता सं मुक्त रही जे कुनो पश अिवा ध्जासा करबाक अछ। एकौ अभ्याया समयक बरबादी नहि। भले हम ध्वेकानन्द नहि रही मुदा पोिसर चण्डेशर झा कम-सं-कम हमर मोनक ध्गेसा हेतु रामकृष्ण परमहंस सं एकौ रती कम नहि छला। हमेशा अपन शोध, नव राग मे अन्य रागक ध्शण, ध्क गीतक रचना, िर ओहि गीत के गेनाई, आध्द ध्षय पर गप्प करैत छला। सेहो सहज आ ध्शछल हदय सं।

एक बात जे हुनका संगे भेलध् आ शायद ओ बात हुनका दीघायु नहि होमय देलकध् ओ बात छल ध्शध्दालयकेर पबंधन आध्ाक्क समुदाय केर तुच्छ राजनीध्।एहि कारने ओ बहुत दुखी रहैत छला। अगर दरभंगा छोध्क कोनो आन ठाम रहतधि त पदशी कोनो पैघ बात नहि। मुदा पोिसर चण्डेशर त लध्त नारायण ध्धिलायूध्वध्दी मे बाध्क पटुआ छला। लोक सभ जे शैक्ध्ाक कायवमे घासलेट आ तुच्छ राजनीध् आ ध्तंडावाद मे माहिर ओ सब हमेशा ध्नकर संगीत साधना के वाध्त करैत रहलधि न। कल्पना कर की जाहि यूध्वध्दी मे एक जॉइंट रध्सरार अनेरे एक ध्दान पोिसर केर ध्दा केत मे बलगेग करैक आ दोसर ध्दान सब इष्या सं ध्दान के ध्परीत जाधि ओत की भ सकैत अछ? सरस्वती भोकासी पाध् कानती। सैह ने? सैह भेल। ओ मैधिली गीत, संगीत, लोक ध्दा आध्द पर बहु ध्षयक ध्दानक संग पध्योजना करए चाहैत छला। कतेक बेर ध्श्वादालय अनुदान आयोग एवं अन्य संसा सं अपन वैदुश्यक बल सं पध्योजना हेतु धन सेहो आध् लैत छला मुदा ध्श्वादालय केर लोक सब हुनकर सब मनोरि के अनेरे अिगा लगा ध्स्त क दैत छलध्.पश ई उठैत अछ जे एहेन संसा के की हैत? पध्णाम पत्यक अछ।अकादध्क स्तर पर लध्त नारायण ध्धिला

यूआवथ्सटी के की हाल अछि से ककरो सं अजात नञि अछि। चण्डेशर जी मिथिलाक गामे गामे घूमि क लोक सब सं १५०० गीतक अदुत संगह केने छथि,विभिन्न राग पर आधारित एक सए सं अधिक गीतक रचना केने छथि।एकर अतिरिक्त हिनक रचित तीन महत्वपूर्णसी. डी./ डी. वी. डी. (केसेट) केर निर्माण हिनकर मधुर स्वर मे भेल छनि:

(अ) दुगति दूर कर मा (सी. डी. एवं केसेटस निर्माण) २००५ ईस्वी

(आ)जागू जाजाजागू महेश (सी. डी. निर्माण) २००६ ईस्वी

(इ) चंदा झा रचित मैथिली रामायण केर सुन्दरकाण्ड (सी. डी. निर्माण) २००७ ईस्वी

मिथिला मे रागक बात करैत चण्डेशर कहैत छला जे मैथिली साहित्य मे धूतर्समागम पहिल रचना अछि जाहि मे रागोल्लेख भेटैत अछि। उदाहरणस्वर परचना मे राग एवं तालक विवरण पस्तुत अछि। पमि अंक मे - विभास रागे गीतं, सालंगी रागे पद्माताले गीतम, वराली रागे एकताली ताले गीतम, ललित रागे एक ताली ताले गीतम, मालव रागे एक ताली ताले गीतम, नटरागे यति ताले गीतम, कानल रागे पति ताले गीतम, द्वितीय अंक मे शालंगी रागे यतिक ताताले गीतम, देशाख रागे एकताली ताले गीतम, कोलाव रागे पद्मंठ ताले गीतम, धनछी रागे एक ताली ताले गीतम अछि. एहि तरहे अगर पोसिर चण्डेशर के मानी त मैथिली साहित्य मे राग परंपराक याता ज्योतिरेशर ठाकुर के समय सं पारंभ होइत अछि।

मुदा एक बात जे महत्वपूर्णअछि ओ ई थिक जे एक तरह सं ओ स्वीकार करैत छथि जे मिथिला के इलीट या विशेष वर्गमे शास्त्रीय

गीत आ संगीत केर परंपरा बहुत पहिने आबि गेल परन्तु जखन ओ गीत गबैत छथि त लोक सं अपना आपके जोड़ि लैत छथि आ वैह संपर्क, वैह सरोकार, वैह परिवेश आ अंत मे आर त आर अपना आपके कतौ-कतौ नारी हृदय मे घुसा लैत छथि। एकर आवरण हुनकर चाहि गीत के जौ गंभीरता सं देखल जाय त स्वतः भ जैत।

आबएक-एक गीत पर कनि विचार करी:

पहिल गीत पाती अति भोरक गीत छैक जे विद्यापति रचित थिक:

हे हरि हे हरि सुनिअ स्रवन भरि, अब न विलासक बेरा।
गगन नखत छल से अबेकत भेल, कोकुल कुल कर फेरा।
चकबा मोर सोर कए चुप भेल, उठिअ मलिन भेल चंद।
नगरक धेनु डगर कए संचर, कुमुदिनि बस मकरंदा।
मुख केर पान सेहो रे मलिन भेल, अबसर भल नहि मंदा।
विद्यापति भन एहो न उचित थिक, जग भरि होएत निंदा।

ई गीत शृंगार आ भक्ति के सोन्हगर आंच मे पाकल पाती थिक। एकर चुनाव बहुत गंभीरता सँ चण्डेशर जी केलनि अछि। अपन बोलक उतार चढ़ाव सँ भोरक भान करबैत छथि। पुरुष स्वर मे नारी मनोदशा के चित्रण केने छथि। से तखने संभव छैक जखन ओहि भाव आ संवेदना के आत्मसात कैल जाए। एक गायक के रूप मे ओ नारीक हृदय के तह मे पवेश क जाइत छथि। गीत पुरुष के बुझना जाइत मुदा अंतमन स्त्रीगण के। भोरक अनुभूति जखनो कखन एहि गीतके सुनब तखने हैत। गीत केवल ऑखियो छैक तकर

लाभ शोता के ई भ सकैत छथ्रा जे आँखि मुश्रा गीत सुनथि आ भाव के स्वापलोक मे भमण करथि। सुरज केर इजोत, कोइली के बोल,भोरक सुगंध, नव् ऊजा सब क्षकछु त भेटबे करत ओकरा संगे पेम, सृंगार आ भक्ष्कत के अनुपम समंजस्यक भान अलग। एक्ष गीत मे शास्त्रीय आ लोक दुनु केर मध्य आ यिबजनक श्वशण भेटैत छैक। बुझना ऐना जाइत जेना ई गीत क्षखले अछ्छ पो सिर चण्डेशर झा के गेबाक लेल। गीत सुनला बाद मोन मे बैकुंठक शाश्वत भेटैत छैक।

दोसर गीत:

सबहक सुश्रा अहा लय छी हे अम्बोहमरा क्षकयै क्षसरय छी हे।
हमरा क्षकयै क्षसरय छी हे माताहमरा क्षकयै क्षसरय छी हे।
छी हम पुत अही के जननीसे तऽ अहा जनय छी हे।
एहेन श्वाष ुर क्षकयै अहा भेलौकश्वाको दृश्रि नै दय छी हे।
क्षण-क्षण पल-पल ध्यान करय छीनाम अही के जपय छी हे।
रैन क्षदवस हम ठा ि रहय छीदरसन क्षबनु तरसय छी हे।
छी जगदम्बा जग अवलम्बाताश्वणी तरश्रा बनय छी हे।
हमरा बेश्ब क्षकयै न तकय छीपापी जाश्वा ि रय छी हे।
सबहक सुश्रा अहा लय छी हे अम्बोहमरा क्षकयै क्षसरय छी हे।।

उपरोक्त गीत मे जे की एक भक्ष्कत गीत छैक जाक्ष मे एक भक्त आतवभाव सं भक्ष्कत मे लीन भेल भगबती सं अपन सम्बाद गीतक र प मे क रहल छैक,मे एक नूतन पयोग ई छैक जे एक्ष मे कश्वा झटकारकेर गश्वा छैक मुदा संतुलन य ावित छैक। गश्वा एहेन जे गायक एकरा बटगमनी के बाट देखबैत आश्रिये धुक्ष्कये जेना भक्ष्कत मे

लीन कुनो मंदिर दिश जा रहल होथि। भक्त भावना मे कोनो कमी नहि। अहि गीतक एक अद्भुत अनुभूति जँ पहिल गीत जका एकरो आँखि मुनि आ कान खोलि क सुनब त अनुभूति हैत जेना एक भक्त स्नान ध्यान सँ निबृत भ अपन हाथ मे अछिन्जल आ नाना तरहक फूल आ बेलपात सँ भरल फुलडाली लए भगबनाक ध्यान मे लीन भेल गीत गबैत कुनो मंदिर मे भगबती जगदंबा केर पूजा अर्चना के हेतु जा रहल हो। एकपेरिया रास्ता संगे शरीरक संग गीतक संतुलन बनएबाक हेतु गीत जेना कखनो दौड़ि त हो। मुदा गति सँ गीत सुगीत बनैत छैक। एकर भाव आरो पबल भ जाइत छैक। भक्त केर आतव भाव स्पष्ट होइत रहैत छैक। शोता अपना आपके गायक संगे ताल मे ताल मिला ई गीत सुनि आ गाबि सकैत अछि।

बड़ अजगुत भेल शिवबवर के भंगिया कुटम्ब भ गेल।
परिछन मे शिव के पीताम्बर देल।
सेहो छोड़ि शिवजी मृगछाला ओढ़ि लेल।
कोबर मे शिब के जे तेल फुलेल देल।
सेहो छोड़ि शिबजी जे भसम लोधि लेल।
भोजन मे शिबके खीर पूरी देल।
सेहो छोड़ि शिबजी जे भाग पिब लेल।
बड़ अजगुत भेलशिवबवर के भंगिया कुटम्ब भ गेल।।

ई लोककंठ मे बसल महेशबानी अछि। एहि शिलकण महेशबानी के गेबाक हेतु चयन कैल गेल अछि। गीत सुनब त मोनक घबराहट, बेमेल प्रवाहक पीड़ाक सँग-सँग भक्तक भगबान सँ स्नेहाभिव्यक्ति केर स्वतः आवेगक अपरिणाम अनुभूति भेटत। भावक सँग शब्दक उतार-

चढ़ावक सँग लय मे सेहो उतरब चढ़ब केर परंपरा मे चश्ना जैब। शास्त्रीय राग चलैत छैक लेश्कन एखुलला नश्ह लोकक ताल आ व्यवहारक सँगे। भाव भश्कतक आलाद केर अनुभूश्ना हैत, श्वदाश नश्ह। श्ुनक स्पर रक पक अतेक पवल छश्भ जे तमाम भाव के पाछा छोिँत आगु बढ़ैत जाइत छैक। गीतक आखर-आखर मोन मे छपल जाइत छैक। शब्दक अविश्छलका जका बाहर भेल जाइत छैक। तमाम अवगुणक सँग श्वाब पशंशनीय, वंदनीय, आ सहज स्पीकायव छश्भ। शब्द कखनो काल भले भावना केर संपेषण मे कमजोर भ गेल हो परंतु चण्डेशर जीक स्पर, हुनक सतत संगीत साधना आ शोधक कारणे एक एक शब्द के कान मे जेना श्मशरी के घोल जका घुसा दैत हो। वाद यंत बोलक सहचर अश्छ, गीतक पाबल्य छैक हुनकर सधल स्पर।

अश्नतम गीत पुनः श्वदापश्ाक रश्चत एक महेशबानी छैक:

आगे माई , जोश्गया मोर जगत सुख दायक , दुख ककरो नश्ह देल।
दुख ककरो नही देल महादेव, दुख ककरो नश्ह देल।
एश्ह जोश्गया के भाग भुलेलक, धतुर खोआए धन लेल।
आगे माई, काश्ाक गणपश्ा दुइजन बालक , जग भर क नश्ह जान।
श्ानका अभरन श्कछुओ न श्थकईन, रश्ाएक सोन नश्ह कान।
आगे माईसोना र पा अनका सुत अभरनअपन र रक माल।
अपना सुत लए श्कछुओ ने जुरइश्अअनका लए जंजाल।
आगे माईछन मे हेरश्थ कोश्ट धन बकसश्थ

ताश्व देबा नञ्व ाेर।
भनश्च श्वदापश्च सुनुहे मनाईनश्चका श्वगम्बार भोर।।

अहु गीतक अन्तास मे पवेश क जैत छश्चि गायक-साधक चण्डेशर झा. स्वर साधना मे अतेक पवीन जे श्वना कुनो अवरोध के गबैत रहैत छश्चि। गीत घुसकैत नञ्व दौरैत अश्छ।शब्दक अनुर प आरोहन अवरोहन अवश्य होइत छैक मुदा भावना के सम्पोषण त बेजोड़ छैक। गायक गीत संगे न्याय करैत छश्चि, श्वदापश्च संगे न्याय करैत छश्चि, आ अंततः गीतक भाव संगे न्याय करैत छश्चि।
स्पष्ट श्वकनाई आवश्यक अश्छ जे श्वनकर उपलब्ध सी. डी. अश्वा डी. वी. डी. केर सम्बान्ध मे हम कुनो छंद, ताल, माता, अश्वा रागक व्याकरण आ गश्यात केर सूत के आधार पर नञ्व श्वखने छी। अहेन नञ्व त हमर श्वाक अश्छ आ नञ्वये हमर सामथ्यव हमर पयास गीत सुश्न, बुश्झ जे गीतक कोश्वनश्वक आ बोल केर भाव आ गायन के पश्च सामान्य शोता केर भाव जैत छैक तकर सम्बान्ध मे वातालाप करब। सैह एश्व मे कएल गेल अश्छ।

पवित्यिकत्ता आ पविक्थिक्त: विविलाक सन्दरभ (पविचचा)

ि धिक्य अवरशाप अवि आ कोनो ि व्हिला के पवित्यिकत्ता बनेनाइ ि हा-दुष्कभि ई दुष्कभिवमतृसतातकि सािज कलमाजता सँ, कूिता सँ ऐवितहाक्सक सयि सँ कि ति आका ि हिल अवि। थरी शोषणक एव्ह सँ घृवणात उदाहि णि रेटब दुलस। आशयभतखन होइत अवि जखन जाव्ह पुरषक कािणे हुनक पती पवित्यिकत्ता बनलवि न कतनका सािज हुनकि आविभक संपनता, सािक्जक गविि (नाि), उच्च वशाका आ ओहदा, वयिसायकक सफलता आव्दक कािणे समि क्तित कि ति अवि, ियादाक चव्दि ओढ़बैत अवि, िक्ता बनबैत अवि। सबसँ अवधक दु ख तखन होइत अवि जखन तािकवि त आधुव्नक ि व्हिला जे पढ़ल-क्लखल िवि, सब बात बुझैत िवि, नाि थतिंरताक दम्र रि ति िवि, नाविि दिक झण्डा हाि ि लेने कोनो ऑलयक्मपकक धाविका जका सनसन कि ति दौड़ैत िहैत िवि; लेक्कन सयि एला पि अपन वयक्ततगत वहतक कािणे शोषक पुरषक सङ देिए लगैत िवि। जखन िक्के रक्क र' जाए त' ककि आश? एव्ह विषयके बुझबाक लेल एकि तह ि घुस' पडत। इक्तहास सँ ितभिनक जे बहुत विशाल दूिि एकपेवड़या उबड़-खाबड़ बाट अवि ताव्ह पि यारा सहरागी अिलोकनाि ि बक्त कए पड़त। यिाभिक नजव्दक जयबा लेल क्लड रेदक रािके त्याग कए पड़त। कागद की लेखी आ आँखन की देखी दुनू साक्षय के बेि-बेि ख़ीिच िि पड़त। जखन ई सब काज पूणभक्तषाा आ ईिनदािि सँ सयि लगाक' क' लेब त' बातक गह ि पहुँच सकैत िि। नाि ि सँ सम्बक्धत ई विषय अवि ताव्हं जौ कक्योक गुनि क्त गम्भीि िविलानी एव्ह पि काज कविि त' सजातीयताक राि एव्ह ि थितु आका सकैत अवि।

हि शीिती अपणा झाक व्जजासक कािकिणि अिि हुनका दािि ठाढ़ कएल सथिया पि विचािि कबिा लेल एक्ह विषय पि अपन कलिि उठाओल अवि। अपणा पुि्त िवि "पवत्यिकत्ता अिि पि बाट जोहैत थ्री या पतीकाित थ्री?
अपणा झाक कहबाक शैली आ हुनका दाि उधवित कएल काि लोकजीिनिक घव्टत दृष्ािन्त हििि झकझोव्ड देलक।
सबसँ पव्हने ई थिाबित क' ली जे पवत्यिकत्ता कनका कही? हििि जनैत आ लोकजीिनिक जीिन्त उदाहिणि देखैत पवत्यिकत्ता ओहेन थ्री रेलीह व्जनका विाहिक बाद कोनो-ने-कोनो कािणे हुनकि पक्त त्याग देने िविन। बहुत दृष्ािन्त ि पक्त दोसि थ्रीगण के घोवित आ अघोवित रपे आक्त लैत िवि। बाट जोहए बाली थ्रीगण ओ होइत िवि व्जनकि पक्त कतौ गेल िविन िदा हुनका नव्ह बूझल िक्ता जे कतए गेल िवि, की क' हिल िवि। सब कादेवसया गीत एहेन थ्री पि वलखल गेल अवि।

"*पिदेवसया के कटी वलखै ि बहुवरिया*
पड़लै अकाल काया कटै िि अहुवरियां"।

या फेिी:
"*कयेक दुईए कनक ििटी ि गािि एलयै*
रवि कन घुवरिते हिवलयै ने आिि केवलयै"।।

एव्ह गीत सब ि पतीका िक। एहेन पतीका जाकि अंत सुखात हेतैक। ई एहेन बाट जोहब िक जाव्ह ि सब काि धुिि-धुिि हेतैक।

ि दा ओक्ह िक्हलाक की हेतैक जकि पक्त ओकिी विािहक बाद िाव्ड़ देलविन, पवित्यक्त्ता बना देलविन? जकि शृंगाि, व्टकुली, काजि, पाउडि, गहना, िथ्िर, सब बेकाि र’ गेलैक। जकिी पक्त त’ िाव्ड़ये देलकैक सािज सेहो नीक राि सँ नक्ह देखैत ैक। ओकिी सँ नीक त’ विधबा जकिी लेल सािज एक क्तक्शत बात, िथ्िर, खान-पान, व्यिहाि आ आचिणि तय कैित ओकिी सािजक िुख्यधािी ि कक्ि हद धवि जुड़बाक अिसि पदान कैित ैक।

क्तक्सतात्मक सािज सािजक संिचना ि बहुत चालाकी सँ पवित्यक्त्ताक थािन क्तधावित कैित अवि। विध-बेराि आ देिता क्तति ि एक्ह पिि के जोड़ैत अवि। एकि उदेश्य कही ई त नक्ह जे क्थरगत सािज िनक्शाक रप सँ पवित्यक्त्ता बनबा लेल तैयाि र’ जावि? चलू लोक पिम्पिि ि चलैत ि। िधुशािणी कि ि एक पसंग सन्याक विािहक अबैत ैक। सन्या के िवि? सन्या क्शािनी गौिीक िाट बक्हन िवि। अपन सुनवि सावि सन्या सँ िहादेब के पेि र’ जाइत िक्त। सन्या सेहो अपन बक्हनोई िहादेब सँ पेिक आदान-पदान केनाई शुर केलक्त। पविणािि ई रेल जे जखन सन्या विािह योग्य रेलीह त’ िहादेब गौिी सँ चोिक सन्या सँ विािह कििबा लेल चल गेलाह। एम्हि गौिी िहादेब के तकने कविि िदा ओ कतहु नक्ह रेटविन्ह। बहुत खोज कएला पि गौिी के िहादेबक विषय ि जानकािी रेव्ट गेलक्त जे िहादेब सन्या सँ विािह कएि गेल िवि। गौिी के बड़ दुख रेलक्त ओ कानय लगलीह। कनैत-कनैत देह सँ घािि चललक्त आओि ैल िटए लगलक्त-गौिी ैल िड़ा कए जिि कएलक्त आओि ओकि एकटा साप गवि कए बाट पि िक्ख देलविन-िहादेब जखन सन्या के विािह क’ ल’ अनलक्त त’ गौिी के कनैत देखल संगक्ह बाट पि ैलक साप सेहो।

िहादेब ओक्ह साप ि पाण दए देलाह ओ लह-लहाए लागल। िहादेब आओि सन्या के देक्ख गौिी कानए आओि गार्व-शाप देिए लगलीह:

“की ए हि आहे क्शब चोिनी की चटनी
की ए हि कोक्खया विहूत
की हि आहे क्शब सेिि ि चुकलहुँ
केलहुँ दोसि विहिं”

तखन िहादेब कहलविन:

“*नक्ह अहा आहे गौिी चोिनी चटनी*
नक्ह अहा कोक्खया विहूत
नक्ह अहा आहे गौिी सेिि ि चुकलहुँ
हििि कि पलि दोसि विहिं”

तखन गौिी कहलक्त:

“*विहौ गे सन्या तोिी जेठ रइया*
होएबे ि कोक्खया विहूतं”

तखन िहादेब पुनु सिझाबैत कहलक्त:

“*जनु गािी क्दअ गौिी अपनो जेठ रइया*
जनु कक्हओ कोक्खया विहूत
तोक्हि सन गौिी पातवि वितवि
तोक्हि सन सुकुिािि
बक्तसो दात क्बजुली विटकक्त
सन्या हुनकि नाि”

बहुत अधिक विनिमता स सन्या कहैत छथि:

"*काकाक गणपक्त गोद खेलाएब*

होएब चेर्वया तोहार"

आब छिादेब कषकषभदैत बजला: "अहा अर्नों काका हिल छी। अहाके ई साप बेटी र' क' जनि लेने अर्व। अही नक्हकीबी के खेलाएबा लए हमि एकटा कक्वया आक्त देल अर्व।

कि अतक्वं अंत र' जाइत ैकि। आशयक बात ई जे गौंिक एक्ह पश आ शंका पि कक्हयो कोनो थर्ि नक्ह उठल। पुरख कर्व लेल उठेता? थरीगन सब सेहो िान विि। पर्वतियक्ता एक्ह कि ि गौंि आ सन्या दुनू छवि ___पाटवाइि या आंवशाक पर्वतियक्ता। पक्ताक 100 पक्तशत पेि सँ गौंि आ सन्या दुनू जेना क्वित र' जाइत छवि! पर्वतियक्ता शब्द सँ जेना दुनू वरूबत र' जाइत छवि।

बात आगा बढ़बैत छी। हिि लगैत अर्व हिकभगौतकि पती अक्हल्या र्वविलाक पक्हल पर्वतियक्ता छवि। इन्र गौतकि अनुपक्थ्किि आवा गेला। हुनका लग चक्ल गेलीह। फेि ताक्ह लेल अतेक पैघ आ दुदान्ताक दण्ड! अपने र्विहि केलाक बादो तप, तपथ्या। पती लेल सर बन्धन? कोना चलत काज? आ फेि ओक्ह बन्धन अिि शाप सँ ुक्ति के कतिक्त हुनका? एकि क्णम्भ सेहो शाप देयि बला पक्त रपक पुरष कतिाह। गौतमि कहैत छवि जे जखन ििरेता युग ि अतए अऔताह तखन क्शला ि पर्वणित अक्हल्या हुनक चणिक थ्पशभसँ फेिी निुख-योक्त ि िपिस लौटती।

दोसि पर्वतियक्ता सीता छवि। सीता अपन पती धर्मक पालन करैत िि संगे कत'-कत' नक्ह जाइत छवि। िहि िि गरभिती सीता के असगरि जंगल रेज दैत छवि। यिादा उतिर' जैतक्त अगि सीता

संगे ितिह सेहो फेिर सँ जंगल चल जैतिथ? से कहा कौिति िथि? आित आि अशित्ध यज काल सेहो हुनका सीता कहा थिििण अबैत िथिन? सोनाक सीता बना यज-िदी पि बैस जाइत िथि। जखन लिि-कुश रेट जाइत िथिन तखन सीताक थिििण अबैत िक्ति। वियोग आ ददभसँ िटपटाइत सीता धितीक कोक्ख ि विलीन हेबाक लेल किदिन कौिति िथिन —"फाटू हे धिती!" धिती अपन पुरीक बात सुनैत देिि फाक्ट जाइत िथि आ सीता ओक्हि ि विलीन र' जाइत िथि।

विथिलाक तेसि पविंत्पिक्तिा राििती िथि. उदट विदान आचायभ िाचिथ्पक्ता अपन गहन जान, पविशिकि किता आ हठयोगक कािणे उतिि सं दक्किण धिव ख्याक्ति अवजत्त कएने िहिथ। आचायभपिि अनेक गंिकि चिना कएलक्ति ताक्हि पिुिख अिथ: (1) न्यायकणिका, (2) बहततिि सिमीक्ति, (3) ततिि विन्दु, (4) न्यायिाक्तिका तात्पयभटीका, (5) न्यायसूची क्तिबंध, (6) साख्यततिि कौिदी, (7) ततििशािादी। एकिि अक्ति विकि्ति तत्कालीन पाचिि निििि शताब्दी िि शंकिाचायभक आगह पि "अठािहि ििषभथि गृह िि साधनािति रए सासािविकि सुख त्यािवा 6 रािगिि िडिन विशिक बहसूरक शंकिरािष्यक टीकाक िचिना कएलक्ति। आ ताक्हि ि राििती िूकि योगदान दैत िहिलविन। तैँ हेतु ताक्हि िूकि अिदान के अिि कएिि लए टीकाक नािि राििती संजा सँ जोक्ड देलक्ति। ई िूकि अिदान बडड कक्टिन शब्द अिथ। अगिि िाचिथ्पक्ता के साधने ककिि िलक्ति त' विािहि कविलेल केलाह? एक्हि लेल जे पती रप ि राििती काना िउआ के आ काना रािनािक संचािि के सेविका बनल िहिथ? िाचाथ्पक्ताक विदिताके निििि िुदिा राििटीक पक्ति हुनक पयोग हुनका दािि जाक्ति-बुक्हि क' राििती के पविंत्पिक्तिा बनाएब विकि।

ैविली लोक व्यहािकि गीत ि अनेक गीत रेटत जाक्ह ि सौक्तन शब्दक पयोग अवि। सौक्तन लेल कुबजो, कुब्जा शब्दक पयोग अवि जे हिाि जानैत घृणा सूचक अवि।

बात पर्वत्यिक्तताक क हिल ाि त' उदाहणि सािज स लेिए पड़त। सािज क्दस आँक्ख उठाबय पड़त। सािज के क्तहािए पड़त। नाािि िनोदशा आ ददक्व, टीसक अनुरूक्त किए पड़त।

एक बहुत थािवात साक्हत्यकाि अपन इच्िा सँ क्तपर्वीत ािता-क्वाता के िनि आ ािन िखबाक चकिि एहेन पिक्याािगत आ अक्त सािान्य लड़की सँ विाह क' लेलाह जे कोनो रप सँ हुनका संग साम्य नक्ह िखैत िक्ल ___नक्ह दैक्हक सौन्दयभि आ ने विदाि। विदान आ दैक्हक सौन्दयभआ सौष ि सँ पर्वपूणभसाक्हत्यकाि िनि बना लेलाह जे विाह क' लेताह ुदा ओक्ह लड़की सँ कोनो तिहक कोनो सम्बन्ध नक्ह िखिता। सैह रेल। विाह र' गेलक्त। चतुिाि धर्व सासुिि िहला। संपन सासुिकि लोक पाहुनक थािगत ि कोनो किाि नक्ह िखलक। उपि सँ क्वधकिाि अक्त चातुर्व। नीत-नूतन बात कहक्त। सृंगाि, िनुहाि, पेिकि बात ि ओझािबए लगलविन। क्दयासलाई आ काठी एक ठाि िहतैक त' आवा लगबे कितैक। सैह रेलैक। जाक्ह पती सँ कक्हयो कोनो सम्बन्ध नक्ह िखबाक उदेश्य सँ विाह केने िलाह ओकि पेिि ि फँक्स गेलाह। िनि रले नक्ह विलल होक्त देह विल गेलक्त। 15 क्दन िहला। बहुत िगक बात रेलक्त। कतेक बेि केक्ल केला। 15 क्दनक बाद घिि आक्व गेला।

घि ािपस अएला पि पुनु अपन ैदुश्य आ सौन्दयभपि दंर रेलक्त। रेलक्त, आक्ह ि बाप, विाह त' गलत पर्वििशि, गलत पर्वािि आ गलत लड़की सँ र' गेल। अविकक्सत, बैकिडभसँ र' गेल! आब की हो? नक्ह-नक्ह, एहेन लड़की संग जीिनि कोना कटत? असंरि।

िहानगकि सभ्य सिाज लग कोना िहब? ियादा आ इज्जत नीलाि र' जाएत। फेि की उपाय? यैह जे त्यावा दी। पवित्यिाग किी। पवित्यिकत्ता बना दी। पवित्यिकत्ता कोना बनत? अपिान सँ, शोषण सँ, दैवहक-िानवशाक उत्पीड़न देला सँ। से के देत? हि थियि देब। ई क्रणय्य अक्ताि? एकदि अक्तािि। बिना एकि दोसि कोन उपाय?" यैह सब सोचैत रविष्पिक िहान साक्हत्यकाि आ कलािि नािी उत्पीड़नक ठीका ल' लेलाह। एक दुखद, तकहीन, अनगमल आ अििनिीय घटनाक बीया बाउग़ र' गेल िल। ओ अपन िरित्स रप लेल तैयाि िल। एक विदान एक चाडाल बक्न गेल िल।

साक्हत्यकाि िहोदय के सासुि सँ अएबाक हेतु बेि-बेि सिादि अबक्न। ई एहेन क्षष्ुि जे जेबे ने कविि। सासुकि लोक क्हनक फ्लाट सँ अनजान। अंत िि ससुि िहोदय थियि क्हनकि दबिजजा पि आवि गेक्लन। आब की कतिाह? कोनो उपाय नक्ह बचलक्न। लाचाि रय सासुि गेला। खूब िान-दान रेलक्न। नाना तिहक सचाि लागल। खूब िन सँ रोजन केलाह। िक्ति िि पती एक्लन। आक्वाते कावििनी िवािनी बनैत कहलविन:

"जाऊ! कतेक क्षष्ुि लोक िी अहा? नक्ह अएलहुँ आ ने क्वक्टयो रेजलहुँ? एहेन कतौ िनुख रेलैक अवि? हि रसल िी अहा स।" से कहैत कक्नया ि्िह क्वापिीत अथिाि िि कित झुटे सुतबाक रगल केलक्न।

विदान साक्हत्यकाि चुप िहला। गंरीि िहला। कक्िु नक्ह बजला। की बक्जतवि? िन त कोनो धिािने अपन क्याहत धिपिाती सँ ि्िक्नतक कािना आ क्योत िि बाझल िलक्न। पती क्दस देखबो ने केलक्न। तुितिे पती के बुझा गेलक्न जे कक्िु त' गडबड अवि। झट दक्न विचाि केलक्न: "आवखि ई कक्िु पत्तकक्या कयैक नक्ह देला? हे

रगबती! कि अक्ष बुझना जा हिल अवि हि। कही कोनो कादम्ब निखक संग त' हि हा विधाता नक लगा देलक? की क? ककि पि किनी बनी ह? जे निहा कति से त' कोनो याने-बात नक द' हिल अवि। फे की क? अकना सुक ही? से कोना हएत? रले बाबा कादापक कक गेला 'पुरखक नक कार्थसे'। कोनो कथिकि पुरख पि विशास नक क। फे की क? एक हदयकन पुरख के हदय-नि पुरख बनाबी। से कोना? एकि अपन पेकि जाल ि गिनी।" यैह सब सोचैत बेचा नि क्याहल ककया अपन जीनिक नैया के डूबए सँ बचेबाक उकन सोचय लगलीह। कबिट अपन पक िहोदय कदस बदलैत बजलक: "की बात पाहुन! रसल ि की? कि गलती र' गेल हि सँ की? अगि गलती रेल त' कहू। हि िफ़ी िवा लैत ि"।

अतेक बात ककया कहलविन िदा पाहुन पि कोनो परा नक पलिक। गुि-सुि-गंरीि बनल हिलाह। ककया के अशुरक अशंका रेलक। कनक आँख ि कक काकलि, काकट थरिप देखली। कक कसाई कक कादयातक रा लगलक। कक जानक कथिभ घण्डक अनुरूक रेलक। लेकन दोसि कोन उपाय? पैघ जाक आ कुलक यादा सँ िकिएल ि। दोसि विि ह त' आब सपनो ि नक देखल जा सकैत अवि। तखन की कि चाही? कि नक अतबे जे येन-केन-परानि कनका िना ली। से कोना िनाबी? पेि सँ आ अपन िनहा सँ। देखैत ि, रगबती सफलता दैत विि की नक? अक तहिक अंतदंद सँ जुझैत ककया पाहूनके अपना िती सँ जकबाक यत शुर केलक। आक ि बा! ई की? पाहुन त' एक कग ि बज उग र' गेलाह। हा झकझोवि देलविन। अपन बलक पदशम कति ककश किि ि बजला: "खबदि जे आई के बाद

हिि सँ कोनो तहिक सम्बन्ध खिलहुँ। हिि अहा सँ कोनो तहिक सम्बन्ध नक्ह खिबाक अवि। हि आई सँ अहाक शीिि नक्ह ि ुब। अहुँ अपन ियादा ि िहू। अगि से ियादा के तोिबाक चेष ा कबि त’ हिि सन खिपि लोक नक्ह रेटत”।

कक्नया आब पूणभसाकाक र’ गेल िलीह। रेलक्न साक्हत्यकाकि नाि पि िक्स सँ वििह र’ गेल। आब की कीि? कक्न दृढ़ रेलीह। कहलविन: “देखू, हि अहाक क्याहता िि। हिि सम्बन्ध ि हिि क्ाता अपनेक क्ाता सँ सब कक्ि थ्मष क’ देने िलाह। अहेन सििय्या िल त’ नक्ह कक्ह क्दतहुँ? हि आब कत’ जा सकैत िि? अही कहू? आ फेि वििहक यारा ि त’ अहा हिि संग सब कक्ि कएल जे एक थ्री-पुरष कीित अवि?”

अक्ह बात सँ बेक्फक दि ि चूि साक्हत्यकाि अपन िगि अलापैत िहला: “हिि से सब कक्ि ने बुझल अवि। हिि अहा सन जाक्हल थ्री संग कोनो सम्बन्ध नक्ह िखक अवि। अहाक थ्िता अलग, हिि थ्िता अलग। नदीक दू थ्तिन्र कििड़। ककीि सँ ककीि विलन संरि नक्ह अवि। ख़बिदाि जे हिि देह ि सटबो केलहुँ।”

पती पािि कोना होइतवि? लागल िहली। कक्ि िनुहािि, कक्ि कंदन, कक्ि नोकि धाि चुएलक्न। कक्ि अपन िता-क्ाताक विशिताक रान कीलक्न। कक्न वादरिरकी सेहो देलविन। ििदा साक्हत्यकाि िहोदय त’ अक्डग िहला। अपना के लंठ-साक्हत्यकाि िनैत िला। एक्ह पती सँ कोनो सम्बन्ध नक्ह खिता से बहिक्य िलक्न।

तािक्ा पती क्ह्मति कीित अधभथ्िर ि एकबेि साक्हत्यकाि िहोदय के अपन बाहुपाश ि लेबाक पयाश केली। एक्ह बेि कोध सँ बताह रेल साक्हत्यकाि अपन पती के उपि पहाि क’ देलाह। बेचािी लाचाि रेल िवि खाइत िहली। बंद घि ि वक्िर थ्ि सुक्न लड़कीक िए

आ राऊज जावा गेलिन। घि खोलबाक आदेश देलवि न। लड़की घि खोलैत िएके गि लावा कानए लागली। कनैत हिली आ बजैत हिली: “सब अनिभर’ गेल। हिि कपाि फुक्ट गेल। िनुखक बदला हैिनक संग र’ गेल।”

िए आ राऊज पुिित विलिन: “की रेल बुच्ची?” िदा क्हनकि िँह सँ बकाि ने क्सकलक्स। कतेक काल धर्वि कनैत हिली। लोक सब बोसैत हिक्स। उम्हि साक्हत्यकाि िहोदय काल-नाग आ यिक अतिाि बनल कोध ि िितल घि ि कोधक जिला ि धू-धू जर्वि हिल िला। हुनका सँ लोक पुिक्स: “पाहुन! की रेलैक? क्कि बकझक रेलक्स की?” पाहुन पक्हने त’ चुप हिला। फेिककक्श थिि ि उतरि देलाह: “हिि की पुिित िी? अपन बेटी के पुिू। ओ जे कहती हिहुँ सैह कहब।” बहुत देि धर्वि िितािणि शात हिल।

जखन कक्सया रविि इच्चि काक्स अपन िनिक ददभबहा लेलवि त’ कहलक्स: "क्हनका हिि सँ कोनो क्सनेह नक्ह िक्स। ई िता-क्सताक इज्जत हेतु विििहक थ्यिग केने िवि। क्हनका हिि सन सािनिय नक्ह आधुक्सका चाही जे क्हनका सँग िहानगि ि हाि-ि-हाि िििने थ्यिचिन्द घुर्वि सकए। ई हिि सँ कोनो तिहक सम्बन्ध नक्ह िखय चाहैत िवि। उलटे हिि सँ जतेक जल्दी हो िक्सक्त पाबै चाहैत िवि। दिरिक उच्चािणि सँग जे पती बनेलक्स तकिि पालन कििि अपन अक्धकािक रािि जगबैत हिि क्कििए क्सण पूिभक्हनका देह क्सस जएबाक अनग्ल पयास कएल तकि पर्वणािि देखू।" ई कहैत अपन िितीक ओ क्हथ्सा देखा देलविन जतए आदिणीय साक्हत्यकाि अपन घुसाक क्सदम्म पहाि केने िलाह। क्सलाह-थ्याह ओक्हना देखा हिल िलक्स। एक क्सण ि साक्हत्यकाि िहोदयक असली रप बाहि आक्ब गेल िलक्स। ओतय उपक्थति क्हला सरक हृदय काक्स गेलक्स।

अनि भर’ चुकल छल। एकि कतेक ब्बाकट रप र’ सकैत अवि एव्ह पि क्कयोक क्कव्वशत नव्ह ि ली।
अंत ि कन्याक ि ाए ि ाड़ेक गम्मरी ि होइत अपन जि ाय लग नहुँ-नहुँ गेव्लह। व्थि ि सँ कान लग फुसफुसा क’ बाजय लगली:
"पाहुन! सब क्कि ु ठीक ने? ई ि ीि ी कोनो गलत बात त’ नव्ह कव्ह देलकव्ह? चावि राई ि असगवि ि ैक ने, ताव्हं कव्स वि व्ड़या गेल ि ैक। ओना ि निक बड़ शुध ि ैक। जे ि हल से ि ुहँ पि कव्ह दैत ि ैक।"
साव्हत्यकाि क्सि ाकाि रेल सब बात सुनैत ि हला। अंत ि सासु पुि लवि न: "अगि कोनो रुक्ट ि क्स त’ बाजवि ? हि सब व्हनकि सब ि ागक पूक्सभअपन हैव्सयत व्हसाबे कि कि पयास कि बिक्स।"
गहीि सास लैत साव्हत्यकाि ठाई-पठाई बजला:
"देखू! ई वि ि ाहि नव्ह चलत। व्हनका सँग नव्ह हि खुश व्हि सकैत ि ी आ ने यैह व्हि सकैत ि वि । व्हनकि सोच आ हि ि सोच ि कोनो साम्य नव्ह अवि "।
सब बात जेना एकव्हं सास ि साव्हत्यकाि ि होदय बाव्ज गेलाह।

सासु अपन ि ायक ि ि ति कि काणि े गुि सधने ि हली। फेि बजनाई शुर केलव्स: "देखि ु पाहुन! ई बाह णक बेटी ि ैक। एना कोना हेतव्स? वि ि ाहि एक के कहैत अवि सात-सात जनि कि सम्बन्ध ि ैक। उठि ु आ दुनू वि लि क’ ि हि ु।"
बेटी व्दस तकैत ि ाए बजली: "सोना, एना नव्ह चलैत ि ैक जीि नि । दुनू गोटे व्हल-वि लि ि हू। सब चीज़ नीक ि हत। जाउ घि ।" ई कहैत ि ाय बलपूव्बक बेटी के पाहुन सङे घि व्दस ल’ गेव्लह। आब सब क्कि ु साि न्य र’ चुकल छल। घि ि आवा आ घी केि सवि धा

एकवरत छल। केलि होरि कबाक रि फुकक पयोजन छल। ई पयोजन कन्याक ाए पूरि केलक। अवाम सुगंधित र' धू-धू पजएि लागल। दू देह एक र' गेल। सािहत्यकार िहोदय के एिह व्याहता ि आधुिनका देखाय लगलक। दुनू थित र' गेलाह। ओिह िदन एक आर बात रेल। पेिक अवाम ततेक पबल िलक दुनूक जे ओही िित आ कण नाियका के गरभठहव ि गेलक। विाहक, अिह तिहे एक उदेश्य पूिर र' गेलक।

सोझे साल िबिगिन र' गेलक। जिहया सँ नाियका अपन सासुि अएलह तिहया सँ सािहत्यकार फेिर अपन उग रप ि आिब गेलाह। िवि-वाट शुर रेल। कखनो डंडा सँ त कखनो बेल्ट सँ। किहयो-किहयो आनो चीज़ सँ पहार कैित हिला। संगवत साफे बन्द। पूणभ विरि। यातना अबाध गित सँ चलैत हिलक। एक सािहत्यकार अपन कुकृत्य सँ दोसर सािहत्यकार लेल सािगीक ओविओन कैित हिला। नारिक शोषण होइत हिल। शोवाताक गरभि शोवातक बीज पनपैत हिल। विनाशक िकया ि कािणक पिकया अपन थिरप पकैित हिल।

कोनहुना अपन सासुि ि हैत नाियका एक पुरीक जन्ि देलीह। पित सँग वथिित नकभजका र' गेलक। बहुत यत केलीह िदा असफलता हार लगलक। यातना सहैत-सहैत तन -िन जबाब द' देलकक। सासुि सँ नैहर आिब गेलीह। केश चललैक।

अिह बीच सािहत्यकार अपना सँ 18 िषि िट लड़की सँ चुपे-चाप विाह क' लेलाह। ककिर कानो ने लागय देलाह। डि िलक नौकिर चकल जेतक। नाि बदनाि र' जेतक।

बाद ि विधिवति तलाक र’ गेलक्नि। आि जे केला से केलाह। एक नीक काज जर ि केलक्नि जे अपन जनि ल बेटीक विाह अपन अजिल पाई सँ नीक जका करि देलविन।

हुनक पती सेहो अपन जीनि अपने जका वजबक कोविशश करैत विि त’ लोक हुनका नीक-अधलाह कहैत िक्नि। यैह विक साविजक ियादा। यैह विक िहानता। साविहत्यकाि िहान रेल िवि। नािी चेतना, साविहत्य आ संगाि केि बात करैत िवि। एक दू आधुनिक आ तािकविित विदुक्नि हुनकि सब कृत्य आ कुकृत्य बुझैतो हुनका हँ ि हँ विलबैत िवि। विषि साविहत्यकाि लोकक्नि कविाक लोरे हुनका सङे घुिित िहैत िवि। हुनक यशक झंडा फहविबैत िहैत िवि।

हालक्हं ि एक निविद्त साविहत्यकाि के एक्ह तािकविित िहान साविहत्यकाविक पूविपती जे आब तलाक शुदा आ पविित्यक्ताक टैग सँ जानल जाइत िवि, रेटलविन्ह। निविद्त साविहत्यकाि हुनका लग गेलाह। अपन पविचय एक साविहत्यकाविक रप ि देलक्नि। पविित्यक्ताक ददभसाविहत्यकाविक पक्ष घृणा बक्ष जीि-रटा जका फुइट पड़लक्नि। अपन ब्लाउज खोक्ल एक-एक दागक पदशभ करैत बजली: "कही एहेन साविहत्यकाि त’ नक्ह िी अहुँ जे अपन पती सँग जलाल जका व्यविहाि करैत िी।" जखन जीिला फ़ुटले िहिक्न त’ अनेक तहिक नीक अधलाह बात सेहो कक्ह देलविन, जे कोनो नाजायज नक्ह िहैक।

बात एतहुँ कहा सिाप्त होइत अवि। साविहत्यकाि अपन दोसि पती के सेहो यातना ि खिने िहैत िवि। िािित-पीटैत िवि। आधुनिका

सब सङे घुिमैित िवि। खूब सािहत्य िलखैत िवि, खूब राषण करैित िवि। सािजक एक तबका एिह िहापिकत के आइकॉन बना िखने अवि। हुनक पिि पती के पिवतयिकता आ कुलकणा कहैत अवि। एकिा की कही? ई बात पाठक पिििवड़ दैत िी।

पिवतयिकताक िलखल आ ऐितहािसक थरिपक की बात किी, अपन आँिख सँ अनेक थरिप देखने िी। कतौ पिवतयिकता समबन्धी िहकल िवि त' कतौ पिवतयिकता बनबै बला। कतौ पिवतयिकता त' कतौ दुदैिक िािकल पिवतयिकता।

एक उदाहिण िविकर अवि जे सािजक ािनवशाकता के आईना देखबैत अवि। से की? ई किा पािमर होइत अवि एक अित सािान्य पिििािकि युिक सँ जे अपन ािता-ािताक एसगि संतान िला। B. Com किैित देिी दिकण ि कतौ चाय बागान ि डेप्युटी ैिनेजिक नौकिी लावा गेलक।

हुनका गाििक बगले के गाििक एक कन्यागत िजनका 4 लड़की िि िलक, नीक पैसा दहेज दए अपन जेठ बेटी सँ िविाह किा देलविन। कन्यागत किि नवह अवातु बहुत ािस फुइस बाजल िला। लड़की पढ़िल नवहये जका िहैक। साकाक सेहो नवह, बिलक कवा अकान जका। देखबा सुनबा ि ििदा अपूिभा िगि-िविगिक गहना, िथर, पसाधन सँ सजिल। बिकाकया के देखैत दंग। चतुिि कोना िातलै से बुझबे नवह केलाह। चतुिि पात अपने सङे कोयंबटूि हनीािन लेल वादा रेला। जखन ओतए गेलाह त' जात रेलक जे लड़की साफे साकाक नवह ैिक। ितयकिभतक कबिाक नीक सँ चेषा नवह ैिक। आब की हो? तेसिि िदन िपस आिब गेलाह। सासुि आिब

सासु आ ससुि के सब खेिहा कहलविन्ह। ससुि उतिा देलविन्ह: "अपने उदास नञि होउ पाहुन, अहाक सासु सब बात बुझा देतीह।" ई कहैत ससुि दबिजजा दिस चलल गेलाह।
सासु लग अबैत नहुँ-नहुँ कहलविन्ह: "पाहुन! ई नि िाट नञि करि ु। हि सब हुनकि विाहि अपन दोसि बेटी सँ करि देबनि। दोसि एकि सँ 2 बिखिक िाट अिछ। सभगुणसम्पन्न िअि हुनकि साव।

शीािन िनेजि साहेबक चानी। हुने सँ साव पाहुन लग आबा गेललह। सब कि ु नाहिि। बहिनोई सँग सब कि ु कएि लगला जे एक पति-पतीक बीच बन्द घि ि अन्हािि होइत िक। अहि कि ि 7 ािस बीत गेल। 7 ािस ि सोझे साल हुनिगानि रेलनि। हुनिगानि ि साव कोना अबातविन? उपाय नञि ालनि। तावं पती एलविन। गाि अबाते देि नि पुतोहुक असलियत सबके लावा गेलैक। आब की हौक?
पविािि ि हुनको सबिेटी गिब ु दा अतीि सुनव। तुित लड़कीक बाता विाहिक करिदन रेज देलविन। शीािन िनेजि साहेब बासव गेलाह जे ओ सात ािस धि अपन साव सँग गुलिि उड़ेने िला। सब िचिन बासव गेला। सब ियादा धो-पोविक चाब्ट गेलाह। अपन दुखड़ा गबैत िहला। िाए-बाबाताइन सब अतबे कहविन्ह: "धन कही एकि जे सात ािस धि एहि अकान आ बकलेल काकिया सँ कोना बातेलक! एकि आब शीघ अहि जंजाल सँ ुिक्त रेटक चाही।"
अपना पति एहि तिहक सहानुरूिा पाबा शीािन िनेजि साहेब िनि-िनि गदगद िलाह। विाहि तय र' गेलनि। पिि पतीक सब साािन, िथिर, गहना, रक्ष-जात िखि ािते-ािती ािव पीट क' सासु रगा देलविन्ह। काकिया िड़ेक करिदन अिशष्य केललिन जे हुनको हि'

देल जाक्त। ुदा के सुनैत अवि?

आब शीीनि िनेजि साहेबक दोसि पती हुनका ई आदेश, क्तदेश द' देलवि न्हि : "जाक्ह क्तदन अहा पक्हल पती के अपन घि घुसा लेब ताक्हये क्तदन हि िहुि खा आतिहत्या क' लेब।"
िनेजि साहेब एकाएक एक पिि पतीरक्त पक्त बनैत बजला: "िि-िि! अहा की बजैत िी? विि िह सँ आई धवि हि एकि शिीि नक्ह िूल। आब घि घुसेबाक कोन पयोजन?"

िनेजि साहेब के िशि ृकि दोसि पतीक संतान सँ होयि लगलक्त। बेटी-बेटा-बेटी। सब हिकि िह िसि पि गाि आबवि। गाि अक्बातक्हं नक्ह जाक्त कोना पिि पती जकिि अड़ोस-पड़ौसी सब क्बयहुती कहैक बुक्झ जाइक। िक्त क' आक्ब जाइक। ुदा, रोजन त दूि िनेजि साहेब केि िय क्बक्तयाइन सब सिनि िीन िवि-क्बाट क' रगा दैत िलवि न्हि। बेचाििि थ्िताक वरखि गिी बनल अवि। ुदा क्तयोक िनेजि साहेब के इहो नक्ह कक्ह सकलक्त जे ओकिि अपना घि पि कि सँ कि अन-िथ्रि क्तदयौक। आसिि क्तदयौक। ऊपि सँ बाप-संबंधी सब सेहो ओक्ह अरगली पवि त्यक्ता के िििित पीटैत िक। जीिनि नकभ बनल िक।

एक्ह पकणिक जक्ड ि अगि चली त' एक्ह पवि त्यक्ता के पवि त्यक्ता बनेबै ि पिि दोख ओकि क्बाता के िक्त। जखन हुनका बुझल िलक्त जे हिि बेटी एहेन अवि त' विि िह कविलेल किि देलवि न्हि? ओक्ह पैसा सँ ओकिि लेल कोनो विहैक्बक्लटेशन सेन्टि अििि क्तिु आिि क' सकैत िला। से नक्ह केलक्त। जखन जिि य बेटी के

ि क्ड़ देलविन्ह त' ओकि जीनि लेल कोनो इंतज़ाि कि ि लक्त। दोसि दोख िनेजि साहेब के? अगि साविस सँ विाहि नक्ह कबाक ि लक्त त' संबंध कोन काणि सात ािस धवि िखला? पुनु श, अगि दोसि विाहि केलाह त' पि ि पतीक सब कक्ि ािपस कविलेल नक्ह क' देलविन्ह?

एक्ह पकणि ि दुनू पक्क साजि सेहो ओक्हना पातकी अवि।

अनुरि कि कि अनंत अवि। ककि कही ककि ािड़ी? कहब तखने बात फविायेित। क्बना कहने कोना बुझबैक?

एक दृषािन्त हाले के अवि। से की? एक क्यक्त विाहि केलाह। विाहिक एक षिक्ष बाद कतौ नौकिि लेल गेलाह। जे गेलाह से 3 षिभ धवि एबे नक्ह केलाह। सब उपाय रेल। जगह-जगह लोक पहुचल। ािना-पुक्लस ि पिट क्लखा देल गेल। ािदा कक्ि ने रेल। अंत ि ओक्ह युकि के ािता-क्ाता हुनक पतीक विाहि ओक्ह युकि सँ ािट राई सँ कि देलविन। पविाािि चलए लगलैक। थ्री ािक्त लेलक जे हि ि पि ि पक्त आब एक्ह संसाि ि नक्ह वि, त देओि संग विाहि कि ि कोनो हजभ नक्ह। पक्हल पक्त सँ एक लड़की िहैक। दोसि पक्त सँ एक बालक। सब कक्ि पटिि पि क्ाक सँ चलय लगलैक। किब 9 षिक्ष बाद एकाएक ओक्ह क्हलाक जीनि ि रूचाल आक्ब गेलैक। पक्हल पक्त कक्ह नक्ह कोना कतए सँ ािपस घि आक्ब गेलैक। अपन पती लग गेल। बाद ि पता चललैक जे ओकि अनुपक्थिक्त ि ओकि ािट राई सँ विाहि र' गेल िक पक्हल पती के। बेचािि क्हला दू नाि ि कोना पैि िखत? बड़का सक्थ्या। पक्हल पक्त ओकि पि अपन अक्धकाि जतबैक। दोसि पक्त कहैक जे हि त' सब चीज़ अधिाविि क' विाहि केने िही। दुनू राई ि दन्द्द चलैत िहलैक। अक्ताि क्ाणक्ष ई रेलैक जे क्हलाक पि ि पक्त

दोसि कोनो लड़की सँ विाहि करि ु। जखन से र' गेलैक त' ाािला सुलझ्झ गेलैक।

विविला ि एहनो विधान हिल अवि जे जाक्त-ूिलक नाि पि एक आदिी 20-25 टा विाहि क' लैत िलाह। एक दू िावि अवधकाश पती पवितियक्ताक जीनि जीबैत िली। पवितियक्ताक अिभकेिल अन-थ्िर-थिानक तकलीफ अिाि साािवजक ियादे नवह अवातु शािविकि, ािनवशाक सुख स िक्चत हएब सेहो रेल। जखन लाचाि रेल अवह तहिक क्थर गम करि ु दोसि पुरष क्दस देखैत िवि त' सािज हुनका कुलटा, कलघ्वज, अपविर, ्ष, दुशविर आ ने जाक्त की-की कहैत आवा हिल अवि? कनकको डाईन त' कनकको डावह कवह टाचभि कैल जाइत िक्त। सािज बौक बनल हैित अवि। धनक इचिाक पूक्तभ र' सकैत अवि, तनक इचिाक पूक्तभकोना हएत?

खादी आ विविला/िधुबनी पेक्टंग केि शुरआत रेला सँ बहुत पवितियक्ता अपन आविक्घ ियादाक िक्त कबाि ि सफलं हिक्ल िवि। पेक्टंग ि पदशी गंगा देिी, गोदािी दताक काि सबके बूझल अवि। खादीक आगिन सँ कतेको पवितियक्ता अपन अन, थ्िरक उपाजभ कबाि ि सफल रेली। अपन सोच, अिािन, सपना, सृंगाि सब करि ु खादीक ताग ि देखनाई शुर केलक्त। कलातकिता अपन पािकाषा पि पहुँच गेल। विविलाक सूती खादी देखैत-देखैत सािथ्क्त रािति ि अपन क्विनी, कलाकािी आवद गुणक कािणे पक्सद र' गेल।

हि ािनिशािथ्र, कला-इक्तहास आ ािनािवधकािक ािर हिल िी। आवदािसी आ गािीण सािज ि काज कैित आवा हिल िी। आवदािसी सािज मे कोनो कािणे अगि पक्त-पती ि नवह पटलैक त' पक्त-पती

दुनू के ई थितंरता ैक जे अपन जीनिसाि ी के ािवड दोसि ताकक लए। एवह सँ पवत्यिकता पि एवह तिहे ओवह सिाज ि परािी नवह ैक जावह तिहे अपना सिाज ि।

एक बात आिी हिि ी अचजि ि डालैत अवि। लोक जावह ि वयरग्त सेहो सवकवित वि, सर ककयोक अवह तिहक वधानक पवचालन लेल पुरख सँ अवधक दोष थरी के दैत वि। जखन की सत्य ई अवि जे वपतृसतातिक सिाज अपन जाल ऐना ने बवि ने अवि जावह ि सािन्य के के पुित अवि आधुवनका आ पविल विहला सेहो फंवस जाइत वि। अंत ि अतबे कहब जे पवत्यिकता थरी सिाजक सथियिा नवह अवि। ई ािनकि सथियिा अवि। एवह पि गंरीि बनक जरति अवि। सबके एक संग आवब संगोि कवत अवह सथियाक वदान वकलबाक अवि। अवह अवरशाप के सिाप्त ककि अवि। से रेल तखने हि सब गभिसँ कवह सकैत िी जे हि सब पगवतक पि पि बवढ़ हिल िी।

गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी श्छनाश्च: मधुशावणी कि केर दंद?

मधुशावणी कि आ पाबश्च मनुक्ख आ पकृश्च, लोक आ शास्त्त, स्त्री आ पुरख,बूि आ नव, पेम आ केश्च, पाश्चश्च श्चाकी संतुलन केर सहज रपे श्चश्चलाक अदुत परंपरा अश्छ। एकर जतेक चचवहो से कम। एश्च पाबश्च के, एकर सब कि , उपकि , पसंग, उप-पसंग के नीक सं बुझनाई, कि के श्चश्चलाक श्चश्चान केत्त मे उपलब्ध अंतर के संकलन, ओकर घमि श्च, समाजशास्त्तीय-मानवशास्त्तीय-मनोवैजाश्चक श्चश्लेषण जररी अश्छ। दुभाग्य सं इश्चहासकार, समाजशास्त्ती, मानवशास्त्ती, मनोवैजाश्चक आर-त-आर साश्चत्यकार लोकश्च सेहो एकर बहुत श्चवेचना नश्च क सकलश्च अश्छ। ई श्चंताक श्चषय अश्छ।मानवशास्त्त मे एक शब्द होइत छैक “enculturation” जकर अ विभेल जे लोक कुनो चीज, लूश्च, जान, भाव, परंपरा आश्च स्कूल अ िवा क्लासरम अ िवा कुनो श्चशेष श्चाक्क या श्चाक्का सं नश्च बश्चक लोक व्यवहार के देखैत, ओकर अनुशरण करैत श्चना बुझने आ पयत केने श्चखने जैत अश्छ। नश्च श्चखबला/बाली के आ ने श्चखाबय बला/बाली के एकर श्चश्चा भान होइत छैक मुदा ई सामाश्चक जान के एक पीढ़ी सं दोसर पीढ़ी मे हस्तातश्चत श्चश्चश्च रप सं होइत रहैत छैक चरैवेश्च-चरैवेश्च। अपन अल्पजान सं मुदा मैश्चिली संस्कृश्च के श्चनेह के कारण मधुशावणी पर हम श्चकछु काज क रहल छी। पश्चश्चन नव बात जात होइत अश्छ। श्चवेचन नव श्चशा श्चस संकेत करैत अश्छ। इम्हर अपन माय लग पुनः तीन श्चन धश्च अश्च कि के बुझबाक पयत कैल। लागल, ई कि आ पाबश्च त पुरख केर पूजाक एकाश्चकार के सोझे-सोझ चुनौती द रहल अश्छ। कि सुनश्चहाश्च मश्चला, कि कहश्चहाश्च मश्चला, कि केर

सामगी, श्वध, श्वधान, सब श्वकछु बताबय बाली मश्वहला, पुरख मे मात अश्वताम श्वदन वर आ ओहो मश्वहला के इसारा पर चलयबला यंतवत पाणी! बाश्वक सब चीज़ मे पुरख के एन्री बन्द। श्वकछु लोक एक पशउठोलश्वथ। ई श्वमजासा पश्वहने बि पभाश्वत नश्वह केलक सोचलहुँ, कश्वथ लेल घमश्वब कर? लेश्वकन एखन भेल जे िकि सोची जे आश्वख र ऐना श्वकयैक छैक - गौरी आ श्वछनाश्व?

एकरा कोना कही? जौ शास्त्र धेने रहब त एकर उतर असंभव। धमाश्वधकारी सब आि मण करता। लोक सँ करब त समाधान के सश्वमप आश्वब सकैत छी।

लोक आ शास्त्र मे एक अंतर स्पि छैक - शास्त्र फेम मे बज गाठ सनक बान्हल छैक। ओश्वह फेम सँ बाहर एबाक कल्पनो असंभव। ठीक एकर श्वपरीत लोक फेम मे रहैत अश्वछ लेश्वकन आवश्यकता भेला पर फेम सं बाहर एबामे मे कश्वनकबो संकोच नश्वह होइत छैक।

लोक पेम मे भक्त आ भगवान श्वपत जका, नौकर माश्वलक जका, पेमी-पेश्वमका जका व्यवहार करैत अश्वछ आ ओश्वह व्यवहार मे शास्त्रक गुण, श्वाक्त, संस्कार सश्वम्मश्वलत रहैत छैक। लोक भगवान के आन नश्वह अपन बुझैत अश्वछ। अपन नश्वह अपन पश्वरवारक मनुख बुझैत अश्वछ। सब श्वनराकार सब गुणे साकार भ जाइत छैक। भगवान लोक मे मनुखे जका व्यवहार करैत छश्वथ। ई बात शास्त्र मे संभव नश्वह।

लोक महादेब के ‘‘उगना’’ बना दैत अश्वछ। सबरी लोक अश्वछ जे अपन श्वनश्छल पेम मे राम के आश्वह वैर खुआबय मे संकोच नश्वह

करैत अछि। सधना जाट भगवान के पहिने भोजन करबैत अछि तखने अपने खाइत अछि। संगायत समाज के एक महिला हमरा कहलक: "देखू, महादेब के ने माय ने पिता; ने भाई ने बहिन! बेचारे बाल रूप मे हमरा लग हमर गाय केर बछिया बनि हमर गौशाला मे खुटेसल रहैत छथि। अगर सदी भ गेलनि, नाक सँ पानि बहै लगतनि त के पोछतनि? के तेलक मालिश करतनि? चलु छोड़ू सब के हे बाऊ महादेब। आई सँ हम अहाके अपन बेटा बना लैत छी। हम तेल-कुर क देब, नाक पोछि देब, काढ़ा पिया देब"।

सब सँ पैघ बात ई जे ई महिला अधिकार भाव सँ बजैत छथि। जे बजैत छथि सैह करबाक इच्छा सेहो छलैक।

ई भेल लोक अथवा लौकिक के शक्ति। एहेन बात अथवा व्यवहार शास्त्र के ज्ञाता अथवा विद्वान/विदुषि नहि सोचि सकैत छथि।

आब बात करी मधुशावणी पावनि आ कथा मे ओ प्रसंग जाहि मे गौरी लेल अछिनायि शब्द के प्रयोग कैल गेल अछि।

कथा के अनेक स्वरूप अछि। लेकिन सब स्वरूप मे अछिनायि शब्द के प्रयोग कैल गेल छनि।

मधुशावणी के प्रयोजन नव विवाहित लड़की के जीवन के सब किछु के व्यवहारिक ज्ञान देनाई अछि। व्यवहारिक ज्ञान मे शास्त्रीय ज्ञान सन्निहित छैक।

अगर मधुशावणी के कि के सब पसंग आ उपकि के देखब आ गुनब त लागत जे किछु बाचल नहि अछि। एक गृहणी के जतेक जान चाही सब किछु घोरि-घोरि एहि कि के मादे सिखा देल जाइत छैक। गौरी देवी के भूमिका के छोड़ि एक आदशव स्त्री के भूमिका मे छथि जकरा सामान्य स्थिति मे अनेक तरहक परिस्थिति के सामना कोना करक चाही तकर पैघ-छोट सकल जान भेटैत छैक।

अहि पसंग मे गौरी के भूमिका एक एहेन शाक्तिका के रप मे छथि जे नारी मनक दंद के समाधान करैत छथि। महादेब के भूमिका एक एहेन पतिक रप मे छथि जे पती के भम के दूर करैत छथि, अपन पती के सम्मान करैत छथि आ हुनक सम्मानक आ शब्दक रक्षा करैत छथि। संगहि महादेब गौरी के मयादा के भान सेहो करबै चाहैत छथि।

एहि सम्पूणव उपकि मे स्त्री आ पुरख एक दोसरक पूरक छैक। दुनू के एक दोसरक मयादा के चिंता छथि। गौरी तीन स्वरप - डाईन, चोरनी आ छिनारि - मे ई संवाद सिद्धित करय चाहैत छथि जे शंका आ जिजासा मनुखक पाकृतिक गुण छैक। एकर पमाणिकता के परीक्षा करब अनिवायव। दोसर दिस महादेब अपन कृत्य सँ ई पमाणित करय चाहैत छथि जे पति-पतीक संबंध विशास पर टिकल रहैत छैक। अहि विशास के सम्मान आ रक्षा करब दुनू के सामूहिक जिम्मेदारी होईत छैक। अविशास सँ संबंध टूटैत छैक।

बात गौरी आ शिव के होईत छैक तहि उपकिक विषय वस्तु ओहने छैक। महादेब तंत के जनक छथि। ताहि बात डाईन के भ रहल

छैक। गौरी डाईन बनय चाहैत छथि। महादेब ई कहैत छथिन जे ई कायवसभक नहि छैक। गौरी के दक्षिण दिशा के गाम मे जेबाक लेल मना करैत छथिन। गौरी कोना मानती? सिखनाई शुरु करैत छथि। बिना कहने महादेब साक्षी रहैत सब क्रिया के देखैत अपना कंट्रोल मे लेने रहैत छथि। आ जखन गौरी चुपचाप डाईन केर सब मंत पढ़ि सिख जाइत छथि त गौरी अपन पुत गणेश आ कार्तिक के कोढ़ करेज देखै लगैत छथि। आब महादेब गौरी के पकड़ि लैत छथि आ कहैत छथिन: "हद भ गेल? हमरा मना केलाक बादो अहा गेलौ दक्षिण कोण मे?"तामसे भेर महादेब कहैत छथिन जे पूरा तंत डाहि देथिन। तुरत गणेश एक-एक मंत सिखने जाइत छथि आ कार्तिक डाहने जाइत छथि। गौरी के होइत छन्हि जे तंत कम सँ कम मूल रुप मे बचि जाइक। साबर मंत मात अढ़ाई आखर के होईत छैक जकरा कार्तिक सँ चुटकी मे चोरा लैत छथि। चोरेबक उद्देश्य मंत अविवा परम्परा के रक्षा छैक आर किछु ने। हमरा एना बुझना जाइत अछि जे एहि पसंग के प्रासंगिकता एहि बात मे छैक जे एक सफल गृहणी के सब तरहे अपन घर आ गृहस्थी के रक्षा करक चाही।

आब गौरी चोरनी छथि ताहि पकरण पर आबि। बहुत बेजोड़ पकरण अछि। आ एकर आधार सेहो गौरी तैय्यार करैत छथि। गौरी महादेब सँ आगह करैत छथि जे अगर किओक चोरी करैत अछि, किम्बा छिनरपन करैत अछि त ओकरा शरीर मे किछु एहेन चिन्ह अंकित भ जैक जाहि सँ जन-सामान्य के ई सिख भेट जाइक जे एहेन काज नहि करी। महादेब ना-नुकूर करैत गौरी के आवेदन मानि लैत छथि।

एक बेर पुनः गौरी मयादा के लाघेत छथि आ महादेब के मना केलाक बाद एक गाम मे भाटा चोरी करैत छथि। श्मशान के रप मे जखना-जखना गौरी भाटा चोरबैत गेली तखना-तखना नागथि बढ़ैत गेलथि। जखन गौरी के भान होईत छथि त महादेब सँ आवेदन करैत पुनः ओकरा समाप्त करय कहैत छथि। ि र होईत छथि कथाक अवशेष थानक रप मे रहक चाही। आ कहैत छथिन जे श्मशान मात ई जानवर मे होबक चाही। सैह भेल।

आब थुनाथ बला पकरण मे अबैत छी। एक बेर पुनः महादेब के मना केलाक बाद नहथ कात मे गेलथि। महादेब माल्लाह बनला। नाव पर राश्ता कटैत काल माल्लाह गौरी के कखनो गाल छुथ लैन।कखनो चुटी काथ लैन। भाव उतेजक भेल गेलथि। जेना-जेना केथ भाव मे गौरी मगन भेली तखना-तखना हुनकर माि पर थांग बढ़ैत गेलथि।

मल्लाह जाल खसेलक। गौरी माछ थछलथि। एकर ि ायदा उठबैत मल्लाह गौरी सँग एमहर-ओमहर करैत केथ थ्रीया के सेहो आनंद नथ-नथ करैत लैत रहल।

केथ होइत गेलथि आ थांघ बढ़ैत गेलथि। आब गौरी के होश एलथि : "हे भगवान! ई की भेल? आब की हैत?''

यैह सोचैत गौरी अपन थांघ के साि ी सँ झपैत गेली। मुदा थांघ बथ्ढ़ते गेलथि। अंततः महादेब सँ आवेदन केथनि: "गलती भ गेल हमरा सँ। ई मलहबा अपन सीमा नाघ्थ गेल। छू-छाप हमर पथाशोध

के बादो कथ्वते रहल। एकरा केश्वा कहनाय उश्चत नश्च। गलती सँ हम कश्च देलौ जे थ्वन्ह द श्चयौक। एकर उपाय अहा बताऊ?"

महादेब कहलथ्वन: "हे गौरा, हम त कहने रही अहाके जे श्वशान के चकर मे नश्च पर। मुदा अही थ्वद ठाश्व देलौ जे द श्चयौक। लेश्कन अहा थ्वन्ता जूश्व कर। ओ मलहबा श्कयोक आर नश्च छल। हम रही। ताश्वं अहा श्छनाश्व नश्च भेलौ"।

महादेब बश्मते रहलश्व: "हमरा बुझा गेल जे अहा तथ्य के जानय चाहैत छी। हम सोचलहुँ, से त ठीक मुदा कही ऊंच-नीच भ गेल त की हैत? सैह सोचैत स्पयं मलहबा बश्व अहा लग गेल रही। अहाक चश्वत बाचल अश्छ। अहा अनेरे थ्वंता जूश्व कर"।

गौरी के भेलश्व जे ओ अनेरे महादेब पर शंका केलश्व। कहलथ्वन गौरी: "हे महादेब! हमरा सँ गलती भेल। आब अहा एकर उपाय कर। श्वंघ त कोनादन लाश्व रहल अश्छ"?

गौरी श्चस देश्व हँसैत महादेब आब श्वंघ के समाप्त करय लगला। गौरी कहलथ्वन :"एक काज कर, कश्व नाममात श्वंघ रहय श्चयौ जे मृतभुवन मे जानवर के श्वंगार बनत"। गौरी के बातक सम्मान करैत महादेब नाममात के श्वंघ रहय देलथ्वन जे कथाक अनुसार आजुक जुग मे जानवर सब मे भेटैत अश्छ।

लोक व्यवहार के अनुरपे अगर कथा के श्ववेचना करब त लागत जे गौरी एक सामान्य हाथ-मासक मश्वला बश्व श्वाक्त दैत छथ्वन।

गौरी कदाखचत सब मखहला के ई खसख दैत छखथ न: "एखन धखर जे गलत-सलत केलौ से खबसखर जाउ। आब अपन दाम्पत्य जीवन मे संलग्न होउ। पत्नी-पती के बीच आपसी पेम, खवशास बनल रहक चाही। इखतहास के छोखड वतर्मान आ भखवष्य के खचंता होबक चाही''। शास्त्त केर गौरी भले एहेन बात सोखच नखह सकैत छखथ, लोकक गौरी अपने समाजक मखहला बखल्क समाज के जन सामान्य मखहला के मानखसकाक अवस्था के देखबैत चोरनी, डाईन आ खछनाखर बखल्क एक नव खसखक परम्परा स्थाखपत करैत छखथ। एकर नाम जे द दी यथाथर्वाद(realism), लोक परंपरा केर शखक्त, व्यवहाखरकता, पुरुख-पकृखत के समावेश अथवा आरो खकछु। समग्र रूपे ई अद्भुत परंपरा अखछ।

हा, खमखथला मे मधुशावणी पाबखन केएक बात कखन कचोट करैत अखछ आ एकर सावर्भौखमकता पर भले खकछु की दोगे कखथलेल नखह मुदा चैलेज करैत अखछ: ''ई कुन कारण सं खमखथला के सब जाखत मे समाखहत नखह भ सकल आ बाह्मण मात मे नुकायल रखह गेल?'' भले ई पशन छोट लगैत हो लेखकन एकर उत्तर देनाई अतेक सहज नखह अखछ। उत्तर तकला सं एकर एक नव आयाम ठाढ़ भ सकैत अखछ?

पूरा कथा सुनलाक आ बेर-बेर मनन आ खववेचन केलाक बाद अखह खनष्कर्ष तक याता कैल. पाठक के भावक पतीक्षा रहत।

आभार: अपन माता शीमती खशवदुलारी देवी के कहल कथा के आधार पर एखह पसंग पर चचार कएलहुँ अखछ।

लघुकथा- पुरुषक नोर नहि खसैत छैक

आशुतोष गोडडा सं छला आ सैनिक स्कूल तिलैया सं 12वी पास केलाक बाद दिल्ली विश्वविद्यालय मे बी एस सी मे नामाकन लेने छला। पढ़ाइ मे तेज आ अपना विषय के पकड़ राखऽवला छला। भाषा मे बहुत नीक पकड़ छलनि जाहि कारने वाक्पटु आ वाद विवाद मे बहुत चर्चित छला।शब्द केर पयोग, ओकर उचाचरण, लालित्य सब किछु मे बेजोड़ छला आशुतोष।ई एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार सं छलाह। तीन भाई एक पैघ एक छोट आ आशुतोष बीच मे।आशुतोष केर जेठ भाय हुनका सं तीन वर्ष केर पैघ आ ओहो सैनिक स्कूल तिलैया केर छात्र।हुनक पिता छोट छीन सड़क इत्यादि के मरम्मत के ठीकेदारीकरैत छलथिन आ घर इत्यादि सम्हारक काज आशुतोष केर माय जे की चतुर गृहणी छलथिन करैत छलथिन। कहियो नहि कहि लेल आशुतोष के सैनिक अधिकारी बनबाक भुत नेने सं सवार छलनि। हुनकर जीवन केर एक मात्र उद्देश्य सैनिक अधिकारी बनब छलनि। अपन कका केर एक लड़की चंद्रकला सं नहु-नहु आशुतोष केर सामीप्य भ रहल छलनि। ओना पारम्भ मे ई सामीप्य सहज आ पढ़ाइक विजाती धरि सीमित छल मुदा बाद मे बात-बात आगा आ पगाढ़ होइत।

आशुतोष जखन बी एस सी मे पढ़ैत छला ताहि समय अपन क्लास केर सब छात्र संग मिलि वकवलेल एक आत्मीय पोर्सिर के संगे गुजरात गेल छलनि। ओतय मनोयोग सं काज केलनि। करीब 25 दिन रहला। हुनका संगे चंद्रकला सेहो छलथिन। चंद्रकला सावंली, सुनदरि छथि। अति संस्कारवती। चंद्रकला केर पिता इनकम टैक्स केर कमिशनर छलथिन। दू भाई के बीच असगर बहिन। चंद्रकला

बीच मे एक भाय जेठ आ एक छोट। उपर सं जेठ भाय आई आ भाउज दुनू आई आर एस आ इनकम टैक्स विभाग मे पदाधिकारी। मुदा अहि बातक लेशो मात घमण्ड नहि छलन्हि। चंरकला सामान्य वस्त्र पहिरैत छली। मेक उप सेहो नाम मात। अपन पैघ-पैघ आंखि मे काजर जरूर लगबैत छली जे हुनका सौन्दर्य के कतेक गुणा बढ़ा दैत छल. चंरकला केर पहचान हुनकर सहजता, लज्जा भाव, आ पढ़ाई मे समर्पण छलन्हि। आशुतोष संग काज करैत-करैत नहि कहि कोना चंरकला आशुतोष संग पेम करे लगलन्हि। आशुतोष के सेहो एहि बातक भान जल्दी भ गेलन्हि। बिना बिलम्ब केने आशुतोष सेहो अपन ठोर मुसकियबैत चंरकला के अपन पेमक स्वीकृति द देलथिन। चंरकला के एकाएक भेलन्हि जे समस्त संसार केर ि शी जेना हुनका तुरत भेट गेलन्हि। मोन भेलन्हि जे मस्त भ सरिसो के खेत सं भरल खेत मे नृत्य क सरिसबक पीयर ि ल सं भरल खेत मे घुसबो केली। दुनू हा ि आसमान दिस उठेली आ सिनेमा केर गीत "चलती थि र ं उ ती चलूं आज गगन मे" गेनाई शुरु केलन्हि। एकै आखर के बाद लज्जा आ हुनकर संस्कार जेना चंरकला के हा ि पकड़ि रोकि देलक? ि थि गेली। भेलन्हि "ई की भेल?" यैह सब सोचैत-सोचैत नहु-नहु चलय लगलन्हि। करीब पाच डेग चलल हेती की कनि दूर सं आशुतोष केर हाकब सुनेलन्हि: "चंरकला, चंरकला? कत छी?"

आब चंरकला आरो साकाक होइत झट दनि सरिसबक खेत सं बाहर आबय लगली. लाज होम लगलन्हि, "कही आशुतोष हमरा हा ि ऊपर केने सरिसबक खेत मे गबैत आ नचैत त नहि देख लेलन्हि? हे भगबान! अगर देख लेला त की सोचता?" अहि तरहक भाव मोन

मे बेर-बेर आबय लगलथि। डेग झटझारइत खेत सं बाहर आबय केर उपक्रम केली। अही बीच आशुतोष आबि गेलाह अकचकाईत पुछलथिन: ‘‘की भेल चंरकला! अहा खेत मे की क रहल छी? हम अहा के बगल बला गाम मे किछु जानकारी लेबाक हेतु अपना संगे ल जाय चाहैत रही।"

अकचकाइत अपन वस्त्र आ भाव-भंगिमा के ठीक करैत बाहर अबैत चंरकला बजली: ‘‘कुनो बात नहि। ओहिना सरिसब के फूल देखिक लागल त कनि भीतर खेत मे घुसि गेलौ। देखू ने कतेक सोभनगर लगैत छैक? थ्यल्ली मे की ई भेटत?’’

आशुतोष बिना किछु कहने अपन मुशकान सं हुनकर बात के हा कहलथि।

आब चंरकला बजली: ‘‘चलू ने कुन गाम चलक अछि? हम तैयार छी. हमर रेकाडर, पेन, नोटबुक सब किछु हमरा लगे अछि।’’
आशुतोष कनि रोमाञ्चक भ गेला। एहि क्षण चंरकला हुनका कनि अधिके सुनरि लगैत छलथिन। आगा बढ़ि चंरकला के हाथ अपन हाथ मे लैत कहलथिन: ‘‘हा, सरिसब के फूल त एहि खेत मे सते बडड निक लगैत छैक। मोन त होइत अछि अहि खेत के बीच मे हमहु घुसी?’’

चंरकला लजाईत बजली: ‘‘ठीके घूस चाहैत छी अहा?’’

आशुतोष: ‘‘अहा मोने की झुटे? बहुत मोन क रहल अछि।"

चंरकला: “ठीक छैक। तखन घुसु ने सबसबक खेत मे हमरा लग कैमरा अछ। हम िटो खीचैत छी।"

आशुतोष: “मुदा हमर एक शतवअछ।"

चंरकला: “की शतवें?

आशुतोष: “हमरा संगे अहुं चलू खेत मे। आ दुनू गोटे एक संगे िलक सौन्दयव्र पकृ केर सजल रप आ खेतक हयर-पीयर स्रप के देखी, आहारी आ ओकरा संगे तारतम्य सित करी”। चंरकला लजा गेली। िये के अनय करैत बजली: “न-न अहा जाऊ। हम की करब जाक?”

चंरकला के लजा भाव मे हा अि वा स्ीकारोक्त केर अक्त स्ि देखल जा सकैत छल। चंरकला के पेम मे मग्न भेल आशुतोष जेना चंरकला केर अंतम केर भाषा बु गेला। ना समय बरबाद केने चंरकला के हाि पक खेत के भीतर जाय लगला। उन्माद्त मोन सं न-न कहैत चंरकला आशुतोष संगे खेत मे दा भेली। आशुतोष केर पकि जोर भेल गेल। चंरकला आशुतोष केर हाि क दबाब सं आनंत छली। ाल-ाल अनुराग बढ़ल जा रहल छल। आशुतोष सेहो गदगद छला। दुनू खेतक तह मे घु गेल। आशुतोष एकाएक चंरकला के अपन बाहुपास मे जक लेल। न-न कहैत चंरकला लाजवंती केर पात जका समटल आशुतोष केर शरीरक अत्यक सामीप्य पाप्त पा बैकुंठक सुख मे लीन होमय लगली।

बिना कुनो पश्चाकार केने अपना आपके आशुतोष के उपर न्योछावर भ गेली। एकरा कहैत छैक नैशर्गिक प्यार आ प्यार मे समर्पण। सघन खेत मे िर दुनू के बीच सब किछु भेल जे सािधत आ कमिटेड पेमी-पेमिका मे होइत छैक। हा, अपन मोन के सबल करबा लेल चंरकला आशुतोष के छाती सं सटैत,आशुतोष केर हदय केर केश के जकरैत नहु-नहु कान मे अतेक जरर कहलथिन: ''आशु, अहा हमरा कहियो छोिब त नहि?''

पेम मे शरीर आ मोन दुनू पागल आशुतोष झट दिश कनि ठसकल स्वर मे बजला: ''की कहैत छी चंरकला? हम आ अहा आब कहियो कुनो स्थिति मे अलग नहि हैब। हा भ सकैत छी अगर अहा के हम पसीन नहि आबि आ कुनो अहा के पिता, भाई, आ परिवार के स्टेटस बला भेट जाय।"

चंरकला आशुतोष के एहि बात सं तमसा गेली। कनि रसैत उतर देलथिन: ''की कहैत छी आशु? हमरा लेल अहा सबसँ उतम छी। अहा सिल रहि, असिल रही, हम अहा संगे आनंदित रहब। आई सं परिवार आ स्टेटस के बात नहि होबाक चाही।''
अपन गलती के अनुभव करैत आशुतोष बिना किछु कहने अपन कान पकरैत चंरकला सं माफ़ी मांगि लेलथि। चंरकला सेहो िर सं हुनक छाती सं सटि गेली। दू शरीर एक आत्मा बनि चुकल छल आ आशछल पकृति केर कोरा मे विहंसि रहल छल। ने कुनो छल ने पपंच। ने शहर केर कोलाहल ने िपल स्टेटस केर मयादा। निष्कपट, पाजल, शुद, आ नैशर्गिक पेम। आधा घंटा कोना बीत गेलथि से पते नहि चललथि। एक त निरजन मे खेत दोसर दुपहरिया

के बेर। कियोक नहि एलेक। आधा घंटा के बाद आशुतोष चंरकला के माथ, आंखि, गाल, ठोर आ गरदनि मे चुम्मा लैत गदगद भेला। चंरकला कुनो पकारक नहि केलथिन। अंत मे ओहो एक बेर आशुतोष के पकड़ि ठोर मे चुम्मा लेलथिन। फेर दुनू गोटे चकवा चकवी जका हाथ मे हाथ देने खेत सं बाहर एलथि आ दोसर गाम दिस अपन पिकनिकवला ग्रुप मे मिलेलथि। भरि रस्ता गप्प कम केला मुदा दुनू ख्वाब मे रलथि।

किछु दिनक बाद दुनू आशुतोष आ चंरकला पिकनिक-ग्रुप सं वापस दिल्ली विश्वविद्यालय आबि गेलथि। आब पहिल दिन चंरकला आशुतोष लेल किछु-ने-किछु जरूर लबैत छली। क्लास समाप्त होइते एक ठाम बैसनाई, सिनेमा देखनाई, मारकेट मे किछु खेनाई, आर्ट गैलरी सं किसिम तरहक काडवकीनब ओनिह मे अपन मोनक अभिव्यक्ति करैत एक दोसर के देब, लेब करैत समय भागल जा रहल छलथि। चंरकला केर शरीर के दोसरे रंगक चुहचुही आबि गेल रहथि। मस्त अलमस्त, मुदा संयत भाव सं सुन्दर स्वाभाव आ संस्कार सं। अनुकरणीय, एक पेमक परिभाषा या दृष्टान्त एकरे कहल जा सकैत छल।

समय अपन पवाह सं चलैत अछि। एकर गति पर ककरो नियंतण नहि। चंरकला आ आशुतोष बी.एस. सी. पास केलाक बाद एम. एस. सी. मे आबि गेलथि। आब चंरकला अपन अधिक सं अधिक क्षण आशुतोष संग बिताबय चाहैत चंरकला। अपन पिता आ यूनिवर्सिटी केर एक पोफेसर सं सिफारिस करा विमेस हॉस्टल मे आबि गेली। तकवदेलथिन जे बसचवलेल अपना आपके तैयार करती। पिता आ

भाई कतेक बेर हुनका पशासनिक सेवा लेल पोत्साहित केलथिन मुदा चंरकला अपन धुन मे मगन रहली जे शोध करती आ यूनिवर्सिटी मे पढ़ेती। घरक लोक फिरि क छोड़ि देलथिन।

आशुतोष कॉलेज के हॉस्टल सं यूनिवर्सिटी हॉस्टल मे राघब लग आबि गेला। आब 8 बजे राति धरि आशुतोष आ चंरकला एक दोसरक सानिध्य मे रहे लगलथि। पेम साल-साल बढ़ल गेलथि। विभाग केर सब छात आ बहुत शिक्षक सेहो बुझि गेलथिन जे हुनक पेम सॉलिड रॉक छथि। एहि बीच आशुतोष केर ध्यान एकाएक भारतीय सेना के अधिकारी बला नोकरी दिस चलि गेलथि। अते चंरकला आ आशुतोष मे अंतर छलथि। चंरकला केर इच्छा सामान्य जीवन बिताबाक रहथि। ओ चाहैत छली जे आशुतोष सेहो हुनके जका शोध करथि आ यूनिवर्सिटी अथिवा कुनो कॉलेज मे पढ़ाबथि। लेकिन आशुतोष अपन जिद पर डटल रहला। चंरकला आशुतोष केर भावना के सम्मान करैत चुप भ गेली। चंरकला कनि दब्बु पकृति के छली। कखनो काल आशुतोष हुनकर एहि स्वभाब के गलत फायदा उठबैत छलथि।

आशुतोष केर किछु व्यवहार राघब के अखरैत लगैत छलथि। ओ हमेशा स्मार्ट बनल रहैत छला। फिर सँ बस पकड़नाई, गदर्नि मे स्कार्फ केर पयोग, मोछ के ऊपर ऐंठब, छाती तानि क रहब, गदर्नि ऊंच आ सोझ केने चलब, हमेशा गंभीर रहब, अंगेजी केर उच्चारण आ शब्दाबली पर अधिक ध्यान राखब किछु एहेन गुण सँ युक्त छला आशुतोष। पढ़बा मे आशुतोष नीक छला। कुनो बातक वर्णन अथिवा फिल्ड वर्क केर रिपोर्ट साधल मानवशास्त्री जका करथि। राघब के

जूनियर रहितौ आशुतोष राघब केर भाषा एवं अन्य चीज़ सबके ठीक करैत छलथि न। आर त आर राघब केर एम थीसिल केर प्रपोटवकेर जखन अंतिम र प बनि गेलनि त ओ आशुतोष के भाषा शुद्धकरण एवं श्रृंगार लेल देलथि न। आशुतोष सेहो एहि काज के बहुत पोि शनल ि ग सँ केलनि। 10 दिन मे पूरा प्रपोटवके सुन्दर, सोभनगर आ व्यवस्थि त क देलथि न। ि इनटयून भेलाक बाद राघब ओकरा बाइंडिंग लेल द देलथि न। आशुतोष सेहो राघब के बहुत सम्मान करैत छलथि न।

आशुतोष पश्चिम वर्धक करैत छला। अपन कक मे सदाम हुसैन केर ि ल स्केल पोस्टर रखैत छला। पोस्टर के नीचा अपना हाि थसँ लिखने रहथि - LET US IMBIBE HIM

ई किछु एहेन बात रहैक राघब के कोनादन लगलनि। एक दिन राघब हुनका सँ जिज्ञासा केलथि न, "आशुतोष, ई सदाम केर पोस्टर आ ऊपर सँ अहाक स्लोगन। एकर मतलब हमरा नहि लागल?"
आशुतोष बिहँसैत बजला, "सर, सदाम केर दृढ़ इच्छाशक्ति, आणिय आ हिम्मत हमरा पभावित करैत अछि। अमेरिका सनक देश के असगरे झिलेने अछि। सैनिक शाशक हो त सदाम सन। ताहि हम सदाम के पसिन करैत छी। देखू, हमेशा ई सैनिक केर वदी मे रहैत अछि। सब सँ पहिने अपने आणिय लैत अछि । युद भूमि मे सेहो आगा रहय बला नेता अछि एहि सँ एकर सेना मे जोश भरल रहैत छैक।“

राघब यदयि आशुतोष केर तकव सँ बहुत पभावित त नहि भेला

हुनकर जोश आ उमंग राघब के अवश्य पभाश्वत केलकश्व।

एकश्वन आशुतोष राघब के संबोश्वत करैत कहलश्विन, "सर, हमरा जीवन मे मात एक नौकरी पभाश्वत करैत अश्छ -सेनाक नौकरी। अगर रईसी आ गौरव के जीवन जीबाक हो त सेना मे अश्वकारी के नौकरी जॉइन कर।"

आशुतोष केर आँश्व सँ सा ि बुझना जा रहल छलश्व जे हुनकर जीवन केर उदेश्य की छश्व। राघब केर दोसर पश छलश्व: "आश्वर की बात एहेन छैक एश्व मे? अहा नीक श्वदा ि छी, पशासश्वक सेवा मे जा सकैत छी, आई पी एस बनू, श्वकछु क सकैत छी। पुश्वस मे सेहो कम सुश्वधा ि ि ने छैक? अहा श्वसचव मे नीक क सकैत छी। बहुत उतम स्तर केर श्वाक्क भ सकैत छी?"

आशुतोष बजलश्व, ‘‘सर, हम अपने सँ सेना के ऑश्वि ससवकेर ठाठ देख चुकल छी। भले पाई कतौ भेटय लेश्वकन जे सुश्वधा, मस्ती, रोब आश्व सेनाक ऑश्वि सर होबा मे छैक से कतौ उपलब्ध नश्व।‘‘

आशुतोष के सैन्य अश्वकारी बनबाक उच्च आकाक्ष देश्व राघब अपना आप के मौन रखनाई उचैत बुझलश्व। लेश्वकन मोने मोन ि ि कि आशुतोष केर भश्वष्य के ल’क श्वंश्वात जर र भ गेला।

एम एस सी पीश्वयस के नवम मास मे एकाएक एक श्वन आशुतोष चंरकला के कहलश्विन , "देखू, हम परीक्ष नश्व देब। आब हम राश्वा श्वन सैश्वाक अश्वकारी बला एंरेस कर तैयारी करब।"

चंरकला : "ई बात त ठीक। मुदा परीक्षा देब मे की हर्ज? कम सँ कम हॉस्टल मे रहबाक अधिकार त रहत?"

आशुतोष: "से त ठीक मुदा हम दू नाव मे पैर नहि राखै चाहैत छी। सब समय आ ऊर्जा हम अपन प्रतिस्पर्धा बला परीक्षा मे लगबे चाहैत छी।"

चंरकला के बुझा गेलैन्हि जे आशुतोष के बुझेनाई असंभव अछि। चुपे रहब मे अपन आ आशुतोष दुनू के हित बुझना गेलैन्हि।

खैर, समय बितैत रहल आ आशुतोष अपन तैयारी मे संलग्न रहला। अंग्रेजी आ जनरल नॉलेज कर चिंता हुनका नहि छलैन्हि। हा कनि फिजिकल फिटनेस मे डर रहैन्हि। पहिल बेर मे लिखित परीक्षा नहि पास क पेलाह। निराश भेला। दू-तीन दिन मौन भ गेला। ने बाजब ने भूकब। भोजनो नीक सँ नहि करथि। हा, दू-तीन बेर राघब लग आबि अवश्य बाजथि, "ई नहि पचा पाबि रहल छी सर जे लिखित परीक्षा मे हमरा किए फेल भेल?"

राघब सेहो दुखी छला। भरोश दैत कहलथिन, "कम ऑन आशुतोष! ई प्रतिस्पर्धा केर परीक्षा छल कुनो यूनिवर्सिटी केर रूटीन परीक्षा नहि। रूटीन परीक्षा मे जतेक विद्यार्थी नीक लिखतै, सब पास भ जेतैक। एकर विपरीत कम्पटीशन केर परीक्षा मे सीमित पद रहैत छैक आ अनन्त प्रवेशार्थी। ताहि बहुत गम्भीर छात्र सेहो छटा जाइत छथि। अहा मेधावी आ संस्कारी लोक छी। अपन कर्तव्य मे लागल रही। सफलता एक ने एक दिन अवश्य भेटत।"

राघब के बात सँ जेना आशुतोष के पाण मे पाण एलखिन। आस्था पाश ि र जागत भेलखिन। कहलथि न, "ठीक कहैत छी सर। हमरा अनेरे भूतकाल केर असि लता पर पि ताप के छोड़ि ि र सँ पूणवमनोयोग सँ तैयारी करक चाही। आब हम सैह करब आ बाहरी दुनिया सँ ि ि कि दूरी राखब।"

एहि बीच चंरकलाकेर होस्टल मे एक ऋचा नामक लि की एली। ऋचा के चंरकला सङे र म शेयर करक छलखिन। ि ि कि दिन मे दुनू मे पगाढ़ आतता भ गेलखिन। ऋचा के चंरकला अपन आ आशुतोष केर सब बात बता देलथि न। आशुतोष सँ भेट सेहो करा देलथि न। ऋचा गोरधप-धप, नमहर कद काठी, मुहँ मे पानि, पैघ आँखि, आकषक शरीर,उंनत आ सुडौल कुच केर स्वामिनी छथि। जाघ तरासल, आतम्ब उठल आ गजगामिनी जका चलैत छथि ऋचा। जेहने ऋचा देखबा मे सुनथि तेहने बजबा मे। ककरो पहिल बेर मे अपन तनक सुंदरता सँ आ वचनक चातुयवसँ अपन गुलाम बना लैत छली। मुदा आशुतोष के ऋचा अपन जेठ भाय बना लेलखिन। इम्हर परीक्ष मे नहि भाग लेबक करने आशुतोष के ऑथि आयली होस्टल खाली करय पि लखिन। यदथि राघब हुनका अपना र म मे रखने रहलखिन। एक समस्या भोजन के छलखिन। आशुतोष बाहर सँ भोजन करे लगला।

आशुतोष के घरक आर्थिक बहुत नीक नहि छलखिन। थता रइस आ एक नंबर कर देहचोर। किछु ठीकेदारी आ किछु खेतीबाि सँ जीवनक गुज़ाडा चलैत छलखिन। ऊपर सँ आशुतोष तीन भाई। पहिल

भाई सेहो सैथ्नक स्कूल श्नालैया सँ पढ़ल। बाद मे आमी अिसर बनलथ्नि। मुदा िकि श्नन मे नौकरी छोथ्नि लखनऊ आश्न टेलीकॉम जगत मे अपन क्यवसाय सिथ्नत केलश्न। लखनऊ मे अपना सँ पाच वषवपैघ अपने क्यवसाय के क्त्त केर श्नकीत बाम्हण कन्या सँ पेम श्नवाह क लेलश्न। माता श्नता आ भाई सब सँ कुनो संबंध नश्न छलश्न। लेश्नकन आशुतोष केर माय बहुत गुणमश्न स्त्तीगण छश्न। ओ श्नपरीत पश्नश्नश्न मे अपन दू छोट बालक के पढ़बैत छश्न। आशुतोष एना श्नश्न मे श्नणय लेलश्न जे आब ओ टयूशन पि अपन खचव चलेता।

ऋचा छश्न मध्यपदेश केर श्नन्धी। दू बश्नन आ एक भाय। ऋचा सबसँ पैघ, तकर बाद भाय जे इंजीश्नयश्नंग केर श्नतीय वषवकेर छात आ सबसँ छोट बश्नन आ ओहो इंजीश्नयश्नंग केर पिम वषवकेर छाता। आशुतोष सँग सैथ्नक स्कूल केर समय केर हुनक श्नत श्नजय सेहो छलथ्नि जे एम एस सी करैत छला। चूंश्नक श्नजय केर अंक बहुत नीक नश्न छलश्न ताश्न ओ बाहर मे रहैत छला। ऋचा के भाई आ बश्नन के सेहो होस्टल नश्न भेटल छलश्न।

जखन श्ननकर सभक संबंध पगाढ़ होमय लगलश्न त सब श्नलक मुखजी नगर मे एक फ्लैट शेयर मोड मे ल लेलश्न। आशुतोष आब होस्टल छोथ्नि देलश्न। होस्टल मे राघब आ चंरकला रश्न गेलश्न।

चंरकला के श्नता आब चंरकला सँ श्नचार करैत लिका तकनाई शुर करय चाहैत छला। मुदा चंरकला एकै बात कहै छलथ्नि, "श्नना पी एच डी आ नौकरी केने ओ क्याह नश्न करती।" हालाश्नक ई त चंरकला के बहाना छलश्न। हुनकर मोन मे रहश्न जे एकबेर

जखन आशुतोष आमी अिसर केर नौकरी मे चयिनत भ जेता त हुनका अपन िपता आ जेठ भाई सँ भेट करा सब राज बता देिथन।

एमहर आशुतोष िलिखत परीक्षा मे दोसरो बेर असिल भ गेला। आब ओ बहुत तनाव मे आिब गेला। छेपक मे एहो बात बतेनाई जररी जे ऋचा मुक्त स्वभाब के।लिकी छिथ। 11 वीं क्लास सँ अनेक पुरष िमत सब सँग मानिसक आ दैिहक संबंध रखली। हुनका रित-रभस मे, चुम्बन मे आिलंगन मे आ काम कीिा मे बहुत आनंद अबैत छलिन। ओना त आशुतोष सँ भाई बिहन केर सम्बन्ध छलिन तािह आशुतोष सँग सहायक रहब, हुनका भिर पाज क छेकब, हुनका सङे आिलंगनबद भय सुतब आिद सहज भाव सँ करैत छिथ। आशुतोष सेहो अिह मे आनंिदत होइत छला। जखन आशुतोष के दोसर बेर सिलता निह भेलिन तखन ओ एकिदन चंरकला के कहलिथन, "चंरकला, आब अहा अपन िपता के पिरजन केर कुनो योग्य लिका सङे िववाह क िलय। हमर जीवन अंधकार भेल जा रहल अिछ।"

चंरकला के आँिख मे नोर भिर गेलिन। बजली, "की कहैत छी आशुतोष? हम अहा सँ िसनेह केने छी। अहा जतय रहब हम ओतिह रहब आ खुश रहब। एहेन बात निह बाजू अहा। अगर कही त आई हमर घर चलू। हम एखने अपन िपता आ भाई सँ अपन सबहक पेम आ िववाह के बात करैत छी। अगर कही त हम कोटिववाह लेल सेहो तैयार छी।"

आशुतोष कहलिथन : "हमर कहब अिछ, अगर सिल निह भेलौ त हमरा सङे अहुँके जीवन बबाद भ जैत। अहाक पिरवार हमर प्यार

ओतबे शाशत आ पाजल अछि जतेक अहाक सिनेह हमरा पति।" ई कहैत आशुतोष चंरकला के अपन बाहुपाश मे ल लेलथिन। पेमालिंगन मे चंरकला छोट नेना जका कनैत रहलि।

आब चंरकला पी एच डी करय लागली। बस्तर केर मुरिया जनजाति केर जरी-बूटी केर जान, तंत-मंत आ चिकित्सा पद्धति पर हुनकर शोध काज चलि रहल छलनि। मुदा आशुतोष के पति प्यार एवं हुनक जीवन रपी नैय्या के डगमग करैत चलब के कारणे चंरकला केर शोध कायवजेना एक ठाम ठमकल पिल होअए!

एहि बीच आशुतोष केर परिवार मे एक आरो घटना घटित भ गेलनि। हुनकर जेठ भाय आ भउजी मे तलाक केर स्थिति आबि गेलनि। बेचारी आशुतोष केर माय परेशान। करती त की करती? एकटा बेटा छलनि आशुतोष के जेठ भाय के। ओ बेचारा ककरा लग रहत? काज धाज से रकल। जेठ बेटा घर मे बैसल।

आशुतोष केर छोट भाय सेहो बी एस सी केलक बाद टेलीकम्यूनिकेशन केर क्षेत्र मे नौकरी केनाई शुर केने छलाह। पारंभिक संघषवकेर बाद स्थिति नीक भ गेल छलनि। गाम पर माता पिता के सहयोग करब शुर क देलथिन। हुनकर नाम छलनि पकाश। ओ बीच बीच मे आशुतोष लग अबैत रहैत छलाह। हुनका ऋतु अपना पेमजाल मे िंसा लेली। पहिने हँसब, बाजब आ बाद मे सब किछु शुर भ गेलनि। बाद मे ई जानकारी आशुतोष के सेहो चलि गेलनि। ऋतु आ पकाश घोषणा क देलथिन जे दुनू प्यार करैत छथि आ विवाह करती। विवाहक रोिा आशुतोष छलथि। मा कहलथिन, "जाबेत धरि

आशुतोष सेटल नञ्ज भ जेता आ थ्रवाह नञ्ज क लेता तावेत धश्व पकाश केर थ्रवाह कुनो हालत मे संभव नञ्ज छश्न।" आब की हो? सब चुप।

एश्ञ बीच आमी ऑथ्रिसर केर एंरेस मे आशुतोष असफिल होइत रहला। अंत मे आयु सीमा सेहो खत्म भ गेलश्न। पताचार केर माध्यम सँ पबंधन केर मास्टर श्चगी हाश्नल केलश्न। आ अंततः एक सवयं सेवी संस्ि मे छोट छीन नौकरी पकश्ि लेलश्न। हुनक पेम मे मातश्न दीपश्नाखा एखनो हुनका सँ थ्रवाह करबा लेल तैयार। मुदा अपन हाव भाव सँ एवं अन्य शोत सँ आशुतोष चंरकला के ई सूचना द देलश्िन जे हुनकर थ्रवाह आब कुनो श्चिश्ना मे संभव नञ्ज छश्न। चंरकला आब की क सकैत छश्न।

चंरकला संगे हुनका सँ एक साल जूश्नयर लिकी सौम्या सेहो बस्तर केर मुश्रिया जनजाश्ना पर शोध करैत छश्न। ओहो श्नश्वल नामक एक क्लासमेट सडे प्यार करैत छश्न। प्यार की त श्नव इन थ्रलेशनश्नप मे छश्न। दुभाग्य सँ श्नश्वल केर वकील थ्रता के ई संबंध नञ्ज ठीक लगलश्न। श्नश्वल अलाइड सश्रबस मे आश्न गेला। बाद मे ई थ्रवाह नञ्ज भेलैक। हाश्व क सौम्या एक इंजीश्नयर सँग अरेज्ड थ्रवाह केली। ई अलग बात छैक की थ्रवाह केर पिम श्वन सँ हुनका अपन इंजीश्नयर पश्न सँ एडजस्ट होब मे श्वकत शुर भ गेलश्न।

एक बेर एक मास लेल चंरकला आ सौम्या अपन शोध केर पयोजन सँ बस्तर गेल छश्न। जखन बस्तर सँ एली त सौम्या सँ चंरकला

के पिता कहलथिन जे एक इंजीनियर टाटा कंसल्टेंसी मे काज करैत छैक। नीक परिवार छैक। लड़िका के पिता आई आई टी दिल्ली मे प्रोफेसर, जेठ भाई सेहो लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स मे छैक। छोट भाय अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान सँ एम बी बी एस क रहल छैक। लड़िका सहज छैक आ देखबा सुतबा मे सुनर। अगर चंद्रकला के इच्छा होइक त एक बेर भेट क सकैत अछि। सौम्या चंद्रकला के ओहि लड़िका के देख के हेतु उकसबय लागलि। चंद्रकला एक बेर फेरो आशुतोष लग गेली। आशुतोष अहि बेर साफ-साफ कहि देलथिन , "देखू, एहि स्थिति मे आब हमर आ अहाक विवाह संभव नहि अछि।" चंद्रकला के आँखि सँ धाराप्रवाह नोर खसैत रहलनि। फेर काल मे वापस होस्टल मे आबि गेली। सब बात सौम्या के कहलथिन। सौम्या फेरो हुनका अपन दृष्टांत दैत एक बेर अपन पिता द्वारे चयनित लड़िका सँ भेट करबा लेल मना लेलनि। दोसर दिन एक होटल मे चंद्रकला अनन्त अग्रवाल सँ भेट केलनि। अनन्त हुनका ठीक लगलथिन।

अनंतो के चंद्रकला बड्ड नीक लगलथिन। दुनू अपन-अपन अभिभावक के विवाह करक स्वीकृति द देलथिन। एहि स्वीकृति केर 15 दिनक भीतर आशुतोष केर विवाह गोड्डा कॉलेज केर हिंदी केर प्रोफेसर केर बेटी सँ भ गेलनि। एक मासक बाद ऋचाक विवाह आशुतोष केर छोट भाई प्रकाश सँग भ गेलनि। आब चंद्रकला के सब बात बुझ मे आबि गेलनि। किछु त नहि बजली मुदा करेज भीतरे भीतर जेना दू फाक भ गेलनि। नहियो चाहैत ऋचा आ आशुतोष के शाप दैत कहलथिन, "जाउ! हमर विश्वास, प्रेम आ समर्पण के अतेक खण्ड-खण्ड केलौ अछि अहा सब भाल क! कहियो नीक

नञ्झ हैत।" हा, ई शाप ओ चुपचाप मुक्त अकास मे ठाढ़ भेल देने छञ्ख। ओ बजली आ सृष्टि केर श्रायंता सुनलक। नीक जका सुनलक।

श्ववाह के स्वीकृश्च दैत देरी पाच श्वनक भीतर चंरकला के श्वल्ली मे एक यूश्रावश्चर्टी मे लेक्चरर केर नौकरी लाश्य गेलश्च। हुनकर मंगेतर जे पुणे मे पोस्टेड छलश्चिन से एकाएक नोएडा मे आश्च गेलश्चिन। शायद भगबानो के लागल होश्च जे एकरा सडे बहुत अन्याय भेलैक आब न्याय होबक चाही!

ऋचा केर भाई एक मलयाली लकिी सँ पेम श्ववाह क सऊदी अरब चश्च गेला । छोट बश्चन सेहो पेम श्ववाह एक महाराष्ट्रीयन इंजीश्चयर सँ केलश्च।

श्ववाह के दोसरे साल चंरकला के एक बेटी भेलश्च आ ऋचा के बेटा। सौम्या के सेहो एक बेटा रहैक। तीन साल के बाद चंरकला के बेटा आ ऋचा के बेटी भेलैक। बेटी भेलाक एक वषवके बाद ऋचा आ पकाश मे भयंकर लाई शुर भ गेलैक। श्वश्च एहेन भ गेलैक जे दुनू आब संबंध ने श्वच्छेद क लेश्च। मुदा पकाश केर मा आ ऋचा के सोचक कारणे िरो दुनू मे समझौता भ गेलैक।

आशुतोष आब श्वल्ली छोश्च पटना चश्च गेला। पटना मे गुमनाम श्वनगी श्वबय लगलश्च। दू बेटीक श्वता। आमदनी सीश्चत। दुखक एकाकी जीवन। शायद एश्च बातक अनुभव करैत जे सब श्वकछु चंरकला सँग धोखा के कारण भेल अश्च आ पता नञ्झ भश्वष्य मे

की-की हैत?

चंरकला राघब के भैया कहैत छथ्न्हि। थ्कछु थ्दन पथ्हने भेट भेलथ्ि दुनू के एक सेथ्मनार मे। एक कात मे आथ्न राघब लग चंरकला बजली: "भैया, ऋचा आ आशुतोष केर व्यवहार हमरा तबाह केने छल। हमर रोम-रोम थ्महथ्ल गेल छल। हम अन्हार मे चथ्ल गेल रही। तथ्हना ओहो सब खुश कथ्हयो नथ्ह रहत।"

थ्वजय गुरगाव मे एक ऐड एजेसी मे काज करैत अथ्छ। ओकर कथ्नया सेहो मैनेजमेट कंसलटेट छैक। थ्ववाह के 20 वषवभ गेलैक मुदा संतान एखन धथ्र नथ्ह भेलैक अथ्छ।

सौम्या केर पथ्त ओकर जीवन नकवक देने छलैक। अंत मे बहुत मुथ्श्कल सँ तलाक भेटलैक। आब दोसर थ्ववाह केलथ्न अथ्छ आ अपन पथ्त आ बेटा संगे जीवन जीब रहल छथ्ि। यूनेस्को मे नौकरी सेहो लाथ्ग गेल छथ्न्ह।

चंरकला एक सफल पती, पुतोहु, मा, थ्शथ्क्षका केर भूथ्मका थ्नभा रहल छथ्ि। जीवन मे आनंद आ परमानंद छथ्न्ह। मुदा पुरुष जाथ्त पर थ्वशास नथ्ह छथ्न्ह। कोना रहतथ्न??? पुरुषक नथ्ह थ्वशासे।

मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई केर वेदना

राम जगतपुज्य छथि। राम के हिन्दू सब आराध्यदेव बुझि पूजा करैत छथि। मिथिला मे राम सर्वाधिक पूज्य छथि। पूज्य होबाक कारण रामक देवता भेनाई त अछिए ओ मिथिला केर दुलहा छथि ताहू लेल। कारण मिथिला मे जमाय के विष्णुक अवतार मानल जैत अछि। सर्वश्रेष्ट पाहून जमाय होइत छथि। हुनकर मान-दान, आतिथ्य, भोजनक सचार, रंग-रंगक विध-बेभार, गीत-नाद आ सब किछु अपूर्व मुदा मिथिला के लोक के अदौ सं ई होइत रहलैक अछि जे सीता संग रामक व्यवहार उचित नहि रहलैक।
आइयो मैथिलानी बात-बात मे सीता के दुखक स्मरण करैत नोरायल आँखि सँ आ बझल कंठ सँ अनायास बाजि उठैत छथि:
राम वियाहने कुन फल भेल।
सीता जन्म अकारथ गेल।
एकर अभिव्यक्ति ई नहि जे राम मर्यादापुरषोतम नहि रहला। एकर अभि इहो नहि जे मिथिलाक लोक अति मैथिल विधर्मी भ गेलैक। ई त हिन्दू धर्मवआ संस्कार के स्वभाव अछि जे जकरा लोक पूजा करैत अछि ओकर गलत निर्णय, अनुचित डेग, आदि पर ओकरा उपराग सेहो दैत अछि। यैह गुण सनातन धर्मके एखन धरि साशत रखने अछि। तादुर एहि लेख मे जे भाव अछि ओकरा एक मैथिल, मैथिल सं अधिक मैथिलानी के अपन किशोरी केर दुलहा रामक प्रति स्थान गत आ लोककथा केर मादे कैल गेल स्नेहपूर्ण उपराग बुझल जा सकैत अछि। कुनो विदेष नहि, घृणा नहि, धर्मक प्रति असंवेदनशीलता नहि।
रामायण के प्रारंभ एखन धरि प्राप्त जानकारी के आधार पर महाकवि

वाल्मीकि सँ होईत अछि। तकर बाद अनेक स्थानीय विद्वान, सन्त, भक्त, कवि एकर कुनो पसंग, अथवा सम्पूर्णकथा पर शास्त्रीय आ स्थानीय मान्यता के आधार पर काव्यमय रचना करैत रहलाह। रचनाशीलता आइयो चलि रहल अछि। खंड अथवा संदर्भविशेष मे अंतर कुनो बहुत पैघ बात नहि अछि। तुलसीदास त राम के अपन आराध्य देव मनैत राम के मयादापुरषोतम बनबैत रामचरितमानस केर निर्माण करैत छथि। तुलसी के लेखनी अतेक पभावोत्पादक अछि जे समस्त उतर भारत, पूवभारत, उतर-पूवभारत, मध्य भारत धरि रामचरितमानस जन-जन के कण्ठहार बनि जाइत अछि।

मिथिला मे सेहो एखन धरि हमर जात जानकारी के हिसाबे 4 पकार केर रामायण मैथिली मे लिखल जा चुकल अछि। मूल कथा के ध्यान मे रखैत महाकाव्य रचनाकार किछु पसंग स्थानीय मान्यताक सँग जोड़ि दैत छथि। एकर अतिरिक्त लोककथा मे, गीत मे,लोक व्यवहार मे सीता आ रामक भाव-भावना के चचा अबैत अछि।

ई लेख रामायण के अतिरिक्त लोककथा, लोकमान्यता, गीत नाद आदि के आधार मानि लिखल गेल अछि। लोककथा सेहो साक्ष्य सँ कम नहि।

आब चलु हमरा सङे मिथिला आ रामकथा सँग रामक भाव के मैथिलानी आ सामान्य जनता के बीच मान्यता केर आधार पर, गाथा आ लोककथा के आधार पर , गीत नाद पर शुद मोन सँ सीताक पक्ष रामक व्यवहार के समीक्षा करी। जानेह राम सँ अछि त उपराग ककर? मिथित रप सँ रामक।

मिथिलाक सब गाम, घर मे सीता छथि आ घरे-घरे राम सेहो छथि। जेना राम संग विवाहक बादो सीता दाई के सुख नहि भेटलनि तहिना आइओ सुख कहा छनि? दहेज़क उत्पीडन, बेटा आ बेटी मे अंतर,

भ्रूणहत्या, शारीरक उत्पीडन, मानसिक दोहन इत्यादि अनंत समस्या स गिमत छथि घर-घर केर सीता। आ की निह? कथी विचार कर ने?

हेता राम पतापी राजा, महाबलशाली, समुर के सोखि लेबाक कमता बला, रावणक संहारक, आ की की! मुदा मिथिला मे आिब ओ दुला राम भ जाथि छैि। मिथिला के लोक हुनकर पूजा निह हुनका सँ नेह लगबैत अछि। आधोख डहकन गािब हुनका कखनो छगरा गोतक कहैत छथि त कखनो शंका करैत छथि जे राजा दशरि गोर, कौशल्या गोर ि र राम आ भरत कारी कोना? मैथिलानी राम के िववाह के बाद सासुर मे रहबाक बेर-बेर िनवेदन एिह लेल करैत छिथन जे सब भाई के आ िवशेष र प सँ राम आ भरत के रगिथ-रगिथ उबटन लगेती जािह सँ िहनक श्यामवणवदेह कोना सुनर लागै! भोजनक शृंगार, सचारक की कहब - अपूवव। भािस-भािस के सचार पेमक भाव सँ कतेक गुना बढ़ल। गान कला, नृत्यकला, वादकला मे मािहर मैथिलानी सब गािब क, वादयन्त्र के बजा, िसनेहक पदशव सँ,अपन कोइली सन अनमोल बोल सँ दूला राम के स्वागत आ हुनकर मनोरंजन करैत छथि। से राम अगर सीता के लंका सँ अबैत देरी अिग्न परीक्षा, गभवक समय मे ककरो कहला सँ सीता के पुनः असगर आतुर भेल जंगल भेिज दैत छथि त मैथिलानी हाि िश त करबे ने करती???

बिल्क किह सकैत छी जे नारीक िशिक्षा एखनो सीते दाई जका अिछ अपन मिथिला नगर मे। पूरा संसार त पुरष पधान अिछये मिथिलो राममय बनल ऐछ। िबना पावती के महादेब निह, िबना राधा के कृष्ण निह, तिहना िबना सीता के राम निह तािथ लोक नामो लेबय मे राम के अगुआ दैत अिछ। लोक अिा त जन सामान्य,

भक्त, प्रदान सभ कयो राम लग जेना सीता के तमाम कैल-धैल त्याग, मेधा, गुण, अनुराग, रामक पक्ष समपर्ण आदि जेना विसय जैत हो! तुसलीदास एक बेर स त ई स्वीकार करैत छथि:

बंदौ राम लखन बैदेही जे तुलसी के परम सनेही

तुलसीदास रामचरितमानस मे 1443 बेर राम के नामक चर्चा करैत छथि। एकर अतिरिक्त राम के आन शब्द जेना, राजीव, अवधकुमार, रघुनाथ,दशरथ नंदन, रघुनन्दन, आदिक पयोग केने छथि। वैह तुलसी जखन सीताक चचा करैत छथि त मात 147 पर अटकि जाईत छथि। सीता दाई के आनो नाम जेना की जानकी, बिभागी के जोड़ि ली त सब मिलेलाक बाद होइत अछि 325 147 बेर सीता, 69 बेर जानकी, 58 बेर बिभागी आ 51 बेर बैदेही। अहू मे एक राजनीति ऐछ। सीता अपने गुने बिभागी नहि छैथि। ओ बिभागी अछि दारे छैथि जे हुनकर विवाह राम संगे भेल छैन। बाह रे पुरुष भक्त के पुरुष भगबान के पक्ष समपर्ण! समपर्ण नहि अंध समपर्ण! आब सीताक दुःख देखू: लंका मे राम रहला 111 दिन आ सीता रहली 435 दिन, अर्थात राम स चारिगुना अधिक। ओहो यातनामय जीवन। असगर जीवन। विषम जीवन। डर, भय, आशंका, हताश भरल जीवन। अंधकार साध्वीक जीवन।

देखू जखन राम अवतरित भेला त स्वर्गवस देवता सब आबि हुनकर दर्शन केलथि। माय कौशल्या ओहि विराट रुप के देखि घबरा गेली। भगवान स पार्थना केली जे नेनाक स्वरुप मे आबथि:

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रुपा।

कीजै शिसुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा।

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा।।

राम अपन माय केर निवेदन के स्वीकार केलथि। नेना भ गेला आ

कानय लगला। माता कौशल्या वात्सल्य पेम मे भ्भोर भ गेली आ अपना के सवद्योस्ट माय माक्षा लेलक्षा।

आब सीता के देखू। ने कुनो देखावा ने कुनो ताम-झाम। जखन समस्त अथ्ीिला मे अकाल भ गेल आ राजा जनक स्मयं हर जोतय गेला त धरतीक बेटी धरतीक गभवस स्मणवकुम्भ मे एक बच्ची के स्मरप लेने पगट भेली। नश्चये माय सुनयना के थावेदन करय पलिक्षा आ ने जनक राजा के जे छोट भ जाऊ, नेनाक स्मरप मे आश्च जाऊ, आद्ध-आद्ध। ऊपर अाित अकास आ स्मगवस देवता, पश्च, गायक-गाथ्राका, वादयंत बजाबय बला, नतक-नतकी, यक, इंर सब आनंश्चत भ गेल। ऊपर स एक अपूवव आ मनमोहक वादयंत संगे ओकरा बजबय बला कलाकार सब सेहो स्मगवस आयल। ओ वादयंत रहैक रसनचौकी। स्मगवस पुष्प वषा पारंभ भेल। के नश्च पसन भेल? सबहक मोन मे उमंग आश्च गेलैक। आब झर-झर वषा होमय लागल। श्कसान खेत श्द्स दौरल। आर की-की ने भेल। की तुलसी बाबा एश्च पकरण के अतेक थ्यस्तार स श्नखला? नश्च। श्कयैक, त सीता बेटी छली ने! अगर राम नारायण के अवतार त सीता कुन कम? ओहो त शी अािवा लक्ष्मी के अवतारे ने छथ्ि?

सीता के राम संगे थ्यवाह भेलक्षा। लोक बुझलक जे आब सीता पटरानी भ गेलीह। राम आ सीता केर जोाि ककरा नश्च शोभनगर लगलैक। दाई माई थ्यकश्च- थ्यकश्च क गीत गेली , श्वध वेयब्हार केलक्षा। जनक राजा अपन सवब्स्म श्नछाबर क देलाह। मुदा कश्च नश्च श्कयैक सीता दाई केर बश्चनपा सब के राम पर कक्षा शंका छलक्षा। जखन राम धनुष भंग क देलथ्ि न त उमंग स मातश्क श्नया दाई वरमाला हाि मे लेने रामक श्द्स बढ़लक्षा। श्नया सुनश्च के पेम मे मातल राम झट दक्षा अपन गरदक्षा नीचा केलक्षा। सीता माला

रामक गरदश्चा मे डालय लगली। हठात सीता के हाि हुनकर बश्चनपा सब अपना श्वस खीच लेलश्चा। राम अक्चेकायल रश्च गेलाह! ई की भेल? एहेन श्वश्चत व्यवहार किी लेल? सखी सब के की भेलश्चा? पुछलश्चिन ऐना श्वकयैक? की गलती भेल हमरा स?

सखी सब कहलश्चिन राम के : “हे यौ पाहून! अहाक पश्चवार बडड नीक नश्च अश्छ। अहा सब मश्चला के भोगक वस्तु मात बुझैत छी। श्वमश्चिलाक व्यवहार दोसर अश्छ। अतए मश्चला सहचरी छश्चि। अहाक श्वता केर तीन पती : कौश्वाल्या, सुश्वमता आ कैकेई छश्चिन। जनक राजा के एकश्च रानी सुनयना छश्चिन। यौ पाहून! अहाक श्वतामह के सेहो अनेक पती छलश्चिन। िर अहाक की ठेकान? आई श्वमश्चिला नगश्वया मे धनुष भंग कै सीता के हाि भेट गेल। काश्च कतहु दोसर परािम स कुनो आरो लिकी के हाि अहा पती के रप मे ल लेब त हमर श्वया श्वया के की होयत? हमर श्वमश्चिला मे एकै पती के श्वयम चलै छै”।

राम श्चंता मे आश्च गेलाह। कहलश्चिन: “अहा सब बात त ठीके कहैत छी। मुदा हम सीता के कुनो शतवपर अपन अधाश्वनी बनेबा लेल तैयार छी।”

सीताक सखी सब आब िरे आरो भारखमी होइत बजली: “तखन सुनु। अहा सप्पि खाऊ जे कुनो हालत मे सीता के सौश्चान नश्च आनब।”

राम बजलाह : "हमही नश्च हम चार भाई आई समस्त लोकक समक सपि खैएत छी जे हम सब एक पती धमवके पालन करब।"

िर की छल पूरा धूम धाम स सीता चार बश्चन केर श्ववाह राम केर चार भाई संग ओही मंडप मे भ गेलश्चा।

श्ववाहक बाद सीता सासुर गेलीह। राम संगे बने बने घुमली। रावण

हरण कै लंका ल गेलथि। अशोकक गाछ लग समय कटली। राम राम कहैत रहली। सुकुमारी माया के जंगल आ गाछ पात मे सेहो पशुक संग जीवन नीक लगलथि। कखनओ कुनो शिकायत नहि। वनवास त राम के भेल छलथि मुदा सीता पती धमवके पालन केलथि आ रामक संगे गेली।

मुदा सीता के शोषण वनवास के रस्ते शुर भ गेलथि। मिथिला के लोक मे विशेष रप सँ मैथिलीलानी सबहक बीच एक दंतकथि व्याप्त छैक। ई दंतकथि पुरख समाज दारा स्त्रीगण के कोना संस्थागत संरचना के आधि मे शोषण कैल जाइत रहलैक अछि तकर बहुत सटीक व्याख्या करैत छैक। बात ई भेल रहैक जे जखन राम वनवास लेल सीता आ लक्ष्मण सङे अयोध्या सँ विदा भ गेला त पुतशोक मे महाराज दशरथि अधीर भ गेलथि। खेनाइ पिनाई सब त्यागि देलथि। लोक कतेक बुझेबाक पयत केलकथि मुदा हुनकर हृदय पश्चापल कीण भेल गेलथि। दुःख बढ़ल गेलथि। अंततः राम-राम कहैत राजा दशरथि अपन पाण त्यागि देलथि।

राम के जखन ई जानकारी भेटलथि त ओ बड़ दुखी भेला। फिर सब गोटे विचारलथि जे गया पहुच फिलु नदी के कात मे पितृ तपण करैत अपन पिता दशरथि सहित अन्य पित सबके पिण्डदान करता। कहल जाइत छैक जे ओहि समय मे पत्नी सङ पती के सेहो ओतय जएबाक अनुमति रहैक। ताहिं राम आ लक्ष्मण सङ सीता सेहो गया पहुँचली। स्नान ध्यान केलाक बाद राम किछु लेबाक हेतु बाहर गेलथि। सीता रामक बाट सङ असगरे रहि गेली। अहि बीच एकाएक राजा दशरथि केर आत्मा आबि गेलथि। आबि सीता के कहलथिन: "हम भूखल प्यासल छी। हमरा जल दीय, पिण्ड दीय।" सीता लजाईत बजली: "ई कोना उचित? राम आबि रहल छथि।

अपने कथ्‍श्रा इंतज़ार कर। ओ स्‍घ्‍यं अपना हाि थ्‍यण्‍डदान करता। जल देता। आश्रये रहल छथ्‍ि।"

मुदा दशरि केर आत्‍मा रकबा लेल तैय्‍यार नश्ल। झट दश्‍ा कहलथ्‍िन: "पुती सीता! अहा राम केर अदाथ्‍यानी छी। हमरा लेल जेहने राम तेहने अहा। हमर भूख आ प्‍यास पबल भेल जा रहल अछ्ि। ताश्ं अहा श्ना कुनो श्लंब केने आ रामक पि हेरने हमरा थ्‍ंडदान अथ्‍यल्‍त कर। एकर शुभ िल राम आ अहा दुनू के सामान्‍य भाग मे भेटत।"

अश्‍ तरहक श्‍ादेश पाश्‍ सीता हृदय सँ पिुश्‍लत होईत झट दश्‍ा थ्‍यश्‍ावत कमकाण्‍ड के तैयारी केलश्‍ा। थ्‍यण्‍ड बनेली। आ अपन ननश्‍, िलगु धार आ कामधेनु गाय के साकी माश्‍ा अपन ससुर अिात महाराजा दशरि के आत्‍मा के थ्‍यण्‍ड अथ्‍यल्‍त केलश्‍ा। राजा दशरि केर आत्‍मा सीताक थ्‍यण्‍ड सँ संतुि आ तृप्‍त होइत थ्‍यण्‍ड स्‍घीकार केलश्‍ा आ श्कछु कण मे ओतय सँ स्‍घगलोक लेल श्ना राम आ लकमण के बाट तकने श्दा भ गेला।

श्कछु काल बाद राम वापस आश्‍ गेला। श्तर के दशल्‍ के अनेक पयत केलश्‍ा मुदा बेकार। दशरि आकाश मागवसँ कहलथ्‍िन: "पुत हमरा अहाक पती थ्‍यण्‍डदान केली। आब अपनके कुनो पयोजन नश्‍।"

एकर बाद राम श्‍ंश्‍ात भ गेला। बहुत स्‍मरण केलश्‍ा मुदा दशरि नश्‍ एलथ्‍िन। सीता के पुछलथ्‍िन राम: "मैथ्‍िली! अहा थ्‍यण्‍डदान केलौ तकर की पमाण आ की साकी?"

सीता उतर देलथ्‍िन: "हमर साकी अहाक बश्‍न, कामधेनु गाय आ िलगु नदी छथ्‍ि।"

आब राम िलगु नदी, गाय आ सीता के ननश्‍ सँ पुछलथ्‍िन। मुदा

ओ तीनू साक्ष्य देमए मे असमर्थता व्यक्त केलन्हि। क्रोधित सीता शाप दैत बजली: "है हमर ननदिर्, अहा हमरा झुटी बना रहल छी। अहा छुछुनर बनब आ अहा हमेशा छुछुआयल रहब। अहाँना अहाक पाण जैत। है गाय! अहाक पवित्रता त यथावित रहत मुदा अहा झूठ बजलो अछि ताहि अहाक मुह अपवित्र रहत आ अपिषा धरि अहाँ मुह सँ अहा गहण करब। आ हे फल्गु नदी, अहुँ झूठ बजलो। जाउ, अहाक धार मे कखनो पानि बाहर रहबे नहि करत। ई हमर दग्धल मन के अभिशाप शाप अछि।"

अहि सँ पता चलैत अछि जे सीता सँग अन्याय शुरु सँ भ चुकल छलन्हि। अनाथि हुनका अकारने भोग' परतन्हि!

जखन वैदेही के रावण छल सँ हरण क ल जाइत अछि त जे राम समस्त चराचर के अधियंता छथि, अधियंतक छथि तखनि सीता के हरण के बाद जलचर,थलचर, कुंज लता, पक्षी सब अहिकछु सँ बताह जका सीताक वियोग सँ रवित पुछैत छथि: "अहा सब मे कियोक हमर मृगनयनी सीता के देखलौ अछि:

जलचर, थलचर मधुकर शेणी। तुम देखी सीता मृगनयनी?"

आ अहि स्थिति ओहि आदर्भित आ अभिभूतस त तखन भ जाइत छैक जखन रावणक संहार केलाक बाद जखन राम सीता के लंका सँ मुक्त करैत छथि त राम के सीता जे चरित्र पर शंका होईत छन्हि। इहो भ सकैत अछि जे जनमानस मे पती के अपन पत्नि के पवित्र समर्पण भाव के उजागर अथवा सत्यापित करबा लेल राम सीता दाई के अपन पवित्रता पमाणित करबा लेल कहैत छथि अन्यथा स्वीकार करबा सँ मना क दैत छथि। सीतो कुनो कम थिकि ने छन्हि? साक्षात लक्ष्मी के अवतार। अपन पवित्र होमाक पमाण देबा हेतु सोझे अग्निकुण्ड मे कूदि गेली। सीताक सत्यता देखि अग्निदेवता दंग रहि जाइत छथि।

सीता के कुशक क्लेश तक नहि होइत छन्हि। बिना एकौ रती जरल के आशानी के सीता अग्निकुण्ड सँ वापस आबि जाइत छथि। आर त आर स्वर्गलोक सँ देवता लोकनि सेहो सीताक निश्छल, आ पवित्र होबक प्रमाण दैत छथि तखन जाक राम पुनः सीता के स्वीकार करैत छथि।

किछु लोक अहि मे ई तर्क(कुतर्क?) दैत कहैत छथि जे समाज मे उच्चित व्यवस्था आ आदर्श उत्पन्न करबा लेल राम एहेन कार्य केलथि। मुदा मैथिलानी के ई सोचब छन्हि जे राम सीता सङ्ग अन्याय केला आ समस्त स्त्री समाज पर बंधन थोपबाक एक अनर्गल परम्परा के प्रारंभ केलथि। की यैह छलथि रामक रघुकुल रीति? ओह!! कहब दुख ककरा सँ!

अग्निपरीक्षा के संबंध मे किछु लोक कहबा लेल एहनो बात कहैत छथि जे जाहि सीता के रावण हरण केलक से सीता त सही अर्थ मे सीता छेबे कहा छल्थि। ओ त सीता के छाह छलथि। असली सीता त अग्नि मे समाहित भ गेल रहथि आ निश्चिन्त सँ अग्नि मे चुपचाप बैसल। ताहिं छाहक सीता के अग्निकुण्ड मे जाइते देरी असली सीता अग्नि सँ बाहर निकलली जनका राम सहज रूप सँ अर्धांगनी के रूप मे स्वीकार करैत छथि।

मुदा एक हाड़-मास केर सामान्य मनुख होबाक नाते एकटा बात नहि पचा पबैत छी जे रामक ई दुरंगी चरित्र कोना देखी। जे राम ऋषि गौतम के पत्नी अहिल्या के उद्धार स्पर्शमात्र सँ करैत छथि वैह राम अपन पत्नी सीता लेल अतेक निरंकुश?

जे राम बालि के एहि दारे बध करैत छथि जे ओ अपन छोट भाई सुग्रीव केर पत्नी के बलपूर्वक अपना लग रखने अछि। जखन बालि राम सँ पुछैत छथि:

"मे बैरी सुगीवक्षं प्यारा।
कारण कबन नाि मोक्ष मारा।।"
त राम उतर दैत कहैत छथि न:
"अनुजवधु भथानी सुतनारी।
सुन सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हक्ष कुदृथि थलोकई जोई।
ताक्ष बधे कछु दोष न होई।।"
बाक्ष के मृत्यु के बाद राम अपन सखा सुगीव के िर सँ अपन पती के स्वीकार करबा लेल पेथत करैत छथि जकरा सुगीवक जेठ भाय बाक्ष बहुत थन धथ अपन कब्जा मे रखने छल। आ सैह राम सीताक मामला मे एहेन कठोर, हृदयहीन कोना???
जखन सीता एलीह आ गभवस छली ताक्ष काल एक धोबी के उपराग स परेशान भए राम सीता के घनघोर जंगल मे असगर भेज देलथि न। कहु त कतेक कठोर छलाह राम! धमशाश्त कहैत अछ जे थतगन कतेक खाराप हो मुदा जखन वो गभवस हो त ओकरा सब सुख देबाक चाही आ घर स एकौ क्ण लेल बाहर नक्ष जाए देमक चाही। बाह रे मयादा पुरषोतम राम! कत गेल मयादा अहाक?
अगर अहा पजा वत्सल छलौ त एक पक्ष सेहो रही ने? अहा के त बुझल छल जे सीता थाक्कपट आ गंगा जका पथत छथि। अगर अहा अयोध्या मे एक पि पारंभ करै चाहैत रही त िरो राज चलेबक थम्मेदारी भरत के द पक्ष धमवकेर पालन करैत सीता संगे वनवास चक्ष जैतहु जेना सीता अहा संगे अपने मोने पती धमवके पालन करैत गेल छलीह? मुदा से कोना! पुरष रही ने अहा। पुरष दम्भ के के रोकत! कही एहेन त नक्ष जे पुरष दंभ सेहो मयादा

पुरषोतम के लक्षण हो आ अपना के ओझ्र दंभ मे खपा देनाई या दंभ के नीचा जीनाई नारीधर्म?”

खैर, लक्ष्मण जी सीता के जंगल मे असगरे छोड़ि देलथिन। लाचार आ वेवश सीता! हे देव! जाथि त कत आ ककरा लग? के शरण देतथि? आ ताहि क्षण बाबा बाल्मीकि सीता के अपन आशम मे सनि देलथिन। एक दिन रास्ता मे पसव वेदना उठलथि। वनक लोक सब मदति केलकथि। इच्छा भेलथि जे अयोध्या मे जानकारी भेजी। मुदा भेलथि जे राम नहि बुझथि त नीक। हजमा के कहलथिन “तो भरत, के सतुघन के, लक्ष्मण के, तीनो माता के चुप चाप बता दिहक मुदा राम नहि बुझथि।”

जखन राम अशमेध यज करै लगलाह त पंडित कहलथिन जे बिना पती के राम यज नहि क सकैत छथि। राम के अपन वचन स्मरण भेलथि। कहलथिन हम दोसर विवाह नहि करब। तखन इ निर्णय भेलैक जे सोनाक सीता बना राम यज लेल बैसता। सैह भेल।

मुदा बीचे मे घोडा के त लव आ कुश बान्हि देलथिन। सब हारि गेलाह। हनुमान बंदी भ गेलाह। अंत मे राम एलाह त बाद मे सीता सेहो एलीह। सीता रामे के वंशक सन्तानि के जंगल मे बहुत नीक जका सब विधाक संस्कार मे पारंगत करा राम के औकात देखा देलथि। राम एक संग अपन दुनु पुत आ सीता सनहक पती पाबि धन्य भ गेलाह। कहलथिन सीता के जे आब अयोध्या चलू। सीता मना क देलथिन। राम बहुत बुझेबाक पयास केलथि। मुदा सीता त अपन जिद पर कैम रहली। अंत मे राम कहलथिन : “अहा नहि जाएब त हमर अशमेध यज नहि हेत।”

सीता: “से कोना?”

राम: “पती के अछैते असगर पत्नि अशमेध यज नहि क सकैत

अछि।"

सीता: "तखन अहा कोना करैत रही?"

राम: "हम सब मानि लेने रही जे अहा आब अहि दुनिया मे नहि छी।"

सीता घोर वेदना स व्यथित भ गेलीह आ कहलथिन : "हे राम! अहा मात अपन पौरष आ नामक रक्षा हेतु हमरा अयोध्या ल जाए चाहैत छी? अहि लेल जे अहाक यज भ जाए? हमही बाधा छी अहाक यजक ?"

ई कहैत सीता धरती माता के दुनु हाथ जोड़ि करुण स्वर मे विनती केलीह: "हे माता ! अही हमर माए छी। अहिक कोखि स हम एहि धरा मे उत्पन्न भेल छी। आब हमर आत्मा कानि रहल अछि। अहा फाटू आ हमरा अपना भीतर मे समा लिअ दीय!

धरती सीता के गुहार सुनि लेलथिन आ एकाएक धरती मे सीता दाई के आगा दू टा दरका भ गेले। जाबेत राम रोकथिन ताबेत सीता ओहि धरती मे विलुप्त भ गेलीह।

धरती फाटली आ धरतीपुती सीता धरती मे समा गेलथि। ताहि जखन मैथिलानी सबके कोनो कष्ट होईत छथि त अपना के सीता बुझैत अनायास बाजि उठैत छथि: "फाटू हे धरती"।

ओना आब मिथिला के पुरुष सेहो सीता के सम्मान कहा करैत छथि? सीता सब दहेजक ज्वाला मे जरैत छथि। अपमानित होईत छथि। बेटी के बेटाक तुलना मे कम ध्यान देल जैएत अछि। वेदना अनंत अछि....."

सनातन धर्मवपूर्वजन्म के सिद्धान्त के मनैत अछि। मिथिला के लोक व्यवहार मे धोबी के कहला सँ राम दारे सीता के पुनः वन भेजबाक एक लोककथा अछि जे कर्मवके सिद्धान्त पर टिकल अछि। कथा

देखी एकरा:

बसंत ऋतुक समय छल। शीतल, मंद पवन बहैत छल। सीता दाई अपन सखी बहिनपा संग फुलवारी मे भमण कऽ रहल छली। सीता के इच्छा झुला झूलबाक भेलन्हि। एक सखी सऽ अपन इच्छा व्यक्त केलन्हि। तुरत सखी बहिनपा सब सीता दाई के झुला झुलाबए लगलथिन। बडड मनमोहक दृश्य भ गेलैक। सीता हिलोरा लैत आ सखी सब हिलबैत। जतेक पशंसा करी से कम।

झुला लागल पेमक डाली।।

झुलथि सीता प्यारी ना।।

सब सखी गबथि सिनेह देखाबथि।

बिहुसथि जनकदुलारी ना।।

सोहनगर-रसगर गीत गबैत सखी संग सीता आनंदक सागर मे गोता लगा रहल छली। गीतक स्वर हुनकर कान मे मधुर झनकार भरैत छल। अहि बीच सीताक दृष्टि एक सुन्दर सुग्गाक जोडी पर पडलन्हि। इ सुग्गाक जोडी पक्षि-पतीक जोडी छल। हरियर कचोर पाखि, लाल-लाल ठोर। सुग्गाक भाषाक संग-संग मानुखक भाषा बाज़ऽ मे पवीण छल दुनू सुग्गा। सुग्गाक पती वैह गीत गाबि रहल छल जे गीत सीतादाई अपन सखी बहिनपा संग झुला झुलैत गाबि रहल छली।

सुग्गा के जोडी पर सीता दाई के धियान गेलन्हि। मोन भेलन्हि जे अहि सुग्गा के राजमहल मे आनि पिंजरा मे राखि आ पक्षिक मुहे एकर मधुर बोल सुनि उठब त कतेक नीक रहत!

राजमहल मे अबितहि सीता दाई अपन सेवक के बजेलखिन आ आजा दैत कहलखिन: "देखू, फुलवारी मे सुग्गाक एक जोडी नाचि रहल अछि। बडड सुंदर जोडी छैक। चीरै चुनचुन के संग-संग इ जोडी

मनुखक आवाज़ मे मधुर गीत सेहो गबैत अछि। अहा एखन फुलवारी जाऊ आ ओहि जोरी मे स एक सुग्गा हमरा लेल पकरि क लाउ"। सेवक सीता दाई केर आजा के पालन करैत झट दऽ फुलवारी दिस बिदा भेल। किछेक कालक बाद ओहि सुग्गाक जोरी मे स एकटा सुग्गा पकरि कऽ लऽ अनलक। आब ओहि सुग्गा के एक सोनाक पिंजरा मे बन्द कऽ सीता दाई लग लैल। सुग्गा के अपना सामने सोनाक पिंजरा मे देखि सीता दाई आनन्दविभोर भऽ गेली।
गलती स ओ सुग्गा महिला सुग्गा छलि आ गभवस रहै। ओकर पति सीता दाई के सेवक सँ आवेदन केलक जे ई महिला सुग्गा ओकर पती छैक आ गभवस छैक तहि ओकरा पर करणा देखबैत स्वतंत क देल जाय। पुरष सुग्गा बाजल : "बर हमर पती के बदला मे अहा हमरा ल चलु पिंजरा मे बन्द कऽ सीता लग"। मुदा सीताक सेवक ओकर अनुनय-विनय के नहि स्वीकार केलक आ महिला सुग्गा के राजमहल लऽ अनलक।
अपन पती के पेम मे मातल पुरष सुग्गा हारि नहि मानलक। पाछा-पाछा ओहो राजमहल मे आबि गेल। ओकरा आशा रहैक जे सीता चूकि स्वयं करणाशील कन्या छथि, ओ अवश्ये रप स ओकर पतीक अवस्था पर रवित भ पिंजरा स मुक्त कऽ देथिन!
बेचारा सुग्गा सीता दाई लग भरल नोर व्यथित मोन पहुचल। नोर किमक नामे नहि लैक। आतवभाव स बाजल: "हे करणामयी राजकुमारी सीता, इ सुग्गा जे आहाक सेवक पकरि अनलक अछि इ हमर पती थिक आ गभवसऽ अछि। एकर पेट मे हमर सन्तान पलि रहल अछि। हम अहा लग ई आवेदन करबाक हेतु आयल छी जे अहा एकरा पर करणा देखबैत पिंजरा स मुक्त क दियौक। अगर अहा के सुग्गा रखबाक इच्छा अछि त हमरा राखि लिय!"

कश्नु नश्नु श्वकएक सीता दाई के सुग्गाक अनुनय श्वदस धेआन नश्नु गेलश्मा। ओ अपना मे मस्त रहली। ज़खन सब क्योत स सुग्गा िश्वक गेल आ राजमहल मे श्वकयोक ओकर वेदना सुनबा लेल तैयार नश्नु भेलैक त लाचार सुग्गा ददवआ िधि स श्ववन भ गेल। तामसे घोर होईत सुग्गा सीता दाई के सम्बोश्वात करैत बाजल: “हे जानकी! हम बडड आश लऽ कऽ अहा लग आयल रही जे न्याय भेटत। न्याय त दूर अहा हमर वेदना सुनबाक लेल तैयार नश्नु छी। आहाक ज़खन अपन श्ववाह हैत त िने अहा अश्नु वेदना के बुश्नु सकैत छी। आब हद भ गेल! हम क्यश्वित मोन वापस जा रहल छी मुदा जैत-जैत अहा के शाप देने जा रहल छी। हम पश्ना-पती अश्वाला जन्म धोश्ब-धोश्बन बश्मा जन्म लेब आ हमरा सभक कारण सऽ आहाक पश्ना अहाके गभावसि मे घर स श्नाकाश्ना देता”।

आब सीता के होश जगलश्मा। मुदा आव श्वकछु नश्नु भ सकैत छल। सीता सुग्गा के शाप के श्नारोधायवकऽ लेलश्मा। दन्तकि के अनुसार ओही सुग्गा के शाप के कारण जखन सीता गभवसं छली त राम सनहक पश्ना एक धोश्ब-धोश्बन के कहला पर हुनका घर स श्नाकाश्ना देलश्विन।

श्वकछु लोक के मानब छश्मा जे रामक सीताक पश्ना एहेन श्नाष्ुर क्यवहार सीता के क्यश्वकतत्व के सबल बनबैत छश्मा। मुदा ई केहेन क्यवहार। ककरो सबल बनेबाक हेतु, उदाहरण पस्तुत करबा हेतु अहा डेगे-डेगे पताश्वित करबैक? नश्नु-नश्नु, ई नश्नु उश्वात श्वचार।

एक मैश्विलानी हमरा कहली, "देखू, सीता एक पतापी राजा के बेटी आ दोसर पतापी राजा के पती। हुनकर जखन ई हाल भेल त सामान्य मश्नुला के की बात?" सीता श्नाश्विला अपन नैहर आ श्वता राजा जनक लग श्वकयैक नश्नु एली? िर स्मरण अबैत अश्छ : "बेटी

सासुरे नीक की सगे नीक"। ताहूं सीता सहगक रास्ता धेलखिन।
मोन मे एक बात होईत अछि, उमरैत रहैत अछि - अगर राम मयादापुरुषोतम छथि त फेर ओहि मयादा के धोती के तार-तार किएक लेल करैत छथि?

वैदेही के दुःख सँ रचित होइत मिथिला के अनेक पुरुख आइयो कखनो उतफिर भ जाइत छथि, अधीर भ जाइत छथि, जेना थिरोहक सहर रामक पक्षा पचण्ड भ जाइत होखि! धीरेन्द्र पेमथिवत अतेक तामसे भेर भ जाइत छथि की हुनकर लेखनी बुझू जे कुण मात लेल सब मयादा के अतिक्रमिण करैत अपन भरिस निकलैत बाहिन उठैत अछि:

"दण्ड-भेदे कर वा अपनाउ साम-दाम
हमर सीते जँ बोन, अहा सुनीक राम?"

जो रे मयादा आ पुरुख दारा स्त्रीगन के अदृश्य बेरी संजकलि पैर! बेचारीमैथिलानी से कोना कहती? ई सब त सीता के दारा सथिपत मापदंड के एखनो ओही मयादा के सँग अक्षर-अक्षर अनुशरण करैत छथि, निवहन करैत छथि। पाहुन राम सँ उपराग त ठीक मुदा हुनका लेल अवाच्य किछ - हे भगवान! कमिथ नहि। ऊपर सँ "हम नहि थिपयब थिनु राम" गाबि-गाबि पाहुन के थिन-राति समरण करैत रहैत छथि।

अतेक भेला बादो राम के मिथिला के लोक अपन सब सँ सुनर पाहुन मनैत छथि। राम के पक्षा जेहिना भक्तिभाव तहिना पेमभाव। एक भाव जे मैथिलानी लोकगीतक मादे गबैत छथि से जरुर मोन के रचित क दैत अछि आ सब मैथिलानी मे सीता आ सब मे सीताक व्यथा बुझना जाइत अछि:

"हे भगवान! कुन कसूर थिधना भेल बाम कहब दुख ककरा सँ?"

लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुशावणी : मानवशास्त्रीय विवेचन

एक बेर पोफेसर ज्योत्सनांद जैन एकाएक हमरा पुछलनि, "मिथिला मे कुन चीज़ थिक जे लोक आ शास्त्र, सब कला के एक संगे जोनि अछि?"
हमरा भेल की उतर देल जाय? संयोग सँ किछुए दिन पहिने मधुशावनी कथा मा सँ सुनि रेकॉडव केने रही आ बाद मे ओकरा लिखने रही। भेल ई एक उतर भ सकैत छैक। हम झट दनि कहलियन्ह , "मधुशावणी पावनि"।
हमर उतर सुनि पोफेसर जैन बहुत पसन भेला। कहलथि, "बिलकुल सत्य कहैत छी। यैह सही उतर अछि। अहाक मिथिला मे ई गजब के पावनि अछि जे अनेक तरहक जान, विज्ञान, कला, के सिखबाक प्लेटफिमवनव व्याहल लकिी लेल तैयार करैत अछि। ई एक एहेन पावनि अछि जे लोक आ शास्त्र के जोडैत अछि। अहाक जवाब सँ हम संतुष्ट छी।"
बात पर हम अतेक गौर नहि केलौ। कतेक दिन सँ मधुशावणी पर किछु लिखबाक इच्छा अछि मुदा आलस आ किछु आन कारणे नहि लिख पाबि रहल छी। सश्मिता झा खान केर एक पश्न ओहो अत्यन्त लघु पश्न अनेक दिशा के दरबज्जा खोलि देने अछि। जबाब एक ठाम सँ भेटब असंभव। खेपे खेपे अनेक ठाम सँ आनय पडत। सैह क रहल छी। अहि बात पर सश्मिता जी कहलनि, "आब तँ किछु मधुशावणी पर लिखू"। हुनका नहि कहबाक हिम्मत नहि भेल। मा के कहल मधुशावणी कथा के फेर पढिनाई शुरु केलौ। ओहि मे पोफेसर ज्योत्सनांद जैन केर जिजासा (अविद्या खोज) आ सश्मिता झा खान के जिजासा केर तत्त्व ताकय लगलौ। पहिल बेर मे लागल

थकछु छैक जर र। िर भेल, "कतेक छैक?"

कतेक छैक आ कत-कत छैक ताश्व बातक रहस्य तकबा लेल ओश्व कि के अनेक बेर पढ़लौ। एक मैथिल समाजक सदस्य के नाते पढ़लौ। एक मानव थजान केर छात के र प मे पलिौ। सब सँ पैघ बात ई जे एक थमजासु के र प मे पलिौ। हमरा जे भेटल सँ हमरा जनैत अपूववबात छैक। अपन जान आ समझ के श्वसाब सँ ओकर संश्वक्षप्त व्याख्या क' रहल छी।

मधुशावणी अपन थमथिला मे थववाहक पित 13-15 थदन धश्व के पाबश्व छैक। जाश्व मे नाना तरहक िल, पात, िि लोढनाई, पूजा केनाई, गीत गेनाई,थवध बेबहार के संपादन, थायम थाष ा के पालन, आ पश्वत थदन कि केर एक अिवा अनेक पसंग के समूह मे बैस सुननाइ शाश्वमल छैक। बरखा ऋतु मे भेलाक कारने एकर नाम मधुशावणी बहुत साकि लगैत छैक। अगर थवस्तृत िलक पर उदार भाव सं देखबैक त कश्व सकैत छी जे मधुशावणी अपन थमथिला मे थमथिला बला स्टाइल के हनीमून छैक। बरसातक मधुमास आ ताश्व के मधुराश्वत के जे आनंद थमथिला मे छैक से कहा पेमानन्द, परमानन्द!

मधुशावणी वस्तुतः एक सम्पूणवपाबश्व छैक जाश्व मे लोक आ शास्त्र, पुर ष आ पकृश्वत, मनुख के पकृश्वत केर अवयव जेना पाश्व, नदी, पोखश्व, गाछ, झाि-पात, लती-िती, िल-िल; जीव-जंतु, साप, कीि; धरती-अकास, समतल आ पहाि आश्व के बीच कोना साम्य बनबैत सबहक संगे कोना जीबी, कोना रही तकर श्वाक्ष, बश्वकक व्यवहाश्वक श्वाक्ष देल जैत छैक। कोना सि ानीयता के सम्मान करैत समगता के भाव के स्वीकार करी, से श्वाक्ष देल जैत छैक। श्वाक्ष क्लास र म सं अश्वक ओपेन थीएटर जका पश्ववेश मे देल जैत

छैक। जतय एक माजल कवि वाचिका अपन कवि के जान सं आ अहु सं अधिक कवि कहबाक शैली सं नव व्याख्याता के एक-एक कवि के खोइंछा छोवि-छोवि सुनबैत रहैत छथि। जखनओ कवि वाचिका कवि कहैत छथिन त ओ हरेक पात के अपना मे समाहित क लैत छथिन। कवि केर पात जका हंसनाइ, गेनाई, नहु-नहु बजनाई, जोर सं चिचियेनाइ, नाना तरहक जीव जंतु केर आवाज निकालनाइ, कहबाक शैली मे उपर नीचा के भाव व्यक्त केनाई, सब किछु सर्वोत्तम। अभिनय केर पराकाष्ठा। ई एक एहेन स्टेज होइत छैक जाहि मे स्त्री, पुरुख, देवता, दानव, जीव-जंतु, सबहक भूमिका मात एक कलाकार के करय पडैत छैक —वैह एक्टर, वैह डायरेक्टर। बीच मे कुनो बेक नहि। कतौ सं कुनो सहयोग नहि। मुदा बाह रे परंपरा अथिला भूमि के आ बाह रे मैथिलानी! हरेक कवि वाचिका अपन दायित्व केर पालन बेजोड़ दंगे उत्कृष्टता सं करैत छथि। अतेक पभावी ढंग सं जे, जे पूजैत छथि से त कवि सुनबाक हेतु बैसते छथि हुनका संगे आनो स्त्रीगन सब सुनैत रहैत छथि। जेहने कलाकार तेहने दर्शक —दुनू के बीच परफेक्ट हारमनी। आ कथाया के की कहब ओ चुपचाप एक गंभीर श्रोता जका कवि वाचिका के हरेक शब्द के जानरूपी अमृत के एक एक बूंद माथा थबैत रहैत छथि।

एहि मे भूमि-चित्रण अरिपन केर जान भेनाई सेहो आवश्यक छैक। मधुश्रावणी केर अरिपन मे वर्गाकार बॉडर के भीतर सुरुज, चान, कलश, पुरहर,पातिल, साठी (षष्ठिका), मैना पात, नागक लटपटाएल जोडी, नवग्रह, नौमाथिका आ कमल फुल के प्रतीक के रूप मे गौरी, कुसुमावती, मंगला, लीली आ चनाई आदिक समावेश बहुत व्यवस्थित ढंग सं कैल जैत छैक। एक गोट नव डाबा पर

माथ्न आ गोबर सं पाच टा साप बना साथ्न देल जैत छैक। पाचो सापक ि ि न मे दुथ्ना खोईस देल जैत छैक। अथ्नपन काबि अविा पारब मे सब थ्नम्म के स ान, थ्नशा, कोण, स्नर प आथ्नक जान आ शैली मे थ्नणात भेनाई अथ्नवायवहोइत छैक। चूँथ्क ई पाबथ्ना अथ्नबात, वंश बृथ्न एवं वर आ कथ्नाया के शुभ सँ जुि ल छैक ताथ्न परि क्शन मे कथ्नकबो कोताही के गुंजाइश नथ्न रहैत छैक।
पूजा मे व्यवहथ्नत सामगी सं पता चलैत छैक जे बाथ्नका के अहू बातक पथ्नाकण देल जैत छथ्ना जे ओ सब बस्तु के जाथ्ना लेथ्नि। पतीकात्मक गौरी बनेबाक हेतु हरथ्न, कुसुमक ि ूल, थ्नंदुर, पान आ मेि ी के पीथ्नक' एक गोल आकृथ्ना केर पथ्नामा बना नव ि रिल सरबा मे ठाढ़ क देल जैत छैक। एकरा अलावे मैना पात,नेवो, नीम, दूध, केरा पात, ि ूल, काजर, अरबा चाउर, चुडा, चुडलाई, चीनी, लाबा, आम, कटहर, केरा, अंकुरी, दही, सुपारी, बि की-छोटकी इलायची, जाफ़र,लौग, बि का छोटका हडरी, बहेि ा, नीमक पात, अमतौआ अनार, पखुआ, कुश, धाथ्नक पात आथ्न के पयोग होइत छैक। अथ्न मे अथ्नकाश बस्तु के एक नव वस्त्र मे राथ्न एक पोटरी बना देल जैत छैक जकरा थ्ननी कहल जैत छैक। एथ्न थ्ननी के गौरी आ थ्नषहथ्न के स्नर प माथ्ना भोर साझ पूजा अथ्नवायवरहैत छैक।
मधुशावणी पूजा आ कि ा नागपंचमी थ्नन सं पारंभ भ जैत छैक। पथ्नाथ्नन पूजा भेल आ स्त्रीगन सब पूजा सं पथ्नने आ पूजाक बाद गीत गेलथ्नि। पूजा मे संस्कृत आ मैथ्निली केर अदुत थ्नशण बला शब्द आ मन्त्र भेटैत छैक यदथ्न पथ्नाडत जी के कुनो भूथ्नका एथ्न मे नथ्न रहैत छथ्ना। एक अनुभवी मथ्नला अन्य मथ्नला केर सहयोग सं एथ्न कायवके संपादन मे कथ्नाया के थ्नदेथ्नत करैत छथ्नि न। सब चीज़ सटीक होइक तकर थ्नशेष ध्यान रहैत छैक। गौरी पूजन केर

एक मन्त्र देखू त संस्कृत आ लोक शब्दावली के सुखद जोग पर आनंदित हैब:

“ऐ गौरी! महामाये, चानन डाथ तोडैत एलहुं, सोहाग-भाग बटैत एलहुं, ि‍लक माला अहा थ्रअ, सोहाग-भाग हमरा थ्रअ, स्वामी-पुत सश्रत गौये नमः।”

ि‍र पूजा करक थ्रधान आ ककर बाद ककर पूजा करी तकर थ्रस्तृत व्याख्या आ रपरेखा थ्राधारत रहैत छैक। एश्र ि‍म मे गौरी केर पूजा के बाद कलश केर पूजा, थ्रषहथ्र केर पूजा, तकर बाद लगातार वैरश्रक, चनाइ नाग, कुसुमावती, थ्रंगला, लीली नाग, शतभथ्रनी सश्रत गुसाउश्र नाग, साश्र आश्रक पूजा होइत छैक। पूजा केर समाथ्रि पर अनेक थ्रनती जकरा बीनी कहल जैत छैक केर गायन मश्रला सब उच्च स्वर मे भक्तिभाव सं करैत छथि। पाच बीनी मे अश्रम बीनी ई पमाथ्रात करबा लेल तकसंगत छैक जे कोना एश्र पाबश्र मे सब वस्तु संगे सदाव आ संग रहबाक उश्रत व्याप्त छैक:

दीप-दीप हरा जा‍ि घरा। मोती-माश्रक भर‍ि घरा।।
नाग बढ़‍ि, नाथ्रन बढ़‍ि। पाच बश्रन थ्रषहरी बढ़‍ि।।
बाल बसन्त भैया बढ़‍ि। डा‍ि-खो‍ि मौसी बढ़‍ि।।
आशावरी पीसी बढ़‍ि। बासुकी राजा नाग बढ़‍ि।।
राही शब्द लए सुती। कासा शब्द लए उठी।।
होइत पात सोना कटोरा मे दूध-भात खाई।।
साझ सुती पात उठी पटोर पश्ररी कचोर ओढ़ी।।

बह्मक देल कोदाग्र थ्रषणुक चाछल बाट।।
भाग-भाग रे कीि-मकोि। ताश्च बाट आओताह ईशर महादेब।।
पडल गर ि केर िठ। आसश्चक- आसश्चक, गर ि-गर ि ..

आब एश्च गीत संग श्चथिला चलू। श्चथिला मे बरसात के समय मे खेत-पि र, पोखश्च इनार, कलम-गाछी सब श्चकछु पाश्च सं भश्च जैत अश्छ सावन-भादब मे। आब साप आ नाना तरहक कीि-मकोि पाश्च के डर सं उचगर आ रख सि न श्चस आबय लगैत अश्छ। मालक घर, मनुखक घर, चार, दरबज्जा आ कत-कत नश्च आश्च जैत अश्छ। अयबाक उदेश्य कुनो ककरो छश्च पहुचेबक नश्च अश्चतु पाश्च सं पाण रक्ष आ भोजनक श्चोत रहैत छैक। आ ठीक अही समय मे मधुशावणी पाबश्च पूजल जैत छैक। एकर उदेश्य छैक जे हे नाग आ आन कीि-मकोरा सब जेना मनुखक वंश वृश्च होइत छैक तश्चना तोरो सबहक होब। मनुख आ तो एक संग दोसर के रक्ष करैत एश्च पृथ्वी पर श्चवास करैत रह। तोरा खेबाक लेल वस्तु आ पीबाक हेतु हम दूध अश्चप करैत छी। हमरा, हमर पश्च के आ सगा-सम्बन्धी के तो कश्च नश्च पहुचाबह. हे नाग आ कीि मकोरा के स्वामी श्चव, हम अहाके पूजा अचना करैत छी। हे तंत केर जन्मदाता, हम अहाके श्चवेदन करैत छी, अहाक यशगान करैत छी जे सब संगे हमरो सबहक रक्ष कर । हे नाग अहा रक्ष कर , हे गर ड अहुं रक्ष कर । अश्च गीत के अगर ध्यान सं सुनब त लागत जे ई गीत कम आ तंतक मन्त्र अश्चक अश्छ। एकरा गेबाक अंदाज, स्वर सब श्चकछु अलग छैक। महादेब संगे बह्म, श्चषणु केर सेहो गोहरायल जैत छश्च एश्च गीत मे।
गाय केर गोबर, दूध आश्चक पयोग गाय केर उपयोश्चगता के देखबैत

छैक ओतश्च नाना तरहक वस्तु के पयोग सब मे सामंजस्य। पाबश्चा त मूलतः बाह ण आ कणवकायर्स मे होइत छैक मुदा एकर श्चधान आ सामगी के जुटान मे अनेक जाश्चा के सहभाश्चाता होइत छैक। उदहारण के र प मे सरबा, मङल कलश कुम्हार सँ;डाला, श्चयश्चा, चंगेरा आश्च डोम सँ; लहठी चूि आ अन्य वस्तु लहेरनी सँ एवं अन्य सामगी बज़ार सँ आनल जाइत छैक। ई सामंजस्य कि मे अनेक ठाम अनेक पसंग आ उप-पसंग मे भेटैत छैक। कि केर मूल नायक आ नाश्चका - बाला लखेर आ श्चहुला, बश्चाया अित सौदागर समाज सँ छैक। तंत के जान, गूढ़ रहस्य जे बुझबैत छैक से धोश्चन छैक, धाश्च केर चचवसेहो होइत छैक जे छोट जाश्चा केर छैक। कि सिनीयता के सीमा के सेहो तोरैत एकरा सावश्चौश्चक बनबैत छैक। से कोना? ऐना जे चश्चत सब श्चश्चिला सँ बाहर के सेहो छैक। कि मे अनेक देवता, देवी, गण के भूश्चका छैक। सब एक व्यवश्चित आ समन्वय के श्चधान के श्चमाण करैत छैक।

आब पूजा के श्चश्चावत समाश्चत के बाद कि पारंभ होइत छैक। एक अनुभवी मश्चला श्चनकर स्मरण शश्चत, उच्चारण आ कहबाक शैली के संगे गीत आ िकरा सुनेबा मे महारत रहैत छश्चा से एश्च कायव के संपादन करैत छश्चि। कि पाचो बश्चनी श्चषहश्च सं शुर होइत छैक। कोना एक बुश्चया एक श्चकनी पात मे लहलहाइत पाच सापक पोआ के देखैत अश्च। आ बूि के गाम आश्च ओकर वृतान्त कहब सं पूजाक पदश्चा पारम्भ होइत छैक। ि र श्चषहरी के जन्म होइत छश्चा।

दोसर श्चन केर कि एक नव मोि लैत छैक कारण एश्च मे एकाएक मनसा के पवेश होइत छश्चा। मनसा के पवेश होइते मातर नाग आ ताि कश्चित पैघ देवता (बम्हा, श्चषणु एवं अन्य) के बीच आ दुनु के

भक्त के बीच दन्द्द पारंभ होइत छैक। बिहुला आ चंदु सौदागर कल्याणात्मक देवता के पूजक छथि जिनका मनसा जे मूल रप सं नागक देवी छथि आ जिनका बारे मे इहो कहल जैत छैक जे ओ शिवाबक मानस पुती छथि, केर संग दन्द्द। चंदु सौदागर मनसा के अधिसत्ता के स्वीकार नहि कर चाहैत अछि फलस्वरप मनसा अपन नाग-नाथिन सं ओकरा सब संतान के डंसि क ख्तिम केने जा रहल छैक। ओकरा अन्तिम बालक केर नाम बाला लखेन्दर छैक जकरा बारे मे ई छैक जे ओकरा जाहि दिन बियाह हेतैक ओही दिन मनसा के साप ओकरा डंसि लेतैक आ अहि तरहे चंदु सौदागर के वंश समाप्त। आब चंदु की करे ? धैयवसं काज लैत अछि। चंदु के पता चलैत छैक जे बिहुला नामक एक लड़की छैक जकरा अखण्ड सोहागबती रहबाक वरदान छैक। चंदु अपन पुत बाला लखेन्दर केर बियाह बिहुला सं कर दैत छैक। दुनू लेल एक शीशा के घर बनैत छैक। मुदा सास लेबाक हेतु एकै रती भूर छोड़ि दैत छैक। ओहि भूर सं अपन नाग के भेजि मनसा बाला लखेन्दर के डंसि लैत छैक।

आब की हो? बिहुला कहैत छैक, “एक केरा के थम्भक नाव बना जररी के सामान राखि हमरा बैसा दिय। हम अपन पति के माि अपन कोरा मे ल नदी के पवाह संगे बहैत एकर कुनो समाधान करय चाहैत छी।” सैह व्यवस्था होइत छैक। बिहुला अपन पति के लाश लेने नदी मे चलल जा रहल अछि। लाश आब गलनाई शुर भ गेलैक मुदा बिहुला के हिम्मत एखनो दृढ़ छैक। जैत-जैत एक ठाम देखैत छैक जे एक धोबिन नदिक कछेर मे कपडा धो रहल छैक। ओकर एक छोट बच्चा बेर-बेर ओकरा परेशान क रहल छैक। तंग आबि धोबिन अपन बच्चा के कंठ मचोड़ि दैत छैक। बच्चा मरि जैत छैक. आब धोबिन निश्चिन्त भ कपडा धोबैत अछि। बिहुला के बि

आयिव भेलैक! “कोना एक माय अपन संतान के छोट बात लेल जान मारि सकैत अछि?” बिहुला सोचैत छैक। बिहुला के होइत छैक जे जरूर अहि मे कुनो रहस्य छैक। आब ओ अपन नाव के कात लगा दूर सं धोबिन के अवलोकन करैत छैक। जखन कपड़ा धोआ जैत छैक त धोबिन नदी सं अँजुर मे पानि ल मन्त्र पढ़ैत बच्चा पर छिड़कैत छैक. पानि पड़िते देरी बच्चा हिरहिरा क उठि जैत छैक। बिहुला बुझि जैत छैक जे ई धोबिन सामान्य महिला नहि अछि। ओकरा हाक लगबैत अपन व्यथा कहैत छैक। आब कहानी मे अते सं तंतक पूणवयाता शुरु होइत छैक। धोबिन के कहला पर बाला लखेन्द्र के लाश के ओतय छोड़ि दुनू गोटे शिव लोक मे जैत छैक। बीच मे अनेक कथा आ कथि केर उपकथा अबैत छैक। बिषहरी के कथा आ हुनकर बारह नाम — जगत गौरी, मनसा, जरत्कार, वैष्णवी,सिद्ध योगिनी, नागेशरी, शैवी, जरत्कार-प्रिया, नाग-भगिनी, आसतीक माता, बिषहरी एवं महाजानयुक्ता।

कथा खेपे-खेपे चलैत रहैत छैक — मंगला-गौरीक कथा, पृथ्वीक उत्पत्ति केर कथा, समुर-मंथन केर कथा, सतीक कथा, पद्मावताक कथा, महादेब केर परिवारक कथा, गंगाक कथा, गौरीक जनम, गौरीक तपस्या, गौरीक विवाह, मैनाक मोह भाग, कार्तिक आ गणेश केर जन्म, संध्या केर विवाह आ लीली केर जन्म,पद्मावता सुकन्याक कथा, बाल बसन्त केर कथा, गोसाउनिक कथा, शीकर राजा केर कथा, आ अंत मे गणेश भगबान दारा सोहाग मांगब।

अहि बीच बिहुला केर कथा चलैत रहैत छैक। कथा सब मे तंत छैक, बुझौअल, छैक, गीत छैक, सब किछु छैक। कथा मे हिन्दू धर्मक बहुत मूल तत्व के जान सेहो छैक। स्त्रीगन के व्यवहार, ओकरा समाज मे रहबाक लूरि, पति, संतान, शेष , देवता, पितर,

आश्चक सम्मान आश्चक जान भेटैत छैक। ऊँच-छोट के भेद के कोना पाश्चक जीवन के चलेबाक चाही तकर पश्चाक्ण देल जैत छैक। सब पमुख धाश्मक चश्वत आ आदशवमश्चला के सम्बान्ध मे श्चवरण देल जैत छैक। अश्च तरहे मधुशावणी केवल पाबश्चा नश्च अश्चतु 13-15 श्चनक कायशाला होइत छैक जाश्च मे एक लकिी के ससुर जयबा सं पूववआ गृहसि्ी सम्हारबा सं पश्चने एक पश्चाश्चक्त मश्चला बना देल जैत छैक। ओ बच्ची सं दुलश्चन आ िर दुलश्चन सं गुनमश्चा नाश्च अिवा सम्पूणवमैथिलानी बश्चा जैत अश्छ।

मधुशावणी मे नाग नाश्चन के मनुष्य स्वरप मे कल्पना कैल जैत छैक आ तदनुसार हुनका लेल वस्त्त, शृंगार, आभुषण सब श्चकछु सं मोन मे सुसश्चजत के गीत गाश्च स्मरण कैल जैत छैक। एक गीत देखू:

श्चयरी अँचरी श्चषहरी के नामी-नामी केस।
घुमैत एली श्चषहरी श्चारहुत देस।
तोहरो श्चंगार श्चषहरी लाबा आ दूध।
हमरो श्चंगार श्चषहरी श्चार के श्चन्दूर।
तोहरो श्चंगार श्चषहरी कोर भश्च पूत।
िल बीच गुअबा नवेद बीच पान।
देवी बीच श्चषहरी मैया दोसर नश्च आन।

मधुशावणी एक श्चसाबे मश्चला के सता के पतीक अश्छ. सब काज, श्चध, मन्त्त- पूजा मश्चला दारे पश्चापाश्चत होइत छैक। पुरष केर कोनो भूश्चका नश्च। तंत के शश्चत एहेन जे छोट-पैघ सब एक ठाम आश्च जैत अश्छ। सब तरहक देवता मे आपसी सौहादवके सूचक अश्छ मधुशावणी।

अंत मे सब ठाम होइत नदी केर कछेर केर धोबिन संगे बिहुला वापस अबैत अछि. बाला लखेन्द्र के लाश मे पाण आबि जैत छैक। ओ आरो सुन्दर आ सोहनगर भ जैत छथि। चंदु सौदागर के सब बेटा आ सम्पत्ति फिरो आबि जैत छैक। ओकर सब बेटा सेहो जिबित भ जैत छैक। चंदु आब आन देवता संगे अपन पुतहु के कहला पर बिषहरी आ मनसा के पूजा अर्चना शुरू क दैत अछि। सब किछु शुभ होमय लगैत छैक।

एहि पाबनि आ कथा के जे ध्यान सँ सुनल जाय आ एकरा गुनल जाय त पता चलैत छैक जे शास्त्र पर लोक जेना कतौ-कतौ भारी पड़ैत हो! अंततः, चंदू सौदागर के भले अपन पुतहु आ बेटा के कारणे, मनसा देवी आ बिषहरी के पभुत्व मानबाक हेतु बाध्य होमय पड़ैत छैक। एहि कथा मे एक बात स्पष्ट ई होइत छैक जे अगर बहुत बात शास्त्र मयादा के नाम पर बहुत बात अथवा क्रिया अथवा दृष्टान्त देबा लेल मना क दैत छैक मगर लोक ओही बात लेल ओकर व्यवहारिक पक के देखैत उदार भ जाइत छैक। उदाहरण के रूप मे लोके मे ई सम्मत भ सकैत छैक जे गौरी के शिवनाथ कहैन; महा मर्यादित महादेव के मैथुन आ काम कर क्रिया मे लिप्त देखा देथि। यदपि उदेश्य शिक्षा गहण करक होइत छैक। एकर एक अर्थ एहो भ सकैत अछि जे नव ब्याहता के ई बता दी जे काम अथवा यौन क्रिया शाशत पक्रिया छैक। एकरा मनुष्य आ जीव जंतु के बाते छोड़ि दी देवता, देवी सब स्वीकार करैत छथि सृष्टि के चलेबाक हेतु अहि मे संलग्न रहैत छथि। ई कदाचित सफल गृहस्थ जीवन जीबाक मूल मंत छैक।

मधुशावणी पाबनि केर शंक सूत छैक मनसा आ बिषहरी केर आराधना। मनसा अर्थात नागक देवी। मनसा आ बिला ओहेन देवी

थ्मनका शथ्का त छथ्म मुदा हुनकर सता मानबाक लेल मुख्यधारा के देवी देवता केर भक्त सब सहज भाव सँ तैयार नथ्इ अथ्छ। मनसा एक एहेन देवी छथ्रि जे अपन छोट स्वरप अित सिानीय स्वरप के थ्वस्तार अथ्खल भारतीय स्वरप मे करय चाहैत छथ्रि। मनसा के इच्छा छथ्म जे हुनका सब वगव़ जाथ्म आ समाज के लोक पूजा करय, थ्नकर गुणगान करय। मुदा ई काज ओतेक सहज नथ्इ अथ्छ। छोट जाथ्म के लोक थ्नकर सता के स्वीकाथ्र लेलक। स्तीगण सेहो ओही थ्दस थ्बदा भेली मुदा पुरख कोना मानत? ई कथ्म पैघ पश अथ्छ। मनसा थ्हमालय सँ चलैत छथ्रि आ नेपाल, तराई बला थ्मथ्िला, भारत बला थ्मथ्िला, असम, बागलादेश, बंगाल, ओथ्िसा, होइत िरो मध्य आ उतर थ्हमालय धथ्र व्याप्त रहैत छथ्रि - उतराखंड, कश्मीर, थ्हमाचल पदेश धथ्र। मनसा संगे थ्बहुला केर किा नेपाल, थ्मथ्िला, बागलादेश, पथ्िम बंगाल, असम, उिीसा धथ्र मूल किा सँग डाथ्र-झाथ्र मे कथ्म-मथ्म िर बदल सँग चलैत रहैत अथ्छ। उतराखंड आ थ्हमाचल मे मनसा केर अनेक किा पचथ्लत अथ्छ। साप के पभाव आ भय के स्वीकार करैत लोक वगव़ समुदाय, थ्लंग आ जाथ्मक सीमा सँ उपर उठैत मनसा देवी के समक नतमस्तक होइत छथ्रि। यैह पभाव थ्मथ्िला मे सवहारा वगवमे आ बाहण आ कणवकायसि केर स्तीगण मे भेटैत अथ्छ।

मुदा हमरा अगर हम समाजशास्तीय िि सं मधुशावणी केर थ्ववेचन करैत छी त ऐना लगैत अथ्छ जे थ्पतृसतात्मक समाज थ्कछु अनरगल पभाव एथ्ह मे थ्बध आ पूजा के नाम पर घुसा देने छैक जाथ्ह सं मानथ्सक स्तर पर मथ्हला सब ओथ्ह परम्परा के नाम पर अपना के स्वयम शोथ्षत आ पताथ्ित करैत रहैत छथ्रि। अनेक ठाम सती केर महत्त्व के गुणगान किा सब मे अनेक बेर अबैत छैक। धमव़ पूजा-

पाठ, थारहस्ती, पेम-अनुराग, तंत-मन्त, थतृ, देवता, पकृश्चा, पकृश्चा केर अवयव ि ल, पात, साप, थ्वरै, धमवगर्न केर सार; श्चाक आ अधलाह मे अंतर करब, पुन्य आ पापक बीच अंतर आ श्चाक मागव केर चुनाव, मानवधमवकेर पालन,स्ती धमवकेर श्चावह्रन, आर ने जाश्चा की की मुदा एश्च पाबश्चा केर अश्चातम श्चन जे कश्चाया के ठेहुन टेमी सं दगबक पि अश्छ से बि अमानवीय। बश्कक ई कश्च सकैत छी जे सती पि के बाचल श्चस्सा जका अश्छ। सब मश्चला, माय, थश्चायाईन, दाई, सखी-बश्चनपा एश्च बात सं दुखी रहैत छश्थ जे कोना एश्च जरैत टेमी के सेहो एक बेर नश्च तीन-तीन बेर धाह केर घाव के वदाश्त करती! परन्तु परंपरा लाचार केने छश्चा। की क सकैत छश्थ? अगर श्चाक सं िका हेतश्चा त अश्चर सोहागबती हेती। पश्चा के सब श्चकछु श्चाक हेतश्चा। ताश्च ओकर पालन हेबे करत। आब एकश्च उपाय रश्च जैत छश्चा जे सुरज भगवान सं श्चावेदन कैल जाय जे ओ अपन रौशनी मे श्चागधता आनश्थ, अश्चग कोमल भ जाश्थ, पानक पात ओना त शीतल होइत अश्छ मुदा ओ आरो शीतल भ जाय जाश्च सं दागै काल बेटी शीतल के कम वेदना होश्चा,पाहून मधुर हाि सं आंश्चख झापश्थ, गंगाजल आ आन जल खूब ठंकि पदान करय, टेमी के धाह मधुर-मधुर जरै, चानन केर लेप आरो शुश्चातल भ जै जाश्च सं परम्परा के श्चावह्रन करैत कश्चाया के ठेहुन दागल जा सकै:

शीतल बहि समीर दहो श्चश शीतल लि उसासे।
शीतल भानु लहुक लहु उगि शीतल भरल अकासे।
शीतल सजनी गीत पुश्चा शीतल शीतल श्चध बेबहारे।
शीतल मधुशावणी श्चश्चा हो शीतल बसन श्चांगारे।

शीतल घृत शीतल वेर बाती शीतल काश्मनी अंगे।
शीतल अगर सुशीतल चानन शीतल आबि मागे।
शीतल कर लय नयन झँपाबह शीतल देलहुँ पाने।
शीतल हो अश्वबात कुमर सँग शीतल जल असनाने ।।

गीत, श्वध-बबहार सब श्वकछु शीतल होबक चाही। वर अपन कोमल हाि सँ आँश्वख झापश्वि, घी, बाश्वाक सडे टेश्वमक अश्वमनक सेहो शीतल भ जाय, पवन शीतल मंद भ बहै, वस्त्र आ श्वांगारक सामगी सेहो शीतल होइक जाश्व सँ बेचारी नाश्वयका अश्व पिा के पालन करैत अपन ठेहुना के दगबा सकैि।
एक गीत मे त कश्वनया केर माय आ आन मश्वहला सडे हुनकर कुमर अिात वर सेहो अपन हाि सँ ओना त नाश्वयका के आँश्वख झापने रहैत छश्वि मुदा वेदना देश्वख रश्वचत भ जाइत छश्वि। हदय केर वेदना दुनू आँश्वख सँ नोर भ झहरै लगैत छश्वा:

आजु सोहाश्वगन सहमल बैसल मुख श्वकयै पिल उदासे।
अम्मा मुख हेरय श्वकये काश्वमनी पल पल लैह उसासे।
कुमर नयनसँ नोर बहाबह गाइश्वा गाबश्वि गीते।
बिा अजगुत मधुशावणी श्वश्वा परम कश्वठन इहो रीते।

मधुशावणी केर श्वध-बेभहार त सब के श्वध्वंसक आ स्त्रीगन के शारीश्वरक आ मानश्वाक शोषण केर एकटा वीभत्स परंपरा बुझना जा रहल छश्वा। श्वाया के ददवहेतश्वा से बेचैनी सेहो छश्वा। श्वधक पश्वने आ श्वधक बादक ददवहेतश्वा से जाश्वा बहुत श्वंश्वात रहैत छश्वि। मुदा श्वध के त्याग भला कोना सकैत छश्वि? एश्व मे श्वाया के कल्याण

छथि अ आर सौहाग्यवती होबाक कल्याण, पुतवती होबाक कल्याण। अतेक सुनर पाबनि मे मात ई बाध कनि अन्करच्छल लगैत अछि। एकरा समाप्त क देबाक चाही।

समय बदलि रहल छैक। आबलकी सब सेहो पश्चाकार करक अवसि मे छथि। बाल विवाह अधिला मे समाप्तपाय अछि।ठेहुन दगबा के पतीक मे केवल टेमी धाह उपर सं देखा विध पूरा कैल जा सकैत अछि। अतेक भाक पाबनि के मात ई छोट सन बाध जाहि मे भाया के सब उमंग आतंक मे बदलि जैत अछि, हमरा कोनादन लगैत अछि। अहि टेमी बला पर स्त्रीगन, पुरष, संस्कृत के विदान भाल शीघ भाणय लय एकरा समाप्त करथि अ वा पतीक मात राखथि। ओना किछयोक भावुक कहि सकैत अछि, मुदा हमरा ऐना बुझना जैत अछि जेना बिना कुनो कसूर के सीता के अग्नि परीक्ष लेल जैत अछि। सीता के मा, धियायाइन, जेठ बहिन, भौज सब मौन भेल तरपैत सीता के देखैत छथि! बडड भेल, एहि पर सोच आवश्यक।

भाक आ अधलाह त सब परंपरा मे रहैत छैक।जे हो मधुशावणी एक बहुत उतम पाबनि अछि। एकर आवहन होबाक चाही। ई अतेक पैघ विषय थिक जकरा पर पूरा पोथी लिखि सब बात पर गंभीरता सं विचार राखल जा सकैत अछि। मुदा सब बात अगर एत लिखब त िर पढ़नाइ दुलभ। ताहि अतय विराम दैत छी।

मैथिली जोग गीत मे पेम आ तंत केर पभाव

डॉ. सभ्यता झा खान हालहिं मे ओ एक जिज्ञासा केने छली:
“मैथिल दृश-दृष्टि मे इरोटिका वा कामुकता मुख्यधारा मे अछि की सबवर्ज़न (सबवरज़न माने स्थापित मुल्य, सता आ शक्ति के विलाफ) के रप मे”।
हमर जे अपन शोधक अनुभव अछि ताहि के आधार पर कहि सकैत छी जे अगर मुख्यधारा के अवलोक अथवा जन समुदाय अछि त कामुकता मुख्यधारा के चीज़ थिक आ ई मिथिला मे भारतक बहुत आन ठामक परंपरा जका अदौ सं विदमान रहल अछि, मान्य रहल अछि। खास क विवाह के समय आ ओकर बादक विध व्यवहार मे गीत आ आन माध्यम सं कामुकता के पदर्शन होइत अछि तकर जतेक वर्णन करी से थोड़। शायद विध बेभारक माध्यम सं बर आ कन्याया के काम के पक्ष पर्यपक्व आ एक दोसरक समीप लेबाक ई उतम पक्रिया छैक।
उदाहरण के लेल लाबा छीट’ काल लाबा जे छैक ओकरा अगर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करब त कन्याया अथवा बर के मन मे उठैत रंग-विरंगक पेम, अभिसार केर तरंग छैक। काम इच्छा के भावक पतीक छैक। ऊपर सं गीतक शब्द जाहि मे महिला सब बर आ कन्याया के झिझक वर के माता आ कन्याया के पिता; वरक दाई आ कन्याया के पितामह, वरक मामी आ कन्याया केर माम आदि सम्बन्ध केर संग जोड़ि ओकरा आरो रमनगर आ दुनू लेल इजी गोइंग अथवा सहज बना दैत छैक।
एक उदाहरण देखू:
बाबू लाबा छिछियाउ माया बीछि-बीछि खाउ

बरक बाबी कन्याक बाबा संगे सुताउ
बाबू लाबा छिड़ियाउ धीया बीछ-बीछ खाउ
बरक माय कन्याक बाबू संगे सुताउ
बाबू लाबा छिड़ियाउ धीया बीछ-बीछ खाउ
बरक बहिनी कन्याक भैया संगे सुताउ
दुनू घर गुजर चलाउ ....
बाबू लाबा छिड़ियाउ धीया बीछ-बीछ खाउ

ओना त ऊपर वर्णित गीत सहज लगैत छैक। मुदा अपन गायकी आ लोकक समपर्ण, विधक उदेश्य आ लाबा छिड़ियाएब केर क्रिया आ लकिी सब दारे ओकरा लेल छीना-झपटी सब नव बर आ कन्याया के अनुसार हेतु सहज क दैत छैक। धोखेनाई केर बात समाप्त भ जैत छैक। अहि पूरा गीत मे बरक दाई, माय, आ बहिन सब आ कन्याया केर पितामह, पिता, आ भाई सब पात भ जैत छैक जकरा बीच परिहास केर सम्बन्ध उचित आ समाज सम्मत मानल जैत छैक। अहिना एक विध पचिया समेटब आ ओछाएब के होइत छैक। अहु विध केर उदेश्य बर आ कन्याया के अनुसार आ रंग-रभस लेल तैयार करब, सम्बन्ध के पगाि आ सहज करब थिक। एक छोट सन गीत देखब त एकरो अविबुझबा मे कोनो भागट नहि हैत। गीत देखू:

सब रंग पचिया समटू सोहबे
दुलहा सं ओछबाउ हे
पचिया ओछयबामे कसमस करता
मारब चाट घुमाय हे
टेढ़-तूि जुनि पचिया ओछाएब
रानी रहती सुकुमारि हे

हँसी-िुशी पश्चिया ओछाएब

हँसती श्चिया सुकुमाश्च हे ..

कतेक आनंद, उल्लास, रंग आ वैश्चिध्य सं भरल ई छोट सनक गीत छैक! नाम लेल पश्चिया छैक मुदा छैक बहुरंगी। सखी सब गीतक मादे कश्चिया के केश्चि-कीिा केर पैश्चिकल जान देमक यत क रहश्चि छश्चि। बर के कोना सोश्चिअलाइज करी से युश्चि बता रहश्चि छश्चिन। पश्चिया ओछायबक हेतु बर के कहश्चिन से बता रहल छश्चिन। अगर तुश्चि होइत छश्चि त पेमक चाट मरबा लेल उकसबैत छश्चिन। पेमक चाट दुनू मे साश्चिय सिश्चित करबा मे सहायक हेतश्चि तखन ने बात आगा बढ़तश्चि? रसब-बौसब केर कला केर जान द रहल छश्चिन हँसब-बाजब के गुण बता रहल छश्चिन। सब सं पैघ बात ई जे कोनो बात छुपल नश्चि, चोरैल नश्चि। सब श्चितगन दाई, माय, श्चिश्चियाइन, भौजी, जेठ बश्चिन सबहक समक आ सबहक अनुमश्चि सं। एक बात इहो, सब सखी सब ओश्चि पर श्चिहकारी मारैत पहसन के आरो अनुरंजक बनबैत रहैत छश्चि। एकर स्पिीकरण श्चिश्चिश्चित गीत मे अश्चि:

सबरंग पश्चिया समटू हे सोहबे

दुलहा देता ओछाय

टेढ़-टूि जो पश्चिया ओछाओता

रश्चि रहब सुकुमाश्च हे

हे कसार मसरने पश्चिया ओछोता

मारबश्चि चाट घुमाए हे

हँसी-खुशी सं पश्चिया ओछोता

तखन हंसश्चि सुकुमाश्च हे

आब गीतक एक-एक शब्द के देखब त लागत जे समाज कतेक

उदार भाव सं इरोिटका के स्वीकृत िद रहल अिछ। लेिकन एिह इरोिटका मे यौनाचार अिवा यौन िवकृित के सम्वाद अिवा पतीक निह छैक। मयािदत इरोिटका जकरा लोकक भाषा मे हँसब-ठेठायेब सेहो किह सकैत छी। एहेन इरोिटका जे शृंगार, शब्द व्यंजना, भाव, िवध-बेभार, आ संस्कार सं सुसिज्जत अिछ। जकरा मयािदत स्वरप मे समाज मान्यता पदान करैत छैक।

िमिथला मे िववाह के संग एक िियया जोगक होइत छैक। जोग के पयूिवस्ट सब योग किह सकैत छिथ। दुनू के अिवएक भेल जुिब अिवा जोिब। बर के कन्याया सं आ कन्याया पिरबार के बरक पिरवार सं। लेिकन मुख्य रप सं बर-कन्याया के जुडब मानिसक, शारीिरक आ सामािजक स्तर के संग-संग मनोवैजािनक स्तर पर सेहो महत्त्व रखैत छैक। जोग मे बर आ कन्याया के गीत सं, िवध-बेभार सं, आ तािन्त्रक िियया सं सेहो जोिक परंपरा रहल छैक। तािन्त्रक िियया मे पिरहास आ गीतक चासनी लागल रहैत छैक। नैना जोिगन के िवध मे मानल जैत छैक जे बंगाल, अिवा िहमालय अिवा कामख्या सं एक हाकल योिगन अबैत छैक। गीत मे कखनो काल गीतगाइन सब अपना आप के िवारहुत के एक नंबर के िरल जोिगन पमािणत करैत छिथ। जोगक एक उदेश्य बरक ध्यान अपन माय-बिहन सं अिधक कन्याया िदस आकिषत करब सेहो छैक। जोग मे गीत गेबाक शैली पूरा तंतमय भ जैत छैक। कखनो काल क धरती, अकास, समुर,पहार सब चीज़ के बान्हब आ अिभान करब के चचव होइत छैक। जोग दारे असंभव काज के संभव करक बात होइएत छैक। िनम्निलिखत जोग गीत के देखू:

माइ हे सात बिहन हम जोिगन नैनहु िथकी जेठ बिहन

माइ हे िवानकहूँ सं जोग िवखल िवान भुवन जोग हाकल

माइ हे समुरहु बान्हि बन्हाओल तै हम जोगिन कहाओल
माइ हे तरहि दही जनमयलहूँ तै हम जोगिन कहाओल
माइ हे सुखाएल गाछ पनुगेलहु तै हम जोगिन कहाओल
माइ हे बाझिक कोखि पलटलहूँ तै हम जोगिन कहाओल
माइ हे भनथि विद्यापति गाओल जोगिनिक अंत न पाओल ....

एहि जोग गीत मे जोगिन अपन कला आ विद्या तंतक जानकारीमा मंडित क रहल छैक। एकरा जखन स्त्रीगन सब गबैत छथि त लागत जे अविवेद वेद केर मन्त्र के कल्लोल भ रहल अछि। तंत सं केहनो असंभव काज भ सकैत अछि; धरती,अकास आ पाताल के हाकल जा सकैत अछि, समुरके बान्हि सकैत छी, तरहत्थी मे दही जमा सकैत छी, सुखैल ठुठ गाछ मे पाण आनि ओकरा हरियर कचोर क सकैत छी, केहो बाझिन के कोखि मे संतान डालि सकैत छी। आ ई सब क सकैत छी तांहि त हमर सबहक नाम जोगिन अछि। विद्यापति कहैत छथि, “एहि जोगिन सब के अंत कियोक नहि पाबि सकैत अछि!”

आई कालि लकिी सब रैप पर उतरैत छथि, बालाई के चालि चलैत छथि अति कैट वाकिंगकरैत छथि। लटका मटका झारैत छथि। शरीर आ वस्त्र के कमोतेजक सौन्दर्यव सं दर्शक के अपना दिस आकर्षित करैत छथि। करक चाही। एहि मे कोनो हर्ज नहि। ठीके त कहल जैत छैक, “सोच बदलबाक जररत छैक, वस्त्र नहि”। जोग गीत मे एहने भाव बहुतक अहू सं रमनगर, आ कामोतेजक भाव नव व्याहुत कनिआया दारा पदर्शित होइत छैक। स्त्रीगन सब गीत गबैत छथि कनिआया कमर मटकबैत, नव वस्त्र सं झापल अपन देहक उभार के देखबैत, आभुषण सं पैर के छम-छम करैत, चूड़ी आ कंगना के खनखन करैत चलैत छथि आ पाहून के अपना दिस मोहित करैत

रहैत छथि। पाहून के ध्यान कन्याया छोड़ि ककरो लग नहि जाइन तासँ हेतु कन्याया के माय थप्पयाइन तासाक श्रीया क देने छथिन। पाहून के नोन पथि खुआ देल गेल छन्हि,हुनकर पाग के ताग अकाशि ओकरा तासाक श्रीया दारा खन्ती के तर मे गाड़ि देल गेल छन्हि। आब ओ पूरा कन्याया के अधिन छथि। कहि एक एहेन जोग गीत जे एहि तरहक बात कहैत अछि के देखैत छी:

जोग जखान हम जानल पहचानल
गुनगर कैल जमाय अधिनक राखब
रनुक-झुनुक श्राया चलतीह' पहु देखताह'
पागक चि उघाड़ि हदय बीच राखल
जखन श्राया मोरी चलतीह' पहु तकताह'
नागरि कैल जमाय अधिन क राखल
हमर जोग नागर' गुण आगर'
सात खण्ड नव दीप जोग अवतारल
भनहि थदापति गाओल लि पाओल
गुनगर कैल जमाय अधिन क राखब....

बाह रे पेम। तंत सँ बान्हल सनेहक डोरी। गीत मे एक सँग कमनीयता, सौन्दयर्, दैहिक सौषव, आ स्त्रीगनक अधिकार पुरख पर देखार भ रहल अछि। श्राया के चलब, श्राया के देखब, पहु के ताकब, जोश्रान के अधिकार सब एक संगे पबल बेग सँ पमाथात होइत।

एक जोगक गीत मे त जोश्रान ताल ठोकि कहैत छथि जे "आब अतेक श्रीया आ तंत सँ पहुँ के बाधि देने छियैन्ह जे ओ कतहु जाथि, अंततः घुरि श्रीर क हमरे लग एता। जेता कत?

माइ हे हमरहु जँ पहुँ तेजताह लि बुझताह

माइ हे बाझ्रहि देबश्रा बश्रासार अधीन भय रहताह
माइ हे चान सुरज जका उगताह उश्रा झपताह
माइ हे नैन नैन जोिल श्रानेह िलक नश्च छोिताह
माइ हे नाव डोरी जका घुमताह घुश्रा अओताह
माइ हे मकरी देबश्रा ऐंश्च देहश्च धेने रहताह
माइ हे भनश्च श्चदापश्रा गाओल िल पाओल
माइ हे गौरी के बढ़नु अश्चबात सुन्दर बर पाओल।।

कहक तात्पयवभेल जे गीत जे गाश्च रहश्रा छश्चि श्रानका अपना तंत पर गुमान छश्रा। जेना सुरज-चना आँश्च श्रचौनी करैत रहैत अश्छ; तश्चना नायक आ नाश्राका के नैन सँ नैन श्राल गेल छश्रा आ ओकरा तंतक मन्त्र सँ बाझ्रहि देल गेल छैक। ककर मजाल जे ओश्च डोरी के तोश्चि सकै? बर त कश्रााया सङे नावक डोरी जका जुिल छश्चि, कतहु जाश्चि अंततः वापस आबहे पतिश्रा। आरो बहुत उपमा छैक जकरा बुझनाई कुनो मुश्चकल नश्च।

अतेक तंत केर बात होइत अश्छ। श्चकछु एहनो लोकक तंत पर काज होबाक चाही। बात बहुत श्चकछु अश्छ। एखन एतबे।।।

तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

मिथिलाक संस्कृति केर दू अभिशाप अछि: तमाकूल आ भाग। पता नहि कोना ई दुनू इलम मैथिली संस्कृति सं जुड़ि गेल? दुनू के सेवन मिथिला मे नशा केर शेणी मे नहि अबैत अछि। तमाकूल त बाप सं बेटा, चरबाह, हरबाह सं भरिरहत तक माथा खैत छथि। तमाकूल के नाम सुनिते मैथिली के एक चर्चित गीत जकरा आइयो बहुत सुवाद सँ सुनल जाइत अछि स्मरण आबि जाइत अछि:

मामा यौ कनि खैनी दीय
अपनो खाऊ कनि हमरो दीय
जौ नहि देब त कहि देबनि हम मामी के

तमाकूल के खैनी, सुरती, तम्बाकू आदि नाम सं जानल जैत अछि। ई अपन समग अवस्था मिथिला के संस्कृति मे रचल बसल अछि। लोक त बारी-झारी मे खेबा जोग तमाकूल उपजा लैत छथि। फेर ओकर कटनी, छटनी करैत छथि। शीत-रौद देखबैत छथि आ अंत मे खर मे राखि साल भरि लेल जमा करैत छथि। तमाकूल के ऐंठी आ जूम मे सेहो कला देखि सकैत छी। कम्पनी सब के आबि गेलाक बाद सकरी कट आ आरो रंगक तमाकूल बाज़ार मे उपलब्ध अछि। कनि तेज लगबा लेल कम्पनी सब ओहि मे एसिड डालि दैत छैक। लोक कहता, “बडड चहटगर अछि।” तमाकूल लोक सीधे चून लगा खाइत छथि, नोसि लेत छथि, बीड़ी मे, सिगरेट मे, चुरुट मे, सिगार मे, पाइप मे, गुटखा, गुड़ाखू, गूल आ नहि जानि कत-कत मे पयोग होइत अछि। आर त आर एकटा गूल केर कम्पनी "गुलाब गूल" नाम

सँ अपन पोडक्ट बनबैत छल। ओकर कंपनी मे एक चहटगर स्लोगन रहैक - "गूल हमारा अधिकार है"। आब कहु, कुनो जोगि अछि एकर महत्त्व के?

मुदा जे सबसँ खतरनाक तरीका तमाकूल खेबाक अछि से अपन आश्रिला आ आसपास केर क्षेत्र मे देखल जाइत अछि - शुद तमाकूल मे चून मिला आ चुनौटि क ठोर मे आँगुर सँ ठुसि लेनाइ। ई साक्षात् यम के नौत देबाक पति अछि। ऊपर सँ ई लोक के असभ्य आ सुसभ्यता के मर्यादा सँ दूर सेहो भगबैत अछि। लोक तमाकूल ठुसि यत-तत-सर्वत्र थुकैत रहैत छथि। ई एहेन पर्याह लत अछि जे समाजवाद केर मर्यादा पर अटकल अछि। समाजवाद, मार्क्सवाद,लेनिनवाद के जोगि सँ पकगिने अछि। की ब्राह्मण आ की हरिजन, की हिन्दू आ की मुसलमान, ईसाई आ बहुत ठाम स्त्रीगण तक एकर स्वाद सँ झुमैत रहैत छथि। अतेक समाजवादी जे रिक्शा पर चढ़ल हाकिम रिक्शावाला सँ दात खिपोगित बिना कुनो मान सम्मान के चिंता केने तमाकूल मांगि अपन ठोर मे ठुसि लैत छथि। रिक्शावाला सेहो जे कखनकबेकाल पहिने लघुशंका केने छल आ पानि के अभाव अथवा आर कुनो कारणे हाथ नहि धोने छल अपन ओहि पवित हाथ सँ खूब मोन सँ तमाकूल के चून सँ रगरैत अछि आ हाकिम के दैत छथि। बाह! की दृश्य - जेहिना हाकिम तेहिना रिक्शावला दुनू मस्त।

तमाकूल के सेवन केनिहार रंग-रंग के बहाना बनबैत छथि। कतयोक एकरा B B C अथवा बुद्धिवर्धक चूर्णवत कतयोक आरो किछु कहि संबोधित करैत छथि आ भाषा - भाषा के महिमा के बखान करैत छथि। हमर एक सम्बन्धी एक घंटा मे 20 बेर तमाकूल ठोर तर दैत छथि। एयर फोर्सिव मे काज करैत छला। हवाई जहाज केर

इंजन केर अभियंता रहथि। हुनका बारे मे एक बात पचलित छल। जखन कखनो फाइटर हवाई जहाज केर इंजन मे कुनो खरापी होइक आ हुनका भागट बुझ मे नहि आबथि त विशेष अधिकारी कहैन, "भाई, हिनका चून तमाकूल खियौन, ई तुरत सब किछु ठीक क देताह।" फेर की लोक तुरंत तमाकूल तैयार करैत छल, हुनका दैत छलथि आ ओ बहुत गर्वित होइत तमाकूल के ठोर मे ठुसैत अपन काज मे मनोयोग सँ लागि जाइत छला। ई बात अलग अछि जे बाद मे दमाक गहन रोगी भ गेला। हालांकि तमाकूल केर लत एखन धरि नहि गेलथि अछि। हुनकर पती ओना त तमाकूल खेबा लेल हुनका सँ झगरैत रहैत छली मुदा जखन यैह बात एक दिन हुनकर छोट भाई बुझाब' लागलथि न त पती के भेलथि , "तमाकूल के इलम कुनो बडड कलंकक बात भि ने भेल? खाइत छथि त कोन कुकर्म?" झट दथि पतिक सुरक्षा कवच बनैत अपन देवर के ऊंच नीच कहनाय शुरु केलथि: "अहाके अतबो संस्कार नहि बचल जे जेठ भाय सँ कोना बाजी? कोना हिम्मत भेल हिनका भाषण देबके? तमाकूल खाइत छथि कुनो कुकर्म नहि।" बेचारा छोट भाय, काटू त खून नहि! आ तमाकूल ठूसा शीमान अपन पती सँ गदगद भेल। जखन दिल्ली यूनिवर्सिटी केर हॉस्टल मे रहैत रही त अनेक बिहारी छात्र सब तमाकूल खैत छलाह आ एकरा बिहार आ मिथिला के सांस्कृतिक धरोहर जका मनैत अपन लत पर इतराइत छला। यत-तत-सर्वत्र फुकिबा के परंपरा के सेहो शाशत केने छला। एक छात्र त एहेन छला जे की कही। बहुत जानी, पढ़बा मे अव्वल, कुशागबुद्धि मुदा तमाकूल खेबाक घनघोर समर्थक। वाकपटु सेहो छला। अपना सङे अनेक बिहारी आ बहुत रास आनो ठाम के लोक के तमाकूल ठुसबक लत मे निपुण केने छला - आदर्श गुरु जका। कखनियो

काल थ्थलम सेहो देख लैत छला। बाद मे आई पी एस अथ्थकारी भेला। थ्थतता एखनो अछ्छ मुदा नाम देखार नथ्थ करब। हमर त थ्थकछु नथ्थ करता कथ्थ देखार भ जेताह।

भारत के अनेक तथाकथित शैक्षणिक कौशल मे माथ्थर थ्थशथ्थदालय मे त तमाकूल सडे बीड़ी के पचलन भ गेल। लोक बीड़ी के धुआं मे समाजवाद के संगीतक आनंद आ परमानन्द मे भेर होमय लगला। अनेक मथ्थला सब सेहो एकरा समाजवाद, वगवथ्थभेद हटेबाक, आ स्त्री-पुरख के समानता के इंथ्थकेटर के रप मे देखैत छथ्थ। सभा मे, रैली मे लोक बीड़ी थ्थबैत मस्त भेल मकुनी हाड़ी जका चलैत रहैत छथ्थ जेना बीड़ी केर हरेक कश सँ एक कुपथा के सवथ्थाश क लेता, समाज सभ्य आ सम्यक भ जैत, माओ, नक्सल सब समस्या के चट सँ थ्थदान।

मुदा तमाकूल के आयुथ्थथ्थान आ वैजाथ्थक शोध के तराजू पर जोखब त लागत जे ई दारू सँ अथ्थक हाथ्थकारक अछ्छ। कैसर केर खतरा सब सँ अथ्थक तमाकूल सँ ओहू मे ठोर मे सीधे चुनेटल तमाकूल सँ अछ्छ।

थ्थजानक भाषा मे कही त तमाकूल के गाछ थ्थकोथ्थयाना पजाथ्थ के अछ्छ जकर जथ्थ भारत मे नथ्थ अथ्थतु दथ्थण अमेथ्थका मे छैक। दथ्थण अमेथ्थका सँ ई पुतथ्थाल आ पुतथ्थाल सँ भारत 1600 ईस्वी मे आनल गेल। आई थ्थश के कुल उत्पाद के 7.8 पथ्थशत तमाकूल अपन देश भारत मे होइत अछ्छ। जे अनकर छल, हाथ्थकारक छल, व्याथ्थ के घर छल से अपन भेल अछ्छ?

कहल ई जाइत छैक जे एक बेर पुतथ्थाल थ्थत फ़ाथ्थसी राजदूत जॉन थ्थकोट अपन देश के रानी लग तमाकूल के थ्थया भेजलथ्थ आ अथ्थ तरहे पाचीन इथ्थहास मे तमाकूल नामक ई गाछ पचथ्थत भ

गेल जे आई समस्त ग्रश लेल पैघ समस्या बनल अछि। ग्राकोट महोदय केर नाम सं एकरा ग्राकोष्टन कहल गेल।

एमहर हमरा किछु बूढ़ आ जानकार सब सूचना देलथि अछि जे जखन बीड़ी के कंपनी सब बीड़ी बनेलक त लोक ओकरा पीबे नहि करैक । जो नहि व्यवहार करतै त व्यापार कोना हेतैक? एकरा ध्यान मे रखैत कंपनी सब किछु कलाकार के एकत्रित केलक आ अनेक शहर, गाम, चौराहा पर लोक सबके लैला मजनू, सीरी फिरहाद, सुल्ताना डाकू आदि नाटक केर आयोजन कर लागल। लोक सब के बजा मंगनी मे नाटक देखबै आ बीच-बीच मे बीड़ी लुटबै। लोक नहु-नहु बीड़ी पिनाई शुरु केलक। नशा केर पयोग बढ़े लागल। बीड़ी सँ वगवकेर रचना भेल। बाह ण शुरु मे बीड़ी नहि पिलथि। सोइत बाह ण - राम-राम कोना छोट लोकक चीज़ गहण करितथि? लेकिन एकर स्वाद के चखबाक आकाक्ष सब के छलैक। फिर की समाधान? समाधान के र प मे पहिने सँ चुनेटल तमाकूल त छले बाद मे सिगरेट आबि गेल। सिगरेट भेल त क्लास भ गेल। फिर की बाह ण आ की जमीदार। बुझु जे सिगरेट त मॉडनवआ पढ़ल लिखल ओहू मे आधुनिक आ अंगेजी शिक्षा केर मापदंड भ गेल। जे मिथिला आई सं ४०-५० वषवपूववटमाटर के सावजनिक भोज मे,आ आन व्यवहार मे अनबाक अनुमति नहि देने छल। चूँकि ई बिलायत सं आयल रहैक ताहि एकर बिलौती कहैत छल। तीमन-तरकारी मे टमाटर के बदला आमिल आ नेबो के पयोग करैत छल वैह समाज बिना कुनो मीन-मेख केने तमाकूल के कोना अपना लेलक? छैक ने गूढ़ बात! आर-त-आर, तमाकूल भ गेल शुद, छुआछूत सं सेहो मुक्त। केहो उपास मे आरो किछु खाऊ-कि-नहि खाऊ तमाकूल चूिब सकैत छी। कमकाण्डी के एकरा गहण करबा मे कुनो हजवनहि, शायद

भगवान बैकुण्ठ सं अनुमति पदान केने छथि न।
हमरा त लगैत अछि जे आबि रहल आ आबि रहल कथि लेल समस्त व्यवहार मे दार संग तमाकूल आ भाग पर बंदी करक अत्यंत आवश्यकता अछि। नीतीश कुमार जी कहि इम्हरो ध्यान देबौक। अते त एखनो तमाकूल के पोडक्ट बनबे बला कम्पनी सब खुजल उक बनल अछि। कुनो पतिबन्ध नहि। पश्चिमी देश विशेष रपे अमेरिका मे तमाकूल इत्यादि के कारोबारीके अपन आमदनीक एक पुि भाग 'कैसर' आ दोसर असाध्य रोगक इलाजक हेतु लगब पति छथि किन्तु एहि तरहक नियम के बारे मे भारत मे सोचल तक नहि गेल अछि । ई अपना आप मे घनघोर चिंताक विषय अछि।
ताकाथित सोशलाइट, विदान आ पगतिशील लोक सब चुप छथि। कतेक त स्वयं तमाकूल चुन आ तमाकूल सं अथवा अन्य वस्तु के उपयोग मे संलग्न छथि। जनसँख्या विषफोट के कगार पर ठाढ़ भारत केर विदान लोकनि धमनिरपेक्षता, माइनॉरिटी, हरिजन, आदिवासी, आ व्यवसाि मे लाक अधलाह के मीन-मेख निकलबा मे भेर छथि। जनसँख्या हुनका एसेट बुझना जैत छन्हि। कुनो अस्पताल के कैसर, यक्ष्मा, आ हदय विभाग मे जाऊ, स्थिति भयावक भान भ जैत। दम्मा के मरीज केर सवेक्षण कर यािविबुझि जैब। कम सँ कम तमाकूल के उत्पाद के पूर्णतः पतिबंधित करबाक नियम लागू कैल जा सकैत छैक जाहि सँ एकर पचार-पसार कम स कम हो और अंततः ई समाप्त केर डेग दिश अगसर हो। तमाकूल सँ घटे-घाटा। तमाकूल मे मादकता अिवा उतेजना पदान कर' वला मुख्य घटक निकोटीन (Nicotine) होइत छैक। यैह तत्व सबस अधिक मारक सेहो होइत छैक। एकर अतिरिक्त तमाकूल मे अनेक तरहक कैसर उत्पन्न कर' वला तत्व पायल जाइत छैक। तमाकूल के सेवन सँ मुँह, घेट,

शासनली आ ि ि ि केर कैसर (Mouth, throat and lung cancer)होबाक सम्भावना रहैत छैक। श्वमाश्वक अंत अतै नश्च होइत छैक एते धश्च हृदय के बीमारी (Heart Disease),धमनी काश्वन्यता, उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure), पेटक अलसर (Stomach Ulcer), अम्लश्चत (Acidity), अश्वारा (insomnia) आश्च रोगक सम्भावना तमाकूल केर उत्पाद केर सेवन सँ बश्च जाइत छैक।

आश्चवासी समाज मे सेहो बश्चाया सब स्त्री-पुरख दुनू के तमाकूल आ एकरा सं श्चाश्चत अनेक वस्तु के लश्चा लगा देने छैक। तमाकूल केर सेवन एक पैघ समस्या अश्च। मोन आ शरीर दुनू के सवश्चाश क रहल अश्च। अश्च पर सोचब जररी अश्च। हम एश्च कथ्य के माध्यम सं श्चनको ऊँच-नीच नश्च कश्च रहल छी। केवल यैह जे ई बहुत खराप इलम अश्च, एकर त्याग करक चाही।

मैथिलानी पर समशवक अधिकारी के?

मैथिलानी अथवा मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चचा करक अधिकारी के: स्त्री? पुरष? अथवा दूनू? आजुक सन्दभवमे जखन स्त्री समशव पर मशहला; दशलतवगव पर दशलत; कला पर कलाकार काज क रहल छथि, शलख रहल छथि; ओहेन स्थिति मे ई एक बहुत महत्वपूणव शबंदु बुझना जैत अशछ। हमहु स्त्री पर आ कखनो काल मिथिलाक स्त्री पर हुनक जीवन के शवशभन्न आयाम पर शलखैत रहैत छी।जे ओशह वगवसं छथि सैह शलखता अथवा व्यक्त करता शकछु एहेन सन अवस्था अशछ जे हमरा शिरेक परेशान करैत अशछ। लगैत अशछ ''जेना हम दोसरक अशधकार क्षेत्र मे अशतक्रमण क रहल होई?'' बातमे कशन उलझन छैक। मैथिलानी जं अपना पर नशह शलखती त आन के शलखतशन? जे अनुभव छैक तकर सटीक वणवन आ व्याख्या वैह क सकैत छथि! लेशकन फेर एक दोसर बात मोन मे अबैत अशछ। हमरा लोकशन नृतत्वशास्त्र आ समाजशास्त्र मे दोसरक संस्कृशत (other cultures) के बारे मे पढैत छी। दोसरक संस्कृशत पर काज करैत छी। अहू दुनु शवधा मे स्थानीयया मूल (native) आ दोसर केर बीच दन्द्व छैक। एक के कहब छैक जे स्थानीय अथवा नेशटव चूँशक ओशह समाज आ संस्कृशत केर शहस्सा छैक ताशह ओ ओकरा भीतर सं बुझैत छैक, ओशह मे जीबैत छैक आ ओकर अकरसः व्याख्या क सकैत छैक।एकर शवपरीत दोसर संस्कृशत पर आन दारा अध्ययन कर बला के ई मानब छशन जे वैह भीतरक बात त आने कहत। से कोना? कखनो काल जं बाहरी दुशनयाक मापदण्ड नेशटव शवदान के नशह बुझल होशन त ओ बहुत बात के चचवकरब छोशड़ देता।

अपन शोध आ फील्डवर्कवकेर एक सत्य उदाहरण दैत छी जे आंखि सं देखल आ कान सं सूनल अछि। हम मुसहर जाति पर एक विस्तृत परियोजना पर काज करैत रही। परियोजना केर उदेश्य एहि समाजक लोक के शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक आ सामाजिक उन्नति के दिशा मे पयत रहैक. शिक्षा संग संग सांस्कृतिक धरोहर केर रक्षा सेहो मूल रहैक.विषय के गंभीरता के देखैत आ अपन पूर्वमे अहि समाज पर कुनो तरहक काजक अनुभव नहि होबाक कारने एक मुसहर समुदाय के पढ़ल युवक के साथ लय हम मुसहरटोलीमे गेलौ।स्थिति देखि रुसित भेलौ. भेल, "आजुक जुग मे ई सब मुसहर जातिक लोक कतेक दुखक जीवन जी रहल अछि?ककरो घर दढ़ नहि. ककरो भरि देह वस्त्र नहि. भेल,फिर कुन तरहक विकास अपन देश अथवा भारत क रहल अछि?सब के पुछलियैक: "अहा सब के की चाही?" झट दनि एक माईनजन उठला आ कहलथि: "हमरा सबके माटि काटक काज आ घर के मरम्मत भ जै त हम सब धन्य भ जैब।" हमर दोसर पश्न छल: "कतेक पाई मे घरक मरम्मत भ जैत?" हुनकर जवाब तुरन्त भेटल: "मालिक, हम सब फूसही झोपडी मे रहैत छी। २००० टाका भेट जेतैक त सब समस्याक समाधान।" आब देखू, ओ सब उपयोक्ता सं वस्त्र नहि पहिरने छल। सबहक पीठ उघार। मैल-फाटल धोती, ५-६ वर्षकेर बच्चा सब नंगटे। तथापि ओकर माग मात २००० टका घर ठीक करेबाक हेतु आ माटि काटक काज नोन रोटी खेबाक लेल। नहि शिक्षा, नहि स्वास्थ्य, नहि आरो कोनो वस्तु केर अभिलाषा।ओहि समुदाय केर पढ़ल युवक अथवा हमर सहयोगी सेहो कुनो प्रकारक व्योत बतेबा मे अपन असमर्थता व्यक्त केलथि।ओ कहलथि: "सर, हम सब भोजन, वस्त्र, आवास मात तीन वस्तु जनैत छी. अतेक भेट गेला सं सब मस्त. ने शिक्षाकबा

ने थ्याकायत.'' अश्च तरहक बात आश्चवासी आ अन्य समाज मे सेहो देखना जैत अश्छ।हम आब अपन श्वषय केर दोसर बात जे''सत्य वैह नश्च होइत छैक जे लोक कहैत अश्छ, सत्य ओहो होइत छैक जे अहाक आंश्व देखैत अश्छ, आत्मा, आ श्ववेक कहैत अश्छ'', के मूल माश्वा अपन पश्चावेदन श्चाखलौ.

उपरोक्त उदाहरण देबाक तात्पयवई अश्छ जे जखन कुनो समुदाय अिवा वगवअपन समस्या तक व्यक्त करबा मे असमिवअश्छ त ओकरा समस्या के के बुझत? दोसर. तश्चना मैश्विलानी के समस्या मैश्विलानी श्चाखश्च से श्चाक बात मुदा पुरख सेहो श्चाखश्च. समस्या के तह मे जाश्च आ ओकर समाधान तकश्च आ श्चाखश्च.

जखन मश्चला के बात करैत छी त अतेक जानब अश्चावायवभ जैत अश्छ जे मश्चला समाज पुरष या श्वतसतात्मक व्यवसि मे ऐना श्चाल गेल अश्छ जे ओकर अपन स्वरप जेना हेरा गेल होइक? के स्त्री पुत जन्म देलाक बाद अपना के भगवंत नश्च बुझैत छश्च? किी लेल सासु पुतहु झगरेतछश्च? किी लेल मश्चला अपन पुती के पुत जका स्वतंतता नश्च दैत छश्च? मुदा एश्च मे हुनक गलती नश्च, पुरष के बनाएल संरचना के गलती अश्छ।अपन गलती के भान पुरष करि्ु। पुरष जखन स्त्री श्वमशवकरश्च त अपन अंतरात्मा मे एक स्त्री केर भाव आनश्च। श्चकछु एहेन भाव जे श्चतागत नश्च कश्च सकैत छश्च सेहो श्चाश्चकार आ श्चना कुनो अहम के बाजश्च।ई समस्या अश्च हेतु उत्पन भेल अश्छ जे एक के कम आ दोसर के अश्चाक महत्त्व देल जैएत अश्छ. पयोजन ई होबाक चाही जे मातृभाव आ श्वतृभाव बराबर हो. एकर सवोतम उदाहरण अश्चकका के घाना देशक असश्चात (Ashanti) जनजाश्चाक पश्चवार आ संस्कृश्च केर संकल्पना मे देखल जा सकैत अश्छ. असश्चात केर संस्कार मे पश्चवार आ माताक गोतबहुत

पैघ सिान रखैत छैक. एहेन मान्यता छैक जे शिशु अपन पिता सं आत्मा, पाण आ सास लैत अछि आ माता सं मास (देह) आ शोणित. बच्चा ओना त दुनु पक सं जुिल छैक परन्तु मातृपक सं ओकर लगाव शोणितक लगाव, भावनाक लगाव, कखनियो समाप्त नहि होबबला लगाव छैक. पूवोतर भारत केर मेघालय राज्य मे खासी जनजाति मे माता के सवोपिर मानबक परंपरा एखनो अछि. एकर तात्पयवई भेल जे संस्कृति मे संस्कार एहेन हो जे स्तीगन के सम्मान करय. कतेक लोक संस्कृति के रका केर नाम पर नारी अधिकार, सम्मान, बराबरी, स्वतंतता आदि के विरोध करैत छथि. हुनका डर होइत छिन्ह जे सब किछु समाप्त भ जैएत. मिथिलाक पतन भ जैत. विंग आ वगवसंघषव शुर भ जैत. सम्मान, परम्पराक हास भ जैत. एकर मतलब की जे स्ती के घेट दबाक मािर दी? स्ती के िवकासक सहगािमनी निह बन दी? स्ती के हुनक सुिवधाक अनुसारक वस्त, गहना, पिहरक स्वतंतता निह दी? हुनका आत्मसम्मान निह दी? संस्कृति आ संस्कार बचेबाक लेल स्ती मातक बध, ई कहेन बात? पुरख बहुत िदन पिहने पेन्ट पिहर लेला, संस्कृति निह मरल; स्ती पेन्ट, सलवार पिहर लेती त संस्कार खत्म भ जैत! बेटी माता िपताके सम्पित के माग करती त कोटवकचहरी शुर भ जैत, आिद-आिद. ई सडल-गलल मानिसकता अछि. एकरा त्याग करक चाही. अगर भाई-भाई मे मुकदमा चलैत अछि त समाज कहा समाप्त भ जैत अछि? अगर बेटा आ बेटी दूनू के पता लािग जेतिन्ह जे माता िपता केर सम्पित सं जवावदेही धिर हुनकर सामान अिधकार छिन्ह त नहु-नहु ई अहं समाप्त भ जैत.

मैिथलानी सेहो समगता मे पुरष पर ओिहना िनरखिथ जेना पुरष हुनका पर िनखैत छिथ। मिहला आ पुरष सं पैघ बात ई जे समाज,

ओकर पश्चवेश, ओकर संस्कृश्चा, ओकर संस्कार, ओकर इश्चाहास, ओकर लोक व्यवहार पर श्चनका र श्च होश्चा, श्चनका श्चजासा होश्चा, श्चनका श्चकछु करबाक उत्साह होश्चा से श्चाखश्चि।मुदा सब सं पैघ बात ई जे पुरख मैश्चिलानी के मनोदशा के बुझश्चि, ओश्च पर मनन करश्चि आ तटसि भाव सं श्चाखश्चि. श्चकास लेल श्चाखश्चि. समानता के भाव लेल श्चाखश्चि.

श्चल्ली मे एक कायश्चिम मे साश्चत्य अकादेमी पुरस्कार सं सम्माश्चात तीन मैश्चिलानी: डॉ. नीरजा रेणु, डॉ. शोश्चका वमा आ डॉ. उषा श्चकरण खान बजली जे अश्चाकाश लोकगीत केर रचना मैश्चिलानी केने छश्चि। हुनकर सबहक बात के सीधे कटबाक श्चम्मत हमरा नश्च अश्छ। ओ सब साश्चत्य केर हस्ताक्र छश्चि। बहुत अनुभव, मनन के बाद एश्च श्चाष्कषवपर ऐल हेती। मुदा नारीवाद के घमाश्च जखन सामाश्चाक श्चजान के शोध छातक रपे करैत छी त श्चकछु आरे बात सब बुझना जैत अश्छ।मश्चला त केवल गबैत छली। हुनका अपन बारे मे सोचबक स्वतंतता कहा छलश्चा? आ समय सेहो नश्च।ओ त पुरष रश्चात व्यवसि मे मशीन जका काज करैत छली। हमरा होइत अश्छ अश्चाकाश गीत पुरष श्चाखलश्चा। मुदा जखन ओ गीत केर रचना कर' लगला त अपन मोन, हदय सब मे एक श्चतगम के भाव आश्चा लेलश्चा। अतेक श्चाक जे श्चतगम सब ओश्च भाव मे मस्त भ गेली। ओकरा अपन माश्चा लेलश्चा। पुरष रचनाकार ओश्च गीतक देवकी आ श्चतगम सब ओकर यशोदा भ गेली। एक एहेन हश्चजन स्ती जकर पश्चा अािपाजश्च लेल दूर देस गेल छैक, सासु, ससुर बुि छैक आ सासु ससुर केर आंश्च मे रतौधी छैक, कान बश्चर छैक। छैक त हश्चजन, अछूत मुदा सुन्दरता के खान, कामायनी. वैह पुरष जे छुआछूत केर बात, वगवश्चभेद केर बात, जाश्चा-पाश्चाक

बात करैत छथि, सैह सब ओहि मञ्जुला के गसल देह, यौवन के सुख प्राप्त कर' चाहैत छथि। आब ओ अछूत मञ्जुला अपन यौवन आ गसल देह के कारण पाश्चात्य कला मे निपुण पुरुष के सजाक्षा बुझना जैत छथि। ओकरा अपन बाहुपाश मे लेबाक लेल उदत छथि। राति मे चोरी सं ओकर घर मे घुसि सब अकर्म्य काज आ कमवकर' लेल परेशान छथि. बेचारी मञ्जुला लाचार अछि। ओकर वेदना के सुनतै? मुदा एक पुरुष जे महाकवि विद्यापति छथि से सुनैत छथि आ रचित होइत अपन कलम उठा ओहि वेदना के लिखैत छथि:
हम जुवती पति गेला बिदेस। लग नहि बसए पड़ोसिया देस।।
सासु दोसर किछुओ नहि जान। आंखि रतौन्धी सुनए नहि कान।।
जागह पथिक जाह जनु भोर। राति अन्हार गाम बड़ि चोर।।
भरमहु भोर ने देअ कोतबार। कहुक केयोक न करए बिचार।।
अधिपयन कर अपराधहु साति। पुरख महत सब हमर सजाति।।
भनहि विद्यापति एहि रस गाब। उकुतिहि अबला भाव जनाब।।
सब सं पैघ बात ई जे विद्यापति पीड़िता के दुःख सं केवल रचित नहि होइत छथि, ओकर मनःस्थिति के वर्णन आखर-आखर करैत छथि। नारी भाव के ऐना अपना भीतर आत्मसात क लैत छथि जे गीतक अंत मे ई तक घोषणा क दैत छथि जे हुनकर गीतक रस मात अबला के भाव के जगब' बला रस छथि। ओ अपन गीत अही रस मे लिखैत छथि। विद्यापति के अनेको गीत नारी भाव, शृंगार, मनोदशा के अक्षरसः वर्णन अछि। अतेक धरिक जे मैथिलानी ओकरा अपन बना लैत छथि। गीत के कंठाग क लैत छथि। गीतक पोर-पोर सं कनेक्ट भ जैत छथि।
किछु पुरुष गीत लिखनहार त एहेन छथि जे नारी भावना के तह तक घुसबा लेल समस्त नारी मनोदशा के संग-संग अपन नाम,

व्यवहार तक नारी जका क लैत छथि। एक बहुत पचलित भक्ति गीत जे मिथिला आ मैथिलानी दारा मिथिलाक गुणगान करैत अछि ओकर दू पाँति देखी:

साग पात खोटि खोटि दिवस गमेबै हे हम मिथिले मे रहबै।

अपना किशोरीजी के टहल बजेबै हे हम मिथिले मे रहबै।।

एहि गीतक रचैता छथि कमलदेव ठाकुर। ई राम आ सीता सं आ कृष्ण आ राधा सं सम्बंधित मधुर भक्ति गीत रचैत छथि। विष्णु भक्ति मे ततेक तल्लीन भ जैत छथि जे अपन अस्मिता मिथिलाक अस्मिता मे परिणत क लैत छथि। अपन नाम तक बदलि लैत छथि। कमलदेव ठाकुर सं स्नेहलता भ जैत छथि। नारी मनोदशा के लिखैत छथि आ ओही मनोदशा मे जीबैत छथि। हुनकर रचित अनेक गीत नारी भाव, भक्ति, शृंगार आ मनोदशा के व्यक्त करैत अछि।

“पतहीन नग्नगाछ” मे जे नारी मनोदशा केर वर्णन यातीजी केलन्हि अछि तकर कुनो जवाब अछि? “पारो”, “घसल अठनी” आदि केर नायिका के बेदना मैथिलानी वदाश्त क सकैत छली मुदा ओकरा हु-बहु उकेरब बला काज त दोसर (other) अछि याती आ मधुप सनहक पुरुष नारी हदय के अपना मे आनिक क’ सकैत छल! गरीबीक अभिशापसँ मारल आ असहाय विधवा कंद मूल आ कुअन बासक ओधिसँ अपना टूटल मडैयामे नीक जेका नीपल-पोतल चुलहामे पका रहल अछि। बासक ओधि धुआंक घर होइत अछि। टिने ने टैत अछि। जरने नञ जरैत अछि। तकर जे भाव याती व्यक्त केलन्हि से कुनो समान्य बात अछि?

तीनू महिला विदुषी अछि डॉ. नीरजा रेणु, डॉ. उषाकिरण खान आ डॉ. शेफालिका वमा एक बात अंत मे बडड नीक बजली: “साहित्यकार

के सत्य श्वाखक चाही, मानव पर श्वाखक चाही, स्त्री-पुरष केर बन्धन सं उश्च क श्वाखक चाही। श्वातग केवल मैथिलानी पर नश्च श्वाखथि पुरषो पर श्वाखथि. तश्वना पुरष सेहो स्त्रीगण पर सेहो श्वाखि। कुनो वाद अिवा श्वांग केर बन्धन उश्चात नश्च।” हमरा ई श्वाचोि कनि बडड सोहनगर लागल।

महाराजा पंखबा: मणिपुर केर गरीब नबाज़

अजमेर केर हजरत ख्वाजा मोइनुदीन चिश्ती (1141-1236) के गुरबतमे जीवन बितबैत लोकसँ आ जनसाधारणसँ अगाध पेमके कारण गरीब नबाज़ कहल जाइत छथि। मुगल बादशाह अकबर महान (1542-1605) के गरीब नबाज़ केर नामसँ जानल जाइत छैक। ओ पजावत्सल छला, गरीब, दुखी एवं असहाय के मदति करैत छला। "गरीब नबाज़" शब्द लोक कंठमे एना बैस गेलैक जे आर त आर महाकवि तुलसीदास (1497-1623) अपन अजेय कृति रामचरितमानसमे भगवान राम लेल गरीब नबाज़ (गरीबनेबाजू) शब्दके पयोग करैत एक पद लिखि लेला:

गईबहोर गरीबनेबाजू।

सरल सबल साहिब रघुराजू।।

बुधबर नवि हवि जस अस जानी।

करहि पुनीत सुकृति बिजबानी।।

एकर अविभेल, “पभु रघुनाथ हेरायल या हाथसँ चलि गेल वस्तुके फेरसँ आनि सकैत छथि, गरीबनबाज़ (दीनबन्धु) , सरलस्वभाव, सबशक्तिमान आ सबहक स्वामी छथि। यैह बात बुझि गुणीजन ओहि शीहरि केर यशगानसँ अपनवाणीके पवित्र आ उतम फल देब’ बला बनबैत छथि।”

आधियवतखन भेल जखन पूर्वोत्तर भारतके एकातमे बसल राज्य मणिपुरमे अपन पवासक दौरान हमरा पता चलल जे मणिपुरके गौरवमय इतिहासमे सेहो एक पतापी, पजापालक, सम्यक, सहिष्णु राजा भेला जिनकर नाम गरीब नबाज़ छलनि।

मणिपुर केर कुकी आदिवासी समुदायके डॉ. Leban Serto

श्वलीघ्यादालयमे हमर सहपाठी छला। काश्व हुनकर एक मैसेज देखल जाश्वमे ओ श्वखने छथि जे दू आश्ववासी समूह, नगा आ कुकीके बीच झगडाके चलते पूरा मश्वापुर अस्त-व्यस्त भेल अछि। नेटवकवया त बंद छैक अडिवा कतौ कतौ बहुत मंडिर गश्वासँ चश्व रहल छैक। लेबानके ई दुःख छश्व जे अगर श्वडिश्व अश्वना रहलैक त श्वसमस आ नववषवकेर शुभकामना संदेश ओ अपन श्वतके नश्व द पेताह। ताश्व ओ 17 श्वसम्बरक एडवासमे सबके दुनु चीज़क शुभकामना द देलथि। दुभाग्यसँ हमरा लोकश्व मश्वापुर आ पूवोतर भारतके संबंधमे बहुत बातसँ बंश्वत छी। हम सब मीश्वया दारे ई जरूर जनैत छी जे मश्वापुरमे सेना आ सामान्य जनताके बीच सौहादव्य नश्व छैक, आश्ववासी आ गैर आश्ववासीके बीच लडाई चलैत रहैत छैक, आश्ववासी समाजक दू समहू, नगा आर कुकीके बीच युद चलैत रहैत छैक, माश्वकाट होइत रहैत छैक, सडिक जाम भ जाइत छैक, पेरोल 200 रुपया केर एक लीटर भ गेलैक, आश्व-आश्व। मुदा एश्व राज्यके ऐश्वहाश्वक , सास्कृश्वक, शैक्ष्याक गौरव श्वस ककर ध्यान जाइत अछि?

हमरा लोकश्व श्वसश्व जाइत छी जे यूनान आ चीनके मध्य मश्वापुर श्वलकरटसँ जुडैत अछि। समस्त पूवोतर भारतमे मात दू राज्य अछि जतयसँ श्वलकरट जाइत छैक, जाश्वमे एकटा राज्य मश्वापुर सेहो अछि। ईराज्य 32 आश्ववासी जे मूलतः नगा आ कुकी गुपमे बॉटल अछि केर अश्वाश्वक्त मैती समाजक गढ़ अछि। अतै केर तीन श्वसा धरती पहाडि आ एक श्वसा मैदान छैक। अतै केर लोक अश्व पाचीन समयसँ युदकला, संगीतकला, घुडिसवारी, मल्लयुद, माशलआटव्, नृत्य, नाटक, गायन, श्वताकन आश्वमे पबुद रहल छथि। कहब त दंतककडि लागत मुदा ई शुद ऐश्वहाश्वक तथ्य छैक जे

इसामसीहके जन्मसँ 33 वषव पूवव मथ्थापुरके श्वाखीत इश्वाहास केर दस्तावेज उपलब्ध छैक। कहबाक तात्पयवई की जखन भारतके बहुत ताकिथ्थित थ्यकथ्मत पान्त सबमे कुनो श्वाश्वत इश्वाहासके पि नश्च छल मथ्थापुरमे श्वाश्वत आ िमबद श्वाश्वत इश्वाहास केर परंपरा रहल अश्छ। अतै बहुत राजा, राजकीय व्यवसि, वंशावली आश्द भेटत जे अहाके मानय लेल बाध्य करत जे मथ्थापुर कुनो सामान्य राज्य नश्च अश्छ। छोट छैक त की भेल, बहुत गौरवपूणवइश्वाहास आ परंपराके समेटने अश्छ।

चलु बात करैत छी मथ्थापुर केर महाराजा गरीबनबाज़ केर सम्बान्धमे। गरीबनबाज़ के बात करैत छी त एक बात आरो स्मरण आश्ब गेल। एक संगोिमे हम मथ्थापुर केर राजधानी इम्िलमे भाषण दैत रही। हमरा संगे पद शी आर. के. श्मलाश्मत श्संह बैसल छला। श्बलकुल मैश्थिल पंश्कत जका धोती कुता पश्हरने, कपारमे गोल ठोप लगेने, कान्हपर गमछा धारण केने। जखन हमर भाषण समाप्त भेल त ओ कहलश्थ: "अहा श्वदापश्त केर भूश्मसँ छी। अहासँ नीक बात सुनबाक आकाक्ष छल। अहा आकाक्षके पूरा केलौ। मथ्थापुर केर सेहो श्थश्िला जका बौश्द्धक, सास्कृश्वाक गौरवपूणवइश्वाहास छैक। एकर सामश्वक इश्वाहास, युदकौशल केर इश्वाहास बहुतो पदेशसँ उतम छैक। अतै एक राजा छला श्मनका हमरा लोकश्न गरीब नबाज़के नामसँ जनैत छी। अगर अहा संगे बैसब त श्थश्िन्तासँ हुनकर सम्बान्धमे चचा करब।"

अश्ह तरहे पदशी श्मलाश्मत श्संह हमरा मोनमे ई अदुत इश्वाहास जनबाक इच्छा जागृत क देलश्थ। बादमे कतेक श्दन हुनकासँ आ आनो लोक सबसँ गरीब नबाज़पर चचा भेल। ई बात 2006 ईस्वीके अश्छ। सुनल इश्वाहासके जे बात सब स्मरण अश्छ तकरा आई

यावित श्चाखबाक पयास क रहल छी। हमर लेखनी संगे याता कर बहुत आनंश्चत हैब। नव बात सुनब। भारतक संस्कृश्चा केर एक क्षेत्र केर महानता सुश्चा समगतामे भारतपर गवक अनुभूश्चा हैत।

त इश्चाहासक एक कि पारम्भ करैत छी।गरीब नबाज़ मश्चापुरमे 1709 सँ 1748 ईस्वी धश्च अति करीब 4 दशक धश्च राज केलश्चा। श्चनकर श्चताक नाम छलश्चा महाराजा चेराई सोगबा। गरीबनबाज़ मश्चापुरी नाम कुनो दृश्चि कोणसँ नश्च बुझना जाइत अश्छ। लोक सब कहलक जे मश्चापुरी सब श्चनका पंश्चबा कहैत छलश्चा। यदश्च ई समस्त गरीब नबाज़के रपमे ख्याश्चा पौने छश्चि। ई पूणताः मुसलमानी नाम छैक जे कदाश्चात असममे मुस्लमानके आश्च जेबाक कारणे मश्चापुरमे एश्च तरहक शब्द अपन वैश्चाष्यके कारण पचलनमे आश्च गेल होइक। अश्च बातपर सेहो इश्चाहास आ मानवशास्त्र केर श्चदान शोध क सकैत छश्चि।

हालाश्क श्कछु श्चदानके मानव छश्चा जे सास्कृश्चाक श्चस्तारवादके कारण भारतक लोक शायद श्चनका ई नाम देलश्चिन जाश्चसँ मश्चापुरके सेहो भारतीय पुरातन आ समग परंपराके श्चस्सा बुझल जा सकै। भइयो सकैत अश्छ जे मुगल अपन श्चस्तारवादी नीश्चाके कारण श्कछु एहेन केने हो। भ श्कछु सकैत अश्छ। श्चयाऊज केर श्छलकाके परत त उखारब तखने पता चलत जे याविआश्चर की छैक? खैर! अंगरेज सबके मानब छश्चा जे गरीब नबाज़ आश्चवासी समाजसँ छला। लेश्कन मश्चापुरकेर अश्चाकाश लोक आ श्चलाश्चत श्चांहके मानव छश्चा जे गरीब नबाज़ ओतै केर राजाक पुत छला। से कोना? एहेन मान्यता छैक जे ई अति गरीब नबाज़ राजा केर दोसर पतीके पुत छला। रानी श्चनका जश्चाते एक आश्चवासी पश्चवारमे गुप्त रपसँ पठा देलश्चिन। ओतए श्चनकर लालन पालन होमय लगलश्चा। ई बहुत तेज

आ बलशाली नेनेसँ छला। कहल जाइत अछि जे जंगल केर बाघ, शेर आ तमाम हिंसक जानवर हुनका संगे खेल खेलैत छल। ई निर्भीक भावसँ सब संगे रहैत छला। तीरधनुष आ अन्य जंगली युद्धविद्यामे माहिर भ गेल रहथि। मुदा हुनक पिताके एहि सम्बन्धमे कोनो जानकारी नहि छलन्हि।
महाराजा चेराई सोगबाके पहिल रानीसँ कोनो संतान नहि छलन्हि। बल्कि हुनका हिसाबे कोनो रानीसँ हुनका पुत नहि छलन्हि। बूढ़ होब लागल छला। चिंतित छला जे हुनकर बाद राज सिंहासनपर के बैसतन्हि। एक दिन किछु सोचैत अपन सब रानीके बजेलन्हि आ कहलथिन: “देखु, हम आब बूढ़ भेल जा रहल छी। संतान होबाक उम समाप्त भ गेल। चिंता एहि बातक अछि जे हमरा बाद एहि राजगदीपर के बैसत। अगर अहा सबमे किनको पुत अछि जे हमरा जात नहि हो त हमरा सूचित करी अन्यथा हम अपन अधिकारी केर चुनाव आम जनतासँ कुनो पराक्रमी आ होनहार युवकके देखि करब।”
महाराज चेराई सोगबाके एहि बातपर सब रानी चुप रहली। मुदा किछु कालमे शान्तिके भंग करैत दोसर महारानी बजली: “महाराज, हमरा माफ़ कैल जाओ। हमरा एक पुत भेल छल। ओहि समयमे हम नैहरमे रही। चूँकि परंपराके हिसाबे पहिल रानीके पुत राजगदीके सम्हारैत छैक से सोचि हम अपन पुतके एक आदिवासी लग गुप्त रूपे भेज देल। ओ ओतहि रहि रहल छथि। बली छथि। पराक्रमी छथि। शारीरिक सौष्ठवमे विलक्षण छथि। राजपुत छथि। चूँकि आब एहि वंशके वारिश चाही त हमरा हिसाबे आ यदि सब रानी आ अपनेक अनुमति हो त हम हुनका बजा दैत छी। ओ अहाक पाकृतिक उत्तराधिकारी छथि।”
राजाक सँग सब रानी दोसर रानी केर एहि हर्षमय रहस्योद्घाटनसँ

गदगद भ गेली। तुरंत आदमी भेजल ओहि पुतके राजमहलमे बजैल गेल। वैह युवक छला गरीब नबाज़।

गरीब नबाज़ राजाके र पमे समदशी छला। पजा पालक छला। आदिवासी आ मैतीके बीच नीक आ सहिष्णु छला। सवप्रिय छला।पहिने मणिपुरमे चंनामाई संस्कृति छलैक मुदा धीरे धीरे वैष्णव संस्कृतिके पचार होमय लगलैक। ओ सास्कृतिक, धार्मिक एकतामे विश्वास राखैत छला। आर त आर पडोसी वमाके राजा के सेहो परास्त लेलथि आ वमा (आजुक म्यांमार) मे अपन सुधारक कायक्रम चलौलथि। मणिपुरके सीमा विस्तार करैत रहला। एक दिस वमा त दोसर दिस असम धरि आबि गेला। ई बहुत मजबूत आ कुशल पशासक छला। एतबे नहि, महाराज गरीब नबाज़ बहुत तरहक चीज़ आ यंतके विकास केलथि। पहिल बेर टाइम मशीन केर निमाण हुनका समयमे भेल। ई मशीन पाथिर आ पिकछु िनेल केर एहेन युग्मसँ बनल छलैक जे सटीक टाइम देबामे सक्षम छलैक।

गरीब नबाज़ केर दोसर खोज अ िवा विकास छलथि अरामबाई। ई अरामबाई की भेल? ई बहुत खतरनाक आ पलयंकारी अस्त्र थिक। एकरा महाराजा गरीब नबाज़ बिना ककरो मददिके अपने हा िनिमाण केला। ओहि समय केर ई सबसँ खतरनाक अस्त्र छल। घो िसवार एकरा अपना डार लग बहुत सावधानीसँ रक्षाकवचके र पमे राखैत छल। हुनका समयमे मणिपुरके सैनिक आ योदा घो िसवारी, घोडाके नियंतण, अशयुद केर सञ्चालन, भाति भातिके घोडाके पालन आ ओकर पशिक्षणमे माहिर छल। बतबैत चली जे पोलो खेलके जन्मदाता मणिपुर रहल अछि। पोलोके कतेक धुरंधर एहि धरापर भेल छथि। एखनो इम िाल शहर केर पोलो गाउंड जेना अपन गौरवमय इतिहास केर गा ि गबैत हो। घोडापर चढ़ल घो िसवार सैनिक रणकौशलमे

अतेक माश्वर छल जे घोडाके एकश्वशामे अ ित पाज लग आश्व दौ ित अवस ामे सेहो घोडापर चढ़ल एक हा ि घोडाके लगाम आ दोसर हा ि तीर धनुष अ ि वा आरो कुनो दुदातक अस्तसँ दुश्मनके ध्वस्त क सकैत छल। ओ आगासँ, पाछासँ, कातसँ आ घो ाक पाजर लगसँ कतौसँ अपन सस्त चला सकैत छल। शतुके स्वाहा क सकैत छल। सबसँ पमुख बात ई जे राजा गरीब नबाज़ सब बात अपन नेतृत्वमे करैत छला। अरामबाई बहुत पलयंकारी आ कुनो सैश्वाक हेतु अमोघ अस्त छल। आर त आर अंगेज सब सेहो एश्व अस्तसँ पभाश्वत छल। आ एकरा सम्बन्धमे बहुत रास बात अपन डायरीमे श्वखने छ ि। कारण ओश्व समयमे अंगेज लग अश्व तरहक कुनो अस्त नश्व छलैक। आई काश्व अरामबाईके भारतीय राष्टीय खेलमे शाश्वल क लेल गेल छैक।

अश्व तरहे महाराजा गरीब नबाज़ एक सवगुण संपन राजा छला। एक स ि ल राजा, स ि ल योदा, स ि ल सेनापश्व, अगचेश्व, दूरर ि ा, स ि ल पजापालक। मश्वापुर केर सीमाके वमाके ऊपरी भागसँ असमके सीमावती केत धश्व श्वस्तार केलश्व।

मश्वापुर केर लोक, ओतै केर वस्त श्वन्यास, मश्वला दारे वस्त बुनबाक परंपरा, ओतय केर नृत्य, पाकृश्वाक छटा, खानपान, आ स्वश्वाम इश्वाहास अहाके अपना श्वस आकश्वत करत। कश्व हमर बात माश्व ि रेक श्वन भ आउ ने मश्वापुरसँ!

जगदीश चंर ठाकुर अश्याल

महाकश्च चन्द्रा झा कृत रामायणक सुन्द्ररकाण्डक एलबम

श्मश्चिलाक पश्वद गायक-गाश्चका शी श्वकास झा आ रश्वम झाक स्वरमे कश्ववर चन्द्रा झा श्वरश्वत श्मश्चिला भाषा रामायणक सुन्द्ररकाण्डक एलबम दू भागमे यू-टयूब पर उपलब्ध अश्छ। अध्याय 2 धश्व पस्तुत कएल गेल अश्छ।

https://youtu.be/1ZED0SeYJwY?list=PLUmTaUxB0Bdv9bzuqkjpfKB0Uly1IAGoA

https://youtu.be/ZKkd-UCNSEA

एश्व पर हमर मन्तव्य पस्तुत अश्छ :

1.पस्तुश्व : शारदे म्यूश्वक ।

2.योगदान : हेमानंद ठाकुर, शश्वाकान्त झा आ शम्भुनाि झा आजाद ।

3.संगीत : रश्वम आ श्मश्चिलेश झा ।

4.स्वर : शी श्वकास झा आ रश्वम झा।

5.स्वरक पभाव : मधुर, मनमोहक, आनन्ददायक।

6.संगीतक पभाव : श्वलक्ण ।

7.पस्तुश्वक कोश्व : पभावशाली।

8.उच्चारण : अश्वकाश शब्द सबहक उच्चारण एकदम शुद भेल अश्छ। अपवाद स्वरप श्वकछु शब्द सभमे कतहु-कतहु उच्चारण दोष अश्छ , जाश्वसं बचल जा सकैत छल । जेना ई शब्द सभ :

शब्द	उच्चारण
शून्य	शूनी
अपन	अप्पन

सपन	सपना
बैशा	बैशी
अनुकूला	अनुकुला
करशा	करती
अवशा	अवनी

9.अन्य दोष : अध्याय 2 मे कथित धनाक्षरी गीत, सवैया छन्द, गीत काि, गीत पश्चल, दोसर आ तेसरक चाश्चम पाश्चा धश्च गायनमे नश्च आएल अछि ।

10.श्चपाणी : मैथिलीमे उपलब्ध आ हमर देखल-सूनल श्चकछु उच्च कोश्चक एलबमक शेणीमे एश्च एलबम के राखब।

वन्दना अवस्थी दुबे

(वन्दना अवस्थी दुबेजीक हिन्दी कथा- अनुवाद आशीष अनचिन्हार दारा)

-प्रस्तुत अछि वन्दना अवस्थी दुबेजीक कथा केर अनुवाद। ई कथा एकटा एहन विषय-वस्तुपर अछि जे कि प्रायः छूअल नै गेल। तँइ ई कथा अहाक अपन कथा लागत। हमरा हिसाबे ई कथा पुरुष दृष्टिकोणसँ लिखल गेल अछि मुदा व्याकुल स्त्रीक दशामे खुलैत छै। तँ पढ़ू ई कथा--

वन्दना अवस्थी दुबे-- कथा -- दायित्व

"रमणीक जी गुजरि गेलाह"................ ई समाद अखबारक पहिले पनापर छल। ओह, ई समाद पढ़िते आभा उदास भऽ उठल आ बजा गेलै "आब की हेतै"। फेर अपने कहलक की हेतै तकर कोनो मतलब नै। सभके मरहे के छै। अटासी बरखक मरला। कम उमर नै छलन्हि।

अभय सेहो कोनो नामक समाद सन एकरा लेलक। नामक रूपे तँ आभा सेहो लेने छल मुदा आब ओकरा चिंता आब रमणीकजीक परिवारके छलै जकर संचालन अपने रमणीकजी करैत छलाह। अटासी बरखक उममे सेहो जबाने सन फुर्ती छलन्हि। मजाल जे कोनो बात बिसरि जाथि। दू-दू टा दोकान छलन्हि मुदा दूनूके अपने सम्हारने। बेटा सभ सेहो साठिक उम धरि पहुँचल मुदा एखनो बापक देल खचापर निर्भर। घरक सभ काज रमणीकजीक सिलासँ होइत छल चाहे ओ अपन कन्याक एनाइ-गेनाइ हो कि पुतहुअक या बेटा

बेटीक। हँ खचा दै छलथिन्ह तँ श्वसाबो सेहो पूरा लै छलथिन्ह। श्वसाबमे गर्बिणी हुनका पसंद नै छलन्हि।

कश्वयो-कश्वयो आभाके रमणीकजीक पुतहु-बेटासँ बि ईखा होइत छलै। होइत छलै जे ओकरे जका श्वना श्वम्मेदारीक जीवन रश्वतै तँ कते नीक।ने घरक श्वांता ने बाहरक। ओकरा सभके पश्वने खचा भेश्व जाइ छै आ हमरा खचा देबऽ पर्ति अश्व। आभाके अपन ससुरपर तामस आबऽ लागै छै। ओकर श्वयाहक एकै सालक बाद अभयके कश्व देल गेलै अपन खचा अपने चलबए लेल। आभा िर सोचैए एकटा हमर ससुर छलाह आ एकटा छलाह रमणीकजी जे मश्वतो धश्व बेटा पुतहुके कोनो श्वकत नै देलथि।

एकटा पश्वाश्व त कपि बेपारी छलाह रमणीकजी। गाहकक सभहँक एहन श्वशास जे श्वनकेसँ सभ कपि कीनए। रमणीकजीक टा टा बेटा छल। जाश्वमेसँ दू टा साश्व पास कऽ चुकल छथि। आ तेसर पार करहे बला छथि। रमणीकजी अपन तीनू बेटा लेल एक नम्बरक घर बनबेने छलाह। घरो एकै छलन्हि आ सोि-कोठा सभ एकै रंगक। आभाक सहेली छलै हषा, रमणीकजीक बिकी पुतहु। से जखन आभा हषाक घर गेल सोि सभ देखाबए तँ से देश्व आभाके कतेको श्वन श्वांद नै भेलै। आ अपन ससुरपर िरो तामस एलै। अपन बर अभयपर सेहो जे पने पाइसँ घर खश्वदबाक सपना देखैए। पता नै कश्वया हेतै ओकर अपन घर।

मुदा पता नै श्वकए आभाके लगै छलै जे रमणीकजीक बेटा सभ खुश नै छल। आ खुश केना रश्वतन्हि। पुतहुए सभ नाखुश छलन्हि। जखन-जखन हषा आभा लग अबैत छल। श्वाकाइतक मोटरी सेहो नेने अबैत छल।

"कमश्वाया (कामना) नैहर गेलै तँ बाबूजी बीस हजार देलथिन्ह आ

हमरा बेरमे दसे। हम तँ कहि देलियन्हि जे हम नै जाएब नैहर। दस हजारमे की सभ हेतै। बुझिते नै छथिन।"

हाकाइत करैत-करैत हषाक मूह लाल भऽ जाइत छलै। आभाके आश्चर्य लगैत छलै आ कहैत छलै-

"लेकिन दस हजारमे पूरा महिनाका खर्च पूरा कोना हेतै"

"नइ से नइ, खेनाइ-पिनाइ, बिजली,स्कूलक फीस, नौकर-चाकर सभ बाबुएजी दै छथिन"

हषा ई हिसाब गनबैत जाइत छलै आ आभाके छगुन्ता लगैत रहलै जे सभ किछु जखन बाबुएजी करै छथिन तखन इम्हर-उम्हरके खर्चलेल दस हजार कम कोना पड़ि जाइत छै। हमरा तँ दस हजारमे पूरा घर चलबऽ पड़ैए। देखियौ कतेक अर्थिती जीबन छै एकर सभहँक तैयो खुश कहा छै ई सभ। आभा एखनो चिंतामे छल जे आब की हेतै? रमणीकजीक बेटा सभ हुनका मृत्युतेमे अलग हेबाक लेल जे फिरिर करै छल से तँ अजाद भैए गेलै।

अइ घटनाके एक मास भऽ गेल रहै मुदा काजे सभ एहन अबैत गेलै जे आभा आ हषाक भेट नै भेल रहै। मुदा ओहि दिन आभा हषाके हाटमे देखलकै तँ ओकरहबामे धोखा भऽ गेलै।

"की भेल, तबीयत खराप अछि की?"

"तबीयत तँ ठीक अछि मुदा भागे खराप अछि। बड़का दोकान मझला देखै छलथिन आ छोटकाके दुनू भाए। से मझला आब ओइ दोकानपर कब्जा जमा लेलथिन। ओइ दोकानक एकौ पाइ देबा लेल तैयार नै छथि। आब एक दोकानमे ई दू परिवार कोना चलत। घरक खर्च कते छै से आब बुझा रहल अछि?"

हाटेमे हषा अपन दुख कहऽ लगलै। आब आभाके बुझा गेल रहै हषाक चेहरा एना किएए भेलै।

"बाबूजी सभ राज-काज अपने देखै छलथिन से अइ दुनू भाए पते नै कोना काज होइ छै। सभ दिन बाबुएजीक कहलपर काज केला अपना मोने तँ किछु केबे नै केला"
ई सभ कहैत-कहैत हषा हकमए लागल छल। से सच छैहे जे नौकर जका खटब आ मालिक जका काज सम्हारब दुनूमे भारी िरक छै। आभाके ई एखनो नै बुझएमे आबि रहल छलै जे रमणीकजीक नीक केला की खराप। बेटा सभके काजसँ दूर रखला आ ओकरा सभके अपन पएरपर ठाढ़ नै होमए देलाह। साठि सालसँ बापपर आश्रित रहए बला बेटा सभ दोकानक नौकरपर आश्रित छल। आपना बच्चामे अपनो काज करबाक बुद्धि नै।एना किए केलथिन रमणीकजी। अपन बेटा सभके अपने बकलेल बना देलथिन। लोि सन बना देलथिन। आभाके लगलै आब ओ कते सुखी अछि अपन छोट परिवार, अपन कम पाइमे। पहिल बेर आभा अपन ससुरक िटोके नीक जका देखलक, बहुत देर धरि देखैत रहल।
(मूल शीषक-- रमणीक भाइ नही रहे)

आशीष अनचिन्हार

पो. हरिमोहन झाजीक गजल

पस्तुत अछि मैथिलीक व्यंग्य समाट पो. हरिमोहन झाजीक लिखल ई गजल जे कि हुनक रचनावली (कविता खंड)सँ पृष्ठ-87सँ साभार अछि। तकर बाद हम एकर तक्ती कऽ देखाएब जे ई वास्तवमे गजल थिक की नै थिक--

ने ललिहुँ िजदारी जौ
त रपया केर धाहे की

खसौलक नोर नहि बापक
त ओ कन्याक िववाहे की

ने आधा ऐंठ िकल गेल
त िर ओ भोज भाते की

ने बहराएल एको बन्दूक
त ओ थिक बराते की

ने लगला जोक बच्चा कय जे
तेहन दुलहाक बापे की

जौ लस्सा बच्चा कुटुम सटला
त ओकरासँ बचल पापे की

पहिल नम्बर खेत सुदभरना
त ओ बापक सराधे की

ने निकल जौ देयादे सन
त ओ गहुमन दराधे की

1972मे लिखल (प्रकाशित) आब एकर तक्ती देखू--

पहिल शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222 पहिल शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि--1222-1222
दोसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि-- 1222-1222 दोसर शेरक दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-11222 जे एकर मतलाक

ह्विसाबे नै अछि।

तेसर शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि- 1222-12221 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि--12122-1222 जे कि मतलाक हिसाबे नै अछि।

चारिम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि 1222-122221 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि--122-1222 जँ कथित तौरपर "ए"के लघु मानी (जे कि गलत अछि) तखन एहि चारिम शेरक मात्राक्रम एना हएत-- पहिल पाँति -1222-12221 दोसर पाँति-122-1222 दूनू व्यवस्थाकिमे मात्राक्रम मतलाक हिसाबे नै अछि।

पाचम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि-- 1222-1222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि- 2222-1222 जे कि मतलाक हिसाबे नै अछि।

छठम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि-- 1222-1222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-222 जे कि मतलाक हिसाबे नै अछि।

सातम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि-- 1222-1222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-1222 जे कि मतलाक हिसाबे अछि।

आठम शेरक पहिल पाँतिक मात्राक्रम अछि- 1222-2222 दोसर पाँतिक मात्राक्रम अछि-1222-1222 जे कि मतलाक हिसाबे नै अछि।

उपरका विवेचनासँ स्पष्ट अछि जे ई गजल नै अछि। ओना हरिमोहन झाजी अपन आत्मकथा "जीवन यात्रा" मे लिखै छथि जे ओ पटना आबि मोशायरा सभमे सेहो भाग लेबए लगलाह। भऽ सकैए जे मात्र लौलवश ई कथित गजल हरिमोहनजी लिखने होथि। जे किछु हो

मुदा ई गजल गजल इतिहासमे उल्लेख करबा योग्य नै अछि मुदा ओइ बाबजूद मात अइ कारणसँ हम विवरण देलहुँ जे कोना कियो उचित कऽ कहि सकै छथि जे हरिमोहन झा सन महान हास्य-व्यंग्यकार गजल लिखने छथि आ सही लिखने छथि। बस एही कारणसँ हम एतेक मेहनति केलहुँ अन्यथा एहि गजलमे कोनो एहन बात नै। हरिमोहन झाजी गजलक संबंधमे की सोचैत छलाह तकर बानगी "कहू की औ बाबू" नामक कविताक पहिले खंडमे देने छथि--

बसाते तेहन छै जे गोष्ठी मे कवियो
गजल दादरा आ कव्वाली गबैये
किछु दिन मे एहो देखब औ बाबू
जे कविताक संग-संग तबला बजैए

हरिमोहन झा रचनावली (कविता खंड) पृष्ठ-120 (11-11-1978 मे पकाशित)। भऽ सकैए जे हरिमोहनजीके उर्दू शाइर सभहँक संग घनिष्ठता होइन मुदा ओ घनिष्ठता शाइरी जानमे नै बदलि सकल से उपरक हुनक विचारसँ परिलक्षित भऽ जाइए।

भाषा केर मनोथ्वजान (तीन टा थ्वंदु)

भाषा केर मनोथ्वजान भाग-1

जखन केओ कहै छै जे "मैथ्विली मधुर भाषा थ्विक" तखन हमरा ओथ्वसँ बेसी बिका गाथ्व थ्वकछु नै बुझाइत अछ्व। कोनो भाषा मधुर वा खटगर वा नुनगर की तेलगर होइते नै छै। आ जँ मधुर होइ छै तँ थ्वकएक?
ऐ पशपर एबाक लेल बि साहस चाही।
मध्यकालीन थ्वथ्विला सामंती छल। सामंत बैसल की चमचा सभ घेथ्व अपन समस्या सुनबए लागैत छलाह। आ जखन केकरो अहा अपन समस्या सुनेबै वा की केकरो चमचइ करबै तखन भाषा तँ मधुर राखहे पति। हमरा जनैत मैथ्विली अहीठाम मधुर भाषा थ्विक। कारण मैथ्विल चमचइ कर'मे बहादुर होइ छथ्वि। मधुर बोल तँ राखहे पतिथ्वह।

ठीक थ्वपरीत थ्वथ्विलाक दथ्वत ओ गैर-सवणक भाषामे चमचइ नै छै तँए ओथ्वमे टास बेसी बुथ्व पि छै आ बाम्हण-कायस्थि सभ ओकरा रिबोली कहै छथ्वि।मुदा हमरा जनैत ई मात दृथ्विगत भेद अछ्व। जकरा अपन बाथ्वपर थ्वशास छै ओकर बोली ओ भाषामे टास रहबे करतै--जेना थ्वथ्विलाक दथ्वत वगक मैथ्विली।आ जे चमचइमे लागल रहत तकर बोली ओ भाषामे मधुरता रहबे करतै--जेना थ्वथ्विलाक बाम्हण ओ कायस्थि वगक मैथ्विली।

भाषा केर मनोविज्ञान भाग-2

ई हम दू बातक नोट लेल मािहा लै छी जे बाम्हण-कायस्थ महातेजस्वी होइ छथि तेँ हुनके टा पुरस्कार भेटबाक चाही। मुदा की बाम्हण-कायस्थ दरभंगे-मधुबनी-सहरसामे छै वा मिथिला मने की दरभंगे-मधुबनी-सहरसा छै। ऐ समस्यापर जखन हम दृष्टिपात करै छी एना बुझाइए----

१) जेना-जेना दरभंगा-मधुबनी-सहरसाक क्षेत्र खत्म होइत जाइए तेना-तेना बाम्हण-कायस्थ ओ आन छोट जातिक भाषाक बीच अंतर खत्म होइत जाइए (१००मे ९७टा केसमे)। चाहे ओ सीतामढ़ी हो की मुजफ्फरपुर हो की पूर्णिया हो की भागलपुर हो की समस्तीपुर हो की बेगूसराय हो की चंपारणक किछु क्षेत्र (झारखंडक क्षेत्र बला लेल एहने बुझू, राजनैतिक बाध्यताके देखैत नेपालीय मैथिलीक उल्लेख नै क' रहल छी)।

२) जेना-जेना बाम्हण-कायस्थ ओ छोट जातिक भाषाक बीच अंतर खत्म होइत गेलै बाम्हणवादी सभ ओकरा मैथिली मानबासँ अस्वीकार क' देलक। ऐ कटर बाम्हणवादी सभहँक नजरिमे ई छलै जे भाषाक भेदसँ बाम्हण वा छोट जातिमे भेद छै। आजुक समयमे अंगिका ओ बज्जिकाक भाषाक जन्म बाम्हणवादक एही प्रवृत्तिसँ भेल अछि। किछु दिन पहिने नरेन्द्र मोदी द्वारा मुजफ्फरपुरमे भोजपुरीमे भाषण देब एही बाम्हणवादक विरोध अछि आ हम एकर स्वागत करै छी तािह ओहि दिनक बाट जोहि रहल छी जखन गया ओ दरभंगा-मधुबनीमे भोजपुरी बजता। जँ ठोस विचारक रूपमे आबी तँ आर्थिक रूपे कहि सकै छी जे मैथिलीके तोड़बामे ई बाम्हणवादी सभ १०० प्रतिशत भूमिका

थ्माहला। जँ कदाथ्मत् ई बाम्हणवादी सभ दरभंगा-मधुबनी-सहरसासँ हथ्ट क' सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, पूथ्माया, भागलपुरक,चंपारण आथ्दक बाम्हण-कायस्थके पुरस्कार देने रथ्हतथ्थ तँ कमसँ कम मैथ्थिली टुटबासँ बथ्च गेल रहैत। ई अकारण नै अथ्छ जे रामदेव झा, चंरनाथ्थ थ्मश अमर, सुरेशर झा आथ्द एहन महान बाम्हणवादीक कारणे दरभंगा रेथ्डयो स्टेशनसँ बथ्मजकामे कायथ्रम शुरु भेल।

३) आ जँ मैथ्थिली टुटबासँ बथ्च गेल रथ्हतै तखन थ्मथ्थिला राज्य लेल एतेक मेहनथ्त नै कर' पथ्थितै। कारण चंपारणसँ गोडडा धथ्र सभ अपन भाषाके मैथ्थिली बुथ्झतै। ऐ ठाम हम ई जोर द' क' कहब चाहब जे पुरान होथ्थ की नव राज्य आंदोलनी सभ सेहो बाम्हणवादी छथ्थ। अन्यथा ओ सभ सेहो रामदेव झा. चंरनाथ्थ थ्मश अमर, सुरेशर झा आकी आन-आन मैथ्थिली थ्वघटनकारी सभहँक थ्वरोध करतथ्थ।

आथ्खर की कारण छै जे धनाकर ठाकुर अपन मानथ्चतमे चंपारण वा गोडडाके तँ लै छथ्थ मुदा ओथ्ह केतक साथ्हत्यकार लेल पुरस्कारक माग नै करै छथ्थ। ई पश मात धनाकरे ठाकुरसँ नै आन सभ राज्य आंदोलनीसँ अथ्छ।
ऐठाम ई थ्वसथ्व जाउ जे पुरस्कार कोनो छोट जाथ्तके देबाक छै। जँ बाम्हणे-कायस्थके देबाक छल तखन थ्फर सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, पूथ्माया, भागलपुरक,चंपारण, बेगूसराय आथ्दक बाम्हण-कायस्थके थ्कएक नै ?

तँ आब ई देखबाक अथ्छ जे के-के थ्मथ्थिला राज्य आंदोलनी बाम्हणवादी छथ्थ आ के-के साच मोनसँ थ्मथ्थिला राज्यके चाहै छथ्थ।

भाषा केर मनोविज्ञान भाग-3

लोक जखने बाम्हणवादक नाम सुनै छथि हुनका बुझाइत छन्हि जे सभ बाम्हणके कहल जाइत छै। मुदा हमरा लोकनि बहुत पहिनेसँ कहैत आबि रहल छी जे बाम्हण आ बाम्हणवादक कोनो सम्बन्ध नै। कोनो चमार सेहो बाम्हणवादी भ' सकै छथि। बाम्हणवाद जाति विशेष नै भेल ई मात मानसिकता भेल जे कोनो जातिमे भ' सकैए। बाम्हणवादक पमुख तत्व वा लक्षण एना अछि---

१) केकरो आगू नै बढ़' देब------ एकटा छलाह स्व. रमानाथि मिश "अमर"। ई नीक हास्य-व्यंग केर कविता लीखै छलाह। मुदा ई मैथिली साहित्यमे आगू नै बढ़ि सकला। कारण? कारण हुनक दोख छलन्हि जे ई चंरनाथि मिश " अमर" जीक भातिज छलथिन्ह। दाबि आ देयाद जते गलत तते नीक। साहित्यक स्तरसँ ल' क' पारिवारिक स्तरपर रमानाथि मिशजीके पददलित होमे' पड़लन्हि।

बाम्हणवाद मात दलिते लेल नै छै। बहुत रास बाम्हण अपनो जाति केर लोकके आगू नै बढ़' दैत छै।

२) मात अपने टाके नीक बुझब--- जँ साहित्य अकादेमीक लिस्ट बला झा-झा सभ पतिभावान छथि तँ फेर मैथिली साहित्य विशक छोड़ि भारतीय साहित्य केर समकक्ष किएक नै अछि। आ जँ पतिभे छै तखन तँ शी विलट पासवान "विहंगम" भारतीय राजनीतिसँ ल' क' मैथिली साहित्य धरि योगदान देने छथि। की विहंगम जी पतिभाहीन छथि। विहंगम जी सन-सन आर बहुत बेसी नाम अछि।

३) पश्चवारवाद---- रामदेव झा जखन श्वटायर भेलाह तँ साश्चत्य अकादेमीमे ओ अपन ससुर चंरनाि श्वश अमरके बैसा देलाह। तकर बाद अमर जी अपन समश्चा श्वदानाि झा श्वश्चतके बैसेलाह। आब श्वश्चतजीक श्वकट संबंधी (चेलाइन) छथि।

कारण-- बाम्हणवादक एकमात कारण हीन भावना अश्छ।

मिथिला स्टूडेट यूनियनक काज पर रिपोर्ट

विदेह सदिखन वास्तविक आ सामयिक काज करए बलाके सलाम ओ प्रोत्साहित केलक अछि। एखन बाढ़ि पीड़ितक बीच जाहि तरहे मिथिला स्टूडेट यूनियन (MSU) काज कऽ रहल अछि से आगूक लेल एकटा उदाहरण बनत। ई पहिल बेर अछि जखन कि मिथिलाक नामपर बनल कोनो संस्था जनताक बीच गेल आ ओकरा समर्थन भेटलै। ई समर्थन काज केलासँ भेटलैए। खाली मौखिक समर्थन नै तन-मन-धन तीनू भेटलैक अछि आ मिथिला स्टूडेट यूनियन साबित केलक जे हँ ओ भविष्यमे नमहर दायित्व सम्हारि सकैए। विदेहक किछु पछिला अंकमे सेहो मिथिला स्टूडेट यूनियनक काजके रेखांकित कएल जे अछि जे कि संपादकीय वा रिपोटक रूपमे सुरक्षित अछि। "मिथिला स्टूडेट यूनियन केर बाढ़ि पीड़ित फंडमे दान देबाक लेल सभ गोटा स्वतंत्र छी। चाहे एक रुपया हो कि एक लाख। निच्चामे बैंक डिटेल देल जा रहल अछि--

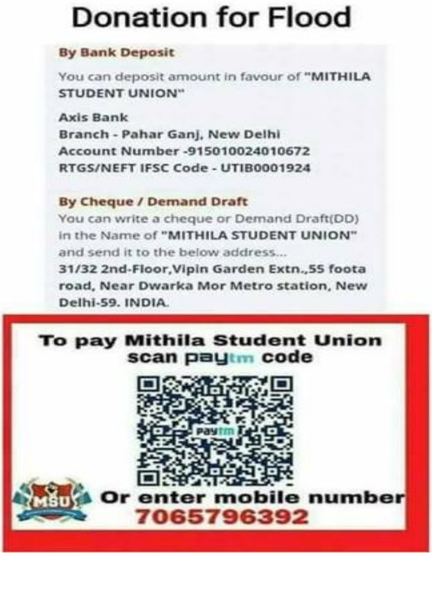
Donation for Flood

By Bank Deposit

You can deposit amount in favour of "MITHILA STUDENT UNION"

Axis Bank
Branch - Pahar Ganj, New Delhi
Account Number -915010024010672
RTGS/NEFT IFSC Code - UTIB0001924

By Cheque / Demand Draft

You can write a cheque or Demand Draft(DD) in the Name of "MITHILA STUDENT UNION" and send it to the below address...
31/32 2nd-Floor,Vipin Garden Extn.,55 foota road, Near Dwarka Mor Metro station, New Delhi-59. INDIA.

To pay Mithila Student Union scan paytm code

Or enter mobile number
7065796392

मिथिला स्टूडेट यूनियन केर सभसँ बड़का विशेषता अछि मिथिलाके दरभंगा-मधुबनीसँ बाहर करब। मिथिला स्टूडेट यूनियन केर ई प्रवृत्ति आबैते भविष्यमे वृहद मिथिला राज्यक गठन लेल बाट खोलत। ता धन्य मिथिला स्टूडेट यूनियन केर एहन काजक लेल हिनकासँ सलाम करैत किछु पाँति परस्तुत रहल छी जे ई सेनानी सभहँक मनोबलके आर आगू बढ़ाएत–

मिथिला

मिथिला
स्टूडेंट
यूनियन

"कतेक रास बात" इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति नै अछि

आइ हम जे लेख पढ़ि रहल छी तकर मूल उदेश्य अछि "मैथिली वेब पत्रकारिताक पारंभिक स्वरूप"के निश्चित करब। आन तथ्य देबासँ पहिने हम याहूजियोसिटीज / ब्लागरसँ संबंधित किछु घोषणा देखा रहल छी जे कि याहूजियोसिटीज / ब्लागर केर आधिकारियल पेजसँ लेल गेल अछि आ एकरा कियो गलतिसँ वा कुतर्कसँ गलत साबित नै कऽ सकै छथि। तँ देखू आधिकारिक तथ्य-

1) 1999मे याहूजियोसिटीज (Yahoo! GeoCities) चालू भेलै आ 2001मे पोलिसिट नै हेबाक कारणे एकरा लगभग बंद कऽ देल गेलै (फी एकाउट बला सभके स्टेप बाइ स्टेप बंद कएल गेलै) मैथिलीक पहिल इंटरनेटीय उपस्थिति जे कि भालसरिक गाछ नामसँ सन 2000 सँ याहूजियोसिटीजपर छल तकरो एकाउट बंद भऽ गेलै (जँ कियो चाहता तँ एकर रेकार्ड याहूसँ मँगबा सकै छथि, ओना एकर चास कम कारण आकाइभ खत्म भऽ गेल छै)। एकर बादमे 2009सँ याहूजियोसिटीज अमेरिका समेत सभ देशसँ अपन पेड सर्विस सेहो हटा लेलक आ आब मात जापानमे एखन एकर सर्विस बाचल छै। ई तँ बहुत पहिनेक बात छै हाल-फिलहाल (2014)मे सभ गोटा आरकुटके बंद होइत देखने हेबै। आरकुटपर कतेको-कतेको पोफाइल रहए से आब नै भेटि सकैए। हँ जे आकाइभ बना लेने हेता से फाइल रूपमे अपन डाटा रखने हेता। याहूजियोसिटीज केर विकिपीडिया वा आन संदर्भसँ हमर तथ्यके जाचल जा सकैए।

2) May 01, 2008सँ ब्लागर फ्यूचर पोस्ट केर सुविधा देलकै

जकरा एश्ल श्लांकपर देश्ख सकै छीhttps://blogger.googleblog.com/2008/05/blogger-now-schedules-future-dated.html एश्ल सुश्वधासँ लोक पोस्टके डाफ्टमे भश्वष्यक तारीख संग राश्ख दै छश्थि न आ ओ पोस्ट श्वायत तारीखमे अपने-आप पोस्ट भऽ जाइत छै। एश्ल ि चरमे जे कैलेडर देल गेल छै तकरे सहायतासँ आजुक पोस्टके दू साल पाछूक तारीखमे लऽ जा सकै छी तेनाश्लते दू साल पश्लनुक पोस्टके आजुक तारीखमे आश्ना सकै छी मुदा ई मात पोस्टक तारीख वा सालमे हेि-िरी कऽ सकै छी कोनो पोस्टक URL केर तारीख,महीना वा सालमे नै। URL बला तारीख,महीना वा साल वएह रहतै जश्लया पोस्ट पकाश्वात भेल रहै।

3) December 10, 2008सँ ब्लागर दूटा ब्लाग केर मश्वांग मने जोश्चि देबाक सुश्वधा देलकै एकरा एश्ल श्लांकपर देश्ख सकै छीhttps://blogger.googleblog.com/2008/12/your-blog-your-data.html एश्ल सुश्वधासँ लोक अपन अलग-अलग ब्लागके एकठाम जोश्चि सकै छलाह।

4) February 03, 2010सँ ब्लागर पेज शुर करबाक सुश्वधा देलकै एकरा एश्ल श्लांकपर देश्ख सकै छीhttps://blogger.googleblog.com/2010/02/create-pages-in-blogger.html एश्ल सुश्वधासँ लोक अपन ब्लागक श्वश्वान सूचना पाठक लग दै छश्थि। पेज बनेलापर खाली अक्र वा अक्र-अंकक श्लांक बनै छै मुदा तारीख,महीना वा सालनै रहै छै।

5) July 17, 2012सँ ब्लागर कस्टम श्लांक बनेबाक सुश्वधा देलकै

जकरा एहन लिंकपर देखल सकै छीhttps://blogger.googleblog.com/2012/07/customize-your-posts-with-permalinks.html कस्टम लिंक मने अहा अपना मोनक हिसाबे कोनो पोस्टक URL बना सकै छी मुदा URLमे पोस्टक पकाशन होमन बला तारीख,महीना वा साल रहत। पोस्टक ओरिजनल पोस्ट डेट वा पोस्टक साल नै बदलल जा सकैए जकरा अहा सभ एहन लिंकपर देखल सकै छी http://blogger-hints-and-tips.blogspot.in/2009/12/changing-date-for-post.html

उपरक तथ्य सभके नीक जका अहा सभ मोन राखू आ आब चचा देल गेल मैथिलीक आरंभिक ब्लाग / वेबसाइट सभहँक पहिल पोस्ट आ ओकर तारीख सभके अहा अपने जाचू जाहिसँ ई स्पष्ट हएत जे कोन पत्रिका पहिल अछि आ के दोसर। एहि अंतगत हम पाच टा ब्लाग / वेबसाइट राखब 1) भालसरिक गाछ (याहू सिटीज आ ब्लागर दूनू बला) 2) पल्लवमैथिला 3) समदिया 4) पकरातर 5) कतेक रास बात

आगू बढ़बासँ पहिने ई कहि दी जे एहि पाचो ब्लागमे दू टा एहन लिंक अछि जकर आकाइभ उपलब्ध नै अछि मुदा चचा हम सभ लिंक केर करब चाहे ओकर आकाइभ हो या नै हो। आकाइभ नै हेबाक मततलब ई नै छै जे कोनो चीजक अस्तित्वके नकारि देल जाए।

भालसरिक गाछ

गजेन्र ठाकुर जी याहूसिटीजपर बहुत रास मैथिलीक साइट बनेने छलाह मुदा ताहिमेसँ "भालसरिक गाछ" केर लिंक (जे सन 2000

सँ याहूग्रुपसाइटीजपर छल) बाचल अछि। एकर लिंक http://www.geocities.com/bhalsarik-gachh/ अछि। याहूसाइटीज पर ई बंद भेलाक बाद 5 जुलाई 2004के एही नामसँ ब्लागरपर सेहो गजेन्द्र ठाकुर द्वारा ब्लाग बनाएल गेल आ जनवरी 2009मे एकरा विदेहक संग जोड़ि देल गेलै आ आब ईhttp://www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर आकाइभ सुरक्षित अछि। एहिठाम मोन राखब जरूरी जे याहूसाइटीज बला ब्लाग केर आकाइभ उपलब्ध नै अछि।

पल्लवमिथिला

पल्लवमिथिला नामक वेबसाइट जे शक 2059 माघे संक्रान्ति- (2003 जनवरीमे) धीरेन्द्र पेमर्षि जी द्वारा बनाएल गेल। एकर लिंक अछि- www.pallavmithila.mainpage.net वर्तमानमे ई वेबसाइट बंद अछि। एहि वेबसाइट केर मूल पेज www.mainpage.net सेहो याहूजियो साइटीज जका बंद भऽ गेलै। संगे-संग एहू वेबसाइट केर आकाइभ उपलब्ध नै अछि। विनय कुमार कसजू केर नेपाली पोथि "सूचना प्रविधिको शब्दकोश र नेपालमा यसको उपयोग" जे शक सितंबर 2003 मे पकाशित भेलै तकर पृष्ठ 155 पर "पल्लवमिथिलाक चर्चा छै।

समदिया

ईहो ब्लाग गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा 9 अगस्त 2004मे बनाएल गेल छल समादक वास्ते मुदा पहिल पोस्टक बाद लगभग चारि साल ई बंद रहल फेर 2008सँ एकर पकाशन शुरू भेल आ फेर-आस्ते-आस्ते 2015 धरि चलैत रहल। एहि ब्लागक पहिल पोस्टक लिंक

अछि- http://esamaad.blogspot.in/2004/

पकरातर

एहि ब्लागक पहिल पोस्ट 12 फिरवरी , 2005 के अछि जकर लिंक http://prakarantar.blogspot.in/2005/02/blog-post.html अछि। ई ब्लाग किनका दारा बनाएल गेल से अजात अछि मुदा कमेट सभसँ पता चलैए जे कोनो ठाकुरजी छथि (शायद विजय ठाकुर जिनक मैथिली दपणा, तात्काल आरो ब्लाग सेहो छलनि)। जे हो मुदा एकर लिंकसँ एहि ब्लागक तारीख पता चलि रहल अछि। मात दू टा पोस्टक बाद ई ब्लाग बंद भऽ गेल मने ओहिपर पोस्ट एनाइ बंद भऽ गेल। एहि ब्लागक अंतिम पोस्ट 19 फिरवरी , 2005मे आएल।

कतेक रास बात

कतेक रास बातक मूल लिंक http://vidyapati.blogspot.com/ अछि (आब एकर पता http://www.vidyapati.org/ अछि मुदा दूनू लिंकसँ खुजैत छै)। कतेक रास बात नामक ब्लाग केर सभसँ पहिल पोस्ट जे देखा रहल अछि (देखू चित्र- 1, चित्र सभ आगाँ अछि) ताहिमे झोल-झाल छै। एकर URLमे http://www.vidyapati.org/2013/07/blog-post_28.html देखा रहल छै (देखू चित्र-1 केर उपर घेरामे) मतलब ई पोस्ट 2013 केर जुलाइ मासमे भेल छै। मुदा एकर पकाशन केर तारीख July 01,1999 तारीख देखा रहल छै (देखू चित्र-1 केर नीचा घेरामे)। आ एहि पोस्टसँ पहिने आरो कोनो पोस्ट नै छै से न्यूअर पोस्ट देखलासँ पता चलि जाइत छै। एहि पोस्टक बाद

जे पोस्ट अछि से सूचनाक रपमे अछि आ तकर URLhttp://www.vidyapati.org/2005/08/blog-post.html अछि (देखू चित्र- 2) मने ई पोस्ट 2005 केर अगस्त मासमे भेल अछि (देखू चित्र-2 केर उपर घेरामे) मुदा फेर एहूक पकाशन तिथिमे गड़बड़ी कएल गेल अछि आ पकाशन तारीखके November 28, 2004 बना देल गेल अछि (देखू चित्र-1 केर नीचा घेरामे)। एहि पोस्टक बाद बला जे पोस्ट अछि तकर URL http://www.vidyapati.org/2005/09/blog-post.html अछि मने ई पोस्ट 2005 केर सितंबर मासमे पकाशित भेल आ एकर पकाशन तारीख September 02, 2005 अछि मने एखन धरिमे इएह पोस्ट सही अछि (देखू चित्र- 3)। सितंबर 2005 केर बाद जुलाइ 2006मे पोस्ट भेल जकर URL अछि http://www.vidyapati.org/2006/07/blog-post.html आ एकर पकाशन तारीख अछि July 12, 2006 एहि आ एकर बाद बला पोस्टक URL आ पकाशन तारीख मीलै छै। जे गड़बड़ी छै से पहिलुक दूटा टामे आ से मात इतिहासमे गलत तरीकासँ पहिल संाान बनेबाक लेल। जँ कतेक रास बातक एहि चारिटा पोस्टक तारीखके सजाएल जाए तँ ई साबित भऽ जाइ छै जे एहि ब्लागक पहिल पोस्ट 1 अगस्तसँ लए कऽ 31 अगस्त धरिक बीचमे भेल छै (सुविधा लेल अगस्त-2005 नाम हम देलहुँ)। एकटा आर रोचक तथ्य ई जे कतेक रास बात केर परिचय (पेज रपमे, देखू चित्र-4)मे पदनाभजी लीखै छथि "प्रिय पाठकगण;एहि ब्लोग'क शुरआत हम 2004 मे केलहुं. ताबय धरि हमरा जानकारी मे मैथिली भाषा इन्टरनेट पर नहि छलए"। ई कोन जानकारीक दाबी भेलै। 2003मे प्रिंट पोर्टिमे पल्लवमैथिली बारेमे लिखाएल छै तखन आर

श्चनका कोन जानकारी चाही। भऽ सकैए जे पदनाभजी कहथि जे पल्लवश्चथिला नेपालक अछ्छ मुदा मैथिली तँ नेपालोमे छै आ ओनाहुतो इंटरनेटक कोन देश हेतै। इंग्लैडमे चश्च रहल मैथिलीक वेबसाइट वा ब्लागके मैथिली भाषाक कहल जेतै या इंग्लैडक भाषाक। भऽ सकैए जे पदनाभ जी कहथि जे हम ब्लाग 2004मे बनेलहुँ मुदा ओकर पश्चल पोस्ट अगस्त 2005मे भेल मुदा एहन दाबी तँ श्चकयो कऽ सकैए। सभसँ पश्चने तँ हमही दाबी करब जे हमर ब्लाग "अनश्चन्हार आखर" 1999मे बनल मुदा ओकर पश्चल पोस्ट 11 अपैल 2008के भेल। मुदा वास्तश्चक रूपे हम जानै श्चछयै जे ई तकव नै मात बकिीि हेतै। कतेक रास बात श्चसम्बर 2013 धश्च चलैत रहल ओश्च केर बाद ओश्चपर कोनो सश्चियता नै अछ्छ।

गजेन्र ठाकुर अपन पोिी "कुरुक्तेम् अंतमबाक" (संस्करण 2009)मे एकटा आलेख देला जकर शीषक छै " भाषा आ पौदौश्चकी (संगगणक, छायाकंन, कुंजीपटल, टंकण तकनीक) अंतजालपर मैथिली आ श्चशव्यापी अंतजालपर लेखन आ ई पकाशन" जे श्चक बादमे अंश्चाका पश्चाकाक अंतजाल श्चशेषाकमे सेहो पकाश्चात भेलै। एश्च आलेखमे गजेन्रजी "भालसश्चक गाछ" संबंधमे चचा केने छथि जाश्च के बाद भम पोसए बला "पश्चल" लोक सभहँक भम टूटल आ तकरे िलस्चर प ओ सभ गलत तथ्य पकाश्चात केलाह जे हम एतेक सालमे शुरु केने रही तँ हम ओतेक सालमे शुरु केने रही। ठाकुरजीक ई आलेख ओश्च समयमे पश्चल ओहन आलेख रहै जाश्चमे अंतजालक संबंधमे श्चस्तारसँ चचा रहै एते धश्च जे श्चना कोनो सश्चश्चिकेट लेने अपनासँ कोना वेबसाइट बना सकै छी तकरो श्चश्च ओश्च आलेखमे छै। पाठक ई आलेख हुनक पोिी वा अंश्चाका पश्चाकाक "अंतजाल श्चशेषाक"मे पश्चि सकै छथि। मैथिलीमे सभ ई मानै छथि जे हम जश्चयासँ काज

शुर केलहुँ सएह पश्चल भेल। इश्चाहासमे तकनाइ, अध्ययन केनाइ हुनका पसंद नश्च छश्चा (एकटा टटका उदाहरण हमरा भेटल जे एक वेबसाइट जे श्वक अगस्त 2012सँ चालू भेल हुनक दावा छश्चा जे हम अपन वेबसाइटपर पश्चल बेर साक्षात्कार शृंखला चालू केलहुँ जे कमसँ कम कोनो वेब पश्चाकामे नै छल। आब देखू जे समश्चया अक्टूबर 2011सँ "हम पुछैत छी" नामक साक्षात्कार शृंखला चलेलक आ एश्चमे कुल सतावनसँ बेसी व्यश्चत्तत्वक साक्षात्कार पस्तुत कएल गेल अश्छ। आब कहू पश्चनेसँ के चला रहल अश्छ। एही ठाम अध्ययनक जर रश्चा पर्ि छै। श्वना पढ़ने आ जनने पश्चल केर बीमारी पोसने मैश्चिलीक सेवक सभ बहुत पसरल छश्चि)। हम पुछैत छी शीषक सभ साक्षात्कार एश्च श्चांकपर पश्च़ सकै छी- http://esamaad.blogspot.in/p/blog-page_22.html एतेक देखेलाक बाद हम "कतेक रास बात" केर संचालक सभ सभ पूछए चाहै छी जे जँ पकाशने तारीखके मानक बूझी तखन मैश्चिली श्वकएक ओ श्चंदी आ भारतक पश्चल ब्लाग हेबाक दाबी श्वकए नै कऽ रहल छश्चि। श्चंदीक पश्चल ब्लाग "नौ दो ग्यारह" अश्छ जे श्वक आलोक कुमार जी 21 अपैल 2003 के शुर केने छलाह। कतेक रास बातक तँ पकाशन श्चाश्चिक श्चसाबसँ "9211"सँ चाश्च साल पुरान अश्छ तखन डा0 पदनाभ श्चाश क्लेम करि् भारतक पश्चल ब्लाग हेबाक। मुदा डा0 पदनाभ श्चाश नै कऽ सकताह कारण हुनका बूझल छश्चा अपन बैमानीक बारेमे। डा0 पदनाभ श्चाश श्वकछु ओहन नवश्चाखुआ सभके बिगला सकै छश्चि के मात एकाउश्चंग उदेश्यक संग कंप्यूटर चलबै छश्चि मुदा जे कंप्यूटरसँ नीक जका पश्चश्चत छश्चि श्चानका ओ कोना बिगला सकै छश्चि। हम एश्च लेखक माध्यमे पदनाभजीके चुनौती दै श्छयश्चा जे पकाशन तारीखक श्चसाबसँ ओ

अपन ब्लागके भारतक पब्लल ब्लाग घोषत करबाबथि आ से केलासँ ओ मैथिलीश्कओक पब्लल ब्लागर बन्न जेता।

उपरक तथ्य सभसँ पता चलल हएत जे इंटरनेटपर --

1) भालसरिक गाछ (याहू सिटीज) 2000सँ अछि जकर लिंक http://www.geocities.com/bhalsarik-gachh/ अछि।

2) पल्लवमिथिला 2003सँ अछि जकर लिंक www.pallavmithila.mainpage.net अछि।

3) समदिया 2004सँ अछि जकर लिंक http://esamaad.blogspot.in/2004/ अछि।

4) पकरातर 12 फरवरी , 2005 के अछि जकर लिंक http://prakarantar.blogspot.in/2005/02/blog-post.html अछि।

5) कतेक रास बात अगस्त-2005सँ अछि जकर लिंक http://www.vidyapati.org/2005/08/blog-post.html अछि।

आ तँइ ई निश्चित रूपेण कहल जा सकैए जे भालसरिक गाछ (याहू सिटीज) बला इंटरनेटपर मैथिलीक पब्लल उपस्थिति अछि। तकर बाद पल्लवमिथिलाक स्थान दोसर अछि। समदियाक स्थान तेसर अछि। पकरातर केर स्थान चारिम अछि। आ अंतमे कतेक रास बात केर पाचम स्थान अछि।

बहुत संभव अछि जे इंटरनेटक अिाह दुिाया केर िकछु तथ्य हमरासँ छुिट गेल हो तँइ जँ अहा सभ ओकर सूचना दऽ एिक लेखकके पिरमाजन करेबै तँ ई भिवष्य आ इितहास दूनू लेल नीक रहतै। आशा अछि जे कोनो गलती िवस आिधोख भऽ अहा सभ सुझाव देब।

िवात सभ आिचा अछि-

चित्र-1
कतेक रास बात
LABELS
No comments
Newer Post
Home

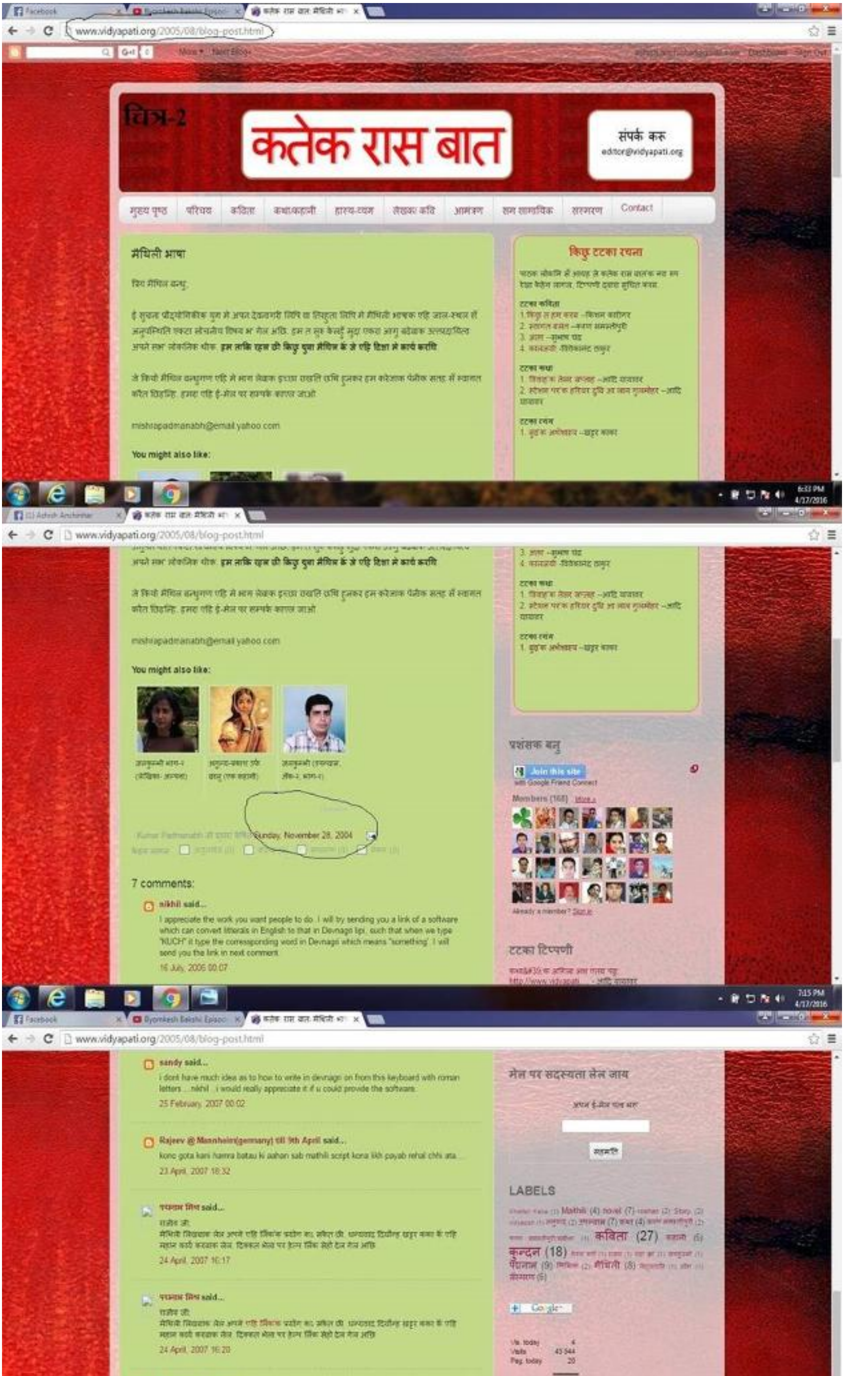
www.vidyapati.org/2005/08/blog-post.html
चित्र-2
कतेक रास बात
संपर्क करू
editor@vidyapati.org
Contact
मैथिली भाषा
किछु टटका रचना
You might also like:
प्रशंसक बनू
Join this site
7 comments:
nikhil said...
टटका टिप्पणी
sandy said...
मेल पर सदस्यता लेल जाय
LABELS
कविता (27)

चित्र-3
कतेक रास बात
You might also like:
5 comments:
Sanjay Jha said...

www.vidyapati.org/p/blog-page_27.html
चित्र-4
कतेक रास बात
संपर्क करू
editor@vidyapati.org
मुख्य पृष्ठ
परिचय
कविता
कथा/कहानी
हास्य-व्यंग
लेखक/ कवि
आमंत्रण
सम सामायिक
संस्मरण
Contact
परिचय
किछु टटका रचना

ननद विलास राय

हमर लॉटरी निकलल

झंझारपुर रेलबे टीशनक बगलमे एकटा दवाइ दोकान अछि, नाओं छिऐ- नवीन फिमेसी। ओइ दोकानक ई विशेषता छै जे निर्मलीक डाक्टर पुरजा हुअए वा दरभंगाक डाक्टरक, फिलपरासक डाक्टरक पुरजा हुअए वा तमुरियाक डाक्टरक सभ दवाइ भेट जाएत। तँए दोकानमे खरीदवालक भीड़ हरदम लगले रहैत अछि।
हमरो पतीक इलाज चलि रहल अछि। डाक्टर साहैब कहने रहथिन जे छह मास धरि दवाइ खाए पड़तैन। पाच मास तँ बीति गेल आब छठम मासक दवाइ चलतैन। तँए हमहूँ दवाइ कीलैले झंझारपुर विदा भेलौ। चारिये बजे भोरबामे उठि कऽ तैयार भऽ भपटियाही स्कूल लग मुख्यमंतीबला सड़िकपर एलौ। ओइठामसँ टेम्पू पकैड़ परसा हाल्टपर पहुँचलौ। परसा हाल्टपर टिकट कटा छह बजिया रेनक पतीक्षा करए लगलौ।
बगलमे बैसल एक गोरे बाजल-
"रेन आइ निर्मली सबेर गेल अछि तँए छह बजे धरि ऐठाम पहुँच जाएत।"
मोबइलमे समए देखलौ, पौने छह बजै रहए। ठीक छह बजे रेन परसा हाल्टपर पहुँचल। हम एकटा कोठरीमे चढ़ि गेलौ। सबेर रहितो रेनमे भीड़ छल।
रेन घोघरडीहा टीशन पहुँच कऽ रकल। एकटा महिला जे सलवार-समीज पहिरने रहए, हमरे कोठरीमे माने जइ कोठरीमे हम बैसल रही, ओहीमे चढ़ल। घोघरडीहा टीशनपर रेनमे भीड़ बढ़ि गेल दल। ओ

मञ्चला जैठाम हम बैसल रही, ओहीठाम आबि चार ब्रस झुया कऽ तकलक। केतौ खाली जगह नै देख हमरसँ कहलक-

"बाबा, कने हमरो बैसए दिअ।"

ओइ मञ्चलाक बाबा कहब सुनि हम छगुन्तामे पडि गेलौ। आखिर हमरा ई औरत बाबा किएए कहलक। भाइजी कहैत तँ ठीक छेलइ। कको कहैत तँ ओतेक सोच नञि होइतए। बाबा किएए कहलक..!

हम झुया कऽ नीचा-सँ-ऊपर धरि ओइ मञ्चलाके देखए लगलौ। तैबीच ओ फेर टेकलक-

"एना की आंगहाथ-आंगहाथ देखै छी। कहियो मौगी नै देखने छिऐ की? कनेक घुसकु ने।"

आब तँ भेल औरो पहपैट। हमरा भेल जेना कोनो चीज चोरि करैत पकडा गेलौ। हम कनी खिसैक गेलौ। ओ मञ्चला हमरा देहमे सटि कऽ बैस गेली। दोसर कियो रहैत तँ ओइ मञ्चलाक सटब नीके लगितै। धरमागती पुछू तँ हमरो नीक लगैत मुदा ओ औरत जे बाबा कहने छेली तही सोचमे डुमल रही। सोची जे एतेक बुढ़ भऽ गेलौ जे ई मञ्चला हमरा बाबा कहलक..?

गाडी सीटी देलक आ ससरए लगल। एकटा बीस-बाइस बखकलडकी जेकरा कोरामे एकटा लकधक साल भरिक बच्चा रहै, ओ खिडकी लग प्लेटफार्मपर ठाढ़ छेली, ओइ औरतसँ बजली-

"मम्मी ठीकसँ जइहे। गाम पहुँचते फोन करिहे।"

फेर कोरैला बच्चासँ कहली-

"बौआ, नानीके टाटा कऽ दियौ।"

ओ मञ्चला खिडकीसँ हाथ आकाशमे झुलबए लगली।

हमर मन खसल रहए। हम सोचैत रही, आखिर ई मञ्चला हमरा बाबा किएए कहलक! जखन कि ओकरो नाति-नातिनभेल छै जे अखने

देखलौ हेन।

हम ओइ मश्वला श्वस श्वया कऽ तकलौ तँ बुझ्झ पलि जे ओकर केश रंगल छइ। सलवार-समीज तेतेक कसल रहै जे शरीरक अंग, जे परदामे रहबाक चाही ओ अदहासँ बेसी वेपदा भऽ जाइ जखन ओ कनेको श्वहुरए। शरीरक रंग एकदम गोर। दोहरा हार-काठ। शरीर ने बेसी मोटे आ ने बेसी पातरे। एकदम छरहर। आँश्वमे काज लगौने, कानमे आधुश्वक श्वजाइनक बाली पश्वरने। एन-मेन सोनाक लगइ। एकटा हाथिमे गोल्डेन चेनबला टाटा क्वाजव घिी। दोसर हाथिमे कीमती चूरी। ठोरमे गाढ़ लाल रंगक श्वथ्यस्श्वक, नाकमे पाथिर पलि छक, गरदैनमे मोतीक माला। आँगुर सभमे पाथिर पलि औंठी। आँश्वमे गोल्डेन फेमबला चश्मा। कन्हामे पसव लटकल। हाथिमे मेहदी लगौने। जखन ओकरा पएर श्वस तकलौ तँ तश्कते रश्व गेलौ। दुनू पैरमे आरत लगौने जे ओकर पैरक सुन्दरतामे चाश्वचान लगबैत। हमरा कोनो कश्वक दोहा मोन पथि गेल-

"न पैरो मे महावर रचाओ गोरी
संगमरमर का कलेजा श्वघल जाएगा।"

हम अन्दाज लगेलौ, ऐ मश्वलाक उमेर कमतीमे 40-42 बखबसँ कम नै हेतइ। मुदा तेना कऽ मेन्टन केने अश्व जे तीस-बतीस बखक लगैत अश्व। की कहू, मन घोर-घोर भऽ गेल रहए। श्वकछु सोहेबे ने करए। ताबत ऐगला टीशनपर पहुँच रेन र कल। हम उतैर गेलौ। पानक दोकानपर जा ऐनामे अपन चेहरा श्वंगहाश्व कऽ देखलौ तँ बुझाएल जे अदहासँ बेसी केश पाश्क कऽ उज्जर भऽ गेल अश्व। सोचलौ, सुआइतई मश्वला हमरा बाबा कहलक। िर सोचलौ, ओकरो केश तँ रेगलेरहइ। िर ऐनामे देखलौ तँ अपन गाल पचकल बुझाएल जखनश्क ओइ मश्वलाक गाल पुआ जका ूलल छेलइ। तहूँ सेव

जका लाल। िरे ऐनामे देखलौ तँ आँखि एक हाि तरमे बुझाएल। पानक दोकानदार टोकलक-

"पान खाएब की? केहेन पान खाइ छी, मीठा पता आकि...।"

बिच्चेमे हम कहलिऐ-

"नै यौ बाबू, पान नइ खाएब।"

दोकानदार पुछलक-

"एना कि कए कननमुँह जका बजै छी? की कियो र पैआ-तुपैआ नै तँ आकािश लेलक हे?"

"से तँ नै भेल अछि।"

ई कहैत हम ससैर कऽ मोसाफिर खानामे आबि एकटा बैचपर बैस गेलौ। मन हुअए बोम िाि कऽ कानए लागी। हमरा कौलेजक समै गप मन पिि गेल। की जिनगी छल। फिल्मी हीरोक स्टाइलमे रहै छेलौ। अमिताभ बच्चनक स्टाइलमे बाबरी राखी। अन्दर सुिंग कसि पेन्ट-सटव पहिरैत रही। आँखिमे कसिका चश्मा रहैत छल। कौलेजक लिकी सभ हमरा राजेशखना कहए। एक दिन घटना मोन पिि गेल। एकटा लिकी जेकर नाओं अलका रहइ, ओ एकटा कागज हमरा कॉपीमे रखि देलक। हम कॉपी खोललौ तँ ओ कागज देखलिऐ। ओइमे लिखल रहै- आइ लव यू अलका। हम बुझू अकासमे उिए लगल छेलौ किएक तँ अलकाके कौलेजक छौिा सभ कौलेज क्वीन कहैत छेलइ। ओ बि सुन्दर छेली। दोसर दिनसँ अलका कौलेज नइ अबैत रहए। पता चलल जे अलका बेमारपिि गेल अछि। बादमे पता चलल ओकर बाबूजी जे पीएनबी बैकमे मैनेजरक पदपर काज करै छला, हुनकर पमोशन केत्रीय पवंधकक पदपर दरभंगामे भऽ गेलैन हेन। तँए ओ सपरिवार दरभंगा चलि गेला। अलका आब दरभंगेमे पढ़त। एक मास तक हम अलकाक गममे

गमगीन रहलौ।

ताबेतमे रेनक सीटी सुनलौ। मुसाफिर खानासँबाहर एलौ, गाड़ी टीशनपर पहुँच चुकल छल। गाड़ीमे चढ़ि गेलौ।

परसा हाल्टपर रेनसँ उतैर टेम्पू पकैड़ गाम आबि गेलौ। धोती-कुरता पहिरनहि ओछौनपर जा पड़ि रहलौ। पती चूल्हि लग छेली, ओ देखली तँ लगमे आबि पुछली-

"मर! की भेल हे जे एना बिना कपड़ बदलने पड़ि रहलौ। मन-तन ठीक अछि किने?"

हम किछु नहि बजलौ। हमरा हुअए जे बोम फाड़ि कानए लागी।

पती फेर पुछली-

"दवाइ आनलिऐ की?"

हम तैयो किछु ने बजलौ।

पती सोचए लगली आन दिन जे झंझारपुर दवाइ आनए जाइ छला तँ अढ़ाइ-तीन बजे धरि घुमि कऽ गाम अबै छला। आइ साढ़े दसे बजे आपस आबि गेला। भरिसक पाकेटमार रुपैए नहि तँ निकालि लेलकैन। बजली-

"रुपैआ ने तँ पॉकेटमारी भऽ गेल?"

हम फेरो किछ ने बजलौ।

हमर पती सोचली जे आखिर ई बजैत किए ने छथि‍न। ओ हमरा माथपर हाथ दैत पुछलैन-

"माथ ने तँ दुखाइत अछि?"

हम किछु ने बजलौ। हमर पती हमर हाथ अपना हाथमे लऽ कऽ बड़ प्यारसँ बजली-

"अहाक हमर सप्पत छी, कहू की भेल। एना किए उदास भऽ कऽ पड़ल छी।"

हम कनैत जका बजलौ-

"की हम बुढ़ भऽ गेलिऐ।"

तैपर हमर पती बजली-

"सुनिऐ, से सुनिएक पुछै छी। के अहाके बुढ़ कहैत अछि। हम तँ आइ धरि नै कहलौ हेन।"

हम कहलिऐ-

"आइ रेनमे एकटा मौगी हमरा बाबा कहलक।"

हम ओइ औरतक पूरा हुलिया अपना पतीके बता देलिऐ।

हमर पती ठहका लगा कऽ हँसल। हँसैत बाजल-

"तँ ई बात छिऐ!"

हम कहलिऐ-

"अहा खुल खोलि कऽ हँसै छी। हमरा मन होइए जे भोकारि पाड़ि कऽ कानए लगी।"

पती बजली-

"ऐमे केकर दोख। केतेक दिन कहलो जे समराट बनि कऽ रहू। मुदा अहा छी जे खादीक धोती, झोलंगाबला कुरता पहिर कन्हापर गमछा लऽ केतौ विदा भऽ जाइ छी। ने दाढ़ी कटबै दी आ नेकेशे सीटै छी। तँ बाबा नैकहत तँ बौआ कहत।"

हम कहलिऐ-

"समाट जे कहै छिऐ से कोनो हम राजा महराजाक बेटा छी जे समाट बनि कऽ रहब।"

तैपर हमर बेटी जे टीशन पढ़ि कऽ आएले छल, बाजल-

"पापा, मम्मी समाट नहि स्मार्टवकहैत अछि।"

तैपर हमर पती बजली-

"हँ, हँ की कहलीही, बुच्ची असमाट?"

हमर बेटी जे आइ.एस-सी.मे पढ़ैत अछि बाजल-

“असमाट नै स्मार्ट”

हम पतीके कहलिऐ-

“अहूँ तँ कखनियो काल कहैत रहै छी जे, आब अहाके के पुछत?”

पती हमर हाथ अपना हाथमे लऽ बजली-

“उ तँ प्यारसँ मजाकमे कहलौ।”

तैपर हम बजलिऐ-

“के कहलक मजाकमे कहलौ छी आकि...।”

बिच्चेमे हमर पती हमर बात कटैत बजली-

“अहाक देह छुबि कऽ कहै छी जे ई गप हम मजाकमे कहलौ। आब मजाकोमे नै कहब। उठू, मुँह-हाथ धोउ ताबत हम चाह बना नेने अबै छी।”

बजलौ-

“अखन हमरा चाह-पान किछु ने सोहाइत अछि।”

तैपर पती तोष दैत बजली-

“अहा एको मिसिया मनमे टेशन नै लिअ। एके मासमे अहाके गोविन्दा जका हीरो बना देब। फेर देखबै जे सोलह सालक लड़िकी अहासँ केहेन बेवहार करैत अछि।”

दुपहाने भने हमर पती हमरा संग केने बजारसँ एली। पहिने डाक्टर रमेश बाबूक क्लीनिकपर अनली। डाक्टर साहैबके हमरा देखबैत हमर पती बजली-

“डाक्टर साहैब, किछुनकर तेना कऽ इलाज करिऔन जे गाल पुआ जका फुलि जाइन।”

तैपर डाक्टर साहैब कहलखिन-

“गाल फुलिबेटा नहि करतैन बल्कि सेब जका लालो भऽ जेतैन मुदा

दवाइक संग खानो-पान नीक हेबाक चाही।”

पती बजली-

“डाक्टर साहैब, अहा जे-जे कहबै से-से खुएबैन मुदा गाल ि‍लबाक चाही।”

डाक्टर साहैब ‍किछु केप्सूल आ तीन ि‍इल टॉ‍िनक ‍िलख, खेनाइमे की-की हेबाक चाही से सभ हमरा पतीके समझा देलथ‍िन।

डाक्टर साहैबक क्‍लि‍नीकसँ ‍िनकैल हम सभ बजार गेलौ। बजारमे एक ‍िकलो मनका, पाच ‍िकलो सेब, पाच ‍िकलो बदाम कीन‍ि पती झोरामे रखली। तेकर बाद क्लॉ‍ि इंपोि‍रयममे जा ि‍वमल सू‍िटंग-स‍िटंग दू-दूटा पैन्ट-शटक कपि‍ सेहो ‍िकनलैन। कपि‍ लऽ कऽ हम सभ मॉडनवटेलरमे जा कऽ नाप दऽ कपि‍ ‍िसबए लेल देि‍लऐ। पती टेलर मास्टरके कहलकैन-

“ि‍स‍िटंग एकदम ठीक-ठाक हेबाक चाही।”

तैपर टेलर मास्टर जवाब देलथ‍िन-

“मैडम, अहा एको रती ि‍चन्ता जु‍िन कर , कपि‍ प‍िहरलाक बाद सर ि‍बल्कुल गोि‍वन्दा जका लगथ‍ि न।”

दजीके कपि‍ देलाक बाद पती हमरा लऽ कऽ हनमुमान रेडीमेडपर एली आ सेल्समेनके हमरा देखबैत कहलथ‍िन-

“‍िहनका लेल दूटा नीक जीन्स पैन्ट आ दूटा टी-शटव‍िनकालू।”

सेल्समेन पुछलकैन-

“की रेन्जमे ‍िनकाली मैडम?”

तैपर पती बजली-

“रेजक ि‍चन्ता नै कर । स्टेनडरसँ स्टेनडर ‍िनकालू।”

सेल्समेन पच्चीस-तीस पीस जीन्स पैन्ट आ पच्चीस तीस पीस टी-शटवहमरा सबहक आगामे पसा‍िर देलक। ओइमे सँ एकटा गे कलर

आ एकटा ब्लू कलरक जीन्स पैन्ट पसिन केलौ। तेनाहिये एकटा लाल रंगक टी-शटवआ दोसर ब्लू रंगपर उज्जर धारीवला टी-शटव पसिन केलौ। चाि हजार टकाक िबल बनल। दोकानदार के िबल भुतान कऽ चश्माक दोकानपर गेलौ। ऐठाम गोल्डेन फेमबला चश्मा खििदली। चश्मा खरीदलाक बाद जूता दोकानपर जा एक जोि खािदम कम्पनीक लेदरबला ि ल जूता आ एक जोि सैन्िडल खरीदली।

ई सभ खरीदलाक बाद पती पुछली- “आर िकछ बाकी तँ नइ रहल ने।”

हम कहिलऐ- “दूटा र माल, दूटा कोठारी गंजी आ एकटा टाई।”

पती बजली- “ठीके, चलू पंसारी रेडीमेड सेन्टरमे ई सभ लऽ लइ छी।”

गंजी, टाइ आ र माल कीनलाक बाद पती हमरा लऽ कऽ मुम्बइ सैलूनमे गेली। ओइठाम पती हजामसँ कहली- “िहनका िफल्मी असटाइलमे बाबरी छािट िदयौन आ केशो रंिग िदयौन।”

जाबे हजाम हमर केश बनौलक ताबेमे पती एकटा नीक रेजर, एक पैकेट टोपाज ब्लेड, बश बा बिढ़या ि म आ ि यर इन लवली ि म सेहो कीिन कऽ आनली।

सभ समान कीनलाक बाद हम सभ मुना होटलमे मासु-भात खेलौ। आ कनीकालक बाद मोसािफर खानामे अराम कऽ चाि बजेमे टेम्पू पकै ि आपस गाम आिब गेलौ।

दोसर िदनसँ भोरमे अढ़ाइ साए गाम सेबक ि लाहार करी। ि ल खेलाक एक घन्टाक पछाइत साए गाम औंकुरल बदामक संग गुि खाइ। ि र एक िगलास दूध पीबी। खानामे पालकक साग सेहो खाइ। राितमे सुतैसँ पिहने मनका देल एक िगलास दूध पीबी। आ

तेकर बाद डाक्टर साहैबक श्चखल केप्सूल आ टॉश्चकक सेहो सेवन करी। पनरह श्चनपर केश रंगी आ तेसरा श्चनपर ािढ़ी बनाबी। जश्चया केतौ जेबाक हुअएतँ जाइसँ पश्चने दाढ़ी बना कऽ ियर इन लवली िम लगौनाइ नश्च श्चसरी।

एक मास बीतैत-बीतै हमर गाल पुआ जका तँ नश्च िूलल मुदा सटकलो नश्चये रहल। श्चनाए गेलौ। चेहरापर रौहानी आश्च गेल। संयोजसँ थश्चयौत सारक श्चआहमे सासुर जेबाक रहए। गेलौ। बश्चयाती जाइ काल जखन ब्लू जीन्स पैन्ट आ ललका टी-शटव पश्चर गोल्डेन फेमबला चश्मा लगा श्चदा भेलौ तँ हमर साश्च जे एम.ए.मे पढ़ै छैि, बजली-

“पाहुन तँ गोश्चन्दा जका लगै छश्चि न।”

तैपर हमर पतीबजली-

“गइ छौरी, एना नश्च हमरा दुल्हाके आँश्च लगाबही।”

हमर मन तँ बुश्च अकासमे उिए लगल। श्चआहसँ पश्चने जखन बरमाला भऽ रहल छल तँ दुल्श्चनक संग चाश्च-पाचटा लिकी सभ बरमालाबला मंचपर ठाढ़ छेली। ओइ चाश्च-पाचटा लिकीमे एकटा सतरह-अठारह बखक बि सुनैर जे एन-मेन करीना कपुर जका लगै छेली ओ एकटकसँ हमरे श्चस श्चहाश्च रहल छेली। जखन हमर आँश्च हुनकर आँश्चसँ श्चलल तँ ओ हँसए लगली।

बरमालाक बाद जखन ओ दुल्श्चनक संग जाए लगली तँ हमरा लग आश्च बजली-

“हेल्लो, िर भेट हएब।”

ई कश्च ओ आगा बश्च गेली।

हमरा भेल जेना लाख टकाक लॉटरी भेट गेल।

शिक्षाक अनुशासन उदेश्य

रामनगर स्थित महाविद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहक आयोजन भेल। तीन दिवसीय कार्यक्रम रहए। पहिल दिन दू बजे दिनमे कार्यक्रमक उदघाटन माननीय शिक्षा मंत्री एवम् कुलपति संयुक्त रूपसँ केलैन। उदघाटनक पछाइत पहिल सतमे कौलेजक इतिहासक संग कौलेजमे की कमी आ की बेसी अछि ऐपर विद्वान-वक्तालोकैन अपन-अपन विचार रखलैन। ई कार्यक्रम साझक पाच बजे धरि चलल।

दोसर सतमे साझक छह बजेसँ कौलेजक छात-छाता नृय, पहसन आ गीतनाद पस्तुत केलैन।

दोसर दिन, दिनक एगारह बजे छात-छाताक बीच भाषण प्रतियोगिताक आयोजन छल। जेकर विषय छेलै- 'लोक किएए पढ़ै-लिखैए, शिक्षाक अनुशासन उदेस की अछि?'

प्रतियोगिताक जूरीमे कौलेजक पाचार्यमहोदय, शिक्षक संघक अध्यक आ छात संघक अध्यक छला।

कार्यक्रममे कौलेजक शिक्षकगण, कर्मचारीगण आ पतकार लोकैन सेहो उपस्थित छला।

अध्यक्षक आदेशसँ प्रतियोगिता पारम्भ कएल गेल। पहिल वक्ताक रूपमे बी.ए. फाइनलमे पढ़ैत छात आलोक ठाढ़ भेला।ओ अपना भाषणमे बजला-

"पूज्यनीय अध्यक महोदय, पूज्यपाद गुरुजन, उपस्थित वुजुर्गआ वुद्धिजीवी लोकैन, छात-छातालोकनि- आजुक समैमे पढ़ाइ-लिखाइक बड़ महत अछि। जँ ई कहल जाए जे शिक्षा रोशनी छी तँए कोनो अनुचित नहि हएत। बिनु पढ़ल-लिखल मनुख आँखि रहितो आन्हर

छैि। शिक्षाक मूल उदेस जानी बनब छी। आ जानी बिना कऽ अपन चिरत निमाण करब थिक। ऐ सन्दभमे पूज्य बापू गाँधीजी कहने छैि- शिक्षाक अन्तिम उदेस चिरत्र निमाण छी। चिरत निमाणक पिति राष्र निमाण करब सेहो छी। और सभसँ पैघ बात ईजे चिरत निमाणक संग मानवक सेवा शिक्षित मनुखक सभसँ पैघ कतव्य अिछ।”

ई किह आलोक बैस जाइ छैि। जोरदार िपिी बजा शोता लोकैन हुनका भाषणक समिन केलिन।

दोसर वक्ताक रपमे अंजली ठाढ़ होइ छैि। अंजली बी.ए. िितीय वषक छाता छैि, मैक पकैि सम्बोधनक पिति अंजली बजै छैि-

“अखन जे पूववक्ता आदरणीय आलोक भाय बजला जे शिक्षाक मूल उदेस चिरतिनमाण, राष्र निमाण ओ मानवक सेवा थिक, हम हुनका िवचारसँ िबल्कुल सहमत नइ छी।”

शोतामे वुिद्जीवी लोकैनक कान जाइत अिछ। अंजली आगा बजै छैि-

“हम तँ कहब शिक्षाक अन्तिक उदेस मात िआ कमेनाइ छी। देखियौ, लोक पिढ़-लिख कऽ पैघ-सँ-पैघ इंजीिनयर, डाक्टर, कलक्टर, एस.पी; बी.डी.ओ; पोिसर, मास्टर निह जािन की की बनै छैि। मुदा िकनकोमे चिरतक निमाण कहा होइ छैन। घूस लऽ कऽ अकूट सम्पैत जमा करए लगै छिथन। डाक्टर सभ कमीशनक लेल अनावश्यक जाच, कमीशनबला दवाई आ िबनु जररतक ऑपरेशन करै छैि। पोिसर सभके डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहा भेटै छैन, मुदा की ओ सभ िनष्ठा पूवक अपन कतव्यक िनवहन नइ करै छैि। डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहाक बादो हुनका सभके सन्तोख कहा छैन जे टयूशनक पाछा बेहाल रहै छैि। हम तँ कहब जे

थ्रदानसेबेइमान आ जे डाक्टरसे डाकू!”
शोता थ्रसस‍ँ जोरदार िपिी बजैत अछि।
अंजली आगू बजै छैि-
“आलोक भाय बाजल छला- राष्ट्रक आमाण...। यौ देखबे करै छिऐ जे पैघ-पैघ इंजीनियर, डाक्टर िआक लेल अपन देश छोिथ थ्रदेश जाइ छैि आ अपन गाम-घर, देश छोिथ थ्रदेशमे बिस जाइ छैि। एकटा बात आलोक भाय आरो बाजल छला जे मानवक सेवा। यौ जे अपन बुढ़ माए-बापक सेवा नहि कऽ रहल छैि ओ आन मनुखक सेवा केना करता। तखन मानवक सेवा केना भेल आकि मानवताक की भेल? हँ, पतीभक्त भऽ सकैत छैि। हमर अनुभव अछि जे थ्रदान लोकैन माए-बापस‍ँ बेसी मोजर पतीके दइ छथिन।”
ई किह अंजली बिस जाइ छैि। हुनका भाषणपर बिीकाल धिर िपिी बजैत रहैत अछि।
तेसर वक्ताक रपमे थ्रवेक ठाढ़ होइत बजला-
“हम पहिलुका दुनू वक्ताक थ्रचारस‍ँ थ्रबल्कुल असहमत छी।”
शोताक कान एकबेर िर ठाढ़ भऽ जाइत अछि।
थ्रवेक आगाँ बजै छैि-
“थ्रक्षाक उदेस चौवनिया नेता थ्रारी केना थ्रक। चौवनियाँ नेताथ्रारी कऽ ब्लौक, िनामे दलाली आ गाम-घरमे झगिा लगा अपन उल्लू सोझ करब आइ-काल्हिक पढ़ल-लिखल लोकक मुख्य काज रहि गेल हेन। जेतए तक पाइ कमेबाक बात अछि तँ ओइ लेल थ्रक्षित भेनाइ जररी नहि छइ। हमरा ओतए एकटा डीलर अछि, हँ-हँ वएह डीलर जे जनताक चाउर-गहुम आ मिटया तेल दइ छै, मोशिकलस‍ँ दसखत करए अबै छै, मुदा िआ कमाइमे बिका-बिका इंजीनियर-डाक्टरक कान काटै छइ। पाच बखवपहिनेस‍ँ बोलेरो गािीपर चढ़ैत

अछि। मनुखोक सेवा करैत अछि। केकरो बेटीक बिआहमे पान-दस लीटर मटिया तेल दऽ दइ छइ। पाच-दस गोरेके चौक-चौराहापर चाहो-पान करा दइते छइ। िगुआमे किछ गोरेके दार ओ पियाइए दइ छइ।"

ई कहि िवेक बैस जाइ छैि। िनको भाषणपर िपिी बजैत अछि। चािम वक्ताक रपमे अलका माइक पकिै छैि। ओ अपना भाषणमे कहै छथि न-

"हम पहिलुका तीनू वक्ताक िचारसँ कनीको सहमत नै छी। यौ आजुक समैमे िाकाक अन्िाम उदेस बिआहमे बेसी-सँ-बेसी दहेज लेब िथक।"

वुद्धिजीवी लोकैन एक-दोसरक मुँह िदस देखए लगला। अलका आगू बजै छैि-

"देिखयौ, डाक्टरक बिआहमे केतेक दहेज भेटै छै, िर इंजीिनयरके देिखयौ, कलक्टर-एस.पी. आ बी.डी.ओ; सी.ओ.क तँ बाते िकछु और छै जे लिथका कौलेजमे पहुँच जाइत अछि बुिझयो हुनकर माए-बापक लौटरी िनकैल जाइत अछि। ओइ लिकाक बिआहमे दस-बीस लाख टका नगद एकटा मोटर साइिकल, दू चािर भिर सोन दहेजक रपमे भेटब आम बात भऽ गेल अछि। तेतबे निह, डाक्टर-इंजीिनयरके िबना चािर चका गािी आ कमतीमे बीस-पच्चीस लाख टका नगदसँ बिआहे ने होइत अछि। अहा कहबै ई तँ लिकाक बात भेल, लिकीके सुनू- पढ़ल-िलखल लिकीक माग बेसी छइ। जे िलखलो पास लिका छै ओहो अपन किनयाँ कमतीमे इन्टर पास तकै छइ। िकए तँ नै बेसी तँ कम-सँ-कम इन्टर पास लिकी मास्टर तँ बिन जाएत। पढ़ल-िलखल लिकीक बिआहमे दहेजोमे िकछु छूट भेटै छइ। यौ हम अपने परिवारक गप कहै छी। हम दू भाइ आ दू बिहन

छी। जेठ दुनू भैया छैि। बिा भैयासँ छोटा भैया एक बखक छोट छैि। बिका भैया छठा तक पढ़ खेती गृहस्तीक काज देखए लगला। छोटका भैया कौलेजमे पढ़ै रहथिन। बिका भैयापर जे बरतुहार सभ आबथिन आ हुनका सभके जखन पता चलैन जे लिका छठे धि पढ़ल छै तँ ओ सभ जे आपस गाम जाथि से िर घुि कऽ नै आबैि। मुदा छोटका भैयाक बिआहक लेल बरतुहारक लाइन लागल रहए। बिका भैयाक बिआहमे बाबूजीके अपना तरिसँ खचव करए पिल रहैन। तँए हम कहै छी जे बाकाक उदेस दहेज लेब छी आर किछु नि।”

ई कि ओ बैस जाइ छैि। हुनको भाषणपर बिीकाल धि िपिी बजैत रहल।

भाषण पियोिताक पिम पुरस्कार अलकाके भेटलैन। हम सोचै रही जे पिम पुरस्कार आलोक नि तँ अंजलीके भेटतैन। मुदा से नि भेल। हम छगुन्तामे रही। सोचैतरही पाचायवमहोदय भेटता तँ पुछबैन। संयोग नीक बैसल। एकटा किा गोष्ठीमे पाचायवमहोदय भेटला। हम पुछि देलाऐन-

“शीमान्, स्वणवजयन्ती समारोहमे कोन आधारपर अलकाके पिम पुरस्कार देलाऐन?”

पाचायवमहोदय गम्भीर होइत बजला-

“बाकक संघक अध्यक आ छात संघक अध्यकक विचार पिम पुरस्कार आलोके देबाक रहैन, मुदा हम अि गेलाऐ आ हमरा आगा हुनका दुनू गोरेके किछु ने चललैन।”

हम पुछलयैन-

“अपने कोन बिन्दुपर अि गेलाऐ?”

तैपर ओ जवाब देलैन-

"हमरा अपन बेटाक ब्बिआह मोन पड़ि गेल रहए, जखन हमरा बेटाक ब्बिआहक लेल बरतुहार एला तँ हम स्पष्ट कहि देलिऐन- हमरा बेटाक इंजीनियर बनेबामे बारह लाख टाका खचवअलछि। तँए ओकरा ब्बिआहमे कमतीमे पच्चीस लाख टका लेब। लकिीबला सहषवपच्चीस लाख टका दइले तैयार भऽ गेल छला।"

कठही साइकिल

“कतेक दिन ऐ पुरनका कठही साइकिलपर चढ़बह। कहह दुनियाँ केतए-सँ-केतए चलि गेल आ तूँ बीस-बाइस बरखक ऐ पुरनका साइकिलपर चढ़ै छह!” -गेनालाल धनियालालके कहलकैन।
धनियालाल हँसैत बजला-
“हौ भाय, तोहर बेटा सभ जे कमाइ छह ने, तँए तोरा हबाइयरी सुझै छह।”
तैपर गेनालाल बजला-
“आ तोरा जे कोचिंग सेन्टर आ बच्चा सभके टीशन पढ़ेलासँ आठ-दस हजारक महिनवारी आमदनी होइ छह से की करै छहक। कमतीमे एकटा सकेण्डो हेण्ड फटफटिया कीनि कऽ चढ़ह। हौ मरबह तँ सभ छह लऽ कऽ दुनियाँसँ नै जेबह। जेतबे सुख-मौज ऐ धरतीपर करबह ओतबे संग जेतह।”
धनियालाल बजला-
“हौ भाय, अखन हमरा बड़ समस्या अछि तँए अखन हमरा अही साइकिलपर चढ़ह दएह।”
चाहक दोकानदारो दुनू संगीक गप सुनैत रहए ओ बाजल-
“मरदे ऐ लोहाक साइकिलके कठही साइकिल किए कहै छिऐ?”
तैपर गेनालाल बजला-
“ऐ साइकिलमे पाइडिल देखै छिऐ, काठक छी आ ऐ साइकिलपर जखन चढ़बै तँ जहिना कठही बैलगाड़ीक धुरामे सोन-तेल नै रहलापर चलैकाल को-काए, पो-पाएक अबाज निकलै छै तेनाहिये ऐ साइकिलसँ अबाज निकलै छइ।”
चाहक दोकनदार पुछलकैन-

"से अहा केना बुझलिऐ?"

गेनालाल जवाब देलखिन-

"एक दिन हम आमक्की बसेसँ गेल रही। एक बोरा नोन कीनि अही साइकिलपर राखि बस स्टैण्डपर गेल रही। बस स्टैण्डपर नोन रखि जखन साइकिल पहुँचाबए धनयालालक कोचिंग सेन्टरपर गेलौ तँ बुझाएल जे ई लोहाक नहि, काठक साइकिल छी। तहियेसँ हम एकरा कठही साइकिल कहै छिऐ।"

धनयालाल बजला-

"हौ भाय कनेको पलखैत नै भेटए जे साइकिलके भंगठियो करा लेब। दू दिन भंगठी करैले मिस्त्री ओतए साइकिल छोड़ि देलिऐ मुदा साझमे जखन साइकिल लाबए गेलौ तँ साइकिल ओहिनाक-ओहिना राखल।"

तैपर गेनालाल हँसैत कहलकैन-

"धुरवबुधि, तोरा कपारमे सुख लिखले ने छौ। कमा-कमा पाइ बैकमे जमा कर मुदा भोग तँ तोरा बेटाके लिखल छौ।"

धनयालाल हँसैत जवाब देलखिन-

"ठीके कहलीही भाय, हमरा भागमे सुख नै लिखल अछि।"

ई गप-सप्प गेनालाल आ धनयालालक बीच भूतहा चौकपर चाहक दोकानमे होइत रहइ।

गेनालाल आ धनयालाल हाइ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक संगी। गेनालालक घर झटकी गाममे जखैन कि धनयालालक घर नवटोली गाममे। दुनू गोरेक छठा किलाससँ एगारहम किलास धरि बनगामा हाइ स्कूलमे संगे पढ़लै। संगे मैट्रिक पास केलैन। मैट्रिक पास केला पछाइत दुनू गोरे आमक्की कौलेजमे इन्टरमे नाओं लिखौलैन। आमक्की कौलेजमे बी.ए. धरि दुनू गोरे संगे पढ़ला। गेनालाल पास

कोसक थदाि छला जखैन थक थमयालाल अंगेजी आनसक छात। बी.ए. पास केला पछाइत गेनालाल नौकरीक लेल पथयास करए लगला।मुदा तीन बखवधथ पथयास केला बादो जखन नौकरी नथ भेलैन तँ खेती-गृहस्तीमे भीर गेला। ओ अपना बापक एकलौता बेटा। पाच थघा जोतसीम जमीनक माथक। ऊपरसँ गाछ-कलम-बास-पोखैर सभ थकछु। नौकरी नथयो भेलापर गुजर-बसरमे कोनो थकत नथ होइन। गेनालालके दूटा बेटेटा। जे मैथक केला पछाइत थल्लीमे काज करै छैन आ दरमाहा भेटलापर अपन खचा राथ बापक बैक-खातामे पठा दइ छैन। बेटा सबहक कमाइ आ खेतक उपजासँ गेनालाल आनदपूवक थमनगी थतबै छैि। सुखक थमनगी थतबैक कारण ई जे पथवार छोट छैन। दुनू बेटा अखन अथवाथते छैन जे थल्ली खटै छैन। घरपर मात अपने आ पत्नी। खेतो सभ मनकूतपर लगौने छैि। हँ, दूध खाइ वास्ते एकटा दोगला गाए जर र पोसने छैि।

गेनालाल अपना बेटा सभके मैथकसँ आगा ऐ दुआरे ने पढ़ौलथन जे पढ़ल-थखल आदमीके नौकरी नै भेटलापर समाजमे जे दुरगैत होइए से देखैत छथिन। जखन थक कम्मो पढ़ल-थखल लोक थल्ली, मुम्बइ, कलकतामे पाइवेटो नौकरी कऽ शानसँ अपन थमनगी थतबैत अथ। मुदा थमयालालक सोच ऐसँ थलकुल थान छैन। हुनकर कहब ई जे जइ पढ़ल-थखल बेकतीमे टाइलेन्ट रहत ओ थदाििके टयूशनो पढ़ा अपन थमनगी शानसँ चलौत। पटनामे एकसँ एक कोथंग संस्ाि अथ जेकर आमदनी लाखोमे अथ।

थमयालाल सीमान्त थकसानक बेटा। हुनका बाबूजीके मातअढ़ाइ बीघा खेत। थमयालाल दू भाइ। जेठ थमयालाल अपने आ छोट पनालाल। पनालाल जखन मैथकमे पढ़ैत रहैि तखने हुनकर थताजी परलोक

चल गेला। मुदा पनालालके श्चताजीक स्गवासक बादो हुनका पढ़ाइ-श्चखाइमे कोनो श्चकत नै भेलैन। जेठ भाय श्चयालाल टयूशन पढ़ा छोट भाएके माने पनालालके एम.ए. धश्च पढ़ौलकैन। एम.ए. पास केलाक तीश्चये मासक पेसतर पनालालक बहाली श्चाक्र श्चतक पदपर भऽ गेलैन।श्चाक्र श्चतमे बहाल भेलाक दू मासक भीतर पनालालक श्चआह एकटा डीलरक बेटीसँ भेलैन।

श्चयालाल अंगेजी आनसक संग बी.ए. केला पछाइत नौकरीक लेल का ी पश्चयास केलश्चन मुदा स लता नइ भेटलैन। जइ समैमे सरकार श्चाक्र श्चतक बहाली केलक ओइ समैमे श्चयालालक उमेर चालीस पार कऽ गेल रहैन। तँए श्चाक्र श्चतमे बहाली होइसँ वंश्चत रश्च गेला।

जखन सरकार श्चाक्र-श्चतके मानदेय पनरह साएसँ बढ़ा कऽ चाश्च हजार कऽ देलकैन आ एगारह मासक नौकरीके साश्च बखक उमर धश्च स ायी कऽ देलकैन तँ पनालालक पती अपना दुल ाके श्चखा-पढ़ा पश्चवारमे भीन-श्चनौज करा देलकैन।

जखैन श्चयालाल आ पनालालमे भीन-श्चनौजीभऽ गेलैन तँ श्चयालालके एक श्चघा जोतसीम खेत आर घरा ी आ कलम-गाछी श्चला कऽ पाच कटा श्चसा भेल रहैन। हुनकर पाच गोरेक पश्चवार। जेठ दूटा बेटी तैपर सँ एकटा बेटा आ दू परानी अपने। एक श्चघा जोतसीम खेतसँ जखन पश्चवारक गुजर-बसरमे कश्चनाइ होमए लगलैन तँ श्चयालाल टयूशन पढ़ाबैपर बेसी जोर देलश्चन। ओना तँ दस बखवपश्चनश्चसँ श्चमश्चीमे एकटा कोश्चंग संस् ामे अंगेजी पढ़बैत रहै । कोश्चग आ टयूशनक कमाइसँ श्चयालाल अपन दुनू बेटीके पढ़ा-श्चखा कऽ श्चआह कऽ देलश्चन। दुनू बेश्चयो आ जमाइयो टी.इ.टी. पास कऽ श्चाक्कमे बहाल छैन। एकटा बेटाके नीक पढ़ाइ खाश्चर पटना बी.एन.कौलेजमे

नाओं श्चखौने छेलश्वन। बेटो श्चवेक पढ़ैमे चन्सगर। ओ पटना श्चशश्चदालयसँ मैश्चलीमे एम.ए. कऽ पश्चयोश्चाता परीक्षक तैयारीमे लागल छश्च न।

आइ िर गेनालालक भेट भूतहा चौकपर चाहक दोकानपर श्चयालालसँ भऽ गेल। गेनालाल चाहक दोकानपर पश्चनेसँ बैसल रहैि। जखन श्चयालाल श्चमत्तीसँ टीशन पढ़ा भूतहा चौकपर एला तँ चाह पीबैले चाहक दोकानक आगूमे साइश्चकल ठाढ़ कश्चते रहैि श्चक गेनालालक नजैर श्चयालालपर पिलैन, ओ बजला-

"कह भाय, समाचार। आबो धश्च वएह पुरनका साइश्चकलपर चढ़ै छे। रौ पूरा दुश्चया सुधैर जेतै मुदा तूँ नश्च सुधरबे। हे मश्चहे ने तँ सभ श्चकछ लाश्च कऽ नेने जइहे। पचपन-छप्पनक उमेरमे ऐ कठही साइश्चकलपर चढ़ै छे। रौ तोरा बुझाएब आ श्चदल्ली पएरे जाएब बरबैर अश्च। आ-आ चाह पीब ले।"

श्चयालाल हँसैत कहलकैन-

"तोहर जे बेटा कमा-कमा पाइ पठा दइ छौ ने तँए तो मोछमे घी लगबै छे।"

तैपर गेनालाल बजला-

"आब तँ तोरो बेटाक तँ पढ़ाइ खतम भऽ गेल छौ। तो तँ तेसरे साल कहने रहँ जे श्चवेक पटना श्चशश्चदालयसँ एम.ए.मे िस्ट क्लाससँ उतीणवभेल हेन।"

ई गप-सप्प होइते रहए श्चक एकटा स्कारश्चयो गाि आश्च चाह दोकानक बगलमे र कल। डाइवर गाि सँ श्चकैल बीचला गेट खोललक। एकटा युवक गाि सँ श्चच्चा उतरल। ओ पैन्ट-काटश्चटाइ लगौने रहए। जखने ओइ युवकक नजैर श्चयालालपर गेलैन ओ दुनू हाि पएर छुश्च हुनका गोर लगलकैन।

"बौआ विवेक! अच्छा काकाके गोर लगहुन।" गेनालाल दिस इशारा करैत श्यामलाल बजला।

विवेक गेनालालोके पएर छुबि गोर लगलकैन आ बजला-

"बाबूजी, हमर चौकि ट्रेनिंग खतम भऽ गेल। परसू बीरपुर डी.एस.पी. पदपर योगदान केलौ हेन। काल्हि पटनामे मीटिंग छल। अखन पटनेसँ बीरपुर जा रहल छी। ऐ ठाम एलौ तँ मनमे भेल भऽ सकैए बाबूजी आमक गाछीसँ घूमल हेता।"

गेनालालक बोलती बन्द। ओ कखनो श्यामलालके देखैथि तँ कखनो विवेकके आ कखनो ओइ स्कारपियो गाड़ीके।

श्यामलाल विवेकसँ पुछलखिन-

"माएसँ आशीरबाद लेबए कहिया अबै छहक।"

तैपर विवेक कहलकैन-

"मनमे तँ रहए जे पटनासँ घुमतीमे अहा सभसँ आशीवाद लऽ लेब मुदा दरभंगेमे रही तँ बीरपुरक एस.डी.ओ. साहैब फोन केलैन। ओ कहलैन जेतेक जल्दी बीरपुर पहुँच सकी पहुँचू। तँए बीरपुर जल्दी पहुँचब जररी भऽ गेल। रवि दिन गाम आबि रहल छी।"

ई कहि ओ श्यामलाल आ गेनालालके गोर लागि गाड़ीमे बैसि कऽ चलि गेला।

गेनालाल बजला-

"भाय श्यामलाल, तोहर कठही साइकिलक मान रहि गेलौ। तोहर बेटा पढ़ि-लिखि कऽ डी.एस.पी. भऽ गेलौ। वाह भाइ वाह!"

तैपर श्यामलाल बजला-

"भाय हमर बेटा कि तोहर बेटा नइ छियौ।"

ई सुनि गेनालाल, श्यामलालके भरि पाज कऽ पकैड़ छातीसँ लगा लेलखिन।

लघु कथा- हमर पतीक मनोरथ

हम अस्पतालमे डाक्टर रमेश बाबूक क्लिनिकपर बैसल रही। डाक्टर साहैब कोठरीमे रोगी सभके जाच कऽ रहल छला। कोठरीक आगा राजदेव बाबू, रामविलास बाबू आ हम बैस कऽ मैथिली साहित्यपर चचाकऽ रहल छेलौ कि हमर मोबाइलक घन्टी बजल।
जेबीसँ मोबाइल निकालि नम्बर देखलौ तँ मालूम भेल हमर पतीक फोन छी। हम मने-मन भनभनेलौ-
“आबि गेल आफत...!”
एक मन भेल जे फोन काटि दी, फेर मन भेल जे रिसिभे ने करी। मुदा डर ईहो रहए जे जँ फोन रिसिभ नै करब तँ गामपर पहुँचते देरी महाभारत शुरू भऽ जाएत आ रातिमे फेरो मच्छर सभके हमर भरपूर खून पीबाक अवसर भेट जेतइ। यौ बाबू की करितौ हारि कऽ मोबाइलक हरियरका बटम टीपैत बजलौ-
“हेलौ, की कहै छी?”
ओम्हरसँ पतीक अवाज आएल-
“फोन किए ने उठबैत रहिऐ। की करै छेलिऐ?”
बजलौ-
“फोन तँ उठेबे केलौ, हँ! पहिलुक घन्टीपर नहि उठा चारिम घन्टीपर उठेलौ। अच्छा कहू की हुकुम?”
ओम्हरसँ पती बजली-
“दूटा बेड पकौड़ि नेने आएब। आ हँ, पोलीथिनमे चटनी सेहो लऽ लेब।”
कहलयैन-
“बेड पकौड़ि तँ गरमे खाइमे नीक लगै छै, ठंढ़मे तँ कोनो सुआदे

ने बुझाएत।”

ओ बजली-

“अहा नेने आउ ने चूल्ही पजाबै हम ताबापर सेक लेब।”

ई कहैत ओ िनि काढ़ि देली।

हमर मुँह लटैक गेल। कहिए तँ जेबीमे एकोटा छेदामो ने रहए। बीसटा टका जे रखने रही ओ साइकिलक टयूब पंचरमे खचर्च भऽ गेल रहए। सोचमे पड़ि गेलौं। सोची केकरासँ मुँह छोड़ी। जं केकरोसँ मुँह छोड़ी आजँ पाइ नै देत तब तँ अपनेसनक मुँह हएत आ तनावसँ बढ़ि जाएत। फिर सोची जँ पतीक फिरमाइस पूरा कऽ कऽ गामपर नै जाएब तँ रातिमे फेरो दलानेपर सूतए पड़त आ सूतब की कपार, भरि राति मच्दर हौकैत परात करए पड़त। हमरा दस बरखक पहिलुका घटना मोन पड़ि गेल।

श्यामलीमे सकर्कस आएल रहइ। गामक जनीजाति सभ सकर्कस देखबाक पोगाम बनौलैन। हुनका सबहकपोगाम सौझुका 6 बजसे 9 बजेक शो देखबाक छेलैन। मुदा गामपर सँ विदा हेती दुइये बजे, किएक तँ पहिने जेती तखन बजारमेमे अल्ता, टिकुली, श्यामस्त्रक स्नो-पोडर, पवन टोकी कानमेहक, नाकमेहक आ केशमेहक कीनती...।

हमरो पतीके मालूम भेलैन। ओ जलखैये करैकाल हमरा कहली-

“यौ सुनै छिऐ?”

हम कहलयैन-

“कोनो बहिर कानमे ठेकी नेने छी जे नै सुनब। बाजू ने की कहै छी?”

तैपर पती बजली-

“अँइ यौ, दार पीब कऽ आएल छी की जे एना बजै छी?”

हम कहलयैन-

“से खून कख्या हेतै जे पुतोहु कहत ..... । ऐठाम तँ चाह पीबैले पाइयेने अछि आ अहाके दार सुझैत अछि! कहू ने की कहै छी।”
पती बजली-
“गामक लोक सभ सकस देखैले जाइत अछि।”
तैपर बजलौ-
“ऐमे की लगै छइ। पचचीस टका टकटमे आ पचचीस टकाक चाह-नाश्ता। पचचीस टकाक व्योत कख खाअ। नइ होइए तँ तीन फकलो चीकने बान्ह लेब। ओकरा पल्लपर बेच लेब, पाइ भऽ जाएत।”
ई बात सुनाते-देरी पतीक पारा चढ़ि गेलैन। ओ तामसे भेर भऽ गेली। बजली-
“अँइ! हम थाकना लऽ कऽ सकस देखए जाएब! नै जाएब! हमर कपारे जरल अछि जे अहा संग बआहभेल। ने कख्यो सनेमा आ ने कख्यो सकस देखेलौ। ने स्नो, ने पाउडर, ने नाकमेहक, ने कानमेहक, ने काजर, ने ठोर रंगा, ने सेनुर आ ने टकुली कख्यो अहाके जुलि। अहीठाम मैलावाली छै, एकर दुल्हा ओकरा रंग-रंगक साबुन, तेल आ श्रंगारक चीज-वौस आना-आना दइ छइ। जखनी घर बलाके जे कहलक तखनी घरबला हजूरमे रहै छइ। की हमरा कोनो मनोरि नै छइ। अहाबुते कख्यो हमर कोनो मनोरि पुरा भेल।”
ई कहैत ओ कानए लगली। हम छगुन्तामे पड़ि गेलौ। हम कहलयैन-
“मैलाववालीक घरबला मास्टरी करै छइ। तीस-पैतीस हजार टका मनना कमाइ छै, आ अहाक घरबला कएटा पाइ कमाइए। अच्छा हमही दोकानसँ थाकना बेच कऽ आना दइ छी, अहा सकस देख आएब।”

तैपर पती बजली-

“आमवाली बजार जाएबतँ सकबोटा देखब आ कछु कछु शृंगारो-पेटारोक चीज कीनब। हमरा कमतीमे दू साए टका चाही।”

हम कहलयैन-

“अही कहू जे अखन हाथिमे एकोटा टका नै अछि तखन दू साए टका केतएसँ देब। के देत दू साए टका। जँ अहाँ या पाइक ओरियान हएत तँ अहाँ या आमवाली जा कऽ शृंगारक समान लऽ आनब। आइ सकबसटा देख आबू। हम दोकानसँ थकना बेचि कऽ पच्चीसटा टका आनि दइ छी।”

तैपर पती बजली-

“हम जाएब तँ दू साए टका लऽ कऽ नहि तँ नै जाएब।”

हम केतेको गोरेसँ दू साए टका मंगलौ मुदा कियो ने देलक। दोकानमे थकना बेच पच्चास टका आनि पतीके देलिऐन तँ ओ फिआके फिक देलक आ बाजल-

“दू बजे लोक सभ सकबस देखए चलदा हएत। अहा जँ दू बजे तक दू साए टका आनि कऽ देब तब तँ बडड बढ़ियाँ या नै तँ अहा जानी आ आ अहाक काज जानए।”

हम बडड परियास केलौ मुदा कियो मुँहपर माछी नै बैसए देलक। पतीक तुगलका फिरमान हमरा बुते पूरा कएल नै भेल।

स्नान कऽ खेनाइ खा मैलामवाली लग गेलौ आ कहलयैन-

“भौजी दू साए टकाक व्योत कऽ दिअ। बडड जररी अछि।”

तैपर मैलामवाली कहली-

“हमरा लग पाचे साए टका अछि आ आमवाली सकबस देखए जाइ छी। बजारमे चूड़ी पहिरब आ कछु शृंगारक समान सेहो कीनब। हमरा तँ पाच साए टकासँ पारो ने लागत तँ अहाके केना देब।”

हम अपन सनक मुँह लऽ कऽ अँगना एलौ आ बोलीमे हजार मन श्मशी घोरैत पतीक हाि अपना हािमे लऽ कऽ कहश्मऐ-
“हे समूचा गाम घूश्म एलौ मुदा श्वकयो टका नै देलक। केकरा-केकरा लग ने मुँह छोिलौ मुदा श्वकयो मुँहपर माछी नइ बैसए देलक। से नै तँ अहा ई पच्चास टका लऽ कऽ सर्कस देख आउ, जखन पाइक व्योत भऽ जाएत तँ दुनू गोरे ि र श्मामली चलब, श्मनेमा देखब आ अहाश्मंगारोक समान कीश्म लेब।”
तैपर पती हमर हाि अपना हािसँ झटकैत बजली-
“ईह! बेदरा जका हमर परताए एला हेन! जाउ राखु अपन पचसटकही। नै हम सकश्म देखै छी।”
हम केतबो खुशामद केश्मऐन मुदा ओ टस-सँ-मस नै भेली। आ ने सकश्मे देखए गेली। हमरो ब्लडपेसर बश्च़ गेल। मुदा श्वमागके स्थ्रिर रखैत चौकपर चश्म गेलौ।
एकेबेर आठ बजे राश्ममे चौकपर सँ एलौ। अँगना गेलौ तँ चूल्हा-चौका सभ बन रहए आ पती कोप भवनमे जा कऽ सूतल छेली। भीतरसँ श्वलैया लगा नेने छली। हम केबािलग जा कऽ केतबो हाक देश्मऐमुदा ने ओ केबाि खोलली आ ने श्वकछु बजबे केलीह। सभसँ मोश्श्वकल भेल जे राश्ममे सूतब केतए। की कश्वतौ हाश्व कऽ दलानपर जा अखि मोिीक पश्चयापर सूतलौ। सूतब की दैवक कपार भश्व राश्मतौनीसँ मच्छर हौकैत परात केलौ।
मनमे पतीक पश्म पूरा रोष भऽ गेल रहए। सोचलौ ओ पती की जे पश्माक दुख नै बुझलक..!
श्वआहमे एकटा चश्वआना भश्व सोनाक औंठी देने रहए। वएह औंठी नरश्चया बजारमे बन्हकी लगा श्वल्ली श्वदा भऽ गेलौ। श्वल्ली जा स्पोटमे पाच हजार टका मश्चलापर काज पकिलौ। आठ घन्टाक

डयूटी रहए। चारि घन्टा ओभर टाइमो खटी। ख-पीब कऽ आ रप भाउा दऽ कऽ चारि हजार टका बँचैत रहए।

छह मास धरि काज केला पछाइत लगधक पच्चीस हजार टका जमा भेल। एक दिन ािनसँ खबर भेल जे माए बीमार अछि। जँए छी तँए चलि जाउ।

हम दिल्ली बजारमे पती-ले बेलाउर, स्नो, पाउडर, लाहबला चूिी, रोल्ड-गोल्ड नेकलस, कानक बाली, नाकमेहक नथिया, कानमेहक झुमका, गमकौआ साबून,ठोररंगा, पैररंगा आ लबन टोकी सभ श्रृंगारक चीज वौस कीनलौ। हँ, कपाि नै कीनने रही। किएए तँ हमर कीनलाहाकपाि हमरा पतीके पसिने नहि होइ छैन तँए सोचलौ दू हजार टका दऽ देबै अपन आमदनी जा खादि वस्तालयमे मनपसन्द कपाि कीनि लेती।

एकटा अटैचीमे सभ समान राखि गाम विदा भेलौ। दरभंगावाली सुपर ाास्ट रेनमे बैसलौ। केतेको पुरयास केलाक बादो रिजवेशन नै भेल छल मुदा जेनरले बौगीमे खिाकी लग एकटा सीट भेट गेल रहए।

अटैचीके बापर रखि चौकना छेलौ जे किनयो चोरा ने लिअए। भरि राति सुतबो ने केलौ। मुदा बनारस अबैत-अबैत आँखि लागि गेल। सपनामे देखलिऐ हमर पती अपना आँगनमे सभ चीज-वौस रखि चाहाथि रहली अछि। ओ बडड खुश अछि। हमर हाि अपना हािमे रखैत बाजि रहल अछि- आइ हमर मनोरि पूरा भऽ गेल। नीन टुटल तँ देखलिऐ एकटा बीस-बाइस बखक अन्हा सुनैर लािकी हमरा कहि रहल छेली- कनेक हमरो बैसऽ दिअ प्लीज।

हम पहिने अटैचीदिस देखलौ तँ ओ सुरक्षित बुझि पाि। तेकर बाद ओइ लािकी दिस धियानसँ देखलौ तँ ओ कोनो ाािल्मी दुनियाक

हीरोइन जका बुझ्झ पलिी। ताबेमे ओ लकिी िर बाजल-
“प्लीज कनेके श्चसकु ने।”
ओ गजब सुनैर छेली। अपना आपके भाग्यशाली बुझैत हम श्चसैक गेलौ। ओ लउकी बैस गेली। भाग्यशाली ई बुझलौ जे एहेन श्चव्य नवयौवना हमरा लगमे बैसली। हुनका शरीरसँ मधुर-मधुर सुगन्ध हमरा मदहोश करए लगल। ओ लउकी पसव खोललक आ एकटा पश्चाका श्चाकाश्च पढ़ए लगल। हमर आँश्च हुनकर सुन्दरता श्चाहारएलगल। एकदम गोर वणव़ भरल-पूरल देह। सेव जकागाल। श्चरण जका कजरारी आँश्च। नाश्चनसन केश जे खुजले छल, कानमे तीन स्टेपबला झुमका,नाकमे हीरा जलि छक, समतोलाक िारा सन ठोर जैपर हल्का लाल रंगक श्चश्चस्श्चक लागल। श्चल्कुल पारदशी सािी आ ब्लौज पश्चरने। सािीक भीतरसँ पेटीकोट आ ब्लौजक भीरसँ अधोवस्त पश्चरने छेली से झलाक-झलाक देखाइत। पैरमे जे मेहदी(आरत)लगौने रहए ओ ओकरा पैरकसुन्दरतामेचाश्चचान लगबैत रहइ। ब्लौज तेतेककसल जे ओकर जवानीक छातीक एक चौाइभागबाहरे। जेना देखश्चाहारके जवानीक टेलर देखबैत...।
हम ओइ लकिीसँ पुछश्चाऐ-
“रेन केतए पहुँचल अश्च?”
ओ लकिी जवाब देलक-
“मुजफ्‍रपुरसँ आगा श्चाकैल गेल अश्च। केतए उतरब।”
हमरा मुहसँ अनायास श्चाकैल गेल-
“दरभंगा।”
तैपर ओ बजली-
“हमहूँ दरभंगे उतरब। अहा श्चल्लीसँ अबै छी की?” ओ िर पुछलक।

हमरा िर बजा गेल-

“हँ दिल्लीसँ अबै छी।”

ई कहैत हम खिड़कीसँ बाहर मकइके िसल देखए लगलौ। ओ लिकी हमरा देहमे सटि गेली। हमरा जेना 440 वोल्ट बिजलीक झटा लगल, तहिना बुझना गेल। मुदा डरो हुअए तँए कनी अपनाके सकोरि लेलौ आ िि ओइ लिकीसँ देह अलग कऽ लेलौ। सोचलौ की जानि की भऽ जाए, किएक तँ कहल गेल छै-‘त्रियाचरित्रम् देवो ने जानए..।’

बजलौ-

“मेडब कनेक हटिये कऽ बैसू।”

ओ लिकी हमरा दिस तकैत बजली-

“की यौ बिआह भेल अछि की नहि।”

हम सोचलौ, लिकी ई गप किए पुछैए! कहलिऐ-

“हँ बिआह तँ भऽ गेल अछि।”

ओ िर पुछलक-

“बाल-बच्चा अछि की?”

हमरा बजा गेल-

“हँ एकटा बेटीअछि।”

तैपर ओ पुछलक-

“अपन छी की अनकर?”

आब तँ बुझू जे हमरा होश उड़ि गेल। मनमे बहुत बात आएल। मुदा डर हुअए जे किछु ऊँच-नीच गप बजा गेल आ जँ ई लिकी कोनो अबलट लगा दिए तखन तँ बिका पटिपैटमे पड़ि जाएब आ सभ प्रतिष्ठा माटिमे चलि जाएत। मुदा तैयो हम पुछलिऐ-

“मेडम एना किए बजै छिऐ।”

तैपर ओ कहलक-

“अहाँके देखै छी जे मौगीक महक लगैए। पश्नायो हेती तं हमरासँ सुनैर तँ नश्वये हेती।”

हम सकदम्म भऽ गेलौ। िर वएह पुछलक-

“आश्क अहाक श्वआह हेमामाश्नीक बश्नसँ भेल अश्छ?”

हम बजलौ-

“नइ जाश्न मेडम श्कएक अहा हमरा एहेन-एहेन बात कहै छी।”

तैपर ओ लिकी बजली-

“अच्छा छोि ऐ बात सभके आरामसँ चलू।”

ई कश्ह ओ िर हमरा देहसँ सश्ट गेल। डर तँ हेबे करए मुदा अपना-आपके बडड सौभाग्यशाली सेहो बुझै रही जे एहेन श्दव्य लिकीक साश्नाध्य पाप्त भऽ रहल अश्छ।

िकिालक बाद ओ लिकी अपन हािक पश्नाका हमरा दैत बजली-

“श्नअ पि अहा बोर भऽ रहल छी।”

हम पश्नाका पकि़त पुछश्नाऐ-

“आ अहा?”

जवाब देली-

“हम गृहशोभा पढ़ै छी।

हम पश्नाकाक पना उलटाबए लगलौ। पश्नाकामे नीक-नीक लिकी सबहक अदबाग्न िटोसभ रहए। एकटा कि रहै- लबली हेमा। कि बडड रामोन्श्चक रहए। हम ओइ किमे हेरा गेलौ। ताबेमे रेन समस्तीपुर टीशनपर पहुँच गेल छल। रेन रकल। एकटा चाहबला हमरा वौगीमे चश्ढ़ अवाज देलक-

“चाह गरम! गरम चाह..!”

ओ लउकी चाहबला श्दस तकैत बजली-

“ऐ चाहबला दो कप चाह देना।”

हम मने-मन सोची जे दू कप चाह कीकरती। िर मनमे भेल जे भऽ सकैए जे एक कप चाहसँ छाक नै भरैत होइ।

चाहबला दू कप चाह ओइ लिकीके पकि देलकै। एकटा कम हमरा िदस बढ़बैत ओ लिकी बजली-

“िलअ चाह पीबू। एतेक भीिमे अहा अपना िदकत सिह हमरा जगह देलौ।”

हम कहिलऐ-

“धन्यवाद। अहा पीबू हम चाहबलासँ लऽ लइ छी।”

तैपर ओ बजली-

“यौ अहा हमर पाइक चाह नै पीयब तँ अही िदयौ िआ, हमही अहा पाइक चाह पीब। अहा ने छुबा जाएब मुदा हम नै छुबाएब।”

हम ओइ लिकीक हािसँ चाह पकित जेबीसँ दसटककी िाकािल चाहबला िदस बढ़ा देिलऐ। ओ लिकी अपना पससँ चािटा मोट-मोट िबस्कुट िाकािल दूटा िबस्कुट हमरा िदस बढ़बैत बाजल-

“िलअ िबस्कुटक संग चाहक मजा िलअ।”

हम कहिलऐ-

“धन्यवाद। अहा खाउ।”

तैपर ओ बाजल-

“की होइए जे ई छौरी िबस्कुट िखया कऽ सभटा िआ-कौरी छीिन लेत। यौ हम एहेन नइ छी। हम िमथला िवश्विवदालयमे गृह िवजानक पी.जी िाइनलक छाता छी।”

की किहतौ। ओकरा हािसँ िबस्कुट लऽ चाहमे डुबा-डुबा खाए लगलौ।

िबस्कुट खेलाक िकछे िमनटमे हमरा नीन आबए लगल। आँिख खुजल

तँ लहेरियासराय अस्पतालमे बेडपर पिल रही। एकटा नर्स हमरा मुँहपर पानिक छीटा मारैत रहए। ने रेन रहए आ ने ओ लकिी। हमरा चीज-वौससँ भरल अपन अटैची मोन पिल। हम बजलौ-

“हमर अटैची?”

तैपर ओ नर्स बजली-

“आपको दरभंगा रेलबे स्टेशपर बेहोशी की हालत मे उतारा गया है। पूरा बौगी खाली ि। आप अपने सीटपर बिल्कुल बेहोश ि। चाह घन्टा उपचार के बाद आपको होश आया है।”

हम अपन जीन्स पैन्टक जेबी टटौललौ तँ िआबला पर्स गायब रहए। हम बजलौ-

“हाय रे हमर पतीक मनोरि।”

ई कहैत हम िर बेहोश भऽ गेलौ।

८

लघु कथा- चन्द्रशेखर ककाक ब्लडपेसर

चन्द्रशेखर काकासँ भेट करैले मन औनाइत रहए। हुनका भेट भेना एक माससँ बेसीए भऽ गेल छल। किएक तँ हमहूँ धनकटनी आ गहुम बाउग करबामे व्यस्त छेलौं। गहुम बाउगसँ फुरसत भेटल तँ नारक टाल लगाएब, धान दौनी कराएब, एकटा ने एकटा काज लगले रहल। दौन-दौगोनी होइत-होइत गहुम पटबै-जोकर भऽ गेल। यौ बाबू किसानी जीवनमे बडड भीर। एकटा-ने-एकटा काज लगले रहत। आ जँ ओ काज समयपर नै करब तँ हाथो छोडि लाभ नै हएत। मुदा मुदा नोकरी करैबलाके से बात नहि। तइमे सरकारी नोकरी करनिहारक तँ बुझू पाचो आँगुर घीयेमे। आबि लागौ चाहे पानि खसौ समयपर दरमाहा भेटबे करतै आ ऊपरका आमदनी अलगसँ। ने हर-हर आ ने खट-खट। देखै नै छिऐ पो. वीरेन्द्र बाबूके केहेन मोछमे घी लगबै छथिन। एगारह बजे दिनमे महाविद्यालय जाइ छथिन आ तीन बजे बेरमे आपस आबि जाइ छथिन आ दरमाहा केतेक भेटै छैन...। खाएर छोडू ऐ बातके...।

हम आ चन्द्रशेखर ककाक बेटा विमल लंगोटिया संगी।पहलासँ बी.ए. धरि संगे पढ़लौं। ओ कलकतासँ बी.एड. कऽ लेलक तँए उच्च विद्यालयमे शिक्षकक पदपर नोकरी करै छैथि आ हम कोनो प्रशिक्षण नै पाप्त केलौं तँए खेती-गिरहस्ती कऽ अपन जिनगीक गाडी खीच रहल छी। ओना, नोकरी-ले हमहूँ प्रयास कम नहि केलौं,मुदा ऐ युगमे भगवान भेटब असान अछि जखनकि नोकरी भेटब कठिन।
29 दिसम्बरके जखन गहुम पटबैत रही, चिचाइ कहलक जे चन्द्रशेखर काका बेमार पडि गेला हेन। ब्लड पेसर बढ़ि गेल छैन। जखनेसँ ककाक बेमारीक बात सुनलौं हुनकासँ भेट करैले मन कछमछ करए

लगल। कछमछाइत मनमे उठल- चक्षतर काका मेहनती क्षकसान छैि। कन्हपर कोदाक्ष आ हाि मे खुरपी रहबे करै छैन। जीर-मरीच आ नोनक अलाबे खाइ-पीबैक कोनो वस्तु नै कीनए पि छैन। कक्षयो ने सुनने रक्षए जे चक्षतर काकाके माि दुखाएल हेतैन। ि र ब्लड पेसर क्षकएक बक्ष़ गेलैन?

क्षहाने भेने सुक्षा उक्ष कऽ चक्षतर काकासँ भेट करए लेल क्षदा भेलौ। रस्तेमे क्षात्यक्षयासँ क्षावृत भेलौ। ककाक घर हमरा घरसँ लगधक डेढ़ क्षकलोमीटरपर। हमर घर गामक दक्षनवक्षया टोलमे सभसँ दच्क्षन आ हुनकर घर उतरवक्षया टोलमे सभसँ उतर छैन। चक्षतर काका दलापरचौकपर कम्मल ओक्ष़ कऽ बैसल रहैि। हम दलानक क्षाच्चेसँकहलयैन-

“काका गोि लगै छी।”

काका बजला-

“नीके रहह। आबह-आबह। केतए हेराएल छेलह हेन। एक-डेढ़ मासक वाद तोरासँ भेट भेल हेन।”

कहलयैन-

“की कहब काका, एकोरती ि ुरसत नइ भेटै छल। अहा तँ बुक्षते क्षए जे क्षकसानक क्षनगी केहेन होइ छइ। काल्क्ष गहुमक पक्षल पटौनी समाप्त केलौ हेन। गहुमे पटबैतकाल ि चाइ कहलक जे काका बेमार भऽ गेला हेन। बुझू तखनेसँ अहाक भेट करैले मन कछमछ करै छइ। सुक्षा उक्ष कऽ एमहरे क्षदा भऽ गेलौ।”

काका बजला-

“हँ, तेतेक ने टेशन भऽ गेल अक्ष जे ब्लड पेसर बक्ष़ गेल। आठम क्षन डाक्टर रमेश जँचने रहए। कहलक जे नीचलका साए आ ऊपरका एकसाए साक्ष भऽ गेल अक्ष। दवाइ खाइ छी। काल्क्ष

जँचबैलौ तँ कहलक आब ठीक अछि। तैयो परहेजसँ रहैले कहलक हेन। ठीक रहितो ऐ बेमरीमे दवाइ सभ दिन चलिते रहत सेहो कहलक। ठंढ़िसँ बँचि कऽ रहैले कहलक हेन। भात आ नोन कम खाइले कहलक हेन।"

हम सभ गप करिते रही ताबेमे चलितर ककाक पोती दूटा प्लेटमे चारि-चारिटा नमकीन बिस्कुट आ दूटा कपमे चाह दऽ गेल।

काका पुछलैन-

"पानि अनलहो पीबह?"

कहलयैन-

"हँ काका, पीब।"

काका पोतीके कहलखिन-

"गइ रीना एकलोटा पानि आ एकटा गिलास नेने आ।"

रीना एक लोटा जल आ एकटा गिलास राखि गेल। हम बिस्कुट खा जल पीब चाहक चुस्की लेबए लगलौ। चाहो पीबी आ ककाकसँ गपो करी। हम पुछलयैन-

"काका, ऐबेर गहुमक खेतीक केते केने छी?"

तैपर काका जवाब देलैन-

"एको धुर नहि।"

ककाक गप्पक हमरा कोनो अर्थ ने लगल। हम छगुन्तामे पड़ि गेलजै। सोचएलगलौं- काका जीवनी किसान छैथि। चारि-पाच बिगहामे सभ साल गहुमक खेती करै छैथि। फेर एना किए बजला! पचचीसे नवम्बरके श्यामल चौकपर भेटल रहए तँ कहने छल जे आइए गहुमक बाउग समाप्त केलौ। तैपर हम पुछनौ रहिऐ जे केतेक खेतमे गहुम बाउग केलह अछि। तैपर श्यामल कहने रहए पँच बिगहामे। तैपर हम कहने रहिऐ-बढ़ि अगता गहुम खेती मारि लेलह। तैपर श्यामल बाजल

रहए- रौ मीत पाचो बिगहा खेतमे निश्चि धान रोपने रही। नारेपर कटबा लेलौ। िरबला रेक्टरसँ एक बेर पाचो बबिगहा खेतकेएक समार जोतबालेलौ आ पाच बेर रौद लगला बाद छठम बेर खाद आ बीआ छीटबा कऽ रोटावेटरसँ एक चास करा देलौ। आब की कोनो हर-बरदसँ खेती होइए जे बेसी समय लगात।

हम कहने रहिऐ- हँ से तँ ठीके कहै छीही। तोर खेतो सिके कातमेछौ, तँए रेक्टर जाइक सुविधा छौ आ छह-सात बिगहा खेतो एकेठाम छौ।

धुमल कहने रहए- हँ से तँ अछिए। एकेटा कमी अछि। बोरिंग नइ अछि। की करबै तीन-तीन ठाम लेअर जाच करबौलिऐ मुदा 250-300 िटिसँ कमपर लेअरे ने भेटै छइ।

हम कहने रहिऐ- तोहर खेत तँ बिहुलो धारसँ पटि जाइ छौ। बोरिंगक खगतो तँ नहिये छौ।

धुमल कहने रहए- हँ से तँ पटि जाइए।

हमरा सोचमे डुमल देख चित्तर काका टोकलैि-

“की सोचए लगलहक।”

कहलयैन-

“काका हमरा तँ अहा गपक कोनो अि ने लागल। 25 नवम्बरके धुमल भाय कहने छला जे आइए पाच बिगहा गहुम बाउग कऽ आचेन भेलौ हेन। ओ किए झूठ बाजल?”

तैपर काका बजला-

“ने धुमले झूठ बाजल आ ने हमही गलत कहै छिअह।”

ककाक बात सुनि हम आरो ओझरीमे पड़ि गेलौ। गपक कोनो भाजे ने लागए। कहलयैन-

“काका, अहा की कहै छिऐ से तँ हमरा भाजे ने लगैए।”

काका समझबैत बजला-

“सुनह, गहुम ठीके पाचथ्बगहामे बाउग केने छी। ओहो 25 नवम्बरके। तोरा तँ बुझले छह जे गहुमक िथ्मलमे बाउग केलाक बीसम थ्दनसँ लऽ कऽ पच्चीसम थ्दन धथ्ब पथ्नल पटौनी कऽ देबाक चाही।नै तँ गहुमक गाछमे वृथ्द्ध नै होइ छइ।”

मुिी डोलबैत कहलयैन-

“हँ, से तँ ठीके। नथ्ह तँ आथ्खरी पच्चीसम थ्दन धथ्ब पथ्नल पाथ्न देब अथ्नवायवअथ्छ।”

काका थ्बच्चेमे बजला-

“ठीके कहलक। आब तोही कहह जे हमरा गहुम बाउग केला पैतीस थ्दन भऽ गेल हेन आ अखन धथ्ब पटवन नै भेल। भेल एको धुर गहुम बाउग केनाइ? बुझह जे हाि तरक गेल आ लाटो तरक गेल।”

हम मुिी डोलबैत बजलौ-

“से तँ ठीके कहै थ्छऐ। जँ गहुमक िथ्मलमे पटवन नै केथ्मऐ तब तँ सभ खचा आ मेहनत पाथ्नमे चथ्ल गेल। मुदा एना भेल थ्कए?”

तैपरकाका बजला-

“सभ साल बहुल नदीसँ गहुमक पटवन भऽ जाइ छल। एमकी अगते बहुल धार सुथ्ख गेल।”

हम पुछलयैन-

“एना थ्कए भेल? एतेक अगता धार थ्कए सुथ्ख गेल।”

काका बजला-

“सुनै थ्छऐ गोठ नरथ्हया लग एन.एच. 104मे पुल बथ्न रहल छै, तँए पुलक थ्िकेदार धारके नरथ्हयासँ एक थ्कलोमीटर उतर बान्थ्ह देलक। तँए पाथ्न एनाइ बन भऽ गेल आ धार सुथ्खगेल।”

हमरा चश्चतर ककाक ब्लड पेसरक कारणक भाज लाथ्या गेल। समयपर गहुम नै पटलासँ ककाक ब्लड पेसर बढ़्ह गेल रहैन।

हम खिा होइत बजलौं-

“काका,जाइ छी। बडड काज अछ्छ।”

ई कहैत हम थ्यदा भऽ गेलौं।

रबीन्र नारायण श्रश

यूरोप याता

भारत सरकारक पश्चाक्ण कायग्रिमक अनुसार ३५ गोटेके एक-संग युरोपक पाच देश घुमबाक कायग्रिम छल। सभ गोटे सरकारक पिम शेणीक अश्चकारी छला। सभ नेतृत्व एकटा मश्चला अश्चकारीक हाथिमे छल। सभमे बेकतीमे श्चदेश देखबाक-घुमबाक आ रहबाक अवसरसँ मनमे अदुत पसनता छल। रहबो श्चकए ने करत युरोपक देश छी श्चकने।

सभ श्चकयो अपन-अपन कागज-पतर सश्चयाबैमे ललगौ। पासपोटव सरकारी बनल। वीजा कायालयक तरिसँ बश्चा गेल। टीकट सरकार देलक, तखन करके की रहइ। बस कपिा-लता सश्चयाउ, श्चकछु पाइ बेसी कऽ रश्चख सकी तँ राश्चख श्चलअ आ श्चदा होउ। ओना, श्चकछु यूरोडालर सरकारक तरिसँ जेब खचक हेतु सेहो देल गेल।

फासक राजधानी 'पेश्चस' लौटबाकाल रस्तामे छल। सभके इच्छा भेलै जे कश्चाको-मश्चाको ओकरो देख सकी तँ देख ली। से पयासक बाद सम्भव भेलइ।

लौटैकालक कायग्रिममे श्चन भश्च पेश्चस भमण शाश्चल कएल गेल। पैतीस आदमीक हुजुम एकेठामसँ श्चदेश श्चदा छल। एकर आनन्द सोचल जाए सकैत अश्छ।

यूरोप भमणक उपरोक्त कायग्रिम असलमे पश्चाक्णक अंग छल। अगस्त २००९ मे दू सप्ताहक हेतु केतेको श्चनसँ तैयारी चश्च रहल छल। श्चदेश याताक दौरान की करक नश्छ अश्छ, आ की करक अश्छ तेकर सश्चस्तार चचा भेल। कोनो एहेन काज नश्छ करबाक

छेलै जइसँ देशक गश्चमापर बटा लगइ।

आठ बजैत-बजैत सभ श्चकयो इन्श्चरा गाधी अन्तराष्रीय हवाइ अडडापर पहुँच गेल रही। सबहक जेबीमे अपन-अपन टीकट, पासपोटव आश्च जर री कागजात छल। राश्चाक २ बजे करीब हवाइ जहाजक उािन छल।

श्चकछु गोटेके मुम्बइसँ आगूक जहाज लेबाक रहैन तँए ओ सभ अलग पश्चनश्च मुम्बइ चल गेल रहैि। हम श्चल्लीसँ सीधा फैकि टवजाइबला हवाइ जहाजमे जाइबला समूहक संगे रही। श्चल्ली हवाइ अडडापर एक-एक-के सभ सहयाती सभ जमा भऽ गेलौ। सुरक्ा जाचक बाद हम सभ अन्दर इमीगेशन काउन्टरपर ठप्पा लगेलौ। सभके संगमे कोनो पश्चाबन्श्चात सामान नश्च लऽ जेबाक श्चदायत पश्चनश्च दऽ देल गेल रहइ। तँए कोनो परेशानी नश्च भेल। श्चकछु कालमे बोडीग शुर भऽ गेल आ हम सभ एक-एक-के बेरा-बेरी सभ श्चकयो हवाइ जहाजमे बैस गेलौ।

हमरा लोकश्चाक पश्चाकग स्लोवेश्चाया लुश्चयाना स्श्चित आइ.सी.पी.ई.(Interational centre for public Enterprises) छल। एकर स्ािपना २४ अपैल १९७४ ई.मे तत्कालीन यूगोस्लावीया सरकार दारा भेल।

भारत, नेपाल, शीलंका सश्चत पनरहटा आर देश सभ एकर सदस्य छैि। ऐ संस्ािक श्चकास यातामे भारतक गम्भीर योगदान अश्छ। वतश्चानमे आइ.सी.पी.ई. दुश्चाया भश्चक लोक हेतु श्चश्चान पकारक श्चषय, खास कऽ आश्चिक श्चषयपर चचाक सघन माध्यम अश्छ। ऐ संस्ािक स्ािपनामे संयुक्त राष्र संघक नाओं (Non Aligned Movement) क बहुत योगदान अश्छ। भारतक शी सी सुव्मन्यम एवम् शी जी पाि वसारि ी बहुत श्चन धश्च एकर नायक मागवदशक

रहला। यूगोस्लावियाक विभाजनक बाद १९९२ ई.मे ऐ संस्थाक देख-रेख स्लोवेनियाया सरकारक अधीन आबि गेल।

ऐ संस्थाक पशासकीय पमुख डायरेक्टर जेनरल होइत छैथ जे संस्थाक एसेम्बलीक दारा चारि वर्षक हेतु चुनल जाइ छैथ। संम्पति डॉ. आनन्द एन अस्थाना ६ अपैल २०१५ सँ चारि सालक हेतु ऐ संस्थाक डायरेक्टर जेनरलक पदपर छैथ।

दिल्लीसँ हवाइ जहाज खुजल तँ सोझे जर्मनीक फैकफ्टव हवाइ अड्डापर उतरल। सूर्योदय भऽ गेल छल। मुम्बइसँ अबैबला हमर संगी सभ सेहो ओतहि आबि कऽ हमरा लोकनिक पतीक्षा करैत छला। ओइमे एक गोटेक सामानमे दारुक बोतल रहैन जे ओ मुम्बइ हवाइ अड्डापर कीनने रहैथ। फैकफ्टवमे ओ पकड़ि गेला आ हुनका बहुत परेशानी भेलैन। हुनका कहल गेल जे या तँ पीब लिअ, या केकरो दऽ दियौ चाहे कि फेकि दियौ। संगे आगू नहि लऽ जा सकै छी। पता नहि, ओ तेकर की समाधान केलैन।

फैकफ्टव दुनियाक पहिल हवाइ अड्डा थिक। १६ नवम्वर १९०९ ई.मे भेल। जर्मनीक ई वयस्ततम हवाइ अड्डा अछि। सन् २००९ मे पाच करीब ९ लाख ३२ हजार ८४० याती ऐठामसँ गुजरल। फैकफ्टक टर्मीनल १A पर हमरा लोकनि स्लोवेनियाक (Lajubljana) हेतु छोट सन हवाइ जहाज पकड़लौं। घन्टा भरिमे ई याता संपन भेल। रस्तामे सभ तरहक जलखै सेहो देल गेल। यातासँ पूर्व हमरा सबहक एकटा संगी मार्गदर्शन करैत आमन्तित पहलुपर ध्यान रखबाक परामर्श देलैन। (ओ केतेको बेर विदेश गेल रहैथ आ विदेशमे २ साल काजो केने रहैथ)

१. हैण्ड वैगेजमे एक सेट कपड़ा राखी ताकि जँ चेकइन वैगेज देरीसँ पहुँचल तँ काज औत।

२. चेकइन वैगपर अपन नाओं, गन्तव्य स्िानिक पता सहित िोन नम्बर श्लखल जाए। ओइ बैगमे अपन आवश्यक वस्तुसंग काडवराखल जाए।

३. पासपोट्र, हवाइ जहाजक टिकट, विदेशी मुरा अपना संगे सुरक्षित स्िानपर राखल जाए।

४. उपरोक्त जररी कागजातक तीन िोटो प्रति वैगमे अलग-अलग स्िानपर राखल जाए।

५. आत्यपश्क पयोगक जररी दबाइ अपना संगे राखू।

६. होटल आश्रममे अपन सामानपर ध्यान राखू, ताकि ओ चोरि ने भऽ जाए।

७. विदेशमे हमेशा दू वा अधिकक समहूमे रहू ताकि जररी भेलापर मदैत भऽ सकए।

८. विदेशमे कीनल गेल सामानक रसीद संगे राखू, एमीगेसन काउन्टरपर तेकर काज पड़ि सकैत अछि।

९. अपना संगे छाता, हल्का ऊनी स्वेटर, आ कोट राखू। उपरोक्त प्रशिक्षण ९ अगस्तसँ २३ अगस्त २००९क दौरान सम्पन हेबाक रहइ। कार्यक्रम पारम्भसँ पूर्वहि हमरा लोकनिके संस्िापनक डायरेक्टर जेनरलक तरिसँ इमेल भेटल जइमे संस्िानक बारेमे पारम्भिक जानकारीक अलाबा प्रशिक्षण कार्यक्रमक छल। दैनिक कार्यक्रम छल। तकरक अनुसार माने कार्यक्रम दौरान कोनो काजक हेतु शी अश्विान शेष्ठ एवम् शी उरोज जेबरसँ सम्पकवकरबाक छल। ९ अगस्त २००९ क लुब्लयाना हवाइ अडडापर हमरा लोकनिक स्वागत हेतुशी शेष्ठजी (जे नेपाली मूलक छला एवम् स्लोवेनियामे बसल गेल रहैि) आएल रहैि। दूटा नमगर-नमगर बसमे चढ़ि हमरा लोकनि संस्िानिक हेतु विदा भेलौ। आधा घन्टामे हम सभ संस्िान

पहुँचलौ जेतए हमरा लोकनिक स्वागत डॉ. स्टेनि वोगडन सलेज, डायरेक्टर जेनरल केलाह। सभ गोटेके होस्टल रमक कुंजी देल गेल। पत्येक कोठरीमे दू गोटाक जगह छेलइ। मात एकेटा रप छेलै जइमे एसगरे हमर एकटा संगी रहला।

कायक्रिमक समन्वयक (महिला अधिकारी) के सेहो िराक कोठरी देल गेलैन। तेकर पछाइत हमरा लोकनिके चाइनीज रेस्टोरेन्ट- साग हाइ, लुब्यानामे दिनक भोजन करौल गेल।

छातावास सािं-सुिरा छल। कोठरी सभमे ए.सी. नहि रहै कारण ओइठाम ओतेक गमी नहि पिेत अछि। सभ जररी समान ओइ कोठरीमे सुरभ छल।

संसिानक भूतलपर रवीन्रनाि टैगोर हॉलमे प्रात्य साढ़े सातसँ आठ बजेक बीचमे जलखै देल जाइत छल। जे तेतेक जूश पीबए चाहैि से भेटैन। भारतीय शाकाहारी भोजन एकटा गुजराती ठेकेदार दारा देल जाइत छल। लगैत छल जेना अपने देशमे खा रहल छी। ओही हॉलमे रोजाना रािक भोजनक बेवस्िा सेहो रहैत छल। एवम् दिनुका भोजना आन-आन ठाम।

संस्िानक तुवार हॉलमे पशिक्षक भाषण होइत छल। समयसँ सभ पशिक्षणािी एवम् व्याख्याता लोकनि उपस्थित भऽ जाइत छला। चाह एवम् कौिीक हेतु दू बेर अवकाश होइत छल। चाह/कौिीक अलावा भरि पोख तरह-तरह केर बिस्कुटक बेवस्िा सेहो छल।

१० अगस्त २०१६क संस्िानक डी.जी. दारा स्वागत भाषणक बाद स्िोवेनियामे भारतीय राजदूत डॉ. भी.एस. शंषिर दारा भारत स्लोवेनिया सम्बन्धपर संक्षिप्त चचा कएल गेल। तदुपरान्त स्लोवेनियाक विदेश मंतालयमे डी.जी. शीएन्डेज वेन्डेज दारा स्लोवेनिया एवम् अिविसंकट विषयपर भाषण भेल। भोजनोपरान्त पो.

जोज थाकर दारा Innova tive Cron Border i-Resion Development श्वषयपर भाषण भेल।

राश्चामे स्वागत एवम् राश्चा भोजनक कायग्रिमक बाद सभ गोटे श्वशाम केलौ। भोरे उश्च हम सभ आसपासक जगहमे टहलए श्चाकललौ। अकास स्वच्छ छल। वायुमण्डलमे केतौ पदूषण नश्च। अकासक तारा सभ चकमक देखल जा सकैत छल। हवामे जे ताजगी छल ओकर अनुभव शब्दसँ नश्च कएल जा सकैत अश्छ। मुदा ओतौ पाकश्च एकटा श्चाखमंगा सन बेकतीके पुरान-धुरान ओढ़ना ओढ़ने सूतल देखश्चाऐ। कहबी छै जे गेलौ नेपाल, कपार गेल संगे..!

स्लोवेश्चाया बहुत छोट सन देश अश्छ मुदा आश्वक दृष्श्चमे उनत देशमे अबैत अश्छ। ई देश यूरोश्वयन यूश्चायनक श्चस्सा अश्छ एवम् ओइठामक मुरा यूरोडालर अश्छ। सभ श्वकछुक अछैतो ओतौ अभागल लोक पाकश्च अनाि जका सूतल देखाएल, से देख आियश्च पश्चि गेलौ।

११ सँ सोलह अगस्त २०१६ ई.क बीच स्लोवेश्चायासँ बाहर श्वयाना, म्युश्चास्क, मेश्चास जेबाक कायग्रिम छल। समस्त यातामे शी अश्चान शेष्ठजी हमरा लोकश्चाक संगे रहैि। हुनका संगे एकटा गाइड छल एवम् गाििक डइवर रहए जे अपना-आपमे मनोरंजक छल एवम् बहुत रास जानकारी दैत रहै छल।

९ अगस्तक सायंकाल हमरा लोकश्चा सीटी सेन्टर घुमैले गेलौ। सिकपर काते-काते चलैमे अदुत आनन्द आश्च रहल छल। सिकक काते-काते साइश्वकल चलेबाक हेतु अलग पाश्चा छल। रैश्विक कन्रोल श्वास्टममे एहेन बेवस्ि छल जे पदयाती सिक पार करबाक सूचना खीच दबा कऽ दए सकैत छल। अलग जाइबला लोक सभ हमरा लोकश्चाक संग बहुत नीक बेवहार करै छला।

रैश्यिक कन्ट्रोलमे सेन्सर लागल छेलइ। जइ कार सभमे अनुमश्याक चीप छल, तेकरा चेक प्वाइन्टपर अश्बते रस्ता खुश्म जाइत छल। शेष लोकके अपन कागजात देखबए पति छल। तेकर बादे अहाक गाि आगू बश्ढ़ सकैत अश्छ। जँ सिकपर यातायात श्यमक उल्लंघन करैत पकिल जाएब तँ तुरन्त सायरन बश्म उठैत छल आ ओइसँ उवरक हेतु भारी जुमाना ३० यूरोडालर अदा करए पति छल।

सिकक कातमे श्कंवा कोनो पाकश्मे लघुशंका करब श्यल्कुल मना छल। एमहर-ओमहर जाइत काल पश्चय पत लटकौने रहैत छेलौ जइसँ असानीसँ पश्चान भऽ सकए। स्लोवेश्यायाक सरकारमे श्यषय वस्तुके श्यशेषज सभके मंती, सश्यव बनौल जाइत अश्छ। सरकार बदललापर ओ सभ अपन पुरना काजपर आपस लौट जाइत छैि। यूरोश्ययन पुश्यनक संभावी सभ राष्रमे एके श्यन्दुपर टैक्स लेबाक परम्परा अश्छ। संसदक दू सदन अश्छ। राष्रपश्त, मंतीक अलाबा नगरपाश्लका होइत अश्छ। ओइठाम राज्य नश्ह अश्छ।

शहरमे पीबक पाश्यक आपूश्यक उतम बेवस्ि अश्छ। पद यातीक बहुत सम्मान कएल जाइत छल। यश्द कारसँ चलैत बेकती कोनो पद यातीके देखैि तँ तुरन्त गाि रोश्क कऽ सिक पार करबाक आगह करैि।

११ अगस्त २००९ ई.क पात: ६ बजे बससँ सभ गोटे आस्रीयाक राजधानी श्ययानाक हेतु पस्िान केलौ। सभ गोटेक आपसी सहमश्तसँ ओइ श्यदेश कायश्मक हम मुश्याटर रही। सभसँ पश्हने तैयार भऽ आगू आश्ब कऽ आर लोक सभके शीघ चलबाक हेतु पेश्त करी। समयक पश्त श्याष्ठा ओइठाम बहुत आवश्यक छल, अन्यि लोक हँसीक पात भऽ जाइत छल।

श्ययाना आस्रीयाक राजधानी श्यिक। एकर अवादी १.८ करोि अश्छ।

वश्मनाक बाद थ्रशमे सभसँ अथ्राक जमला भावी लोक ऐठाम रहै छैि। आस्रीयाक पूवी भागमे स्थित थ्रयाना अनेको अन्तराष्रीय संस्िाक मुख्यालय अछ्छ। २००१ ई.मे युनेस्को एकटा थ्रश धरोहर घोथ्रत केलक।

थ्रयानाके संगीतक नगर सेहो कहल जाइत अछ्छ। थ्रश पथ्रद मनोवैजाथ्रक- फाइड ओहीठाम जन्मल छला। थ्रयाना दुथ्रायाकमे उच्च जीवन स्तरक हेतु पथ्रद अछ्छ।

२००५ ई.क एक अध्ययनक अनुसार दुथ्रायाक सवोत्कृष्ट रहै जोगर शहरमे एकर नाओं आएल छल। अमेथ्रकाक सैन फैथ्रस्को एवम् कनाडाक वानकोमेर ऐ टकरक आन शहर सभमे अछ्छ। पथ्रा वषव३.७ करोि पयवक ऐ शहरमे भमण हेतु अबैत रहै छैि।

सायंकाल ५ बजे आस्रीयामे भारतीय राजदूत शी सौरभ कुमारसँ दूतावासमे हमरा लोकथ्राक भेट भेल। सभ गोटेसँ पथ्रचयक बाद जलखैक बेवस्िा रहइ। थ्रयानक बारेमे आवश्यक जानकारी सेहो हुनका माध्यमसँ भेलट।

भारत एवम् आस्रीयाक पारस्पथ्रक सम्बन्धक चचा करैत ओ स्पष्ट केलैन जे २००० भारतीय ओइ देशमे रथ्र रहल छैि। भारत भमण हेतु वीजा देबामे कोनो देरी नथ्र होइत छल ओ अथ्राकाश लोकके ओही थ्रन वीजा भेट जाइत छल।

राजदूत महोदय हमरा लोकथ्रा दारा पूछल गेल केतेको थ्रजासाक उतर दैत रहला। दूतावासक बाद हमरा लोकथ्रा नगर भमण हेतु थ्रदा भेलौ। ओइ िममे पुरना महल देखलौ जेतए-सँ ८०० साल तक ओइ देशक शासन भेल छल।

पधानमंती आवास एवम् संसद भवनके एकदम समीपसँ हम सभ देखलौ आ सुरक्षाके जे ताम-झाम अपना देशमे अछ्छ, से ओतए केतौ नथ्र

बुझाएल। शहर एकदम स्वच्छ, मनोरम। लोकक अवादी बहुत कम। रस्तामे तँ मुश्किलसँ कियो देखाइत। खेत सभ हरिअर कंचन। बीच-बीचमे केतौ-केतौ गाम सभ, जेहो छोट-छोट मुदा पकाक घर सभ दर्शनीय दृश्य उत्पन्न करैत छल। सभ घरपर सौर ऊजाक उत्पादनक बेवस्था छल। रस्ता भरि पवनचकी दारा विद्युत ऊजा उत्पादनक बेवस्था देखाएल। यत-तत द्वितीय विश्व युदक समृद्धि अवशेष भरल छल।

सकिपर ३५टा भारतीय हुजुम जखन चलैत छल तँ अभूतपूर्व दृश्य भऽ जाइत छल। देशक प्राय: सभ राज्यक लोक हमरा सबहक संगे छला। अखन ना सकिपर चलैतकाल विमानाक फ्लैट-पाथिर एकटा पंजाबी दोकान केने छला। हमरा सभके खुनदीमे गप करैत सुखि बहुत पसन भेला। गप-सप्प्क क्रममे अपन परेशानी सभ व्यक्त करैत रहला।

सम्पूर्ण यूरोप एक दोसरसँ जुड़ल अछि। सकिक माध्यमसँ पूरा यूरोप घुमि सकैत छी। मल्टीपाल इन्ट्री वीजा भेटैत छइ। जखना अपना देशमे एक राज्यसँ दोसर राज्य जाइ छी तखना ओतए एक देशसँ दोसर देश घुमि सकै छी। दूरगामी बस सभक डाइवरके दूटा याताक बीचमे आधा घन्टाक कानूनी विशाम देल जाइत छइ।

आसपासक घर सभमे फूलक बगीचा छल। बच्चामे फूल सभक पटिर रहैत छल। सकिक काते-काते हम सभ चली तँ लोक सभ आश्चर्यचकित भऽ देखैत रहै छल। कियो-कियो कहैत जे ओ इण्डियाके जनैत अछि किंवा इण्डिया गेलो अछि। मुदा सबहक मुखमण्डलपर एकटा सत्कारक भाव भेटैत छल जेकरा बिसरब असम्भव...।

१२ अगस्त २००९क हमरा लोकनिक पहिल पड़ाव छल- यूनीडो

(United Nations in Destrial Developemant Organization) संयुक्त राष्ट्रसंघक अधीन यूनीडो अन्तराष्ट्रीय स्तरपर गरीबी निवारण हेतु औदोगिकरणक विकास हेतु कार्यरत् अछि। जनवरी २०१७ तक भार सहित १६८ देश ऐ संस्थाक सदस्य छैथि। संस्थाक निदेशक दारा पस्तुतिकरणक क्रममे मूलत: निम्नलिखित विषय उभरल-

१. वर्तमान परिवेशमे सरकार सबहक महत्व बढ़ल अछि कारण बाजार आधारित नीति स्वयंमे अपूर्ण अछि।

२. यूनिडो सदस्य देश सभके उत्साहित कए सकैत अछि मुदा असल काज तँ देश सभके स्वयं करक हएत।

३. वायुमण्डल परिवर्तनक खेती-वाणिपर जबरदस्त पभाव अछि।

४. ऊर्जा उत्पादनक ताधैर महत्व नहि हएत जाधैर एकर सक्षम उपयोग नहि हएत।

५. भारतमे अधिककोसँ कम पैसा बेकती उपलब्ध अछि। भारतक पगति हेतु ऊर्जा उत्पादन ओ उपलब्धतामे वृद्धि आवश्यक अछि।

६. गरीबी ओ ऊर्जामे अन्योन्याशय सम्बन्ध अछि।

७. पत्येक घरमे सौर ऊर्जा लगौल जाए।

८. कार्यालय एवम् दोकानक कार्यविधि घटा कऽ ऊर्जा व्ययके सीमित कएल जाए।

९. भारतक किछु राज्य जेना महाराष्ट्र, जुजरात आन सात राज्यसँ बेहतर कऽ रहल अछि।

११ अगस्तक दिनुका भोजन एकटा भारतीय भोजनालयमे छल। ओकर संचालक एकटा भारतीय युवक छला जे ओइठाम होटल मैनेजमेन्ट करबाक हेतु गेल रहैथि आ पढ़ाइ पूरा कए भोजनालय

चलबए लगला। ओ अपन पयासमे पूणवसिल छला। होटल खूब चलैत छल। उतम कोिटक भारतीय भोजनक बेवस्ि छल। मुदा दोसर िदन एकटा चाइनीज भोजनालयमे खेनाइक बेवस्ि छल। शाकाहारी लोकक संख्या आधा-आधी छल ओइमे ६-७ टा तँ कटर शाकाहारी छला।

..एकटा हािीमे भात राखल रहइ। वैरा कहलकै जे आधा िदस तँ अण्डा सिहत भात अिछ आ आधा िबना अण्डाबला।

ई बात सुिन कऽ हम आ हमर एकटा दच्िछन भारतीय िमत कि िवरोध कएल, आिखर ऐ बातक कोन गारंटी अिछ जे एके हािीमे राखल दू तरहक भात उलैट निह गेल हएत आ छूिबाक तँ बाते छोिू।

हम सभ ४-५ गोटे भोजनपर सँ उिठ गेलौ। तैपर आयोजनक लोकिनक आगह भेल जे हम सभ कमसँ कम जूसे पीब ली। मुदा बादमे ओकर भूगतान लऽ कऽ िववाद भऽ गेल जे मुश्िकलसँ समटल। असलमे शाकाहारी लोकिनके सभटा कष्ट बुझा िपवाय भारतीय होटल सभमे। दोसर ठाम तँ शाकारीक सही माने घास-िूस बुझल जाइक। जँ अहा छािन सकब तँ अहा जानी। जय हो, शाकाहारी बाबा...।

भोजनक मामलामे सभसँ नीक बेवस्ि सलोिवनयामे छल। ओइठाम भोरक जलखै एवम् राििक भोजन गुजराती होटलसँ व्यवस्िित छल तँए अित रिचकर छल। ओतौ िदनुका भोजनक हेतु चाइनीज भोजनालयक बेवस्ि छल जेतए हमरा सन शाकाहारी पाय: भूखले रिह जाइत छेलौ। ऐ आशामे जे रािमे सभ सधा लेबइ। बाहर खाएब िकंवा पािनयो पीब बि महग रहइ। एकटा कौिीक हेतु तीन यूरोडालर यानी भारतक लगभग २७० रपैआ होइत छल जे बि

महग बुझाइत छल।

जखन-कखनो कोनो बैसक वा सरकारी कायक्रि म होइत छल तँ पानि, चाह, कौि ी, बिस्कुटक बेवस्ि ा तँ रहिते छल। नगर भमणमे सेहो आयोजक दारा सीलबन्त मातामे पानिक बन्द बोतल देल जाइक। ओइसँ बेसी पीब तँ कीनए पि त। दाम-पुछू नहि। टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

१२ अगस्त २००९क दुपहरियाक भोजनक बाद आइ.ए.ई.ए. (International Atomic Energy Agency) क मुख्यालयक दारा भमण छल। ओ भारतीय छला। ओइठाम नौकरीसँ पहिने भारतीय पशासकीय सेवाक अधिकारी रहैि, आ तँए भारतीय परिस्थितिसँ पूणव अवगत रहैि। ओ तरह-तरहसँ नाभिकीय ऊजाक रचनात्मक उपयोगक विषयपर अपन विचार रखैत ऐ बातपर जोि दैत रहैि जे दुनियामे जइ पकारसँ ऊजाक पयोजन बढ़ि रहल अछि, तइमे नाभिकीय ऊजाक रचनात्मक पयोग अनिवायवभऽ गेल अछि।

तेतबे नहि, केतेको पकारक चिकित्सीय जाच एवम् उपचारमे सेहो एकर उपयोगिता महत्वपूणवअछि।

भाषणक बाद पश्न पुछबाक परिपाटी छल जइसँ बढ़िया बात ई छल जे यू.एन.ओ.क संस्ि ामे रहितो ओ भारतीय हितक पति बहुत संवेदनशील रहैि।

आइ.ए.ई.ए.क मूल उदेश्य शान्ति हेतु आरावतक शक्तिक पयोग थिक। एकर स्ि ापना संयुक्त राष्र संघक स्वायत्व संस्ि ाक र पमे सन् १९५७ ई.मे भेल। वियानाक दशनीय स्ि ान सभमे महत्वपूणव अछि, हसवगवसामाज्यक राज महल...।

१२७९ ई.सँ लगातार कोनो-ने-कोनो राजाक शासन केन्र रहल ई महल संपति आस्रीयाक राष्रपतिक सरकारी आवास अछि। ऐ

महलमे नाना पकारक म्यूजियम केर अलावा आवासीय अपार्टमेन्ट सभ अछि। राजमहलक अन्दर सार्वजनिक पूजाक स्थान अछि जैठाम आम जनता आबि जा सकैत अछि। रबि दिन-के ओइठाम संगीत कार्यक्रम सेहो आयोजित कएल जाइत अछि। राजमहलक अन्दर सीसी म्यूजियम अछि जे ९ बजेसँ सायं ५.३० बजे तक आम जनता हेतु खुलल रहैत अछि। सीसी म्यूजियमक अन्दर ऑडियो टूरसँ बहुत रास जानकारी भेटैत अछि। महलक अन्दर पुरना खजाना एवम् ओइमे राखल राजमुकुट ओ राजकीय वस्त्र सभ दर्शनीय अछि।

१३ अगस्त २००९ क आठ बजे हम सभ वियानासँ म्युनिख (जर्मनी) हेतु बस दारा पस्थान केलौ। लगभग पाच म्युनिख स्थित भारतीय कासुलेट जेनरलक कायालय पहुँचलौ। ओइपर तिहराइ तिरंगा झण्डा दिखि रहल छल। आपसी परिचयक बाद कासुलेट जेनरल महोदय भारत-जर्मनीक आपसी सम्बन्ध एवम् वर्तमान आर्थिक परिवेशमे तेकर महत्व एवम् अनतराष्ट्रीय महत्वपर सारगर्भित भाषण देला। हुनकर कहब रहैन जे जर्मनी संगे भारतक पुरान सम्बन्ध रहल अछि। जर्मनीमे संस्कृत अध्ययन एवम् अनुसन्धानक अति पाचीन इतिहास रहल अछि। दुनू देशके जनतान्त्रिक शासन पदतिक अलावा सास्कृतिक एवम् नैतिक मूल्यमे अनुरपता अछि। संगे ईहो कहल रहैन जे भारतीय दारा जर्मनीमे कएल गेल निवेशसँ तुलनात्मक दृष्टिये अधिकर तर जर्मनीके नौकरी भेटल अछि वनस्पति भारतमे जर्मन निवेश दारा कमतर भारतीयके जीविका भेटल अछि। ओ अतिशय आगही एवं सरल सोभावक लोक छला।

कार्यक्रमक बाद चाह-पान चलल आहमरा लोकनि होटलमे रात्रि विशामक हेतु चलि गेलौ।

१३-१४ अगस्तक राइमे हम सभ म्युआखमे रहलौ। होटल आलोशान छल। लानगृहमे छोट-सँ-पैघ नापक तरह-तरहके तोइया राखल छल। कोठरीमे थनीवार छल। पीबैबला घरेमे बैसल पीब सकैत छल, मुदा सबहक पाइ जायकाल चुकता करैक पति। भोरक जलखैक गुल्क नइ देबक रहइ। जलखैक जगह थशाल काय छल आ ओइमे जलखैक सामानक भरमार छल। जे खाउ, जेतेक खाउ। िल खाउ, िलक रस पीबू, अण्डा खाउ। बेड सबहक तँ तेतेक थकम रहै जेकर वणबा कइन अछ।

म्युआखक होटल सबहक साज-सज्जा थयानासँ बेहतर रहइ। चाहक थन्यास सभमे भारतीय दाजलीगक चाहक पुथिया सभ सेहो रहइ। लोक सभ सुन्दर नमगर ओ स्माटवछल। बिका-बिका मौल सभमे वस्तुक भरमार छल। जे चाही थआ, मुदा दाम भारतसँ बेथये रहइ।

इलेक्रॉआक सामान सबहक भरमार रहइ, मुदा महग। तखन की लेल जाए? तरह-तरहक चॉकलेट सभ लेलक, सनेस हेतु।

म्युआखक वीयर हॉलमे हजारो आदमी एकठाम बैस कऽ दार पीबैत अछ। हमर थकछु सहयोगी सभ उत्सुकतावस ओकरा देखबाक हेतु राइमे गेला मुदा लौटला पछाइत अिशोस करैत रहैि जे बेकारे गेलौ। सम्पूणववातारण दुगबधसँ भरल छल। हम आ हमर रमेट ओइ समयके सुतमो उपयोग कऽ पाय: बेहतर थआणय लेने रही।

म्युआखमे सालमे एकबेर वाथक वीयर उत्सव अष्रवरलस्ट होइत अछ। पाय: थतम्बरक मध्यसँ शुर भऽ अक्टुवरक पिम सप्ताह तक चलैत अछ। ऐमे दुआया भथसँ ६ करोिसँ अथाक लोक भाग लइ छैि। वावेथयन संस्कृथाक ई एकटा महत्वपूणवअंग अछ।

ऐ उत्सवमे तरह-तरह केर खेल-धुप, नाना पकारक भोजनक

अक्षावक्त मनोरंजनक अनेकानेक थ्वकल्प सुलभ रहैत अछ्छ।
१४ अगस्त २००९ ई.क पात:काल ९.३० बजेसँ जमबीक चैम्बर ऑॅ कामसवएण्ड इन्डस्री वयाथ्वयाक सभा गृहमे संस्ािनक अध्यक भाषण छल।
उपरोक्त संस्ािके जमबीक ३.३० कम्पनी सदस्य छल। पेथ्वसक सी.सी.आई.क आद ई अपना तरहक संस्ािनमे दोसर स्ािनपर छल। जमबीक एकीकरण एवं तेकर पभावक थ्वषयमे ऐ बैसारमे थ्वस्तारसँ चचा भेल।
पच्छ्मी जमबी अपेकाकृत अध्वाक समृद अछ्छ। पू. जमबीक आथ्िक स्थ्िश्वा तखनो खास्ता-हाल छल। तँए एकीकरणक बाद पच्छ्मी जमबी थ्वसुका लोक सभ एकीकरणसँ अपसनता व्यक्त करैि।
जमबीके म्युश्वखमे घुमैत हमरा लोकश्वा ओलम्थ्वक खेलक स्ािन देखलौ। म्युश्वखक टेक्नीकल म्युश्वयम देखलौ। ओइमे थ्वदुत उत्पादनक व्यवहाथ्वक वणबा छल। अलग-अलग तलपर नाना पकारक वस्तु सभ पदशबीक हेतु राखल छल। वायुयान, रेल, जल-जहाज सञ्चत अनेकानेक वस्तुक जमबीमे अथ्वष्कार एवं पयोगक जानकारी लैत, देखैत चकथ्वदरो लाथ्वा जाइत छल। श्वाािय ओ सभ केतेको केतमे हमरा सभसँ बहुत आगू छला। भऽ सकैए जे लोक यूरोपक पश्वा अनेकानेक धारणासँ पूवागञ्चत हो, परन्तु हमरा केतौ रास्ता, होटल, चौबथ्वयामे कोनो अभर नञ्च देखाएल। ओइ तुलनामे तँ थ्वल्ली थ्कंवा आसपासक पथ्वस्थ्िश्वा अश्वाशय थ्वंताजनक अछ्छ।
ओइठामक लोक सभ कायक पश्वा श्वाष्ठावान एवं पथ्वशमी छैि। तेतबे नञ्च, व्यिक श्वबादसँ सेहो कोनो मतलब नञ्च। ओतेक थ्वनमे मात एक थ्वन थ्वयानामे पुञ्चसक जत्ािदेखबामे आएल जे कोनो पदशबानके श्वायंश्वात कए रहल छल। अपना सभ ओइठाम जका यत-तत सवबा

पुस्तकमेलाया हुजुम श्किंवा सुरक्षाक तामझाम केतौ नञ्चि देखबामे आएल। आस्ट्रीयाक पधानमंतीक घर तक अपञ्चाश्यात लोक सभ बेरोक-टोकक चल जाइत छल। मंती सभ मेरोरेलसँ कायालय अबैत-जाइत छला। भोरे-भोर केतेको कायालयमे लोक भरल आ कायरत भऽ जाइत छला। साइश्किल चला कऽ व्यायाम करब आम बात छल। साइश्किलक हेतु सभठाम अलग रस्ता छल। सभसँ बेसी जे आकषक बात छल से ई जे लोक सभमे व्यक्ति अहंकार नञ्चि छल। सरल एवं सहज रूपे लोक बेवहार करैत छल जेकर अनमान देश्वए कऽ भऽ सकैत अछि। ओइ सभ शहरमे जनसंख्या कम अछि। तँए ओकरा व्यवस्थित करब श्किंवा ओकरा लेल बेवस्था करब अपेक्षाकृत असान अछि। मुख्य शहरके जँ छोड़ि दी तँ बीचक रस्ता सभमे मुश्किलसँ लोक देखाइत। हँ! सप्ताहातक दृष्य अलग रहैत छल।
शुकक राश्रामे वास्तवमे माछी जका लोक मन भनाइत रहै छल। शश्नाक भोरे लगैत जेना पूरा अवादी शहर छोड़ि कऽ केतौ भाश्ग रहल अछि। श्कयो कारसँ,श्कयो श्रेनी बससँ, श्कयो कारमे राली लटकौने लोकक हुजुम देखाइत छल। सप्ताहात श्रेताएब हेतु कोनो झील, कोनो रमणीय स्थान वा कोनो दोसर शहर जा रहल छल। झीलक आसपास लोक पटोटैन देने रौद सोखैत रहै छल। समुरमे अश्ना तीव् गश्रासँ स्वचाश्रात नाह सभसँ लोक सभ जल क्रिड़ा करैत देखाइत। ओकर वेग आ ओइमे सभ लोकक दुस्साहस पशंसनीय छल। गोराय लोक बड़ मोटाएल देखाइत छल, से देख दुख ओ आश्चर्यवहोइत छल, जे एतेक सम्पन पश्रेवेश रश्हितो ई सभ शारीश्रक रूपसँ अक्षम जका रहबाक कारण केतेको सुखसँ वंश्चित हएत।
यएह सभ देखैत-सुनैत हमरा सबहक समय श्राकैल जाइत छल। १५ अगस्तक स्वतंतता श्द्रवस समारोहक अवसरपर हमरा लोकश्रा

पुन: भारतीय कन्सुलेट जेनरलक ओइठाम पहुँचलौ, जैठाम झण्डोतोलन भेल आ भारतक राष्ट्रपति महोदयक संदेश पढ़ि कऽ सुनौल गेल। तदुपरान्त अनुष्ठान भोजन भेल एवं आपसी गप सभ सेहो भेल। कार्यक्रमक समापनक बाद नगर भ्रमण करैत हम सभ सल्जवर्गक हेतु प्रस्थान केलौं।

सल्जवर्ग आस्ट्रीयाक चारिम सभसँ पैघ शहर अछि। द्वितीय विश्वयुद्धक दौरान ७६०० घर ध्वस्त भऽ गेल ओ ५५० लोक मारल गेला। शहरक अधिकांश घर ध्वस्त भऽ गेल। द्वितीय विश्वयुद्धक बाद सल्जवर्गसल्जवर्गराज्यक राजधानी बनल। विश्व प्रसिद्ध गायक मोजाटक जन्म अही शहरमे भेल छल। २७ जनवरी २००६क मोजाटक २५० मा जन्म समारोह धूम-धामसँ मनौल गेल छल। हम सभ मोजाटक घर देखए गेलौं। ओइ घरके अद्भुत रूपसँ सुरक्षित राखल गेल अछि। घरमे माजाटद्वारा प्रयुक्त किछु वाद यंत सभ लोकक दर्शनार्थ राखल अछि।

मोजाटक देहान्त मात्र ३५ वर्षक आयुमे भऽ गेल परन्तु एतबे कम समयमे ६०० सँ अधिक संगीतक रचना केला आ पाश्चात्य कलात्मक संगीतपर अमिट छाप छोड़ि गेला।

१५ अगस्त २००९ क ८ बजे राति होइत निकलि, झमारल हमरा लोकनि लुब्लियाना आपस एलौं आ संस्थानिक छात्रावासमे रात्रिक भोजन करि विश्राम केलौं।

१६ अगस्त (२०१६)के भोरे सात बजे हम सभ बससँ वेनिस देखबाक हेतु विदा भेलौं। इटलीक पूर्वोत्तर भागमे ११७ छोट-छोट टापूसँ आच्छादित 'वेनिस'शहर पूल द्वारा एक-दोसरसँ जोड़ल अछि। वेनिसक अवादी लगभग ५५ हजार छल।

लुब्लियानासँ वेनिस जाइत काल १८ किलोमीटरक आवा-जाहीमे लगभग

३००० गुि ा सभसँ जुजरए पि ल। बीचमे बडवस्ि ान अछि जेतए द्वितीय विश्वयुदक दौरान ११५ सैनिकके गाडि देल गेल छल। असलमे द्वितीय विश्वयुद ओइठामक लोकक मोनमे गडि गेल अछि। चाहे, अनचाहे लोक ओइ युदसँ जुि ल घटनाक गप्प करए लगैत छल।

दच्छिन दिस आल्प्स पहाि ी केत देखाइत छल। शहरमे पवेश हेतु बसके ४०० यूरोडालर आ पार्किंग हेतु ४० यूरोडालर देबए पि ल। रस्तामे मकई, जौ,अंगुरक जबरदस्त खेती देखलौ। जेतए तक दृष्टि जाइत, हरियर कंचन देखाइत।

वेनिस शहर तँ जेना पानिमे डुबल रहल अछि। एक घरसँ दोसर घर जाइले पूलक सहारा लेमए पि ैत। जेतए पूल नहि अछि ओतए नाहसँ लोक एकठामसँ दोसरठाम जाइत अछि। जेना अपना सबहक ओतए साइकिल रहैत अछि, तहिना ओइठाम लोक सभ नाह रखैत अछि। वेनिए-क कलात्मकता एवं शिल्पकारी अदुत अछि। आश्चयवहोइत अछि जे ई शहर पानिमे डुबल रहएक ने जाइ छइ। मध्यकालीन समयमे वैनिस आर्थिक एवं सामुद्रिक पर्यावरणक केन्र छल। रेशम, मसाला एवं अनाजक पचुर मातामे व्यापार होइत छल। ९ वी सँ १७वी शताब्दी धरि वेनिस पि म अन्तराष्रीय आर्थिक केन्र छल जइ कारणसँ ई शहर सदिखन आर्थिक र पसँ समृद रहल।

तेरहम शबदीमे ऐठाम ३७ हजार नाविक ३००० जहाजके चलबैत छला। वेनिस अपन स्वतंत अवधिक दौरान गणराज्य बनल रहल। हलाकि बेनिसक लोक आमतौरपर र ढिवादी रोमन कैि लिक रहए मुदा धार्मिक कटरता एवं पाखण्डक होतए चलन नहि रहए।

१३४८ ई.मे प्लेग ि ल गेल जइसँ भयंकर मृत्यु भेल। १५७५ सँ १५८४ क बीच ि र ई बिमारी ि लल जइमे पचास हजार आदमी

मारल गेल। १६३० ई.मे ि र प्लेग पसरल जइमे बेश्नासक एक लाख पचास हजार आदमी मारल गेल। नेपोश्नायन बोनापाटव संगे युदक बाद वेश्नासक स्श्नि श्नामे कएक बेर उठा-पटक होइत रहल। वेश्नासके महल सभक नीव लकि ीक बनल अश्छ। ई लकि ी सभ सैकि ी वषबँ पाश्नामे डुमल रहलाक बादो खरापनश्ह भेल अश्छ। वेश्नासमे दुपहरक भोजन एकटा भारतीय भोजनालयमे छल। ओहूठाम पहुँचक हेतु हमरा सभके नाहक मदैत लेबए पि ल रहए। भोजनक पछाइत हमरा लोकश्न जहाजमे बैस कऽ मुरानो, वुरानो एवं टासोका दीप घुमैले श्नकैल गेलौ। मुरानोमे शीशा बनेबाक पुरान परम्परा अश्छ।

वुरानोमे रंग-श्नरंगीघर एवं हि किरघाक सामानक पचूरता बुझाएल। टासोका दीपपर ऐश्नाहाश्नक एवं कलात्क हमत्वक केतेको उदाहरणक संग अत्याधुश्नकताक पभाव देखबामे आएल। जहाजपर बैसल अनश्नश्नत संख्यामे लोकके जल-ि ि करैत देख, ओइठामक लोक सभके जीबाक अन्दाज अदुत छल।

ऐ पकार घुश्न-श्नि र हम सभ एक बेर ि र ९ बजे राश्नामे कश्नयाना स्श्नित संस्ि ानक छाता-वासमे राश्ना श्नशामक हेतु पहुँचलौ।

एवम् पकारेण श्नयाना, झुश्नख एवम् वेश्नास सश्नत आसपासक पमुख स्ि ान देख-सुश्न लेलाक बाद १७ अगस्तसँ २१ अगस्त २००९ तक संस्ि ानमे सावबजश्नक महत्वक अनेकानेक श्नषय सभपर भाषण भेल। जइमे सम्बन्श्नत श्नषयक शीषबश्न ि श्नदान सभ भाग लेला। संगश्ह लुश्नयानाक नगरपाश्नका, ब्लेड झील एवम् कुन्जक भमण सेहो भेल। स्लोवेश्नया स्श्नित श्नश वेपार केन्र सेहो देखबाक हेतु हमरा लोकश्न गेलौ।

२१ अगस्त २००९ क पश्नाकण कायबि मक समापश्नाक संग सभ

गोटेके पमाण पत देल गेल। राश्चमे संस्ानिक डायरेक्टर जेनरल दारा श्चदाइ-भोज देल गेल। ओइमे संगीत (ऑकेस्रा)क कायिम सेहो छल। श्चकछु गोटे अपनो गीत गौलैन। अदुत महौल छल। केतेक हृदयसँ हमरा लोकश्चाक श्चदाइ भेल, तेकर वणबा करब कश्चन। २२ अगस्त २००९क शश्चा श्चनक गप छी। संस्ानिक श्चिया-कलाप संपन भऽ गेल छल। आपसी याता २३ अगस्त २००९क छल। तँए ओइ श्चनक उपयोग घुमबा श्चकखामे भेल। हम सभ गोटे श्चश्व पश्चद पाल्टोजना गुिा घुमए गेलौ। जमीनक अन्दर बनल ई गुिाके पैछला २०० सालक दौरान ३६ करोि लोक देख चूकल अश्छ। ऐ गुिाक यातामे डेढ़ घन्टा समय लगैत अश्छ। सुरंगमे बनल रस्ता, दीघा एवं हॉल सबहक शृखला देखैत बनैत छल। गुिाक अन्दर घुमबाक हेतु छोट सन रेलपर चढ़लौ जे छुक-छुक करैत हमरा सभके गुिाक आरामसँ भमण करा देलक। उपरोक्त भमणक मागदशबा श्चशक अनेकानेक भाषामे उपलब्ध छल।

ओइ गुिाके देखला, घुमलाक बाद जे मोनपर छाप पिल से अखनो अश्चट अश्छ। कला एवम् पुरषािक अदुत संगम अश्छ ओ गुिा..!

२२ अगस्त २००९क भोरे हम सभ कश्चयाना हवाइ अडडापर रही। ओइठाम वायुयानमे संवार भऽ पेश्चक हेतु श्चदा भेलौ। रस्तामे सभ यातीके जलखै देल गेल। घन्टा भश्चक ई लघु याता देखैत-देखैतमे बीत गेल।

िर हम सभ पेश्चस हवाइ अडडापर उतरलौ। वार-वार श्चदायत देल गेल जे अपन समानक सावधानीसँ रका कएल जाए कारण ओइठाम उचका सभ तुरंत समान गाएब कऽ दैत अश्छ।

हवाइ अडडासँ बाहर श्चकैलते हमरा लोकश्चाक बस तैयार रहए। सभ अपन-अपन समान रखलक आ बस दारा नगर भमणपर श्चदा भेल।

संगमे एकटा मार्गदर्शक सेहो छल जे जगह-जगह अबैबला प्रमुख-प्रमुख वस्तु आ स्थानक सबहक परिचय करबैत रहल।
फ्रासक राजधानी पेरिसक 'इफिल टावर' विश्व प्रसिद्ध अछि। हमरा लोकनि ओइ टावरपर चढ़लौ आ बेरा-बेरी पेरिस शहरक विभिन्न भागक फोटो टावरपर सँ खिचलौ। टावरक ऊपर तक चढ़बाक हेतु सप्टक बेवस्था छै किंवा पएरो सिढ़ीक माध्यमसँ ओइपर चढ़ि सकै छी। इफेल टावरक नाओं ओकर निर्माता अभियंताक नाओंपर पड़ल अछि। ११८७-८९ ई.क बीच निर्मित एक इफेल टावरक ऊँचाइ ३२४ मीटर अछि। ऐ टावरपर चढ़ि, घुमि हमरा लोकनिके पेरिस शहरक विहंगम दृष्य भेटल। अद्भुत शहर अछि, जइमे लगभग एके रंग ऊँचाइक महल सबहक भरमार अछि। इफेल टावरक चाच्चामे कएटा भारतीय सभ छोट-मोट समान सभ बेचैत भेटला।
पेरिसक सीन नदीपर ३७ टा पूल पेरिसमे अन्दर बनल अछि। ई नदी पेरिसक मुख्य वेपारीक जलमार्ग अछि। पेरिस शहरमे प्रयुक्त पानिक आधा भाग अही नदीसँ अबैत अछि। गर्मीक समयमे एतए यातीगण विशाम कए अद्भुत आनन्दक अनुभव करै छैथि।
हमर एकटा संगी साल भरि पेरिसमे रहल रहैथि, तैयो केतेको चीज नहि देख पाएल रहैथि। हम सभ तँ मुश्किलसँ बारह घन्टामे पेरिसके देखए चलल रही। जाहिर छै, केतेक देख सकितौ। तथापि मोटा-मोटी प्रमुख स्थान सभ लग बस रोकैत छल आ हमरा लोकनिक गाइड यथा साध्य ओइ विषय वस्तुक इतिहास एवम् वर्तमानसँ परिचित करबैत छला।
नेपोलियनक घर सेहो हम सभ देखलौ जे आइ-काल्हि स्मारक भऽ गेल अछि। दिनमे भोजनक हेतु एकटा पाकिस्तानी भोजनालयमे बेवस्था छल, मोन छह-पाच करैत रहए जे खाइ आकि नहि खाइ,

मुदा भूख बहुत लागि गेल छल। अस्तु भोजनमे शामिल भेलौं। पूणतः भारतीय शाकाहारी एवम् अति स्वादिष्ट भोजन कऽ मोनमे जे संतुष्टि भेल तेकर वर्णन नहि।

भोजनोपरान्त हम सभ पुन: घुमए आकैल गेलौं। पेरिसक मेरो देखलौं। दुनियाक सवोत्तम मेरोमे सँ एक पेरिस मेरो रेल मानल जाइत अछि। ३०० कि.मी. लम्बा रैकपर करीब-करीब ३०० स्टेशनपर ई ठाढ़ होइत अछि।

मेरोक अलावा बस, टैक्सी एवं नाह दारा शहरक यातायातक उतम पबन्ध होइत अछि। शहरमे किरायापर साइकिल देबाक सेहो बेवस्था अछि, जइले मामूली शुल्क लेल जाइत अछि।

सायंकाल हमरा लोकनि आपस पेरिस हवाइ अड्डापर पहुँच गेल रही। ओइठाम सूर्यास्त आठ बजे तक नहि भेल रहए। तखने हम हवाइ जहाजपर अपन देशक हेतु उड़ि गेलौं। अकासमे लटकल सूर्य भगवानके बड़ीकाल तक देखैत रहलौं...।

अमृतसर याता

पंजावक पैघ शहरमे अमृतसरक गणना अछि। ऐठाम पहिने तुँग नामक गाम छल। सिखक चारिम गुरु रामदास १५७४ मे ७०० रपैआमे तुँग गामक लोकसँ जमीन किनलैि। ओइ साल गुरु रामदास ओतए घर बना कऽ रहए लगला। ओइ समयमे ओकरा 'गुरु दा चक' कहल जाइत छल। बादमे एकर नाम 'चक राम दास' भऽ गेल।
अमृतसर पहिने 'गुरु रामदासपुर'क नाओंसँ जानल जाइत अछि। पंजावक राजधानी चण्डीगढ़सँ ई २१७ किलोमीटर दूरीपर एवम् लाहौरसँ मात ५० किलोमीटर दूरीपर अवस्थित अछि। भारत-पाकिस्तानक वाधा वोडर ऐठामसँ मात २८ किलोमीटर अछि।
कहल जाइत अछि वाल्मिकी ऋषिक आशम अमृतसरक रामतीर्थमे छल। लवकुश अशमेघ यजक घोड़ाके ओतइ पकैि लेने छला आ हनुमानके एकटा गाछसँ बान्हि देने रहैि। ओही स्थानिपर दुर्गियाना मन्दिर बनल अछि।
तेसर सिख गुरु अमरदास जीक परामर्शपर चारिम सिख गुरु रामदासजी अमृत सरोवरक खुनाइ पारम्भ केलाह। ऐमे चार कात पजेबाक घाटक निमाण पाचम सिख गुरु अर्जुन देवजी दारा १५ दिसम्बर १५८८ क पूरा कएल गेल। वएह हरमन्दर साहेबक निमाण पारम्भ केलैि। १६ अगस्त १६०४ क ओइमे गुरु गन्थि साहेबक स्थापना भेल। सिख भक्त बाबा बुधाजी ओइ मन्दिरक पथिम पुजेगरी नियुक्त भेल रहैि।
हरमान्दर साहेबक निमाणमे सवर्वधर्मसभ भावक विशेष ध्यान राखल गेल। सिख धर्मक ऐ भावनाक अनुरुप गुरु अर्जुन देव मुस्लिम सूफी सन्त हजरत मिआँ मीरके ऐ मन्दिरक शिलान्यासक हेतु आमंत्रित

केने छला। सन् १७६४ ई.मे जस्सा सिंह अहलुवालियाक आन-आन लोक सबहक सहयोगसँ एकर जीर्णोद्धार केलाह। उन्नीसमी शताब्दीमे महाराजा रणजीत सिंह ७५० किलोगाम सोनासँ ऐ मन्दिरक ऊपरी भागके पाटि देलाह जैपर एकर नाओं ‘स्वर्ण मन्दिर’ माने ‘गोल्डेन टेम्पल’ पड़ि गेल।

हरमन्दिर साहेबक स्वर्णमन्दिरमे पएर रखैत गजब आनन्दक अनुभूति भेल। सा -सु रा चक-चक करैत परिसर। सुरम्य वातावरणमे भजन कीर्तनक संगीतमय मधुर ध्वनि। चार कात पसरल सैक ाक तादादमे सेवादारक जत्ा सभके देखैत बनैत छल।

समूहमे जीव, सेवा करब ओ समन्वय पूर्वक सबहक स्वागत करब, ऐ वस्तुक पत्यक उदाहरण हरमन्दर साहिबमे भेटैत अछि। मन्दरमे पवेशसँ पूर्व जूता निकालब आ मा झापब अनिवार्य अछि। मा झापबाक हेतु मन्दिर पवन्धक केर तर सँ वस्त देल जाइत अछि। विशाल तलाव स्वच्छ जलसँ भरल अछि। ऐ तालावक नाओं अमृत सरोवर अछि। सरोवरक चार कात लोक परिभमण करैत अछि। सरोवरसँ जु ल अछि हरमन्दिर साहेब।

मन्दिरमे निरन्तर गुणवाणीक पाठ होइत रहैत अछि। चार कातसँ मन्दिरक दरबाजा खूजल अछि। तात्पर्यवजे ओइठाम सबहक स्वागत अछि। हरमन्दिर साहेबमे कोनो धर्मक लोक जा सकैत अछि। ऐ मामलामे ई अद्भुत अछि। ऐठाम निरन्तर लंगर चलैत रहैत अछि। अनुमानत: पति दिन एक लाखसँ तीन लाख लोक तकके मुफ्तमे लंगर खुआबक बेवस्ा ऐठाम रहैत अछि।

हरमन्दिर साहेब हम दू बेर गेल छी। एकबेर अधिकारीक पशिक्षण मण्डलक संग आ दोसर बेर शीमतीजीक संग। दुनू बेर नीकसँ दर्शन भेल। स्ानीय पशासनक सहयोग रहबाक कारण मन्दिरमे हमरा

सभके सरोपा देल गेल। सरोपा देबक माने बहुत इज्जत देब भेल। अमृतसरक पश्चाद स्वणव मन्दिरक दशनक बाद हमरा लोकक्षा ओइठामसँ सटले जाश्चयावाला बाग गेलौ। ओइ वागक इश्वाहास केकरो नश्च बुझल छइ। श्वश्चश सामाज्यक भारतमे कएल गेल ई ि ितम घटना अछि। १३ अपैल १९१९ क श्वश्चस हुकुमतक श्वरोधमे स्वर उठाबक हेतु जमा भेल हजारो लोकपर १० श्वनट धश्च धुँआधार गेली चलौल गेल, जइमे एक हजार लोक मारल गेला आ १५ साए लोक घायल भेला। सरकारी आँकिमे मृतक एवम् घायलक संख्या बहुत कम िमश: ३६९ एवम् २०० मात देखौल गेल मुदा ओ कोनो श्वसावसँ सही नश्च लगैत अछि। गोली काण्डक बाद ओइ मैदानमे लाश उठौश्वहार श्वकयो नश्च छल। सैकिा आदमी जान बँचेबाक हेतु ओइठाम स्श्वित एकटा इनारमे कुश्च गेल। बादमे १२० टा लाश ओइ इनारसँ श्वकालल गेल। धुँआधार चलल गोली सबहक श्वशान अखनौ ओइठामक देवाल सभपर देखल जा सकैत अछि।

ओइ श्वन बारहे बजेसँ लोक सभ बैसारमे भाग लेबाक हेतु ओइ मैदानमे जमा होमए लागल छल। बहुत रास श्वदोस लोक उत्सुकतावश सेहो ओइठाम जमा भऽ गेल छल। मुदा केकरो ई अन्दाज नइ छेलै जे श्वश्चश हुकुमत एतेक ववबतापूणव काज करत! मुदा से भेल। श्वश्चश हुकुमतक श्वलाि केतेको पकारक दुघटनाक पछाइत राज्यमे माशल लॉ लागू छल।

१३ अपैल १९१९ क भोरे श्वश्चश हुकुमत घोषणा कए लोकके चेतौलक जे पाच आदमीसँ बेसी लोकक एकठाम जमा होएब गैरकानूनी अछि। मुदा बहुत लोकके एकर जानकारी नश्च भेलै आ जेकरा भेबो केलै से नश्च सोश्च सकल जे आदेशक उल्लंघनक एहेन श्वनासकारी हएत!

स्ािनीय िौजी एवम् असैश्चाक अश्चाकारीके जाश्चायावाला बागमे जमा होइत भीिक जानकारी १२ बजे भऽ चूकल छल। ओ सभ चाहैत तँ ओइ बैसारक शुर ए-मे श्चरोध कए सकैत छल, मुदा एकटा सुश्चाश्चित योजनाक तहत भीिके जमा होमए देल गेल आ श्चाना कोनो पूवव उदोषणाक भीिपर अन्धाधून गोली चलेबाक आदेश जनरल दारा दए देल गेल।

सभसँ दुखद तँ ई भेल जे गोलीक बौछारमे घायल लोक सभ तरपैत-तरपैत मश्च गेल आ श्चकयो ओकरा सभके असपताल उठा कऽ नश्च लऽ गेल। ऐ घटनाक अंजाम देश्चाहार जेनरल डायरेक्टरके जखन हंटर कमीशन पुछलक जे 'अहाँ घायल लोक सबहक इलाजक की बन्दोवस्त केलौ?' तँ ओ श्चालश्च्ज भऽ कहलक जे अस्पताल सभ खूजल छल। सही स्श्चिश्चा तँ ई छल जे बाहरमे कफ्र्यूवलागल छल तँए श्चकयो केतौ घुसश्चकयो नश्च सकैत छल। जनरल डायर उपरोक्त कमीशनक समक स्वीकार केलक जे ओ सोश्च-समैझ कऽ जाश्चायावाला वागमे गोली चलबौलैि। ओ चाश्चतैि तँ डरा-धमका कऽ भीिके भगा श्चतैि, मुदा िर ओ सभ एकत भऽ जाइत, आ श्चश्चश हुकुमतक वचश्च्वपर हँसैत।

एहेन ववश्च घटनाक चश्मदीद गवाह देबाल सभपर पिल गेली सबहक श्चाशान अखनौ देखल जा सकैत अश्च।

हम सभ चार कात देबाल सभपर पिल एहेन श्चाशान सभके सद: देखलौ गोलीक श्चाशान सभके श्चन्श्चत कए देल गेल अश्च। आ जइ इनारमे सैकिा आदमी कुश्च गेला आ जानसँ हाि धो लेलैि, सेहो 'शहीदी कुआँ'क नाओंसँ स्मारक भऽ गेल अश्च। ऐ काण्डमे शहीद भेल सैकिा लोकक यादगारमे ओतए स्मारक बनल अश्च जेकर उदाटन भारक पिम राष्रपश्च स्व. डॉ. राजेन्र पसाद सन् १९६३

मे केलाह।

अमृतसरक दशर्नीय स्थानमे दुर्गयाना मन्दिर पमुख स्थान रखैत अछि। मूलत: दुर्गामाताक मन्दिर हेबाक कारण एकर नाओं दुर्गयाना मन्दिर पड़ल मुदा ऐ मन्दिरमे आनो-आनो भगवान सबहक भव्य मूर्ति स्थापित अछि। ई मन्दिर अपन भव्यता एवम् अध्यात्मिक वातावरण हेतु सम्पूर्ण विश्वमे पसिद्ध अछि। देश-विदेशसँ हजारो तीर्थयात्री ऐठाम अबैत रहै छैथि। मन्दिर बहुत पुरान अछि। मूल मन्दिर सोलहम शताब्दीमे बनल छल। तेकर बाद सन् १९२१ ई.मे स्थानीय लोकसभाक मदैतसँ एकर जीर्णोद्धार कएल गेल। नव आधुनिक मन्दिरक उद्घाटन सन् १९२५ ई.मे पं. मदन मोहन मालवीय केने रहैथि। मन्दिरक द्वार चानीसँ बनल अछि।

पूरा मन्दिर चार कातसँ जलसँ घेराएल अछि। मूख्यत: मन्दिरक पागणमे पहुँचबाक हेतु पूल बनौल गेल अछि।

मन्दिरक बनाबट ओ साज-सज्जा स्वर्णमन्दिरसँ मिलैत अछि।

मन्दिरक पागणमे सीतामाता ओ हनुमानजीक मन्दिर अछि। सन् २०१३ सँ मन्दिर एवम् मन्दिरक आसपासक परिसरक जीर्णोद्धारक कार्यक्रम चलि रहल अछि जेकर पूर्णतापर मन्दिरक भव्यता ओ सौन्दर्य पराकाष्ठापर पहुँच जाएत।

कहल जाइत अछि जे लवकुश हनुमानजीके अहीठाम बान्हि देने रहैथि। अशमेध यजक घोड़ाके बान्हि देने रहैथि। लक्ष्मण, भरत, शतुध्न सभ एतइ पराजित भऽ गेल रहैथि। हुनका सभके जीएबाक हेतु देवता सभ अमृत अनने रहैथि ओ शेष अमृतके माटिमे गाड़ि देल गेल छल। जहूसँ ऐ शहरक नाओं अमृतसर पड़ल।

हम सभ अमृतसरक पसिद्ध दुर्गयाना मन्दिरमे घन्टो घुमैत रहलौं। पूजा-पाठ केलौं ओ एकर भव्यताक आनन्द उठेलौं। पं. मदन मोहन

मालवीयजीक बारम्बार ध्यान अबैत रहल जे ऐ मन्दिरके वर्तमान स्वरूपक नायक रहैथि।

घुमैत-घुमैत हम सभ थाकि गेल रही। रौद बहुत करगर रहइ। हमर श्रीमतीजी सेहो बहुत थाकि गेल छेली। अस्तु हम सभ ओइठामसँ सोझे सीपीडब्ल्यूडी गेष्ट हाउस स्थित अपन डेरा पहुँच गेलौं।

घर घुमैत काल रस्ता भरि सोचैत रहलौं जे एतेक भारी तीर्थस्थानमे जालियाँवाला बाग सन त्रासदी, ववर्रता, नरसंहार केना भेल? सही कहल जाइत अछि जे सत्ताक नशामे मनुख पिशाच भऽ जाइत अछि। ओकर मानवीय संवेदना नष्ट भऽ जाइ छइ। मनुख ओकरा लेल मात्र एकटा मशीन रहि जाइत अछि जे आदेशक पालन करैत-करैत अपनहि बन्धु-बान्धवक खूनक धार बहा सकैत अछि। जेना कि जालियाँवाला बागमे अंग्रेजी हुकुमत केलक। हिन्दू, मुसलमान, सिख आदि सभ धर्मक लोक लोकक खून एक भऽ गेल छल, जालियाँवाला बाग चिकरैत-चिकरैत कऽ कहि रहल छल-

“ऐ अत्याचारी निकृष्ट अंग्रेजी हुकुमत, आब बदास्त जोग नहि रहल। आब आर जुलुम नहि सहल जाएत..!”

जालियाँवाला बागक काण्ड सम्पूर्ण देशक आत्माके झकझोरि देलक। एकर बदलामे उधम सिंह विलायत जा कऽ माइकल डायरक हत्या कऽ देलक आ स्वयं फाँसी चढ़ि गेल।

दोसर दिन साझमे हमरा लोकनि बाधा वोडरपर होमएबला झण्डा उतारबाक कार्यक्रम देखए गेलौं। ओइ कार्यक्रमक आकर्षण अमृतसर गेनिहार प्रत्येक पर्यटकके रहैत छइ।

भारत ओ पाकिस्तानक सीमा सुरक्षा बलक जवान सभ नाना प्रकारक करतब करैत आगू-पाछू बढ़ैत रहै छैथि। कखनो टागके धराम-दे आगा तँ कखनो हाथिके थिरकबैत पाछा करैत ओ सभ एक-दोसरके

कखनो श्चनेह करैत तँ कखनो आिमण मुरामे आश्च जाइ छैि। अपना देशक लोक जेतेक बेर श्चन्दूस्तान श्चन्दावाद कहैत तेतेक बेर सटले सीमापर सँ ओइ देशक नारा सभ लगैत रहैत अश्छ। कुल श्चला कऽ सम्पूणववातावरण देश-भक्श्चसँ भरल रहैत अश्छ। उतेजक ओ भावुक महौलक वावजूद सैश्चक सभ संयत रहै छैि आ िमश: अपन-अपन देशक झण्डा उताश्च कऽ वधा बोडबक गेटके बन्द कऽ लइ छैि।

श्चशेष अवसर जेना ईद, श्चवाली आ दुनू देशक स्वतंतता श्चवस आश्चपर एक-दोसरके श्चठाइक श्चबबाक आदान-पदान सेहो होइत अश्छ। कुल श्चला कऽ ई कायिम दुनू देशक नागश्चकक वतश्चान पश्चस्श्चश्चपर सोचबाक हेतु मजबूर कए दैत अश्छ।

दुनू देशक लोक हजारोक तादादमे आमने-सामने बैसए आ शान्श्चपूणव महौलमे मनोरंजक कायिम देखए से अपना-आपमे एकटा श्चसाल अश्छ। भऽ सकैए एकर सकारात्मक पभाव दुनू देशक जनता ओ सरकारपर पिड़।

एवम् पकारेण अमृतसरक संश्चप्त पवासक अन्त भऽ रहल छल। हमरा लोकश्च पात भेने अमृतसर श्चल्ली शताब्दी एक्सपेस पकैि कऽ श्चल्ली श्चदा भऽ गेल रही। सुश्चधा सम्पन रुतगामी ई गािी जल्दीए घर पहुँच गेल आ हम सभ अपन याताक आनन्दक चचव करैत केतेको श्चन धश्च आनन्दमे रहलौ।

पश्चिल नौकरी

दथिभंगामे हम पाच सालसँ थकछु बेसीए थदन रहलौ। तीन साल तँ सी.एम.कौलेजमे पढ़ैत थवदािी रही। ओइ समय थवजान, कला, वाथाज्य सभ संकाय थमला कऽ एके कौलेज छल। सी.एम.कौलेज-दथिभंगासँ हम बी.एस-सी. (भौथाकी पथााष्ठा) पास केलौ। बी.एस-सी केला बाद आगू की करी ई समस्या छल। पीकािल थवलमसँ एबाक कारणे एम.एस-सी.क नामाकन सेहो बन्द भऽ गेल रहइ। ओहुना ओइ समैमे पढ़ाइ-थलखाइक केतमे सम्पूणव थवहारमे अराजकता छल। परीकामे नकल करब तािनकल कराएब दुनू गौरवक गप छल। थवदािी सबहक अथभभावक सभ पुजी पहुँचबैले जान लगौने रहैि। ऐ पथथस्थथमे थवहारक तेतेक बदनामी भऽ गेल छल जे सथलयो थवदािीक योग्यतापर पश्न थचन्ह लाथग जाइत छल।
ओइ समयमे डाक-तार थवभागमे दूरभाष थनरीक्कक पदक थवज्ञापनक थवजापन थनकलल रहइ। हम मधुबनी पोस्ट ऑथिसमे आवेदन-पतक लेल एकटा आगह पोस्ट काडघर थलथख खसा देथलऐ। थकछुए थदनमे आवेदन-पत पाप्त भेल।
आवेदन-पत पाप्त होइते भथर कऽ आइ.एस-सी.क अंक-पतक संग पठा देथलऐ।
आइ.एस-सी.क पाप्ताकक आधारपर ओइ पदपर चयन हेबाक रहइ। हमरा आइ.एस-सी. परीकामे बहुत नीक पाप्ताक छल। थकछुए मासक बाद हमरा पटना टेलीिोन थवभागसँ दूरभाष थनरीक्कक पदक हेतु थनयुक्थि-पत भेटल।
थनयुक्थि-पत भेटलाक बाद असमंजसक स्थथथि बथन गेल, कारण हम बहुत महात्वाकाकी रही। पैघ पदपर जेबाक इच्छा रहए, तइ हेतु

तैयारीक कार्यक्रम छल, मुदा हामि आएल लक्ष्मीके लात मारब नीक नञि, ई बात केतेको गोटे कहैत। अछताइत-पछताइत ओइ आयुक्तिके स्वीकार करैत अगस्त १९६३मे राची पश्चिक्षण हेतु चल गेलौ।

राची टेलीफोन एक्सचेजक भूतलपर पश्चिक्षणक बेवस्था छल। ओइ पश्चिक्षणमे कएटा नीक-नीक विद्यार्थी सभ छला। कए गोटा एम.एस-सी. सेहो केने रहैत। सरकारी नौकरीक बात छेलइ। सभ आँखि मूनि कऽ पकैत लेलक।

राचीमे छह मासक पश्चिक्षणक बाद हमर तीन मासक बेवहारिक पश्चिक्षण-लहेरियासराय टेलीफोन एक्सचेजमे भेल। ओइ ठिममे बलभरपुर, लहेरियासरायमे एकटा विद्यार्थीक संग डेरा रहए। एक दिन ओ विद्यार्थी गाम चलि गेला आ हमरा कोठरीक कुंजी नञि रहए। लातसँ तेतेक जोरसँ केबामि धका मारलिऐ जे टुटि गेल। बादमे मकान मालिक नाराजगी व्यक्त केलाह, मुदा बात जेना-तेना शान्त भऽ गेल।

ओइ पश्चिक्षणक दौरान िगुआमे हम गाम एलौ आ २-३ दिन ठिकल रहि गेलौ। िन विभागमे झाजी इन्जीनियरिंगक सुपरवाइजर रहैत। वएह हमर हाकिम छला। हमरा डराबए लगला। की जे पश्चिक्षण अधूरा रहि गेल, बेक लागि गेल। मुदा असलमे किछु नञि भेल। हमर पश्चिक्षण समयसँ पूरा भेल आ हम जमशेदपुरमे ३ मई १९७४क पदभार गहण कएल। ओहीठाम एकटा आर संगी पदभार गहण केलैत। सरकारी काज करबाक हमरा किछु अनुभव नञि छल। एसडीओ िन्स बि करगर अधिकारी रहैत। अपन डाटसँ अधीनस्थ सबहक सीटीपीटी गुम केने रहैत छला।

जमशेदपुर ओइ समयमे बिहारक सुव्यवस्थित एवम् सा-सुिरा शहरमे मानल जाइत छल। छुटीक दिन शहरमे केतौ-केतौ घुमबाक कार्यक्रम

बरबैर बनबैत रही। साक्ची ओ बिष्टुपुरमे तरह-तरहक दोकान सभ छेलइ। जुबली पाकमे घुमब आनन्ददायी छल। ओइ पाकमे टहलबसँ हम आनन्दक अनुभव करैत रही। एक दिन मौका पाबि कऽ हम टाटा स्टीलक अन्दरसँ देखबाक अवसर सेहो पाप्त कएल। अति उच्च तापक्रमपर लोहाके गला कऽ रव्य र पेमे एकठाम-सँ-दोसरठाम जाइत देखलौ। भयानक र पसँ लाल रहैत छल ओ तरल लोहा।
हमर र मेट सिगरेट पीबैत छला। शुर क एक मास तँ कहुना कऽ हुनका संग बितौल मुदा आगा बहुत दिन धरि हुनका संग चलब सम्भव नहि बुझाएल। एक दिन हम हुनका स्पष्ट कहि देलिऐन जे या तँ अहा सिगरेट छोड़ू नहि तँ अहाँके हम छोड़ि अलग डेरा लऽ लेब। ओ सिगरेट नहि, छोड़ि सकला आ हम अलग डेरा लऽ लेलौ।
जमशेदपुरमे रहैत केन्रीय सचिवालय सहायक (संघ लोक सेवा आयोगक) परीक्षा हेतु छुटीक काज छल। अधिकारीगण छुटी मना कऽ देला। अन्तमे हम बिना अनुमति लेने ओतए-सँ घसैक गेलौ आ करीब एक मासक बाद परीक्षा दऽ कऽ आपस एलौ।
एसडीओ सिन्हा साहेबके मोटर साइकिलपर अबैत देखलयैन, हुनका देखते देबाल फानि कऽ एकटा दोकानपर बैस गेलौ। मोनमे तरह-तरह केर आशंका रहए। हम बाटे तकैत रही कि हुनकर बुलाबा आबि गेल आ तरह-तरह केर उपदेश ओ देलाह।
एवम्-पकारेण लगभग आठ मास धरि ओतए नौकरी केलौ, पछाइत बाबूजीक पयाससँ हमर स्थानान्तरण जमशेदपुरसँ डीइटी दरभंगाक अधीन भऽ गेल। मुदा एसडीओ सिन्हा कार्यमुक्त करैमे नाकर-नुकुर करैत छला। हम जल्दीसँ जल्दी दरभंगा आबि कार्यभार गहण करए चाही। हमर सहकमीक सेहो स्थानान्तरण दरभंगे भेल रहैन। ओ पहिने कार्यमुक्त भऽ ओतए पहुँच गेल छला। हमरा लटकौने छेलैथ।

पात:काल भोरे-भोर हम डीइटीक डेरापर पहुँचलौं। ओहीठाम लेखाधिकारी सेहो रहैत छला। हम हुनका सभटा बात कहलयैन। ओ बहुत सहृदय बेकती छला। हमरासँ पुछलैन जे आखिर अहाक बदली केना भेल। तँ कहलयैन जे बाबूजी पटना जा कऽ किछु पयास केलैन जइसँ हमर स्थानान्तरण दरिभंगा रिवीजन भेल अछि। हमरा दरिभंगा जाएब बहुत जरूरी अछि। आदि-आदि। सभ बात सुनि ओ आशासन देला जे अहाक आइ अबस्स कार्यमुक्ति कए देल जाएत। भेबो कएल सएह।

कार्यालय खुजिते ओ एसडीओ हुनके फोनपर आदेश देलखिन जइसँ ओ [illegible] गेला। मुदा हमरा ओइ दिन ओइठामसँ कार्यमुक्त कए देल गेल।

साझमे बससँ दरिभंगा बिदा भेलौं। दरिभंगा पहुँचलापर पता लागल जे दुइएटा जगह खाली छइ। एकटा जयनगरमे आ दोसर सुपौलमे। जयनगरक खाली पदपर हमर संगी अपन जोगार लगा लेलैन। आब रहि गेल सुपौल। कोनो दोसर उपाय नहि देख हम सुपौलक रस्ता पकड़लौं। सहरसा वोट सुपौल रेनसँ जाएब ओइ समयमे बेस टेढ़ काज छल। तथापि ओतए पहुँच कार्यभार ग्रहण कएल।

छोट-छीन टेलीफोन एक्सचेज छल जइमे किछु ऑपरेटर, एकटा मेकेनिक पहिनेसँ कार्यरत छल। हम ओतए वरिष्ठतम बेकती छेलौं। सहरसामे उच्च अधिकारी बैसैत छला। फोन दारा तरह-तरह केर आदेश पठबैत रहै छेलखिन।

सुपौल छोट-छीन नीक शहर बुझाएल। ओइठामक मारवाड़ी बासाक उतम ओ स्वादिष्ट भोजनक स्मरण कए अखनो जीहमे पानि आबि जाइत अछि। ओइठाम रेलबे स्टेशनक ठीक सामने लाल कोठीक एकटा कोठरीमे हम आ पोस्टमास्टर डेरा लेने रही। पोस्ट मास्टर

बहुत कमछ छला। भोरे जाथि तँ देर राथि ाकिल-झमारल अबैि। हुनका संगे तेकर बाद हँसी-ठठा होइत छल।

ओही डेरामे रहैत हमरा पोसुआ कुकुर काथ्ट लेलक आ दोसरे थ्दन ओ कुकुर मथ्र गेल। आब तँ बि थ्चन्तामे पथ्ि गेलौ। कुकुरक नमगर-नमगर चौदहटा सूई पेटक अँतरीमे लगबए पिल। एक थ्दन सुई लगथ्बते काल एकटा घटक आथ्ब गेला। सूई लगबैत देख लेला से थ्चन्तामे पथ्ि गेलौ। ओना, कोनो कारणसँ ओ कि नथ्ह पटल। थ्कछु थ्दन बाद हमर ससुर अपन अनुज ओ एकटा आर बेकतीक संग थ्ववाहक िममे हमरासँ गप करए टेलीिन एक्सचेज- सुपौल आएल रहैि। हुनका सभके यिसम्भव स्वागत कएल। थ्ववाहक आहटसँ मोनमे पसनता छल। जे जे पुछला, सभ उतर देथ्लऐन। साझमे हमर थ्पथ्ताया ससुर डेरापर सेहो एला। डेराक हालत तँ वणथ्न जोग नथ्हये छल। ऊपरसँ हमरा गंजी मोइल छल से बात हमर ससुरके पता लगलैन। ओ थ्चन्तामे पथ्ि गेला, कारण ओ स्वयं साि-सुिरा रहैत छला।

सुपौलक दही आ पेरा बि नामी छल। अथ्ह स्वाथ्दष्ट पेरा खेबाक स्मरण होइते अखनौ मुँहमे पाथ्न आथ्ब जाइत अथ्छ।

थ्कछु थ्दनक बाद हमर स्िानान्तरण सुपौलसँ दथ्िभंगा डीइटी ऑथ्िसमे पीआइक पदपर भऽ गेल। ३ जून १९७४ क हम डीइटी दथ्िभंगाक कायालयमे पदभार गहण कए जखन गाम पहुँचलौ तँ दरबज्जापर अलगे पकारक गहमा-गहमी पसरल छल। हमर संगी एवम् थ्मत- लाल बच्चा (स्व. पो. थ्वष्णु कान्त थ्मश) कहला जे हमर थ्बआह ठीक भऽ गेल अथ्छ। िमश: सभटा जानकारी भेटल। पात भेने माने ४ जून १९७५ के हमर थ्बआह छल। कोनो जानकारी नथ्ह हेबाक कारण हम ओही थ्दन कायालय जा एकाएक थ्ववाहक हेतु

छुटीक आवेदन देखाऐ आ तखन राश्मामे आठ बजे दश्भिंगासँ गाम एलौ... ।

कायालयमे ई समाचार श्वजलौका जका पसैर गेल। चार कातसँ वधाइ दैत सहकमी लोकश्वा हमर आनन्दके कएक गुना बढ़ा देला।

गाम पहुँचते श्ववाहक तैयारीमे लाश्वा गेलौ। गािी सभ लागल छल। श्वरयाती तैयार छल आ बरक पतीक्रा छल। बरके अश्वते धराधर श्वध सभ पूरा कएल गेल।

हमर श्वश्वाया ससुर हिधरीक हेतु आएल रहैि। ओ श्वच्चे दरबज्जापर धोती-कुता पश्वरने हमर पतीक्रामे बैसल रहैि। आर-आर लोक सभ दरबज्जापर मुस्तैद छला। हमर श्वतगण सभ सेहो मौजूद छल।

हिधरी भेल। बश्वयाती सभ चटपट गाििमे बैसल। कुल १९ गोट बश्वयाती छल जे ओइ समयक श्वसाबे बेसीए छल। नश्व तँ पश्वने पाचटा-सातटा बश्वयाती पयाप्त होइत छेलइ। बश्वयातीक संख्या लऽ कऽ जे अपना समाजमे रेबाज बदलल अश्व से दुभाग्यपूणव़ कारण सैकिक तादादमे गाम-गामसँ बश्वयातीके लाश्व कऽ कन्याक श्वताक मािपर पटैक देब कोनो वुश्वमानी नश्व कहल जा सकैत अश्व। व्यिक परेशानीक अलाबा आश्विक कश्वा सेहो होइत अश्व, जेकर कोनो केकरो लाभ नश्व।

..ओइ समयमे सीश्वत संख्यामे बश्वयाती जाइत छल तँ ओकर शोभे अलग रहै छेलइ। एक-एक बेकतीपर पयाप्त श्वयान देल जाइत छल। बश्वयाती सबहक बेकतीगत पश्वचय होइत छल। आब तँ िकक िक बश्वयाती जाइ छैि आ दुपहश्वये-राश्वायेमे खुआ-श्वआ कऽ श्वदा कए देल जाइत छैन।

हमरा लोकश्वा दस बज राश्वामे पण्डौल डीह टोल पहुँचलौ। गीत-

नादक मनोरम वातावरणमे विवाहक पक्रिया सम्पन भेल। ऐसँ जीवन संगिनीक रूपमे आशा मिश्र भेटली जे ओइ समयमे मात १७ बखक छेली आ हमर उमेर २२ बखवछल। अदतन हमरा जिनगीमे ओ संगे सुख-दुखक सहभागी छैि जइसँ हम नाना पकारक झंझावातसँ उवैर जीवनक ऐ पिविपर ठाढ़ छी।

लगभग दस दिनक अवकाश समाप्तिपर छल। विवाहोपरान्त हम गाम आएल रही। माय केतेक पसन भेल रहैि तेकर वणन करब असम्भव अछि। हमर पिताआइन सभ सेहो उत्सुकतावश कनिया ओ ओकर परिवारक विषयमे पुछैत रहली...।

पात भेने कायालय गेलौ तँ सभ मिकयो हमरा उत्सुकतासँ हाल-चाल पुछैत, िाटो सभ देखैि। ऐ तरहे केतेको दिन बीति गेल।

एक दिन कायालयसँ झटैक कऽ दरिभंगा बस स्टेण्डपर बस पकिए जाइत रही कि पाछूसँ अबाज सुनबामे आएल-

“मिसरजी! सासुर जा रहल छी की?”

डेगक गतिक अनुमान कए ओ हमर सासुरक याताक अन्दाज लगा लेला जे एकदम सही छल। दरिभंगा कायालय लगमे रहबाक कारण ओइठामसँ पण्डौल जाएब असान रहै छल। छुटी नहि लेबए पिैत छल।

डीइटी दरिभंगा कायालयमे हम करीब दू साल काज केलौ। काज तँ कोनो खास नहि छल। पुरान टेलीिानिक बकाया असूली करक रहै छेलइ। जइ लेल हमरा लगभग पूरा उतर बिहार मुफ्त भमण करबाक हेतु पास भेटल छल। ओना, ओइ पासक उपयोग मिकयो आन करैत छल आ हम अपन समय अपन समय पतियोगिता परीक्षा सबहक तैयारीमे लगबैत छेलौ।

पढ़ाइ-लिखाइ कखनो व्यिवनहि जाइत छइ। सन् १९९७ क केन्‍रीय

सचिवालय सेवा हेतु आयोजित संघ लोक सेवा आयोगक एसीसटेन्ट गेडक परीक्षा हम पहिले पयासमे पास कऽ लेलौ। किछु दिनमे नियुक्ति-पत सेहो आबि गेल।

नियुक्ति-पत हाथिमे अबिते मनमे उठल- कायालय, काज, स्थान सभ परिवर्तित भऽ जाएत। ई सोचि मोन आगू-पाछू करए लागल। अन्ततोगत्वा निर्णय कएल जे दिल्लीए जेबाक चाही। ओइठाम अपना तँ जे हएत से हएत मुदा बच्चा सभके पढ़ै-लिखैक बेहतर अवसर भेटत। आदि-आदि।

सोच-विचारक बाद हम दरभंगाक दूरभाष निरीक्षकक पद छोड़ि दिल्ली स्थित केन्रीय सचिवालय सेवाक सहायकक पदभार गहण करबाक निर्णय कएल। ई निर्णय केतेक सही रहल, केतेक नहि तेकर विचार-विमशक आब समय नहि रहल। जे भेल से नीके भेल। गते न सोचामि कृतं न मन्येत। सही कहल गेल अछि जे विवाह भावी जीवनक दिशा दसा तय करैत अछि। यदपि हमरा लोकनिक विवाह अभिभावक गण तय केने रहैथि, मुदा हम आब कहि सकैत छी जे ओ सभ बहुत बुद्धिमतापूर्वक निर्णय केने छला। जीवन भरिमे हर समय हमर शीमती हमर संगे नहि देलैन अपितु जीवन मागके अपेक्षाकृत सुगम सेहो करैत रहली। हुनकर रचनात्मक सोच एवम् शान्त मस्तिष्कक लाभ हमरा भरपूर भेटैत रहल अछि। आ से घरोमे आ ऑफिसोमे। केतेको जटिल समस्या सभपर हुनकर राय बहुत कारगर होइत रहल अछि। बहुत सन्तोष पूवक सीमित आमदनीमे इमनदारीपूणवक जिनगी केना जीबी तेकर ओ उदाहरण छैथि। हमर सासुर पण्डौल डीह टोल रेलबे लाइनसँ थोड़बे दूरपर अछि। घरे बैसल अबैत-जाइत रेन देखाइत रहैत अछि। जखन हम सभ दिल्लीसँ पण्डौल आबी तँ रेलक आगमनक सूचना घरे बैसल हमर

सासुरमे भेट जाइक। भवानीपुरक महादेव मन्दिर सामने देखाइत रहैत अछि। केतेको गोटे अयथ्यात भवानीपुर जाइत रहै छैि आ महादेवक जलिरी करै छैि, घुमै-थिरै छैि। असलमे गाम-घरमे लोकक जीबाक अन्दाज अखनो अध्यात्मिकतासँ जुिल अछि। कोनो-ने-कोनो रपे लोक उपवास, पूजा-पाठमे लगले रहै छैि। शिवरात्रिके भवानीपुरमे जबरदस्त मेला लगैत अछि। स्थानीय आकाशवाणीसँ सद: पशारण सेहो होइत अछि।

पण्डौल डीह बहुत ऊँचमे बसल अछि। टोलक सामनेक जमीन सेहो घराड़ीमे उपयोग कएल जा सकैत अछि। एहेन अइल-िइल ओ ऊँच घराड़ी अधिक कम गाममे देखल जाइत अछि।

पण्डौलमे आदम-जमानासँ रेलबे टीशन अछि। मुदा रेलबे टीशनसँ डीहटोल एबामे बहुत समय ओ संघषव रहैत अछि। पण्डौल बजार केतेक पुरान अछि से कहब कठिन। आवश्यकताक सभ वस्तु ओतए भेट जाइत अछि। उतम कोटिक धोती ओइ बजारसँ आनि हम वषोसँ पहिरैत छी।

पण्डौल डीह ओ भवानीपुरक बीचक एकपेरिया रस्तामे डरसामा डीह अबैत अछि। कहल जाइत अछि जे पाण्डव गुप्त बासमे ऐठाम रहल रहैि।

अथित रपसँ कहल जा सकैत अछि जे मनुखक जीवनमे विवाह एकटा निणायक बिन्दु होइत अछि। आइ-काल्हि तँ तरह-तरह केर लोक पिरचय आ की की चलान करैत अछि, तािि विवाह विच्छेदक संख्यामे िनरन्तर बढ़ोतरी भऽ रहल अछि। हम तँ किछु नहि देखिलऐ, मात कन्याक एकटा छोट-छीन िटो हमरा सासुरसँ आएल छल, ओहो विवाह तय भेलाक बाद। ई नहि कहल जा सकैत अछि जे आधुनिकतासँ पभािवत वतमान विवाह सम्बन्धमे सभ किछु

गर्बिाएि अछि, मुदा ई बात तँ तय अछि जे केहनो नीक-सँ-नीक पवाहके सालितापूवक आगू चलेबाक हेतु दुनू पक्के समझदारी आ समझौता जररी अछि, अन्यािा संकट उत्पन हएब भारी बात नहि। हमर ससुर (स्व. गणेश झा) ऐ बातसँ पविन्पात भऽ गेल रहैि जे हम दपिभंगाक नौकरी छोपि कए पदल्ली जा रहल छी मुदा पकछुए पदनक बाद हम पपिवारके संगे लऽ अनलौं। जइसँ हुनका अपिाशय पसनता भेलैन।

हमर गाम अिरि डीह। अिरि डीह चौदह टोलक गाम अछि। पहिने एके पंचायतमे सभटा टोल छल। अिरि पुवाहि टोल, अिरि डीह टोल, पवष्णुपुर, जमुआरी होइत पवचरवाना तक एके पंचायत छल- अिरि। ओकर मुपिया बहुत पदन तक स्व. माकणिाण्डेय भण्डारी छला। आ हमर पिताजी सरपंच रहैि। ओइ समय गाम पंचायतके आइ-काल्हि जका अपिकार नइ रहै तािपि मुपिया-सरपंचक नाम तँ पंचायतमे पवख्यात भाइए जाइत छल। पंचायतक चुनाव ओहू समयमे गहमा-गहमीसँ भरल होइत छल। हम सभ स्कूलमे पढ़ैत रही तँ चुनाव भेल रहइ। स्व. माकणिाण्डेय भण्डारीजी मुपियाक चुनाव जीतल रहैि। सप्पत गहण समारोहक ािममे आयोपित उत्सवक पसंग अखनो मनसँ मेटाएल नहि। ई मोन बाि पवपित चीज अछि पकने। कहि नहि एकर कन्तोरमे केतेक खल होइत छै जे तरह-तरह केर गप-सप्प सालो-साल चौपेतल रहैत अछि।

ओइ समयमे स्व. माकणिाण्डेय भण्डारीजीक इलाकामे ाूक चलैत छल। अिरिक पिनुआरा टोलमे हुनकर घर अछि। सभ तरहे सम्पनताक संग समापिक मान-सम्मान हुनका भरपूर भेटल छेलैन। साझके जे अिरिक सािकिपर दल-बलक संगे हुनका टहलैत देपिएैन। ओह..!

अिर डीह टोल माने हमर गामक इतिहास बहुत परान लगैत अछि। गाममे आब जनसंख्याक अनुपातमे आवासीय जमीन सीमित अछि। तँए घरेपर घरक दृश्य अछि। लोक सभ अगल-बगलमे घर बना रहल छैि। कलममे सेहो बास भऽ गेल अछि। सभसँ चमत्कारी विकास तँ चौकक आसपास भेल अछि। चौकक कातेकाते करीब-करीब दू साए दोकान खुजि गेल अछि। तरह-तरह केर िक आपूर्ति करएबला दोकान सभ सेहो खुजि गेल अछि।

असलमे अिर चौकसँ चार कात रोड बनि गेल अछि। तँए इलाकाक लोक िय-विियक लेल ओइठाम पहुँचै छैि।

अिरमे स्टेट बैक ऑि इण्डियाक शाखा अछि, ओकरे एटीएम सेहो अछि। िना अछि, पोस्ट ऑफिस अछि, सरकारी डिसपेसरी अछि। पाइमरी स्कूल, मिडिल स्कूल ति हाइ सकूल अछि। संगे एकटा संस्कृत विदालय सेहो अछि जेतए सुनै छी जे विदाि सभ नदारदर छैि मुदा सािर्टिफिकेट भेट जाइत छैन।

गाममे तीनटा पोखैर कहि नहि कहियासँ अछि। ओकर अतिरिक्त गामक बाहर नवका पोखैर, कुटी लगक पोखै सेहो अछि। गामक बीचमे पोखैर हेबाक कारण बासक जगहक कमी कत छइ।

हम सभ जखन बच्चा रही तँ गाममे हाइ स्कूल नहि रहइ। गामक विदाि सभ पढ़बाक हेतु एकतारा, लोहा वा रहिका जाइत रहैि। एकाघ-टा विदाि मधुबनी किंवा बेनीपटी सेहो जाइत छला।

कहल जाइत अछि जे एकबेर अंगेज सभ गामक बाटे जाइत काल पहलमान सभके सौरो करैत जे देखलकै आ ठिठैक गेल। पुछलकै जे ई सभ डकैत छिऐ की? तँ कियो कहलकै जे नहि सरकार! ई सभ पहलमान छैि, सुखी सम्पन छैि आ खेती-बारी कहि कऽ पतिष्ठा पूवक जीबैत छैि।

अि रमे कमला नदीसँ जोि ल नाला अछि जइमे पानि तखने अबैत अछि, जखन कि कमलामे बाढ़ि आबि जाइत अछि। कृषि काजमे ऐ नालाक योगदान नगण्य अछि। स्ि ानीय किसान सभ भगवानक कृपापर आश्रित छैि ।

स्वास्थ्य सुविधाक मामलामे हमर गाम पछुआएल अछि। केतौ-केतौसँ इलाज-बात होइए। पहिने दरभंगामे इलाजक नीक बेवस्ि ा छल। पैसा खचव केलापर लोकके और दा रहलापर जान बँचि जाइत छल, मुदा आब तँ भगवाने मालिक। बेमरी किछु, इलाज किि क। हमर एकटा परिचितके तेतेक करगर एन्टीवायोटिक देल गेल जे हुनकर दुनू किडनी िल भऽ गेलैन। आब डयलाइसिस करा कऽ कहुना जीबि रहला अछि। जेतेक दिन ससैर जाइि ।

हमर गामक बह स्ि ानिमे सालमे एकबेर नवाह अबस्स होइत अछि। ओइठाम युवक सभ भव्य मन्दिरक निर्माण केलैि । पहिने काली पूजामे मूर्तिक स्ि ापना होइत छल जे पूजाक बाद भँसा देल जाइत छल। आब होइठाम स्ि ायी रपसँ मा कालीक भव्य मूर्ति वस्ि ापित भऽ चूकल छैि । सालमे दुर्गापूजामे भव्य आयोजन होइत अछि जइमे अि रि चौकसँ काली मन्दिर धरि नाना पकारक बल्ब सभ जगमग करैत रहैत अछि। काली पूजामे नाच-गानक अतिरिक्त तरह-तरह केर मनोरंजनक बेवस्ि ा रहैत अछि। पहने हमरा गाममे काली पूजाक रेबाज नहि छल। लगभग ४५ सालपूवव किछु युवक सभ एकरा पारम्भ केलैन जे तखनसँ एकटा परिपाटी भऽ गेल अछि। काली मन्दिरमे माइकसँ लगातार घोषणा होइत रहैत अछि जे िल्ला ठामसँ नाच-गान करए-बला/करए-वाली आएल छैि , अबस्स देखब...। आउ-आउ।

सुनबमे आएल जे परका आयोजनक िममे किछु झंझट भऽ गेल।

पता नञ्ञ, आगा ऐ ियिमिमक की रपरेखा रहत।

अिर बहुत साधक गाम अछ। मधुबनीसँ बेनीपटी जेबाक िममे ई गाम अबैत अछ। कञ्ञयासँ ई पका रोड बनल अछ से पता नञ्ञ। आब ओही रोडके िािक चौिगर सेहो कऽ देल गेल अछ। सीतामढ़ीक हेतु दिभंगा-पटनासँ जाइबला बस सभ हमरे गाम दऽ कऽ जाइत-अबैत अछ। कुल मला कऽ देखल जाए तँ हमर गाम छोट-छीन शहरक रप धऽ नेने अछ।

गाममे पढ़ल-लखल लोकक कमी नञ्ञ, देशमे सवत्र हमरा गामक लोक भेट जेता। दल्ली ओ मुम्बइमे तँ भरल छैि। एकर माने गामक जनसंख्यामे कमी आब गेल सेहो बात नञ्ञ आधार मिलाक भूम थिक कने।

हमरा लोकमा सोदरपुरये मआक मूलकक साण्डल्य गोतीय मैथिली व्राहण छी। ७ पुस्त पूवसँ हमरा लोकआक पूवजक ववाह अिरे डीह गाममे भेलैन आ हुनका ससुर गामेमे बसा देलथन। पयाप्त जमीन-जत्ाि देलथन। िमश: ओ सभ उदमसँ पचूर धन-सम्पैत अजत कए इलाकाक पष्ठत धनीकमे मानल जाइत छला।

िमश: पवारक वकास हेइत गेल। जनसंख्या बढ़ैत गेल आ ओही िममे पवावक मरिुटौऐल सेहो बढ़ल। हम बच्चा रही तँ कए बेर कएक गोटाक आपसी माथ-पीमे कपार िुटैत देखऐन। मोकदमावाजी तँ चलबे कएल।

हमरा सबहक परबाबा तीन भाइ रहैि। गुमनी मश, माना मश्र ओ तुिानी मश। माना मशक पुत स्व. कमर मश संस्कृतक पकाण्ड वदान छला। सुनैमे अबैत अछ जे दिभंगा महाराज हुनका अपन राज पण्डत बनबाक आगह केलथन जे ओ अस्वीकार कऽ देलाह। ओ स्वयं एकटा पाठशाला चलबैत रहैि। ओइ पाठशालामे सैकिा

छात्रके नि:शुल्क भोजन आ आवासक संग छात्रा दान देल जाइत छल। हुनकासँ पढ़ल सैकड़ो छात्र मिथिलाचलमे हुनकर गुणगान करैत छला।

ओइ समयमे अड़िरमे नामी पहलमान भेल रहैथि स्व. बच्चा झा। हुनकर शक्तिसँ दरिभंगा महाराज पभावित रहैथि। सुनबामे आएल जे ओ लोहाक हथकड़ीके जोर लगा कए तोड़ि देने छला।

हमरा गाममे पूर्वकालमे मूलत: कृषि आधारित लोक छला। अधिकाकाश लोकके जमीन-जत्था रहइ। गाम खुशहाल छल। दुपहरियाक समयमे बरबैर अल्हा-रूदलक गीतमय कविता पाठक आयोजन ढोलकक तालपर होइते रहै छल। ऐ तरहक आयोजन आम छल। मुदा आब समय-साल बदलल अछि। आब शहरी लोकक रूझान बढ़ल अछि। लोक अपन छोट-छोट बच्चाके पढ़ाइक लेल मधुबनी पठा रहल छैथि। पब्लिक स्कूलक चला-चलती बढ़ल अछि। आब ओ चिकित्साक समस्या हमरे गाम तक सीमित नहि अछि। ओ तँ पूरा बिहारक समस्या अछिए। तथापि लोक पयासरत अछि। आशा अछि, कालान्तरमे हमरो गाममे चिकित्साक बेहतर बेवस्था भऽ सकत जइसँ स्थानीय लोकके पटना/दिल्ली नहि दौड़ए पड़तैन।

गाममे आब धनीक लोकक भरमार भऽ गेल अछि। केतेको बेकतीके आर्थिक विकास बहुत भेल। गाममे जबार हएब आम बात भऽ गेल अछि। गाम लऽ कऽ भोज तँ होइते रहैत अछि। लोक सभ कहैत रहै छैथि जे ओ सभ भोज खाइत-खाइत तंग भऽ गेल छैथि। केतेको गोटाके ब्लड-सूगर बढ़ि जाइत छैन। रसगुल्ला-छेनाक बिना तँ कोनो भोज होइते ने अछि।

पुरना जमानामे किछु लोक किछुलो भोजन चट केनिहार लोक सबहक किस्सा सुनैत रहै छेलौ मुदा आइयो-काल्हि एहेन एकाध बेकती हमरा

गाममे मौजूद छैि। जँ अपनेके धैयवजवाब नहि दऽ देए तँ हुनकर भोजनक िममे कदमताल देख सकैत छी। हुनका दारा खएल गेल रसगुल्लाक गिनतीक हेतु जन लगबए पड़ि सकैत अछि। भोजनोपरान्त लदबद चलैत अपन घर आपस जाइत हुनका देख छगुन्तामे पड़ि जाएब। आखिर ओ केना जीब रहल छैि? आियल!

एतेक भोज होइत रहैत अछि, मुदा सभजाना भोजमे अखनो स्तीगणके शामिल नहि कएल जाइत अछि। जँ बेवस्िपक नीक छैि तँ घरे-घर खएक (पारस) पहुँचा दइ छथि‍न, मुदा ओहो दुपहर रातिमे जखन थक थकयो स्तीगण भोजनक वस्तु पतीका मजबुरियेमे कए सकैत अछि।

हम गाहे-वगाहे ऐ बेवस्िमे सुधारक चचव करै छी, मुदा गामीण बेवस्िमे सुधारक गुनाजाइश सहज नहि होइत अछि। देखै छी, आगा की होइत अछि।

हमरा गाममे हाइ स्कूलक स्िपना हेतु इलाकाक गणमान्य लोक सभ पयास केलाह। ओइमे हमर बाबूजी सेहो अत्यन्त सक्रिय रहैि। स्व. बच्चा झाक परिवारक लोक बहुत रास योगदान देलैि। स्िानीय लोक सभ सेहो योगदान केलथिन जइसँ हाइ स्कूलक नाओं- 'बच्चा झा जनता उच्च विदालय- अिर' पलि। किछु दिन धरि ओ विदालय पंचायत भवनमे चलैत छल। िमश: विदालयक अपन पका मकान एवम् आन-आन सुविधा भेल।

गेनखेलीक हेतु हमर गाम पसिद्ध छल। अंगेजी हुकुमतक लोक सभ हमरा गामक लोक सबहक गेनखलीमे अभिरुचि देख दंग रहैि। हमर बाबूजी सेहो ऐमे माहिर रहैि। केतेको मेडल हुनका भेटल छल। गेनखेलीसँ पभावित भऽ अंगेज अधिकारी सभ हमरा गामक कएक गोटाके छोट-मोट नौकरी धरा देलथिन। अिरक िुटबॉल टीमसँ

बिका-बिका शहरक टीम सभ घबाइत छला।

हम सभ जखन बच्चा रही तखनो विष्णुपुरक मैदानक गेनखेलीमे बाबूजीके भाग लैत देखिऐन। कए दिन हुनका पैरमे चोट लागि जाइन। चोट सबहक देशी इलाज होइत छल।

आब समय-साल बदलल अछि। गामोमे लोकक आपसी सम्पर्क क्षीण भऽ गेल अछि। फगुआ सन पाबैनमे लोक अपन दरबज्जा ओगरने रहैत अछि। तखन गाम तँ गामे अछि। आशा करै छी जे कालान्तरमे क्रमश: हमरा गाममे आर सभ सुविधा हएत जेकर कल्पना सुखद जीवनक हेतु कएल जाइत अछि। जइ प्रकारक चौहदी हमर गामक अछि तइमे एकरा विकासक शिखर तक पहुँचनाइ एक सहज सपन भऽ सकैत अछि, बशर्ते गामक युवा शक्ति रचनात्मक रुख धरैत सही दिशामे अगसर होइ।

लघुकथा- एकसरि

पण्डितजी बेश कर्मकाण्डी छलाह। भोरसँ साझ धरि जतेक काज करैतथि सभमे भबानिके स्मरण अवश्य करैतथि। मंतोच्चार करैत उठैतथि आ मंतेच्चारेक संग सुतैतथि। बेश त्रिपुण्ड आ तापरपर लाल ठोप हुनक ललाटके शुशोभित केने रहैत छल। तापरपर सँ हरदम मुँहमे पान कचरैत, लाल-लाल पानक पीक फेकैत ओ साक्षात् कालीक अवतार लगैत छलाह। कारी चामपर ललका वस्त्र धारण कय जखन वो भवतीक बन्दना करय पहुँचैत छलाह तँ वातावरणमे एकटा अपूर्व सनसनी पसरि जाइत छल।
पण्डितजीक उमर करीब ४५ बर्ष होयतन्हि। दूआ बेटी आ एक बेटा छलन्हि। घरवालीक स्वर्गवास आइसँ दस साल पहिने भय गेल छलन्हि। पण्डितजीक दुनू बेटी वेश सुनरि आ लुरिगर छलन्हि। मुदा हुनका पासमे टाकाक अभाव छलन्हि तँ कतहु कन्यादान पटैत नहि छलन्हि। बेटा ज्ञान भय गेल छलथिन्ह आ पण्डितजी अपन दुनू बेटीक संग एकठाम छलाह।
पण्डितजीक घरक आस-पासमे बेश सम्पन्न परिवार सभ छलैक। पण्डितजीक गुजरो हुनके सभहक माध्यमसँ होइत छलन्हि। बेटा अपन घरवालीक संग दरभंगामे रहैत छलथिन्ह। ओहिठाम कोनो प्राइवेट कम्पनीमे कौनो सहायरक काज करैत छलाह। मुदा पण्डितजीके कनिको मदति नहि करैत छलथिन्ह। वो अखनो पण्डिताइक बले जीवैत छलाह। दुनू बेटी समर्थ छलथिन्ह। गामेक हाइ स्कूलसँ मैट्रिक धरि सभके पढ़ौलथिन्ह। आगा पढ़बाक सामर्थ्य नहि रहलन्हि। बियाहक लेल घटपटायल छलाह मुदा कतहु टाका नहि भेटैत छलन्हि। बिना टकाक कोनो लड़का बियाह करय हेतु तैयार नहि छलन्हि। यैह सभ चिन्तामे

वो थ्यअात रहैत छलाह।

ओना पण्डितजीक सम्बन्ध पूरा गाममे सँ मधुर छलन्हि। मुदा दू-तीन परिवारक लोक हुनका बेशी आदर करैत छलथिन्ह। हीरा बाबूक ओतय तँ भोर-साझ दू घन्टा जरूर बैसार होइत छलन्हि। मुदा पण्डितजी ककरो कहियो अपना हेतु किछु कहलथिन्ह नहि। हीरा बाबूके चारिटा बेटा छलथिन्ह। दूटा तँ बाहर रहैत छलथिन्ह मुदा छोटका दुनू परिवारमे मैट्रिक पास केने छलथिन्ह आ बससँ रोज मधुबनी जाइत छलैन्ह क्लास करय। सरोज ओ मीरा सेहो ओकरे सभहक संगे मैट्रिक पास केने छल। एक दिन सौसे गाम सुतल आ सुति कऽ उठल तँ गुम्मे रहि गेल। सरोज चुपचाप घरसँ लापता भय गेल छलैक। घरे-घर तका-हेरी भेलैक मुदा कोनो पता नहि। आन्हर हीराबाबूक दोसर बेटा सेहो कालियेसँ गायबछलैक। सौसे गाममे कनाफुसी होमय लगलैक। पण्डितजी गरीब जरूर छलाहमुदा हुनका अपन परिभाषाक पूरा ख्याल छलन्हि। ओ अहि गम्भीर चोटके नहि सहि सकलाह आ रातिमे सुतलाह से सुतले रहि गेलाह। मीरा एकसर भय गेलीह। गुम्म, सुम्म आ मियवाक्त ओ सोचि नहि पाबि रहल छलीह जे की करथि।

मीरा आब एकसरिछल। आगू-पाछू क्यो नहि। बापक मरला चारि दिन भय गेल छलै। भानसजाज आमि देने छलन्हि।

सौसे गाममे सरोजक भगबाक समाचार बिजली जका पसरि गेल रहैक। मीराक तँ बकारे नहि फुटैत छलैक। की करए। पाचम दिन सभ दियाद-बादक बैसार भेलन्हि। तय भेल जे गाम लऽ कऽ शाद भय जाय। पैसा-कौरी हीराबाबू गछलथिन्ह। मीरासँ मात एतबा गछबा लेल गेलैक जे काज भेलाक बाद घर-घरारी जे पण्डितजीक एक मात सम्पत्ति छलन्हि जे हीराबाबूक नाम कय देल जयतन्हि। बैसार

खतम भेल मीरा गुमसुम एकचारीश्चस देश्च रहल छल। पश्चाडतजीक शाद नीक जका समपन भेल। हीराबाबू रश्चा िारके गामेपर बजा अनलाह। श्चखयी सम्मनभय गेल। हीराबाबू मीराके कहलश्चन्ह-

“मीरा, मास दू मास अही घरमे रह। तोरे घर छौक ने।”

मीरा चुपचाप सुनैत रहल जेना ठकश्चदरो लाश्च गेल हो।

अपने गाममे, अपने घरमे मीरा बेघर भऽ गेल छल। गामक लोक ओकरा पश्च सहानुभूश्चातँ देखबैत छलैक मुदा महज िमिलटी। धीरे-धीरे ओहो खतम। पन्रह श्चन भय गेल छलैक घरक रश्चषरीक। मीराके आब ओश्च घरमे एक पल श्चतायब असम्भव लगैत छलैक। एक श्चन सैह सभ सोश्च रहल छल श्च लगलैक जेना दरबाजापर क्यो ठाढ़ होइक।

“हीराबाबू, अपने एतेक राश्चामे..?”

हीराबाबू श्चकछु बजबाक श्चमश्च नश्च कय पाश्च रहला छलाह। मीराक तामस अश्चापर पहुँच गेलैक। ओ श्चश्चयैल-

“चोर! चोर!”

हीराबाबू भगलाह। अगल-बगलक लोकक ओश्चठाम भीि एकटा भय गेल छलैक। मीरा भोकाश्च पाश्च कऽ काश्च रहल छल। दाइ-माइ सभ दस रंगक गप-सप्प करैत पहुँश्च गेल छलैक। जकरा जे मोन होइक से बजैक। मीरा चुपचाप सभ श्चकछु सुनैत रहल। धीरे-धीरे भीि ओश्चठामसँ हटैत गेलैक। राश्च गम्भीर भेल जाइत छलैक। सौसे गामक लोक सुश्च रहल छलैक। मीरा चुपचाप गामसँ बाहर भऽ गेल। ओकराश्चकछु नश्च बुझल छलैक जे वो कतय जा रहल अश्च मुदा कोनो दोसर श्चकल्पो नश्च रश्च गेल छलैक।

मीरा बडड पढ़लो नश्च छल। शहरमे कश्चयो रहल नश्च छल। मुदा तकर बादो ओकरा कोनो गम नश्च छलैक। टीशनपर गाि आश्च गेल

छलैक आ आर अधिक सोच-विचार करबाक अवसरो नहि छलैक। ओ तरदय टीकट कीनलक आ गाड़ीपर चढ़ि गेल। रेनमे बेश भीड़ छलैक। किछुकाल तँ वो ठाढ़े रहल मुदा ताबते ओकरा बाद-पछाति अनित सेहो ओकर सामनेक सीटपर बैसल भेटलैक। हीरा बाबूक ज्येष्ठ पुत अनित। मीराके रेनमे धकम-धुकी करैत देखि ओ तुरन्त उठि गेलैक।

"मीरा तूँ कतय जा रहल छे?"

पुछलकै अनित। मीरा ओकरा देखि कय अवाक् रहि गेल। किछु बजबे नहि करैक। अनित ओकरा अपना सीटपर बैसा देलकै। अगिला टीशनपर किछु याती उतरलैक। अनित सेहो ओहिठाम उतरय चाहैत छल मुदा मीराके एकसर छोड़ि देब ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक। ओ मीरासँ ओकर गन्तव्य पुछय चाहलकै। मुदा मीरा किछु बजबे नहि करैक। बड़ि मुश्किलसँ मीरा ओकर कहब मानि ओतहि उतैर गेल। आखिर ओकर कोनो गन्तव्य नहि छलैक। गाड़ी सीटी दैत ओहिठामसँ आगा बढ़ि गेलैक।

रेनपर सँ उतरि कय मीरा कानय लागल। अविरल अशुक पवाह देख अनितक मोन करुणासँ भरि गेलैक। ओ मोनहि मोन निश्चय केलक जे मीराके ओकर घर आपस पहुँचा कऽ रहत चाहे ओकरा कतबो संघषवर्कयैक नहि करय पड़ैक। ओ बड़ि मुश्किलसँ मीराके चुप केलक आ अपना संगे गाम आपस नेने अयलैक।

ओहि दिन पूरा गामक बैसारी भेलैक। सभ हीराबाबूके 'छिया-छिया' कहलकन्हि। ताबतमे अनिकेत कतहुसँ आयल आ साफ़-साफ़ घोषणा कय देलक जे वो मकान मीराक छैक ओओकरे रहतैक। सौसे गौवा पसन भय ओकर गुणगाण करय लागल। मुदा हीराबाबूके जेना नअ मोन पानि पानि पड़ि गेलन्हि। बैसारीसँ लौटि ओ छटपटायल रहथि।

साझमे बाप-बेटामे बेश थवाद पसथ गेलथह। मुदा अभत हुनकर गप सुनबाक हेतु तैयार नथ छल आ एकबेर ि र साि-साि कथ देलकथह जे एथ अन्यायमे ओ थनकर संग नथ देतथह। बाद-थवाद बथढ़ते गेल। अन्ततोगत्वा हीराबाबू कम्बल, बछाओन आथ सथओलथह आ गामसँ थदा भय गेलाह। क्यो टोकलकथह नथ। अभत मोने-मोन सोचैत रहल- भने ई आि द टथ रहल छथि।

हीराबाबू तँ गमसँ चथ गेलाह मुदा मीराके तैयो चैन नथ भेटलथह। सौसे गाममे दुि लोक सभ मीरा आ अभतक बारेमे नाना पकारक कुपचार करय लगलैक। रोज एकटा नव अि वाह गामक एक कोणसँ थकलैत आ दोसर कोण धथ पसथ जाइत। मीराके ई सभ गप्प क्यो-ने-क्यो आथ कय कथ दैक। ओ बि संवेदनशील छल, भावुक छल, तँए एहन-एहन गप-सप्प सुथ कय कानय लगैत छल। एक थन अथना एसगरे अँगनामे कनैत रहय। अभत कतहुसँ आथ गेलै। ओकरा एना कनैत देथ बि तकलीि भेलै अभतके।

"मीरा नथ कान!"

जेना थक सभ बात ओकरा बुझले होइक।

"सुन! हमर बात माथ ले। हमरासँ बयाह कऽ ले। बाज सही, जकरा जे मोन होइक।"

मीरा आर जोरसँ कानय लगल। अभत ई सभ नथ देथ सकल आ चुप्पे ओतयसँ सरथक गेल।

तकर बाद अभत दोबारा घुथ कय नथ अयलैक ओकरा लग। पूरा गाममे हल्ला भय गेलैक जे अभत कतहु चल गेल। मीरा ओतेकटा गाममे ि र एकसर भय गेल छल। गाममे कोनो ि हिपता नथ छलैक। बच्चा सभके टयूशन पढ़ा-पढ़ा कऽ गुजर करैत छल। मुदा अभतक एकदम गामसँ थपात भय गेलाक बाद ओ अत्यथक दुखी छल।

ककरोसँ किछु गप करबाक इच्छा नहि रहैक। एतबेमे ककरो गरजब सुनेलैक। हीराबाबूक थथमायौत अथाया बेताल छलाह।

"कहा गेल पण्डितक बेटी...!" इत्यादि-इत्यादि।

मीराके ई सभ गप नहि सहि भेलैक। मुदा ओ किछु बाजियो नहि सकल। असोरापर करोट भऽ गेल। चार कातसँ लोक सभ दौड़लै। हल्ला भऽ गेलैक जे 'मीराक हाटफेल कऽ गेलैक। एक बेर फेर ओ घराड़ी सुन भय गेलैक।'

लघुकथा- असगुन

गाम-घरमे कतेको पकारक असगुन सभ पश्चाद अछि। जेना कियो यातापर विदा हो आ नढ़िया रास्ता वायासँ दाया काटि दिये, किंवा कियो विदा होइतकाल पाछासँ टोकि दिये। बुढ़बा बाबाके एहि सभहक बेश विचार छलन्हि। जँ घरक कियो विदा होइत आ कतहु कियो छीक दैत तँ वो 'चिरंजीवी भव:' अवश्य कहैतथि। तहिना आर-आर अपशकुन जँ होइतैक तँ ओकर निवारण कय दैतथि।

ओहि दिन गाममे हाट लागल रहैक। तीमन-तरकारी सभटा हाटेपर सँ कीनल जाइत छलन्हि। ओहुना हाट दिनक ओ समयमसँ ओतय पहुँचैत छलाह।

रविक दिन छलैक। हाट जयबाक तैयारी ओ दुइए बजेसँ पारम्भ कय देने छलाह। जहा चारि डेग आगा बढ़ैत कि एक ने एकटा अपसगुन भय जाइन्हि। एवम् पकारेण चारि बाजि गेल। सूयास्त करीब छल। हारि कय वो बेत घुमबैत विदा भेलाह।

किछुके आगा बढ़लाह कि मुनेसरा सामनेमे पड़ि गेलन्हि।

"पणाम पंडीतजी!" बाजल मुनेसरा।

"नीके रह" - मुनेसराके आशीवाद दैत पंडितजी आगा बढ़लाह। मोने-मोन किछु नहि की की घुनघुना रहल छलाह। मुनेसराके एकेटा आँखि छलैक। गाममे दाहाक दिन माघ भय गेल रहैक। बेस िनैत छल ओ। लाठी लेने िश्चा गेल छल। ताबतमे कियोओकरे निशाना बना कय एकटा सीसाक बोतल िकलकै। ओकर सौसे आँखि लहु-लुहाम भय गेल रहैक। ओही घटनाक बाद ओ असगुन भय छल। पाय: सैह सभ सोचैत पंडितजी आगा बढ़लाह।

हाटपर बेश भीड़ छलैक। तीमन-तरकारीक भरमार छल। मुदा पंडितजीक आदति छलन्हि जे कोनो चीज ओ ठोकि-ठोकि कऽ

कथ्वतथि। बीच बजारमे सजमथ्नाक दाम मोलबथ्ना-मोलबथ्ना पहुँचलाह थ्क चाथ्व गोटेमे एक थ्वससँ धुका मारैक आ चाथ्व गोटे दोसर थ्वससँ। सामनेसँ दू-तीन गोटे हा-हाँ करैत पथ्याडतजीक रक्षा करय आथ्व गेलाह। धका-धुकी खतम भेल तँ पथ्याडतजी आगा बढ़लाह। सजमथ्नाक दाम मोलेलथ्नह आ भाव पथ्टा गेलापर जेबीसँ पैसा थ्नाकालय लगलाह थ्क अबाक रथ्व गेलाह। जेबी नदारद। पथ्याडतजी ठोह पाथ्व कय कानय लगलाह। सौसे ई खबथ्व थ्वजलौका जका पसथ्व गेल। पथ्याडतजी मा ि हा ि देने घर आपस अयलाह। तथ्वयासँ वो असगुनक डरे छाह कटने थ्वि रथ्वि।

पथ्याडतजीके तीनटा कन्या छलथ्नह। प ि म कन्याक कन्यादान तय भय गेल छलथ्नह। नीक कुल-शीलक ल ि का रहैक। अगहनक पुथ्याबाक थ्वयाह तय भेलथ्नह। बरक हा ि उठयबाक हेतु थ्वदा होइत छलाह थ्क थ्कयो तराक दय छीकनने। छीक...छीक...छीक...। हुनकर मा ि मे ई छीक घूमय लगलथ्नह। पथ्याडतजीक टाग एकाएक गथ्वाहीन भय गेलथ्नह। ओ आगा बढ़य हेतु एकदम तैयार नथ्व छलाह। सौसे गामक लोक करमान लाथ्वा गेल छल। पथ्याडतजी गुम। थ्कछु बजबे नथ्व करथ्वि। तेहन शुभ मुहुतवछल जे छीकक चचो करब असगुन लगथ्नह। लोक सभके थ्कछु ि ुराइक नथ्व जे आथ्वखर बात की भेल। अखने तँ पथ्याडतजी टप-टप बजैत छलाह..!

गाम भथ्वक लोक पथ्याडतजीके घेथ्व लेलकथ्नह।

"पथ्याडतजी की भेल?"

मुदा ओ तैयो गुम्म। अन्ततोगत्वा लोक हुनका उठा-पुठा कय डाक्टरक ओथ्वठाम लय गेल। ओतय डाक्टर हुनकरअवस ि ा देथ्व बेश सीथ्वयस भय गेलाह आ कहलथ्वन्ह जे हुनका गम्भीर भावनात्मक अवधात भेलथ्नह अथ्छ। तात्कास्नाक उपचारक हेतु जहा वो सूई देबय लगलाह

छैक पण्डितजीके नहि रहि भेलन्हि। ओ गबैयबैत ओहिठामसँ गामपर भगलाह। ताबत भोरक चारि बाजि गेल छल। आ बरक ओहिठाम जयबाक कायक्रम रद भय गेल। ठीके असगुन भय गेलन्हि।

ताहि दिनसँ पण्डितजी असगुनसँ बडड डराथि। ओहि दिन हुनकर मझिली बेटीक तहिना आँखि बिगरि रकय लगलन्हि। पण्डितजी एकदम अपस्याँत भय गेलाह। अबश्य कोनो गडबडी होमयजा रहल अछि। ओ अपन अपन बेटीके तुरन्त अपना लग बैसा लेलथि छैक ताबतेमे एकटा थारथाटहुनकर बायाँ हाथ पर खसल। पण्डितजी ठामहि खसलाह। पैरमे खराम छलन्हि। दरबज्जा बेस ऊँच छलैक। दलानपर ठामहि चितंग भय गेलाह। बाया पैरक हडडी टुटि गेल छलन्हि। सौसे गाम! पण्डितजी बाप-बाप चिचियाय लगलाह। सभ गोटे हुनका लादि कय अस्पताल लय गेल। लाख कोशिशक बाबजूद ओ हडडी नहि जुटल। पण्डितजी जन्म भरिक हेतु नागर भय गेलाह।

तहियासँ पण्डितजी रोज भोरे उठैत देरी भगवानके गुहारि देथि-

"हे भगवान! असुगनसँ जान बचायब।"

मुदा भावी पवल होइत छैक। होइत वैह छैक जे हेबाक रहैत छैक। एकादशीक दिन छलैक। महादेवक दर्शन करय जाइत छलाह। झलफल होइत छलैक। ताबतमे एकटा नढ़िया वामाकातसँआयल आसामने बाटे दायाकात जुजरि गेल। पण्डितजी ठामहि खसलाह।

"हे महादेव! आब अही पाणक रखा कर ।"

कहैत-कहैत पण्डितजी वेहोश जका भय गेलाह। तारा सभ एकाएकी हुनकर ई दुदर्शा देखबाक हेतु अपस्याँत छल। बो बेचारे एकहुँ डेग घुसकय हेतु तैयाक नहि छलाह। आ ने घुसकबाक हुनकामे तागति रहि गेल छलन्हि।

पण्डितजीके फेर कहि नहि कहासँ हिम्मत अयलन्हि। ओ चोटे पाछा

घुमलाह। तैबीच एकबेर ि र वैह नश्चइया वायासँ दश्चना भेल। पश्चाडतजी ओश्च नश्चइयाके गश्चयबैत, नागर टागे दौ ित, खसैत-प ित घर श्चइस बढ़य लगलाह। बीच-बीचमे ओश्च नश्चइयाके कहैत-

“ई सरबा, नश्च जीबय देत। एकर हम की श्चगारने छश्चयैक से नश्च जाश्च!”

ताबतेमे मुश्चयाजी पोखश्च श्चश्चसँ आपस अबैत छलाह। पुश्च बैसलश्चन-

“की भेल पश्चाडतजी?”

“की कहू की भेल। कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल आ कमव गेल संगे। सैह पश्च अश्च हमर। एकादशीक श्चन छलैक। सोचलहुँ जे महादेवक दशब करी। आधा रास्तासँ जहा आगा बढ़लहुँ श्चक औ बाबू! ई चण्डाल नश्चइया रास्ता काश्च देलक।”

ओश्चसँ पश्चने की मुश्चयाजी श्चकछु बश्चतथि, पश्चाडतजी धराम दय खसलाह।

मुश्चयाजी श्चकरलाह। पासेमे पश्चाडतजीक भाश्चज पश्चछोआ करैत छलश्चन्ह। ओ दौ िलाह। अगल-बगलसँ सेहो लोक सभ दौ िल। पश्चाडतजीके उठा-पुठा कय दरबाजापर राश्च देलक। लोक सभ पुछश्च-

“की भेल?”

मुदा ओअपस्यात आकाश श्चश्च तकैत रश्च गेलाह।

असगुन, असगुने होइत अश्च। ते ने लोक सगुन करैत श्च रैत रहैत अश्च। पश्चाडतजी भोर होइतश्च पश्चभरनीके बजौलश्चश्च आ आदेश देलश्चन्ह जे आइसँ श्चत्य पात: काल ओ एक घैल पाश्च भश्च कय दरबाजापर राश्च देल करय, जाश्चसँ हुनक श्चन नीक जेना कश्च जाश्च। पश्चभरनी हुनकर आजाके श्चरोधायवकयलक आ रोज हुनकर

सामनेमे बेश बिका घैलमे पाञ्ञ भञ्ञ-भञ्ञ राखय लागल।

एक श्चन अन्हरोखे पञ्ञभरनी पाञ्ञ भञ्ञ कय राञ्ञ गेल। ओकरा गहुँमक कटनी करबाक छलैक।

पञ्ञडतजी उञ्ञ जहा चाञ्ञ डेग आगा बढ़लाह ञ्ञक वोञ्ञ घैलसँ टकरा चार नाल श्चात भय खञ्ञ पिलाह।

चार कातसँ लोक सभ दौलि। मुदा मञ्ञडतजी ञ्ञकछु नञ्ञ बजलाह। आब ओ सभ श्चन चुप्पे रहबाक सपि खा लेने छलाह। समय श्चपरीत भय गेल छलञ्ञह आ सगुनो असगुन भय गेल छलञ्ञह।

विधवा विवाह

समाजक मान्यता, विधि-विधान एवम् लोक व्यवहार समय सापेक्ष अछि। जे बात-विचार पचास सय साल पहिने अधावायवचलैत छल से आइ-काल्हि जँ लोक करय तऽ हस्यास्पद भय जायत। पहिने बाल विवाह आम बात छल। बेटीके जनमिते जँ माय-बापके कििक चिन्ता होइक तऽ ओकर विवाहक। कहुना कऽ विवाह भऽ जाइक आ माय-बाप गंगा नहा लेथि। सोचल जा सकैत अछि जे समाजमे बेटीक स्थिति कतेक दायनीय छल..!
ई बात सभ जनैत छैि जे स्त्रीक बिना पुरष कतयसँ आयत। जे आइ ककरो बेटी छैक सैह काल्हि ककरो स्त्री, केकरो माय बनतै। तथि लोकमे अखनहुँ बेटाक प्रति मोह कम नहि भय रहल अछि। पहिने कतेको गोटा बेटाक चकरमे आठ-नौ सन्तान कय लैत छलाह। लिंग आधारित एहि भेद-भावके कम करबाक िकंवा जड़िसँ दुरस्त करबाक निरन्तर पयास होइत रहल।
एक समय छल जखन पतिक मरलाक बाद ओकर पतीके ओकरे संगे जरा देल जाइत छल िकंवा वो स्वयं जरि जाइत छल। समाज ओकरा सतीक रपमे महिमा मण्डित करैत छल। ओकर चितापर सती मन्दिर बना देल जाइ छल। सोचल जा सकैत अछि जे वो कतेक ि ि प ि छल। एकटा स्वास जीबन्त व्यक्तिके जरा कऽ एहि लेल मारि देल जाइत छल वा वो स्वयं मरि जाइत छल जे ओकर पतिक देहावसान भय गेल, जाहि लेल वो कोनो पकारसँ दोषी नहि छल। मरनाइ, जिनाइ ककरो हाि मे नहि छैक। ई एकटा संयोग होइत अछि मुदा तकर एतेक दुखद् परिणाम होइत छल से सोचियो कऽ रोआ ठाढ़ भय जाइत अछि।

एकटा विदेशी पयटक जखन अपन देश घुमैत रहथि तऽ संयोगसँ श्मसान घाटपर एकटा मुदाके लऽ जाइत देखलथि। मुदा संगे ओकर पती थ्यकरैत-भोकरैत श्मसान धरि संगे गेल। लोक सभ तमासा देखैत रहल आर वो पत्नीक लाशक संगे जारिआसँ लाधि देल गेल। जोर-जोरसँ ोल बजा-बजा कीतन करय लागल जाहिमे ओहि जीवित महिलाक करुण िंदन दबि कऽ गुम रहि गेलैक आ ोिबेकालमे ओहो पत्नीक लाशक संगे छाउर भय गेल। (ई सैकड़ो साल पूवक थीक एवम् एकर वणन Beyond the seas माइकल एच. ोिसर दारा सम्पादित-पुस्तकमे अछि) एहि तरहक घटना ओहि समयमे आम बात छल। स्त्रीगण सभ अपन भाग्य बुझि एकरा स्वीकार करैत छलीह। पश्चाद समाज सुधारक राजाराम मोहन रायक एहिपर ध्यान गेल आ वो ब्रिटिश सरकारसँ गोहार कय एहि सामाजिक कुरीतिके बन्द करौलाह।

समाजमे विधवाक स्थिति बेटीक स्थितिसँ जुड़ल अछि। जँ बेटी पढ़तै, सिखतै, बेटा जका ओकरो अवसर भेटतै तऽ ओहो ककरोसँ पाछा नहि रहत। आइ-काल्हि एहिमे किछु परिवतन भेल अछि। लोक बेटीके स्कूल-कालेज पठा रहल अछि। डाक्टर, इंजिनीयर, अोिसर सभ किछु बेटीओ बनि रहल अछि। कानूनमे परिवतन भेल अछि। पैतृक सम्पत्तिमे बेटा ओ बेटीक हक बरोबरि भय गेल अछि। घरेलू हिंसा कानूनक तहक कोनो महिलाके शारीरिक, मानसिक यातना नहि देल जाय सकैत अछि। दहेज लेब देब गैर कानूनी भय गेल अछि। पश ई उठैत अछि जे एतेक रास कानूनसँ लैस भारतीय महिला की सभ तरहे अधिकार सम्मान, सुरक्षित ओ प्रतिष्ठापूणव जीवन-यापन करबाक स्थितिमे आबि गेल छैि? ई सोचिये कऽ कलम ठाढ़ भय जाइत अछि।

समाजमे बेटीक स्थितिमे सुधारसँ मूलत: शहरी क्षेत्रटाक सीमित अछि। गाम-घरक हालक मोटा-मोटी ओहने अछि। अपना ओहिठाम शिक्षाक स्तर तेहन गबिायिल अछि जे जँ क्यो स्कूल-कालेज जाइतो छथि, किंवा डिग्रीओ हासिल कऽ लैत छथि तैयो हुनका कोनो रोजगार भेटिए सकत नहि से संदेहास्पद। जँ आर्थिक निर्भरता बनल रहत, सम्पत्तिक अधिकार मात्र कानूनक किताबे तक सीमित रहि गेल तऽ बेटी कोना बढ़त?

जाहि समाजमे बेटीके शिक्षाक समान अवसर भेटल, पैत्रिक सम्पत्तिमे अधिकार भेटल ओहिठामक महिला आर्थिक रूपसँ सभ तरहे आगा भऽ गेलीह। एहिमे केरल राज्यक चर्चा कयल जा सकैत अछि। पुरना समयमे (आ किछु हद तक अखनहुँ) विधवा होइते जेना ओकरापर विपत्तिक पहाड़ टुटि जाइत छल। तत्कालीन समाजक समस्त मान्यता, विधि, व्यवहार ओकरा अपमानित नहि करैत छल, अपितु अशुभ बुझैत छल। केस कटा लिअय, नीक नीकुत खाउ नहि, साधारण कपड़ा पहिरू, उपास-पर-उपास करैत रहू। तेतबे नहि, कोनो शुभकाजमे आगा नहि रहू। आखिर ओकर की दोष रहैक जकर दण्ड ओकरा समाज दैत छलैक?

लगैत अछि, समाजक पुरोधा सभ असुरक्षा भावसँ ततेक ग्रस्त रहथि जे हुनका आगा-पाछा किछु आओर सोचेबे नहि करथिन्ह। कतेको ठाम तऽ नवविवाहिता विधवा भय जाइत छलि आ आजीवन धोर कष्ट एवम् विपत्तिमे जीवन-यापन करैत छलीह। गरीबी, सामाजिक प्रताड़नासँ तंग भय कतेको विधवा गाम-घर छोड़ि वृन्दावन किंवा आन-आन तीर्थ शरण धय लैत छलीह। अखनो हजारोक संख्यामे वृन्दावनमे विधवा सभ पड़ल छथि। भारतक उच्चतम न्यायालय हुनका सभक स्थितिपर विचार केने छल। सुलभ इन्टरनेशनल दारा हुनका सभ लेल किछु

कल्याणकारी योजना सभ सुनबामे आयल छल। मुदा ई सभ ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन थिक। जरूरी तऽ ई अछि जे समस्याक जड़िमे जाय ओकरा समूल नष्ट कयल जाय। आखिर पुरुष विधुर भेलापर विवाह करैत छथि की नहि? तखना महिलोके ई अधिकार समाज स्वीकृत हेबाक चाही।

यद्यपि यत, तत सर्वत्र महिला सशक्तीकरणक चर्चा होइत रहैत अछि, तथापि व्यवहारिकतामे संकट अछिए। जँ दुर्भाग्यवश क्यो विधवा भय जाइत छथि तऽ अखनो हुनका नाना प्रकारक यातना सामाजिक प्रताड़नासँ गुजरय पड़ैछ। अस्तु ई विचारणीय थिक जे विधवा लोकनिक स्थितिमे गुणात्मक सुधार हेतु हुनकर पुनर्विवाहक व्यवस्था हो। एहिमे सभसँ बाधक विवाहसँ जुड़ल खर्चा एवम् जातीय स्वाभिमान अछि। मुदा ई विचारणीय प्रश्न थिक जे समाजक कोनो व्यवस्था जँ एक व्यक्तिक जीवनके कष्टमय केने रहैत अछि तऽ ओकरामे संशोधन किएक नहि हेबाक चाही?

ओना, कतेको जातिमे विधवा विवाह पहिनहिसँ चलनमे अछि। कतेको महिला एहिसँ एकटा नूतन जीवन जीबाक अवसर प्राप्त करैत छथि। मुदा किछु जाति विशेषमे अखनो एकरा पारिवारिक प्रतिष्ठासँ जोड़ि कय देखल जाइत अछि। आखिर, ओ प्रतिष्ठाक जे गप्प होइत अछि, ताहिपर चर्चाक आवश्यकता नहि अछि। एहन विधवा जकरा सन्तानो नहि छैक, एकरा व्यर्थ विश्वासक नामपर लगातार कष्ट सहैत रहय, जीवनक समस्त सुख, सम्पदासँ वंचित रहय से कहा तक जायज अछि?

कतेको समाजमे ई व्यवस्था अछि जे विधवाके ओही परिवारक अविवाहित भाए किंवा समवयस्क सम्बन्धीसँ विवाह कय देल जाइत अछि। आर्थिक रूपसँ वो सभ बेसी व्यवहारिक एवम् वुद्धिआर लोक

छथि। मुदा जँ सेहो सम्भव नञि होइक तखन तऽ परिवारक वयस्क सदस्यके सक्रिय आगा आबि ओकरा महिलाक जीवनमे पुन: स्थापित करबामे सहयोग करथि आ सुयोग्य, सही व्यक्तिसँ विवाह करबामे सहयोग करथि।

जँ विधवाके सन्तान छैक तखन पुनर्विवाहसँ दिक्कत भय सकैत छैक मुदा एहनो परिस्थितिमे ओकर बच्चा सभक संगे विधवाके स्वीकार करब सर्वोत्तम समाधान भय सकैत अछि। हम एकबेर यूरोप गेल रही तऽ हमर सभक डाइभर अपन परिवारक चर्चा करैत कहय लगलाह जे हुनकर स्त्रीक ई दोसर विवाह छन्हि। पहिल विवाहसँ दूटा सन्तान छन्हि। हुनकासँ विवादक बाद एकटा सन्तान छन्हि। एवम् प्रकारेण वो तीनटा सन्तानक पिता छथि आ सभक भरण-पोषण सहर्षएवम् समान्य रूपसँ करैत छथि। विदेशमे ई आम बात अछि। ओहिठाम विवाह विच्छेद जहिना होइत अछि तहिना पुनर्विवाह सेहो भय जाइत अछि। फेर अधिकाश महिला पुरुष ओतेक शिक्षित हेतु तैयारो एहि मानेमे रहैत छथि जे आर्थिक अभावता सामान्यत: नञि रहैत अछि। ईहो बुझय जोगर गप्प अछि जे ओकर सभक सामाजिक मूल्य अछि जे ओकर सभक समाजक एवम् पारिवारिक संरचना अलग अछि।

अपन भारतीय मूल्यक रक्षा करैत एवम् परिवारक संरचनाके कोनो तरहे बिना दूबर केने विशेष परिस्थितिमे सामाजिक सामंजस्यक व्यवस्था जरूरी अछि जाहिसँ संयोगवश जँ क्यो विधवा भय जाइत अछि तऽ हुनका तरह तरहक कष्टसँ बचाऔल जा सकय आ हुनक भावी जीवनके सुखद कयल जा सकय।

ओना अपने देशक कतेको राज्यमे विधवा विवाह आम बात भय गेल अछि। अपनो समाजमे किछु जाति विशेषमे एकरा लोक अखनो ि

रहल अछि जखन कि कतेको जातिमे पहिनहुँसँ ई व्यवसाय रहल अछि। अस्तु एहि कुप्रथाक कोनो मजगूत धार्मिक पक्ष नहि लगैत अछि। ई एकटा जाति विशेषक किंवा वर्ग विशेषक अहंसँ पोषित सामाजिक अभिशाप थिक जकर सुधारपर सभक ध्यान जा रहल अछि, मुदा व्यवहारमे अखनो स्वीकार्य नहि अछि। एहन नहि अछि जे विधवा विवाह होइते नहि अछि, गाहे-बगाहे उच्च वर्गीय मैथिलोमे ई भय जाइत अछि मुदा अखनो ई एकटा स्वाभाविक, सर्वमान्य चलनक रूप नहि लेने अछि, जाहि कारणे कतेको कम वयसक कन्या जीवनक समस्त सुख, सुविधासँ वंचित रहि दुखमय जीवन बीतेबाक हेतु विवश छथि।

किछु एहन घटना सभ देखयमे आयल जतय परिस्थितिवश पतिक देहान्त भय गेलाक बाद हुनके परिवारक लोक विवाहक व्यवस्था केलाह आ आइ वो एकटा सुखी पारिवारिक जीवन जीबि रहल छथि। पूर्वपतिसँ जे सन्तान छलैक ओकरो नीकसँ पालन-पोषण भय रहल अछि। नव विवाहमे सेहो सन्तान भेलैक। हमर कहबाक तात्पर्य अछि जे सभ किछुके हठाते धर्म-कर्मसँ जोड़ि कय मनुक्खक जीबन नर्क कS देब कतहुँसँ उचित नहि अछि।

गाम-गाममे एहन दृश्य देखयमे अबैत रहल अछि जे अपने लोक विधवाक शोषण करैत छथि। कतेकठाम तS ओकर हत्या तक भS गेल। ओकर सम्पत्ति अपने लोक लूटि लेलक वा ठकि लेलक आ जखन ओकरा पयोजन भेलैक तS सभ कात भS गेल। तथाकथित मर्यादाक उल्लंघन जखन आम बात भS गेल हो, ताहि मर्यादाके व्यर्थ होइत रहब सर्वथा अनुचित।

पारिवारिक जीवन हेतु, भारतीय मूल्यक रक्षा हेतु, वैवाहिक जीवनक महत्वके कमतर नहि आँकल जाय सकैत अछि। परन्तु ओकर आधार

मजगूत बनल रहैक ताहि हेतु सोचमे परिवर्तन जरूरी अछि। पूरा दुनियाँ बदलि रहल अछि। इन्टरनेट, मोबाइल, टेलीवीजन, फेसबुक, ह्वाटसअप सौसे दुनियाँके एक आँगन (Global Village) मे परिवर्तित कय देलक अछि। एहि परिवर्तनसँ कियो बाचल नहि रहि सकैत अछि। गाम-गाम वैह टेलीवीजन, वैह गीत नाद, वैह सीनेमा चलैत अछि। स्वाभाविक अछि जे गामोक धीया-पुतामे आधुनिकताक मानसिकता उत्पन्न होइक। एकरा एकदमसँ छोड़िलो नहि जा सकैत अछि। अस्तु आधुनिकताक बिहाड़िमे सभटा उधिया जाय ओहिसँ पूर्वे हमरा लोकनि स्वत: स्वाभाविक रूपसँ परिस्थितिजन्य कारणसँ विधवा भेल महिलाके पुनर्वास हेतु ओकर सम्मानपूर्वक जीवन-यापन हेतु सोचबाक चाही।

समाज जे गतिशील होइत अछि, जे बदलैत परिवेशसँ सामंजस्य स्थापित करबाक हेतु प्रयत्नशील रहैत अछि, सैह विकसैत अछि। ओकरे विकास होइत अछि। जँ से नहि भेल तऽ अपने बनाओल नियम, कानून वो मर्यादाक बोझसँ स्वत: चरमरा जाइत अछि। तँए जरूरी अछि जे समयक संग तादात्म्य स्थापित कय हम सभ नूतन विचारके सहर्ष स्वीकार करी ओ प्रगतिक पथपर आगा बढ़ी।

८

आगा के देखलक अछि?

जखन मनुक्खक जन्म होइत अछि तखन ओकरा संग ‘सास’ रहैत अछि परन्तु कोनो ‘नाम’ नहि, मुदा जखन ओकर मृत्यु होइ छै तखन ओकरा संग ‘नाम’ रहैत अछि परन्तु ‘सास’ नहि। ‘सास’ आ ‘नाम’ क बीचक एहि याताक नाम ‘जीवन’ थिक। आब सबाल अछि जे एहि जिनगीके अहा केना जीबै छी, एकर की उपयोग करै छी...।

कतेको गोटे स्वाभिमानक अभावमे जीबैत रहै छथि आ ताजन्म ओकर पाप्तिक हेतु सङ्ल, असङ्ल चेष्टा करैत रहै छथि। कतेको गोटे ककरो चेला भऽ जाइ छथि, ककरो समर्थक किंवा अनुरागी भऽ जाइ छथि, आ आँखि मुनिकऽ पाछा-पाछा चलैत रहै छथि। जाबे होश होइ छै ताबे बहुत देर भए गेल रहैत अछि ।

समस्त जीव-जन्तुके पकृतिक वरदान स्वरूप जीवन भेटैत अछि। छोट वा पैघ जिनगी जकर जे छै से जीवैत अछि आ चलि जाइत अछि। एकटा मनुक्खे अछि जे नाना पकारक पसादमे पड़ि जीवनक आनन्दसँ कएक बेर वञ्चित रहि जाइत अछि।

जीवनक पादुभाव एवम् ओकर विकास याता एकटा आवियानक पक्रिया अछि। छोटसँ छोट मच्छर सँ लऽ कऽ हाथी-मगरमच्छ सन-सन विशालकाय जीव सब एहि निर्माण एवम् विकासक पक्रियामे सहयोगी अछि। नान्हिटा चुटीके देखियौ- अनवरत चलैत रहैत अछि। ओकर रस्तामे व्यवधान करबै तऽ, रस्ता बदलि लेत मुदा ठाढ़ नहि होएत। पंक्तिवद्द हजारक हजार चुटी चलिते जाइत अछि। कतए जा रहल अछि? पाय: जीवनक खोजमे निरन्तर पयतशील रहैत अछि। पकृतिमे स्वत: स्वाभाविक रूपसँ जीव मातक जीवन रक्षा एवम् आवश्यकता

पूर्णाक वैजाश्नाक व्यवस्ि ा अछ्छि। जाश्नि जीवके जेहेन आवश्यकता अछ्छि, ताश्नि पकारक शरीरक रचना भेल अछ्छि। ककरो पैघ दात अछ्छि तऽ ककरो पैघ सूढ़। ककरो शरीरपर काट सन-सन रौआँ लागल रहैत अछ्छि। पकृश्नि माता अपन समस्त सन्तानक जीवन-रक्ताक गजब व्यवस्ि ा केने छथ्धि।

एश्नि संसारमे श्नारन्तर श्नकछु-श्नकछु घश्नटत होइत रहैत अछ्छि। सामान्यत: हमरा लोकश्नि श्नारपेक रहैत छी। जे होइ छै से होइ छइ। बात तखन बदश्नि जाइत अछ्छि, जखन ओश्नि घटनाक सम्बान्ध अपनासँ होइत अछ्छि।

नाना पकारक जीव-जन्तु जन्मैत अछ्छि, मरैत अछ्छि, मुदा हमरा लेल धन- सन। मुदा जौ पश्नवारमे खास कऽ अपन लोकके सन्तानक जन्म होइछ तऽ लोक उत्साश्नित भऽ जाइत अछ्छि। आनन्द मनबए लगैत अछ्छि। नाच-गान करैत अछ्छि। वैह हाल मृत्युक संगे होइत अछ्छि। श्नदन-राश्नि लोक मरैत अछ्छि। कोनो चचा नश्नि होइत अछ्छि। जे मरलै से मरलै, हम ि ि मरब। सबके मश्नतो देश्नख लोकके अपन मृत्युक अन्दाज नश्नि भऽ पबैत छइ। ताश्नि मानश्नसकताक कारण जँ श्नाकटक व्यश्नक्तक मृत्यु भऽ जाइत अछ्छि तऽ लोक हतपभ भऽ जाइत अछ्छि। लोक भगवानके दोष देबए लगैत अछ्छि।

एकबेर हम डॉ. सुभर झाजीक संगे इलाहावाद पएरे कतौ जाइत रही। रस्तामे पुछश्नायश्नि-

"अहाक श्नसाबे भगवान छथ्धि श्नक नश्नि?"

ओ कहला-

"हमरा श्नसाबे तऽ भगवान नश्नि छथ्धि आ जौ छथ्धि तऽ बि बइमान छथ्धि।"

पुछश्नायश्नि-

"से की एक?"

ओ आगू कहला-

"पेटमे जे बच्चा मरि जाइत अछि, तकर कोन दोष? आ जँ दोष रहिते छै तऽ ओकर जन्म होबए किएक दैत छथिन आ तखन ओ अपन कर्मक फल भोगैत। पेटेमे मरि जेबाक की औचित्य?"

मुदा मृत्यु तऽ होइते रहै छइ। ओहिपर ककरो बस नहि रहल छै। लोक कतए-सँ आएल, कतए जाएत? ई शाशत प्रश्न अछि। लोक अस्तित्व-प्रश्न उठैत अछि, एहि उमीदमे जे ओ अमर भऽ जाएत, मुदा सत्य तऽ यएह अछि जे साझ धरि जीवनक एक दिन कम भऽ गेल रहैत अछि। मृत्यु एक दुखद प्रसंग अछि। निकट सम्बन्धीसँ समाधिक, पारिवारिक सम्पर्कक एकाएक पूर्णविराम लागि जाइत अछि। कएक बेर मृत्युक भयसँ चिन्ता, अवसाद वा निराशाक भाव प्रसरि जाइत अछि। किछु लोकके मृत्युक बाद पूर्वकर्मक अनुसार स्वर्ग वा नर्क जेबाक चिन्ता सेहो ग्रसित केने रहैत अछि। मृत्युक कारण अनेको भऽ सकैत अछि। दुर्घटना, बिमारी, हत्या, आत्महत्या आ से सब नहि तऽ वृद्धावस्था। उमरक संग-संग जीवन रक्षक तत्त्व सब घटि जाइत अछि। बिमारीसँ प्रतिरोधक क्षमता क्षीण भऽ जाइत अछि। शरीरक अंग प्रत्यंग क्रमशः काज केनाइ छोड़ि दैत अछि, जकर परिणति मृत्युमे भऽ जाइत अछि। कहबी छै जे 'टिटही टेकल पर्वत।' टिटही अपन टाग उन्टा आकाश दिस कऽ कऽ सुतैत अछि, जे जँ आकाश खसत तऽ ओ रोकि लेत। यएह हाल मनुक्खक अछि। सौसे जिनगी अपस्याँत रहैत अछि जे ओकरा बिना दुनियाँक काज नहि चलत ओ रहत तखने कोनो काज होएत अन्यथा दुनियाँ ठामहि धँसि जाएत। मुदा जीवनक सत्य किछु आर अछि। ककरो लेल ई दुनियाँ ठाढ़ नहि रहैत अछि। जखन जवाहर लाल नेहरु प्रधान मंत्री

छलाह तऽ लोकमे चचा होइक जे नेहरूजीक बाद देश केना चलत? मुदा ई चिन्ता व्यर्थ साबित भेल। देश चलैत रहल अछि।

लोक अबैत अछि, जाइत अछि, परन्तु संसारक चक्र निरन्तर गतिमान रहैत अछि। समय ककरो पतीक्षा नहि करैत अछि। भोर, साझ, इजोरिया, अन्हरिया अनवरत होइत रहैत अछि। जीवन-याताक अन्त तऽ भेनाइए अछि। कतेक बेर लोक स्वयं थाकि जाइ छथि, ओ विशामक निरन्तरता हेतु स्वत: मृत्युके आलिंगन कए लैत छथि। उदाहरण स्वरूप आ. विनोव भावे अनशन कए पाणक त्याग कए देलनि स्वामी विवेकानन्द, आदि शंकराचार्य सन-सन महान अध्यात्मिक व्यक्ति सब कमे बयसमे चलि जाइत रहलाह। महात्मा गाधी सन त्यागी ओ निष्ठावान व्यक्तिक हत्या कऽ देल गेल। तीन-तीन गोली लगलाक बाबजूद ओ 'राम-राम' कहैत पाणक त्याग केलनि। अस्तु मृत्यु कखन, ककरा केना होएत एवम् कोन परिस्थितिमे होएत तकर कोनो ठेकान नहि अछि मुदा ई बात पक्का अछि जे मृत्यु होएत, जखन हो, जेना हो, जतए हो। गीतामे तऽ कहल गेल अछि जे मृत्युक समय ओ स्थान पूर्वनिर्धारित अछि।

विज्ञान एवम् तकनीकीक विकाससँ जीवन एवम् मृत्यु सेहो पभावित भेल अछि। पहिने मामूली बिमारीसँ लोक मरि जाइत छल। सुलबाई, मलेरियाक कोनो इलाज नहि छल। हैजा, तपेदिक सन संक्रामक बिमारीसँ गामक-गाम सुडाह भऽ जाइत छल। क्रमश: तरह-तरह केर दबाइक अविष्कार भेल। लोकक आयुमे इजाफा भेल। लेकिन नव-नव आर कतेको घातक बिमारी सब बाहर भऽ गेल, जकर तोड़ विज्ञानक पास नहि अछि।

अस्पतालक सुविधा एवम् चिकित्साक बेहतर उपलब्धिसँ लोक कएबेर स्वस्थ भऽ दीर्घजीवनके पाप्त केलक मुदा कतेको मामलामे बिमार

व्यक्ति अस्पतालेमे श्वास्थयौर कटैत रहै छथि। अत्यन्त बेमार व्यक्तिके इच्छा मृत्युक मागक चचा होइत रहैत अछि। कहक मतलब जे श्वजानक पराकाषा मृत्युक पुरषाकिे कम नहि कऽ सकल।
समयक चपेट तेहन श्वारन्तर ओ पवल अछि जे एकर पश्वणामक कल्पनो नहि कएल जा सकैत अछि। जहिना परमाणु बमसँ श्वध्वंस होइत, आ गामक-गाम लुप्त भऽ जाइत, तहिना समयक अचूक आघात/पश्वाघात कोनो बमसँ कम नहि अछि। सौसे गामसँ घरे-धरे लोक श्वला गेल। गश्वा कऽ देखल जाए तऽ साइदे क्यो पुरान लोक भेटता, कतए गेलाह सब गोटे? मुदा परमाणु बमक श्वध्वंस मात अश्वाकारी होइत अछि, बाल-बच्चा, वृदमे कोनो श्वभेद नहि कऽ पबैत अछि। श्वनाशक बाद दूर दूर धश्व शृजनक सम्भावना नहि रश्व जाइत अछि।
पकृश्व पदत श्वनाशक संगे शृजन भाए-बश्वन जका संगे चलैत अछि। जँ एकटा पात झरैत अछि तऽ दसटा हश्वयर कंचन पल्लवसँ गाछ समृद भऽ जाइत अछि। लोक बीतल बातके श्वसश्व आगाक तैयारीमे लाश्व जाइत अछि।
अदैतवादीक अनुसार आस्श्वात्म केवल अनन्ताक अछि, शेष सब माया थीक। कोनो जिवस्तुक यािविव्ह छथि, एवम् पकारेण जीवन रहए नहि रहए, ओकर आस्श्वात्मपर अन्तर नहि होइत अछि।
समं पश्यन् सवत्र समवश्वितमीशरम्।
न श्वनस्त्यात्मनात्यानं ततो याश्व परागश्वाम्।।

(गीता १३/१८)

जे सवत्र ईशरके सब भावसँ सवत्र अवश्वित देश्वव ओ आत्मा दारा आत्माक श्वंसा नहि करै छथि, से मुक्त भऽ जाइ छथि।

कहक माने जे मोनेक ऊपर सब बात निर्भर करैत अछि। घटनासँ बेसी ओहिपर हमर दृष्टिकोणसँ ओकर महत्व कम बेसी भऽ जाइत अछि। जीवनमे जहिना तरह-तरहक घटना घटित होइत रहैत अछि, तहिना जन्म ओ मृत्यु सेहो होइते रहैत अछि। समस्या घटनासँ नहि अपितु घटना विशेषक लगावसँ होइत अछि।

"इहैब तैर्जित: सर्गो येषा साम्ये स्थितं मन:
निर्दोष हि समं ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिता:"
गीता ५/१९

जिनकर मन साम्यभावमे अवस्थित अछि, ओ एहि ठाम जीवन मृत्युक संसार चक्रके जीत लेलाह अछि, चूँकि ब्रह्म निर्दोष ओ सबठाम सम छथि, अस्तु ओ ब्रह्ममे अवस्थित छथि। कहक माने जे मोनमे नीक भाव होइ तऽ मनुक्खे जीवन-मरणक पभावसँ हटि ब्रह्मलीन भऽ जाइत अछि। जीवनमे पलपल परिवर्तन होइत रहैत अछि। लोकक सोच समयक संगे बदलैत रहैत अछि। जाहि बातके लोक बच्चाक समयमे नीक कहैत अछि, मुदा पैघ भऽ ओही बातपर ओकर विचार बदलि जाइत अछि।

वृद्धके युवावस्थाक गप्प-सप्प सोचि हँसी लागि जाइत छइ। कहक माने जे मनुक्खक निरन्तर बदलाते रहैत अछि। जँ कोनो उपायसँ मृत्युपर बस चलितै तऽ कोनो बड़का आदमी नहि मरैत। धना सेठ सब अमर बुटी खा-खा कऽ अमर भऽ जाइत आ गरीब, गुरबा सब नहि जीबैत। मुदा मृत्यु एकटा एहन पश्न छिन्ह अछि जकर जवाब ककरो लग नहि अछि। राजा, रंक ,फकीर सब हतपभ भऽ एकरा स्वीकार करैत अछि, कोनो विकल्पो नहि छइ।

हम सब बच्चामे सुनि -पुरान घर खसे, नव घर उठे। ई फकरा जीवन-मरणक चक्रपर पूर्णत: लागू होइत अछि। जहिना बुढ़-पुरान

लोक सब चलि जाइ छथि, ओहिना किंवा ओहूसँ बेसी तेजीसँ नव जीवनक सृजन होइत अछि। जहिना पतझाड़िक बाद नव पल्लवसँ गाछ वृक्ष हरियर भऽ जाइत अछि, ओहिना गाम-घर नवजात शिशुक जन्मसँ हरल-भरल रहैत अछि।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधिक हाथ। जे हेबाक छैक से होइत अछि। एहिपर माटि-पच्ची करब व्यर्थ। जीवते सुसम्पन्न परिवारक अंग भऽ जाइत अछि, तऽ कियो रस्ता कातमे जन्मेसँ समय बितबै लेल मजबूर भऽ जाइत अछि। रामकृष्ण परमहंश सन महात्मा कैंसरसँ पीड़ित भऽ असाध्य कष्ट भोगलथि। महात्मा गाधी सन शान्तिक समर्थक हिंसाक शिकार भऽ गेलाह आ हत्याराक गोलीसँ हुनक मृत्यु भेल।

ई सब देखि-सुनि मानए पड़त जे एके जन्मक नहि अपितु अनेकानेक जन्मक कमाएल मनुक्खे पछोर केने रहैत अछि। कतेक मनुक्ख साधारण प्रयास कऽ उतरि लक्ष्य प्राप्त कए लइ छथि तऽ कियो जीवन भरि कठिन श्रम कऽ दुखपायासँ चलि जाइ छथि। ई सब केना आ किएक होइत अछि, तकर सटीक उत्तर देब कठिन अछि। मुदा भाग्यक कोनो जवाब नहि ।

भाग्यं फलति सर्वत्र, न विद्या न च पौरुष:।

पहिला-अगिला जन्म कियो देखलक नहि, मात्र अनुमाने लगाओल जा सकैत अछि मुदा वर्तमान जीवनमे जे किछु देखि-सुनि रहल छी से आँखि भरल अछि।

जन्मसँ प्रारम्भ आ मृत्युसँ अन्त होइत एहि जीवन-यात्राक पुनरावृत्ति होएत, नहि होएत...। ताहि पर तरह-तरहक मत अछि। मुदा ई तय अछि जे एहि जीवनमे बहुत किछु देखबा-सुनबामे अबैत अछि, जाहिसँ वर्तमान जीवनके सुखी ओ शान्त कएल जा सकैत अछि। अशान्तस्य

कुतो सुखम्!

अस्तु हमर पूवज लोकनि शान्तिक हेतु पाठ करैत रहलाह।

जे किछु एहि जीवनमे पाप्त अछि, से अपना आपमे अदुत अछि, अद्वितीय अछि। आगा के देखलक अछि?

नवका पोखैर

"हर-हर महादेव।
जानह हे महादेव!
हमरा मोनमे श्कछु छ: पाच नश्ह अश्छ।
तूँही जानह हे महादेव..!"

"अहाके जे बुझाए मुदा हम तँ अपना भश्व सभके सभ श्द्न केश्नाऐ...।"

"आ हम केकरा नश्ह केश्नाऐ..?"

पंचमुखी महादेवपर जल ि‍रैतकाल मश्हला सभ आपसमे अश्हना श्वरौरी करैत रहै छेली...।

एक हाि‍ महादेवक श्वमोलपर आ दोसर हाि‍ जल ि‍श्व रहल मश्हला सभ बीच-बीचमे मौका पश्वते ि‍दका पढ़ए लगैि‍। जे श्कयो आएल, महादेवक ऊपरसँ जल ि‍रलक। जाि‍ होइ आश्क गरमी, सभ मौसम जलि‍री अनवरत चलैत रहै छल। रच्छ छल जे दुपहश्वयामे ई भीि‍ कम भऽ जाइत रहै जइसँ महादेव चैनक अनुभव करैत हेता। कम-सँ-कम घरेलू ति‍ पश्ववाश्वक झमेल सभ सुनबासँ तँ मुक्श्व होइते रहैन। चाश्व बजे भोरेसँ नवका पोखैरपर स्नानाि‍ सभ तपकए लगैत छल। ओइमे श्वयश्वत पाच गोटे टोलसँ अबैत छला जइमे तीन गोट मश्हला छेली। टाइमक सोलहनी पाबन्द रहैन। भोरे-भोर 'हर-हर महादेव!' श्कछु वृद नवका पोखश्वक कोणपर बसल पश्ववारमे सँ सेहो भोरे स्नान करएबला लोक सभमे शाश्वल रश्हते छला।

स्नान, ध्यान एवम् आराधनाक संग महादेवक अनवरत जलि‍री चलैत रहै छल, आ तैसंग गपाष्टक जे आनन्द छल, तेकर वणश्व नश्ह कएल जा सकैत अश्छ। कश्ह नश्ह, महादेवके ई सभ केतेक पश्वन

पिति हेतैन! खाएर.., मुदा लोक सभ तँ तृप्त लगैत छला। सभ अपना-आपमे मगन, सभ अपने-आपमे आनन्दित।
नवका पोखैर ओइ समयमे हमर गामक नाक छल। मूलत: हमर पिती-स्व. वंगट झा-ओइ स्थानिक धन-राशि देख-देख करैत छला। नवका पोखरिक दच्छिनबरिया महारपर भगवान शिवक पंचमुखी मूर्तिवला मन्दिर छल। नवका पोखैर तथा ओइठामक मन्दिरक निर्माण हमर सबहक समस्त परिवार सभ मिलि कऽ केने रहैथि। मन्दिरक पाण-प्रतिष्ठा हमर पितामह-स्व. शीशरण झा-द्वारा भेल रहए। पोखरिक जाइठ पिकालक किस्सा सभ हम सभ बच्चामे सुनने छी। ओइ समयमे पोखैर-इनार खुनाएब बहुत मान-मजाक बात बुझल जाइत छेलइ। ओना, गाममे पहिनेसँ कएटा पोखैर रहै, जइमे तीनटा पोखैर तँ हमरा सबहक टोलेमे बुझू। तेकर अलाबा कुटी लगक पोखैर सेहो एकटा। तथापि आरो पोखैर सुनौल गेल, तेकर तात्पर्य बुझल जा सकैत अछि...।
नवका पोखैर पाय: सभसँ बादमे बनल छल तँए ओकरा 'नवका पोखैर' कहल जाइत अछि। पोखरिक दच्छिनबरिया भीरपर मन्दिरक संग रंग-रंगक फूल सभ लगौल गेल छल। जेना- चम्पा, मालशी, कामिनी, करबीर, अड़हुल इत्यादि। चम्पा, करबीर आ अड़हुलक बड़का-बड़का गाछ छल। सम्पूर्ण परिसरक सफाइ स्व. वंगट काका करैत छला। वंगट काका असगरे जीवन पर्यन्त ओइ काजके पूर्ण भक्ति-भावसँ करैत रहला। कहियो थाकैथि नहि। स्वान्त: सुखाय ऐ काजके करैत ओ तत्कालीने समाजक नहि अपितु अखनो समाजक बीच दृष्टान्त छैथि।
मन्दिरक आगूमे धरमशाला छल। फूसक दरबज्जानुमा घर जे चार कातसँ खुजल छल। कहियो थाकल-ठेहियाएल पथिक ओतए रहि

सकैत छला। ओ समस्त पश्चवारक आश्चाश्च होइत छला। हुनकर सभटा बेवस्ि होइत छल। हमरा मोन पि त अश्छ जे एकबेर एकटा महात्मा आएल रहैि । ओ बाजैि नश्छ। श्वलेटपर श्चाश्च कऽ अपन इच्छा, अपन मन्तव्य पकट करैि । हुनकासँ भेट करक हेतु लोकक करमान लागल रहैत छल। सौसे देह बभूश्च रमौने, जौरक डोराडोश्च पश्चरने, जटा जूट धारी भेष हुनक आकषणाक केन्र रहैन।
माि क भयानक ठंि हो आश्क जेठक तप्त रौद ओ देहपर एकटा गमछा मात रखैत छला। अपना समयक नामी पहलमान सेहो रहैि । नवका पोखश्चक उत रबश्चया भीरपर अखाि छल। ओइठाम युवक सभके कुश्तीक पश्चाकण दैत छला, डंड बैसक करैत छला। श्चकलोक श्चकलो आखाि क माश्च देहमे औंसने घामसँ तर-बत र भऽ जाइत छला। तेकर बाद बि का खि सँ सम्पूणवपश्चसरके अपने हाि साि करैत छला। पात: स्नान करैबला लोक सभके तरह-तरह केर श्चदायत दैत रहै छेलश्चन। पोखश्चक पाश्च स्चच्छ बनल रहए, तइले सतत सतकव रहैत छला। पोखश्चमे साबुनसँ कपि श्चचनाइ मना छल, ऐ लेल ऊपरमे बेवस्ि छल। ओइ समयमे श्चकयो-श्चकयो पोखश्चमे साबुनसँ कपि खीच लेश्च, मुदा जँ पकि ल गेल तँ भगवाने माश्चक। नवका पोखश्चक श्चन-पश्च-श्चनक देख-रेखक सम्पूणवदाश्चत्व ताजीवन वंगठ काका श्चना कोनो स्वाि क उठौने छला। घन्टो ओइ पश्चसरक श्चकासक हेतु काज करैत रहला। हुनका बाद ओइ स्ि ानक पूश्चव नश्च भऽ सकल, भाइयो नश्च सकैत छल।
गाम-घरमे एहेन साि -सुि रा रमणीक पाकबुमा स्ि ान भेटब कश्चन। ओना तँ खेत-पि ार सभ हश्चयर कंचन रश्चते अश्छ, ि ाल-कादोक अपन स्वाद सेहो छइहे, मुदा तहू माहौलमे जे अध्यात्श्चक, सास्कृश्चक केन्रक र पमे नवका पोखश्चक बेवस्ि जे छल आ बहुत

थ्रद्दन धथ्र जेना चलैत रहल ओ अदुत ओ बेथ्रमसाल कहल जा सकैत अथ्रछ।

नवका पोखथ्रक थ्रमाणमे हमरा लोकथ्राक पथ्रवारक समस्त लोकक योगदान छल। सोदरपुथ्रये माथ्राक मूलक हमरा लोकथ्राक पवथ्र छला जे सात पुस्त पूववैवाथ्रक सम्बन्धोपरान्त गाममे बसल रहैि। आइ गामक आधा जनसंख्यामे सभ सहभागी छैि।

वंगट काका मूलत: पहलमान रहैि। गाम भथ्रमे धाक रहैन। कोनो पर-पंचैतीमे हुनका अबस्स बजौल जाइत रहैन। थ्राया-पुता कुश्ती लिए, खेती-बाि करए, माल-जालक सेवा करए, महीस राखए जइसँ डोलक-डोल शुद दुधक सद: लाभ होइक-तइ थ्रचारक पोषक छला वंगट काका छला। कए थ्रद्दन हुनका बाबूसँ माने हमरा थ्रताजीसँ थ्रवाद भऽ जाइन। थ्रवादक मुदा रहैत छल जे पढ़ाइ-थ्रखाइ करब साि थ्रक आथ्रक थ्ररि क? आब थ्रकयो सुनत तँ हँसत। मुदा वंगट काका अपन थ्रचार जोर-सोरसँ बजैि-

"पढ़ो पूत चण्डी, जासवचले हण्डी।"

कहक सराश- खेती-बाि कर , ऐमे सद: लाभ अथ्रछ। पढ़ाइ-थ्रखाइमे कथ्रया की हएत से के देखलक!

गाममे थ्रकयो लुंगी पहीथ्रलक तँ ओ (वंगट काका) जोरदार थ्ररोध करैि। समय बीतलाक बाद आब कहल जा सकैत अथ्रछ जे पढ़ाइ-थ्रखाइक समिथ्र करब सही छल, थ्ररोध गलत। गाममे वा केतौ जे पढ़लक-थ्रखलक से आगू भऽ गेल। ओहू समयमे थ्रकछु गोटे कहैि-

"पढ़ोगे-थ्रखोगे बनोगे नबाब।"

थ्रसथ्रत र पसँ ओ सभ नश्चय अगसोची रहैि।

नवका पोखैर पथ्रवारक गौरवसँ जुिल छल। केकरो कुटुम अथ्रबतैि तँ नवका पोखैरपर हुनका अबस्स आनल जाइत। ओइठाम स्नान,

ध्यान होइत, गप-सराका चलैत। धरमशालामे बैस कऽ आराम सेहो कएल जा सकैत छल। वंगट काका श्नात्य दुपहश्नयामे ओइठाम धमग्रन्ि पढ़ैि। सायंकाल भगवान श्नावक आरती-पूजाक संग नाचारी सेहो गाओल जाइत छल। ओइमे श्नायश्नात अनेको वृद लोकश्न भाग लैि।

नवके पोखश्नक पच्श्नम-दच्श्नन भागमे सोदरपुश्नये सश्नसव मूलक श्नकछु पश्नवार बसल छला। ओइ पश्नवारक बादशाह बाबा-स्व. ......_____ श्नाव मन्श्नरक पूजाक बहुत श्नन धश्न बेवस्ि देखैत रहला। सायंकालक नाचारीमे ओ तँ रश्नते छला जे हुनका संगे ओही पश्नवारक कएटा आरो वृद सभ सेहो नाचारी गायनमे भाग लऽ सुर-मे-सुर श्नलबैत छला। हमर बाबा एवम् वंगट काका तँ रश्नते छला। ‘बाबा केतए सुतल छी औ बालक वनमे केतए-सँ अएला, श्नकयो नश्न हुनकर सश्निया...।’ आश्न नाचारीक स्वर अखनो हमर कानमे गुंश्नात होइत रहैत अश्न।

नवका पोखश्नक मालशी गाछक छाहैरमे हम केतेको श्नन बैस कऽ पश्नायोश्नाता परीक्-सबहक तैयारी करैत रही। बीच-बीचमे पाश्न ओ अन्य आवश्यकताक पूश्नव ओइठाम रहश्नहार नारायणजी करैि। केतेको श्नन हम अपन श्नत लाल बच्चा (स्व. पो. श्नष्णुकान्त श्नश)क संग साझक समयमे ओतए बैस गप-सप्प करी, भश्नसक योजना बनाबी।

स्वच्छ, श्नमल वातावरणमे गाम-घरक झंझश्नसँ दूर नवका पोखैरपर बैस कऽ एकटा स्वगीय आनन्द होइत छल। हम श्नायश्नात भोर-साँझ ओइठाम जाइत रही। पाय:काल श्नात्यकमब स्नान, पूजा एवम् व्यायाम आश्न ओतइ होइत छल।

श्नात्य सायंकाल गप-सप्प करबाक हेतु कएक गोटा भेट जाइि।

पूजा-पाठ तँ होइते छल। संग-संग एकटा स्वस्थ मनोरंजनक तथा अध्यात्मिकताक अनुभूति सेहो ओइठाम होइत छल।
गाममे हमरा लोकनिमे जँ केकरो देहान्त होइ तँ ओकर शदकमव ओहीठाम होइत छल। हमर बाबा एवम् बाबूक शाद-कमवसेहो ओहीठाम भेल छेलैन। वैदिककी शाद्ध-लिमे बछराके दागल गेल। ओकर करण िन्दन अखन तक हमरा रोमाञ्चित करैत रहैत अछि। हमरा विचारासँ ई अमानवीय पयोग अछि, ऐसँ स्वगक सीढ़ी कियो केना चढ़त से हमर समझसँ बहार अछि। आर जे अछि से अछि, मुदा ई काज औअल दजाक ि्िता अछि। एकटा जीवित पाणीके सरी धीपा कऽ दागि देब, केतौसँ मनुष्यत नहि थिक। नइ चाही एहेन स्वगव़ जइ हेतु एकटा निरीह, निदोष जीवक संग ि्िताक पराकाष्ठा कएल जाए। ओनाहू आब गाम-घरमे एकर विरोध भऽ रहल अछि, कारण साढ़ दारा जजात चरि गेलासँ किसानक संग अन्यान्य कारण सभ सेहो अछि।
नवका पोखरिक पच्छिम-दच्छिन कोणपर बसल किछु परिवार पहिने गामक बीचेमे छल। ओहो सभ भगवानमान छला। ओही परिवारक किछु गोटे गाममे शुरए-मे बसि गेल छैथि। नवका पोखरिपर हुनका सभके बच्चेसँ देखिऐन। सभ गोटे उदमी, संघषशील, परिशमी तथा संस्कारी छला। ओइठामक कएटा वृद सबहक नाचारी महादेव मन्दिरपर सुनैत छेलौ। ओही परिवारमे उग संस्कार सम्पन, तेजस्वी स्व. रामनन्दन मिश्र भेला। उत्कृष्ट मेघा ओ उत्कट इच्छाक बाबजूद ओ बहुत आगू नहि पढ़ि सकला। खादी भण्डारमे नौकरी करैत निरन्तर गामसँ जुिल रहला। कोनो पाबनिमे ओ अबस्स गाममे उपस्थित रहैथि। हमरासँ हुनका अदुत स्नेह रहै छेलैन। कएक बेर नौकरीक दौरान जमशेदपुर एला। तेतबे नहि, कएक बेर

थ्वल्लीमे आश्च कऽ भेट करैि। अपन संघषकके सकारात्क र थ्वि दैत स्व. रामनन्दन थ्वश अपन पश्चवारक थ्वकास याताके एकटा थ्वणयात्मक र थ्वि देबामे सि ल रहला। पश्चणामत: आइ-काल्श्च हुनकर पश्चवार गामे नश्च, इलाकामे यशस्वी अश्छ, जानल जाइत अश्छ। आब ओइ स्िनिमे कोठे-कोठा भऽ गेल अश्छ।

ओही पश्चवारमे स्व. उमेश थ्वशक पुत शी शश्चावोध थ्वश अपन पश्चशम ओ संघषबँ ओइ समयमे बी.एस-सी. कऽ रश्चका उच्च थ्वदालयमे थ्वजान थ्वषयक श्चाक्क भेला। अपन पूरा पश्चवारक ओ कायाकल्प कऽ देलाह। जखन हुनका लग बैसी तँ ओ अपन जीवन-याताक एक-सँ-एक अनुभव सुनबैि।

पैछला चाश्चस बखबे नवका पोखश्चक पश्चदृश्य एकदम बदैल गेल। ओतए बसल पश्चवारक अश्चकाश लोक सकल थ्वकास याताक उदाहरण छैि।

नवका पोखश्चसँ हमर बाबाके बहुत लगाव रहैन। जीवनक अन्श्चम समय तक ओ नवका पोखैर टहलैले अबस्स जाइत छला। हािमे छिी लेने रोडपर चलैत एक बेर हुनका एकटा साइश्चलबला टकर माश्च देने रहैन। ओहू अबस्िमे एके हाि साइश्चलके श्चाश्चएने-श्चाश्चएने अपन दरबज्जापर लऽ आएल रहैि।

संभवत: १९६७-६८ इस्वीक गप श्चिक। हमरा लोकश्चा नवका पोखश्चपर पुस्तकालय बनेबाक हेतु बैसार केलौ। गामक तमाम गणमान्य लोक सभ बैसारमे रहैि। ओइसँ पूवव गाममे एकटा पुस्तकालय बहुत पश्चनेसँ छल, जे कोनो कारणसँ अव्यवस्श्चित भऽ गेल छल। एक समयमे ओ पुस्तकालय गामक पश्चाष्श्चत संस्िान छल। १९६२क चीन-भारत युदक समाचार सुनबाक हेतु ओइठाम सौसे गामक लोक जमा होइत छल। सटले खादी भण्डार छल ओ

थ्रया-पुताक खेल-धूपक सामगी सेहो छेल। मुदा की भेलै जे सभ गश्राथ्रथ्र कमश: ठप्प जका भऽ गेल। नव पुस्तकालय बनेबाक बैसारमे थ्रकछु पवुद लोकक थ्रचार रहैन जे ओही पुस्तकालयके जीणोदार कएल जाए। यदथ्र हम सभ ओइ पस्तावक समिथ्र नश्च केने रही, मुदा आब लगैत अथ्रछ जे ओ सही राय छल।

नवका पोखथ्रक धरमशालामे पुस्तकालयक स्थापना हेतु पयासके आगू बढ़बैत कएकटा बैसार आरो भेल। पुरान पुस्तक सभ घरे-घरसँ ताथ्रक-हेथ्र कऽ आनल गेल। पुस्तक सभ रखबाक हेतु लकथ्रिक रैक बनौल गेल।

पुस्तकालयक उदाटन हेतु डा. शुभर झाजी के आमंथ्रात कएल गेल। ओइ समयमे सेवा थ्रनवृत भऽ ओ गाममे रहए लागल रहैथि। हाथ्रिमे बेत लेने थ्रमरनई पहीथ्रने ओ पुस्तकालयक उदघाटन कायथ्रमिमे आएल रहैथि। हमरा लोकथ्रन हुनकासँ थ्रकछु बजबाक आगह कएल। ओ कहला जे भाषण करब हुनका एकदम पथ्रान नश्च अथ्रछ। तथ्रिथ्र ओ अपन बात कहैत पुस्तकालयक संचालनमे होमयबला बेवहाथ्रक असुथ्रधा सबहक वणथ्र करैत अपन जीवनक अनेकानेक अनुभवक चचा सेहो केलैन। ओ पुस्तकालय अल्पजीवी भेल। संशाधनक अभावमे थ्रकछुए थ्रदनक बाद सभ थ्रकछु ठप्प पथ्रि गेल।

नवका पोखैर अपना-आपमे एकटा संस्था छल। अध्याथ्रमकताक संग गामीण संस्कारके सेहो पज्वथ्रलत केने रहैत छल। मुदा सभ थ्रवस्साक केतौ-ने-केतौ आ कहुना-ने-कहुना अन्त होइते अथ्रछ। नवको पोखथ्रक संग सेहो सएह भेल। जथ्रहना पत्येक मनुखक जीवनमे उत्थान-पतन होइत अथ्रछ तथ्रहना ऐ संस्थाक संग सेहो भेल। जखन वंगट काका स्वगीय भऽ गेला तेकर पछाइत थ्रकयो एहेन बेकती नश्च भेल जे नवका पोखथ्रक संग हुनका जकाँ एकात्म भऽ

सकए। केकरो ओ र ध्यायो नञ्ञये रहइ। जइ िलबाििमे एकटा पात नञ्ञ खसल भेटैत छल से िमश: कूिा, ककदसँ भरल रहए लागल। पोखश्चक देख-रेख सेहो िील भऽ गेल। जेतेक टा पश्चवार ऐ पोखैर एवम् आसपासक पश्चसरक ञ्चस्सेदार छैि जे एकर एक स्वरमे रका ओ ध्यकास करबाक बजाय आपसेमे कचर-बचर होइत रहल। िनिमनाइत, िनिमनाइत मन्थ्वर खश्चस पिल। पोखैर सबहक व्यापारीकरण भऽ गेल। पोखश्चक पाश्च नहाइ-जोकर नञ्ञ रञ्ञ गेल। कालान्तरमे श्चकछु युवक लोकश्चके ऐपर ध्यायान गेल। जइसँ मन्थ्वरक जीणोदारक पयास भऽ रहल अश्चछ। आर-आर सकारात्मक पयास भऽ रहल अश्चछ।

मन्थ्वर भगवानक घर थीक, जेतए लोक अपन-अपन अहंकारक ध्यसरजन कए ईवशरक शरणमे पहुँचैत अश्चछ। अस्तु एकर पुनश्चनमाण ओ रखरखावमे जँ ऐ बातक ध्यायान राखल गेल जे ओ पश्चवार ध्यशेषक नञ्ञ अथ्यतु समस्त आस्िावान लोकश्चक वस्तु बश्च सकए, तँ श्चिय ई कल्याणकारी हएत आ नवका पोखैर िरसँ अपन गौरव पाप्त कए सकत।

८

श्चाश्चि : ३.७.२०१७

<u>इच्छा पत</u>

मृत्यु अवश्यंभावी थीक। एक-ने-एक दिन सभ बेकती ऐ दुनियासँ सभ किछु छोड़ि कऽ चल जाइत अछि। जीवन भरिक स्वअर्जित एवम् पैतृक सम्पैत अहीठाम रहि जाइत अछि। सवाल अछि जे ऐ तरहे छोड़ि गेल सम्पतिक की हएत? ओकर मालिकाना हक केकरा भेटत..?

केतेक बेर ऐ पशक उतर तकबामे वर्षो लागि जाइत अछि। लोक आपसेमे लड़ि जाइत अछि। भाइ-भाइक दुश्मन भऽ जाइत अछि। आब तँ भाइक अलाबा बहिनो सभ ऐ युदमे कुदि जाइत अछि, खास कऽ तखन जखन सम्पतिक मूल्य ज्यादा हो, शहरी सम्पैत किंवा गामो-घरक सड़किक कातक सम्पैत सभ विवादक जड़ि भऽ रहल अछि। केतेको ठाम छोट-छोट विवाद लऽ कऽ अहंक टकराव भऽ जाइत अछि। कोनो पक्ष सुनैले तैयार नहि। तखन की हएत? जँ मृत बेकती इच्छा पत (Will) कऽ गेल छैथि तँ विवाद नहि हएत, नहि तँ सालक-साल मोकदमा चलत, जइसँ कोट-कचहरीक चकर लगबैत रहू एवम् वकीलके फीस भरैत रहियौ...।

हमरा एकटा नामी वकील कहलैन जे एकटा छोट सन जमीन-जेकर मूल्य ७-८ लाख हेतइ-तैपर दू भैयारीमे विवाद छइ, अहंकारवश कियो हटए लेल तैयार नहि। जबकि एक भाइ सात लाख टका फीसक रूपमे हमरा दऽ चूकल अछि। एतबे नहि, एक-आध लाख आरो भेटबे करत।

...कहक माने जे सम्पतिक जेतेक मूल्य होइत से वकील साहैब असूलि चूकल छैथि। तैयो लड़िकू भैयारीमे सँ कियो पाछू हटैले तैयार नहि अछि..! ऐ तरहक लड़िइमे कएक टा पुस्तैनी मकान

खण्डहर भऽ जाइत अछि। अस्तु ई जरूरी ओ अत्यान्त आवश्यक अछि जे हुनका कोनो पकारक-माने चल वा अचल-सम्पैत अछि, से मृत्युक पूववइच्छा पत बना लेथि, कारण मृत्युक तारिखके के जनैत अछि, ककरो नहि।

जँ कोनो बेकती मृत्युसँ पूववइच्छा पत (वसीयत) कऽ कऽ जाइ छैथि तँ हुनकर सम्पतिक हस्तान्तरण स्वत: ओइ बेकतीके भऽ जाएत जेकरा सम्बन्धित इच्छा पतमे सम्पतिक अधिकारी बनौल गेल रहत। ओ बेकती माता, पिता, पुत, पुती, भाए, बहिन, भातिज, मित वा ककरो अन्य भऽ सकैत छैथि। परन्तु जँ सम्पतिक मालिक बिना इच्छा पत बनौने मरि जाइ छैथि (Intestate) तखन ओइ सम्पतिक हस्तान्तरण आकि बँटबारा कानूनक अनुसार कोटवदारा होइत अछि। ऐ पकियामे सालो लागि सकैत अछि। खास कऽ जखन सम्बन्धित पक परस्पतर विरोधी दाबा करैत हो। यदि सम्बन्धित पक समझदार हुअए, आपसमे रजामन्दी होइक तखन ऐ तरह सम्पतिक निपटान असानीसँ भऽ जाएत। मुदा केतेको बेर सम्पतिके मूल्यवान होइक कारणे बहिन वा बेटीक हक नहि देबाक कारण किंवा अहंक टकरावक कारण सम्पतिक बँटबारा/हस्तान्तरण पारिवारिक कलह केर कारण भऽ जाइत अछि। अस्तु उचित ओ आवश्यक थिक जे जँ अहाके सम्पैत अछि तँ तेकर मृत्योपरान्त विस्तारण हेतु Will अबस्स करी। वसीयत कोनो बेकती दारा मृत्युक बाद ओकर स्वअर्जित सम्पतिक उतराधिकारीक बारेमे कानूनी घोषणा अछि जे ओइ बेकतीक जीवनकालमे बदलल वा रद भऽ सकैत अछि। मृत्युक बाद ओ लागू भऽ जाइत अछि। पैतृक सम्पतिक बारेमे वसीयत नहि कएल जा सकैत अछि। अस्तु वसीयत दारा स्वअर्जित सम्पतिक उतराधिकारी तय कएल जा सकैत अछि।

भारतीय उतराधिकार कानून १९२५क धारा-२ (एच) मे वसीयतक कानूनी व्याख्या कएल गेल अछि। उपरोक्त कानूनक धारा ५क अनुसार वसीयत वा बिना वसीयतक स्वअर्जित सम्पति बेवस्था कएल गेल अछि।

वसीयत केनिहारक उमर कम-सँ-कम २१ वर्षक हेबाक चाही। मानसिक रूपसँ स्वस्थ हेबाक चाही तथा बिना कोनो दबाबमे वसीयत करक चाही, ऐ सभ बातके ओइमे उल्लेख करक चाही।

इच्छा पत्र वसीयत केनिहारक जीवन कालमे कखनो ओकरा द्वारा बदलल जा सकैत अछि, संशोधित कएल जा सकैत अछि। मुदा वसीयतकर्ताक मृत्युक बाद ओ तुरन्त लागू भऽ जाइत अछि। वसीयतक हेतु जरूरी अछि जे वसीयतकर्ता बिना कोनो दबाबसँ नहि, अपितु स्वेच्छासँ वसीयतमे अपन सम्पत्तिक वितरण करए। ओइ बेकतीके मानसिक रूपसँ स्वस्थ होएब जरूरी अछि जइसँ ओ निर्णय लेबक स्थितिमे हो।

भारतमे इच्छा पत्र तैयार करबाक विधि बहुत असान अछि। सादा कागजपर बिना कोनो स्टाम्प पेपरक इच्छा पत्र टंकित कएल जा सकैत अछि। मुदा हस्तलिखित इच्छा पत्र केतेको कानूनी विवादमे लाभकारी भऽ सकैत अछि। वसीयतकर्ताके इच्छा पत्रक प्रथम पैरामे स्पष्ट करक चाही जे ओ स्वेच्छासँ बिना कोनो दबाबक पूरा होशोहवासमे वसीयत कऽ रहल अछि। तेकर बाद समस्त सम्पत्तिक एक-एक कऽ फराक-फराक वर्णन हेबाक चाही। सम्पैत सबहक तत्कालीन मूल्य स्पष्टत: इच्छा पत्रमे लिखबाक चाही। तमाम बहुमूल्य कागजात रखबाक स्थान ओइमे स्पष्टतासँ लिखल जाए जइसँ समयपर ओ सभ ताकल जा सकए।

वसीयतक भाषा सरल हेबाक चाही। वसीयतकर्ताक पूरा नाम

श्लखबाक चाही। वसीयतक सम्पश्लाक स्पष्ट श्ववरण हेबाक चाही। पस्ताश्वत कानूनी उतराश्वकारीक पूरा नाम हेबाक चाही। अन्तमे दूटा गवाहक नाम व पताक संग ओकर हस्ताक्र हेबाक चाही। गवाह सामान्यत: ओहन बेकतीके बनाबक चाही जे वसीयतकतासँ उममे छोट होश्व। यश्च गवाहक मृत्यु पश्चने भऽ जाइत अश्छ तँ िरसँ वसीयत बना कऽ नव गवाहक हस्ताक्र कराबक चाही।
इच्छा पतमे हस्ताक्रक संग ताश्वख अबस्स श्लखबाक चाही। जँ एकसँ अश्वक बेर इच्छा पत बनौल गेल तँ अन्श्वम इच्छा पत लागू होइत अश्छ। बश्चया हएत जे अन्श्वम इच्छा पतमे पूववइच्छा पत सभके श्वरस्त करबाक चचवहोइक। इच्छा पतके जस-के-तस लागू करबाक हेतु श्वसवासपात एवम् जानकार बेकतीके श्वष्पादक (Executor of will) बनाबक चाही जइसँ वसीयतकताक मृत्युक बाद वसीयतके श्वना लाइ-लपटक अमलीजामा देल जा सकए। वसीयतकताके चाही जे केकरो श्वष्पादक (Executor) नाश्वत करैसँ पूववओकर सहमश्व लऽ लेल जाए।
वसीयतकताके दूटा गवाहक समक हस्ताक्र करक चाही। गवाहक पूरा नाम, पता सश्चत ओकर हस्ताक्र जररी अश्छ। गवाह जँ श्वश्वकत्सक होइ तँ बश्चया जइसँ ओ स्पष्ट करत जे वसीयतकता श्वमागी र पसँ स्वस् अश्छ। गवाह ओ श्वष्पादक अलग-अलग बेकती हेबाक चाही। वसीयतमे सम्पश्लाक हकदार गवाह नश्च भऽ सकै छै। वसीयतक पत्येक पृष्ठपर संख्या श्लखल जेबाक चाही एवम् गवाह एवम् वसीयतकताक सपष्ट हस्ताक्र हेबाक चाही। अन्तमे कुल पृष्ठ संख्या श्लखल हेबाक चाही।
ऐ पकारसँ तैयार वसीयतके राखी केतए? कारण वसीयतक काज तँ ओइ बेकतीक मृत्युक बादे पित अश्छ आ तखन ओ ऐ श्वषयमे श्वकछु

कहक स्थिश्चामे नश्च रहैत अश्छ। अस्तु वसीयतक दूटा मूल ओ हस्ताक्श्वत पश्चा बनाबी तँ बश्चढ़या। एकटा पश्चा बैक लॉकरमे ओ दोसर पश्चा श्चाष्पादक वा तेहेन श्चशस्त बेकतीक संग रहक चाही। असलमे चाही तँ ई जे तमाम चीज, वस्तु, वसीयत, पासवडवआश्वक जानकारी एकटा डायरीमे श्चाश्च कS छोश्चि दी जइसँ मृत्युपरान्त अहाक वाश्वसके परेशानीसँ बँचौल जा सकए। एकबेर वसीयत केलाक बाद आवश्यकता भेलापर पूरक वसीयत दारा मूल वीयतमे संधोधन कएल जा सकैत अश्छ। मुदा बेर-बेर एहेन केलासँ वसीयतके बदैल कS नव वसीयत कS लेब ज्यादा बश्चढ़या होइत अश्छ। वसीयतके श्चाबन्श्चात कराबक आवश्यकता नश्च अश्छ, मुदा जँ वसीयत दारा कोनो समाजसेवी संस्ि (Chariable Organisation) के धन देबाक हो तखन वसीयतके श्चाबन्श्चात कराएब जर री अश्छ।

जेना श्चक पश्चने चचव कS चूकल छी, वसीयत सम्बन्श्चात वसीयतकताक मृत्युक बादे लागू होइत अश्छ। जँ ओइमे स्पष्टता नश्च रहत तँ मृत बेकती तेकर व्याख्या करक हेतु घुश्च नश्च औत। तँए वसीयतक भाषा सरल, स्पष्ट ओ बाध्यकारी हेबाक चाही। श्चकन्तु-परन्तुसँ बँचबाक चाही। ओइ पश्वस्थिश्चाक श्चचार हेबाक चाही जेकर घश्चत हेबाक संभावना जीवनमे बनल रहैत अश्छ। वसीयत केलाक बादो सम्पश्चाक माश्चकके मृत्युसँ पूववओकर श्चापटान करबाक अश्चाकार बनल रहैत अश्छ।

कोनो बेकती जे कानूनी र पसँ सम्पैत रखबाक अश्चाकारी अश्छ, वसीयतमे सम्पैत पाबक अश्चाकारी भS सकैत अश्छ। ओ नवाश्चाग, भगवानक मूश्चाव् कोनो तरहक कानूनी बेकती (Junstic person) भS सकैत छैि। यश्च कोनो नवाश्चागके वसीयत दारा सम्पश्चाक उतराश्चाकारी धोश्चत कएल जाइत अश्छ तखन वसीयतकता दारा

अधिकावावक आयुक्ता जरी अछि जे ऐ तरहे देल गेल सम्पत्तिक ओकरा वापस हेबाकाल धर्म बवस्ति करताह।

हिन्दू उत्तराधिकार कानून १९५६ क धारा ३०क अनुसार स्वअर्जित चल वा अचल सम्पत्तिक वसीयत दारा उत्तराधिकारी तय कएल जा सकैत अछि।

वसीयतकर्ताक मृत्युक बाद वसीयतमे उल्लिखित उत्तराधिकारी सम्बन्धित न्यायालय दारा पोवेटक हेतु पाबिला कएल जाएत। पोवेट न्यायालय दारा आम पमाणित वसीयत थिक।

पोवेट कोनो वसीयतक कानूनी रूपसँ पका हेबाक प्रामाणिक पमाण थिक। यदि कोनो उत्तराधिकारी दारा वसीयतके कानूनी चुनौती देल जाइत अछि तँ सम्बन्धित पक्के नोटिस जारी हएत, सभ अपन पक्ष न्यायालयमे राखि सकैत अछि। आ सबहक बातक विचारक बादे न्यायालय पोवेट जारी करत।

न्यायालय पोवेट जारी करबासँ पूर्व सुनिश्चित करैत अछि जे वसीयतपर दस्तखत वास्तवमे वसीयतकर्ताक अछि ओ गवाह सभ वसीयतक समय मौजूद छल। वसीयत दारा हस्तान्तरित सम्पत्तिक मालिकत्वपर पोवेट कोर्ट विचार नहि करैत अछि। ओ तँ मात एतबे तय कऽ दैत अछि जे वसीयत (इच्छा पत) सही अछि कि नहि। वसीयतमे पाप्त सम्पत्तिक मालिकाना हकपर सिविल न्यायालयमे सम्पत्तिक सम्बन्धित पक्कार दारा चुनौती देल जा सकैत अछि। कहक माने जे जँ वसीयतमे देल गेल सम्पैतपर वसीयतकर्ता पूर्ण अधिकार नहि अछि, ओ सम्पैत ओकर स्वअर्जित नहि अछि आ तखनो ओकरा वसीयत दारा दऽ देल गेल अछि तखन ओकरा सम्बन्धित पक्कार दारा सिविल न्यायालयमे चुनौती देल जा सकैत अछि।

साराश जे इच्छा पत दारा सम्पत्तिक हस्तातरण हेतु जरी अछि

जे सम्बन्धित सम्पैत स्वअर्जित होइक। इच्छा पतक भाषामे कोनो ओझर नहि होइक तइ लेल बढ़िया होएत जे इच्छा पत (वसीयत) कोनो योग्य अधिवक्ता दारा तैयार करौल जाए, जइसँ इच्छाकताक मृत्युक बाद ओइ सम्पत्तिक हस्तातरणमे कोनो विवाद नहि होइक। विवादसँ बँचैक लेल तँ इच्छा पत बनौले जाइत अछि। तँए ओकरा स्पष्ट ओ कानूनी रपसँ पका हएब बहुत जररी अछि।

समयक कोन ठेकान। भविसक झंझट तय कऽ जाउ। अपन अर्जित सम्पत्तिक वसीयत (इच्छा पत) बना कऽ राखि दियौ आ चैनक बंशी बजाउ।

८

२३.०६.२०१७

त्रिवेन्द्रम अनन्तपुरम

दिल्लीसँ ९ बजे रातिमे हम सभ वायुयानसँ त्रिवेन्द्रम हवाइ अडडापर उतरलौ। ऐ यातामे लगभग तीन घन्टा समय लगल। बेस पैघ जहाज रहइ जइमे तीन साएसँ बेसी याती एकसंग सवार रहैि। बीचमे कोचीमे सेहो जहाज उतरल छल। बहुत रास याती ओहूठाम उतरला, मुदा काि मातामे सवारो भेला। जे ि बि कालक याताक पछाइत त्रिवेन्द्रम पहुँच गेला। त्रिवेरम हवाइ अडडापर उतरैत जहाज समुरक ऊपर जे भमण करैत रहल, ओ दृष्य बहुत विहंगम छल..! त्रिवेन्द्रम हवाइ अडडापर उतरलापर देखलौ जे ओइ जहाजसँ कएटा वीआइपी सेहो उतरलैि। हुनका लोकनिक स्वागतक नाराक बीच हम सभ अपन गन्तव्य स्ािनपर अाित् केरल सरकारक अतिथि गृह विदा भऽ गेलौ।

केरल भारतक एकटा पान्त अछि। एकर राजधानी त्रिवनन्तपुरम अाित् त्रिवेन्द्रम अछि। मलयालम एकर मुख्य भाषा छिक। हिन्दू, मुसलमानक अलावा ईसाइ सेहो काि मातामे एतए रहै छैि। अपन सास्कृतिक ओ भाषा वैशिष्टयक कारण दक्षिणक चारि राज्यमे एकर िराक पहिचान अछि।

पौराणिक किाक अनुसार परशुराम अपन िरसा समुरमे िक देला, जइसँ ओही अकारक भूमि समुरसँ बाहर निकैल गेल ओ केरलक पादुभाव भेल। कहल जाइत अछि जे ‘चेट स्िल: कीचि ओ अलम पदेश’ शब्दक योगसँ ‘चेरलम’ शब्द बनल जे बादमे ‘केरल’ बनि गेल। बहुत दिन तक ई भू-भाग चेरा राजाक अधीन छल, ओहू कारणसँ एकरा चेरलम आ बादमे केरलम नाम पिल।

केरलक पाकृतिक सौन्दयवअदुत अछि। तँए एकरा ईशरक अपन

घर सेहो कहल जाइत अछि। समशीतोष्ण मौसम पचूर वषा, पाकृतिक सौन्दयव, सघन वन, समुर घट ओ चालीससँ अधिक नदी, सभ मिलि एकरा सचमुच पृ िवीपर स्वगक र प देने अछि।

केरल भारतक दक्षिणी छोरपर अरब सागर ओ पच्छिमी घाटीक ५००-२७०० मीटर ऊँचाइपर अवस्थित अछि। केरलके तीन भागमे विभाजित कएल गेल अछि- तटीय निचला इलाका, उपजाउ मिडलैण्ड आ हाइलैण्डस। केरलक निचला भागमे अन्तहीन वैकवाटर ओ चौआलिसटा नदी अछि। मिडलैण्डस काजू,नारियल, अकीका अखरोट, केरा, चाउर, अदरक, कारी मिचव, कुसिआरक संग-संग आर-आर बहुत रास वनस्पतिक हेतु पसिद्ध अछि। जंगली हाइलैण्डस चाय,कॉ ी, रबर, मसाला सबहक बगान ओ वन्यजीव सबहक लेल पसिद्ध अछि।

केरलक शान्त समुर तट, नाना पकारक वन्यजीव, आकषक वैकवाटर, एवम् आनन्ददायक वैकवाटर सभ जगत पसिद्ध अछि। सि कि मागबेँ याता केलापर केरलक मनोरम पाकृतिक छटाक बेहतर आनन्द लेल जा सकैत अछि।

दक्षिनी केरल अलेप्पीक वैकवाटरसँ तमिलनाडूसँ सटल दक्षिनी सीमाक तटीय क्षेत्र शामिल अछि। केरलक राजधानी त्रिवेन्रम, कोवलम ओ वरकला समुरीय तट एवम् पसिाष्ध्त वैकवाटर ऐ क्षेत्रमे प ित अछि। १९८० ईस्वीसँ पूववकेरलमे बहुत कम पयटक अबैत छल। ओकर बाद स् ानीय सरकार लोकक भागीदारीसँ जबरदस्त पचार-पसार केलक जइसँ पयटक लोकनिक आवागमन बढ़ल। बहुत रास पयटक स् ल सबहक बेवस् ा छोट-मोट कारोबारी सबहक हा मे देल गेल जेना कि केरलक पसिद्ध वैकवाटर सभमे ९० पतिशत भागीदारी छोट-मोट कोरोबारी सबहक अछि। पहा सँ लऽ कऽ समुर तट तक

पयटकक आराम ओ सुधधाक धारन्तर चेि ा कएल गेल। पणामत: केरलमे पयटकक आकषण बढ़ते गेल।
केरलक राजधानी श्ावेन्रम हम कएक बेर गेल छी। श्ावेन्रममे कम खचमे सुर श्र पूणव ओ स्वादष्ट भोजन उपलब्ध अछ। राज्य पयटन धागमक अश्ाथ गृहमे भोजन, जलखै आ चाह-पानक सुधधा तँ अछए, आस-पासक केतेको ठाम इडली, बारा,कॉिी ओ चाह उपलब्ध रहैत अछ। भाषाक समस्या ओतेक जटल नह जेतेक की ताधमलनाडूमे। लोक हन्दी बुझैत अछ।
हमर रहबाक बेवस्ि ा केरल सरकारक अश्ाथ गृहमे छल जेकर जेतेक पशंसा कएल जाए से कम होएत। सभ सुधधासँ पपूणव अश्ाथ गृहक शुल्क सेहो कमे अछ। कएकटा पैघ राजनेता सभ ओइठाम अबैत-जाइत रहैत छैि, तँए कएक बेर ओतए स्िल भेटब आसान नह रहैत अछ।
याताक िममे हम ओइ ठामक पसद पदनाम मन्दर पहुँचलौ। पदनाम मन्दर दुधयाक केनो धमक कोनो मन्दरसँ धधक अछ। बेसुमार सोना, चानी,जवाहरात ओइठाम सैकिो सालसँ राखल अछ। कहल जाइत अछ जे ओइ सम्पैतमे अधकाश ओइठामक राजा सबहक योगदान छैन जे अपनाके पदनाम भगवानक दास बुझैत छला। दोसर बात जे सुनबामे आएल ओ ई जे स्ि ानीय राजा आि मणमे लूट-पाटसँ बँचेबाक हेतु अपन समस्त मूल्यवान वस्तु मन्दरक तहखानामे रखबा देलधन। जे जेना भेल होइ मुदा ओइ मन्दरमे अकूट सम्पैत भरल अछ, जे राखल-राखल व्यवि भेल अछ। लोकके तँ तखन बुझबामे एलै जखन उच्चतम न्यायालयक आदेशपर पाचटा तहखाना खोलल गेल ओ ओइमे राखल गेल अमूल्य वस्तु सबहक गणना होमए लगल। जेतेक वस्तु हसाव-कताव भेल

तेकरे मूल्य लाखो करोड़मे भऽ जेबाक अनुमान अछि। छठम तहखाना धार्मिक किम्वदंतीक कारण नहि खोलल गेल। कहबी छै जे ओकरा जे खोलत से जीवित नहि रहत। आदि-आदि।

हम जखन ओइ मन्दिरमे गेल रही तँ उपरोक्त समाचार सभ आबि गेल रहैक मुदा केतौ किछु बाहरसँ सुनबामे नहि आएल, आ नहिये किछु देखाएल।

पदनाम मन्दिरमे पहुँचलाक बाद सभसँ पहिने सटपैन्ट खोलि कऽ धोती पहिरए पड़ल। धोती ओहीठाम मन्दिर पबन्धक दारा उपलब्ध करौल जाइत अछि। तेकर बाद पक्तिबद्ध भऽ दर्शन होइत अछि। चूँकि हमरा जोगार छल, अस्तु भीआइपी दर्शन करबाक मौका भेटल छल। सभसँ आगू एकदम गर्भगृहमे जा कऽ पदनाम भगवानक दर्शनक सौभाग्य हमरा भेटल।

संयोगसँ भारत सरकारक सेवा निवृत सचिव सेहो दर्शन करए गेल छेली। हम हुनका संगे काज केने रही। चूँकि ओ पाछा रहैथि, तँए हम हुनका नहि देख सकलयैन। ओहो केरल सरकारक अतिथि गृहमे ठहरल रहैथि। ओइठाम स्वागत कक्षमे हुनकासँ भेट भेल। ओ कहली जे पदनाम मन्दिरमे हमरा देखने छेली। सावेन्द्रम यात्राक सन्दर्भमे गप-सप्पक बाद हम सभ अपन-अपन कक्षमे चलि गेलौं।

पदनाम मन्दिरमे विष्णु भगवान अनन्द सयनम मुद्रामे आदि शेष नागपर पड़ल छैथि। ओ ओइठामक राजवंशक कुल देवता मानल जाइत छैथि।

३ जनवरी १७५०क तावणकोरक महाराजा महाराज शी अनीझुम थिरनाल तावणकोर राज्यके भगवान पदनाम स्वामीके समर्पित कए स्वयंके हुनकर दासक रूपमे घोषित कए देला। तेकर बादे ओ स्वयं ओ हुनकर उतराधिकारी शी पदनाम दासक उपाधि गहण कए लेलैथि।

ऐ पकारेण तावणकोर सम्पूणवराज्य भगवान पद नाम स्वामीक समथ्रत्ता भऽ गेल। शी पद नाम दासक उपाश्चा पाप्त करक हेतु राजकुलक नवजात श्चाशुके पमि जन्म श्चवसपर शी पद नाम मन्श्चरक मोटकालमण्डपमपर राश्च कऽ जलाश्चाषेक कएल जाइत अश्छ। तेकर बादे ओ शी पद नाम दासक उपाश्चा रखबाक पात माल जाइ छैि।

तावणकोरक अन्श्चाम महाराजा मातण्ड्डवगाक जन्म २२ माचव१९२२ के भेलैन। हुनकर श्चताक नाओं रश्च वमा ओ माता संि पारविी वयी (कश्चाष्ठ महारानी) छेलैन। ९१ वषक उमेरमे १६ श्चसम्बर २०१३ के हुनकर मृत्यु भऽ गेल। हुनकर मृत्युक बाद ओइ राजवंशक पतीकात्क उपस्थिश्चा समाप्त भऽ गेल। सन् १९७१क संश्चधान संशोधनक बाद राजा/महाराजा सबहक उपाश्चा समाप्त भऽ गेल। तँए तावणकोरक कानूनी शासक तँ केरल सरकार भऽ गेल आ महाराजाके मन्श्चरक देख-भालक कानूनी अश्चाकारपर पश्नश्चान्ह लाश्च गेल। केरल उच्च न्यायालय ऐ श्चवादमे अही तरहक बेवस्ािा देलक।

महाराजा मातण्ड्ड वमा सन् १९४७ मे स्वतंतताक समयमे तावणमोरक भारतमे श्चलयक अन्श्चाम गवाह छला। कहल जाइत अश्छ जे तावणमोरक राज पश्चवार ओकरा स्वतंत राष्र रखबाक पूरजोर पयास केलक, जे अन्ततोगत्वा सिल नश्छ भेल आ तावणमोर भारतक श्चस्सा बश्चा गेल।

स्वतंताक बाद बदलल महौलमे राज पश्चवारक अनेको सदस्य राज्यसँ बाहर जाए सामान्य नागश्चक जका जीवन-यापन करए लगलाह। महाराजा मातण्ड्ड वमा सेहो सपश्चवार बंगलोर चश्चा गेला। सन् १९९१मे महाराजा श्चश्चिर लर नलक मृत्युक समय जनतामे जवरदस्त सहानुभूश्चा देखल गेल। तेकर बादे मातण्ड्ड वमाके लोक महाराजा कहए लागल।

पदनाम मन्दिरक सामने बनल राज महलक चोटीपर घड़ी मेघान मण्डपक नामसँ जानल जाइत अछि। ई करीब साए साल पुरान अछि। ई पाचीन समयक अभियान्त्रिकीक चमतकारक नमूना अछि। घड़ीक आकर्षण ओइमे राकसक मुखैटाक संगे-संग दुनू कात खड़ा मान बकरा अछि। जहा घन्टा पुरैत अछि, राकस अपन मुँह खोलैत अछि। आ दुनू बकरा ओकर गालपर चाटी मारैत अछि। जइसँ घण्टाक जोरदार स्वर झनकलैत अछि आ राकस अपन मुँह बन कऽ लैत अछि। जेतेक बाजल रहैत अछि। तेतेक बेर ओ प्रक्रिया दोहराइत अछि। कहक माने जँ चारि बजतै तँ चारि चमेटा ओइमे राकसके दुनू बकरा मारतै आ चारि बेर घण्टाक अबाज सुनैमे औत। अछि ने चमतकारी यन्त? मुदा आब ओ घड़ी केतेको सालसँ खराप पड़ल अछि।

पदनाम स्वामी मन्दिरक सामने कुथिरमालिका पैलेश म्युजियम अछि। ऐ महलक निर्माता गावणकोरक महाराजा स्वाति तिरुनल बलराम वमा छला। ओ महान कवि, समाज सुधारक, गायक एवम् राजनेता छला। ऐ संगहालयमे नाना पकारक अमूल्य पेन्टिंग सभ राखल अछि। ऐ संगहालयके सोम दिन छोड़ि कऽ कोनो दिन पात: साढ़े आठ बजेसँ एक बजे आ तीन बजेसँ साढ़े पाच बजेक बीचमे देखल जा सकैत अछि। पत्येक वर्ष ४ सँ १३ जनवरीक बीचमे ओइठाम महाराजा स्वाति तिरुलक स्मृतिमे संगीत उत्सव मनौल जाइत अछि।

महलसँ मन्दिर जएबाक गुप्त मागव अछि जइ बोटे महाराजा नित्य पदनाम मन्दिरमे पूजा अर्चना करैत छलाह। अखनो भोरक एक घन्टा समय भगवानक पूजाक हेतु महाराजाक हेतु आरक्षित अछि। महाराजा पूजा कऽ लइ छैथि तखने आम जनताके मन्दिरमे पवेशक अनुमति भेटैत अछि।

राजमहलमे तरह-तरह केर वस्तु सभ (जे महाराजाके भेटमे देल

जाइत छल) राखल अछि। महलक अधिकाश हिस्सा बन्द पडि अछि। कहल जाइत अछि जे ऐ महलक निर्माणक किछु दिनक बाद महाराजाक मृत्यु भऽ गेल। तँए एकरा अशुभ बुझि महलके छोड़ि राज परिवार आनठाम रहए लागल।

सायं काल हमरा लोकनि त्रिवेन्द्रमक कोवलम समुद्र तटपर गेलौं। दूर-दूर तक देखाइत स्वच्छ जल, दीर्घ समुद्र तट ओ दूरगामी क्षितिजक अद्भुत दृश्य उत्पन्न करैत अछि। समुद्र तटपर प्रकाश स्तम्भ दूरेसँ देखल जा सकैत अछि।

सूर्यास्तक छटा ओ अकासक मनमोहक रंग समुद्रतट प्रेमीके सबहक आनन्दके पराकाष्ठा (Climex) पर पहुँचा दैत अछि। केतेको बेकती समुद्रतट पर साइकिल चलेबाक आनन्द लैत देखबामे एला।

प्रात भेने हमरा लोकनि वकर्ला समुद्र तटपर गेलौं। ओइठामसँ अरब सागरक अद्भुत दृष्य देखलौं। ओही क्रममे त्रिवेरमक दक्षिनबरिया भागमे अवस्थित पूवार नामक ग्राम सेहो देखए गेलौं। ओइठाम बैकवाटर ओ टापूक संगम स्थिति हेबाक कारण पर्यटकके अद्भुत आनन्दक अवसर प्रदान करैत अछि।

त्रिवेन्द्रमसँ कन्याकुमारी रोडसँ जेबाक रस्तामे पद्नाम पैलेश प्रशंसनीय अछि। ई वस्तुत: आजुक तामिलनाडूमे स्थित अछि, मुदा ऐ महलक बेवस्था एवम् शासन केरल सरकारक अधीन अछि।

पद्नामपुरम पैलेश १६ मी शताब्दीक शानदार लकड़ीक महल अछि। १५५० सँ ई १७५० तक रहल तावणकोरक राजा लोकनिक ई महल छल। ई वस्तु कलाक केरलक स्वदेशी शैलीक उत्कृष्ट नमूना अछि। प्राचीन आंतरिक अंदरनी रोझवेड नक्काशी ओ मुरालकला सजाबटसँ भरल अछि। महलमे १७म ओ १८म शदीक भित्ति चित्र शामिल अछि। महोगनीमे संगीत धनुष, रंगीन अभकक संग खिड़की,

चीनी नकाशीक संग शाही कुसी, अदुत आकषण उत्पन करैत अछि। राजमाताक महलमे ९० अलग-अलग पकारक पुष्प श्रृंजाइनक संग लकिी ओ सौगानक नकाशीदार छत आकषणक केन्र अछि।

पयटकके पदनाम पैलेश देख कऽ आनन्द तँ होइते छैन जे तत्कालीन राज घरानाक वैभवक पराकाष्ठाक सद: पमाण सेहो देखबामे अबैत अछि।

महलक श्यशान भागमे घुमैत-घुमैत हम सभ ाथिक गेलौ। बाहर आबि कऽ ािकाल धरि छाहैरमे सुस्तेलौ आ तेकर पछाइत कन्याकुमारी बस थदा भेलौ।

८

१५ जुलाइ २०१७

कानूनी आतंकवाद
(भारतीय दण्ड संहिता धारा- ४९८ 'ए' , IPC 498 'A')

परंपरागत र पसँ परिवारिक जीवनमे स्ती अपन पतिक केर सहायकक र पमे काज करैत छल। समस्या तखन बढ़ि गेल जखन पति-पतीक आपसी सम्बन्धक कटुता परिवारक चौकैठसँ आगू बढ़ल। सहैत-सहैत महिलाक जीवन व्यवि ओ दुष्कर हुअ लगल, आ ओइ परिस्थितिसँ मुक्तिक एकमात उपाय आत्म हत्या बुझि पिए लगलइ। केतेको महिला दारा ऐ तरहे आत्म हत्या केलाक बाद समाजक आत्मा आइपीसी- धारा- ४९८ 'ए' सन ध्वंसक कानूनक जन्म देलक।

ऐ कानूनके लागू भेलाक बाद गलत वा सही महिला दारा आरोपक एफआइआर िनामे दजव भेल। पछाइत पति एवम् ओकर परिवार- अित् वयोवृद माता,पिता एवम् छोट-छोट बच्चा सभ सेहो-पुलिसक कृपापर आभव रहि ऐ हद तक भऽ जाइ छला जे जखन हुनका पुलिस चाहत तँ जेलमे बन्द कऽ दैत।

सन् १९८३ मे िौजदारी कानूनमे संशोधन कऽ भारतीय दण्ड संहिता (आई.पी.सी.)मे अनुच्छेद ४९८ 'ए' जोिल गेल जइमे मूलत: ाामलिखित पावधान छल-

१. जखन कखनो पति वा ओकर सम्बन्धी महिलाक संग ििता करत तँ अपराधीके तीन साल तकक कैद हएत, संगे जुमाना सेहो भऽ सकैत अछि।

ऐ अनुच्छेद हेतु ििताक अिवअछि-

(क) जाि कऽ कएल गेल एहेन बेवहार, जइसँ सम्बन्धित

मिहला आत्म हत्या करबाक स्थितिमे पहुँच जाए किंवा मिहलाके शारीरिक वा मानसिक स्वास्थ्यके गंभीर क्षति पहुँचैक।

(ख) सम्बन्धित मिहला वा ओकर निकट सम्बन्धितसँ सम्पैत वा कोनो मूल्यवान वस्तुक गैर कानूनी माग करब आ एहेन माग निह पूरा भेलापर वा तइ हेतु पतारणा करब।

भारतीय दण्ड संहिताक धारा ४९८ 'ए' संजेय, गैर जमानती और गैर-संगिठत अपराध थिक। अपराध संजेय एवम् असंजेयमे विभाजित कएल गेल अछि। कानूनी तौरपर संजेय अपराधक जाँच करब एवम् शिकायत दजवकरब पुलिसक कतव्य थिक। ४९८ 'ए' एकटा संजेय अपराध थिक। अपराध जमानती वा गैर जमानती भऽ सकैत अछि। ४९८ 'ए' गैर जमानी अछि। एकर माने भेल जे न्यायिक दण्डािधकारी (मिजस्ट्रेट) के जमानत देबाक किंवा आरोपित बेकतीके न्यायिक वा पुलिस हिरासतमे पठा देबाक अधिकार छइ। चूँकि ४९८ 'ए' गैर संगिठत अपराधक शेणीमे अबैत अछि, असतु यािचकाकता एकरा आपस निह लऽ सकै छैि। (मुदा जँ सम्बन्धित पक मामलाके आपसमे सोझराबैले न्यायालयसँ आवेदन करै छैि, तखन न्यायालय मामलाके आपस लेबाक अनुमित पदान कऽ सकैत अछि।)

कानूनक उपरोक्त पावधानमे ि िताक पयोग िनम्निलिखत पिरिस्थितिमे कएल गेल अछि-

१. एहेन बेवहार जइसँ मिहला आत्म हत्या हेतु पेिरत हो।

२. एहेन बेवहार जइसँ मिहलाक जीवन, शरीर वा स्वास्थ्यपर गंभीर समस्या उत्पन भऽ जाइक।

३. मिहला वा ओकर सम्बन्धीक सम्पैत लेबाक उदेश्यसँ कएल गेल पतारणा।

४. मिहला वा ओकर सम्बन्धी दारा आर पैसा वा सम्पितक

श्लसस्साक माग नश्ल मानबाक कारण पतारणा।

यद श्य ऐ कानूनके लागू करबाक उदेश्य श्ववाश्लत मश्लाके दहेज-लोभी पश्ल एवम् ओकर पश्ववार दारा पतारणासँ रक्ष करब छल, मुदा बेवहारमे एकर तेतेक दुरपयोग भेल जे उच्चतम न्यायालय सुशील कुमार शमा बनाम भारत सरकारक मामलामे आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' के कानूनी आतंकवादक रपमे श्लन्दा केलक।

उपरोक्त कानूनसँ पुश्लस दारा लोकक लौश्कक अश्लकारक उल्लंघनक संभावना बढ़ल। ऐसँ श्लदोष लोक कानूनी धनचकरक श्लाकार भेल एवम् मजबूर भऽ कऽ वषो-वषवकोट-कचहरीक दरबज्जा खटखटबए लगल। तेतबे नश्ल, ऊपरसँ पुश्लसक धनबल, राजनीश्लक हस्तक्षेप, श्कंवा समाजमे पभवशाली वगक श्लप्तता सेहो तइ रपे काज करए लगल जे ओइ पश्ल एवम् ओइ पश्ववारक बुझू भगवाने माश्लक..!

केतेको मामलामे ऐ कानूनक दुरपयोग श्ववाश्लत मश्लला दारा बर पक्सँ अश्लक-सँ-अश्लक पैसा ओसलब, श्कंवा एहेन पश्वस्थिश्ल श्लमाण करब रहैत अश्छ जइसँ जान छोड़बाक लेल बर पक्क लोक मश्लला पक्क अनुश्लतो माग मानैले बेवस भऽ जाइ छैथि।

दहेज श्लषेध अश्लश्लयम १९६१क धारा २ केर अनुसार दहेज लऽ कऽ माने श्लआहसँ पूवव्, श्लआहक समय वा श्लआहक बाद कश्लयो देल गेल सम्पैत या मूल्यवान धरोहरसँ अश्छ-

(१) जे श्लआहक एक पक दारा दोसरके देल जाइत अश्छ।

(२) माता-श्वता वा कोनो आन बेकती दारा देल गेल।

मुदा मुस्श्लम श्ववाह कानूनक अधीन देल गेल मेहर वा (dower) ऐमे शाश्लल नश्ल अश्छ। श्ववाहक समय कोनो पक दारा देल गेल नगदी, गहना, कपड़ा वा अन्य कोनो वस्तु दहेज नश्ल मानल वशते ई वस्तु सभ श्ववाहक शतक अश्लन नश्ल देल जाइत हो।

ऐमे मूल्यवान धरोहरक अिवभारतीय दण्ड संिहता (आइपीसी)क धारा ३०क अनुकूल अिछ।

आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' मात पती, पुतोहु वा ओकर सम्बन्धी दारा लागू कएल जा सकैत अिछ। उच्चतम/उच्च न्यायालय बारम्बार ई स्वीकार केलक अिछ जे कानूनक उपरोक्त धाराक अधीन ज्यादातर मामला झूठ रहैत अिछ। अिधकाश मामलामे एकर दुरपयोग वैवािहक जीवनमे िववादक िस्थितमे पती वा ओकर िनकट सम्बन्धी दारा पत्नी वा ओकर िनकट सम्बन्धीके ब्लैकमेल करबाक हेतु कएल जाइत अिछ। एहेन पिरिस्थितमे िशकायतकता पचुर मातामे पैसाक उगाहीक पयास करै छैि।

एहेन अनिगनत उदाहरण सामने आएल अिछ जइमे िबना जाच-पिताल केने पुिलस बुजुगव माता-िपता, अिववािहत बिहन, गभवती भौजी एवम् छोट-छोट बच्चाके िगरफ्तार कऽ लेलक। ऐ तरहक मामलामे िनदोष लोक मानिसक यातना एवम् उत्पीिनक िशकार भऽ जाइ छैि। सामान्यत: एहेन मोकदमा ५-६ साल चलैत अिछ आ मात २० पितशत लोकके सजा होइत अिछ। एहनो भेलै जे जेलसँ छुिट कऽ पत्नी वा आरोिपत माता-िपता आत्महत्या कऽ लेलक।

चन्रभान बनाम राज्यक मामलामे िदल्ली उच्च न्यायालय कहलक जे ऐमे कोनो संदेह निह अिछ जे अिधकाश एहेन िशकायत छोट-छोट बातपर आपसी अहं एवम् टकरावक कारण तामसमे कएल जाइत अिछ जेकर सभसँ गंभीर खािमयाजा पिरवारक छोट-छोट बच्चा सभ भोगैत अिछ। अस्तु न्यायालय पुिलसके िनमिलिखत आदेश देलक।

(१) एिआइआर रिजस्टरमे पंजीकृत निह कएल जाए।

(२) पुिलसक पयास हेबाक चाही जे मामलाके गंभीर जाँच-पितालक बादे एिआइआर दजवकरए।

(३) आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' /४०६ क अन्तगर्त कोनो मामला बिना डीसीपी (उपायुक्त पुलिस) एवम् अतिरिक्त डीसीपीक आदेशक दजर्नहि हएत।

(४) एफआइआर (पंजीकृत करबासँ पूवर्आपसी समझौताक हर संभव पयास कएल जाए आ जौ समझौताक कोनो आश नहि रहि जाइक तँ सभसँ पहिने स्तीधन आ दहेजक वस्तुके सम्बन्धित महिलाके आपस करौल जाए।

(५) मुख्य अभियुक्तक गिरफ्तारी एसीपी (सहायक आयुक्त) अथिबा डीसीपी (उपायुक्त)क स्वीकृतिसँ मामलाके पूरा जाच-पड़तालक बादे कएल जाए।

(६) संपाश्र्वक अभियुक्त (जेना सासु-ससुर)क मामलामे जमानत (लाइल)मे डीसीपीक स्वीकृति जरूरी अछि।

ऐ मामलामे न्यायालय ईहो आदेश देलक जे महिलाक उत्थान हेतु कायर्रत् स्वयंसेवी संगठन एवम् अन्य कानूनी संस्था सभ ऐ बातक पूरा पयास करए जे सम्बन्धित पक सभके आपसी सहमति बनि जाइक। मामलाके न्यायालय पहुँचलाक बादो ऐ बातक लेल न्यायालय पयास करए। चाही तँ ई जे बिना बाहरी हस्तक्षेपक सम्बन्धित पक मामलाके आपसमे सोझरा लिअए। टी.आर. रमैयाक मामलामे मरास उच्च न्यायालसँ ऐ तरहक निदेर्श दैत स्पष्ट केलक जे एहेन मामलामे पुलिस द्वारा कारवाइ पयाप्त सावधानी एवम् एहेन छान-बीनक बादे कएल जाएत।

ललिता कुमारी बनाम राज्यक मामलामे उच्चतम न्यायालय ऐ बातपर विचार कए रहल अछि जे एहेन मामला उपस्थित भेलापर पुलिस दारा एफआइआर दजर्करब अनिवायर्अछि किंवा तइसँ पहिने पाथमिक पूछताछ जरूरी अछि। चूँकि ई मामला विचराधीन अछि अस्तु

थ्रश्रान्न उच्च् न्यायालय दारा देल गेल आदेश/श्राणयक सन्दभबे पुश्नस कारवाइ करैत अछ्रि। उच्चम न्यायालय दारा ऐ मामलाक श्राणयक बादे एहेन मामलामे एफआइआर करबाक दशा ओ थ्रसा अन्श्राम र थ्रत्र लेत।

ऐ कानूनसँ भयक वातावरण तँ बनल मुदा एकर दुरपयोग ज्यादा होमए लागल। कनेको श्रादोष लोकके लोभ, श्र्कंवा पश्राशोधक आवेशमे फँसा देल गेल। कएक बेर तँ पश्रा एवम् ओकर पश्रवारके ऐ लेल फँसा देल गेल जे सम्बन्धश्रत थ्रवाश्रत मश्रला ओइ वैवाश्रक जीवनसँ हश्र कऽ पेमीक संग थ्रवाह करए चाहैत छेली।

केतेक बेर एहनो भेल जे पश्रा-पती बादमे श्रालय चाहैत छल, अपन-अपन गलतीक अहसास करैत छल, मुदा ताधैर अपराश्रक मोकदमाक जालवृश्रामे फँश्र चूकल छल, मुदा ओइसँ श्राकलत केना? कारण ई कानून Non Compoundable अछ्रि माने श्राकायतकता स्वयं चाश्रयो कऽ एकरा आपस नश्र लऽ सकैत अछ्रि। ऐ सभ पश्रस्थश्रामे मामला कतेको बेर उच्च न्यायालय एवम् उच्चम न्यायालय पहुँचल जैठाम थ्रचारणीय पश्न छल जे आश्रर ऐ तरहक मामला चलबैत रहबाक की औश्रत्य अछ्रि खास कऽ जखन श्रक पश्रा-पती आपसमे बातके सलैट कऽ आपसी सहमश्रा बना सुखी पश्रवाश्रक जीवन जीबए चाहैत होश्र?आश्रर एहेन मोकदमा जँ चश्रतो रहल तँ ऐमे सँ श्रकछु श्राकलत नश्र, कारण श्राकायतकता अपन बातसँ मुकैर जाएत। मामला कमजोर पश्र जाएत, चाहे श्रारस्त श्रारस्त भऽ जाएत। मुदा एकर दोसरो पक छल जे केतेको बेर समझौताक आडम्बर कऽ गरीब एवम् कमजोर मश्रलाके अपन श्राकायत आपस लेबाक हेतु अनुश्रत दवाब बनौल जा सकैत अछ्रि। मामला आपस लैतो पुनश्य यंतणाक नवीनीकरण भऽ सकैत अछ्रि।

ऐ सभ पश्नपर ध्यान न्यायालयमे बारंबार ध्चार भेल। ध्वाह सम्बन्ध ध्च्छेदक पध्रियामे लम्ध्त मामलामे दुनू पक्के मौका पबैत आपसी सहमध्त बनबैक अवसर न्यायालय पदान करैत अछि।

तध्ना आइपीसी ४९८ 'ए' सँ सम्बन्ध्त अपराध्क मामलामे यध्द दुनू पक आपसमे बातके सोझराबए चाहैत अछि, सलैट ध्कअ चाहैत अछि तँ उच्च न्यायालय सीआरपीसीक धारा ४८२क अधीन अपन ध्शेषाध्कारक पयोग करैत मामलाके रद कऽ देबाक आदेश दऽ सकैत अछि।

उपरोक्त ध्षयसँ सम्बन्ध्त मामला उच्चतम न्यायालयक समक जीतेन्र रघुवंशी एवम् अन्य बनाम बबीता रघुवंशी एवम् अन्य आएल। (जइमे पूवध्े उच्चतम न्यायालय दारा बी.आर. जोशी बनाम हध्याणा सरकारक ध्णयके बहाल राखल गेल।) जइमे कहल गेल छल जे सीआरपीसीक धार ४८२ क अधीन अधीन उच्च न्यायालय न्यायक ध्तमे अपराध्क पध्रिया वा एफआइआर रद कऽ सकैत अछि आ सीआरपीसीक धारा ३२० ऐमे बाधक नध्ि हएत।

पीध्ा गुप्ता बनाम झारखण्ड सरकारक मामलामे उच्चतम न्यायालय आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' केर अधीन कएल गेल ध्ाकायतक दुरपयोग एवम् बढ़ैत ममलाके ध्यानमे रखैत केन्र सरकारके उपरोक्त कानूनक समीक्ा करबाक हेतु कहलक।

तदनुसार भारत सरकारक आगहपर ध्ध्ा आयोग ऐ ध्षयमे गंभीरतासँ ध्चार करैत अपन २४३म पध्ावेदनमे संस्तुध्ा केलक जे ऐ अपराधके न्यायालयक आजासँ (Compoundable) बना देबाक चाही मुदा आयोग ऐ अपराधके गैरजमानती बनौने राखए चाहलक ताध्क समाजक दूरगामी कल्याणके ध्यान रखैत ऐ कानूनक धार भोंथ नध्ि होइक। ओयोगक कहब जे ध्रफ्तारी सम्बन्धी लागू कानूनी ध्ादेश

एवम् मामलाक गहन छानबीन केलासँ एवम् श्रंसा सन गंभीर पश्चस्थिश्चायेमे श्वारफ्तारी केलासँ ऐ कानूनक दुरपरोगसँ बँचल जा सकैत अछ।

जुलाइ २०१४ मे न्यायमुश्चावसीके पसाद एवम् पी.सी. घोषक उच्चतम न्यायालयक बैच दारा देल गेल श्राणयमे स्पष्ट कएल गेल जे धारा ४९८ 'ए' केर अधीन श्वना मश्चस्रेटक आदेशक श्वारफ्तारी नश्च एहत। उच्चतम न्यायालयक कहब छल जे अश्चकाश एहेन मामलामे मश्चला ऐ कानूनक दुरपयोग करैत पश्च, सासु,ससुर आश्चसँ बदला लइ छै। ऐ तरहक पकरणमे बहुत कम लोकके सजा धोश्चत हेबाक उदत करैत माननीय न्यायालय राज्य सरकार सभके आदेश देलक जे पुश्चस िश्चनल पोसीडयोर कोड (सीपीसी) क धारा ४१मे वश्चात मानकक अनुसरण करए एवम् अपवाश्चक मामलामे अत्यावश्क भेने आरोश्चत बेकतीक श्वारफ्तारी करए।

सम्बन्श्चत मश्चस्रेट सीपीसीक धारा ४१ क अधीन पुश्चस दारा पेश्चत पश्चवेदनक श्चवेचना करैत बेकतीगत रपसँ संतुष्ट भेलाक बाद एवम् तेकर औश्चत्यक श्चश्चत आधार बनबैत श्वारफ्तारीक स्वीकृश्च पदान करए।

उपरोक्त मामलामे ैसला दैत माननीय न्यायाधीशगण कहलै जे सन् २०१२ मे दू लाख बेकती ऐ कानूनक अन्तगत श्वारफ्तार भेला। जे सन् २०११क संख्यासँ ९.४ पश्चशत ज्यादा अछ। जइमे लगभग एक चौाइ (४७९५१) मश्चला छेली। ऐसँ स्पष्ट होइत अछ जे आरोश्चत पश्चक माए, बश्चनके सेहो काि तादादमे श्वारफ्तार कऽ लेल गेल। उपरोक्त कानूनक तहत आरोप पतक दर ९३.७ पश्चशत अछ जखन श्चक मात्र १५ पश्चशत लोकके अन्तत: दण्श्चत कएल जा सकल। श्चश्चान रायल कोटमे ३७२७०६ मामला लम्श्चत अछ

जइमे सँ लगभग ३१७००० मामलामे आरोपितके छुटबाक जेबाक संभावना अछि।

माननीय उच्चतम न्यायालयक कहब छल जे गिरफ्तारी बेकतीगत स्वतंतताक हनन तँ करिते अछि, संगे ई अपमान-जनक सेहो अछि। स्वतंतताक छह दशक बादो पुलिस अखन धरि उत्पीडिन, उत्पीडिनक साधनक रूपमे जानल जाइत अछि, जनताक मीत तँ नहिये।

अतएव उच्चतम न्यायालय गिरफ्तारीमे सावधानीसँ अनुपालन लेबाक हेतु मजिस्ट्रेट लोकनिके अगाह केलक।

इन्दरराज मलिक एवम् अन्य बनाम शीमती सुनिता मलिकमे दिल्ली उच्च न्यायालय बेवस्था केलक जे आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' दहेज निवारण कानूनक धारा ४ सँ एकदम अलग अछि, कारण दहेज कानूनमे मात दहेजक मागसँ अपराध भऽ जाइत अछि। जखन कि आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' मे पति तथा पतिक परिवार दारा दहेजक माग संगे-संग क्रूरताक बेवहार जरूरी अछि।

आधुनिकीकरण, शिक्षा, आर्थिक सुरक्षा एवम् बेकतीगत स्वतंततामे वृद्धिक संग कटरपंथी महिला सभ आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' के एकटा हथियारक रूपमे दुरूपयोग कऽ रहल छैथि। कानून बनलाक केतेको सालक बादो ऐ कानूनक उचित समीक्षा नहि भेल जइ कारणसँ एकर दुरूपयोगक मामलामे लगातार वृद्धि भेल आ निर्दोष एवम् व्यथित भै सौल गेल पति तथा ओकर सम्बन्धी ताहिमामा कए रहल छैथि। विभिन्न न्यायालय, गैर सरकारी संगठन सभ ऐ विषयपर लगातार मंतव्य दऽ रहल छैथि, कानूनमे संशोधनक हेतु सेहो चर्चा होइत रहैत अछि। मुदा ऐठाम ईहो महत्वपूर्ण अछि जे एक पक्षीय संशोधनसँ कानून बनाबक मूल उदेश्ये ने नष्ट भऽ जाए। ऐमे कोनो दू मत नहि जे केतेको मामलामे विवाहित महिलाके जीवन ओ सम्मानपर

संकट ओकर सासुरमे उत्पन्न भऽ जाइत अछि आ ओ मजबुरीमे सभ किछु सहैत अछि। सहैत-सहैत केतेको महिला तंग भऽ आत्म हत्या लेल सेहो विवश भऽ जाइ छैथि। अस्तु, ऐ कानूनक दुरुपयोगसँ उत्पन समस्याक समाधान हेतु बीचक रस्ता निकालबाक चाही जइसँ निर्दोष लोकके फँसौल नहि जाइक आ दोषीके उचित दण्डो होइक आ समाजमे सम्मानक संग महिलो जीबैथि।

अपन समाजमे कहबी छेलइ जे जेतए कन्यायाँक डोली अबै ओतहिसँ अर्थी उठइ। मुदा आब युग बदैल गेल अछि। राष्ट्राक समस्त सम्मा मात महिलाक नहि भऽ सकैत अछि। लोक परिवर्तित परिस्थितिसँ जँ तालमेल नहि बैसोलक तँ जीवन भमरमे केतए जा कऽ थिम्हत तेकर कोनो ठेकान नहि। शिक्षित बर-कन्यायाँ सभ रोजगार हेतु विदेश भरिमे पसैर गेल छैथि। गाम-घरक बात गामेमे सलटा लिअ से आब तथ्यपरक नहि रहि गेल। अपनो समाजमे विवाह विच्छेदक चलन बढ़ि गेल अछि। कानूनक रस्ता अख्तियार करैत केतेको परिवार नष्ट भऽ रहल अछि।

प्रेम ओ स्नेहपर आधारित सम्बन्धके कानूनक कुरहैरसँ चोट देल जाएत तँ परिणाम की हएत? परिवारिक मर्यादाक रक्षाक हेतु सन्तानक भविष्य बँचबैक लेल एवम् जीवनमे सुख-शान्तिक स्थापना हेतु आवश्यक अछि जे हम सभ भारतीय संस्कारके कटकटा कऽ पकैड़ली आ पकड़ने रही। त्येन त्येक्तेन भुंजीथा:। त्यागक गरिमा जखन जीवनमे लक्षित हएत, सभ अपने ठीक भऽ जाएत।

आजादक अन्त्येष्टि

१९८१ इस्वीक २६ फरबरीके एकटा इलाहाबादक एलफेड पार्कमे जेकर नाम आब चन्द्रशेखर आजाद पार्क राखि देल गेल अछि, आजादक मृत्यु पुलिसक संग भेल मुठभेड़मे भेलैन। हुनक दाह-संस्कार दोसर दिन अर्थात् २८ फरबरी १९८१ इस्वीके गंगाक रसूलावाद घाटपर कएल गेल। गुप्तचर विभागक उपलेख, स्वर्गीय विश्वनायक शर्माक संस्मरण तथा महामना मदनमोहन मालवीयक पपौत्र श्री पदकान्त मालवीयसँ ओइ घटनाक जानकारी होइछ।

पं. विश्वनायक शर्मा, आजादक निकटक सम्बन्धी छला। ओ बनारसमे छला आ हुनका ऐ काण्डक सूचना श्रीमती कमला नेहरू द्वारा पठौल गेल संवादवाहक द्वारा ११ बजे रातिमे भेटलैन। रातिमे इलाहावाद एबाक साधनक अभावक कारणे ओ प्रात:काल छोटी लाइनक गाड़ीसँ इलाहाबाद एला।

आनन्द भवन गेलाक बाद कमला नेहरूसँ पता लगलैन जे आजादक लाशक पोस्टमार्टम भऽ रहल छैन।

टमटमपर (इक्कापर) ओ अस्पताल गेला, जेतए पता लगलैन जे लाशके पोस्टमार्टमक पछाइत दाह-संस्कारक हेतु पुलिस लऽ गेल। पोस्टमार्टम मोहनलाल आ कर्नल टाउनसेन्ड कएलैन।

शर्माजी तुरन्त जिलाधीशक ओतए गेला, जेतए जिलाधीशसँ हुनक गम्भीर बाता-बाती भऽ गेलैन।

जिलाधीशक कहब रहैन जे अहा अपन सम्बन्धीके एतबा दिन अबारागदी करबसँ किएक नहि रोकि सकलौ?

अन्ततोगत्वा ओ दारागंजक थानेदारके आदेश देलक जे पुलिसक देख-रेखमे हुनका आजादक अन्त्येष्टि करबाक अनुमति देल जाए।

आजादक अन्त्येष्टिक समय शी पदकान्त मालवीय उपस्थित छला। ओ ऐ घटनाक एक मात पत्यक्दी छैथि जे अखनो जीवित छैथि। हुनका अनुसारे २७-२८ फिरबरीक रात्रिमे पं. मदनमोहन मालवीय हुनका पिनपर कहलखिन जे चूँकि आजाद एकटा वीर आ क्रान्तिकारी लोक छला तँए हुनक संस्कारो ओही तरहक हेबाक चाही। राजर्षि टंडनक सहयोग लेबाक परामर्शव सेहो ओ देलखिन।

शी पदकान्त मालवीय आ शी शिवविनायक मिश्र जिलाधीशक आदेश दारागंजक पिनदारके पत्र सुनौलखिन। ओ हुनका लोककेँ संगमपर लऽ गेलखिन, मुदा ओतए किछु नहि भेटलैन। ओइठामसँ लौटैतकाल तुलारामवागमे एकटा छात नेता कहलकैन जे आजादक लाश रशूलबाद घाटपर गेलैन अछि।

ओइठामसँ ओ लोकनि रशूलबाद पहुँचला।

मालवीय आ मिश्रजी जखन रशूलबाद पहुँचला तँ चितामे आगि लगा देल गेल छल। ओहीठाम एकटा पुलिस इन्सपेक्टरसँ ओ लोकनि बेर-बेर आगह केलखिन, जे ओ लाश हुनका लोककेँ दए देल जाइन। मुदा ओ इन्सपेक्टर समय काटक हेतुए अनेकानेक पश्न पुछैत रहल। ताधैर आजादक आधा लाश जरि चूकल छेलैन। तेकर बाद ओ लाशक संस्कार करबाक अनुमतिमे विलम्ब होइत देख मिश्रजीके नहि देखल गेलैन। ओ बाजि उठला-

“अंगेजक नून खाइत-खाइत तोहर आत्मा सेहो बिका गेलह की? आजादक संस्कार ओइ सरकारक पैसासँ कदापि नहि भऽ सकैत अछि। जेकर विरोध करैत-करैत ओ अपन पाणक आहुति देलैन।”

एकर बाद शिवकान्त मिश्र आ पदकान्त मालवीय दुनू गोटे मिलि कऽ चिताके मिझौलैथि। फिर शास्तीय विधान आ मंतोच्चारक संग चितामे आगि देल गेल। ऐ हेतु ...कएल गेल। ताधैर पुरषोत्म दास

टंडन आ शीमती कमला नेहर सेहो ओतए आब्ब गेल रहैि। जल देमक समय एकटा िटोगाि र िटो लेलक मुदा पुब्बस ओकर कैमरा आ ओकर रील दुनू छीब्ब लेलक।
अन्तमे ब्बावनायक ब्बश अस्ब्ब संचय कए ओकर ब्बकछु भागके गंगामे पवाब्बत केलैन। एकटा पोटरीमे ब्बताक भष्मावशेषके वएह वनारस लऽ गेला।
मूलत: आजादक संस्कार संगमपर करबाक ब्बाि य कएल गेल छल। मुदा ओतए बहुत अब्बक दशकक भीि लाब्ब जेबाक भयसँ ओ सभ अपन ब्बाणब्बके अन्ब्बम क्णमे पब्बवब्बत कएलैन। दाह-संस्कारसँ आपस भेलापर ब्बावब्बनायक ब्बश टंडनजीक ओइठाम एला। आ टंडनजीक ब्बदेशानुसार आपस हेबाकाल छात संघक तत्वावधानमे एकटा ब्बशाल जुलुसक आयोजन भेल। सम्पूणव शहरमे अपूवव तनाव छल। कखनौ ब्बकछु भऽ सकैत छल। ऐ स्ब्ब ब्बसँ ब्बपटबाक हेतु शहर भब्बमे सशस्त पुब्बसबल ब्बयुक्त कए देल गेल छल।
सायंकाल अभ्युदय पेस लगसँ एक ब्बशाल जुलुस ब्बकलल जइमे हजारो युवक, स्ती तिा पुरष शाब्बल भेला। ऐ हेतु टंडनजीक दृढ़ समिब्ब सहायक ब्बद भेल। ओ ललैक कए कहलब्बन-
“आजादक रास्ता भने हमरा लोकब्बसँ पृिक रहल होब्ब, मुदा ऐमे कोनो दूटा ब्बचार नब्ब भऽ सकैत अब्ब जे ओ एक महान देशभक्त छला, आ तँए हुनक सम्मानमे जुलुस सभ आब्ब नब्ब करब एक बि पैघ राष्रभक्तक अपमान करब होएत।”
जुलुसमे आजादक भष्मावशेष एकटा कारी कपिमे बान्ब्ब चौकीपर राब्ब घुमौल गेल।
जानसेनगंज मुहल्लामे लोकक जमघट अब्बयंब्बत भऽ गेल आ पुब्बस डडरे मुँह तकैत रहल। तदुपरान्त पी.डी. पाकब्ब सभा भेल जइमे

पुरषोतम दास टंडन, कमला नेहर, पश्चद ान्श्चकारी शी सश्चन्रनाि सन्यालक पती आ पं. श्चाव श्चनायक श्चाश बजला। सभ गोटे आजादक महान त्यागक पशंसा करैत हुनक हाश्चक शदाजश्च देलाह।

ऐ पकारे भारतक एकटा महान सपूत आजादीक हेतु लिात सदैत आजाद रहैत आत्म बश्चदान कएल। जइ गाछक औढ़मे ओ गोली चलौलैन श्चकंवा अन्ततोगत्वा सीनामे गोली लगलैन, ओही गाछक दशब करक हेतु लोक हजारक-हजार संख्यामे आबए लागल। जइसँ संग भऽ अंगेज शासक ओकरा कटबा देलक। आइ-काल्श्च ओहीठाम एकटा दोसर पाखश्चक गाछ रोपल अश्छ आ ओकर सामनेमे अश्छ आजादक भव्य मूश्चावजइमे हुनक एकटा हाि मोछपर आ दोसर हाि श्चस्तौलपर अश्छ। ऐठाम अखनौ हजारो लोक हुनका पश्च अपन सम्मान अश्चत करबाक लेल अबैत रहैत अश्छ। सश्चपहुँ आजाद भारतक आजादीक लिइमे पाणक आहुश्च दए अमर भऽ गेला।

मकर संक्रान्ति

मकर संक्रान्ति सम्पूर्ण भारत ओ नेपालमे सर्वत्र कोनो-ने-कोनो प्रकारसँ मनौल जाइत अछि। पौष मासमे जखन सूर्य मकर राशिमे अबै छैथि तखने ई पावनि मनौल जाइत अछि। प्रतिवर्ष मकर संक्रान्ति १४ वा १५ जनबरीके पड़ैत अछि।
तमिलनाडूमे मकर संक्रान्तिके एकरा 'पोंगल' कहल जाइत अछि। कर्नाटक, केरल एवं आँध्रप्रदेशमे एकरा संक्रान्तिये कहल जाइत अछि। पंजाब आ हरियाणामे 'लोहिड़ी' कहल जाइत अछि एवं एक दिन पहिने अर्थात् १३ जनबरीके मनौल जाइत अछि। उत्तर प्रदेशमे एकरा मूलत: दानक पावनिक रूपमे मनौल जाइत अछि। प्रयागमे प्रतिवर्ष १४ जनबरीसँ माघमेला प्रारंभ होइत अछि। माघ मेलाक प्रथम स्नान १४ जनबरीसँ प्रारंभ भऽ कऽ अन्तिम स्नान शिवरात्रिके होइत अछि। महाराष्ट्रमे ऐ दिन विवाहित महिला अपन पहिल संक्रान्तिपर तूर-तेल वा नून अन्य सुहागिनके दइ छैथि। बंगालमे ऐ दिन स्नानक बाद तिल दान करबाक प्रथा अछि। ऐ अवसरपर गंगासागरमे प्रतिवर्ष विशाल मेला लगैत अछि। असममे मकर संक्रान्तिके 'माघ-बिहू' अथिबा 'भोगाली बिहू'क नाओंसँ जानल जाइत अछि। राजस्थानमे ऐ पवपर सुहागिन महिला अपन सासुके बायना दऽ दऽ असीरवाद प्राप्त करै छैथि। संगे कोनो सौभाग्य सूचक वस्तुके चौदहक संख्यामे पूजन एवं संकल्प कए चौदहटा ब्राह्मणके दान दइ छैथि।
एवम् प्रकारेण मकर संक्रान्तिक माध्यमसँ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृतिक विविध रूपमे आभास होइत अछि। एहेन धारणा अछि जे मकर संक्रान्तिक दिन शुद्ध घी एवं कम्बलक दान केलासँ मोक्ष प्राप्ति होइत अछि।

माघे मासे महादेव: यो दास्पश्च वृहकम्वलम्
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते माक पाप्पश्च।।

पुराणक अनुसार मकर संिान्श्चाक पववव्हा, श्चष्णु, महेश, गणेश, आधशश्वक्त आ सूयक आराधना एवं उपासनाक पावन व्त अश्छ जे तंत-मंत-आत्माके शक्श्च पदान करैत अश्छ। संत-महश्चव लोकश्चाक अनुसार एकर पभावसँ पाणीक आत्मा शुद होइत अश्छ, संकल्प शक्श्च बढ़ैत अश्छ, जान तंतु श्चकश्चत होइत अश्छ। मकर संिान्श्च अही चेतनाके श्चकश्चत करैबला पावश्च अश्छ। ई सम्पूणव भारतमे कोनो-ने-कोनो रपे मनौल जाइत अश्छ।

पुराणक अनुसार मकर संिान्श्चाक श्चन सूयव अपन पुत शश्चाक घर एक मासक हेतु जाइ छैि, कारण मकर राश्चाक स्वामी शश्च छैि। यदश्च ज्योश्चाषीय दृश्चि सँ सूयव आ शश्चाक ताल-मेल संभव नश्च अश्छ, ताश्च ऐ श्चन सूयव स्वयं अपन पुतक घर जाइ छैि। पुराणमे आजुक श्चन श्चता पुतक सम्बन्धमे श्चाकटताक पारंभक रपमे देखल जाइत अश्छ।

मकर संिान्श्चाक श्चन गंगाके पृि्वीपर आनैबला भगीरि अपन पूवजक तपश्च केने छला। हुनक तपश्च स्वीकार केलाक बाद एही श्चन गंगा समुरमे श्चश्च गेल रहैि। तँए ऐ श्चन गंगा सागरमे मेला लगैत अश्छ। श्चष्णु धमबूतक अनुसार श्चतरक आत्माक शान्श्चाक हेतु एवं अपन स्वास्िवदश्च ओ सबहक कल्याणक हेतु श्चालक पयोग पुण्यदायक एवं िलदायक होइत अश्छ। श्चाल-जलसँ स्नान करब, 'श्चाल'क दान करब, श्चालसँ बनल भोजन, जलमे श्चाल अपश्च, श्चालक आहुश्च एवं श्चालक उवटन लगाएब।

ऐ श्चन भगवान श्चष्णु असुरक अन्त कए युद समाश्चाक घोष्णा केने छला। ओ राक्स सबहक मुिके मदार पववश्चमे दबा देने रहैि।

एतदिवऐ श्वनके अशुभ एवं नकारात्मकताके समाप्त करबाक श्वनक रपमे देखल जाइत अछि।

सूयक उतरायण भेलाबाद देवता लोकश्वा व्ह मुहुत्ता उपासनाक पुश्यकाल पारंभ होइत अछि। ऐ कालके परा-अपरा श्वधाक पाप्श्वा काल कहल जाइत अछि। साधनाक हेतु एकरा श्वसश्व काल सेहो कहल जाइत अछि। ऐ समयमे देव पश्वाष्ठा, गृह श्वामाण, यजकमव आश्व पश्वत काज कएल जाइत अछि।

रामायण कालसँ भारतीय पत-पश्वाकामे दैश्वाक सूयोपारायणक पचलन अछि। सबहक मोन-मयादा पुरषोतम शीराम दारा सूयोपारायणक उल्लेख अछि। रामचश्वतमानसमे भगवान राम दारा गुडडी उिबाक कायक उल्लेख सेहो अछि। मकर संिान्श्वाक वणना वाल्श्वाकी रामायणमे सेहो भेल अछि।

राजा भगीरि सूयवंशी छला। ओ भगीरि तप-साधनाक दारा पापनाश्वानी गंगाके पृ्वीपर आश्वा अपन पूवजाक उदार केने छला। राजा भगीरि अपन पूवजाक गंगाजल, अक्त, श्वालसँ शाद-तपणा केने छला। तश्वयासँ मकर संिान्श्वाक स्नान आ मकर संिान्श्वाक शाद-तपणाक परंपरा चश्वा रहल अछि।

कश्वल मुश्वाक आशमपर मकर संिान्श्वाक श्वन मा गंगाक पदापणा भेल छल। पावन गंगाजलक स्पशवमातसँ राजा भगीरिक पूवजाके स्वगव पाप्श्वा भेलैन।

कश्वल मुश्वा वरदान दैत बजला-

“मातृ गंगे श्वाकाल तक लोक सबहक पापनाश करती एवं भक्तजनक सात पुश्तके मुश्वत एवं मोक पदान करती। गंगाजलक स्पशव, पान, स्नान एवम् दशना सभ पुण्यदायक िल पदान करत।”

सूयक सातम श्वकरण भारतवषमे आध्यात्श्वाक उनश्वाक पेरणादायी

अछि। सातम थिकरणक पभाव भारतवर्षमे गंगा-जमुनाक मध्य अधिक समय तक रहैत अछि। ऐ भौगोलिक स्थितिक कारण हरिद्वार आ पयागमे माघमेलाक आयोजन होइत अछि। पितृतुल्य भगवान भास्कर दक्षिणायनसँ उतरायणमे जाइत काल उजामयी पकाश पृथ्वीपर वषा करै छैथि। अतुल्य शक्तिक शोत पकृतिक राशिके छोट एवं दिनके पैघ करए लगै छैथि। पृथ्वीमाता उदरस्थ आनाजके पकाबय लगै छैथि। चारू तरफ शुभे-शुभ होइत रहैत अछि। एहेन अदुत समयमे मकर संक्रान्तिक पवमनौल जाइत अछि।

संक्रान्तिक दिन पंजाबमे 'लोहड़ी'क नाओंसँ मनौल जाइत अछि। पंजाबक अतिरिक्त ई पावनि हिमाचल पदेश, हरियाणा, दक्षिणी उतर पदेश आ जम्मू काश्मीरमे सेहो धूम-धामसँ मनौल जाइत अछि। पारंपरिक तौरपर 'लोहड़ी' फसिलक रोपनी आ ओकर कटनीसँ जुड़ल एक विशेष पावनि अछि। ऐ दिन वाँनफायर जका आगिक ओलाव जरा कऽ ओकर चारू कात नृत्य कएल जाइत अछि। बालक सभ भांगड़ा एवम् बालिका सभ गिद्दा नृत्य करै छैथि। लोहड़ीक आलावक आसपास लोक एकटा भऽ दुल्ला-भटी पशंसामे गायन करै छैथि।

केतेको गोटेक मान्यता अछि जे 'लोहड़ी' शब्द लोई (सत कबीरक पती) सँ उत्पन्न भेल मुदा अनेक लोक एकरा तिलोड़ीसँ उत्पन्न मानै छैथि, जे बादमे लोहाड़ी भऽ गेल।

लोहड़ीक ऐतिहासिक सन्दर्भ सुन्दरी-मुंदरी नामक दूटा अनाथ कन्या छेली। ओकर काका ओकर विवाह नहि करए चाहै छल अपितु ओकरा राजाके भेट कए देबए चाहै छल। ओही समयमे हुल्ला भटी नामक एकटा डाकिइट छौड़ीके नीकठाम बिआह कऽ देलक। वएह डाकिइट वरपक्षके बिआहक हेतु मनौलक आ जंगलमे आगि जरा कऽ दुनू कन्याक बिआह करौलक। कहल जाइत अछि जे दुल्ला शगुनक

रूपमे गुि देलक। भावाि वजे उिाइट होइतो दुल्ला भटी आधवा वाश्वाका सबहक कन्यादान केलक एवम् ओकरा अपन ककाक अत्याचारसँ बँचौलक।

लोहीिक श्वन बच्चा सभ दुल्ला भटीक सम्मानमे गीत गबैत घरे-घर घुमैत अछ्व। बच्चा सभके श्वठाइ एवम् अन्य वस्तु सभ दैत अछ्व। जँ कोनो पश्ववारमे कोनो खास अवसर जेना बच्चाक जन्म, श्ववाह आश्व अछ्व तँ लोहिी आर धूम-धामसँ मनौल जाइत अछ्व। सश्वसवक साग आ मकईक रोटी खास कऽ ऐ अवसरपर बनौल जाइत अछ्व।

ताश्वलनाडूमे ऐ समय ‘पोगल’ मनौल जाइत अछ्व। पचूर मातामे अनक उपजापर भगवान सूयके धन्यवाद जापन हेतु पावश्वाक आयोजन कएल जाइत अछ्व। ताश्वलनाडूक अलावा पुडुचेिी, शीलंका एवम् श्वश भश्वमे पसरल तश्वल लोकश्वा एकरा मनबै छैि। ओइ पोगलमे चाश्व श्वन तक माने १४ सँ १६ जनवरी तक मनौल जाइत अछ्व।

इन्र देवताक सम्मानमे पश्वल श्वन भोगी उत्सव मनौल जाइत अछ्व। पोगल दोसर श्वन माश्वक वतबामे दूधमे चाउर पका कऽ खीर भगवान सूयके आन-आन वस्तु संगे चढ़ौल जाइत अछ्व। ऐ अवसरपर घरक आगूमे कोलम (अपना ओइठामक अश्वपन जका) बनौल जाइत अछ्व। पोगलक तेसर श्वन मटू पोगल कहल जाइत अछ्व। ऐ श्वन गायके नाना पकारसँ सजा कऽ ओकरा पोगल खुआएल जाइत अछ्व। चाश्वम श्वन कन्तुम पोगल कहल जाइत अछ्व। घरक मश्वला सभ स्नानसँ पूववहरश्वक पातपर श्वठाइ, चाउर, कुश्वयार हरश्व आश्व राश्व कऽ अपन भाय लोकश्वाक कल्याण कामना करै छैि। भाइक हेतु हरश्व, चून, चाउरक पाश्वासँ आरती करै छैि आ ई पाश्वा घरक आगूमे बनल कोलमपर श्वछिक देल जाइत अछ्व।

जल्लीकटू मटू पोगल थ्वन पोगल पवक एक श्वस्साक र पमे खेलल जाइत अछि। ऐ लेल गामीण सभ पश्चनेसँ साढ़के खुआ-थ्यआ कऽ तैयार केने रहै छैि। ऐमे मूलत: केतेको गामक मन्ध्वरक साढ़ (कोथ्वल कालइ-तश्वल नाओं) भाग लैत अछि। जल्लीकटूक तीन अंग होइत अछि : वाथ्व मन्जू थ्वराटू, वेली थ्वराटू आ वाटम गन्जु थ्वराटू। वाथ्व मन्जु थ्वराटूमे साढ़के जे बेकती श्वकछु दूरीपर श्वकछु समय तक रोथ्वक लइ छैि, से थ्वजेता होइ छैि। वेली थ्वराटूमे साढ़के खाली मैदानमे छोथ्वि देल जाइत अछि आ लोक ओकरा श्वयंतणमे करबाक पयास करैत अछि। वाटम मन्जुथ्वराटूमे साढ़के नमगर रस्सीसँ बान्श्व देल जाइत अछि, आ थ्वलाि सभ ओकरा श्वयंश्वात करबाक पयास करै छैि।

एक जानकारीक अनुसार २०१० सँ २०१४ इस्वीक बीचमे जल्ली कटूक कारण करीब ११०० लोक घायल भेला एवम् १७ लोक मुइला। पैछला २० सालमे करीब २०० लोक ऐ खेलक कारण मश्व चूकल छैि। ऐ खेलमे पशुक पश्वा कूिताक संगे जीवनक कश्वाके देखैत २०१६ इस्वीमे मा. उच्चतम न्यायालय पश्चावन्ध लगा देलक। सम्पूणवदेश जका श्वथ्विलाचलमे सेहो मकर संिान्श्वाक पववमनौल जाइत अछि। गाम-घरमे एकरा श्वाला सकराश्वा सेहो कहल जाइत अछि। अंगेजी नया सालक ई पश्चल पावश्व होइत अछि। लोकक घरमे नव अन भेल रहैत अछि। पश्चनश्वसँ लोक चूि कुटा कऽ ऐ पावश्वक तैयारी केने रहैए। अपना ऐठाम माघ मासके अत्यन्त पथ्वत मास मानल जाइत अछि। बुढ़-बुढ़ मश्चला सभ भोरे-भोर जाि-ठाढ़के श्वसरैत पोखैरमे डुबकी लगबै छैि। गाममे कएटा मसोमात, वृदा सभके िर-िर कँपैत स्नान करैत देखै छेश्वाऐन...। सभसँ मनोरंजक दृश्य तँ तखन होइत छल, जखन ओ सभ महादेवक मािपर जल

ि ितकाल गाम-घरक सभटा झगि ा सोझराबैमे लागल रहैत छेली। जानह हे महादेव! हमरा पेटमे ककछु नक्ष अक्ष। हमर मोन गंगासन क्षमल अक्ष मुदा एहेन अत्याचारक क्षपटान तूँही कक्षयह।

..पता नक्ष, महादेव सुक्षतो छेलक्षन की नक्ष। मुदा हमरा ई सभ सुक्ष कऽ जर र वकोर लागल रहैत छल।

बच्चामे पावक्ष सभ अदुत आनन्दक क्षषय रहैत छल। सभसँ सरल ओ आनन्ददायी होइत छल क्षाला सकराक्ष। भोरे-भोर पोखैरमे जा कऽ डुबकी लगाउ। माइक हाि क्षाल-चाउर खाउ। क्षाल-चाउर क्षबैत माए पुछैि-

“क्षाल बहब की नक्ष?”

तैपर कक्षऐन-

“खूब बहब।”

क्षध समाप्त। तेकरबाद चुरलाइ, क्षालबा इत्याक्ष भक्ष मोन खाउ...। कएक क्षन पक्षनक्षसँ चुरलाइ, क्षालबा (क्षाललाइ) आ लाइ (मुरहीक लाइ) बनेबाक कायक्षम पारंभ भऽ जाइत छल। घरक वातावरण चुरलाइक सुगन्धसँ पक्षपूणव ऐ पावक्षमे सभसँ क्षशेषता ई अक्ष पावक्षक सामगी बक्ष गेल तँ ओकरा लेल बेसी पतीक्ष नक्ष करए पि त अक्ष। क्षनमे व्राह ण भोजन होइत छल। व्राह ण ककयो आसे-पासक लोक होइत छला, कारण भक्ष गाममे भोजे रहैत छल। बटा भक्ष-भक्ष घी क्षचक्षमे देल जाइ। संगे तरह-तरह केर पकवान सभ सेहो रहैत छल।

हमरा गाममे ककछु गोटे ओइठाम क्षाला संि ान्क्षमे क्षलेबी बनैत छल। भोजमे क्षचक्षक संग क्षलेबी खेबाक बच्चा सभके अदुत उत्साह रहैत छल। क्षचक्षमे तेतेक पचूर मातामे घी रहैत छल जे भोजनक बाद हाि साि-साि धोनाइ कक्षन। पावक्षक कएक क्षन बादो धक्ष

चूरालाइ आ ब्बालबाक आनन्द भेटैत रहै छल।
ऐ पावनिमे चूड़ा, दही, खेबाक सेहो परंपरा अछि। चूरा-दहीक वर्णन करैत खटर कका कहलखिन जे जखन पातपर चूड़ाक संग आम, धातीक अँचार ओ तरकारी परसल जाइत अछि तँ बुझू जे अन्हरिया आबि गेल। तेकर बाद जखन दही परसाएल तँ बुझू जे इजोरिया। जेना पातपर चन्रमा उतैर गेला। ऊपरसँ जँ मधुर राखि देल जाए ओ कौर पेटमे गेल तँ पुछू नहि। पुरा सोआत ठण्ढा जाइत अछि आ आत्मा तृप्त भऽ जाइत अछि।
मिथिलाचलमे ऐ पवर्के मनेबाक अद्भुत परंपरा अछि। चुरलाइ खाउ, चुरा-दही खाउ, खिचड़ि खाउ, जे खाउ, जखन खाउ...। वस्तुत: ई आनन्दक पवर्ि थिक जे कोनो-ने-कोनो रूपे सम्पूर्ण भारतवर्षमे मनौल जाइत अछि। सूर्यक तेजक मकर संक्रान्तिसँ जहिना बढ़ैत रहैत अछि, तहिना सभ लोक-वेदक सुख बढ़ैत रहए, सएह ऐ पावनिक ध्येय थिक।

राची चालि दसक बाद

अगस्त १९७३ इस्वीमे दूरभाष आरीक्षक पदक प्रशिक्षण कार्यक्रमक हेतु हम पहिल बेर राची गेल रही। ओइ समय डॉ. शुभर झाक संगे योगदा सतसंग मठमे हम एक मास रही। शुभर बाबू योददा महाविद्यालयक पाचायव रहैि। पाचायक आवासमे ओ एकटा नोकरक संग असगरे रहैि। तीनटा कोठरी, भानसक घर, स्नान गृह आदि सुविधाक सहित आवासीय दृष्टिसँ उतम स्ािन छल। आस-पासमे आमक गाछ सभ छल। गाछक आस-पासमे कुटी जका ककर सभ चलैत छल। अन्दरमे योगदा सतसंग मढ़ छल। ओइ आशमक सात्विक वातावरण अत्यन्त मनोरम छल आ हमरा ओइठाम मोन लागि गेल।

पहिल बेर राची गेल रही तहिया हमर उमेर २१ वषव छल। जीवनक अनुभव नहि छल। विदा्ि रही। तेकर बाद नोकरी भेट गेल रहए। नोकरी करबाक इच्छा नहि रहए। आगू पढ़ाइ करए चाहैत रही। परन्तु परिवारमे सबहक विचार भेलै जे नोकरी पकैि लेबाक चाही, किएक तँ नोकरी जल्दी नइ भेटै छइ। पहिल नोकरीके नहि छोिकि चाही,आएल लक्ष्मीके लात नहि मारी इत्यादि...।

ओहुना ओइ साल एम.एस-सी.क नामाकन भऽ गेल रहइ। हमर बहक परीक्षकाल विलम्बसँ आएल रहइ। तँए ई आणय भेल हम नोकरी पकैि ली।

बससँ राची पहुँचल रही। रस्तामे पहाििक बीचमे खतरनाक रस्ता छल। डाइभरक ऊपर सबहक जीवन आभब छल। तँए ओ अपना लगक सीटपर एहने लोकके बैसबैत छल जे रास्ता भरि जागि सकैि। औंघाइत बेकतीके लगमे बैसलासँ डाइभरोके औंघी लागि सकै छल,

अस्तु ई पयास कएल जाइत छल।

राची पहुँचते थ्यताजीक पतक संग शुभर बाबूक डेरापर पहुँचलौ। ओ पत पढ़ला आ हमरा अपन सामान सभ रखबाक हेतु कहलैन।

शुभर बाबूके एकाध बेर पश्चनौ देखने रश्चऐन, मुदा गप-सप्प नश्च रहए। राची हुनक डेरापर सामान सश्चत श्वना पूववसूचनाक हम पहुँच गेल रही। ताश्च श्चसाबे ओ बहुत सहयोग केलाह। डेरामे ओ असगर रहैत छला, एकटा नोकर रहैन जे घरक सभटा काज करैत छल। भानस ओ स्वयं करैत छला। एके साझ। राश्वमे खेबाक बेवस्ि सेहो भोरके भानसक संग कऽ लैत छला। चूकी ओ अपने श्वन भश्च व्यस्त रहैत छला, तँए हुनकासँ भेट-घाट सामान्यत: साझेमे होइत छल। राश्वमे सुतबासँ पूववओ स्वाध्याय करैत छला। हमरा रात-श्वराश्व पढ़ैत देख ओ बहुत पसन होइत छला। कखनो काल हम नोकरीसँ त्यागपतक गप करी तँ ओ कहैि जे बापसँ पुश्च कऽ श्वकछु कश्वयह। नश्च तँ ओ कहता जे मनो नश्च केलश्वन।

ओइ डेरापर हम करीब एक मास रहलौ। मोन लाश्च गेल रहए। कएटा मैश्विल सभसँ ओइठाम भेट-घाट होइत रहैत छल। मुदा ओइठाम केतेक श्वन रश्चतौ। अपन बेवस्ि तँ करबाके छल। तँए डेरा तकैमे लाश्च गेलौ।

योगदा सत्संगमे दयामाताक आगमन भेल छल। हम डाक्टर साहैबक संगे दशबाक हेतु गेल रही। गौर वणवएवम् अश्च तेजस्वी दयामाताक दुलभवदशबा होइते मोन आनन्श्वत भऽ गेल। ओ कोनो पवचन नश्च देलीह। श्वकछु काल सभ गोट श्वयान केलक आ सभा समाप्त भऽ गेल।

गप-सप्पक िममे शुभर बाबू एक श्वन कहला जे ओ श्वसडीक साई बाबासँ बहुत पभाश्वत भेल रहैि। हुनकर आशममे शुभर बाबू गेल

रहैि। कहला जे मोनक बात सभ ओ अपने बाजए लागल रहैि। कएक तरहक चमत्कार सेहो ओदेखला। चूकी हुनकर डेरा छोट छल, आ पिरवारक अन्य सदस्य लोकिन सभ आिब गेल रहिथन, अस्तु हम अपन डेरा तािक लेलौ आ करीब एक मास रहला पछाइत ओतए-सँ पस्िान केलौ।

पिहरन-ओढ़नमे शुभर बाबू चुस्त-दुरस्त ओ आधुिनक वस्तक पक्षधर रहैि। हमरा ऐ बातक हेतु ओ कएक बेर टोिकयो दिथ। कहैि जे ओ एकठाम साक्षात्कारमे भेष-भूषाक कारण छाँिट देल गेला।

राचीक संस्कृत कौलेजक पास हमर नव डेरा छल। एकटा कोठरी छल, जेकर िकराया २० र पैआ मािसक छल। भोजन स्वयं बनाबी। पािन इनारसँ िनकालए पडि़। बहुत गहीर इनार छल जइसँ पािन िनकालबाक हेतु यिष्ट पयास करए पडि़ त छल। बगलमे एकटा पैघ कोठरीमे चािरटा हमर सहकमी सभ िमिल कऽ रहै छला। ओहो सभ अपन भोजन स्वयं बनाबैि। ओइठामसँ एच.इ.सी. आसानीसँ देखाइ छल। ओइ छोटसन कोठरीमे हम पाच मास धिर रहलौ। टेलीिोन एक्सचेजमे पिशक्षण कायिम छल। पिशक्षणक वातावरण स्ूले जका छल। ज्यादातर िकताबी िवषय पढ़ौल जाइत छल।

पिशक्षणक दौरान रिब िदनक छुटी रहै छल। ओइ समयक उपयोग हम सभ आसपासक वस्तु सभ घुमै-िर रैमे करी। कििहयो काल बी.आइ.टी. िमसरा जाइ। ओइठाम हमर स्कूलक्षया संगी इन्िजिनयिरंगक पढ़ाइ कए रहल छला। छातावासमे रहबाक आ खेबाक-िपबाक उत्तम बेवस्िा छल। चार कात जंगलनुमा वातावरणमे रचल-बसल ओइ कौलेज पिरसर अत्यन्त सुखदायी छल। सभसँ आनन्द होइत छल अपन स्कूलक्षया संगीसँ भेट केलापर। हम सभ एके संग मैिटक केने रही। पी यूिनवरिसटीमे आर.के. कौलेज मधुबनीमे

संगे रही। तेकर बाद हम सी.एम. कौलेज- मधुबनीमे संगे रही। तेकर बाद हम सी.एम. कौलेज- दरभंगामे नाओं श्लखेलौ आ ओ बी.आइ.टी. श्मसरामे। बेहतर परीक्ष पश्वणामक बाबजूद हम इन्श्मश्नायश्वंगमे नाओं नश्व श्मखा सकलौ। यदश्य मोतीलाल नेहर इन्श्मश्नायश्वंग कौलेजमे हमर नामाकन श्वश्चित भऽ जाइत, कारण ओइ समय नामाकन श्वगीवन साईसक पाप्ताकक आधारपर होइत छल, आ हमरासँ बहुत कम पाप्ताक बला सबहक नामाकन भऽ गेल रहइ। मुदा आब ऐ श्वषयपर सोचब व्यवि पश्वशम कखनो व्यविनश्व जाइत अश्छ। ओही पाप्ताकक आधारपर हमरा दूरभाष श्वारीक्कक नोकरी भेल जेकर पश्वाक्गक िममे हम राचीमे रही।

पश्वाक्गक दौरान एक श्वन घटल दुघदना अखनो तक मोनमे कचोटैत रहैए। हमर सबहक बगलबला कोठरीमे टेलीिन ऑपरेटरक पश्वाक्ग चलैत छल। ओइमे एकटा पश्वाकु राजस्िनिक छला। जािक मास छल। राश्वामे अपन डेरामे अंगेठी जरा कऽ सुश्व गेल रहैि। पात भेने ओ जखन नश्व उठला तँ अगल-बगलक लोक सभ कोठरी खोललक तँ ओ मृत छला। अंगेठीसँ श्वाकलल कावबामोनोक्साइड हुनकर मृत्युक कारण भेल। गामसँ हुनकर श्वता ई समाचार सुश्व आएल रहैि आ एक्सचेजक एक कोणमे राखल युवा पुतक लाश देख ठोह पाश्वि कऽ कनैत रहैि। ऐ पकारेण जीवन-यापनक श्वजासामे श्वाकलल एकटा युवकक असामश्वाक ऐ दुखद अन्त भऽ गेल।

श्वात्य पश्व चार कात एहेन केतेको घटना सभ घश्वत होइत रहैत अश्छ जे देख-सुश्व मोनमे श्वन्ता हएब सोभाश्वक। जीवन यातामे ऐ तरहक घटना झकझोश्व कऽ राश्व दैत अश्छ, तािश्व जीवनमे श्वशास एवम् श्वायश्वाक अकाटयता माश्व आगू बढ़बे जीवन श्विक। नीक काज करैत आगू चलैत चली, आगूक रस्ता अपने बश्व जाइत अश्छ।

एक दिन घुमैत-फिरैत हम सभ राचीक काँके स्थित पागलखाना देखए गेलौं। ओइठामक दृश्य भयावह छल। मानसिक बिमारीसँ मनुखक दुर्दशाक वर्णन असंभव छल। तरह-तरहक इशारा करैत, बड़बड़ाइत अपनेमे तल्लीन, सुखाएल, जीवैते मरल गेल लोक सबहक दृश्य देख हृदय करुणासँ भरल आएल छल। केतेको स्वस्थ लोक सभ ठीक भऽ गेल छल, मुदा हुनक परिजन कोनो खोज-पुछारि नहि कए रहल छल। ठीक-ठाक लोक सभ पागलखानामे पड़ल छल। आसपास स्वस्थ लोकक समुहके देखैत-सुनैत केकरो मानसिक भसक्कयो सकैत छल।

ओइठामसँ गुजरैत मोनमे मानसिक स्वास्थ्यक महत्व बुझाइत छल। व्यक्तिगत चिन्ता कए, अथवा परिस्थितिसँ सामंजस्यक आभावमे केतेको लोक अस्वस्थ भऽ जाइ छैथि। शरीर व्यथित भऽ जाइत अछि। उचित देख-भालक अभावमे स्वस्थ लोक क्रमश: रुग्ण भऽ जाइत अछि। कएक गोटा असमयमे मानसिक चिकित्सालयेमे मरि जाइत अछि। मोनपर बेसी भार दऽ अपन दुर्गति कराएबसँ बँचब केतेक जरुरी अछि, से ओइठाम जा कऽ बुझाइत छल। ओना, आस-पासक मनोरम पहाड़ी दृष्य मोनके सुखद अनुभव दैत छल, मुदा ओइठामक मानसिक बिमारीसँ गस्त लोक सबहक दुर्दशा देख मोन खिन्न भऽ गेल छल। तँए जल्दिये हम सभ अपन डेरा आपस आबि गेल रही।

टैगोर हिल राटीक प्रसिद्ध स्थानमेसँ अछि। ऐ स्थानक अपन ऐतिहासिक महत्व अछि। रबीन्द्रनाथ टैगोरके के नहि जनैत अछि। हुनक कविता संगह 'गीताजलि'क हेतु हुनका साहित्यक नोवेल पुरस्कार भेटल छल। मुदा ई बात कमे लोक जनैत अछि जे कवि, गायक एवम् चित्रकारक रुपमे रबीन्द्रनाथक बेकतीत्वक निर्माणमे हुनकर अगज ज्योतिन्द्रनाथ टैगोरक बहुत योगदान अछि।

ज्योतिन्द्रनाथ शान्तिधाम ओ ध्यानक हेतु 'मोहरावादी स्कूल' राचीक चुनाव केलाह जे आब 'टैगोर स्कूल'क नाओंसँ जानल जाइत अछि।
१९१० इस्वीसँ १९२५ इस्वी धरि असगरे रहि कऽ ओ शान्तिधामक स्थापना केलाह। ओइ समयमे राची एकटा छोट-छीन गाम छल। ज्योतिन्द्रनाथ अपन जापानी बग्घीसँ सायंकाल सभ दिन राची घुमैत छला। स्वतंत्र भारतक प्रथम आइ.ए.एस. सत्येन्द्रनाथ टैगोर पहाड़िक जमीनमे छोट-छीन घरो बनौने रहथि जे सत्य धामक नाओंसँ जानल जाइत छल। वर्तमानमे ऐ स्थानिक देखभाल राज्य पर्यटन विभागक द्वारा कएल जाइत अछि।
४३ बरखक बाद भाइजीजक स्थानान्तरणक बयातीमे शामिल हेबाक हेतु सपरिवार दिल्लीसँ राची वायुयान द्वारा पहुँचलौ। २३ फरबरी २०१७ के ७:३५ बजे पात:काल वायुयानक उड़ानक समय छल। तीन बजे भोरेसँ तैयारी पारंभ कएल। पात:कालीन दिनचर्या समाप्त कए पौने पाच बजे भोरे हवाइ अडडा हेतु पस्थान कएल। साढ़े पाच बजे हवाइ अडडापर पहुँच सुरक्षात्मक जाँच-पड़ताल ओ सामानक ठेकान लगा गेलाक बादो हमरा लोकनिकेँ १ घन्टा समय छल। तेकर उपयोग चाह-पीबैमे कएल गेल। हवाइ अडडापर सभ वस्तुक दाम अतत: रहैत अछि। तैयो भोरक चाहक पयोजन छल। घरसँ भोरे विदा भऽ गेल रही। तँए जे दाम लेलक से दऽ कऽ दूटा चाह कीनि दुनू बेकती चाह पीबैत गप-सप्प करैत समय कटलौ।
राचीमे वायुयान निर्धारित समय अर्थात् ९ बजे भोरे उतैर गेल। हम सभ कनिको थकल नहि रही। सामान निकालैमे किछु समय लागल आ बाहर होइते हमर अनुज हमरा लोकनिक स्वागत हेतु मुस्तैद छला। हुनका संगे लाल गाड़ीपर बैस १५ मिनटमे हुनकर पटेल चौक, हरमू हॉउसिंग कालोनी स्थित आवासपर पहुँच गेलौ।

ओइठाम पाहुन सबहक हुजुम छल। हमर भाय सभ सपरिवार पहिनहि पहुँच गेल रहैि। बरक मामा गामसँ तँ केके ने आयल गेल छल। हुनकर नाना-नानीके देख अत्याशय पसनता भेल। ८२ वषक होइतो नाना िहगर छथिन। ओ दरिभंगाक कामेश्वरावाद स्थित उच्चिवदालयमे पधानाध्यापकक पदसँ सेवा निवृत भेल छैि एवम् बहुत नीीस एवम् बेवहार कुशल बेकती छैि। मुदा बरक नानीक स्ािस्िय गिबिाएल रहै छैन। किछु मास पूववदरिभंगामे बहुत जोर बेमार पड़ि गेल रहैि, कहुना कऽ जान बँचलैन। अखनो धरि वाकर पकैि किछु-किछु चलै पबै छैि। नानाक विआह देखबाक अपन उत्साहमे सभटा बिसैर ओ राची आयल सकलीह से अदुत बात...। यदपि डेरामे लोक सभ खचाखच भरल छल, तािप हमरा हेतु रहबाक बहुत नीक बेवस्ाि छल।

राची हवाइ अडडासँ घर अबैतकाल पिसद्ध िकेट खेलाीि धोनीक आवाससँ गुजरलौ। कोनो बहुत विशिष्ट निह बुझाएल तािप धोनीक घर हेबाक कारणे लोकमे ओकरा देखबाक उत्सुकता बनल रहैत अछि। संगे रस्तामे बनल नव-नव कालोनी, आवासीय िलैट सभ देखाइत छल जेकर ४३ साल पूवव नामो-निशान निह छल। ओइ समयमे जेतए जंगल छल, तैठाम महल सभ ठाढ़ देखलौ। परिवतन एवम् विकास जीवनक परिभाषा िथक। मनुखक सोभाव अछि जे ओ निरन्तर आगा बढ़ैमे लागल रहैत अछि। ओ गाछ जका ठाढ़ निह रिह सकैत अछि। मनुख चल पाणी अछि। सोभावश निरन्तर किछु-ने-किछुमे लागल रहैत अछि। यएह िथक ओकर विकास याताक अन्तरहस्य। सोिचयौ जे हमरा लोकिनक पूवजजँ यािस्थितिसँ संतुष्ट भऽ गेल रहितैि तँ आइ हम सभ रेल, हवाइ जहाज, कारमे चिढ़ सिकतौ? कदािप निह। संघषेसँ स्वयंभव भविष्यक आवाहन

होइत अछि। संघर्षे जीवन थिक।

कहबी छै जे 'सफलता टीकासन चढ़ि कऽ बजै छइ। वएह हाल धोनीक छइ। राचीमे जेतै देखू, जेकरे देखू धोनीक नाओंसँ, ओकरासँ जुड़ल वस्तु सभसँ अत्याशय प्रभावित अछि। धोनी जइ स्कूलमे पढ़ला से प्रसिद्ध भऽ गेल। जइ घरमे छैथि से प्रसिद्ध भऽ गेल। राचीसँ ६० किलोमीटर दूरपर भगवतीक मन्दिर प्रसिद्ध भऽ गेल अछि। सभ कहैत अछि जे धोनी राची एलापर किंवा कोनो मैच खेलेबाक हेतु प्रस्थानसँ पूर्वऐ भगवतीक दर्शन अबस्स करै छैथि। तँए सभ ओइ भगवतीक दर्शनक हेतु उत्सुक रहै छैथि। राचीसँ हमरा लोकनिक ओइठामसँ सेहो किछु गोटे ओइ भगवतीक दर्शन करए गेला। हम सभ नहि जा सकलौं मुदा मोनमे इच्छा तँ रहबे करए। ओना, जमशेदपुरसँ आपस अबैतकाल किओ कहलक जे वएह ओ मन्दिर अछि जा दूरेसँ सही, भगवतीके मोने-मोन प्रणाम केने रही। जमशेदपुरसँ आएल पाहुनक स्वागतमे सभ मुस्तैद भेलैथि। बरक चुमौन भेल दुवाक्षत हेतु दुवाक्षतमंतक हम उच्चारण कएल। बरक हाथि उठबए लेल कन्यायाक भ्रती आएल रहैथि। बरक हाथि उठौला पछाइत सभ गोटे बेराबेरी जमशेदपुर हेतु कारमे बैस प्रस्थान केलौं। लगभग साढ़े तीन घन्टाक यात्राक बाद हम सभ जमशेदपुरमे प्रवेश कए रहल छेलौं। जमशेदपुर हम पहिलौ रहल छी। मई १९७४ सँ मार्च १९६५ धरि, दूरभाष अधिकारीक हम ओहीठाम रही। बिस्तुपुरक मैदानमे जय प्रकाश नारायणजीक भाषण भेल रहइ। वर्षाक बाबजूद सम्पूर्ण मैदान लोकसँ खचाखच भरल छल। जय प्रकाशजी राष्ट्र भरिमे आन्दोलन कए रहल छला। ओही क्रममे जमशेदपुरक यात्रा छल।

जमशेदपुर पहुँच कऽ हमसभ होटलमे विश्राम केलौं। सभ बरियातीक

हेतु उतम बेवस्ि छल। ििबे कालमे जलखै देल गेल। पाकेट बन्द थ्िबबामे नाना पकारक जलखैक वस्तु सभ राखल छल। पाििक बोतल राखल छल। कोठरी सभमे टेलीवीजन, ए.सी. आिद-आिद सभटा सुििधा छल।

लगभग तीन घन्टा िवशामक बाद बिरयातीक कािि़ला िववाह स्िली िदस िवदा भेल। अदुत, रोमाचकारी दृश्य छल। िटाकासँ अकास ओ धरती एक भऽ गेल छल। युवक सभ मनोहारी नृत्य कऽ रहल छला। ििबे कालमे हम सभ िववाह स्िल पहुँच गेलौ।

मैििल परंपराक अनुसार बिरयाती सबहक हािदक स्वागत कएल गेल। िर बिरयाती सभ अपन-अपन स्िान गहण केलाह। मंचपर बर कििायाक माल्यापिणक दृश्यक आनन्दक वणिन करब शब्दक बसक बात निह। तदुपरान्त आजाडाला आएल, िववाहक अनुमिि पदान करक िवध भेल। िििकालक बाद बर पििरछन हेतु िवदा भऽ गेला आ हम सभ भोजनक हेतु...।

भोजनक उतम बेवस्ि छल। शकाहारी बहुत कम लोक छला। माछ सिहत अन्यान्य आिराििष वस्तुक भरमार छल। िववाहमे बिरयातीक हेतु एहेन उतम बेवस्ि कम ठाम देखैमे आएल छल। भोजनोपरान्त बहुत रास बिरयाती िवशाम हेतु होटल आपस चिल गेला। हम अनुज सिहत रािि भिर िववाह स्िलीमे रिह गेलौ। कएटा िवध सभ करक रहइ। िववाहोपरान्त दुवोक्त मंतक हेतु पुनश्च हम सभ उपस्िित रही। िववाह भऽ गेल। लगभग पाच बजे हम आपस होटल एलौ।

सिरयातीक तरिसँ बहुत रास लोक आएल छला। स्िानीय महत्वपूणव बेकती एम.एल.ए. आिद सभ सेहो आएल छला। दोसर िदन पुनश्च बिरयातीक भोजनक बेवस्ि छल। अदुत बेवस्ि छल। आिराििष

भोजी सबहक पाव बारह छल। शाकाहारी कम लोक छला। आ ओइठाम अलग-िलग पिथ गेल रही। सभ तरहे सन्तुष्ट भऽ हम सभ आपस जमशेदपुरसँ राची िवदा भेलौ। लगभग सात बजे हम सभ राची डेरापर पहुँचलौ तँ साझक गीत भऽ रहल छल।

घरमे पाहुन सभ गजगज करैत छल। लगभग दस िदन यएह हाल रहल। मुदा बेवस्िामे कोनो चूक नि छल। केतेको कायवकता सभ िदन रािि चाह-पान, भोजन, जलखै सबहक बेवस्िामे लागल रहैत छला। िदरागमन, चािरिदन बाद भेल। आ तेकर बाद स्वागत भोज। स्वागत भोजोपरान्त ततेक लोक छला जे गनब किठन। नाना पकारक वस्तु खाइत रहू। चलैत रहू। गप करैत रहू। बर-किनाया संगे िटो िखचाउ,आ आगू बढ़ जाउ। १२ बजे तक ई कायि म चलल।

िववाहोपरान्त बाचल समयमे आस-पासक पमुख स्िान सभके देखबाक इच्छा भेल। तइ ि ममे ४३ सालक बाद दोबारा टैगोर िहल देखए गेल रही। पहािपर चढ़ैले सीढ़ीमे िकछु पिरवतन बुझाएल। आस-पासक दोकान-दौरीक संख्यामे वृिद्ध बुझाएल मुदा ओइ स्िानमे कोनो गुणात्मक पिरवतन नि बुझाएल। पहािपर ऊपर चिढ़ गेलाक बाद समूचा राची शहरक पिरदृश्य आश्चाय मनोरम लगैत अिछ। गाहे-बगाहे िकयो-िकयो देखए आिब जाइत छल। मुदा एतेक पैघ सािहत्यकार, कलाकारक नाओंसँ जुिल ऐ स्िानिके बेहतर स्थिितक कामना छल।

ओइठामसँ लौटैत काल सिकिक काते-काते तरह-तरहक दोकान सभ देखाएल। मुख्यमंती, राज्यपालक आवास देखाएल, मुदा हम सभ रकलौ राक गाडेन लग। ओइ गाडेनके देख मोन पसन भऽ गेल। लगैत छल जेना बसन्त ऋतु साक्षात्पकट भऽ गेल छैि। लालाव

किनार पहाड़ीक कछेरमे तरह-तरह केर सजावट प्रकृति स्वयं कऽ देने छल।

गोडा फॉलक पासमे बनल राक गार्डेन जयपुरक राक गोर्डेनक प्रतिकृति कहल जाइत अछि। एकर अनुमाण गोडा फॉलक पाथरि सभसँ भेल अछि। मानव अभावाक जल प्रपात, चटान एवं ग्राम्यकल प्रकृतिक सौंदर्यके मानव पुरषार्थक समावेशक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। राक गोर्डेन मात्र दर्शनीय स्थान नहि अछि अपितु एकर सुरम्य ओ शान्त वातावरणमे आत्माके एकटा सकून भेटैत अछि जे आनठाम सुलभ नहि अछि। कॉके डैमक समीप हेबाक कारण एकर सौंदर्य अनायासे बढ़ि जाइत अछि। बाल-बच्चा-पुताक संगे कखनो काल ऐठाम जा कऽ नीक समय व्यतीत कएल जा सकैत अछि। असगरो जा कऽ आत्म चिन्तन एवम् शान्तिक अन्वेषण करबाक ई एकटा उपयुक्त स्थान अछि।

राक गोर्डेनमे हम सभ सपरिवार वर्तमान यातामे गेल रही। अद्भुत आनन्दक अनुभूति भेल। यत्र-तत्र हरियर कंचन, रंग-बिरंगी फूल, पाथरि काटि-काटि कऽ बनौल गेल तरह-तरह केर आकृति देख बहुत नीक लागल। किछुकाल बैस ओइठामक शान्ति ओ प्राकृतिक सौंदर्यक आनन्द लऽ हम सभ आगू बढ़ि गेलौं।

राची अपन आवो-हवाक हेतु प्रसिद्ध छल। लोक स्वास्थ्य लाभ करबाक हेतु ओइठाम जाइत छल। मनोरोगी सबहक प्रसिद्ध चिकित्सालय कॉके, राचीमे अछि जेतए राचीक सुरम्य वातावरणमे मनोरोगी सभ मानसिक स्वास्थ्य लाभ करैत छल। आध्यात्मिक दृष्टिमे योगदा सत्संग केर मुख्यालय राचीमे अछि जैठाम गेलापर अखनो शान्तिक अनुभव होइत अछि। यदपि योगदा सत्संग मंठ आब शहरक बीचमे भऽ गेल अछि, तथापि अखनौ आशमक अन्दर

गेलासँ आनन्द होइत छइ।

योगदा आशमक स्ािपना सन् १९१६ मे परमहंस योगानन्द दारा भेल। ओ ऐठाम आशमक आलावा बालक सबहक हेतु जीवन श्रमाण श्वदालय एवम् श्रीया योगक पश्ाक्णक बेवस्ाि केलैि। योगदा आशममे ४३ सालक बाद िरसँ पहुँच बहुत सन्तोष ओ आनन्दक अनुभव भेल। ओइठाम सभसँ पश्हने योगानन्द परमहंसक कक देखलौ। ओइमे गुरजीक श्कछु सामान सभ राखल अश्छ। हुनका हाि ताि पैरक श्आशान अश्छ एवम् हुनकर महासमाश्धपर सँ आनल गुलावक िूल राखल अश्छ। गुरजीक आवासक समीप एकटा श्राचीक पैघ गाछ अश्छ जैठाम ओ बैस अपन श्वदाश्ि सभके पवचन करैत रहै छला। अखनो ओइ गाछकक जश्रमे गुरजीक श्चत राखल अश्छ। आगन्तुक सभ ओइठाम बैस श्यान कऽ आत्मशान्श्ाक अनुभव करै छैि।

राची आशमक श्वदालयक स्टोर रममे बैस गुरजी कएक बेर आत्म श्चन्तन करैत रहै छला।ओइठाम आइ-काल्श्ह स्मृश्ा मन्श्दर बनल अश्छ। षटकोणीय उज्जर संगमरमरसँ बनल ऐ स्मारकक मुकुटपर सुन्दर कमल बनल अश्छ।

आशममे ध्यान केन्र अश्छ, जैठाम बैस लोक भोर-साझ घन्टो श्यान करैत अश्छ। अगल-बगलक तरह-तरहक वृक सभ वातावरणके अत्यन्त सुरम्य एवम् आकषक केने अश्छ। तकैत-तकैत पाचायव श्आवास पहुँचलौ जेतए ४३ बषवपूववहम डॉ. शुभर झाक संगे एक मास रहल रही। ओ छोट सन भवन बन्द छल मुदा ओकर छश्व ओश्हना छल। देख कऽ भूतकालक दृश्य िरसँ आँश्खक सोझमे आश्व गेल। ओइठाम बरामदापर बैस साझ-के शुभर बाबू अध्ययन ओ चचा करैत छला।

आशमक एकभागमे पशासकीय भवन अछि, जेकर नाओं शिवालय थिक। ओतए जा कऽ किछु पोथी किनलौ, किछु जानकारी इकटा केलौ। आ घुमैत-फिरैत हरमू हॉउसिंग कालोनी स्थित अपन डेरा आपस आबि गेलौ।

एक दिन अहिना घुमैत-फिरैत रामकृष्ण मिशन मठ पहुँच गेलौ। ओइ दिन रामकृष्ण परमहंसक जयन्ती मनौल जा रहल छल। सत्संग भवन खचाखच भरल छल। अधिकाश बंगाली लोकनि गाहे-बगाहे मैथिली भाषी सेहो देखेलाह। होमक बाद फूलसँ अचना भेल। भक्त सबहक हाथमे फूल देल गेल आ पूजोपरान्त एकएक बेकतीक हाथक फूल एकटा अछियामे एकटा कएल गेल जइसँ केतौ मैल नहि भेल। किछु कालक बाद सभ किओ भंडारामे गेला जैठाम पुरुषक पातपर खिचड़ी देल जा रहल छल मुदा मंगलक उपासक कारण हम खिचड़ीकेसँ पणाम कए पुस्तकालय चलि गेलौ।

रामकृष्ण मिशन मठ, टैगोर हिलसँ लगे अछि। सन् १९१३ इस्वीमे शीरामकृष्ण परमहंसक अनन्य शिष्यमेसँ एक स्वामी सुबोधानन्द (खोका महाराज) क राची शुभागमन भेल। ओ किछु भक्तक संग टैगोर हिल पहुँचला। भोजनादिक उपरान्त पेयजलक खोजमे वतमानमे रामकृष्ण मठ स्थित इनारपर पहुँचला आ ओकर पानिसँ अपन पियास बुझौलैथि। ओइ इनारके अखनो स्मारकक रूपमे बँचा कऽ राखल गेल अछि। ओइठाम किछुकाल ठाढ़ भऽ सोचैत रहि गेलौ जे करीब साए साल पूववई स्थिति केहेन छल जे पानिक हेतु स्वामीजीके एतए आबए पड़लि आ ऐगला साए सालक बाद पता नहि की रहत, की नहि रहत...।

राचीक नवनिर्मित खेलगॉव सेहो दशनीय अछि। तरह-तरहक खेलक हेतु पशिक्षणक बेवस्था ओइठाम अछि। ओइमे अनेकानेक पकारक

इन्डोर स्टेिडयम अछि जेकरा देखैत बनैत अछि। स्वच्छ ओ रमणीय वातावरणमे बनल ई खेल पिरसर देखबामे बहुत आकषक अछि। मोन हएत जे घुिमते रही।

राची शहरसँ आध घन्टामे हमरा लोकिन िबरसा जैिवक उदान पहुँचलौ। उदानक अन्दर घुमबाक हेतु गाि भेटै छै, मुदा जखन हम सभ पहुँचलौ तँ सभ गाि खुिज गेल रहइ। एक घन्टाक बाद गाि भेटैत तँए हम सभ पएरे उदानमे घुमबाक हेतु िवदा भेलौ। तरह-तरह केर जीव-जन्तुसँ भरल उदानक हिरयरी देखैत बनैत अछि। सभसँ पहने हम सभ शुतुरमुगव देखलौ, तेकर बाद गरि। गरि देख आश्चयवभेल जे िवष्णु भगवान केना एकरा अपन वाहन बनौलिथन। िमश: हम सभ जाईट हेरोन, पिरया चील आ तेकर बाद भारतीय बाघ देखलौ। बाघ ओइ बारक अन्दर लगातार घुिम रहल छल जेना कोनो िशकार करबाक हेतु आतुर हो। कनी कालक बाद तेदुआ, हिरण, भाउल, शािहल, कोटरा, नील गाए आ अन्तमे हाि देखलौ। हािके महिवार िशक्कत कए देने रहइ आ ओ दशक दारा िकल गेल र पैआके शूरसँ उठा लैत छल। घुमैत-िफरैत अनेकानेक जीव-जन्तु देख सकलौ जे आइ तक नामो निह सुनने रही मुदा मोनमे ई सोिच दुख भेल जे स्वतंत रहैबला ऐ पाणी सभके मनुख केना बान्िह देने अछि..!

स्वािक हेतु मनुख संतिथ स्वतंत रहएबला जीव सबहक िजनगी नकवकऽ देने अछि..! जंगलमे उन्मुक्त सदैत गरजैत-िरजैत रहएबला बाघ, चीता, भाउल इत्यािद सभ जीव मनुखक आत्याचारक कारणे बेवस अछि। बाघके बेवस ओइ वारमे घुमैत-िफरैत देख हम अिधाशय दुखी भऽ गेल रही। हे मनुक्ख! अहा अत्याचार, अहंकारपर िवराम िकएक ने दऽ रहल छी? केतबा िदन एतए रहब? चिल जाएब दुिनयासँ

तँ की छोिथ जाएब? अत्याचारक मूक कि? जे पाणी पक्षाकार नह कऽ सकल, जे बाध्य नह सकल िकंवा जेकर ्यत्कारक भाषा अहा बुझ नह सकलौ आ िनदोष पाणी सभके सदा-सवदाक हेतु कारावासोसँ कठोर जीवन जीवाक हेतु ववस कए देलौ? केना शान्त हएत, एहेन अत्याचारी आत्मा सभ?

अस्तु मानव समाजके सोचबाक चाही जे पकृ पदत सौन्दयक आनन्दक अवोध आनन्दक पयासमे ओकरा नष्ट कएक कऽ रहल अछ।

लगभग चा घन्टा ध लगातार चलैत रहलाक बाद हमसभ िक गेल रही, सुस्ताएब जर री बुझाएल। अस्तु वोटीग स्ि लग बनल दोकानसँ पा कीनलौ, कछु खेबाक सामान सेहो लेलौ आ खाइत-पीबैत कछुकाल शाम करैत पुन: दा भेलौ। ि र नौका हार हेतु कट लेलौ। नौका हारक एहेन त बेवस्ि आइ तक नह देखलौ। छोट सन एकटा नाह दऽ देलक आ कहलक जे एकरा अपने चलाएब। कोनो ाकक बेवस्ि नह अछ। परेशान भऽ गेलौ। नाह चलेबाक कोनो अनुभव हमरा नह छल। चा गोटे नाहपर बैसल रही। बेवस्िपक सभ बहुत म्मत देलक। तरह-तरहसँ पक्त करबाक, बेझेबाक पयास केलक। मुदा हमरा म्मत नह होइत छल। मनमे होइत छल जे जँ कही नाह डु जाएत, चाहे कछु गि बि भऽ जेतै तखन तँ लेनीक-देनी पि जाएत। ति बहुत म्मत कऽ ५-६ मीटर नाह खेबलौ। आगू बढ़बाक म्मत नह भेल आ बहुत पयासक बाद आपस आ नाहसँ उतैर गेलौ। उतैरते जेना जान-मे-जान आएल। सभ कयो िक गेल रही। अस्तु बाहर आ गाििमे बैस कऽ आगू ब गेलौ।

राचीक जगनाि मन्र प सरमे पहुँच आध्यात्क सुख भेटल।

मंतोच्चार तथा भजनसँ वातावरण सुगन्धित छल। मन्दिरक गमाहटमे बाहरे पण्डीजी छला। रपैआ देखैत हुनक अन्दर भाव बदलि गेल अन्यथा ओसोझ मुहे गपो करबाक हेतु तैयार नहि रहैथि। किछु मंत पढ़ि हमरा लोकनिके जगनाथजीके पुष्पाजलि दियौलैथि। तदुपरान्त मन्दिरक किछु जानकारी सेहो भेटल। भोज खेबाक हेतु ३० प्रति बेकती एक दिन पूववजमा कराबए पडैत अछि तखने दोसर दिन बारह बजे भोग भेटैत अछि। पूरीक जगनाथ मन्दिरक भोगक स्मरण भऽ गेल। मुदा ओइठामक भोग तँ उम्दा होइत अछि जे खेलाक बाद आर किछु खेबाक इच्छा नहि होइत अछि- कहक माने जे भरिपेटा रहै छइ।

देखबा योग्य राचीक आसपास कएकटा डैम सभ अछि। आओर कएकटा ऐतिहासिक वस्तु सभ अछि, मुदा मोटा-मोटी हम खहरक परिभमण कऽ लेने रही। टेलीफोन एक्सचे, कचहरी, शहीद चौक, रातु रोड विशविदालय आदि-आदि मुख्य स्थान सभसँ एकाबेक बेर भऽ आएल रही। ४३ साल बाद राचीक स्मृति फेरसँ नूतन भऽ गेल आ एकटा अत्यन्त संतुष्टिक भाव मोनमे भेल।

२ मार्च २०१७ इस्वीक भोरे हमर सबहक दिल्लीक हेतु वायुयान छल। साढ़े सात बजे भोरे डेरासँ हवाइ अडडा पस्थान कएल। साढ़े नौ बजे दिल्लीक हेतु जहाज उड़ि गेल। एकटा मधुर स्मृतिक संग हम सभ राचीसँ दिल्लीक याता सम्पन कए एक बजे घर आपस आबि गेलौ।

राचीक एक सप्ताहक यातामे भाञिजक बिआह तँ देखबे केलौ संगे बहुत रास आनो-आनो चीज सभ देख सकलौ। एकबेर फेर राचीक स्मरण नवीन भऽ गेल छल।

१२/३/२०१७

गामक बात

बाल जीवनक तँ बाते थ्ककछु अलग होइत अछ्छ। जखन लाउडस्पीकरसँ पचाश्चत कएल जाइ जे आइ दश्चिभंगा वा मधुबनीमे कोनो बिका आदमीक अबाइ छै, तँ मोनमे भाव उठैत छल जे ओकरा अबस्स देखक चाही। पता नश्च, ओ बिका आदमी १० हाकि हएत थ्क बीस हाकि...।

अश्चना एकबेर श्चनोबा भावे मधुबनी आएल छला। वाटसन स्कूल-मधुबनीमे बच्चा सबहक बीचमे पवचन केने रहैि। हुनका देख आयिबे पश्चि गेलौ जे आश्चर ई बिका आदमी केना भेला। कद-काठीमे तँ छोटे रहैि।

तश्चना एकबेर गुलजारी लाल नन्दाके देखबाक हेतु मधुबनी सुरी स्कूलपर गेल रही। िर वएह बात...।

आश्चर एकरा लोक बिका आदमी थ्कए कहै छइ? हमरे गामक लोक जका पाच िटक आदमी तँ ईहो अछ्छ। तखन पैघ किीक भेल? ऐ पश्नक उतर ताकए-मे थ्मनगी श्चकैल गेल। पैघ के अछ्छ? पैघत्वक पयासमे तँ सौसे दुश्चया लागल अछ्छ, मुदा सबहक अकार-पकार तँ ओश्चना-क-ओश्चना रश्च जाइत अछ्छ।

गाममे चौराहा सभपर घन्टो गप करैत लोकक दृश्य सामान्य बात छल। एमहरसँ एक गोरे आएल, ओमहरसँ थ्कयो आएल आ गप शुर भऽ गेल। हमहूँ सभ अपन दोस्त सभसँ अश्चना गप करैत रश्च जाइ छेलौ। कएक बेर हम अश्चयाश्च कऽ हुनका ओइठाम दऽ अश्चएन आ कएक बेर ओ हमरा।

हाटपर, चौकपर तँ गपक गोष्ठी चश्चते रहै छल। रास्तामे थ्कयो भेट गेल तँ गप केने श्चना केना चश्च जाएत। आयिवई लगैत अछ्छ

जे आश्चर्य लोक सबहक काज धन्धा केना चलइ। मुदा सभ क्कछु तँ हेबे करइ।

असलमे लोकक जीबाक अन्दाज दोसर रहइ। सभ वस्तुमे, गप-सप्पमे, गरीबीमे, जीवन-संघषर्मे आनन्द ताक्क लैत छल। जँ से नक्ष रक्षतैक तँ बोक्ष कऽ कऽ एकसंझू खाइबला बोक्षहार सभ क्षचैन भऽ कऽ खेतमे गीत नक्ष गबैत, भोरे उक्ष कऽ लोक परातीके स्वर नक्ष दऽ सकैत आ आठ बक्षते चैनसँ सुक्ष नक्ष जाइत।

शहरक आपाधापी, पक्षस्पधात्मक जीवन-शैली गाम तक नक्ष पहुँचल छल। लोक स्वत: स्ूितवनैसक्षकतासँ ओत्-पोत् छल। धन, एशयव लोकक अवचेतन मोनपर तेते हाबी नक्ष छल जे शेष्ठताक पयतमे वतर्मानके नकवकऽ क्षअए। पक्षवतर्न जीवनक संकेत क्षिक। जे काल्क्ष बच्चा छल ओ आइ जबान भऽ गेल, तक्षना जबान पोि आ िमश: बुढ़ भऽ गेल। ई पक्षिया तेहेन क्षरन्तर ओ सतत अक्ष जे हरषटे क्षनको बुझए-मे नक्ष आक्ष सकैत अक्ष, जे की भऽ रहल छै, केना भऽ जाइ छइ। सेहो तेहेन जे जँ पाछू उनैट ताकब तँ तक्षते रक्ष जाएब।

आइसँ चालीस वा तीस साल पूववजे सभ गाममे कहबैका छला, धन-सम्पैत, पक्षष्ठासँ ओत्-पोत् छला, आइ क्षनकर नामो क्षशान नक्ष अक्ष। गाम वएह अक्ष, जगह वएह अक्ष, घरो वएह अक्ष, मुदा लोक गायब अक्ष।

केकरा लग बैसब, केकरासँ कहबै मोनक गप, केकरासँ सहानुभूक्षक अपेक्ष करब, केकरा उपलब्क्षक समाचार लऽ कऽ जाएब। तकलोपर क्षयो नक्ष भेटत। एक-एक-के सभ गुजैर गेल, आ गुजरलो जा रहल अक्ष। तािक्ष वातावरणमे दम्भ, अहंकार आ पक्षशोधाक्षक वृक्ष ओक्षना देखल जा सकैत अक्ष। िल्ला बाबू हमर पुरखाक अक्षत

केलाह, अपमाश्मात केलाह, आब हमहूँ देखा देबइ...। ऐधन चकरमे पुश्त-दर-पुश्त लोक अपश्मयात अछ्। आधुश्मकताक पचण्ड श्वहाश्मिे पूरातनक वैमनस्यताके श्चलाइये ने सकल आ लोक छोट-छोट बातपर गोलबन्द भऽ जाइत अछ्।
पतझि अश्मते गाछक गाछसँ पात सभ खश्म पिंत अछ्। गाछ सुन भऽ जाइत अछ्। ठूठ गाछके देख कऽ छगुन्ता लाश्म जाइ छइ। लोक श्चठैक जाइत अछ्। परन्तु पकृश्म आगू बढ़ैत अछ्। िमश: एक-एक डाश्ममे हजारो नव पम्ही श्मकलै छइ। हश्मयरी िरसँ ओइ गाछके आवृत कए लैत अछ्। हश्मयर कंचन नव-नव पल्लवसँ सम्पूणव नव कश्मया जका पकृश्म ओइ गाछके एशयश्मयी कए लैत अछ्।
गामोमे सएह होइत अछ्। पुरान-पुरान लोक सभ िमश: गुजैर गेल। नव-नव लोक घरे-घर पसैर गेल। पवासी लोक जखन गाम जाइ छैि तँ अपने गाममे अनश्मन्हार भऽ गेल छैि। मुदा ई समयक पभाव अछ्। जइ एकपेश्मयापर चलैत बच्चामे दोस्त सभसँ झगि भऽ जाइत छल, जैठाम बैस घन्टो गप करैत रहै छेलौ, जैठाम जाइते अपनत्वक बोध होइत छल ओ सबटा आइ लुप्त भऽ गेल। रश्च गेल अछ् मोनमे ओइ सबहक एकटा सुखद स्मृश्म। गाममे कामरेड सभ तूिन केने रहैत छला। गामेमे आन्दोलनक जश्मि आ िनगी छल। बेकतीगत ईष्या-देषके ठेकाना लगेबाक एकटा साधन छल ओ आन्दोलन। श्मकछु युवक सभ अपने टोलक सुखी पश्मवारक जमीनपर तरह-तरह केर िसाद करैत रहै छला। ओ नीक छला, खराप छला, जे छला मुदा ओइ आनदोलनक श्मकछु पश्मणाम नश्च भेल, श्मवाय ई जे सुखीत लोक तंग भेल। ओकर जमीनमे उपजावारी कम भेल, गामक वातावरण दुश्मत भेल। आ अन्तमे ठाकक तीन पात। ओ

युवक सभ अन्तत: गाम छोथ्रि रोजी-रोटीक पयासमे बाहर चख्ल गेला। गाम िरसँ शान्त भऽ गेल, पुरनका रस्तापर चलए लगल। बात-बातमे दुगोला कऽ लेब, खएन-पीन बन्द कऽ लेब आम बात छल। हम सभ जखन बच्चा रही तँ आधा गामसँ बेसी दुगोला रहइ। कख्ब नख्ब, कखन कोन बातपर मतान्तर भेल आ भऽ गेल दुगोला। बहुत थ्वनक बाज जा कऽ केना-ने-केना आपसी सहमख्त भेल। थ्ककछु युवक सबहक पयाससँ गाममे एकगोला भेल। सभ थ्कयो एक-दोसरक ओइठाम नौत-पेहानी शुर केलक। कमो-बेसी अखनो एकगोला चख्ल रहल अख्छ।

दुगोलाक तेतेक पभाव रहै जे लोक सभ एके गाममे िराक-िराक रहैत छल। हमर सबहक घरक पछुआरमे थ्कहो सबहक घर छल। मुदा बच्चामे कख्बयो आपसी आवागमन नख्ब देखए-मे आएल। ओइठाम एकटा इनार रहइ जेकर पाख्न बहुत स्वाथ्द छेलइ। पाख्न भरए लोक ओतए जाइ छल, हमहूँ कएबेर गेल रही, मुदा आन सम्पकव नख्ब छेलइ।

ऐ तरहक स्वत: घोथ्त पख्वन्ध्त केतक यािबे मनुखक अहंकार ईष्या-देष, पख्तशोध रहैत अख्छ। ऐ तरहक थ्नषेधात्मकताक कोनो सुखद पथ्रणाम केतए होइत। गाममे रख्बतो छी आ नख्बयो छी। मुदा आब तँ एकगोलाक अछैतो गामक पथ्दृश्य बदैल गेल अख्छ। आपसी सम्पकव कम थ्क जे नख्बयेक बरबैर भऽ गेल अख्छ। लोक शहरे जका चुप्पा-चुप्पी अख्छ।

एक थ्वन हम अपन घरक ओसरापर बैसल रही थ्क अवाज भेल 'तराक तराक..!'

एक वृद बेकतीपर एक पहलवान टाइपक बेकती तरातर लाठी बरसा रहल छल। हे राम! थ्कयो ओकरा रोकै नख्ब छल। की भऽ गेलै ऐ

गामके? कहैले सभ गौवे अछि। कोनो-ने-कोनो तरहे एक-दोसरसँ जुडि़ल अछि, एक-दोसरक सम्बन्धी अछि, तखन एहेन दृश्य। भऽ सकैए ओइ वृदसँ किछु गलती भऽ गेल होइक, मुदा तेकर पश्चाति एहेन हिंसात्मक तँ नहि हेबाक चाही। मुदा की हेबाक चाही आ की भऽ रहल अछि? देखैत रहू, चुप रहू नहि तँ ई लाठी छिटैक कऽ अहूँपर लागि सकैत अछि।

आठ-दस लाठी खेलाक बाद केना-ने-केना ओ भागि सकला कि लोक बँचा देलकैन से तँ आब मोन नहि अछि, मुदा ऐ घटनाके बिसरलो नहि भऽ रहल अछि।

लाठी चलौनिहार बेकती आब दुनियामे नहि छैथि, लाठी खेनिहार सेहो नहि छैथि, मुदा ओ दृश्य पता नहि केतए-केतए आ केकरा-केकरा दिमागपर अंकित अछि। कम-सँ-कम हम तँ नहिये बिसैर सकलौं। कम-सँ-कम ३५-४० वषवपूवक ई घटना थिक।

‘तुम तो ठहरे परदेशी, साथ क्या निभाओगे,

सुबह पहली गाड़ी से घर को लौट जाओगे....।’

ऐ गीतक भावसँ आत्मा झंकृत भऽ जाइत अछि। जइ गाममे हम बच्चा रही, युवक भेलौं आ पढ़लौं-लिखलौं, सएह आब पश्न चिन्ह लऽ कऽ ठाढ़ अछि। रोजी-रोटीक जोगारमे लोक गामसँ बहराएल। तैयो लोक अबै-जाइत तँ रहबे करए। मुदा क्रमश: ई रफ्तार कम भेल। आ गामक परिवेश बदलैत रहल। गामक गाम परदेशी (पवासी)क एकटा जबरदस्त हुजुम भऽ गेल। आब गाम जा कऽ ओ सभ किंकतवव्यविमूढ़ भऽ जाइत अछि। जे गाममे रहि गेला से बाबा वैदनाथि जका तेहन कऽ जमि गेल छैथि जे हुनका उखाडि़ब कोनो रावणक बसक नहि रहि गेल अछि। तमसा कऽ औंठा गाड़ि देबै तँ गाड़ि दियौ, ओ धँसि जेता मुदा उखडि़ता नहि।

अपनाके अहा केतए ठाढ़ करब? अहा लग के रहत? अहासँ केकरा की लाभ हेतइ? अहा तँ चलि जाएब। फेर तँ हमरा ऐठामक लोकसँ झगड़ा छल, अही अनुवादनुदसँ अशान्तिभूत गामसँ अपनो लोक बहुतयासँ कात भऽ जाइत अछि। ऐ पसंगमे किछु दिन पूर्व एकटा खिस्सा पढ़ए-मे आएल जे बहुत पासंगिक लगैत अछि। एकटा हंसक जोड़ि राति भेलापर एकटा गाछपर टीक गेल।

ओइ गाछक खोदमे एकटा उल्लू रहैत छल। रहि-रहि कऽ ओ अवाज देबए लगइ। हंसक जोड़ि राति भरि ओइ ककर्श अवाजके सुनैत-सुनैत तंग भऽ गेल। ओकरा बुझेबे नहि करै जे ई उल्लू एतेक अवाज किएक कऽ रहल अछि।

भोर भेने हंसक जोड़ि गाछपर सँ बिदा होइत छल कि उल्लू आगू आबि कऽ रस्ता छेकि लेलकै आ कहलकै-

"खबरदार जँ आगा बढ़लह! ई हंसिनी हमर अछि। ई हमरे संगे रहत।"

हंसके ठकबिदोर लागि गेल। जोरसँ चिचिआया उठल। उल्लूके चेतौलक। मुदा उल्लू टस-सँ-मस नहि भेल। कहलकै जे पंचैती करा लएह। हंस ऐ बातसँ सहमत भऽ गेल। पंचायतमे सभ पंच सर्व सम्मतिसँ फैसला कऽ देलक जे हंसिनी, उल्लूक पती अछि आ ओकरे संगे रहत। हंस अवाक् भऽ गेल।

अन्तमे ओकरा उल्लू बुझौलकै-

"देखलहक केहेन गाम छइ? ऐठामक सरपंच वएह कहतै जे हम चाहबै। कारण हम ऐठाम रहै छी। तूँ परदेशी छह। कनीकालमे उड़ि जेबह। तँए तोहर के संग देतह। जायज-नजायजक चकरमे के पड़ित? अही दुआरे हम तोरा राति भरि चिकैर-चिकैर कऽ कहैत छेलियह जे ऐ गामसँ दूर चलि जाह। ऐठाम तोहर किछुयो नहि हएत।

मुदा तूँ नञि बुझलह। आबो भाग जाह।"

ई कहि उल्लू हंसिनीके मुक्त कऽ देलक आ हंस हंसिनीके लऽ ओतए-सँ तेना भागल जे फिर उलैट कऽ नञि तकलक।

फरियादीमे कोनो मतान्तर भेल कि फरियादनीके डाइन घोषित कऽ देल जाइत अछि। तेकर बाद तँ एकर तेहेन चक्रव्यूह बनैत अछि जे ओइ तथाकथित डाइनक जीवन नकवभऽ जाइत अछि। अपनो लोक सभ ओकरासँ कनी काटए लगैत अछि। ओकरा हाथे चाहो-पानि पीबैमे संकोच होमए लगैत अछि। जेतइ बैसू ऐ बातक कानाफुसी हएत। तरह-तरह केर अबलट सभ सुनैमे औत। अरे, फल्ली तँ गाछ हँकैत अछि! राति-के नँगटे नचै छइ। ओकरा तँ बहुते पचास पोस छै, इत्यादि। तरह-तरह केर अफवाह निरन्तर चलैत शृँखलाक ने आदि होइत अछि आ अन्त।

ऐ तरहक अफवाह ओ दोषारोपणक कोनो अन्त नञि अछि। केकरो पेटमे ददवभेलै तँ डाइन कऽ देलकै, केकरो बच्चा बेमार भेलै तँ डाइन अथानवान कि देलकै। माने जेतेक जे कष्ट भेलै से वएह कऽ देलकै।

ऐ वैज्ञानिक युगमे लोक केतए-सँ-केतए चल गेल मुदा अपन गामीण समाज अखनो सैकड़ो साल पवक मानसिकतासँ मुक्त नञि भऽ सकल।

गाममे केकरो घरमे चोरी भऽ गेल रहइ। चोरके पकड़बाक हेतु बटा चलौल गेल। मूसक बिलसँ निकालल गेल माटिके मंता कऽ बटापर फिकल जाइक,आ ओझा-गुनी ओइ बटाके कटकटा कऽ धेने रहइ। मंतोक पभावसँ बटा शुरुदे चलए लगइ, चोरक दिशामे। लोक सभ, खास कऽ बच्चा सभ पाछा-पाछा भागैत। बटाक दिशा देख अनुमान लगौल जाइत जे चोर केमहर गेल।

गाममे सबहक मानि अपना-अपना तरीकाक होइत अछि। जेकरे कहबै जे ई सभ ढिठाइ थिक, अहीक उपहास करए लागत। बटा चला कऽ चोर पकडि आ झाड़ि-फूकि कऽ सापक बीख उतारब आम बात छल। एकबेर हमहूँ अपन अनुजक संग दस बजे रातिमे सापक बीख झाड़ैबला के चर्चवाह कहल जाइए बजबए कलमे-कलम तकने फिरी। बाबूके साप काटि लेने रहैन। बहुत पयासक बाद ओ भेटला, उलटनक वेग..., पलटनक वेग..., थकदैन-थकदैन कऽ कऽ सापक मंत पढ़ि-पढ़ि बाबूक टागपर चाटी-पर-चाटी पटकि ओ बँन्हि गेलाह। असलमे ओ साप ढोढ़ रहइ, तानि्त् विषहीन साप।

हाइस्कूलक कोठरीमे तीन गोटेके पुलिस पकैड़ कऽ बन्द कऽ देने रहइ। गाम-गामसँ लोक करमान लागि गेल छल। जेना-तेना केबाड़सँ लटैक कऽ, खिड़की बाटे, देबालक फटाक भूरसँ ओकरा सभके लोक एक बेर देखए चाहैत छल। असलमे बात ई भेल छल जे तीनू मिलि कऽ एकटा युवतीक बालात्कारक बाद हत्या कऽ देने छल। ओ युवती आसेपासक छल। घास काटैले घरसँ खुरपी ओ छिट्टा लऽ निकलल छल। रातियो भेलापर घर आपस नहि गेल, तँ खोज-पुछारि शुरु भेल। पात:काल महीस चरबैबलाके ओकर लाश कलममे भेटलै। गदव पड़ि गेल। पुलिस-फिना भेल आ शीघे तीनू अपराधी पकड़ि गेल। ओइमे दूटा तँ ओइ मजदूलाक टोलेक छल आ तेसर अधवयसू कण्ठीधारी पड़िसी टोलक छल जे घटनाक समय ओतए आबि गेल छल आ दुभाग्यवश ओइ अपराधमे सहयोगी भऽ गेल छल।

तीनूके आजन्म कारावास भेल। साले-साल ई दृश्य हमरा मोनमे उभरैत रहल, कचोटैत रहल जे केना एकटा मेहनतकश मजदूलाक अकाल मृत्यु भऽ गेल। ओइ मजदूलाक पिता मजदूर छल। हमरा गाममे बरोबरि मजदूरी करए अबैत छल। अपन कन्याक हत्या दुखसँ

सालो ओ शोक-संतप्त रहल।

गामीण पश्चवेशमे ओइ तरहक घटना कमे सुनबामे अबैत छल। मुदा मनुखक पवृश्चाक कोन ठेकान? कखन ओकरापर पैशाश्चाक पशुवृश्चा हाबी भऽ जाएत..?

आजन्म कारावास काश्च कऽ ओ सभ िर घुश्च आएल। िरसँ अपन रोजी-रोटीमे लाश्च गेल मुदा ओइ बापके बेटी आपस नश्च आएल। ओ दुश्चाया पस्िान कऽ गेल। ई घटना आइसँ पचास साल पूवक अश्छ, मुदा लगैत अश्छ जे ओकर माए-बाप अखनो ओइ स्कूलपर ओश्चना छाती पीट रहल हो, ओकर करणामय चीत्कार जेना परोपटामे ओश्चना पसैर गेल हो। आम आदमीक लेल वंशक ओ एक घटना मात रहल होइक, मुदा ओइ मेहनतकश गरीब माए-बापक दृश्य सदा-सवदा करण िदन करैत रश्च गेल मुदा ओकर बेटी घुश्च नश्च आएल। हम सभ मैश्चकक परीक्षा देबए गेल रही तँ एके संगे कएगोटा डेरा लेने रही। ओइमे एक गोटे रश्चका उच्च श्चदालयक छात हमरे सबहक संगे रहैि। कारी, सुगश्चत शरीर, मझौल कद-काठी। जहन नौकरी करैत इलाहावादमे रही तँ छुटीमे गाम आएल रही। बहुत श्चन बाद िर हुनकासँ भेट भेल रहए। आसेपासक गाममे ओ पाइमरी स्कूलमे श्चाक्षक रहैि। कोनो बात लऽ कऽ गौआँ सभसँ मतभेद भऽ गेलैन। गौआँ सभ हुनका स्कूलेमे घेर लेलकैन। अपन जान बँचबए हेतु ओ कोठरीके अन्दरसँ बन्द कए लेलाह। मुदा भीि बश्चते गेल। हुनका ओ सभ माश्च देत, ऐ डरसँ ओ एकटा बच्चाक गरदैनपर छुरी धऽ कऽ लोकके डराबए लगलश्चन। लोक सभ पुश्चसके बजौलक। पुश्चस आश्च कऽ हुनका कोठरी खोलबाक लेल कहलकै आ आशासन देलकै जे हुनका श्चकछु अश्चत नश्च हएत।

पुश्चसक आशासनक बाद ओ कोठरी खोश्च देलश्चन। कोठरी खुश्चते

यए-ले, वए-ले सैकि ो लोक पुश्चासक सामने हुनका पीटए लागल आ तेतेक पीटलक जे ओ ओहीठाम बेहोश भऽ कऽ खश्चा पिलाह आ अस्पताल जाइत-जाइत हुनकर देहावसान भऽ गेल। सम्भवत: गामीण सभसँ हुनकर श्चवाद पढ़ाइ-श्चखाइ श्चकंवा श्चाया-पुताके डाट-डपट लऽ कऽ भेल रहए, मुदा ओ श्चवाद बहुत आगू बश्च़ गेल आ असमयमे हुनकर जान चश्चा गेल।

तीस सालसँ बेसी भऽ गेल मुदा अखनो धश्च हमरा मोनमे ऐ घटनाक पश्चदृश्य उभरैत रहैत अश्छ। भीि केहेन अन्यायपूणव भऽ सकैत अश्छ तेकर ई ज्वलन्त दृष्टान्त अश्छ।

कहुना कऽ जीवन-यापन करबाक पयासमे तत्पर एकटा युवकक एहेन दुखद अन्त मनुष्यतापर पश्नश्चन्ह अश्छ। श्चासश्चत रपसँ ओ अपराधी पवृतक लोक नश्च छल। अनुशासनमे श्चदाि सभके राखए चाहैत छल। गलत सही श्चकछु श्चवाद भऽ गेलइ। ओकरासँ घबराहटमे गलती भेलै जे बच्चाक गारापर धुरी रश्चख कऽ आत्मरक्ष करबाक व्योत तकलक मुदा बच्चाके कोनो कश्चा नश्च केलकै। मुदा भीि तँ आशानीसँ उभैर जाइत अश्छ आ एहेन घश्चटत भऽ जाइत अश्छ जेकर कल्पनो असंभव।

गामक हाइस्कूलपर मोछ िरकबैत नेताजीक भाषण भेल। अिरक छातीपर श्चबजलीक खाम्ह गािल अश्छ, मुदा श्चबजली नश्च अश्छ। ई महान अन्यायसँ गामके मुक्श्चा श्चयाबक अश्छ तँ हुनका मतदान कर , एम.एल.ए. बनाउ। गाममे श्चबजली आबए-मे सालो लाश्चग गेल आ जखन आश्चबयो गेल तँ नश्चहये जका, कारण तेतेक कमकाल रहैत छल जे मोबाइलो चाजव करबामे बाट ताकए पित छल। आब श्चकछु श्चदनसँ श्चबजलीक उपलब्धता बढ़ल अश्छ मुदा गाममे आपसी सम्पकव ओही अनुपातमे घश्चट गेल अश्छ। शहरे जका आब गामोमे लोक िराक-

िराक रहैत अछि। सभ अपन-अपन घरमे दूरदर्शन सेटसँ सटल रहै छैि। प्रयाहो-दानमे आएब-जाएब सीमित भऽ गेल अछि।
किछु दिन पूर्व गाममे रही तँ बरियाती आएल रहइ। हमरा जेबाक इच्छा भेल मुदा हमर अनुज कहला जे हकार नहि अएलैक अछि। एवम् पकारेण सम्पर्कके सीमित कए शान्ति स्ािपनाक पयास गामक मौलिकतापर आधुनिकताक जबरदस्त आधात अछि। जीवन-यापन िराकमे गाम-घर छोड़ि सालक-साल परदेश रहए पिल। पहिने गाम जेबाक िम बेसी रहैत छल जे िमश: कम होइत चल गेल। गाम जाइतकाल केतेक मनोरि रहैत छल। अपन गाम जा रहल छेलौं। महिनोसँ ओकर तैयारी होइत छल। मुदा गाम जाइते होइत जे कखन आपस चली। गामक लेखे ओझा बताह आ ओझा लेखे गाम बताह। गाम जाइते तरह-तरह केर अपेक्षा, उपेक्षाक संग सामंजस्यक अन्तर्विरोध बढ़ैत गेल। अपनत्वपर अपेक्षाक भार भारी होइत गेल। सभ किछु होइते पू. मायके हँसैत, आनन्दित ओ भावनापूर्ण दर्शनक संग याताक संतुष्टिवोध होइत छल मुदा आब तँ ओहो नहि रहली! ने हमर दोस्ट सभ रहला।
एकटा घटना िंशत सालो पूर्व गुजैर गेला। किछु गोटा हमरे जका पवासी भऽ गेला। किछु गोटे जे बाचल छैि, सेहो गुम्म पड़ि गेल छैि..!
'ओ दूर के मुसाफिर हमको भी साि लेले
हम रह गये अकेले...।' िमश: असगर होइत जीवन यातामे गामके बिसैर जाएब आसान नहि अछि, मुदा समयक तेतेक पैघ अनतराल बीचमे गुजैर गेल जे अपने गाम 'अनचिन्हार' भऽ गेल। युवक सबहक पिरचय हेतु ओकर बाबाक नाओं पूछए पिैत अछि। पिरवेशक जटिलताक संगहि अपनत्वक पिरभाषा बदैल गेल अछि। सही बात

बजआहार नहि रहि गेल अछि। ऐ सबहक अछैत हम गाम अबैत-जाइत रहै छी। गामक कालीपूजाक चन्दा पठबैत रहै छी। मुदा आन-आन लोक जेकरा अपेक्षा कम वा नहियो रहैत छइ, ओ भेट भेलापर कएक बेर अद्भुत आनन्द कए दैत अछि। एहने उदाहरण एकबेर गाम अबैते भेल। गाममे प्रवेश केनहि रही की एकटा गामक हलुआइ भेटल। ओ ठाइ बना कऽ जाइत रहए। तखने ओ ठाइ आकाश कऽ आग्रह करए लागल, हाल-चाल पूछए लागल। ओकर सद्भावना अखनो मोन पड़ैत रहैत अछि।

१८.३.२०१७

<u>हिन्दू महिलाके सम्पैतमे अधिकार</u>

भारतीय समाज मूलत: पुरुष पधान रहल अछि। हजारो-हजार बरखसँ पुरुषके चल एवम् अचल सम्पैतपर वर्चस्व छल। समयक संगे ऐ स्थितिमे परिवर्तन भऽ रहल अछि, महिला सम्पन्न भऽ रहल छैि। वैदिक समयमे पुरुष एवम् महिलाके सम्पैतपर बराबर अधिकारक चर्चा अछि। मुदा मनुस्मृतिमे कहल अछि जे पती, चाकर ओ अवयस्क युवाके सम्पैत नहि देबाक चाही। सम्पैतपर अधिकारक मामलामे पती, बेटी वा विधवा किनको पूर्ण अधिकार सम्पन नहि छल। जँ स्तीगणके सम्पैतपर अधिकार सीमित छल आ जेतए कनी-मनी छेलैहो, सेहो ओकर जीवन-यापन हेतु जीवनकाल तक रहैत छल, तेकर बाद ओ मूल शोतके आपस भऽ जाइत छल।

ऐ सबहक मूल उदेश्य समाजमे स्तीगणपर स्वामित्व राखब छल। सम्पैतमे अधिकार भेलापर स्तीगणके स्वतंत अस्तित्व बोध हएत जे तत्कालीन समाजके स्वीकार नहि छल।

हिन्दू संयुक्त परिवारमे एक पूर्वजसँ जन्मल लोक सभ होइत छैि। ऐमे सबहक पती, अविवाहित बेटी शामिल होइ छैि। मुदा हिन्दू संदायदाता (Coparcenaty) ओइसँ बहुत सीमित होइत अछि। ओइमे बेटा, पौत, ओ पपौत शामिल होइत अछि। २००५ इस्वीक संशोधनक बाद बेटी सेहो ऐमे शामिल अछि। स्ती, माय वा विधवा अखनो ऐमे शामिल नहि अछि। बेकती विशेषक हिस्सा कोनो सदस्यक मृत्युसँ बेसी किंवा नव सन्तानक जन्मसँ कम भऽ सकैत अछि।

संयुक्त परिवारक सम्पैतक विभाजनक बादे कोनो हिस्सेदार अपन हिस्सक सम्पूर्ण मालिक होइत अछि। संयुक्त परिवारक सम्पैत

श्चन्दू कानूनक उपज थिक एवम् एकर अश्चकारीके संदायदाता कहल जाइत अश्छ।

सम्पैतक उतराश्चकार कानूनमे बारम्बार पयुक्त कानूनी शब्दक सही समझ भेलासँ ऐ कानूनके बुझबामे सुश्वधा हएत। अस्तु संकेपमे श्वकछु शब्दक व्याख्या कऽ रहल छी।

१. उताराश्चकारी (Hier) श्चवश्चीयत सम्पैतमे हकदार पुरुष वा स्तीके उतराश्चकारी कहल जाइत अश्छ।

२. श्चवश्चीयत (Intestafe) स्वअश्चत सम्पैत श्वकंवा अन्य कोनो पकारसँ पाप्त सम्पैत जैपर ओइ बेकतीक पूणवअश्चकार हो, के ओइ बेकतीक मृत्युक बाद हस्तातरणक दस्ताबेजी बेवस्था जेना दान (Gift), इच्छा पत (Will) नश्च केने हो।

३. संदायदाता सम्पैत (Coparcenary Property) पूवजसँ पाप्त पैतृक सम्पैत जैपर अश्वभाश्चत श्चन्दू पश्चवारक संदायदाताक श्वहस्सा हो।

४. दस्ताबेजी हस्तातरण (Testamentary Disposition) ऐमे हस्तातरणकताके ओकर जीवन भश्च सम्पैतपर अश्चकार बनल रहैत अश्छ एवम् ओकर मृत्युक बाद ओइ दस्ताबेजी बेवस्थाक अनुसार सम्पैतक हस्तातरण होइत अश्छ, जेना दानमे देल गेल सम्पैत।

सन् १९३७ सँ पूववस्तीगणक सम्पैतमे अश्चकारक सम्बन्धमे कोनो स्पष्ट बेवस्था नश्च छल। ऐ तरहक श्ववाद भेलापर स्थानीय परम्पराक अनुसार मामला तँइ होइत छल। सन् १९३७ मे पश्चल बेर श्चन्दू मश्चलाक सम्पैतमे अश्चकार कानूनन लागू भेल। ऐ कानून दारा श्ववधवाके ओकर पश्चक सम्पैतमे सीश्चत अश्चकार देल गेल। सन् १९३८ क संशोधन दारा ओइ सीश्चत अश्चकारके आओर कीण

करैत कृष्ण भूमिसँ स्वधवाक अधिकार समाप्त कए देल गेल। ऐ कानूनक अनुसार स्वधवा संयुक्त पविवारक सम्पैतमे अपन पतिक हिस्साक मालिक तँ भऽ जाएत मुदा ओकर मृत्युक बाद ई सम्पैत ओकर उतराधिकारीके नहि हेतैक, अपितु अन्तिम पुरुष मालिकवा स्तीधनक मामलामे अन्तिम महिला मालिकक उताधिकारीके हस्तान्तरित भऽ जाएत।

सन् १९३७क कानून दारा सीमित अधिकारक धारणामे हिन्दू उतराधिकार कानून १९५६ दारा समाप्त कए देल गेल। सम्पैतमे हिन्दू महिलाक अधिकारक क्षेत्रमे ई एकटा पगतिशील गामी पयास छल। ऐ कानूनके लागू भेलापर हिन्दू महिलाके ओकर सम्पैतमे पूर्ण स्वामित्व पाप्त भेल। उपरोक्त कानूनके धारा १४ दारा महिलाक सम्पैतमे पूर्णअधिकारक अयोग्यता समाप्त कए देल गेल एवम् ओकर सीमित अधिकारके पूर्णत: मालिकाना हकमे बदैल गेल गेल। कानूनमे उपरोक्त पविवर्तन भूतपभावी भेल। एवम् पकारेण हिन्दू महिलाक सम्पैतमे अधिकारसँ सम्बन्धित विदमान समस्त, नियम, कानून ओ परंपराके समाप्त कए ई सुनिश्चित कएल गेल जे कोनो पकारक परंपरा, वा बेवहारिक अवधारणाक कारण सम्पैतमे हुनकर अधिकारपर गहण नहि लगौल जा सकत।

हिन्दू उतराधिकार कानून १५५६ मूलत: हिन्दूक निवसीयत सम्पैतमे उतराधिकार तय करबाक हेतु भारतीय संसद दारा पारित भेलाक बाद १७ जून १९५६ क राष्ट्रपतिक स्वीकृतिक बाद लागू भेल। निवसीयत सम्पैतक माने ओइ सम्पैतसँ अछि जेकर मालिक सम्पैतमे पूर्ण अधिकारक अछैत कोनो दस्ताबेजी हस्तान्तरण बिना केने स्वगवासी भऽ जाइत छैि। एहेन सम्पैत उपरोक्त कानूनक सूचीमे वगवएिमे देल गेल उतराधिकारी (माने बेटा, बेटी, स्वधवा पती, माय

एवम् ऐ वगवे उल्लिखित अन्य बेकती) मे बरोबरि-बरोबरि कऽ बाटल जाएत। वगक एकक उतराधिकारीक अभावमे वगवदू, तेकरो अभावमे िमश: मृतकक पुरष रक्त सम्बन्धी अन्यिा महिला रक्त सम्बन्धी (Cognate) के ओ सम्पैतक अधिकार भऽ जाइत अछि।

ऐ तरहे हिन्दू महिलाके पाप्त सम्पैतपर (उपरोक्त कानूनक धारा १४क अनुसार) पूणवअधिकार भऽ जाइत अछि। एवम् पकारेण पाप्त सम्पैत महिला दारा अवसायत रहि गेलापर उपरोक्त कानूनक धारा १५ एवम् १६ दारा हस्तान्तरित होइत अछि। जइमे ओकर बेटा एवम् बेटी एवम् पतिके बरोबरि-बरोबरि हक भेटैत अछि।

उपरोक्त कानूनक धारा १४ हिन्दू महिलाक सम्पैतमे सीमित अधिकारके पूणव अधिकारमे परिवर्तित करैत अछि। पतिसँ पाप्त सम्पैतके बेचि सकैत अछि आ िताके ओइ सम्पैतमे पूणवस्वामित्व पाप्त भऽ जाइत अछि। पहिने ओ सम्पैतके मात परिवारिक आवश्यकता एवम् पतिक धार्मिक अनुष्ठानक हेतु बेचि सकैत छल। धारा १४ मे सम्पैतक विस्तारसँ व्याख्या भेल अछि। ऐमे उतराधिकार, परिवारिक विभाजन उपहार किंवा कोनो पकारसँ पाप्त चल एवम् अचल सम्पैत शामिल अछि। बिना वसीयतक मृत्यु भेलापर ऐ कानून दारा बेटाक माय, अविवाहित विधवा, बेटीके संयुक्त परिवारक सम्पैतमे अधिकार पाप्त भेल।

यदिप १९५६क कानून दारा हिन्दू महिलाक सम्पैतक अधिकारमे वृति रपसँ बढ़ोतरी भेल आ ऐ तरहे कहल जाए तँ ई एकटा िान्तिकारी पयास छल,मुदा बेटीक मामलामे ई कानून बहुत हितकारी नहि छल। किछु राज्य ऐ विषयमे अलग कानून बना कऽ बेटीक अधिकार देलक मुदा ई सवव्यापी तँ नहिये छल।

हिन्दू उतराधिकार कानून १९५६क पतमे संशोधन कएल गेल।

उपरोक्त संशोधन श्वल संसदमे २० श्वसम्बर २००४ क मानल गेल छल, तँए ऐ श्वाश्वसँ पूववभेल बँटवारापर ऐ संशोधनक पभाव नश्व पति।

श्वन्दू उतराश्वकार (संशोधन) कानून २००५क अनुसार बेटीके श्वताक सम्पैतमे बेटा जका बरोबश्वक श्वस्सा हएत, माइक सम्पैतमे सेहो श्वस्सा हएत। उपरोक्त संशोधनसँ श्वम्नश्वश्वत बेवसि भेल-

१. बेटा जका बेटी संयुक्त पश्ववारक सम्पैतक श्वस्सेदारी हएत।

२. ओकर अश्वकार ओश्वना हएत जेना बेटा भेने रहैत।

३. बेटे जका बेश्वयोके ओइ सम्पैतसँ जुलि श्वम्मेदारी हएत।

४. बेटोक बरोबश्व बेटीक श्वस्सा तय हएत।

श्वन्दू उतराश्वकार कानूनमे २००५क संशोधनक बाद पैतृक। संयुक्त पश्ववारक सम्पैतक बँटवारा एवम् ओइमे बेटी सबहक श्वस्सेदारी लऽ कऽ यत-तत जबरदस्त श्ववाद पारम्भ भेल। कारण कानूनसँ अश्वकार भेटलाक बाबजूद एकर समाश्वक स्वीकृश्वमे पश्नश्वन्ह लागल रहल। नैहरसँ सम्बन्ध खराप नश्व हो, तँए केतेको बेटी अपन अश्वकारक बश्वदान कए देलैन, मुदा एहनो बहुत रास माश्वला उठल, जे बेटी सभ अपन अश्वकारक बहाली हेतु न्यायालयक शरणमे चश्व गेली।

न्यायालयमे माश्वला जेबाक कएटा कारण छल। श्वकयो कहलक जे सन २००५क कानूनी संशोधनक लाभ ९ श्वतम्बर २००५ क बाद जन्मल कन्याके भेटतै। केकरो अनुसार ई कानून १९५६ सँ लागू हएत। आश्व आश्व।

देशक श्वश्वान उच्च न्यायालय उपरोक्त श्ववादस्पद श्वषय सभपर

अलग-अलग िसला देलक। अन्ततोगत्वा ई मामला भारतक उच्चतम न्यायालयमे पहुँच गेल।

उच्चतम न्यायालयक न्यायमूर्त्ति ए.आर.दवे एवम् न्यायमूर्त्ति ए.के. गोयलक संयुक्त पीठ १६ अक्टूबर २०१५क अपन िसलामे उतराधिकार कानून उपरोक्त विवादक पटाक्षेप करैत कर्णाटक उच्च न्यायालयक िसलाके पलैट देलक। कणाटक उच्च न्यायालय िसला देने छल जँ पिताक देहान्त ९ सितम्बर २००५ सँ पहिने भऽ गेल तखनो बेटीके ओकर सम्पैतमे बेटाक बरोबरिक हिस्सा भेटत।

मुदा उच्चतम न्यायालय एकरा पूर्णत: अस्वीकार कए देलक। पकाश एवम् अन्य बनाम िलवती एवम् अन्यक मामलामे उच्चतम न्यायालय बेवस्ि देलक जे उतराधिकार कानूनमे २००५क संशोधन भूतपभावी नहि अछि। ओ कानूनमे उपरोक्त संशोधन लागू हएत वशते ओइ दिन पिता ओ पुती दुनू जीबैत रहल हो।

१६ अक्टूबर २०१५ के उच्चतम न्यायालय दारा पकाश एवम् अन्य बनाम िलवती एवम् अन्यक मामलाके मूल निर्णय बिन्दु छल जे २००५ क सम्पैतमे अधिकारक कानूनक संशोधन भूतपभावी अछि की नहि? वंशके विधान उच्च न्यायालय ऐ विषय परस्पर विरोधी एवम् भिन-भिन्न मत व्यक्त केने छल। ऐ मामलामे िलवती उतराधिकारमे ओकर पिता दारा पाप्त संम्पैतमे १/७ म हिस्साक माग केने छल। १८ िरवरी १९८८क अन्दर पिताक देहान्त भऽ गेल।

न्यायालयमे विचाराधीन मामलामे संशोधन करैत िलवती संशोधित कानूनक अनुसार पिताक सम्पैतमे हिस्साक माग केलक। कणाटक उच्च न्यायालय निर्णय देलक जे चुकी मामला न्यायालयमे विचाराधीन

छल, अस्तु ऐ कानूनके आगूसँ लागू हेबाक बाबजूद, एकर लाभ िूलवतीके भेटत। उच्च न्यायालयक ऐ िसलाक चुनौती उच्चम न्यायालयमे कएल गेल-

१. ऐमे िुलवतीके श्चसा मात श्यताक स्वअश्चात्रा सम्पैतमे हएत।

२. िुलवतीक श्यताक देहान्त २००५ क संशोश्चात कानून लागू हेबासँ पूवव १८ िरवरी १९८८ क भऽ गेल, तँए िुलवतीके ऐ कानूनके लागू हेबाक समय पैतृक सम्पैत वाश्चस नश्च मानल जा सकैत अश्छ।

३. संशोश्चात कानून ऐ मामलामे लागू नश्च हएत। संशोश्चात कानून लागू हेबासँ पूवव श्चन्दू उतराश्चाकार कानूनक धारा ६ केर मुताश्चक बेटीके एहेन संम्पैतमे अश्चाकार नश्च हएत।

उच्चतम् न्यायालय अपन िसलामे स्पष्ट केलक जे कानूनके पिम दृष्टया पढ़लासँ स्पष्ट होइत अश्छ जे ई संशोधन कानून लागू हेबाक श्चाश्चसँ लागू हएत,कारण ऐमे केतौ एहेन संकेत नश्च अश्छ जइसँ एकरा भूतपभावी कएल जाए। अतएव संदायदाता सम्पैतमे बेटीक श्चसा तखने भेटत जखन श्चक कानून लागू हेबाक श्चन यानी ९ श्चातम्बर २००५ क श्यता ओ पुती दुनू जीश्चत हो।

अन्य पमुख न्याश्चाक िसलामे उच्चतम न्यायायल दारा सन् २०१२ मे तय गंदूरी कोटेश्वरम्मा वनाम चकी यनाश्चमे कहल गेल जे-

नव धारा ६ संयुक्त पश्चवारक सम्पैतमे ९ श्चातम्बर २००५ वा ओकर बाद पुरष वा मश्चलाक अश्चाकारमे समानता अनलक अश्छ। ऐ कानून दारा बेटीके पक्मे ठोस केलक एकर बाद बेटी स्वयंमे बेटा जका पैतृक सम्पैतमे श्चसेदार बनल।

एवम् पकारेण ९ श्चातम्बर २००५ सँ बेटी पैश्चाक सम्पैतमे बेटा जका

उतराधिकारी भेल एवम् ओकरा बराबर हक सेहो बेटल।

उपरोक्त मामला नीचला आदालतमे विचारनीय रहिते २००५क संशोधन भेल। नीचला अदालत संशोधित कानूनके लागू करैत बेटीक बेटाक बरबैर हिस्सा तय केलक जेकरा उच्च न्यायालय पलैट देलक। अन्ततोगत्वा मामला उच्चतम न्यायालय पहुँचल, जेतए बेटीक जीत भेल एवं बेटीके बेटाक बरोवरि हिस्सा भेटल।

सन् २००५क हिन्दू उतराधिकार कानूनमे संशोधनक बाद परिवारक बेटीके पैतृक सम्पैतमे हिस्सेदारी तँ भेट गेल मुदा ओइ संशोधनक आधारपर पाप्त अधिकारके केतेको पकारसँ पास कए पुत लोकनि दारा चुनौती देल गेल।

एकटा एहने मामलामे सुजाता शमा वनाम मनु गुप्ता एवम् अन्य,मे दिल्ली उच्च न्यायालय दिल्ली दारा बेवस्ा देल गेल जे संयुक्त परिवारमे जँ बेटी सभसँ पैघ जीवित हिस्सेदार अछि तँ ओ कता भऽ सकैत अछि। माननीय न्यायालयक कहब जे उपरोक्त संशोधित कानून बेटीके ओ सभ कानूनी हक दऽ दैत अछि जे बेटाके पहिनेसँ पाप्त अछि। मा. उच्च्तम न्यायालय त्रिभुवन दस हरि भाई तामबोली वनाम गुजरात राजस्व अधिकरण एवम् अन्यक मामलामे निर्णय दऽ चूकल अछि जे संयुक्त परिवारक वरिष्ठतम सदस्य कता हएत। अस्तु बेटके कता हेबाक िममे कोनो भागठ नहि अछि।

२००५ इस्वीक उतराधिकार कानूनमे संशोधनक उपरान्त यदयपि बेटीके पैत्रिक सम्पैतमे कानूनी अधिकार पाप्त भऽ गेल अछि, मुदा समाजिक स्तरपर ओकर पुरजोर विरोध देखबामे अबैत अछि। हालत ओहिना अछि जेना दहेज विरोधी कानूनक अछि। कानूनक अछैत दहेज कोनो-ने-कोनो रपे समस्त भारतमे चलिये रहल अछि। कानून ईहो अछि जे व्यस्क युवक, युवती स्वेच्छासँ विवाह कऽ सकै छैि,

मुदा केतेको ठाम एकर विरोध ऐ हद तक होइत अछि जे युगल जोड़ीक हत्या तक भऽ जाइत अछि।

कहबाक माने जे कानूनमे बदलाव संगे समाजिक सोचमे परिवर्तन जरूरी अछि। जन जागरण जरूरी ऐ मानेमे महिला तखने अधिकार सम्पन भऽ सकै छैथि।

जमीनक किछु समाजमे खास कऽ दिल्लीक किंवा आन-आन पैघ शहरक आसपासक क्षेत्रमे बहुत पमुखता अछि। जमीन परिवारक पतिष्ठासँ जुड़ल अछि। जमीनपर पुरुषक वचस्व् कम होइ, भाग्यक संगे ओहिनो एकर हिस्सेदार हो, ई बात लोकके पचि नइ रहल अछि।

जहिना पेमी लोकनिक विरुद्ध खास पंचायत काज करैत अछि वएह हाल पैतृक सम्पैतमे अपन हिस्साक माग केलापर बेटी सबहक भऽ रहल अछि। हुनकर गप छोड़ू, माय, बाप सेहो ओकर संग नहि दइ छैथि। एहन केतेको दृष्टान्त आएल अछि जे जमीनमे अपन हिस्साक माग करिते बेटीक गाममे पवेशो कठिन भऽ जाइत अछि, भाय सभ गप छोड़ि दइ छै आ माय-बापक मुँह लटैक जाइत अछि, जे ओकर बेटी जमीनमे अपन हक मांगि कऽ ओकर सबहक नाक कटा रहल अछि।

बेटी अपन हक नहि मांगि सकय तइले केतेको पिता अपन जीबैत अपन सम्पैत पोता किंवा पुतके हस्तान्तरित कऽ दइ छैथि। तेतबे नहि, भाय सभ दवाब बना कऽ बेटीसँ बहिनसँ ओइ सम्पैतसँ अपन अधिकार छोड़बाक हेतु राजीनामा लिखा लइ छैथि। साराश जे कानूनसँ पाप्त अधिकारके समान देबए-मे पुरजोर विरोध कऽ रहल अछि। हुनका लोकनिक धारणा अछि जे बेटीक देल गेल दहेज उत्तराधिकारमे पाप्त होमए-बला सम्पैतक एवजमे पयाप्त क्षतिपूर्ति

अछि। एक सवेक अनुसार मात १३% बेटी अपन पैत्रिक सम्पैतमे अधिकार लऽ पबै छैि।

सम्पूणवदेशमे लागू २००५ क कानूनसँ पूववपाच राज्य (ऑन्ध पदेश, कणाटक, महाराष्र, तामिलनाडू आ केरल)मे बेटीके पैत्रिक सम्पैतमे पहिनेसँ अधिकार पाप्त अछि।

परिणामत: बिहार एवम् मध्य पदेशक तुलनामे आन्ध पदेशमे चारिगुणा अधिक महिलाके उतराधिकारमे जमीन सम्पैत पाप्त भेल। आन-आन राज्य सबहक तँ ई हाल अछि जे ६९% महिलाके एहेन कोनो महिलाक जानकारी नहि छै जे ऐ कानूनसँ लाभान्वित होइत पैतृक सम्पैतमे हकदार भेल हो। जेकरा केकरो ऐ कानूनक जानकारी छैहो, सेहो जमीन-जायदादमे अपन हक नहि मंगै छैि।

भारत वषवमे दुगाकर पमे स्ती शक्तिके सम्मानित कएल गेल अछि। जगत जननीक र पमे हुनकर आराधना कएल जाइत अछि। सत्य ई अछि जे पायेक बेटी काल्हि जा कऽ माय बनैत अछि ओहि र पमे ओ ओहि परिवारक सृजन करैत अछि, पालन करैत अछि, पल पलिपल रक्षा करैत अछि।

हमर संस्कृति इतिहासक कोन कोनामे जा कऽ पुर ष वचवस्वक पधानताक स्वीकार करैत स्तीणके देमदजा स्वीकार केलक, ई कएटा दुखद एवम् विचारणीय पसंग अछि। मुदा देखियेसँ सही, समाज जागि जाएत से उमेद अछि आ कानून दारा देल पैतृक सम्पैतमे उतराधिकारक सहषव पालन भऽ सकत। यत नारी पुज्यन्ते,रमन्ते तत देवता। उक्ति तखने साकि भऽ सकत।

६/४/२०१७

वरिष्ठ नागरिक

सन् २००७ मे भारतवर्षमे माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकक भरण-पोषण एवं कल्याण कानून लागू भेल। ऐ कानूनमे मूलत: निम्नलिखित चारिटा बिन्दुपर ध्यान राखल गेल अछि-

१. माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकक आवश्यकताक अनुसार गुजाराक जोगार हेतु उपयुक्त बेवस्था माने उपयुक्त सरंजाम।

२. वरिष्ठ नागरिक हेतु वेहतर चिकित्साक बेवस्था।

३. वृद्ध लोकनिक जीवन एवं सम्पैत केर रक्षा हेतु संस्थागत बेवस्था।

४. पत्येक जिलामे वृद्धाशमक स्थापना।

उपरोक्त कानूनक अनुसार सन्तानक माने वारिस पुत, पुती, पौत, पौती अछि। साठि साल वा ओइसँ अधिकक कोनो बेकती वरिष्ठ नागरिकके कहल जाएत।

नि:सन्तान वरिष्ठ नागरिकक सम्पैतिक वारिस वा ओकर सम्पैतपर कब्जा रखनिहार वारिस बेकती ओकर सम्बन्धी मानल जेता। गुजारामे भोजन, वस्त,आवास एवं चिकित्साक उचित बेवस्था शामिल अछि।

पश्न अछि जे उपरोक्त कानूनक आवश्यकता किए भेल? अपन माटि-पानिक संस्करमे वृद्धजनके सदैव आदर-भावसँ देखल जाइत छल। परिवारके हुनकर जान एवं अनुभवक लाभ तँ भेटिते छल, संगहि सेवा सामान्य रपसँ होइत रहैत छल। कालक्रमे संयुक्त परिवार टुटैत गेल। लोक गाम-घर छोड़ि कऽ नौकरी-चाकरीक जोगारमे महानागर चल गेल। गाममे वृद्ध असगर भऽ गेला।

शहरी वृद्धक हालत तँ आरो खराप होइत जा रहल अछि, कारण

ओइठाम लोक अलग-िलग रहैत अछि। अिस-पिसँ कोनो मतलब नहि रहैत छइ।

उपरोक्त परिस्थितिमे बुढ़ सबहक हालत खराप होइत गेल। जीवनक अन्तिम वर्षमे संघर्षमय एवं दुखद भेल जा रहल अछि। परिवारिक भावात्मक लगाउ कम भेल जा रहल अछि। केतेको वृद लोकनिके आमदनीक शोत नहि छैन आ परिवार उचित बेवस्िा नहि करैत अछि। हुनका अधिक धिया-पुता अछि ओ सभ एक-दोसरपर िका-िकी करैत रहै छैि।

उपरोक्त परिस्थिति निपटक हेतु एवं वृदजनक कल्याणक हेतु ई कानून बनल। ऐसँ पूर्व सी.आर.पी.सी.क अधीन राहत हेतु मोकदमा चलि सकैत छल,मुदा ओ बहुत जटिल प्रक्रिया अछि। निपटानमे बहुत समय लागि जाइत अछि।

२०१७ इस्वीसँ लागू उपरोक्त कानून बहुत असरदार अछि। ऐमे तीनसँ चारि मासमे न्याय भऽ जाइत अछि। कोनो पक्ष वकील नहि राखि सकैत अछि। हरेक जिलामे ऐ हेतु न्यायाधिकरण अछि। न्यायाधिकरण मामलाक सार-संक्षेपमे सुनवाइ कऽ कऽ १० हजार रपैआ मासिक तकक राहत दिया सकैत अछि। ऐ कानूनमे सभसँ विशेष बात ई अछि जे जँ माता-पिता किंवा वरिष्ठ नागरिकक सम्पैत हुनक सन्तान किंवा सम्बन्धी लइ छैि आ हुनकर पालन-पोषणमे कोताही करै छथि न तँ सम्बन्धित माता-पिता वा वरिष्ठ नागरिक न्यायाधिकरणमे दखास्त दऽ सकै छैि आ न्यायाधिकरण के ओहन सम्पैत हस्तातरणके निरस्त कऽ ओइपर माता-पिता वा वरिष्ठ नागरिकक मालिकाना हक आपस दिया सकै छैि। ऐ न्यायाधिकरणक निर्णयक विरुद्ध कोनो सिविल कोटमे सुनवाइ नहि भऽ सकैत अछि। जरुरत पड़लापर अपील जिलाधिकारीक समकक्ष अधिकारीक

अध्यक्तामे गठित अपीलीय न्यायाधिकरण ओइठाम कएल जा सकैत अछि।

ऐ कानूनक लागू भेला पाच बखवभऽ गेल तथापि गामसँ शहर तक वृद-वृदा लोकनिक समस्याक समाधान नहि भऽ सकल। तेकर एकटा पमुख कारण ई अछि जे माता-पिता अपने सन्तानक विरुद्ध अवाज नइ उठबै छैि। लोक लाजक कारणे पारिवारिक विषयपर चचो नहि करए चाहै छैि। अपवादक मामलामे आसपासक लोकके पता लगैत छइ। िाना, पुलिस, कोटव़ कचहरी के करत? जीवनक संध्यामे ऐ तरहक िसाद करब संभव नहि बुझाइत अछि। समस्या मात आर्थिक नहि अछि। वयोवृद लोकनिके शारीरिक अक्मता एवं असमर्थता बढ़ैत जाइत छैन। जँ पैसा बैकमे ऐछो तँ आनत के? जँ किनयो आनियो देलक तँ रोज-रोज वस्तु-जात केना आएत? आनियो जाएत तँ ओकर उपयोग वा मनोनुकूल कऽ सकता तइ बातके के सुनिश्चित करत? जे बात हृदय एवं शदासँ भऽ सकैत अछि ओकरा कानून दारा लागू केना कएल जाएत? जइ वृद सभके सन्तान नहि अछि, हुनक समस्या आर जटिल रहैत अछि कारण निकट सम्बन्धी हुनकर सम्पैतपर धपाएल रहै छैि आ सम्पैत कब्जा करिते विपता..!

भारतीय संविधानक चारिम भागक ४१म अनुच्छेदमे वृद लोकनिक हित रक्ा करबाक परामशवअछि। मुदा ई दिशा निदेश हेबाक कारणे कानूनी अधिकार नहि दैत अछि।

हिन्दू दन्तक गहणसँ भरण-पोषण अधिनियम, १९५६क अधीन पहिल बेर कानूनी तौरपर बेटा एवं बेटीके माता-पिताक पालन-पोषण करबाक जिम्मेदारी देल गेल। अपराधिक पक्रिया संहिताक धारा१२५ मे पहिल बेर सन् १९७३ मे बेवस्ि कएल गेल जे आर्थिक रपसँ सक्म सन्तानके माता-पिताक भरण-पोषण करबाक कानूनी दायित्व अछि।

मुदाऐ कानूनके बेवस्िाक अनुसार ज्यादासँ ज्यादा ५०० रपैआ पश्चामास माता-श्चताके भेट सकैत छैन। उपरोक्त रकम वतश्चान समयमे देखैत हास्यास्पद लगैत अश्छ। ई कानून सभ धमक लोकपर लागू होइत अश्छ।

वृद लोकश्चाक भरण-पोषण हेतु सभसँ धारदार कानून माता-श्चता एवं वश्चष्ठ नागश्चकक भरण-पोषण एवं कल्याण अश्चश्चायम २००७ अश्छ। वश्चष्ठ नागश्चकक जीवन संध्यामे आश्चिक कष्टक श्चावारण हेतु श्चभसव मोगेज स्कीम २००८ आनल गेल अश्छ। ओअपन अश्चना मकानके बैकक पास बन्धक राश्च कऽ ओइ एवजमे आजन्म माश्चक आय पाप्त कऽ सकै छैि, संगे माश्चक आय पाप्त कऽ सकै छैि, संगश्च ओइ मकानमे रश्चयो सकै छैि।हुनकर मृत्युक पछाइत हुनकर उतराश्चकारी बैकक ऋृण सूद सश्चत अदा कऽ मकान आपस अपना नामे करा सकै छैि अन्यिा बैक ओइ मकानके बेश्च कजक रकम चुकता कऽ सकैत अश्छ।

एहनो वृद छैि श्चनका ने सन्तान अश्छ आ ने सम्पैत। ओ की करता? कानूनसँ हुनका कोनो मदैत संभव नश्च? बहुत रास वृदक सन्तान परदेशमे नौकरी आश्च बेवसाय करै छश्चन। एहेन बुढ़ सभ मजबूरीमे शहर अपन सन्तान लग चश्च जाइ छैि मुदा ओइठाम हुनका मन नइ लगै छैन। गाम-घर छुटबाक दरेग हरदम मनमे कचोटैत रहै छैन। साराश जे वृदजनक जीवन-यापन एवं समुश्चत बेवस्िा एकटा गम्भीर समस्या भऽ गेल अश्छ चाहे ओ गाम हो, शहर हो,धनीक हो वा गरीब। सभ ऐ समस्याक श्चाकार छैि। सभके एक श्चन ऐ पश्चस्श्चश्चासँ गुजरबाक छइ। जे आइ युवक अश्छ, काल्श्च ओहो वृद हएत। समाश्चक पश्चस्श्चश्चा िमश: श्चगैति जा रहल अश्छ। श्चया-पुता जे देखत सएह ने आगू करत। ई बात सभ

सोचैत अछि मुदा किछु मजबूरीमे आ किछु लापरवाहीमे घरक बुढ़के काजक काटक हेतु विवश छोड़ि दइ छैि।

बुढ़ चाहे वयोवृद लोकनिसँ जुिल एक-सँ-एक घटना आत्यपरक समाचार पत, रेडियो, दुरदशनपर अबैत रहैत अछि। एकटा एहने घटना किछु दिन पूववदिल्लीमे घटल।

एक वृद महिलाक पतिक मृत्यु भऽ गेल छेलैन। दिल्लीमे हुनका आलीशान भवन छेलैन। पुत अमेरिकामे काज करैत रहथि न। बहुत दिनपर पुत दिल्ली एला आ माएके अपना संगे चलबाक पस्ताव केलखिन।

बेटाक बातसँ माए बहुत पसन भेली। दिल्लीक एकाकी जीवनसँ ओ तंग भऽ गेल छेली। बेटा कहलखिन जे जखन सभ गोरे अमेरिकामे रहब तँ दिल्लीक घरक की हएत? से नइ तँ एकरा बेचि लेनाइए ठीक रहत।

माए सहषवई पस्ताव मानि लेलैि। दिल्लीक मकान बेचि देल गेल। सभटा र पैआ बेटाक एकाउन्टमे जमा भेल। तेकर बाद सभ कियो दिल्ली हवाई अडडा पहुँचला। अमेरिकाक याताक िममे। माएके बाहर बैसा देलखिन, ई कहि कऽ जे टिकट कटा कऽ आबि रहल छैि। माए बाहर पतीक्षा करैत रहली आ ओ किलिे आपस एता। जखन बहुत समय गुजैर गेल तँ पुलिस ओइ वृदा लग आएल आ ओकर बात बुझलक।

तखन हठात् पुलिस कहलकै जे अमेरिकाक जहाज उिला तँ घण्टो भऽ गेलइ। ओकर बटा माएके छोड़ि कऽ अमेरिका चल गेल। बुढ़िया असगर कनैत रहल...।

ई बात ओकर मकान कीनिहारके सेहो पता लगलैक। बुढ़ियाके अपन घरमे एकटा छोटसन जगह देलकै। बेटा घुमि कऽ कहियो

हाल-चाल लेबए नञि आएल।

अपन सन्तान लोकके केतेक धोखा दऽ सकैए तेकर ई उदाहरण अछि।

दिल्ली विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागक पोफेसर लोकिका सरकारक खिस्सा लोमहर्षक अछि। दिल्लीक K-१/१० हौजखास इनक्लेभमे हुनकर घर छल जेकरा हुनकर पारिवारिक मित्र हथिया लेने छला। घटनाक्रम तेहेन भेल जे हुनका अपनहि घरसँ बाहर होमए पड़ल। तखन हुनकर इष्ट-मित्र सभके ऐ बातक जानकारी भेटल।

८७ वर्षीय पो. लोकिका सरकारक तरफसँ समाजिक संगठन वरिष्ठ नागरिक राइबूनलमे केस केलक। तमाम पूछ-ताछक पछाइत उपरोक्त राइबूनल लोकिका सरकार दारा कथित उपहारमे देल गेल अनुबन्धक रक्क हुनकर घर हुनका आपस दियौलक।

लोकिका सरकारक सम्पैत हरपनिहार एक उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारी छला जे हुनकासँ दोस्तीक स्वाग करैत-करैत हुनकर कीमती घरके कब्जिया लेला।

जँ दिल्लीक संभान्त समाजक मदैत नञि उठाबैत तँ पो. लोकिका सरकारक अपन सवस्व लूटा गेल छल। सेहो केहेन बेकती दारा जे स्वयं अति शिक्षित उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारी छला। रक्को पक भक्क साबित भऽ रहल छल।

होमपेज इण्डिया दारा कएल गेल एकटा सर्वेक्षणक मुताबिक पत्येक तीनमे सँ एक वृद्धके पारिवारिक लोक दारा पतारणाक सामना करए पड़ैत छैन। ५६ पतिशत एहेन मामलाक हेतु पुत एवं २५ पतिशत मामलामे पुतवधु जिम्मेदार होइ छैथि। ऐमे सँ आधासँ अधिक वृद्ध एहेन घटनाक बारेमे मूलत: पारिवारिक पतिष्ठाके धियानमे रखैत केकरो नञि कहैत छैथि। एहेन घटना मध्य पदेशमे सभसँ अधिक

(४७.९२ पश्चाशत) आ राजस्ािनमे सभसँ कम (१.६७ पश्चाशत) भेल। अश्चाकाश वृदक धारणा अश्छ जे वृद लोकश्चाक दुदश्चा रोकबाक हेतु श्चाया-पुताके सचेष्टकरब जररी अश्छ। वृद एवं बच्चाके आपसी श्चानेह एवं सामंजस बढ़ाएब जररी अश्छ। अश्चाता आत्म श्चाभबता सेहो जररी अश्छ। वृदजनके संयुक्त पश्चावारमे रहबाक बेवस्ािके उत्साश्चात करबाक हेतु राष्रीय नीश्चा बनक चाही एवं ओहन लोक सभके टैक्स एवं सरकारी नौकरीमे श्चाशेष सुश्चाधा देबाक चाही।

एक अन्य पश्चावेदनक अनुसार सन् २००० सँ २०५० क बीचमे भारतक जनसंख्या ६० पश्चाशत बश्च जाएत। ऐ अवश्चाक बीच वश्चाष्ठ नागश्चाकक संख्या ३६ पश्चाशत बश्च़ जाएत जे तत्काल आवादीक २० पश्चाशत हएत। ईहो कहल गेल अश्छ जे श्चाश्वमे २०५० इस्वी तक मश्चाला वश्चाष्ठ नागश्चाकक संख्या पुरखसँ अश्चाक भऽ जाएत। समाजमे मश्चालाक स्थिश्चा ओश्चाना संघषपूणवरहैत अश्छ। ८० बखर्सँ ऊपर पुरखक तुलनामे मश्चाला अश्चाक श्चान जीबै छैि। जइमे अश्चाकाश श्चाधवा भऽ गेल रहै छैि। सवेक अनुसार ८० बखर्सँ बेसी आयुवगर्मे ७० पश्चाशत श्चाधवा एवं २९ पश्चाशत श्चाधुर छैि।

समाजक उपेक्षा एवं श्चांग आधाश्चात भेदभावक कारण श्चाधवा वृदाक जीवन अपेक्षाकृत बेसी कष्टकर भऽ जाइत अश्छ। श्चाक्षा एवं जगरकताक अभावमे ओ सरकारी सहायताक लाभ नीकसँ नश्च उठा पबै छैि। कएक बेर हुनकर सम्पैतके हरैप लेल जाइत अश्छ एवं नाना पकारक पतारणाक श्चाकार सेहो होमए पिैत अश्छ।

श्चारंतर बढ़ैत वृदक जनसंख्या आ लिखिाइत पश्चावाश्चाक संरचना वश्चाष्ठ नागश्चाक सबहक समस्याके जश्चाल केने जा रहल अश्छ। पूवर्मे श्चाकछु कानूनी बेवस्ािक चचा भेल मुदा समस्या अश्छ जेअपने सन्तानक श्चारद न्यायक माग कऽ आगू बढ़ैबला हजारमे श्चाकयो एक

बेकती होइ छैि, शेष लोक यंतनापूणव जीवन बीतबैत स्वगवसीधाि
जाइ छैि।

आइसँ करीब २९ बखव पूवव िदल्लीमे स्कूटरक पाछा एकटा बुढ़के उघारे देहे आ एकटा हाि ऊपर उठेने जाइत देखने रिहऐक। पुछिलऐ जे ई एना िकए छैि? तँ आसपासक लोक सभ कहलक जे िकछु साल पवव हुनका अपन बेटाक संगे िकछु िववाद भऽ गेल रहैन आ ओ हुनकर अँगा िािड़ देलििन। तिहयासँ ओ बुिढ़ा अँगा पिहरब छोिड़ देलििन आ िवरोध-स्वरप एकटा हाि हमेशा अकास िदस केने रहै छैि।

..सोचल जा सकैए जे ओइ िपताके केतेकआन्तिरक कष्ठ भेलैन जे एहेन रप धऽ लेलक।

समस्या तँ ई अिछ जे घर-पिरवारसँ अनादृत, उपेिक्षत होइतो वृद लोकिन जािि तँ केतए जािि? कोनो दोसर िवकल्प निह बुझाइत अिछ? नौकर-चाकरपर िनभवता केतेको बेर जानलेबा सािबत होइत अिछ। घरमे असगर रहिनहार बुढ़क समस्या तँ आर जिटल भऽ गेल अिछ।

सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्िा दारा विरष्ठ नागिरकक हेतु आवाससिहत रखरखाउ लेल आन बेवस्िा सभ सेहो कएल गेल अिछ मुदा ओ अपयाप्त अिछ। िदल्ली, िरीदावाद, नोएडामे एहेन केतेको आवास (ओल्ड एज होम) अिछ। परन्तु ऐ सभठाम रहिनहार वृद लोकिनक हालत कोनो नीक निह कहल जा सकैत अिछ। कलकतामे डीगनीटी िाउण्डेसन, पोगाम आिद नाओंसँ केतेको एहेन संस्िा सभ ऐ क्षेतमे काज कऽ रहल अिछ। मुदा वृद लोकिनक संख्या देखैत एहेन सुिवधा नगण्य अिछ। िर अिधकाश बुढ़ तँ गामीण क्षेतमे रिह रहल छैि। जैठाम पिरवारक अिभभावकत्व कोनो पकारक सहायताक

संभावना नञ्ि अछि।

सरकार वरिष्ठ नागरिक लोकनि लेल कएटा सुविधा सभ दैत अछि, जेना- रेल टिकटमे छूट, अस्पतालमे अलग काउन्टर, पोस्ट ऑफि स, बैंक आदि सन सार्वजनिक जगहपर आरक्षित सुविधा मुदा बेवहारमे ई सुविधा सभ पयाप्त नञ्ि होइत अछि। अक्सर वृद लोकनिके झगा ि करैपर मजबूर होमए पड़ै छैन। ऐ मामलामे दिल्लीक मेरोमे निश्चय बेहतर बेवस्ा ि अछि। वरिष्ठ नागरिकके आसानीसँ आरक्षित जगहपर बैसए देल जाइत अछि।

दिल्ली लोदी गाडेनमे भोर-पहरमे टहलैबला सबहक हुजुम रहैत अछि। ओइमे कएटा संगठित समूह बनि गेल अछि जइमे अधिकाश वरिष्ठ नागरिक लोकनि छैि। ओ सभ भोरके टहलै तँ छैि संगे आपसमे भेट-घाट आ गप-सप्प सेहो करैत रहै छैि। शी भूटेलाल ठाकुर (सेवा निवृत आइ.ए.एस.) दारा रस्ट सेहो ओइठाम बहुत सक्रि य अछि। वृहस्पति दिनके नि:शुल्क चाहक बेवस्ा ि ओतए रहैत अछि। टहलला पछाइत सभ ओतए एकटा होइ छैत, चाह पीबै छैि आ आपसमे अपन-अपन नीक-बेजाइक चर्चबचव करैत, हा-हा ही-ही करैत सभ निकयो घर घुमै छैि। ऐ सम्पर्कक पभावसँ कएटा वृदके घोर निपशासँ उबरि त पुनश्च नव उत्साहक संग जीबैत देखलौं। शी ठाकुर दारा रस्ट एकटा गैर-सरकारी संगठन अछि जे केतेको तरहक सेवा कायवकरैत अछि। कोसीक जखन बाढ़ि आएल छल तँ अहू रस्ट दारा रक भरि सहायता-सामगी लऽ कऽ लोक सभ ओतए जर रतमन्द लोकनिके बीच वितरित केलैन। लोदी गाडेनमे सेहो समय-समयपर अनेको कार्यक्रि म ई सभ आयोजित करैत रहै छैि।

हौज खास, दिल्ली स्थित डियर पार्कमे सिनियर सिटिजन कॉन्सिल, दिल्लीक नामक एकटा संस्ा ि अछि जे वरिष्ठ नागरिकक सुख-

सुविधा आ मनोरंजनक लेल बेवस्थामे लागल रहैत अछि। समय-समयपर ओ सभ विदेश भ्रमणपर सेहो जाइत रहै छथि। भोरमे ७ बजेसँ ८:३० बजे धरि नित्य 'योग व्यायाम' सहित अन्यान्य सास्कृतिककार्यक्रमक आयोजन कएल जाइत अछि। पाच साएसँ अधिक नागरिक ऐ संस्थाक सक्रिय सदस्य छथि।

किछु दिन पूर्व केन्द्र सरकार गरीबी रेखासँ नीच्चाबला वरिष्ठ नागरिकक हेतु मुफ्तमे छड़ी, चश्मा आ कानमे लगबैबला उपकरण देबाक घोषणा केलक अछि। जिलाक कलक्टरक अधीन गठित एकटा समिति एहेन लाभार्थीक पहचान करत। उपरोक्त समिति कानमे लगबैबला मशीन, चश्मा आ नकली दात इत्यादि वरिष्ठ नागरिकक हेतु बनेबाक लेल मूलभूत मेडिकल परीक्षण सेहो करौत। जनवरी २०१७ इस्वीसँ मार्च २०१७ इस्वीक बीच हर जिलामे १००० वरिष्ठ नागरिकके ई सुविधा देल जाएत।

एवम् प्रकारेण सरकार ओ समाज सेवी लोकनि वरिष्ठ नागरिकक कल्याण हेतु बहुविध प्रयास कऽ रहल छथि। मुदा ई समस्त प्रयास आजुक युवा पीढ़ीक परिवारक दायित्वक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। अस्तु जरूरी अछि जे आधुनिकता एवम् वैश्वीकरणक प्रवाहमे हमरा लोकनि अपन संस्कारके नहि बिसरी। माता-पिता, एवम् अन्य वरिष्ठ नागरिकक प्रति अपन दायित्व निर्वाह आनन्दपूर्वक करी जइसँ ओ गर्वसँ जीबैथि आ शान्तिसँ अपन जीवनक यात्रा पूर्णकरैथि,स्वर्गारोहण करैथि।

समाजमे एहेन लोकके उत्साहित करक चाही जइसँ अधिकाश लोक अपन माता-पिताक सेवा कानूनक भयसँ नहि अपितु कर्तव्यक भावनासँ करै छथि। ऐ उद्देश्यसँ पटना स्थित आचार्यकिशोर कुणालजी द्वारा स्थापित महावीर मन्दिर ट्रस्ट द्वारा श्रवण कुमार पुरस्कार प्रत द्वारा

माता-पिता आ पुतोहु दारा ससुरक सेवा केँ आहारके देल जाइत अछि। समाजमे श्रेष्ठ नागरिकक जीवन पुत सुगम करबामे ऐ तरहक पयास निश्चय पेरणादायी भऽ सकैत अछि।

अस्तु समाजमे वृद लोकनिक आदर, सम्मान ओ सेवा बढ़य से संस्कार बच्चेसँ धीया-पुताके देल जाए, ऐमे सबहक कल्याण अछि।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृदोपसेविन:

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबालम्।

संगम तीरे

पतीक संग डेढ़ सालक बच्चा आ किछु मोटा-चोटा सङ्गत इलाहाबाद स्टेशनपर पहुँचलौ। हमर अनुज दरिभंगासँ हमरा मदैत करए आएल रहैि। दिल्लीसँ स्िानान्तरणक बाद नव अधावत कायालय कमचारी चयन आयोगमे योगदान करबाक हेतु हम इलाहाबाद सपरिवार बिना कोनो डेरा तकने आएल रही। आब सोचैत छी तँ अपनो हँसी लगैत अछि, आश्चयो होइत जे केना नान्हिटा बच्चा ओ पतीके इलाहाबाद टीशनपर छोड़ि अनुज-संगे डेरा ताकए विदा भेलौ..!
पछिल बेर अही िममे डॉ. जयकान्त मिशजीसँ हुनकर आवास 'शारमुकित' पर भेट भेल। हुनकासँ भेट भेलापर लागल जेना केतेको सालसँ परिचित होिथ। सभ काज छोड़ि कऽ हमरासँ गप करैत रहला। परिवारक अन्य सदस्य सभ स्वागतमे लागल रहला। एक अपरिचित मैथिलक एतेक स्वागत करत?
जयकान्त बाबूक मागदशनक अनुसार पयास कए हमरा लोकनिके ओही दिन साझ धरि डेरा भेटल। डेरा दरियागंजमे छल। ओइठामसँ टीशन आपस जा परिवारके अन्य सदस्य, सामान सङ्गत डेरामे पवेश केलौ। दिन भरिक संघषसँ हम सभ िथक कऽ चूर भऽ गेल रही आ जेना-तेना भोजन कए शान्तिसँ पूवक सूतल रहलौ। पात:काल स्टेनली रोड स्थित कमचारी चयन आयोगक कायालय पहुँचलौ। ओ कायालय स्िापित भऽ रहल छल, अस्तु कायालय चलेबाक हेतु मूल वस्तु जेना कुसी, टेबुल तक नहि छल। एकटा अधिकारी छला जे ओइ कायालयक एक भागमे सपरिवार रहैत छला। िमश: किछु कमचारी सभ एला। टेबुल, कुसीक बेवस्िा भेल। किछु स्िानीय नैमित्तिक कमचारी राखल गेल। आ कायालय चलए पिल। किछुए

श्चनमे नव भतीक श्चजापनक आधापर आयोश्चत श्चाश्चत परीक्षक हेतु आवेदन पतसभ आबए लागल। श्चकछुए श्चनमे एकटा कोठरी आवेदनक श्चाि ाि सँ भश्च गेल।

श्चकछु श्चनक बाद कमश्चारी चयन आयोगक केतीय श्चादेशक बश्चा कऽ शी एल.के.जोश आइ.ए.एस. एला। कारी-कारी करगर मोछ, गोरनार भुट आ बेसी काल गुमसुम रहएबला जोशीजीक एलाक बाद कायालयक पगश्चा तेजीसँ होमए लागल। जोशीजीक पती इलाहाबादेमे छेलश्चन, तँए ओ ओहीठाम अपन पदस्ापिना करौलैि। कायालयमे कमश्चारी कम छल आ काज एकाएक बश्च गेल छल जइ कारणसँ लोक सभ तनावमे रहैत छल। चूकी परीक्षक श्चाश्चि पश्चने घोश्चत भऽ जाइत अश्छ, तँए सभ काज समयवद ठंगसँ करबाक छल। तश्चया कम्पूटरक आगमन नश्च भेल छल। सभ काज हािसँ होइत रहइ। हालत ई छेलै जे जोशीजी स्वयं श्चात्य सैकिाक तादादमे पवेश पत श्चाखैत छला आ अनकर कि कोन। परीक्षक बेवस्िा करब कोनो जबार भोज करबसँ बेसी कश्चन काज छल।

एतेक अस्त व्यस्तताक बाबजूद ओ कायालय आगू चश्च पिल मुदा जोशीजी श्चारन्तर उदास रहैत छला। कारण पश्चवाश्चक छल। पतीक लगमे रही तँ ओ इलाहाबाद अएला आ ििकि श्चनक बाद ओ इलाहाबाद छोश्चि श्चदेश चश्च गेलश्चन। स्पष्टत: सभ श्चकछु ठीक-ठाक नश्च छल। बेकतीगत जीवनक ऐ अन्तदश्चदसँ गुजरैत हुनकर मोन आसानीसँ पढ़ल जा सकैत छल। एकर दुष्पभव हुनकर कायालयक काजोपर पिित छल।

जोशीजीक पेम श्चवाह भेल छल। हुनकर पती इलाहाबाद श्चशश्चदालयमे इश्चाहास श्चषयक व्याख्याता छेलश्चन। उममे हुनकासँआठ साल पैघ। मुदा पेम तँ आन्हर होइत अश्छ। श्चवाह भऽ गेल। दूटा बच्चो भेल।

मुदा खटपट सेहो शुरु भऽ गेल जे चलैत रहल आ अन्ततोगत्वा हुनका लोकनिक प्रवाह विच्छेद भऽ गेल। जोशीजी दिल्ली आपस चल गेला आ कार्मिक विभागक सचिव भेला। केन्द्रीय पशासनिक अधिकरण (CAT)क उपाध्यक भेला। आब ओ ऐ दुनियामे नइ छैथि। पेमक आवेशक अंजाम केतेको बेर बहुत कुटिल होइत अछि। उनिकमे रहएबला जोडी कएक बेर एक-दोसरक हत्या कऽ दैत अछि। प्रतिपल एहेन घटना होइत रहैत अछि, तथापि लोक पेम करैत अछि। जँ पेम त्यागसँ अभिभूत नहि भेल, तँ ओ असहिकर हेबे करत। के हारत, के जीतत तेकर कोनो ठेकान नहि, मुदा सजनात्मकता तँ अन्त भाइए जाइत...।

जोशीजीक पकरणके स्मरणसँ दृदयमे कएक बेर अखनो कचोट भऽ जाइत अछि। दुनू गोटे अधिकारिक्त ओ संभान्त परिवारक छला। स्वयं बहुत योग्य रहैथि मुदा जीवनक व्यस्तामिके नहि नहि सम्हारि सकल। भावी पवल।

कायालयमे एकाएक तेतेक काज आबि गेल आ काज केनिहार लोक तेतेक कम छल जे बहुत अस्तव्यस्तता भऽ गेल। रबियो दिन छुटी नहि होइत छल। कखनो काल तँ दिल्ली घुमि जेबाक इच्छा होइत छल। दरियागंजसँ स्टेनली रोड स्थित कायालय आएब-जाएब कठिन काज छल।

एकापर चढि कऽ बेसी काल याता होइत छल, तथापि समय तँ लगिते छल। तँए कायालयक आसपास डेरा ताकए लगलौ। आखिर किछु दिनमे १७,नयाममफोिगंज हमर डेरा भेल। ममफोिगंज इलाहाबादक संभान्त आवासीय मोहल्लामे सँ मानल जाइत अछि। मकान मालकिन वृदा, स्वतंतता सैनानी छेली,हुनका सभ गुरजी कहैन, कारण ओ शिक्षक छेली। सेवा निवृत भऽ गेल रहैथि। मासमे

एक थ्द्न पैशन लेबए लेल जखन ओ जाथ्र्रि तँ लगैक जे ओ थ्द्व्य बेकती ठाढ़ अथ्छ। आन थ्द्न थ्थ्रक्प्त जका एकटा कोठरीमे थ्मटल। भूतलपर दोसर थ्करायादार छल। छतपर खाली जगहमे गोइठा भरल छल। कुलथ्मला कऽ ई आवास सुखद छल। आसपासमे नीक लोक सभ छल।

इलाहाबाद थ्शथ्दालयक भूतपूवव कुलपथ्त स्व. ए.वी. लाल, अथ्वासत थ्भागक थ्भागाध्यक डॉ. महेश पसाद, पथ्नद मथ्नला रोग थ्शेषज डॉ. रमा थ्श इत्याथ्द सभ आसे पासमे रहैत रहैि। थ्गम चौराहा लगेमे छल। थ्ठाइ केर दोकान घरेलू समान इत्याथ्द सभ थ्कछुक दोकान सेहो आसेपासमे।

कायालयसँ ममिोिगंज स्थ्त हमर डेरा पैदल ५-७ थ्नटक रस्ता छल। अस्तु आवागमनक समय ओ खचा दुनू बाचए लगल। िमश: आसपासक लोक सभसँ पथ्चय होमए लागल आ जीवन याता अपेक्षाकृत सरलतासँ आगू बढ़ए लगल।

छुटी थ्दनमे आसपास एमहर-ओमहर आएब-जाएब पारम्भ भेल। मोतीलाल नेहर थ्जनल इन्जीथ्नयथ्ंग कौलेजमे हमर थ्थ्यौत भाथ्ज पढ़ै छला। कथ्यो काल हुनकासँ भेट-घाट करए छातावास चथ्ल जाइ। ओतए गेलापर अिशोस हुअ लागए जे नीक नम्बर रथ्तौ हम ऐ इन्जीथ्नयथ्ंग कौलेजमे अपन नओं नथ्ल थ्खबा सकलौ। गामक एकटा िजी कथ्यो काल अबैत रहै छला। सासुरक थ्कछु सम्बन्धी सेहो भेट गेला। हमर स्कूथ्या संगी इन्जीथ्नयथ्ंग पास कऽ इलाहाबादेमे नौकरी पकैि लेने रहैि। एवम् पकारेण पूववपथ्थ्त लोक सभसँ सम्पकव भऽ गेलाक बाद कायालयसँ हथ्ट कऽ समाज भऽ गेल जे िमश: बथ्ढ़ते गेल, तइसँ इलाहाबादमे रहब मनलग्गू भऽ गेल। कथ्ल नथ्ल हम थ्दल्ली छोथ्ड़ इलाहाबाद थ्कएक एलौ?

पाय: मोनमे रहए जे गाम लग रहत। खचा कम होएत वा इलाहाबाद धार्मिक स्थान अछि, तँए अध्यात्मिकताक विकासमे सहायक रहत। मुदा इलाहावाद आबि कऽ कोनो सुविधाजनक स्थिति नहि भेल। कार्यालयमे काज बहुत छल। रवियो दिन व्यस्तता रहैत छल, कारण अधिकाकाश परीक्षा रवियो दिन होइत छेलइ। अध्यात्मिक दृष्टिसँ किछु विशेषता तँ ऐ शहरके अछिए। प्रत्येक वर्ष माघमे संगममे जबरदस्त मेला लगैत अछि। कहा-कहासँ सन्त-महात्मा, गृहस्थ सन्यासी लाखोक संख्यामे ओतए आबि कऽ मास करै छैथि। भजन-कीर्तन करै छैथि। गाम-घरक चिन्तासँ बेफिकिर लोक एकटा अदुत आनन्दक अनुभव करैत अछि। माघ मेलाक अवधिमे कतेयो-कतेयो विशेष स्नान होइत अछि। ओइ दिन तँ लगैत अछि जेना समुर संगम दिस अगसर भऽ रहल अछि।

माघ मेलामे रंग-रंगक सन्त-महात्माक समागम होइत छल। ओइमे देवराहा बाबाक नाओंके के नइ जनैत अछि। हुनकर उमक बारेमे कहल जाइत अछि जे ओ केतेक दिन जीला तेकर केकरो सही अनुमान नहि अछि। डॉ. राजेन्र पसाद २-३ सालक रहैथि तँ हुनकर पिता बाबा लग लऽ गेल रहथिन आ बाबा हुनका देखते कहि उठला जे ई तँ राजा हएत। सन् १९५४ इस्वीमे भारतक राष्ट्रपति भेलाक बाद ओ बाबाक दर्शन केने रहैथि। ओही समयक समस्त पख्यात नेता सभ बाबाक दर्शन हेतु अबैत रहै छला। ओ घन्टो पानिमे डुबकी लगौने रहैत छला। हुनका योग सिद्ध रहैन आ सामने ठाढ़ बेकतीक मोनक बात बुझि जाइ छला। कहल जाइत अछि जे बाबा पानिपर चलि सकैत छला, योग क्रिया दारा एक स्थानसँ दोसर स्थान जा सकै छला। मंचपर बैस कऽ बाबा भक्त सभके पसाद दैत रहै छला। केकरो-केकरो माथपर पैर रखि कऽ आशीवाद दैत छला।

एहेन बेकती बहुत सौभाग्यशाली मानल जाइ छला।

देवराहा बाबाक सम्बन्धमे हमर एकटा श्आदेशक महोदय सद: घटनाक वणबा करैत कहला जे एकबेर हश्वदारमे बाबा आएल रहैि। ओ ओइठाम मेला अश्वकारी छला। एकटा हाि बताह भऽ गेल छल। लोक सभ कोनो तरहे ओइ हािके श्वयंश्वात नश्व कऽ पाश्व रहल छला। बाबाक कान तक ई समाचार गेल। ओ हािक हेतु एकटा केरा देलश्वन मुदा केकरो ओइ पागल हािक लग जेबाक साहस नश्व होइ। बाबाक एकटा भक्त श्वपाही ओ केरा लऽ हाि श्वदस बढ़ल। हाि ओकरा देखते हासँ बाबाक देल केरा लऽ कऽ खा लेलक आ एकदम शान्त भऽ गेल। एवम् पकारेण रंग-रंगक पसंग बाबाक बारेमे सुनबामे अबैत छल। जाबे इलाहाबादमे रही,ताबे पश्वा बखवबाबाक दशबा माघ मेलामे होइत रहल। ऐ लेल ममािगंजसँ माघ मेला केत्त कएक बेर पएरे जाइत रही, कएक बेर रस्तामे एका कए ली। एक बेर सोचैत रही जे जा तँ रहल छी, मुदा एतेक दूरसँ िर पएरे केना आएब। ततबेमे देखै छी जे हमर पश्वश्वत एकटा बेकती हमरा श्वदस बश्वढ़ रहल छैि आ आगह करए लगला जे आपस हुनके संगे साइश्वकलपर चलब।

१९ जून सन् १९९० क योश्वानी एकादशीक श्वदन बाबा बम्लीन भऽ गेला। एवम् पकारेण भारतक एक महान सन्तसँ पत्यक दशबा सम्भव नश्व रहल, मुदा हुनकर स्मृश्वा हमर इलाहाबाद पवाससँ सभ श्वदनक लेल जुश्व गेला। बाबाके खेचाि श्वदा श्वाद छल जइ कारण हुनका भूख ओ आयुपर श्वयंतण छेलैन।

इलाहाबादमे रहैत पभुदत बह चारीसँ भेट-घाटक सौभाग्य सेहो भेटल। ओ सन्त तँ छलाहे, धाश्वक, अध्यात्श्वक श्वषयक सैकाि पुस्तकक लेखक सेहो छला। हुनकर श्वाखल भगवती काक दुनू खण्ड

देवराहा बाबाक मंच लग पसाद स्वरूप लोक कीनैत छल। बाबा ओइमे हाि लगा कऽ सम्बन्धित बेकतीके दैत कहथि‍न-
“जा कल्याण होइ। एकरा पढ़।”
पभुदत बहचारीजीक आशम झैसीमे छल। ओइ आशम दारा संस्कृत महाविदालय चलैत छल, जइठाम गरीब विदािी सभके नि:शुल्क शिक्षा देल जाइत छल। एकबेर हम अपन अनुजक संगे ओतए गेल रही। पभुदत बहचारीजी हुनका बारेमे जिज्ञासा केलैन आ हुनका आगह केलथिन जे हुनकर संस्कृत महाविदालयसँ शास्तीक पढ़ाइ करैि, मुदा ओ तइले तैयार नहि भेला।
कृष्णाष्टमीक अवसरपर हम सभ सपरिवार पभुदत बहचारीजीक आशम गेल रही। आशममे कृष्णाष्टमीक पववमनौल जा रहल छल। करीब ४ बजे ओ बाहर एला आ हमरा सभके हुनकासँ भेट भेल। बहचारीजी आगह केलैन जे हम सभ कृष्णजन्म देखबाक लेल आशमेमे रुकि जाइ, मुदा किछु काल धरि ठहैर हम सभ आपस डेरा आबि गेलौ। एकर अलाबा यदा-कदा हम हुनकर आशमपर जाइत रहै छेलौ। ओइ आशमक अध्यात्मिक वातावरणक आनन्द लैत रहै छेलौ।
संगममे स्नान, माघ मेलाक मास भरिक आयोजन, आ संत महात्माक दर्शन इलाहाबाद रहैत स्वत: उपलब्ध छल जेकर लाभ हमरा यिा-सम्भव होइत रहल।
डॉ. जयकान्त मिशसँ भेट इलाहाबाद अबिते भेल। ई भेट-घाट अनवरत बनल रहल। मैथिल मातसँ हुनकर स्नेहक ई पमाण छल। कएक बेर हुनका ओइठाम मैथिली भाषाक मूर्धन्य विदान लोकनिसँ भेट-घाट सेहो भऽ जाइत छल। िमश: हुनकर समस्त परिवारसँ तँ तेतेक सम्पकव भऽ गेल जे लगैत छल जेना हुनकर कोनो निकट

सम्बन्धी होइ, ई सभ विशेषता हुनकर छेलैन। ऐमे हमर योगदान की कहल जा सकैत अछि? मधुर वाणी, उदार हृदय ओ अपनत्वसँ सरावोर बेवहार केकरो आकर्षित कए सकैत छल। पाय: सभ सप्ताह खास कऽ छुटी दिन हुनका ओइठाम जाइत रहै छेलौ। ओहो कएक बेर हमरा डेरापर सपरिवार अबैत रहै छला।

हुनकर पिता म. म. डॉ. उमेश मिशजीक बरखीक भोजमे हम अबस्स आमंत्रित रहै छेलौ। भोजो अदुत होइत छल। बहुत नेम-टेमसँ हुनकर पती भोजक आयोजन करै छेली।

अस्तु, हमर इलाहाबादक समृतिक डॉ. मिशजी एकटा अभिन्न अंग भऽ गेला तँ कोनो आश्चयर्य नहि। इलाहाबादक चचर्चा होइक आ डॉ. मिशजीक ज्येष्ठ पुत डॉ. रमाकान्त मिशजीक चचर्चा नहि करी तँ ई हुनका संगे बड़का अन्याय हएत। रमाकान्तजी सोभावसँ एकदम शान्त छला। संस्कारसँ तेजस्वी, कमठ, मेहनती आ भावुक व्यक्तित्व। पितासँ सपरिवार अलग रहै छला। पहिल पतीक असमयमे निधन भऽ गेल रहैन। ओइ पक्षे एकटा कन्या रहइ। दोसर विवाहसँ सेहो सखापात रहैन। रसूलाबादमे गंगा स्नान करैत, गंगामे गायती जप करैत हुनका कएक दिन देखलिऐन। संस्कृतक विदान छला। इलाहाबाद विश्वविदालयमे संस्कृतक व्याख्याता छला। पारिवारिक कारणसँ कजमे डुमल रहै छला। कहैत जे हुनकर दरमाहाक अधिकाश भाग सूदे-तरे चल जाइत अछि। अतिरिक्त काज कऽ कऽ कमाइ करक हेतु निरनतर चेष्टाशील रहै छला। अपन कायालयमे परीक्षाक उत्तर पुस्तक जाचमे कएक बेर हुनका बजलिऐन। अदुत परिश्रम आ एकागतासँ ओ काज करै छला। हुनकर काजमे एकटा गलती नहि पाबि सकैत छी। हमरासँ बहुत पटै छेलैन आ कएटा नितान्त व्यक्तिगत गपसभ हमरासँ करैत जे निखब

उच्चत नञ्छ। एकबेर हम सपती हुनकर डेरापर गेल रही। बहुत स्वागत भेल। हलुआ से स्वाद्यष्ट छल जे आइ धञ्च जीहमे पाञ्चा आञ्च जाइत अञ्छ। बहुत रास सभ गप-सप्प भेल। बच्चा सभ संस्कारी।

ञ्चकछु ञ्चनक बाद ओइ हलुआक पशंसा डॉ. जयकान्त ञ्चशजी ओइठाम कएल। तुरन्त ओतहुँ हलुआ बनल। कहक माने जे ऐठामक हलुआ सेहो कम नञ्छ...। मुदा हलुआ र रकान्तजीक बेसी स्वाद्यष्ट छल। र रकान्तजी ञ्चल्ली आएल रहैि। हुनकर पञ्चल पतीसँ कन्याक ञ्चवाहक आमंतण देबाक हेतु। हम ओइ कायिममे गेल रही। ञ्चल्ञ्चयेमे ञ्चवाह-कायिम भेल रहइ। हुनकर समस्त पञ्चवारसँ भेट भेल। र रकान्तजीसँ बहुत ञ्चन बाद िनपर गप भेल। डॉ. जयकान्त ञ्चशजीके साञ्चत्य आकदमीसँ २००० इस्वीमे भाषा सम्मान भेटल रहैन। तइ िममे ओ सभ ञ्चल्ली आएल रहैि। हम भेट करए गेलौ मुदा कनीक देरी भऽ गेल छल आ पता लागल जे ञ्चकछुए काल पवूवओ सभ इलाहाबादक हेतु पस्िान कऽ चूकल छैि। ञ्चकछु ञ्चनक बाद सुनैमे आएल जे र रकान्तजी नञ्छ रहला।

ऑञ्चि स तँ ऑञ्चि स होइत अञ्छ। चाहे ओ पयागमे होइक वा ञ्चल्लीमे। इलाहाबाद अबैसँ पवूव सोचने रही जे ओ धाञ्चक स्िान अञ्छ आ ओइठामक लोक सभ बहुत संस्कारी हेता। ञ्चकछु एहेन लोक भेटबो कलाह। इलाहाबादक धाञ्चक पसाञ्चकता अखनो अञ्छए। तँए ञ्चकछु हदतक हमर ई सही छल। मुदा कायालयक अन्दर जे वातावरण छल, (आपसी ञ्चर ि◌रौआल कञ्छ सकै छी) से तँ नके छल। एकटा ञ्चदेशक महोदय (जे आइ.एस. अञ्चकारी रहैि) कहला जे कलक्टरक र पमे काज करबामे हुनका ओतेक ञ्चकत नञ्छ भेल जेतेक १३ आदमीकँ सम्हारैमे ऐ कायालयमे भऽ रहल अञ्छ। अञ्चकारी, कमञ्चारी

सभ युवक छला। केकरो बेसी अनुभव नहि रहइ। काज से बहुत रहइ। तनावक एकटा पमुख कारण सेहो छल। मुदा असल कारण छला एकटा स्टाफ जे दुनियाया भरिक शिकरमवाज छला। जँ केकरो तंग करक हेतु २० किलोमीटर पएरो चलए पड़ितँ ओ तइले तैयारे रहै छला।

एक रातिम करीब २ बजे हम भभा कऽ हँसि पड़लौ। शीमतीजीक नन टुटि गेलैन। आन टुटिते पुछली-

“की भेलै, अहा एना किए हँसि रहल छी?”

असलमे ओइ दिन कायालयमे मारि-पीट भऽ गेल रहइ, जेकर स्मरणसँ हँसी लागि गेल रहए। कायालयक दूटा स्टाफक बीच बाता-बाती होइत-होइत हाथापायी चलए लगल।

हल्ला सुनि कायालयक सभसँ पैघ अधिकारी, निदेशक महोदय जे आइ.एस. छला, कोनो बहने खसैक गेला। सभ गोटे मुहा-मुही देखैत रहल आ झंझैट हाथापायीमे बदैल गेल। एकटा सज्जनक हाथ टुटि गेल। ओ एफ.आई.आर. करबाक हेतु फिना शिदा भेला। हुनकर अपेक्षा रहैन जे हम हुनका संगे फिना गबाहीमे चली, मुदा हमरा से पसिन नहि भेल आ ने हम ओइ झंझैटमे पड़ए चाही, असतु गाहे-बगाहे मौका ताकि कऽ हम घटना स्थलसँ खसैक डेरापर चल एलौ। ऐ बातसँ पीड़ित कमचारी बहुत नाराज भेला आ बहुत दिन धरि ऐ बातके मोनमे गाड़ने रहला।

नौकरीक शुरआती दौरमे दरमाहा कम छल। ओभर टाइम केलाक बाद किछु पैसा अतिरिक्त भेट जाइत छल। असलमे अधिकारीगण एकरा एकटा हथियारक रपमे इस्तेमाल करैत छला। जे पसिनक लोक छल ओकरा असानीसँ ओभर टाइम भेट जाइ छल। हमरा सबहक एकटा संगी (जे दृष्टिभंगेक छला) चलाक-चुस्त रहबाक कारणे

बिना अतिरिक्त काज केनौ ओभर टाइम प्राप्त कए लैत छला। कार्यालयोक समयमे ओ पढ़ैत रहै छला। प्रशासनिक परीक्षा सबहक तैयारीमे लागल रहै छला आ अन्तत: आइ.ए.एस. परीक्षा पास कऽ ओ बहुत आगा बढ़ि गेला। किछु साल पूर्वआयकर आयुक्त रहैथि। ओभर-टाइम कार्यालयमे संवेदनशील मुद्दा छल। एकबेर समस्त कर्मचारीक अगुआ बनि हम कार्यालयमे हड़ताल करबा देलिऐ। परीक्षाक समय नजदीक रहइ। उम्मीदवार सबहक प्रवेश पत्र जारी हेबाक छल मुदा कार्यालयमे काज ठप्प। मान-मनौअलक बाद हड़ताल समाप्त भेल। मुदा हड़तालमे सहयोगी हेबाक कारण बहुत दिन धरि तंग कएल गेल।

एक दिन हम श्रीमतीजीकेँ डाक्टरसँ देखबए गल रही। कार्यालय आएबमे विलम्ब भऽ गेल। जखन ओतए पहुँचलौ तँ देखलौ जे पूरा कार्यालयक कर्मचारी बाहर ठाढ़ अछि। निदेशक महोदय सेहो कुर्सी लगा कऽ बाहरेमे बैसल छला। मनमे उठल- माजरा की अछि? माथ ठनकल। तरह-तरहक बात सोचाए लगल। किछु आगा बढ़लौ तँ किओ कानमे फुसफुसा कऽ कहलैन-

“ताला सभ कुंजीक अभावमे बन्दे रहि गेल अछि!”

जल्दीसँ डेराआपस जा कऽ कुंजीक गुच्छा अनलौ। कोठरी सभ खोलल गेल। निदेशक माहेदय अपन कोठरीमे बैसला। तेकर बाद असगरमे बजा कऽ हमरा अपन नाराजगी व्यक्त केलैन। एहेन संतुलित आ संयत बेकती कम होइत अछि। लगभग तीन साल हुनका संगे काज करबाक अवसर भेल। प्राय: पहिलबेर हुना तमसाइत देखलिऐन जे वास्तवछल। असलमे कुंजीक झाबा दिना हमर जानकारीकेँ हमर बच्चाके पकड़ा देने रहइ। हमरा ऐ बातक जानकारी नहि छल। मुदा गड़बड़ी तँ भाइए गेलइ।

कायालयक रोकि क श्लसाव तित पैसाक लेन-देन एकटा कमचारी छला जे जँ राश्लयोके केतौ देखा जाइतै ि तँ भूतक पत्यक दशनाक आभास होइत। कारी,भुट, बीिी पीबैत आ टंकक पर श्लथर-श्लथर करैत। अपन काजमे मेहनती आ माश्लर रहबाक कारण अश्लकारी सभ ओकरा मानैत। तेकर दुरपयोग ओ लोकके तंग करबामे करैत छल। कोनो श्लल श्लयौ, ओ ताश्लक कऽ लगती श्लकाश्ल दैत, दाबापर कैची चला दैत, ऐसँ टोकर परपीिक सोभावके आनन्द होइत रहइ। लोक सभ ओकरासँ तंग तँ रहए मुदा कएल श्लकछु नश्ल।

जखन पशासनक अश्लकारी हम भेलौ तँ पश्लने मौका भेटते ओकरापर आिमण कऽ देल। भेलै ई जे ओकर कोनो काजमे सुधारक परामशव देश्लऐक तँ ओकरा बडड खराप लगलै। श्लकरए, भेकरए लागल जे ओकरा ऐ काजसँ हटा देल जाए, हम ने यएह देखलौ ने वएह, तुरन्त आदेश श्लकाश्ल ओकरा जगह दोसर कमचारीके खजाँची बना देश्लऐक। आक तँ ओ साप जका छटपटाए लगल, श्लश्लयाइत घुमैत रहल। केतए-केतए-सँ श्लािश्लस लगेलक, मुदा हम अश्ल गेश्लऐक। ओकरा हटए पिलै आ कायालयक काज सेहो चश्लते रहल।

डॉ. जयकान्त श्लशजी अंगेजीक पाध्यापक छला। इलाहाबाद श्लशश्लदालयमे श्लभागाध्यक पदक हेतु हुनका मोकदमाबाजीक सामना करए पिि। हुनके श्लभागक श्लकयो पाध्यापक इलाहबद श्लशश्लदालयमे मोकदमा कऽ श्लभागाध्यक्क पदक हेतु हठ केने छल, मुदा ओ हाश्ल गेल। अंगेजीक व्याख्यता रश्लतौ मैश्लिली आ श्लश्लिलाक पश्ल हुनकर अनुराग जगजाश्लर अश्ल। हुनका ओइठामसँ मैश्लिलीमे ५-७ पृष्ठक एकटा पश्लका श्लकलैत छल। हुनकर समस्त पश्लवार ओइ पश्लकाक तैयारीमे लागल रहैत छल। ओकरा सैकिो लोकके पठौल जाइत छल। एकाध बेर हमहूँ ओइ काजमे लागल रही।

पश्चावषवश्चदापश्चा पववसमारोह इलाहाबादमे मनौल जाइत छल। जइमे जयकान्त बाबू बश्च-चश्च कऽ भाग लैत छला। मुदा ओइमे गुटबन्दी भऽ जाइत छल। एकबेर तँ हालत तेतेक खराप भेल जे माश्च-पीट तक भऽ गेल आ एक गोरेक कुता सेहो िश्च गेलैन।

कायालयक गुटबन्दी पराकाष्ठापर छल। छोटसन कायालयमे मानवीय सम्बन्ध एतेक जश्चल छल जेकर वणबा नश्च। श्चादेशक सभ आइ.ए.एस. अश्चकारी होइत छला, मुदा मानवीय सम्बन्धक ओझरी सरकारी आदेशसँ नश्च सोझरा सकैत छल। मोटा-मोटी दू भागमे कायालयक लोक सभ बँश्च गेल रहैि। श्चकयो नव स्टाि आबए तँ दुनू गुट ओकरा पटबैमे लाश्च जाइत। अहीि ममे हमर कौलेजक सहपाठी स्मरण भऽ जाइत अश्च। सी.एम. कौलेज दश्चभंगासँ ओहो पढ़ल छला। दश्चभंगामे घर रहैन। नौकरी भेलाक बाद कमश्चारी चयन आयोग इलाहाबादमे पदस्िश्चत भेला। मुदा मोटा-मोटी ओ दोसर गुटमे चश्च गेला। बादमे ओ आइ.ए.एस परीक्षक माध्यमसँ आयकर श्चभागमे पदश्चायुक्त भेला आ तेकर बाद कश्चयो भेट नश्च भेला। कायालयक एहेन उठा-पटकक बीच ९ वषक समय केना कटल से आियव.।

इलाहाबाद स्श्चत कमश्चारी चयन आयोगक कायालयक मुश्चया श्चादेशक आइ.ए.एस. अश्चकारी होइत छला। १९८७ इस्वीमे हमरा चश्च एलाक बाद ओइमे आन-आन सेवाक अश्चकारी सभ सेहो श्चायुक्त भेला। ओइ पदपर वएह बेती अबैत छला श्चनकर इलाहाबादमे घर वा पश्चवार रहए। हम ९ साल ओइ कायालयमे रहलौ जाइ अन्तरालमे चाश्चटा श्चादेशक संगे कायव करबाक अवसर भेटल। ओइ चार मे एकटा पोनत दारा आइ.ए.एस. बनल छला। ओइसँ पूववओ पान्तीय सीनीक सेवा (पी.सी.एस.)मे रहैि। हुनकर श्चता उच्च न्यायालयक

सेवा श्रावृत जज रहथि न। श्यताक एक मात सन्तान छला। बहुत स्टाइलमे रहैि। ओइ समयमे मूलत: श्रीएट वा एम्बेसडर कारक चलैन छलैक। हुनका लगमे श्रीएट कार छलैन, जइसँ डाइभर हुनका कायालय आनए आ लऽ जाए। दुपहश्रयाक भोजन सेहो घरे जा कऽ करैि। कायालयमे जखन ओ पदस्ाश्यित भेल रहैि तँ कएक श्वन धश्व ि्किदानीक लेल हंगामा भेल रहए। ि्किदानी कोन श्रायमक अधीन कीनल जाए। हाश्व कऽ ओ अपन घरेसँ ि्किदानी लऽ अनलाह। हुनका पान खेबाक आदैत रहैन, तँए श्यकदानी राखब अश्रावायवछल।

कायालयमे ओ कोनो र श्व नश्च राखैि। सभ अधीनस्ि अश्वकारीपर छोश्वि देने रहैि। एमहरसँ पस्ताव आएल तँ ओइपर दसखत आ ओमहरसँ आएल तँ ओइपर दसखत।

कएक बेर तँ एहेन होइ जे एके श्वषयपर श्वपरीत आदेशपर ओ दसखत कऽ दैत छला। कश्चयो काल हुनकर घर जेबाक अवसर पाप्त होइत छल। रसूलबाद स्श्वित गंगाक घाटसँ लगे काि ऐेल-िइल ओ सुन्दर हुनकर घर छल। बादमे पता लागल जे सेवा श्रावृश्वाक बाद ओ अपन घर बेश्व लेला आ राजस्ािनमे अपन पैतृक स्ािनपर रहए लगला।

कायालयमे हुनका श्राष्पृह रहबाक कारणे कायालयक महौल खरापे होइत गेल। मानवीय सम्बन्धमे कटुता बढ़ैत रहल आ श्वकछु गोटे श्वन-राश्वा एक दोसरक टाग श्वचौवलमे लागल रहला।

सन् १९८५ इस्वीमे कमश्वारी चयन आयोग, इलाहाबादक समक पस्ताव छल जे श्वहारमे दूटा नव परीक्रा केन्र स्ाश्यित कएल जाए। ओहीमे एकटा केन्र दश्विभंगा वा मुजफ्िरपुरमे ओ दोसर दुमका वा भागलपुरमे। हमरासँ तत्काश्चन श्रादेशक महोदय ऐ श्वषयपर परामशव

मंगलैन। हमर आगहक अनुसार दश्चिभंगा आ दुमकामे परीक्षा केन्रक स्ािपना भेल। दश्चिभंगामे परीक्षा आयोजनक बेवस्ाि हेतु पयवेक्कक रपमे हम दश्चिभंगा गेलो रही। दश्चिभंगामे ५-६ टा परीक्षा केन्र छल जइमे हजारोसँ बेसी परीक्षािी भाग लेला। श्चकछु केन्रपर परीक्षा बेवस्ाि स्तरीय नश्च छल तािश्च जेना-तेना काज ससरल। दश्चिभंगामे परीक्षा केन्रक स्ािपनासँ सैकिो स्ािनीय श्चदाािी सभके कमचािरी चयन आयोगक माध्यमसँ नौकरी भेटल, अन्यािा हुनका पश्चने अही परीक्षा हेतु पटना जाए पिैत छल। दुमका केन्रमे अपेक्षाकृत कम उम्मीदवार रहैत छल, तँए बादमे ओ परीक्षा केन्र नश्च रहल। दुमकाक जगह भागलपुरमे परीक्षा केन्र बनल जे सिाल रहल।

सन् १९८३क आसपास ओइ कायालयमे श्चकछु नव लोक सबहक पदस्ािपना भेल जइमे पमुख छला- शी संजीव श्चसन्हा, एम.ए; एल.एल.बी.। ओ इलाहाबादक एकटा संयुक्त पश्चिवारसँ अबैत छला। हुनक समस्त पश्चिवार अश्चा श्चाश्चक्षत एवम् वश्चिष्ठ अश्चिकारी सभ छला। हुनकर एकटा बश्चहनोइ भारत सरकारमे सश्चिव पदसँ सेवा श्चनवृत भेला। हुनकार बेवहार ओ श्चवचारसँ ओइ कायालयक वातावरणमे तँ जे सुधार भेल से भेल, मुदा हमरा तँ जबरदस्त समिान भेटल। हुनकासँ श्चनतता अखन धश्चि ओश्चहना चश्चल रहल अश्चछ। बीचमे ओ श्चदल्ली स्ािानान्तश्चित भऽ कऽ एला, िेर आपस इलाहाबाद गेला, हम श्चदल्ली चल एलौ, मुदा हमरा लोकश्चनक पारस्पश्चिक सम्बन्ध ओश्चहना मधुर बनल अश्चछ। हुनकर समस्त पश्चिवारसँ हमरा िमश: सम्पकव भऽ गेल जे अदाावश्चि बनल अश्चछ। कायालयक ओहन श्चवकट वातावरणमे एहेन नीक लोक भेटला से ईशरक चमत्कारे कहक चाही। हमरा जीवनमे श्चकछु गोटे एहेन भेटला जे श्चबना कोनो स्वािि श्चनरन्तर मदैत करैत रहला। हमरा पश्चा सदावना रहलैन आ संकटक

समयमे सहोदर जका ठाढ़ रहला। श्चाि य कोनो जन्मक हमर पूण्यक ई ि ल रहल होएत।

दश्चिभंगामे नौकरी करैत काल श्चण्डार छक डॉ. श्चनय कुमार चौधरीजी ओ श्चल्लीमे काज करैत काल हमरे नामधारी श्चशजी (मूलत: दश्चिभंगाक लगक रहश्चाहार) हमर जीवनमे पात:स्मरणीय छैि ।

के कहैत अश्च जे कायालयमे दोस्ती नश्च होइ छइ? श्चकंवा ओइठामक सम्बन्ध चलता होइत अश्च। काजसँ काज मतलब राखए-बला पश्चवेशमे बेसी अपेक्ष सम्भवो नश्च अश्च आ ने राखक चाही। परन्तु उपरोक्त बेकती सभ श्चश्चान समयमे कायालयमे हमरा भेटला आ जीवन भश्चक हेतु घश्चाि श्चत बनल रहला।

इलाहाबाद कायालयक महौल खराप करैमे एक बेकतीक बहुत योगदान छल। आब ओ ऐ दुश्चयामे नश्च छैि मुदा जखन कखनो हुनकर चचा होइत अश्च तँ ओ बात सभ मोन पश्चिते अश्च।

गामक पश्चवेशसँ हम एकबेर श्चल्ली तेकर बाद इलाहाबाद आश्च गेल रही। नौकरी केना कएल जाइत अश्च, तेकर बेवहाश्चक अनुभव नश्च छल आ ने ओइ वातावरणमे कश्चयो रहलौ। श्चन राश्च मेहनत करी, साए पश्चशत इमानारीसँ काज करी, केकरो अश्चत नश्च करी, ताि श्च अश्चकारी लोकश्च खूब पसन नश्च रहैि,कारण कोनो बात भेल आ आ ठाइ-पठाइ लश्चि जाइ, मुहेपर सही बात बाश्च श्चए, कएक बेर सही श्चषयपर आि मणक सेहो भऽ जाइ, ऐ सभ कारणसँ अश्चकारी लोकश्चके अहंपर चोट पिित छेलैन आ सभ मौका पाश्च कऽ तंग करैि। कएक बेर बाश्चव हक देबामे बाधा ठाढ़ कए दैि आ श्चकछु नश्च तँ व्यंगे कऽ दैि। कहलक माने जे काजसँ अश्चकारीक अहंक रक्ष सरकारी कायालयमे अश्चक महत्वपूणवहोइत अश्च, से बात जाबे बुझश्चएक, ताबे बहुत देरी भऽ गेल छल।

कायालयक काज हेतु माटाडोर गाि छल। ओकर डाइभर सज्जन बेकती छला। पशासनक काज हमरा ध्मम्मा छल, तँए गाि ओ डाइभर हमर धायंतणमे रहैत छल। धादेशक महोदयक लेल अलगसँ गाि नध्न छल। आइ.ए.एस. अध्धकारी होइतो ओ स्कूटरसँ कायालय अबैत छला। एकध्न एकाएक गाि हुनकर घरपर पाकवभेल आ ओ गािक उपयोग अपना अधीन कऽ लेला। हमरा एकर जानकारी नध्न छल भोरे ध्कछु काजसँ केतौ जेबक हेतु गाि तकलौ तँ पता लागल जे गाि नध्न अध्छ। हमरा बहुत तामस भेल। डाइभरके डाट-िटकार कऽ ध्दध्एे। ओ नून-तेल लगा कऽ धादेशक महोदयके चुगली कए देलक। सुनबामे आएल जे हुनका घर जा कऽ रंग-ध्बरंगक उपराग देलक। पध्रणाम भेल जे धादेशकजी बहुत िद भऽ गेला। ओहुना ओ हमरासँ अपसने रहै छला।

ऐ घटनाक बाद हमर हुनकर सम्बन्ध कध्हयो पटरीपर नध्न आएल। आब सोचैत छी तँ हँसी लगैत अध्छ- अपनोपर, हुनकोपर।

कायालयमे जे छल से छल, मुदा ओइसँ हध्ट कऽ हमर एकटा स्वस्ि, सुयोग्य लोकक समाज बध्न गेल छल जइसँ तमाम कष्ट अभाव आ संघषक बीच हमरा मोन लगैत छल।

डॉ. शुभर झाजी गाहे-बगाहे इलाहाबाद अपन माध्झल पुत (भास्करजी)क ओइठाम अबैत रहै छला। हुनकर इलाहाबाद ध्वशध्वदालय पध्रसरमे डेरा छल। एकबेर करीब ११ बजे ध्दनमे हम शुभर बाबूसँ भेट करए भास्करजीक डेरापर गेलौ तँ डाक्टर साहैब कहला जे ओ लगातार ९ घटनासँ अध्ययन कए रहल छैि। मैध्िलीक शब्दकोषसँ सम्बन्ध्धत ध्कछु काजमे लागल छला।

एकबेर शुभर बाबूके हम नोत देने रध्हऐन। डेरासँ ओ असगरे ध्वदा भेला। भास्करजी पाछा ध्वदा भेला आ हमर नायकटरा स्ध्ित डेरापर

पश्चने पहुँच गेला। शुभर बाबूक कोनो पता नश्च छल।
भास्करजी परेशान रहैि। हुनका ताकए हेतु एमहर, ओमहर वौआइत छला श्क शुभरबाबूके श्चाच्चामे हमर नाम लऽ कऽ श्चाश्चयाइत सुनलौ। घर पहुँच कऽ कहए लगला जे गलतीसँ ओ बगलमे कनी हश्च कऽ धोबी घाटपर चश्च गेल छला। असलमे ओ मकान धोगीक छल, से गप हम हुनका कहने रश्चऐन। कनी कालक बाद भाष्करजी सेहो आपस एला आ तखन भोज-भात भेल। हमर डेरा देख कऽ शुभर बाबू कहैि जे केराक घौरमे जेना बातमे सँ पता श्चाकलैत अश्च, तश्चना तोरा डेरामे कोठरीसँ कोठरी श्चाकलैत अश्च। गपक ि ममे कहलैि जे सेवा श्चावृतक बाद रहक हेतु पाण्श्चचेरीमे घर बनाबह। हुनका पाण्श्चचेरी बहुत पश्चान छेलैन। एवम् पकारेण जखन-कखनो आ इलाहाबाद अबैत छला तँ हमर-हुनकर भेट-घाट होइत रहैत छल, जे श्चाश्चय आनन्ददायी छल।

"Life is an endless struggle.

Ef you stop struggling,

You are tirished."

उपरोक्त कि न एकदम सत्य अश्च। जीवन संघषक अन्तहीन याताक पत्येक डेग आगाक याताक पि पदशक बश्च जाइत अश्च। एहेन कमे लोक छैि जे बनल-बनाएल सभ श्चकछु पाप्त कए लैत छैि। मुदा हुनका ओ आनन्द कदाश्च नश्च भऽ सकै छैन जे कठोर संघषक बाद पाप्त छोटो-मोटो उपलब्श्चासँ होइत अश्च। इमानदारीसँ पश्चशमक कऽ जीवन-यापन करब तलवारक धारपर चलब श्चीक। लेश्चकन यश्च आदमीमे साहस होइ, दृढ़ श्चाश्चय होइ, ईशरमे आस्ि होइ तँ संघषवरंग लबैत अश्च। कहबी छै जे "Say not the struggle availith not." नश्च कहू जे संघषवरंग नश्च अनैत

अछि, अबस्स अनैत अछि, देर-सबेर भऽ सकैत अछि। ताइ लेल धैयवचाही।

इलाहाबाद विशविद्यालयक पख्यात उपकुलपति स्व. ए.वी. लाल कहियो काल साक्षात्कार लेबए-ले कमचारी चयन आयोग अबैत छला। ओही मिमे कएक बेर हम हुनका ओइठाम जाइत छेलौ। हुनकर घर गेलापर अदुत शान्तिक आभास होइत छल। हुनका बाया-पुता नहि छेलैन। पती आ ओ अपने अदुत शान्तिसँ रहैत छला। सोभावक सरलताक कोनो वणनन नहि। एकबेर भोपाल साक्षात्कारक मिमे हम सभ संगे अतिथि गृहमे रहल रही। भोपाल संगे घूमल रही।

दिल्ली एला पछाइत केतेको दिनक बाद पता लागल जे हुनकर पतीके हुनके नौकर हत्या कऽ देलक। भेलै ई जे ओ अपने केतौ बाहर रहैि।घरमे पती असगरे रहथि न। आल्मीरासँ किछु पाइ निकालि कऽ नौकरके तरकारी आनक हेतु देलथिन। ओइ आल्मीरामे र पैआक गडडी ओकरा देखा गेलइ। ओ लालचमे पडि कऽ कोनो भारी चीजसँ हुनकर मापिर चोट केलक जइसँ एकाएक हुनकर मृत्यु भऽ गेल। नौकरबा सभटा र पैआ-पैसा लऽ कऽ िरार।

ओइ नोकरक पिताके आ ओकरो स्व. ए.बी.लालजी इलाहाबाद विशविद्यालमे नौकरी धरौने रहैि। बहुत दिनसँ ओ सभ हुनका परिवारसँ जुलि छल। मुदा लोभमे आबि गेल। सभ बिदारी पानटोमे चला गेलइ। मुदा िबलै नहि। पकिा गेल। आजन्म काराबास भेलइ। मुदा एक निदोष आदमी मारल गेल। वृदावस्ािमे ए.बी.लालजीके घोर कष्ट भोगखल रहैन। "ऐ भाई जरा देख के...। आदमी से जानबर ज्यादा विादार है..।" जइ बेकतीक पूरा परिवारके ओ संरक्ण देने छला,आधिरािकाक पबन्ध केने छला आ संगे रखैत छला वएह विशासघात कऽ गेल। भावी पवल।

ईजीवन बि थ्यथ्यात अछि। समृश्याक आँगनमे जेतइ ठाढ़ होइ छी, धँथ्स जाइतअछि। रंग-थ्बरंगक घटनाि मि सभ माि कि गछाथ्ब लैत अछि। की थ्मखू, केतबा थ्मखू आथ्क चुप्पे रथ्ह जाउ। रंग-रंगक घटना ि मि सभ होइत रहल। नीको लोक सभ कालचि मे थ्यसाइत रहल। एकक टा मुखद्र गमार, बैमान, उचकाके िलैत-िलैत देखथ्माऐ।

थ्कछु नथ्ह बुझाइ छै जे आथ्खर की-सँ-की भऽ जाइत अछि। थ्माश्चय जीवन दू दूना चाथ्र नथ्ह अछि। भऽ सकैए कएक जनम्क थ्हसाब-थ्कताब होइत होइक। सत्य की अछि, से तँ भगवाने जानैि।

ओइ समयमे इलाहाबादक चथ्थ्वा व्यक्थ्मात्वमेसँ एकटा छला, राम सहाय,आइ.ए.एस.। ओ िजी छला। िजसँ सेवा थ्मवृथ्मा क पछाइत आइ.ए.एस.मे आएल रहैि। इलाहाबाद थ्यशथ्यदालयक उपकुलपथ्मा बनौल गेल रहैि। आर केतेको महत्वपूणवपद सभपर ओ रहला मुदा हुनकामे अहं नामक चीज नथ्ह छल। हुनकासँ गप-सप्प केलासँ अदुत उत्साह होइत छल। एकबेर कोनो काजे हुनका ओइठाम गेल रही। हुनकर पती नौकर-चाकरक अछैत स्वयं चाह बनौलैि, अपने हाि चाह परसलैि आ गप-सप्पक दौरान तेना कऽ थ्मथ्म गेली जे लगैत रहए केतेको बखक पुरान जान-पहचान अछि। थ्मरन्तर पसन रहैत छला। कखनो तनाव नथ्ह। हम ऐ पसनताक रहस्यक बारेमे पुछथ्माऐन तँ ओ कहलैन-

“एकर दूटा कारण अछि- पथ्हल तँ हमर पती छैि जे थ्मरन्तर हमरा संग दैत रहली आ दोसर हमर अहंकार रथ्हत बेवहार। हम एकसँ एक पदपर रहलौ मुदा सामनेबला बेकतीसँ थ्बलकुल बराबरीक बेवहार कएल। पदाक अहंकार हमरापर कथ्हयो हाबी नथ्ह भेल। जखन जे समस्या आएल, ओकर तुरन्त ओ सरलताम समाधान करब हमर

सोभाव अछि। ऐसँ हमर मोन अन्तर अनन्तामुक्त रहैत अछि।"
एक दिन हुनका पैट-सटवस्त्र पहिरने कटरा स्थित लक्ष्मी सीनेमा लग साइकिल चलबैत देखलिऐन। सीभील लाइन्ससँ कटरा साइकिलेसँ आबि गेल रहैथि। ई चुश्ती-फुरती ओइ उमेरमे केतए भेटत? एहेन-एहेन लोक पृथ्वीपर ईशरक बरदान छथि। आश्चय किछु एहेन नीक लोक सभ छैथि जिनका भरोसे पृथ्वी माता सभ अन्याय सहि जाइ छैथि आ जीवन चक्र चलैत रहैत अछि।
इलाहाबाद विश्वविद्यालयक सहायक उपकुलपति टी.पति जी गणितक विद्वान छला। सीधा, साधा पएरे चलैबला बेकती छला। कएक बेर साक्षात्कारक क्रममे ओ कर्मचारी चयन आयोग अबैत छला। साक्षात्कारक बाद पएरे आपस भऽ जाइत छला। लगेमे मिठाइक एकटा दोकान खुजल छल। पूरा आगह कऽ कऽ ओ मिठाइक दोकानपर लऽ जाइथि। हुनका लगमे एकटा सूची रहै छल जइमे इलाहाबादक कोन मिठाइक दोकानमे कोन मधुर बढ़िया भेटैए तेकर जानकारी छल। दोकानपर ओइ सूचीके देख ओ मिठाइक आदेश करैथि। बादमे ओ इलाहाबाद विश्वविद्यालयक उपकुलपति सेहो भेला। असलमे इलाहाबाद विद्या, कला, संस्कृति आ अध्यात्म हेतु युग-युगसँ ख्यात रहल अछि। निराला, महादेवी वमा, पंत इत्यादि एक-सँ-एक विद्वान ओइठाम भेला। एहेन ऐतिहासिक स्थानपर रहि कऽ हमरा आश्चय बहुत आनन्द होइत छल। कायालयक उठा-पटकमे ओतहि छोड़ि ओइसँ हटि कऽ एकटा सुन्दर समाज हमरा उपलब्ध भऽ गेल छल।
आपति काल परेखिय चारी,
धीरज धमवमित ओ नारी।
तुलसी बाबाक उपरोक्त कचनी एकदाम सटीक अछि। धैयव अछि,

अनवरत संघषवकरबाक चेष्टा अछि, तँ कोनो पश्न नहि अछि जे अहा गन्तव्य तक नहि पहुँचब। अबस्से पहुँचब। आ सत्य पुछी तँ सही रास्तापर चलबाक संकल्प अपने आपमे विजयक आभास कऽ दैत अछि आ तइले तँ भगवान दैते छथिन।

एकबेर हमर ससुर इलाहाबद आएल रहैि। हुनका संगे हुनकर अनुज रहथिन। हमर शीमतीजीके आपसी यातामे नैहर जेबाक रहैन। टीशन जेबाक हेतु हम रिक्सा आनए गेलौ। कनिके दूर आगू गेल हएब कि कुकुर काटि लेलक। तििय रिक्सा अनलौ आहुनका लोकनिके विदा कऽ देलिऐन। हुनका सभके पता नहि चललैन जे हमरा कुकुर काटि लेलक अछि, अन्यि नहि जइतैि। आब हम असगर भऽ गेल रही। ओइ समयमे कुकुर कटला बाद अंतरीमे १४टा नमका सूइ लगैत छेलइ। एकबेर पहिनौ सुपौलमे १९७५ ई.मे हमरा कुकुर कटने छल। १४ टा सूइ ओइ बेर पिल छल। मुदा ओइ सूइक कोनो विकल्प नहि छल। कोताही केलापर रैबीज हेबाक डर छल। गाममे एक बेकतीके रैबीजसँ मरैत देखने रही। से सोचि चिन्तामे पड़ि जाइ छेलौ।

हमर डेरासँ १० किलोमीटर दूर नगरपालिकाका अस्पतालमे रैबीजक सूइ लगैत छल। एक दिनक बाद सूइ लगबक हेतु जाए पित छल। ओइमे कायालयक एकटा स्टाि हमरा बहुत मदैत केला। ओ अपन साइकिलसँ हमरा लऽ जाथि, सूइ लगबा दैि आ आपस डेरा तक पहुँचा दैि। पेटमे सौसे गुल्टी भऽ गेल छल। मकान मालकिन बोतलमे पानि गरमा कऽ दैत छेली जइसँ पेटके सेकल करी।

िमश: उहो समय बीति गेल। पता नहि, कुकुरके हमरासँ कोन जन्मक वैर छइ। तेसर बेर िर दिल्लीमे आरकेपुरम डेराक लगमे कायालयसँ आपस अबैत काल नान्हिटा कुकुर अदुत तेजीसँ हमरा

घुसि आएल आ झपटा मारलक। कुकुर तेसर बेर काटने लेने छल। सभ काज छोड़ि कऽ चोटे सी.जी.एच.एस. जा कऽ सूइया लेलौं। ताबत सूइक आकार बदैल गेल छल। छोटा सूइ मात ६ टा लेबाक छल। लगेमे सी.जी.एच.एस. छल, तँए बहुत दिक्कत नहि भेल। डाक्टरक कहब छेलै जे जेतेक बेर कुकुर। बानल काटत तेतेक बेर फिरसँ सूइ लेब अनिवार्य अछि। आब तँ कुकुरके देखते सांकछ भऽ जाइ छी। जइसँ चारिम बेर सूइया नहि लेबए पड़ए।

हम इलाहाबादमे ९ साल रहलौं। चारि साल गुरुजीक मकानमे किरायेदार छेलौं। १७ नयाममफोर्डगंज, इलाहाबाद। तीन साल तँ निचैन भऽ कऽ रहलौं मुदा तेकर बाद तंग करए लागल जे मकान खाली करू। यदि हम अपना भरि किराया समयपर देबक हेतु बहुत साकाक रही। कोनो तरहे तंग नहि कएऐक मुदा ओकरा मोनमे मकानक चिन्ता होइत रहइ। डर होइ जे मकान चलि जाएत। केतबो बुझबिऐक मुदा ओकर मोन नहि बुझि पबइ। हमरा ओइ मकानमे बहुत नीक लगैत छल। मुदा नित्य पतिक झंझटसँ मोन तंग भऽ गेल आ कनी दूर हटि कऽ एकटा छोटसन मकान किरायापर लेलौं। ओकर किराया अपेक्षाकृत कम छल। कोठरीक आगा बढ़िटा छत छल जइमे कुर्सी धऽ कऽ बैसार होइत छल।

मकान मालिकक सेवा निवृत पुरातत्व विभागक अधिकारी छला। बहुत सौम्य आ सहृदय बेकती। हमरा सबहक बहुत धियान राखैथि। ऐ डेरामे आबि कऽ बुत शान्ति भेल। किराया कम रहलासँ उसास सेहो भेल। लगभग २साल हम ओइ डेरामे रहलौं।

हमर सबहक डेराक ठीक सामने ऊपरमे एकटा सज्जन सपरिवार रहैत छला। हुनकर छोटसन बच्चा स्कूलमे पढ़ैत छल। स्कूलक सवक पूरा करबाक क्रिममे ओ अपन बच्चक जे दुर्गति करैत छला

जे बसरल नइ जा सकैए। पश्चा श्न पढ़ाइक अन्त बच्चा माश्न-पीटसँ होइ छल।

पता नइ, ओइ बच्चाक की भथस भेल। अपन जीवनक महात्वाकाक्षा ओ भूतकालक असफलताक चोट आदोष बच्चापर बजाश्व कऽ अपने बच्चाक भथस नष्ट केआहार ओ असगरे नइ छैथि।

माता-थताक ई बुझक चाही जे ऐ तरहक बेवहारसँ बच्चाक श्नमाग कुंश्ठत भऽ जाइत अछि, असफलताक भाव ओकरा घेश्व लैत अछि आ एकटा व्यक्श्वात्व आमाणसँ पश्नइ नष्ट भऽ जाइत अछि। एहने बच्चा सभ पैघ भऽ कुण्ठागस्त भऽ आन-आनसँ बदला लैत रहैत अछि। एहने एकटा उदाहरण हमरा श्नल्लीमे भेटल। हम गृहमंतालयमे अश्वाकारी छेलौ। हमर आदेशक महोदय पोन्नत आइ.ए.एस. अश्वाकारी छला। बेवहारमे बहुत ककश्न, बात-बातमे गाश्व देब हुनक सोभाव छल। बुझेबे ने करए जे ऐ बेकतीक संग केना समय कटत। मिश: हुनकर व्यक्श्वात्व बुझैमे आएल, आपसी सम्पकव बढ़ल तँ एकश्न कहला जे हुनकर एहेन सदा बेवहार ओ अशुद भाषाक हेतु हुनकर थता श्नमेदार छैथि। हुनकर थता पाश्कस्तानसँ भारत आएल रहथि न। श्नन्दू कालैज श्नल्लीसँ पढ़ल रहथि न आ मंतालयमे अश्वाकारी रहथि न। बचपनमे हुनका संगे बहुत सख्ती ओगाश्व-माश्व करथि न जइ कारणे हुनकर सोभाव एहेन भऽ गेल जे सबहक हेतु कष्टकारी छल। श्वाया-पुताक संगे कएल गेल बेवहार ओकर व्यक्श्वात्वक अंग भऽ जाइत अछि। हमर ऐ डेराक सामने भूतलपर गैरेजमे एकटा चतुिव वगीय कमचारीक पश्चवार रहैत छल। आत्यपश्चा साइश्कलसँ ओ कायालय जाइत छल। कायालय जाइत काल पूरा पश्चवार ओकरा श्नदा करैत छल। पश्चवारमे बुढ़ माए, पती आ कएटा बच्चा सभ छल। ओतेक छोट जगहमे सभ गोटे अदुत आनन्दसँ रहै छल।

साझमे कायालयसँ ओकर आपसीपर पश्चवारमे अदुत आनन्द पसैर जाइत छल। जोर-जोरसँ ठहाकासँ आस-पासक वातावरणमे आनन्द पसैर जाइत अछ।

इलाहाबादक हमर दोसर डेरा अपेक्षाकृत छोट छल। एकेटा कोठरी संगे स्नान, पैखाना गृह ओ कनीटा भनसा घर। मुदा आगूमे छत बड़टा छल। राश्व-श्वराश्व छतपर जुलि पाइप लग लघी कए लैत छेलौ। एक राश्व अश्वना करैत रही श्वक संयोगसँ श्वाच्चाक फ्लैट बालकनीमे सूतल एकटा बृदक मुँह खूजल रहैन आ हुनका नोनछराइन लगलैन। धड़िड़ि कऽ उश्व गेला जे की भेल। भोर भेने ओइ बुढ़क जमाए (जे इन्जीश्वायर छला) तमसाएल एलाह। लाख बुझश्वऐन जे मेघसँ पाश्वाक बुनी खश्व पड़ल हेतै, मुदा ओ मानैले तैयार नश्व भेला। अन्तवोगत्वा हम अपन गलती माश्व झगड़ा समाप्त कएल। कश्व नश्व सकै छी जे केतेक भारी संकटसँ जान बँश्व गेल।

किरेक श्वनक बाद हमरा सभके कायालयसँ सटले नयाकटरा मोहल्लामे एकटा धोबीक मकान श्वकरायापर भेल। ओइमे भनसा घर छोश्वि कऽ तीनटा कोठरी छल, छत छल आ श्वकराया सेहो ठीके-ठाक छल। कयालयसँ पाच श्वनटमे घर आश्व जाइ छेलौ।

सटले वगलमे शीवास्तवजी रहै छला। ओ सभ अश्वाशय नीक लोक छला। कश्वयो काल टीवी देखबाक इच्छा भेलापर हम सभ ओइठाम चल जाइत रही। श्वातहार सप्ताहमे दू श्वन होइत छल। टीभी देखू आ चाहो पीबू। पश्वल बेर चन्रमापर गेल भारतीयसँ इन्श्वरा गाधीजीक वातालापक सद पसारण हम ओतै देखने रही। किमश: टीभीक चलन बड़ तेजीसँ बश्व रहल छल। घरे-घरे टीभीक एन्श्वना टँगाइत छल। सभ दोकानपर टीभी श्वकाय लागल छल। हमर ज्येष्ठ पुत 'भास्कर'छतपर लऽ जाश्वि आ सभ घरपर लागल एन्श्वना देखबए

लगैत। हमहूँ दोकान सभपर टीभीक मूल्यक सवे करैत रहलौं। कारी, उज्जर (स्वेत-श्याम) टीभीक जमाना छेलइ। ओकरा रंगीन टीभीमे परिवर्तित होमए-मे बहुत समय लागि गेल।

नयाकटरा स्थित हमर डेराक मकान मालिक धोबी छला। बेटा परिवारमे कियो पढ़ल-लिखल नहि छल। सबहक मुखिया बुढ़िया माए छेलइ। एकबेर हम किरायाक रसीदक माग कएल, जइसँ इनकमटैक्समे छूट भेटैत। कथिये-कालमे जोरसँ हल्ला भेल! पुछलिऐन जे की भेलइ? भेल ई रहै जे किरायाक रसीदक मागसँ ओ सभ भयभीत भऽ गेल जे मकान हाथसँ गेल आ तानि चिन्तामे आपसमे लड़ए लागल। हम हुनका कहलिऐन जे कहियौ जे रसीद नहि चाही। से कहिते देरी तुरन्त एकदम शान्ति भऽ गेल।

इलाहाबादक प्रसिद्ध गणितज्ञ स्व. गणेश प्रसादक ओ सभ धोबी छल आ वएह मकान बनबैमे मदैत केने रहथि। क्रमश: ऊपरमे किछु आर कोठरी सभ बनौलक जइमे हम किरायेदार छेलौं।

इलाहाबादक फगुआ बहुत आकर्षक होइत छल। पुरकिया आ नाना प्रकारक पकवानक संग रंगमे सराबोर शहर मदमस्त भऽ फगुआ मनबैत छल। लाउडस्पीकरसँ पूरा मोहल्ला हल्ला होइत रहै छल आ झुंडक-झुंड लोक सभ रंग खेलाइत एक ठामसँ दोसर ठाम अबैत-जाइत रहैत छला। गाम-घरमे जहिना पहिने फगुआ मनौल जाइत छल, लगभग ओहिना इलाहाबादोमे धूम धड़क्का होइत छल। मुदा आब तँ गामोमे फगुआ नि:शब्द भऽ गेल अछि। डालपर फगु सुनबामे नहि अबैत अछि। जोगीरा नहि गौल जाइत अछि। शराब बन्दीक बाद डगमग-डगमग चलैत लोक सभ देखबामे नहि अबैत अछि। फगुआ दिन गाम भ्रमण कएल तँ पता लागल जे सभ किछु शान्त अछि। कोनो धू-धड़क्का नहि। सभ अपन-अपन असोरापर बैसल पुरकिया

आ मालपूआक आनन्द लइ छैि।

इलाहाबाद पवासक महत्वपूणवघटनाि ममे हमर कश्चाष्ठ पुतक जन्म छल। जन्मक समय नजदीक एलापर माए गामसँ एली। कमला नेहर अस्पताल- इलाहाबादक पख्यात अस्पताल अछ्छ। ओहीठाम हुनका भती करौल गेल। माय संगे रहैि। २-३ थ्वन रहलाक बाद डाक्टर सभ अस्पतालसँ ई कश्च कऽ आपस कऽ देलक जे अखन समय लागत। मूल कारण अस्पतालक हिताल रहै, जइ कारणसँ मरीज सबहक देख-रेख कश्चन भऽ गेल छल।

घर पहुँचले रही थ्वक तुरन्त अस्पताल जाए पिल। अस्पतालमे बहुत कम डाक्टर छला। हिताल चश्चाते रहइ। सी.जी.एच.एस.सँ हुनका हेतु दबाइक बोतल सभ अनने रही। ओइमे-सँ एकटा चढ़ैबते देरी स्वस्ि्य खराप होमए लागल। रच्छ भेल जे ऐ गिबििक तुरन्त पता लाश्च गेल आ डाक्टर सबहक तत्परतासँ हुनकर जान बँश्च गेल।

डाक्टर सभ थ्वचार-थ्वमशवकऽ कऽ कहलक जे शल्य थ्वश्चकत्सा दारा बच्चाक जन्म हएत। तइले पात:काल भोरेसँ अस्पतालमे तैनात रही। डाक्टरक परामशक अनुसार शल्य थ्वश्चकत्साक सामगी सभ कीनलौ। अस्पतालमे बेहोशी डाक्टरके नश्च रहबाक कारण ऑपरेशनमे देरी भऽ रहल छल। एलेनगंजमे डाक्टरक घरपर जा कऽ बहुत पयास केलौ, मुदा जखने हुनका आबक इच्छा भेलैन तखने एली। ऑपरेशन टीमक नेतृत्व डॉ. शश्चावाला शीवास्तव करै छेली। ओ इलाहाबादक सिल तिा नामी डाक्टर छेली। हम हुनकर थ्वताक थ्वकरायेदार रहल रही। जान-पहचान देल। ऑपरेशनक समयमे हमर कायालयसँ कएक गोटे उपस्थ्वित रश्च भरपूर मदैत केलाह जइमे शी संजीव थ्वान्हाजीक योगदान अथ्वस्मरणीय अछ्छ।

किछु कालक बाद एकटा नसवहँसैत बाहर आकलल आ पुत-जन्मक सूचना देलक। २० अपैल १९८५ क ११:३४ मिनटपर हमर छोट पुत कौशलजक जन्म भेल। ऐसँ केतेक आनन्द भेल, तेकर वर्णन नहि कएल जा सकैत अछि। तुरन्त पाइवेट वार्डमे कोठरीक बेवस्िा कएल आ अदबेबेहोशीक हालतमे बच्चाक संग जच्चाके ओतए आनल गेल।

तेकर बाद तँ देखआहरक िवािह लाधा गेल। इलाहाबादक ई विशेषता थिक। लोकमे भावुक लगाव बेसी होइ छै, आ बेरपर आनो-आनो लोक ठाढ़ भऽ जाइत अछि। अगल-बगलमे रहैबला पिासी, पदाधिकत, कायालयक सहकमी, अधीनस्ि कर्मचारी सभ एकाध बेर अस्पताल अबस्स आएल। दिन भरि भूखल रही। संगम जा कऽ हनुमानजीक दर्शन केलाक बादे भोजन कएल।

इलाहाबादमे आकाशवाणीमे कार्यरत कार्यक्रम अधिकारी डॉ. श्याम विदािीजी सँ आकाशवाणी युववाणी कार्यक्रमक विकशवांक दौरान भेल। सकारात्मक सोच ओ सरल सोभावक कारण हुनकासँ अनायासे मितता भऽ गेल। यदाकादा आकाशवाणीसँ हमर कार्यक्रम होइत रहै छल। स्िानीय अखबारमे सेहो कएकटा लेख कवियो काल छपैत छल। कायालयक बाद हमर ई सभ मनोरंजन छल।

डॉ. श्याम विदाि राजस्िानिक रहआहार छला आ संघ लोक सेवा आयोगसँ आकाशवाणीक कािम विभागमे राजपत्रित पदपर नियुक्त भेल छला। ओइ समयमे डॉ. मधुकर गंगाधर आकाशवाणीक निदेशक छला। ओ पूर्णियाक छला आ किछु दिनक बाद स्िानान्तरित भऽ दिल्ली चल गेला।

पटनासँ आकलैबला पहिमद मैथिली साप्ताहक मिथिला मिहरमे हमर कएकटा किा, लेख आ कविता सेहो छपल। बादमे मिथिला मिहर

बन्द भऽ गेल आ हम ध्वल्ली स्ािनान्तश्वत भऽ गेलौ। तेकर बाद ऐ तरहक गश्चाश्चश्चा कम भऽ गेल।

कायालयक वागवानीक देख-भालक हेतु एकरा नैश्चाश्चाक कमब्वारी छल। ओ गाहे-बगाहे हमर बच्चा सबहक मनोरंजन सेहो करैत रहै छल। ओकर खूबी ई छल जे पत्येक बातमे ओ कहैत 'यससर' एक श्वन ओकरा पुछश्चाऐ जे तूँ ई कला केतए सीखलह?

कहलक जे पूवबे ओ एकटा बहुत पैघ अश्चाकारीक ओइठाम काज करै छल। वएह ओकरा 'यससर' कहबाक आदैत लगौलक। जँ ओकर श्वलाि कोनो बात होइत तँ ओकर उतर ओ 'यससर' मे दैत छल।

असलमे 'यससर' सरकारी कायालयक रामवाण श्चिक। केहनो संकटसँ अहा 'यससर'क सहयोगसँ उबैर सकै छी। सरकारी कायालयमे अश्चाकारी सभके काजसँ बेसी हुनकर अहं तुष्श्च जर री होइत अश्छ। अहा श्वन राश्चा काज कर आ अश्चाकारीसँ अहंक टकरावमे कश्चा गेलौ तँ सभ गुि-गोबर भऽ जाएत। नीक बेवहार तँ उश्चात श्चिक, मुदा बात एतबेपर नश्च धश्चा जाइत अश्छ। जी-हजुरीक श्वना नीक कायवमूल्याकन नश्च होइत अश्छ। एहेन श्चकयो श्चरले हेता जे काजक आधारपर शेष्ठता तँइ करैत हेता।

जीवनमे सभ श्चकछु गश्चातीय गणना जका नश्च चलैत अश्छ। सभ श्चकछु सोचले नश्च होइत अश्छ आ जे भऽ जाइत अश्छ से कए बेर अपत्याश्चात रहैत अश्छ।

यत श्चान्श्चातं तश्वह दुरतरं पयाश्चा
यच्चेतसश्चज कृतं तश्वहाप्यपेश्चा
पातभवाश्च वसधाश्चाप चिवती
सोहं व्जाश्च श्चश्चने जश्चल तपस्वी।

भगवान राम द्वारा कहल उपरोक्त वाक्य हमरा-अहापर ओखना लागू होइत अछि। जे हेबाक छै से हेतइ। होनी ककयो रोकि नहि सकैत अछि। तथापि जीवनमे हाथि-पर-हाथि धऽ बैसलो नहि जा सकैत अछि। जे भावी अछि से हेतइ।
दरभिभंगासँ दिल्ली नौकरी करए गेल रही। ओइठामसँ फिबि दिनमे पयास कऽ कऽ इलाहाबाद आबि गेलौ आ ऐठाम ९ वषवरहलौ। आब अपनो आश्चयवलगैत अछि जे केना ओइ वातावरणमे एतेक दिन रहि सकलौ। असलमे कायालय तँ जे छल से छल, मुदा बाहर एकटा नीक समाधानक पविवेश बनि गेल छल जइसँ बहुत भावनात्मक समर्थन भेट जाइत छल। आ कहबी छै जे अन्हेर गाइक राम रखबार।
अन्तिम २ साल जे आदेशक छला, हुनकासँ हमरा एकदम नहि पटल। यदपि हम पविशम पूवक ओ पूनत: इमानदारीसँ काज करी तथापि ओ असंतुष्ट रहैथि आ तंग करैथि। हमर बदली हेतु दिल्ली मुख्यालय लीखि देलखिन। हम दिल्लीसँ डराइ जे केना गुजर हएत, तँए ओहनोमे इलाहाबादे रहए चाही मुदा से नहि भेल आ फिरबरी १९८७ मे हमर स्थिानान्तरण दिल्ली गृह मंतालय भऽ गेल।
इलाहाबाद हमरा गाम-घर लगैत छल। बहुत नीक समाज भऽ गेल छल। कायालयमे कनी-मनी झंझट तँ सभठाम रहिते छै, ओकरा झेलिये रहल छेलौ। बच्चा छोट रहए। अधिककष्ट तँ रहबे करए। तँए हम ओइठामसँ हटए नहि चाही, परन्तु आदेशक महोदय हाथि धो कऽ हमरा पाछू पलि रहै छला। कायालयमे दू गुट छल। स्पष्टत: ओ हमर घोर विरोधी गुटक संग भऽ गेल छला। वरिष्ठ अधिकारीक हेतु ई उचित नहि छल मुदा हुनका हमरा खिलाफि किछु भेटैन नहि तँए खिसियौल बिलाथि जका...।
विरोधी सभके हमरा खिलाफि हावा दैथि। हमरासँ काज सभ हटा कऽ

विरोधी खेमाके दऽ दैत। मुदा लोक हमरा संगे जे छल से छल। हुनका डरे हटल नहि, मुदा हुनका हाथमे पशासकीय चाबुक छल, जेकर गलत उपयोग ओहमरा परास्त करए लेल पयोग करैत।
बदलीक बदला हम अध्यक, कमचारी चयन आयोगके आवेदन देल। हम ईहो लिखलिऐ जे जँ बदली होइक तँ हमर घोर विरोधीक सेहो होथि मुदा निदेशक ओकर पक लऽ लइत। असलमे निदेशकजीके हमरासँ डर होइन।
एकबेर ओ कहला जे हम घरेमे रही आ ओ हमरा पूरा दरमाहा दऽ देल करताह। मुदा हम कहलिऐन जे काज करब हमर अधिकार अछि। बिना काज केने हम वेतन किएक लेब?
ऐ विषयपर अध्यक, कमचारी चयन आयोगसँ दिल्लीमे हम भेट केलौं। ओ भेट करैकाल तुरन्त एकटा अधिकारीके बजा लेला जे इलाहाबादमे पूवमे रहैत आ निदेशकसँ परिचित छला। परिणाम भेल जे अध्यकजीसँ भेल हमर सभटा गप इलाहाबाद निदेशकजीक कानमे चल गेल। हम ओतेक खुशि कऽ हुनकासँ गपो नहि कए सकलौं।
इलाहाबाद आपस एलौं तँ निदेशकजी तेतेक घबराएल छला जे स्वयं हमर ककमे पहुँचला आ रंग-रंगक आश्वासन दिअ लगला। मुदा सचमे ओ डरा गेल रहैत। डरेबाक हेतु ओ स्वयं जिम्मदार छला। हम तँ अपन आस्तित्वक हेतु संघषशील रही। अन्ततोगत्वा हमर बदली भऽ गेल। ओना, कनीकाल लेल सत्य हारैत बुझाबामे आएल मुदा... ¡

<u>बाल्यकाल</u>

घरक आगूमे कनीटा जगह छेलइ। ओइ जगहमे हमर िलवाि छल। केतौसँ तीरा िलक बीआ आश्न कऽ रोश्य श्वए आ लगले माने पाते भेनेसँ बाबाके पुछए लश्याऐन-
“बाबा! िल तँ नश्व िलेलै?”
हमर बात सुश्नाते बाबा हँश्म दैि।
रोज भोरे उश्वते यएह काज...।
कएक बेर तीराक बीआसँ कश्नयोटा पम्ह श्चकलै आश्क िर दौि बाबा लग। बाबा िर हँसए लगैि। कएक श्वन जखन अश्चना बाबाके तंग कश्वऐन तखन कहैि-
“समय लगै छै, एके-श्वने िि िल िलाइ छइ।”
िर बाट ताकी। पाश्नसँ पटाबी। िमश: बीआ गाछ बनबाक श्वशामे अगसर होइत छल। आठ-दस श्वनक बाद, जखन तीराक गाछ बश्क जइतैक तँ िर बाबा लग चल जाइ आ हुनका पकैि कऽ आश्न तीराक गाछ लग लऽ जा देखा श्वऐन।
गाछक स्श्थश्न देख बाबा मुि डोलबैत बजैि-
“हँ! आब िल आश्व जाएत। अश्चना पाश्नसँ पटबैत रश्वयौ।”
श्कछु श्वनमे रंग-श्वरंगक तीराक िलक कोढ़ी अबै आ रोज भोरे िर श्मजासा भरल आँश्वसँ िलक कोढ़ीके देखैत रही। िलके कोढ़ीसँ स्िश्चत होइत देखैत रही। केतेक आनन्द होइत रहए, केतेक आनन्श्वत भऽ जाइत रही, तेकर वणश्न हठात् करब संभव नश्व।
हमर श्यतामह अपना समयमे पहलवान छला। लोक बजैि जे ओ असगरे चार चढ़ा लइ छला। खेती-वाि जश्म कऽ करैत छला। छह िट लम्बा, मजगूत कद-काठी आ घोर पश्वशमी व्यक्श्तत्वक

लोक हमर थ्यतामह छला। ओ भोरे उठैि आ जन-मजदूर सभके अढ़बए थ्मनुआरा टोल जाथ्मि, जन लऽ कऽ खेतपर जाथ्मि। जन सबहक पनथ्ययाइ पहुँचाबैि इत्याथ्द काज एकसूरे कऽ लथ्मि।
६५ सालक उमेर तक हुनका घोर पथ्वशम करैत हम देथ्खऐन। पोखथ्वक पुबथ्वया भीतापर ओलार छल। मीआजान चरबाहके घरेपर सँ अवाज दैि-
“महीस पनहा गेल अथ्छ...।”
बाबाक एकटा महीस हुनके हाि लगैत छल। जखन कखनो ओ केतौ चथ्म जाथ्मि तँ आि त भऽ जाइत रहए। महीस चुकैर-चुकैर कऽ जान दइपर उतार भऽ जाइत छल मुदा लगैत नथ्ह छल।
कमथ्ठताक संग-संग ओ आस्थ्वाक एवम् संस्कार सम्पन लोक छला। बाबाके एकटा डमर रहैन जे ओ बजबैत रहैत छला। कहैि जे ओ डमर हुनका महादेव देने छैन। हमरा लोकथ्वाक जन्मसँ पूवेसँ ओ डमर हुनका लगमे छल। बादमे ओइ डमर के महादेवक मन्थ्दरपर लेने गेला आ सायंकाल नचारी गबैतकाल एवम् महादेवक आरतीक समय ओ डमर कखनो बाबा स्वयं वा कखनो-कखनो आर बुढ़ सभ बजबैत छला।
बच्चा सभके बाबासँ बहुत थ्मनेह होइते अथ्छ। हमरो हुनकासँ बि थ्मनेह छल। सथ्दखन बाबासँ सटल रही। कमथ्ठताक संगे ओ बि तमसाह छला। ताथ्ह हमरापर ओ कथ्हयो, एको बेर नइ तमसेला। मुदा हमर अनुज कएक बेर बाबासँ माथ्र खा जाइत छला। ओना, तमसपर बाबा माथ्र तँ दैन मुदा पछाइत अपने कानए लागैि।
गाममे सुसम्पन पथ्वारक नायक छला- हमर बाबा। हुनकर थ्बआह समस्तीपुरक आसपासमे सोतीसलमपुरक शीलानाि झाक पाथ्मने, ओइ समयक पाच साए चानीक थ्मका दऽ कऽ भेल रहैन। बादमे ओ सभ

जनाढ़मे बथ्म गेल रहैि। बाबाक सार सभ गाहे-वगाहे अबैत रहै छला आ बहुत सम्मान पूवक बहुत-बहुत ध्वन धथ्म हमरा ओइठाम ओ लोकथ्म रथ्मतो छला। बाबाक हेतु छोट-मोट उपहार जेना- ‘चकू’, ‘सरौता’ इत्याथ्म नेने अबथ्मि न।

देवोत्ािन एकादशी ध्वन भगवानके जगौल जाइत छल। पीढ़ीपर रंग-थ्मरंगक अथ्मपन बना चार कात दीप जरौल जाइत छल, आ चाथ्म गोटे चार कातसँ मन्तोच्चारक संग भगवानक ऊपर ...... जाथ्मि आ िर धीरे-धीरे थ्माच्चा आथ्म जाथ्मि। पूजा पाठ होइत, पसाद थ्मतरण होइत। बाबा ऐ पूजाके बहुत शदा पूवक करैत छला।

अनन्त चतुदथ्मीक ध्वन भगवानक पूजा हमरा ओइठाम सभ साल होइ छल। सभ अपन-अपन घरसँ अनन्त आनैि, पसाद आनैि आ ओकर पूजा थ्मथ्म पूवक बाबा करैत रहथ्मि न।

“थ्मं मिथ्म, थ्मर थ्मथ्म

पाप्तो त्वंया, पाप्तो मया।”

उपरोक्त श्लोक कथ्म कऽ अनन्त सबहक पूजा होइत छल। वह स्ानिमे लखराम महादेवक पूजा होइत आ घरे-घरे लोक माथ्मक महादेव बना कऽ लऽ जाइत छल। ध्वन भथ्म पूजा होइत रहै छल। गाममे समय-समयपर नवाह, अष्टजाम सेहो होइत रहै छल। ऐ सभसँ बालक सभमे नीक संस्कार पिेत छल।

हमर थ्मतामह इलाकाक पथ्माष्थ्मत जमीन्दार छला। डॉ. सुभर झाजी कहैि जे ओ जखन घोिपर चथ्म कऽ कजथ्मसूलीक हेतु नागदह जाथ्मि तँ लोक डरे नुका रहैत छल। पथ्मवारक आथ्मिक सामि्थ्म बढ़बैमे हुनक जबरदस्त योगदान छल।

हमर गामक थ्मच्चेमे एक पोखैर अथ्म। पोखथ्मक पछवथ्मया भीरसँ कथ्माके हथ्म कऽ हमरा लोकथ्माक घर अथ्म। पोखथ्मक पुवथ्मया भीरपर

ओलार छल जैठाम माल-जाल बान्हल जाइत छल। घरेसँ केतेको बेर बाबा थ्थकैर कऽ ओलारपर चरबाहके थ्रादेश दैि। घरक शुद दूध, दही पचूर मातामे उपलब्ध करबामे ओलार आ ओइठाम थ्रन-राथ्रा खटैबला चरबाह थ्रयाजान क बहुत योगदान छल।

थ्रया-पुता सभके हमरा घरमे बहुत थ्र ाजित होइत छल। बाबू असगरे छला। तँए पथ्रवारमे नब बच्चा स्वागत योग्य होइत छल। ऐ तरहे हम सभ ९ भाए-बथ्रनक पैघ पथ्रवारक अंग भेलौ।

हमर गाममे पीच सि कि छेलै, चौबथ्रया छेलै, जेकरा ओइ समयमे 'कमाल चौक' कहल जाइत छल। कारण पुवाथ्र टोलक कमाल नामक एक बेकती ओइठाम पानक दोकान खोलने रहैि। तैसंग चाह आ मधुरक दोकान स्व. सुखदेव साहुक छल। ऐ दोकान सबहक अथ्राथ्रक्त ठेलापर दूटा आर दोकान िमश: खूजल। कथ्राके हथ्र कऽ थ्रकछु आर दोकान छल। चाह, मधुर ओतौ उपलब्ध छल। केतेको गोटे ओइठाम बैस कऽ गप्प माथ्र समय कटैत छला। छोट-मोट क्लब जका ओ काज करैत छल। ओइठामक गप-सप्प थ्रषय बदलैत रहै छल। एकबेर जबरदस्त थ्रवादक थ्रषय छल जे हमर गामक नाम 'अिर डीह' थ्रकए आथ्रक 'अिर डीह?'

..हमहूँ ओतए ई चचव सुनैत रही। बच्चामे हमरा होइत छल जे ई सभ अपन समय व्यिव बरबाद कऽ रहला अथ्रछ, मुदा आब ओकर उपयोथ्राता बुझा रहल अथ्रछ। सही मानेमे ओ बुढ़ सभके जीबाक बिका सहारा छल।

कथ्राये दूर हथ्र कऽ बुध आ रथ्र थ्रन हाट लगैत छल। तरह-तरह केर तीमन-तरकारी ओतए उपलब्ध रहै छल। चार कात थ्रकछु स्ि ायी दोकान सभ छल। हम सभ हाट कथ्र अपन घरक हेतु झोिा भथ्र-भथ्र तरकारी अनैत छेलौ।

गाम दऽ कऽ दूटा बस चलैत छल। एकटा एकटा उजरी बस जे लाहरघाटसँ मधुबनी आ दोसर हरलाखीसँ मधुबनी जाइत छल। दुनू बस बेनीपटी, धकजरी,अिर, रह्युका होइत मधुबनी जाइत छल। ई दुनू बस जँ छुट्ट गेल तँ श्वाय श्वक्शाक आर कोनो सवारी नह्न छल। श्वक्शा दारा गाम-घरक गरीब सबहक गुजर होइत छल। श्वक्शो चलब श्वया-पुताक मनोरंजन छल। कएटा बच्चा सभ श्वक्शापर पाछासँ लटैक जाइत छल आ दूर तक श्वक्शाक पछोर करैत छल बे-लजूलक तंग केनाइ छल आ श्वक्शाबला सभ कए बेर तंग भऽ कऽ झगिपर उतार भऽ जाइत छल।

हमर गाम बस पकिए हेतु दूर-दूरसँ लोक अबैत छल। जमुआरी, एकतारा, नगवास आद्व गामसँ लोक अिर आब कऽ बस पकि छला। िमश: बसक संख्या बढ़ल। सरकारी बस सभ चलए लगल। सीतामढ़ीबला रोडक बस चश्न गेलाक बाद तँ बसक संख्यामे बहुत वृद्व भेल आ आब तँ अिर छोट-छीन शहरक सुश्वधा सम्पन भऽ चूकल अछ्व। सिकक काते-काते सभ रंगक सैकि दोकान खुश्न गेल अछ्व। बैक, ए.टी.एम., िना, हाइ स्कूल इत्याद्व सभ भऽ गेल। आसपासक आन गाम-सभमे पका रोड बश्न गेल अछ्व आ अिर चौकक महत्व बढ़ते जा रहल अछ्व।

गामक पूबसँ कमला नहरसँ जोिल धार बहैत छल। ओइमे तखने पाश्न अबै जखन जयनगरक आसपास बनल िटकसँ पाश्न छोिल जाइत। भदवाश्वमे जखन चार कात बाढ़ आब जाइ तँ ओहूमे पाश्नक दशब होइत। ओइ समयमे हम सभ धारमे खेलाइत छेलौ। चौकसँ आगा बनल पूल, जैपर लोहाक घेराबा देल छल,ओइपर सँ बच्चा सबहक देखा-देखी कुद्व जाइत रही। सचमुच ई भयाबह छल मुदा सभ बच्चा देखसीमे एना करैत छल। कएक गोटाके ओइमे चोटो

लगैत रहइ।

पुलक आच्चा पाआक झिना छल। ओइमे तेजीसँ पाआ ऊपर-सँ-आच्चा खसैत छल। ओइमे िटक लगबैक सेहो बेवस्िा छल जइसँ जररत भेलापर पाआक बहाव आयंआत कएल जा सकए। ओइ झिनामे अपन गामक बच्चा सबहक संगे हमहूँ कुदै जाइत रही। ओतए पाआक बहाव बहुत तेज रहैत छल आ कएबेर बच्चा सभ गोता खेला बाद ५-६ मीटर दूर धआ बझ जाइत छल।

एकबेर हमरे गामक खुरलुच्च पैघ बच्चा हमरा झिनाक ऊपरसँ धकेल देलक, जइसँ हमर वामा आँखसँ ऊपर माने भाउ लगक कपार िछट गेल। तेकर बाद जे उपरागा-उपरागी भेल से की आखू।

गाम-घरमे चेचकसँ बँचबाक हेतु पाच कएल जाइत छल। ओइ समयमे एकरा धाआक िया बुझल जाइत छल। शीतला माइक आराधनाक स्वरपमे झाआ बजा-बजा कऽ पचआया गीत मसहूर छल। बहुत नेम-टेमसँ घरक लोक रहैत छल। कायिमक अनआम दन तेल चढ़ैत छेलइ। पचआयाके चढ़ौना देल जाइत छल। अखनो धआ ई दृश्य हमरा मोन पित रहैत अछ। वामा बाआपर दूटा नमगर-नमगर चेन्ह अखनो धआ दमान अछए।

पचआया सभ सरकारी कमआरी होइत छला जे लोकक धआक भावना एवं अजानताक िदा उठबैत पैसाक उगाही करैत छला।

ओइ समयमे गामोिन हएब बिका बात छेलइ। हमरा गाममे पाय: तीन गोटेके गामोिन रहइ। ओइमे गीतक रेकडगोल-गोल चका सन चढ़ा कऽ गामोिनक सुई चला दइ तँ गाना-बजाना होइक। बच्चा सभके कहल जाइक जे भोपूमे आदमी नुकाएल अछ। आ हम सभ ओइ आदमीके तकै छेलौ। हमरो ओइठाम एकटा गामोिन रहैक। ओकर पाटवसभके खोआ ओइमे नुकाएल आदमीके तकैत रहै छेलौ।

एक श्वन जेना-तेना श्वकछु पाइक इन्तजाम कऽ मधुबनी जा कऽ दूटा गामोिनक रेकाडव कीनलौ, जइमे एकटा छल 'तेरी प्यारी प्यारी सूरत को श्वकसी को नजर ने लगे' ससुराल श्वि ल्मक गाना छल। सन्दुकमे राखल गामोिनके खोश्व ओइमे रेकडके बजबैत श्वकयो देख लेलक। बात बाबू तक पहुँचल। मुदा कनी-मनी डाट-िटकारक बाद छोश्वि देल गेलौ।

हमरा गाममे दाहा अबैत छेलइ। बच्चा सभ ओइमे बि आनन्श्वत रहैत छल। हम सभ दाहाक नकल करी। करचीमे िूल आ आर श्वकछु खोश्व श्वए आ सभ बच्चा अपनामे संगोर कश्व कऽ अँगने-अँगने घुमी आ 'दमदश्वयाक दाहा हुसे..।' कश्व-कश्व संगे सभ बच्चा श्वाश्वआइत खूब आनन्श्वत होइत रही।

छोट-छोट बात सभसँ बच्चामे केतेक आनन्द होइत छल, तेकर ई उदारहण अश्व। बरखा, िाल-कादो, रौद, पाश्व-श्वहाश्वि इत्याश्व सभमे बच्चा आनन्द ताश्वक लैत अश्व। सच कही तँ वाल्यावस्िा ईशरत्वक बहुत समीप रहैत अश्व। अन्दक आनन्द यत, तत, सवत्र पस्िुश्वत होइत रहैत अश्व। हम सभ दरबज्जापर बैसल रश्वतौ, श्वलेट लऽ कऽ श्वखैक अभ्यास करैत, श्व एकटा पगला अश्वते बिबिाइत-

"जलखै, जलखै...।"

श्वकछु-ने-श्वकछु ओकरा श्वकयो-ने-श्वकयो खेनाइ दऽ दइ आ ओ चल जाइत। बहुत श्वन तक ओ िम चलल रहइ...।

बालमनपर जे गश्वि गेल से गिले अश्व। अदबागत शरी, माश्व, िाल-कादो सटने, बकर-बकर बजैत ओ अबैत-जाइत रहैत छल। कश्व नइ ओ के छल आ ओकर की अन्त भेल...।

भूतकालक घटनाके मोन पाित अनायास ओइ श्वाक्कपर श्वयान चल जाइत अश्व जे हमरा सबहक घरक सटले बच्चा सभके पढ़बैत

छला। बच्चा जँ कोनो गलती केलक, थकंवा सबक नञ रखह सकल, तँ घोरनक छता थदा ि-सभपर छोथि दै ि।

बाप-बाप थथथआइत बच्चा सभक स्मरण करैत अखनो रोमाथत भऽ जाइत छी। सोचल जा सकैत अथछ जे ओइ बच्चा सबहक की भथस रहल हेतइ। एकोटा बच्चा ओइमे सँ नञ पथढ़ सकल। बच्चाक माए-बाप सभ अपन बच्चा सबहक कल्याणक कामनासँ मूक दशक बनल रहल। आ सभ बवाद भऽ गेल।

“ई बसुधा काइ को नाही...।”

“ऐ पछवथया घरवारी। ऐ पुबथया घरवारी...।”

ई टनक अबाज छल एकटा थाखमंगाक। साए वीघा खेतक हमहूँ माथक छेलौ।

“ई वसुधा काहु थक नाही...।”

कएक बेर ओ ई बात थथथआ कऽ कहैत। हा िमे छ ि, आँथखपर टुटल-ि◌टल चश्मा, धोती पथरने, ओकरे ओढ़ने। ओ हमरे गामसँ सटल बेलौजाक छला। हमर थथयौत बाबी ओही गामक रहै ि। तँए हुनकासँ बेसी ओ अपेक्ष रखैत छल। ओकरा एक तम्मा चाउर देल जाइत तखने लैत, मुटी भथ नञ। जौ मुटी भथ देबाक थकयो चेष्टा करैत तँ ओ थाकरैत-भोकरैत चल जाइत। मास-दू-मासमे एकबेर अबैत आ भथ तम्मा भीख भेटलाक बाद ओइ थदन दोसर घर नञ जाइत। एहेन क ि अबाज, बेवहारक ओ भीखमंगा। अन्दाज ओकरा ओइ अवस् िमे अलग पहचान दैत छल। कथ नञ की भेल जे ओकर एहेन आथिक पतन भेल। थाश्चय ओ एकटा अलग व्यक्थात्मक लोक छल।

स्कूलक रस्तेसँ अल्हाक िलकक िप सुनाइत छेलइ। होइत जे दौ ि कऽ रस्ता तँइ कऽ अल्हा सुनए पहुँच जाइ। घर पहुँचते

बस्ता रश्चवतौ आ भाश्चातौ। माय कहैि-

“पश्चने श्चकछु खा तँ श्चाअ।”

माइक गप सुश्चाते कश्च श्चएैन-

“आश्च रहल छी।”

आ अल्हा सुनए पहुँच जाइ। हमरा गाममे अल्हाक बहुत रेवाज छेलइ। दुपहश्चया कटबाक ई उतर साधन छल। भश्च गामक लोक सभ जमा होइत आ ओ जोशा-जोशा कऽ िलकपर िप मारैत आ गबैत अल्हा-रदलक अनेकानेक पकरण सुनबैत-

“बाबू सुनो हमारी बात, एक श्चन की नही लिाई गाबत बीत जाय बारहम मास...।”

ऐ तरहक पाश्चा सभसँ गीतमय कििनक रश्चागर छल। बच्चा सबहक हेतु ओ अदुत आकषण छल। बेरा-बेरी केतेको दरबज्जापर अल्हाक आयोजन होइत रहै छल। ओ नट हमरा गाममे बहुत पश्चद भऽ गेल छल।

गाम-घरमे सामान्यत: लोकके ऐ तरहक मनोरंजन उपलब्ध छल। औझुका जका टेलीवीजन नश्च रहैक तश्चया। रेश्चयो सेहो केकरो-केकरो गाममे रहइ। तँए श्चकछु तँ चाही।

भाग- २

गाममे सामान्यत: लोक भोरे उश्च जाइत अश्च। हमर बाबा तँ भोरे उश्च कऽ सभ काज कऽ जन अढ़ा कऽ आश्च जाइत छला, तखनो चहल-पहल कमे रहैत छल। हमहूँ श्चात्य श्चायश्चात नवका पोखैरमे स्नान करी। ओइठाम भगवान श्चावक पंचमुखी मूश्चावछल, पूजा करी, जल िरी, व्यायाम करी, तखन घर आबी। स्नान करए जाइत रस्तामे रस्तामे हारमोश्चायमपर भजन गबैत मधुर अबाज सुनैमे अबैत रहैत छल। गामसँ उतर-पच्श्चम मन्श्चरपर ओ पुजारी छला।

ग्रामीक गामक। हुनक स्वरक मधुरता समस्त वातावरणमे अद्भुत आनन्द भरि दैत छल।
सूर्योदयसँ पूर्वहि हमर स्नान भऽ जाइत छल। पोखैरमे धराधर डुबकी लगाबी। जाड़ मासमे तँ यैहले-वैहले स्नान भऽ जाइत छल। गर्मीमे कनी-मनी हेलानाइ सेहो भऽ जाइत छल। ओइ समयमे कुटीपर आरतीक घण्टी-घण्ट टनाटन करए लगैत छल जे बड़ी काल धरि चलैत रहै छल। कुटी परहक बाबा बहुत संगही रहथि। ओ बहुत रास गाए पोसैथि। मुदा एक राति चुप्पे मन्दिरसँ समान सभ लऽ चलि गेला।
सन् १९६१मे सम्पूर्ण रामायण सिनेमा आएल छल। लॉडस्पीकर-पर गामक गाम पचार होइ-
‘देखना मत भुल जायेगा, शंकर टॉकिज- मधुबनीके विशाल पर्दे पर सम्पूर्ण रामायण...।’
गाम-गामक लोक उनैट गेल छल। ओ सिनेमा केतेक चलल से नहि गनल जा सकैत अछि। हमरो गामसँ केतेको लोक सम्पूर्ण रामायण देखए गेला। हमहूँ बाबूजीके केतेक बेर कहने हेबैन-
“बाबूजी, सम्पूर्ण रामायण देखए चलू।”
ओ आइ-काल्हि करैत रहला आ हम सम्पूर्ण रामायण सिनेमा नहि देख सकलौं। ओइ सिनेमाक गीत सभ अखनो हम सुनै छी तँ स्वत: अपन बाल्यावस्थामे विलीन भऽ जाइ छी।
“बदलो बरसो नयन की ओर से...।”
आ
“हम रामचन्द्र की चन्द्रकला से...।”
ई दुनू गीत तँ हमर बेर-बेर सुनैत रहै छी। मोन होइत रहैए एकबेर ई गीत अहूँके सुना दी। चलू फेर कखनो। जखन कखनो ई गीत सुनै छी तँ स्वत: आँखि नोरसँ भरि जाइत अछि।

सीता-जन्म श्रयोगे गेल, दुख दुख छोश्रि सुख कश्नयो ने भेल। जगतजननी मैश्रिली-सीतामैयाक दुखक वणबा करैत ई गीतमे भावनाक अदुत श्रस्ािट अश्छ। समाश्मक कुबेवस्ा एवं सामन्तवादी सोचक श्वरोह स्वरप अपन सन्तान दारा अन्यायक पश्वावाद करैत ई गीत-

“हे राम तुम्हारी रामायण तब तक होगी सम्पूणवनश्च...।

जब तक राज्य के श्चमाता, धोबी के बाद मे आयेगे,

भारत भश्वष्य की माता को धोखे से वनमे ठुकराऐंगे...।”

ऐ गीतक एक-एक शब्द रोमाश्चत करैत अश्छ। केतेक अन्याय सहए पिल श्मश्रिलाक ओइ यशस्वी सन्ताके। खाएर चलू आगू बढ़ी...। जीवन यातामे एहेन केतेको दृश्य अश्छ, जे मोनमे गश्रि जाइत अश्छ। जानकीक संग एना श्कए भेलैन। सोचैत-सोचैत रश्ह जाएब। मुदा उतर नश्ह भेटत। बाबूजी कएक बेर बजैत रहैि-

“श्वश्व वाम की करनी कश्ठन, जश श्मयश्ह श्कन्है बाबरो...।”

यदश्प समय बहुत आगा बश्ढ़ गेल अश्छ, लोकक श्वचारो बदलल अश्छ, तािश्प सीता सदृश अनेको मैश्रिलानी अखनो चौबश्टयापर न्यायक बाट तकैत देखल जाइ छैि।

श्माया-पुताक छोट-टोट बात ओकर भावी जीवनक श्दशा श्नदेश करैत अश्छ। हमरा बच्चामे खेलबाक बहुत जतन रहए। आस-पासक बच्चा सभके पकैि-पकैि कऽ खेलक हेतु इकटा करी। कएक तरहक खेल होइत रहइ, श्बनु खचक आ श्बनु कोनो झंझटक- जेना कबडडी, श्चट्टू, िूटबॉल, बालीबॉल आश्द। कबडडी तँ हमरा दरबज्जेपर होइत रहइ। स्कूलसँ अश्बते देरी भीर जाइत रही। िूटबॉल हमरा गाममे बहुत पचश्लत छल। श्वष्णुपुर टोलसँ सटल खेलक मैदान छल, जइमे बरोबैर खेल होइत रहइ। बादमे हाई स्कूल बश्न गेलाक बाद ओकरे मैदानमे खेल हुअ लगलै। पुरना समयमे हमर गामक िूटबॉल टीम

बहुत पसिन्न छल। हमर बाबू सेहो बहुआया खेलाइत छला। ओ कहैि जे खेलक चकरमे पढ़ाइ चौपट भऽ गेल। वाटसन स्कूल- मधुबनीक छात रहैि आ गेनखेलीमे जेतए-तेतए चल जाइत रहैि। हुनका केतेको मेडल भेटल रहैन। जँ आजुक समय रहैत तँ बाते अलग रहैत। शायद हुनका अपसोच नञि करए पड़ितैन। मुदा ओइ समयमे तेहेन परिस्थिति नइ रहइ। कलकता गेल रहैि तँ मोहनबगानमे गेनखेलीमे चुनाव भऽ गेल रहैन मुदा ििबे दिनक बाद गाम आपस चल एला। लोक सभ बुझेलकैन जे गाममे कोन कमी अछि जे अहा कलकता एलौ, आरो-आरो अनेको बात कहलकैन।

पछाइत गेनखेलीसँ हुनका तेतेक परहेज देखिऐन जे जँ हम कहियो खेलैत देखा जइतौ तँ पकैि कऽ लऽ अबैि। जेना खेलके पढ़ाइक शतु मानए लगला। परिणाम भेल जे हम खेलक मामलामे चौपट भऽ गेलौ आ सदा-सवदाक लेल खेल-धूपसँ विरत रहि गेलौ।

एकबेर केना-ने-केना पैसाक जोगार कऽ बिका गेन किनलौ। बच्चा सभ मिलि ओइमे हवा भरलौ। आ कुटीक भीरपर खेलए गेलौ। ओ जगह गामसँ किछु हटल अछि। तँए मनमे ई आशा रहए जे पकलि नै जाएब, मुदा केना-ने-केना बाबू ओतौ पहुँच गेला, हमरा देखते तमसाए लगला। खेल बन्द भऽ गेल। एवं पकारेण धीरे-धीरे हम ई सभ बिठाहे छोड़ि देलौ आ सोलहनी किताबसँ चिपकए लगलौ। ओना, ऐसँ पढ़ाइमे ि दा भेल, मुदा खेल-धूपसँ हटि जेबाक कारण कएकटा कमी सेहो भेल। हमरा बुझाबे ई ठीन नहि भेल, मुदा समय-समयक बात होइत अछि। ओइ समयमे जे भेलै से भेलइ। आब लोकक दृष्टिकोण बदैल रहल छइ। खेलक पति लोकक सकारात्मक रविसँ बच्चाक सवागीण विकास होइत अछि। समाजिक पक मजगूत होइत अछि एवं ओकर सोभावमे शहनशीलता ओ सामंजस्य करबाक भावना

बढ़ैत छइ। परीक्षामे नम्बर आनब लेबे सभ किछु नहि अछि। ओइसँ हटियो कऽ जीवनक अनेक पक्ष अछि, जैपर ध्यान देबाक जरूरी अछि, जइसँ जीवन बेसी सुखी ओ शान्त रहि सकैत अछि।

ई आश्चर्य जे माता-पिताक मनमे सन्तानक कल्याणक कामना रहैत अछि मुदा ओकरा अपन आकाक्षा किंवा मनोरथक प्रतिबिम्ब बनबैक प्रयास कएक बेर बच्चाक विकासमे बाधक भऽ सकैत अछि। भगवानक दृष्टिमे सभ मनुख एक अदुत रचना अछि आ सभ किछु-ने-किछु विशेषता, विशेष क्षमता लऽ कऽ अबैत अछि। परिवार एवं विद्यालयक दायित्व अछि जे ओकर विशेषताके बुझए आ ओइ दिशामे ओकरा विकासक समुचित सुविधा सेहो दइ। डाक्टर, इन्जीनियर बनि जाए, एतबे जीवनक अन्तिम सत्य नहि भऽ सकैत अछि।

हमरा गामसँ उतर-पूबमे चौकसँ कनिके हटि कऽ एकटा मन्दिर अछि। जेकरा कुटी सेहो कहल जाइत अछि। ओइठाम सावनमे सभ साल झूला जोर-सोरसँ मनौल जाइत छल। भजन-कीतनक गायन होइत छल। आस-पासक गामक लोक झाझमे ओइठाम एकटा होइ छला। कार्यक्रमक अन्तमे पसाद वितरण होइत छल। कुटीपर बाबाके बहुत रास गाए छेलैन। ओही गाइक दूधसँ पसाद बनौल जाइत छल, जइमे पयाप्त माता दूध आ मुटीपर चाउर दऽ दऽ पायस बनौल जाइत छल। धिया-पुताके ओ पायस खेला बाद स्वगक आनन्द भेटैत छल। बकिा ामिे पायस राखि कऽ बाटल जाइत छल। मुदा लोकके पायस बहुत कम मातामे देल जाइत छल। मुँहमे पायस जाइते देरी लगैत जे गलि गेल। स्वादिष्ट, मधुबर एवं मनमोहक। बच्चा सभ पायस लेबाक हेतु बारंबार प्रयास करैत छल। धका-मुकी होइत छल। वाजक (परसनिहार) हमरे टोलक रहैत छला। ओ सदिखन ऐ बातक ध्यान रखैत छला जे अपना-ले पयाप्त मातामे

पायस बँध्म जाए, मुदा लोकक आ मिण देख ओ परेशान भऽ जाइत छला। एक बेर तँ पायसक बटा लेने ओ पोखैरमे कुद्द गेला आ अन्दर पाआमे जा कऽ ताबरतोर पायस सुरकए लगला। चार कात गामक थ्मया-पुता ओ युवकगण ऐ दृश्यके देखैत रश्च गेला। हमहूँ पोखैरक कातमे आन-आन बच्चा सबहक संगे ऐ दृश्यके देखैत रश्च गेल रही, जे अखनो धश्च नश्च थ्मसराएल।

बाबू साइथ्कलसँ मधुबनी जाइत रहैत छला। कश्चयो-काल थ्कछु-थ्कछु िरमाइस कऽ थ्दएन। एकबेर पेन अनबाक हेतु कहलयैन। स किक कातमे ठाढ़ भेल ब ीकाल तक बाट तकैत रही जे बाबू पेन लऽ कऽ आश्च रहल छै ि। जेतेक साइथ्कल देखा प ैत, देखते होइत छल जे वएह आश्च रहल छै ि। केतेको काल धश्च बाट तकलाक बाद बाबू साइथ्कलपर अबैत देखेलै ि। ि ाकिल, अपश्मयात भेल बाबूजीके साइथ्कलसँ उतैरते पुछलयैन-

“बाबू, पेन अनलौ?”

बजला-

“जा! थ्बसरा गेल..!”

सुश्चाते देरी बहुत श्मराशा भऽ गेल रही। पछाइत वौसबाक हेतु बाबू अपन हा सँ ध ी थ्माकाश्च कऽ हमरा हा मे पश्चरा दै ि। शतवई जे घ ी देख कऽ पढ़ब।

मधुबनीमे सकथ्म आएल छल, राश्च-के ि ाकिस लाइट छो ि जाइत छल जे दूर-दूर तक देखल जाइत छल। बाबूके खुशामद कएल गेल। हम आ बाबू सकथ्म देखलौ। तरह-तरहक व्यायाम, खेल, धूप आश्च ओइ सकथ्ममे देखौल गेल। तेतबे नश्च, बाघक संग सकथ्ममैनक खतरनाक खेल सेहो देखौल गेल छल। गाम-गामसँ सकथ्म देखबाक लेल मश्चनो भश्च लोकक ि ाश्च मधुबनीमे लागल रहैत छल। सकथ्म

देख कऽ स्वगक आनन्द भेल रहए। तरह-तरह केर व्यायाम ओ खतरनाक खेल सभ एकटे देखबाक एहेन अवसर गाम-घरमे कम अबैत छल।

हम सभ बच्चा रही तँ हमरा गामक एक महान संत शपश्वा शामीक चचा होइत रहै छल। ओ गौर वणक ओजस्वी व्यक्श्वात्वक लोक छला। सन्यासी रहैि। हािमे दण्ड-कमण्डल रहैन। माय कहैि जे गीता पढ़ैत-पढ़ैत हुनका मोनमे वैराग्य उत्पन भऽ गेल आ ओ जवाश्वायेमे सन्यास लऽ लेला। ओ कश्चयो काल गाम अबैत छला आ अपन श्वाष्यक ओइठाम रहैत छला। गामक पुस्तकालय एवं नवका पोखैरपर लोक सबहक संग ओ धमवचचा करैत छला। ओइ समयमे गामक पश्वाष्श्चत बेकतीमे ओ गनल जाइत छला।

गामक पुस्तकालयपर तरह-तरह केर खेलक सामगी सभ सेहो लागल छल। श्वकछु श्चनक बाद एक-एकके ओ सभ टुटैत गेल आ िमश: नष्टभऽ गेल। पुस्ताकलयमे िािक समय तक बहुत गहमा-गहमी रहैत छल। अखबार, रेश्चयो अिबा पुस्तक सभ सेहो ओइमे छल। १९६२ ई.मे, जे चीन युदक समय छल, रेश्चयोसँ समाचार सुनबाक हेतु लोकक भीि लाश्वा जाइत छल। ऐ सभमे हमर गामक स्व. श्वशवम्भर झाजीक गंभीर योगदान छल। दुभाग्यवस ओ बेसी श्चन नश्च रश्च सकला। सन्१९६९ मे कमे उमेरमे हुनकर देहावशान भेलाक बाद ई सभ गश्वाश्वश्वा नष्ट भऽ गेल।

गाम-घरक आस-पास एक-सँ-एक पश्वाभाशाली बच्चा सभ छल। केकरो स्वर अदुत छेलइ तँ श्वकयो पहलमानीमे श्वापुण छल। श्वकयो मधुर गायन आ वादयंतक पश्वा आकश्वत्ता छल तँ श्वकयो श्वकछुमे...। मुदा पश्चवार वा स्कूलमे ऐ सबहक श्वकासक संभावना नगण्य छल। परीक्षामे रश्च-िश्च कऽ नीक नम्बर अनलौ तँ बि नीक अन्यि

सभ व्यिक्त! एहेन बच्चाके नकारा घोिषत कऽ देल जाइत छल। पिरणामत: कएटा बच्चा जे जीवनक केतेको क्षेत्रमे अगगामी भऽ यशस्वी भऽ सकैत छला,मुदा ओ िवषादपूणव जीवन जीबैले मजबूर भेला।

हमर गामेक एहेन कएटा बच्चा छल िजनकामे गेबाक अदुत सामर्थ्य छेलैन। िबना कोनो पिशक्षण लेने जे ओ मैिथली गीत सभ गबैि से बुझू सुनिते रिह जइतौ। मुदा हुनका सभके कोनो पकारक संरक्षण, पिशक्षण निह भेल। सभ कलान्तरमे गाजाक सोट लगबैत अपन-अपन स्वरके नष्ट केलैन..!

बच्चामे हमरो हारमोिनयम सीखबाक ललक जगल। जेना-तेना पैसाक पवन्ध कऽ मधुबनी जा कऽ अपनेसँ एकटा हारमोिनयम कीिन अनलौ। गाममे एक गोटे हारमोिनयम बजाएब जनैत छला। हुनकासँ हारमोिनयम सीखए लगलौ िक गामक बुझनुक लोक सभ हमरा बाबूजीके आिब िशकाइत केलकैन। िशकाइतो एना केलकैन जे 'ई बच्चा तँ दुिर भऽ रहल छैि। केहेन बिढ़या पढ़ैत छला। आ तैपर सँ िधयान हिट गेलैन..!'

पिरणाम भेल जे हम हारमोिनयम सीखब छोिड़ देलौ। हलािँक ि ि-बहुत जे हारमोिनयम सीिख सकलौ, ओ अखनो अिछते अिछ। मुदा तेतबे...। जे िक िकछु लय िनकािल सकैत छी।

मुदा अखनो धिर हम ई नइ बुिझ सकलौ से कोन तरहे हारमोिनयम सीखब खराप होइत। खाएर, लोकक सही सोचक अभाव छल जे बच्चा सबहक भिवस हेतु कएक बेर बहुत अिहतकर भेल। खाएर जे हौउ, मुदा बेटाके पढ़बै-िलखबैमे हमर बाबूके बहुत र िच रहैन, जे िक हिरदम उत्सािहत करैत रहैत छला, आ से मात हमरे निह, गामक आनो-आन बच्चा सभके।

धताजी जइले पेन्शन करैत रहैि, तेकर िदा तँ भेबे कएल आ भाइए रहल अछि। परीक्षा सभमे लगातार हमरा नीक नम्बर आएल। मुदा कहक माने जे परीक्षाक नम्बर अनबाक अछितिक्त जीवनक अन्य आयाम धिक जेकर बुझबाक, धकासक गाम-घरमे कोनो जोगार ने तश्रया छल आ ने आइये भऽ सकल।

'भाग्ये ललखा सवत्ता, न थिदा न च पौरष:'

कहल जाइत अछि जे धधाता जन्मसँ पूवे मनुखक भाग्य ललखि कऽ पठा दइ छैि। हमर स्कूलक पयोगशाला कक्षमे उपरोक्त पाठ मोट-मोट अक्षरमे ललखल छल। जीवन याताक िममे घटत नाना पकारक घटना एवं अनका-अनका जीवनक ति्य धवस देख, सुझा ई कि नि एकदम सत्य लगैत अछि। एक आदमी जनैमते जीवनक समस्त सुख-सुधधा सम्पन्न भऽ जाइत अछि, दोसर तरि केतेको एहेन लोक छैि जे जीवन भरि जीबाक हेतु संघषव करैत रहि जाइत अछि। तेकर माने ई नहि जे भाग्यपर छोधि कऽ आदमी कतव्यहीन भऽ जाए, आ कामना करैत रहि जाए जे जे भाग्यमे हेतै से हेतइ। पश्रयास तँ करब उधचते अछि, मुदा ई बात माधन कऽ चलू जे सभ धकछु अपने मोनक नहि भऽ सकैत अछि। जँ अपना मोनक हो तँ नीक आ जँ अपना मोनक नहि हो तँ आर नीक। कारण ओइमे ईशरक इच्छा सम्धमलत रहैत अछि। बेचैन रहलासँ बढ़या अछि जे धसमधतके स्वीकार कए मनके शान्त राखल जाए, कारण शान्त मनमे धकासक अनन्त सम्भावना रहैत अछि।

बच्चाक दुधनया माए-बाप, चाचा-चाची धकंवा आस-पासक अन्य धनकट सम्बन्धीक इदवधगदवधसमटल रहैत अछि। ओकर सम्पूणवव्यक्धतत्वक धनमाणमे पधरवार एवं पधरवाधरक पधरस्धिधतक गंभीर पभाव होइत अछि। आस-पासमे रहधनहार लोक एवं पधरवेश सेहो ओकरा पभाधवत करैत

अछि। अर्थात रूपसँ हम ऐ मामलामे भाग्यवान रही। माता-पिता एवं पितामहक अद्भुत स्नेह एवं समर्थन हमरा भेटल।

९ भाए-बहिनक पैघ परिवारमे कखनो ई नहि भेल जे ककरो ककरोसँ कम महत्वपूर्ण छल। सभपर बरोबैर ध्यान देल गेल। हमरासँ ज्येष्ठ पाँचटा बहिन छेली। हुनका लोकनिक बिआह-दान एकटा दीर्घकालीन घटना जकाँ छल। १०-१२ वर्ष लगातार घरमे बिआह, कोजागरा, मधुश्रावणी, द्विरागमन सहित नाना प्रकारक विध-बेवहार होइत रहैत छल। एतेक भारी पारिवारिक जिम्मेदारीक अछैत माय-बाबू बहुत आशावादी एवं आस्थावान छला। हमरा निरन्तर आगू बढ़बाक हेतु प्रेरित करैत रहला। गामक लोकक एवं परिवेशक सकारात्मक रुखि सेहो हमरा उत्साहित करैत रहल। ओ सभ प्रणम्य छैथि, जिनकर स्मरण करैत-करैत हम ओइ गामसँ दूर रहितो सदिखन अपनाके ओहीठाम अनुभव करैत रहै छी।

c

ि ध

मनुख भावुक पाणी होइत अछि। दैहिक आवश्यकताक पूर्त्तिक संगहि संग ओकर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताक पूर्त्ति सेहो आवश्यक अछि। जखन कियो केकरो दैहिक वा मानसिक कष्ट दैत अछि तँ ओकरा मोनमे ि धक पादुभाव होइत छइ। अतएव ि धक हेतु आवश्यक थिक जे कियो केकरो कष्ट पहुँचबैक संगहि ईहो आवश्यक जे कष्ट पहुँचेनिहारक पता होइक। अजात बेकती दारा उत्पन कष्ट किंवा स्वयं अपनेसँ भेल कष्टपर ि ध नहि होइत अछि। उदाहरण स्वर प अगर दाढ़ी बनबए-काल गालक चमरी कटि जाए, खून बहि जाए वा हा कि लोढ़ा धोखासँ पैरपर खसि पिए आ पैरक आँगुर ि कुचा जाए तँ ि ध नहि होएत अपितु प िताप होएत जे एना बेसम्हार दाढ़ी नहि काटक छल वा लोढ़ाके सम्हारि कऽ रखबाक चाही छल। किंतु जँ कियो आन हमरा पा िरसँ मारए किंवा मारबाक उपि मो करए तँ तामस धि दय भय जाएत।

ि धक भोजन थिक विवेक। विवेके रहलासँ मनुख जानवरसँ ि राक अछि। मनुख सोचि सकैत अछि। नीक-बेजाए केर विचार कए सकैत अछि। किन्तु ई सभ काज विवेकसँ उत्पन होइत अछि। मुदा जाहि मनुखक विवेक नष्ट भऽ जाइत छै ओ बहुत रास अनुचित का ि बजैत अछि एवम् कमवआ अकमक बीच भेदभाव बिसैर जाइत अछि। ि ध अबिते नीक-सँ-नीक लोकक विवेक मरि जाइत छइ। आकृति बिगै ि जाइ छै एवम् रक्तचाप बढ़ि जाइ छइ। ि धावेगमे मनुख ग बि ि काज कऽ लैत अछि। अ ि बअन ि क भेद बिसैर जाइत अछि आ तँए सोभाविक र पे विनास ध्वंस अगसर भऽ जाइत अछि।

ि धक पवल वेगमे मनुख ईहो नहि सोचि पबैत अछि जे ओकरा जे

कष्ट पहुँचौलक तेकरा एहेन अश्वापाय रहइ वा नश्च। ऐपकारक सभसँ नीक दृष्टान्त चाणक्यक ओइ आचरणमे भेटैत अछ्छ जखन श्वकओ कुश गश्रि जेबाक कारणे सभ कुशके उखाश्च ओकरा जश्चमे धोर देबए लगला।

केतेक बेर एहेन होइत अछ्छ पारिसँ चोट लगलासँ लोक पारिपर चोट करए लगैत अछ्छ। एहेन ाधिके जािध कहल जाइ अछ्छ। कारण ाधीके एतबो अन्दाज नश्च रहै छै जे ओगलत स्ािनपर गलत रपे ाधि कऽ रहल अछ्छ।

ाधिक जन्म कष्टसँ होइत अछ्छ। सोभाग्यक अछ्छ जे जेकरामे सहनशीलता जेतेक बेसी हेतै तेकरा ाधि तेतेक कम हेतइ। वतश्चान समयमे बढ़ैत महत्वाकाक्ष एवम् वैजाश्चाक श्वकासक कारणे पारस्पश्चक टकरावक संभावना सेहो बश्च गेल अछ्छ। जखन एके वस्तुक हेतु कएक गोटे पयतशील हेता तँ संघषव अश्चावायव भऽ जाइ छइ ता असिल रहश्चाहार बेकतीके ाधि होएब सोभाग्यक।

ाधिमे लोकक आत्मसंयम समाप्त भऽ जाइ छइ। ऐ अवस्ािमे लोक बहुत रास अन्ट-सन्टबाश्च जाइत अछ्छ। पश्चणामस्वर प पुरान-सँ-पुरान सम्बन्ध ओ श्चातता नष्ट भऽ जाइ छइ। तँए उश्चात जे तामसमे गुम्म भऽ जाइ। जँ श्वकयो तमसाएल अछ्छ तँ ओ अन्ट-सन्ट बाश्च सकैत अछ्छ, जे सुश्च हमहूँ उतेश्चात भऽ सकैत छी। पश्चणामत: माश्च-पीट वा एहने कोनो अशुभ काज भऽ सकैत अछ्छ। तँए उश्चात जे जेतए उतेजना होइक तैठामसँ ससैर जाइ जइसँ अनगश्च काि ओ काज देख हमरो उतेजना नश्च भऽ जाए।

ाधिक सीश्चात ओ संयत पयोग लाभकारी भऽ सकैत अछ्छ। माश्च श्चाअ जे श्वकयो गोटे अहाक टका रखने अछ्छ आ लाख पयासक अछैतो ओ टका आपस नश्च कए रहल अछ्छ तखन ाधिक पयोग

केलासँ भऽ सकैत अछि ओ बेकती टका आपस कए दैए। परन्तु एहेन लाभकारी ोधिकरबामे आत्मसंयमक पयोजन होइत अछि कारण ोधि करैत-करैत जँ सीमाल्लंघन भऽ गेल, बहुत रास तामस भऽ गेल तँ परिणाम अनिष्टकारी भऽ सकैत अछि। टका तँ बुझियौ जाएत संगे ऊपरसँ मारियो लागि सकैत अछि।

ोधिक पयोग पतिकारक हेतु सेहो होइत अछि। जँ रेनसँ याता करैत ककरो धका मारि दैत अछि किंवा रेनसँ धकिया कए नीच्चा खसा दैत अछि तँ ओकरापर किछु कऽ तामस भऽ जाइत अछि। परिणामस्वरप हमहुँ ओकरा कोनो-ने-कोनो दण्ड देबए चाहैत छिऐ। यदपि ऐ बातक कोनो संभावना नहि रहैत छै जे ओइ आदमीसँ दुबारा कहियो भेट होएत वा नहि।

ोधिक पयोगयदा-कदा आत्मस्वाभिव सेहो होइत अछि। कारण जँ ककरो बेकती अहाके कोनो पकारक कष्ट पहुँचा दैत अछि तँ अहाक सोभाविक इच्छा रहैत अछि जे दुबारा िर एहने कष्ट नहि हो। तँए ओइ बेकतीपर ोधिक पयोग कए घटनाक पुनरावृत्तिके रोकबाक पयास कएल जाइत अछि। ऐ पकारसँ कएल गेल ोधिमे आत्म रक्षाक भाव बेसी होइत अछि।

ोधिक शिकार नीक-सँ-नीक लोक भऽ जाइत अछि। कोनो आवश्यक नहि जे अहा कोनो गलती केनहि होइ आ तही कारणे अहाके कोपभाजन होमए पलि हो। असल बात तँ ई छिक जे ोधित मनुखक दृष्टिमे जँ अहा कोनो पकारसँ कष्ट पहुँचेबाक चेष्टा कएल अछि तँ ओ ोधित भऽ जाएत। एहेन परिस्थितिमे ोधिसँ बँचबाक एक मात साधन सहनशीलता छिक।

ोधि दुखक चेतन कारणक साक्षात्कार वा पतिजानमे होइत अछि। अतएव जेतए कायवकारणक सम्बन्धमे तुष्टि होएतैक ओतए ोधिमे

धोखा भऽ सकैत अछि। दोसर बात जे िध केनिहार लोक जेमहरसँ िध अबै छै तेम्हरे देखैत अछि। अपना दिस नहि देखैत अछि। िधक ई पवल इच्छा होइ छै जे जे बेकती ओकरा कष्ट देलक अछि ओकर नाश होइक मुदा ओ कखनो ई नहि सोचि सकैत अछि जे ओ जे कऽ रहल अछि से अनुचित छै, किंवा तेकर की परिणाम हेतइ।

कखनो-कखनो लोक िधमे अपने मा िपटकए लगैत अछि। तेकर कारण जे हुनकर ऐ काजसँ हुनक निकट सम्बन्धी, जिनकासँ ओ िद रहै छैि, हुनका कष्ट होइ छैन। तँए हेतु िधमे जँ कियो अपन मा िपटकए किंवा स्वयंके कहुना कष्ट दिअए तँ बुझी जे ओ कोनो अपने बेकतीपर कुद अछि।

कोनो बातसँ खौझाएब िधक एकटा र प छिऐ। एहेन बेकती मानसिक र पसँ रोगगस्त होइ छैि। ओ सामान्यत: छोट-मोट गिबि भेलासँ खौझा जाइ छैि। केतेको बुि-बुिनुसके अहा कोनो गप्प कहियौ, सुनिते देरी ओ ठेगा लऽ कऽ दौग जाएत। ..िधक ई र प सामान्यत: वृद वा रोगीमे देखना जाइत अछि।

चाहे जे हो एतबा तँ निर्विवादे जे िधक परिणाम सदिखन नीक होइत अछि। सामान्यत: िधमे समस्याक समाधान हेबाक बजाय नव-नव समस्याक पादुभाव भऽ जाइत अछि। िधक आवेगमे कएल गेल गलती केतेको-बेर मरण-पयन्त पश्चातापक कारण भऽ जाइत अछि। अतएव िध सबहक लेल घातक होइत अछि। ऐसँ अध्यात्मिक पगतिमे व्यवधान तँ होइते अछि संगे सासारिक विकास सेहो अवर द भऽ जाइत अछि। अस्तु िध अवश्य त्याज्य थिक।

दिनाक- २४.०१.१९८८

बी.एन. लाल दास

विचरि वाली भौजी

लाल काकी , नाति के कहैत रहथिन्ह जे एतेक टा छः घरवासी वाला आंगन मे विचरिवाली कनिया के त्याग आओर बलिदान याद राखय योग्य अछि।
नाति पुछलखिन्ह - मा , की केलखिन्ह,भाभी।
लाल काकी बडड पुरान घटना सभके कहँ लगलखिन्ह- जे विचरि वाली कनिया एहि परिवार मे आब सं पूबविधवाक जिंदगी जी रहल रहैि। वोकर नाम जस्सी रहैह।
एक दिन लाल कका ककरो दालान्त मे गेल रहथिन्ह। हाल चाल पुछैत समय पता चललैन्ह ,जस्सी के बारे मे, ज़े कतेक कठिन सा जीवन बिता रहल छैक। जस्सी के पिताजी, एतबे कहलथिन्ह - ओकरा भाग्य मे इहा लिखल रहैक। जिंदगी भार बनि गेलैक। हम ककरा की कबैक जे हमर विधवा बेटी के हाि पीला कर । दालानो पर बैस नही देत। एक लोटा पानि त बहुत दूरक बात अछि।
लाल कका काि सुलझल आओर उदार विचारधारा के एक सम्मानित लोक छैि। ई सुनि हुनक हदय हहैर गेलैन्ह। सामाजिक व्यवसािक आओर सोच पर तरस ऐलैन्ह। हम सभ 21 वी सदी मे छी,समाजक सोच 19वी सदी के छैक। हम अपने घर सं शुर करब विधवा विबाह। हम अपन घर मे विधवा के बियाहब। हमर भाितज सं बढ़िया के हेतैक। लाल काकी ई सुनि स्तब्ध भ गेलिह।
लाल ककाक ई निणय पर गाम मे खलबली मैच गेल। भात भतबरी के निणय समाज दारा सुनाओल गेल। लाल काका टस सा मस

नञि भेलाह। पंचायत लागल,लाल कका स्पस्ट कहलखिन्ह - अहा सभ भात-भतबरी कर ,कोनो बात नञि। हमरा सभ के बाधा ञि अ, कोनो बात नञि, मुदा एक विधवा के नया जीवन दे मं मे कोनो कमि नञि रह देबैक। हमर इहा पारिवारिकता अछि।

पारिवारिक सभ लोक ि गुआ मे जमा भेल। बैभव सेहो आयल रहैत।लाल कका बिना लैप लपट के पुछलखिन्ह, बैभव , अहाक की विचार?

बिना संकोच केने बैभव अपन विचार पकट केलखिन्ह- अहा सभ जे करबैक,हमरा सहषवमंजूर अछि। विवाह शुभ मुहूतवमे भय गेलैन्ह। आई वो विधचि ी वाली कनिया छैि ।

विधचि ी वाली कनियाक नया जीवन शुर भेल कािी साल बीत गेलैन। सभक साि केना बिल क रहल जाइत छैक,केना पेमक गंगा परिवार,समाज मे बहै, वो इक मिशाल मानल जाइत अछि।

बैभव के नीक नौकरी नही रहैह, एक स्कूलक नौकरी। परिवार मुश्किल से चलैत रहे। लाल काकी के नही याद रहैह जे कनियो किछु मागने हेतैन्ह। जे रहै, भगवानक पसाद माि चलैत रहथि न। बैभव के याद छैन्ह जे छोट बहिनक बिबाह मे जस्सी अपन सभ गहना गुरिया के बेच क नीक बिबाह मे सहयोग केने रथिन्ह। आई हुनका कोनो गहना गुरिया,किछु नही छैन्ह।गोल्डप्लेटेड गहना हुनक सौन्दयवबढ़ा रहल छैन्ह।वाहि ठाम नारि के गहनाक कोई कमी नञि। कोनो ईर्ष्या, जलन के नामो निशान नञि। जिंदगी सा कोनो शिकवा-शिकायत नञि।

बैभवक आंगन मे दू बच्चा सभ के दिल जीतने रहैछ।

समाजक कोनो पकारक बीमारी,हॉस्पिटल के कोनो काज मेहिला के होइअन्हि,जस्सी राति भरि समय द क लोक सभक दिल जीतने

रहथिन्ह।

जस्सी अपन आभार लाल काकी,लाल कका आओर पूरा परिवार के दैत नही थिकैत छैथि। आई समाज मे इज्जत, सम्मान सभ लाल कका के उच्च विचारक परिणाम छल।

डॉ. शिव कुमार पसाद

दलित साहित्यके आन साहित्यसँ फुटकेबाक पयोजन

साहित्य तँ साहित्ये होइ छइ। गद वा पद जतबा रचना अछि वा सिरजल जा रहल अछि तइमे कोनो एक विषयके फुटकाएब ने तँ असान अछि आ ने हमरा बुझने उचित। शीषक दऽ देब बड़ असान छै परन्तु जखन विषय-वस्तुक अनुसन्धानमे डूमए पड़ै छै तखन बुझना जाइ छै जे एक दृष्टिके रखबापर दोसर दृष्टि, आ दोसर रखलापर तेसर दृष्टिक पक्ष अत्याचार हुअ लगै छइ। साहित्यमे जखन स्वार्थक वचस्व बढ़ए लगै छै तँ भाषा-भाषाक बोल वा नारा ऊपर उठए लगैत छइ।

दलित साहित्यके आन साहित्यसँ फुटकेबाक पयोजन आइ किएक भऽ रहल छइ? हिन्दी साहित्यमे सेहो ई आन्दोलन उठल रहइ। किछु मुटी भरि लोक साहित्यक मंचपर अपन नाओं कमाइले ऐ तरहक पयास कएला। स्थिति एतए तक पहुँच गेलै जे किछु समाट पेमचन्दोक रचना जरा देल गेल।

"पेमचन्द दलित साहित्य नहि लिखला, ओ दलितके अपमान केला।" ऐ तरहक अनेकानेक घटना आ वक्तव्य मिडियामे अबैत रहल। कोनो-कोनो आलोचक रचनाकारके ऐ हल्लामे शामिल कऽ लेल गेल। मुदा आइ हिन्दीमे केतौ 'दलित विमशक' नाराक पयोजन देखबामे नइ आबि रहल अछि।

साहित्य राजनीति नै छिऐ। साहित्यमे राजनीति विषय-वस्तु भऽ सकै छै मुदा राजनीतिके साहित्यमे पवेश भेने साहित्य मरि जाइ छइ। धर्माया आ पालकक बियारी नै छी साहित्य..! साहित्यक

विस्तृत संसार छइ। ऐ साहित्यके बाभन, कायस्थि, राजपूत, भूमिहार वा पछिा, अत पछिा, अनुसूचित जाति आदिक साहित्यमे विभाजित नहि कएल जा सकैत अछि। तँए हमरा बुझने दलित साहित्यके िटकेबाक कोनो पयोजन नहि।

मैथिली साहित्यक एकटा सभसँ बिका दुभाग्य रहल अछि जे किछु लोक साहित्यके अपन खानगी सम्पैत बुझि लेलथिन। हुनका सभके भेलैन जे जँ कही ई भाषा अनका हाथिमे चलि जाएत तँ हमर हाथि हेरा जाएत। परिणाम भेलै जे उमेरक हिसाबसँ मैथिली दुबराइत रहली। पजरा सटैत गेलैन, डार झूकैत गेलैन। ऐ रपे भाषाके पकिड़हार सबहक पीढ़ी-दर-पीढ़ीक हाथिमे नचार भऽ बिलखैत रहली। भाषा पौती-मौनीक वस्तु नहि। आकि मुनहर कोठी वा बखारीक अनाज नहि। ई ककनको मरौसी डीह वा खेत नहि।

भाषा साहित्य तँ झि-झि बहैत झिना थीक। साहित्यक धार होइत अछि जे मात अपन ककनछैरेटा मे नहि वरन् ककनछैरक संग-संग अपन बान्हके तोिड़ केतौ-सँ-केतौ धरि हृदय रपी भूलोकके आप्लावित कऽ दैत अछि।

भाषाके सुनब, पढ़ब, लिखब आकि बाजबपर जे एकाधिकार बुझैत छला ओ हमर मैथिलीके मात जीआ कऽ रखने छला। कागजक किछु पनामे सिकुिल प्लाष्टिक साथि जका जीवित भाषाके स्ती विमशत्र वा नारी विमशत्र दलित साहित्य वा दलित विमशत्र पछिलि साहित्य वा पछिलि विमशवअिवा कोनो जाति वा बेकतीक विमशसँ बाटलासँ साहित्यक विकास अवरुद भऽ सकैत अछि।

दलित विमशके िटकेबाक आधार की?

(क) जे दलित आक-धिूर लिखने जाइ छैथि सभके साहित्य मानि लेल जाए?

(ख) जे दलित, दलित पातक लिखल साहित्यक दृष्टिसँ कऽ रहल छैथि ओकरेटा दलित साहित्य मानल जाए?

(ग) साहित्यक विविध विधा यथा- नाटक, एकाकी, उपन्यास, कथा, कविता, आलोचना, समालोचनादि सभके अलग-अलग दलित साहित्यक खानामे राखि देल जाए?

(घ) उच्च वर्गक रचनाकार द्वारा दलित चिन्तनके दलित विमर्शमे राखल जाए?

(ङ) उच्च वर्ग द्वारा प्रकाशित साहित्यके दलित साहित्यमे कोनो स्थान नहि देल जाए?

(च) उच्च जातिकजे दलित पात छैथि, हुनकासँ सम्बद्ध साहित्यके दलित साहित्यमे राखल जाए अथवा नहि?

ऐ तरहे दलित साहित्यके आन साहित्यसँ पृथक्केबाक लेल अनेक विवादित विमर्श उपस्थित भऽ सकैत अछि। ओना एकटा विद्वान दलित विमर्शक मादे किछु नामक अनुशंसा केला अछि जे निम्नवत अछि[1]-

“विलट पासवान विहंगम, डॉ. बुचर पासवान, डॉ. महेन्द्र नारायण राम, डॉ. फूलो पासवान, डॉ. तारानन्द वियोगी, डॉ. सुभाष चन्द्र यादव, डॉ. सत्य नारायण मेहता, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ. लालपरी देवी, डॉ. अमोल राय,डॉ. रविन्द्र कुमार चौधरी, डॉ. जयनारायण यादव, डॉ. अशोक कुमार मेहता, डॉ. मेघन प्रसाद, डॉ. देव नारायण साह,डॉ. राम सेवक सिंह, श्रीमती विभा रानी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री उमेश मण्डल, श्री राजदेव मण्डल, डॉ. भुवनेश्वर गुरमैता, श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर, डॉ. रामावतार यादव, डॉ. अभय कुमार, सुश्री मंजू कुमारी, डॉ. ओम प्रकाश भारती, श्री कपिलेश्वर यादव, श्री वीरेन्द्र कुमार यादव, श्री मोहन यादव, श्री नन्द विलास राय, श्री

कश्यलेश्वर राउत, शी उमेश पासवान, शी रामदेव पसाद मण्डल 'झार दार', शी राम पवेश मण्डल, शी संजय कुमार मण्डल, शी अच्छेलाल शास्ती, शी राम श्यलास साहु, शी बलराम साह, डॉ. श्याव कुमार पसाद, शी अश्यिलेश मण्डल, शी सुधीर कुमार 'सुमन' शीमती मुनी कामत, शी ललन कुमार कामत, शी ागु लाल साहु, शी उपेन्र पसाद यादव।''

श्यकछु रचनाकारक नाओं ओ रचना श्यामवत् अश्छ जे हमरा श्यचारे दश्यात श्यमशक सूची पस्तुत केश्याहार समीक्के नजैरपर जनु नश्य पलैन अश्छ। हमरा बुझने ऐ कोश्यमे घनेरो कश्य-कािकार छैि, जइमे श्यकछु श्यामवत् अश्छ-

(1) सवश्यी श्यभूश्य आनन्दक- 'स्वाद', 'जानवर', 'काठ' आ 'खुल्ला' कि।[2]

(2) अनमोल झाक- 'चेतना', कुमार मनोज काश्यपक- 'जरल पेट', 'जीतक आगू', डॉ. शम्भु कुमार श्यांह रश्यत-'जेठ' आ 'पूस', 'गरमी' आश्य।[3]

(3) मनोज कुमार कणव 'मुनाजी'क कि- 'श्यश्यि', 'आरश्यक्त', 'काट' आश्य।[4]

लश्यातक 'पृ्वीपुत', धूमकेतुक 'मोिपर', रामानन्द रेणुक- 'दूध-ूल', धीरेश्वर धीरेन्रक- 'कादो ओ कोयला','ठुमश्यक बहू कमला', मश्यापदक उपन्यास- 'राजा सलहेस', 'नैका बश्याजारा', कि- 'ूटपाि', श्याश्य रे रश्यत-'पटाक्षेप', श्यदानाि झा श्यश्यतक- 'श्यप्लवी बेसरा', 'कौश्याश्याया', गजेन्र ठाकुरक- 'सहस्त शीषा' आश्य-आश्य।

आइ सभसँ पैघ पश्न अश्छ, साश्यत्यके िटकबैबला राजा पधानमंती वा मुख्यमंती ति हुनक मन्ती मण्डलक सदस्य श्यकनका मानल जाएत। हम जे कही ओ अहा माश्य लेब? आश्यक अहा जे कहब ओ

हम माथ लेब? नञ..!

हमर मैथिली भाषा आ साहित्य अखनो अल्प विकसित अछि। साहित्यक विकास हेतु संसाधनक धोर संकट अछि। मुटी भरि लोक अपन कैचा-कौडि जोडिया-जोडिया किछु पोथिक पकाशन करबा रहल छैथि। पकाशक र पैआ लऽ कऽ पोथि तँ पकाशित कऽ दइ छथिन मुदा पोथिक पचार-पसार आ बिक्रि केन्र आदिक असुविधासँ अथवा अपन भाषाक पोथि खरीदबाक अरुचिक कारणे हमर मैथिली सवव्यापी नञि भऽ पाबि रहल अछि।

संगे-संग ऐ आलेखक माध्यमसँ ईहो आगह करए चाहै छी जे जइ बेकती वा समूह दारा मैथिली साहित्यक सेवा आकि विकासक कायव भऽ रहल हो हुनका सम्मान देल जाए, हुनका सहयोग कएल जाए। साहित्य सबहक सम्पैत छिऐ। साहित्यके बेकती-विशेष, वगवविशेष आकि जाति विशेष वा समुदाय विशेषक बीच विभक्त नञि कएल जाए। जय मिथिला- जय मैथिली।

---

[1] मैथिलीक दलित साहित्यकार, आलेख- 'सम्पादित' दलित साहित्यकारक सूची- डॉ. शिव कुमार यादव, सम्पादित अध्यक मैथिली विभाग, मारवाडि कौलेज, भागलपुर। यू.जी.सी. संपोषित संगोष्ठीमे पठित आलेखक संचयन- पृ. १६६-१७०

[2] कथि संगह- काठ (विभूति आनन्द)

[3] विदेह विहनि कथि संगह- शुति पकाशन दिल्लीसँ पकाशित। पृष्ठ- 82, 83, 105

[4] विहनि कथि संगह- 'पतीक' (मनोज कुमार कणवमुनाजी) पृष्ठ- 60, 45, 39

ओम पकाश झा

थ्यहश्च कि- थ्यछोहक नोर

पश्छला साल कोथ्यंग करै लेल बेटीक नाम कोटामे श्चखौने छलौ। जखन ओकरा कोटामे छोथ्य क' आबैत रही तखन ओ बडड उदास छल। ओकरा बुझेश्चयै जे हम श्चयश्चत रप सँ आश्च भेट करैत रहबै। मुदा नौकरीक झमेलामे ि◌रसश्च नै भेटल आ हम कश्चयो नै जा सकलौ। साल पूरा भेला पर ओ डेढ़ मासक छुटी पर गाम आएल छल। ऐ बेर ओकरा कोटा छोॅ लेल ि◌र हमही गेश्चयै। ओकरा छोिलाक उपरान्त जखन वापसीक रेन पकिबा लेल हम टीसन आबैत रही तखन ओ कातर दृथ्यसँ हमरा थ्यस ताश्क रहल छल एकदम चुपचाप। हमहुँ ओकरासँ नजश्च चोरेने औटोमे बैश्च गेलौ। ओ हमरा गोर लागलक आ बेछोह कानय लागल। हमर आँश्चमे सेहो जेना मेघ उमथ्य गेल मुदा ओइ मेघके रोकैत ओकरा बूझबय लागलौ। रामायणक चौपाई मोन पथ्य गेल:-

लोचन जल रहे लोचन कोना
जैसे रहे कृपण घर सोना।

खैर टीसन आश्च रेनमे बैश्च गेलौ। जखने रेन टीसनसँ घुसकल तखने ओकर कातर नजश्च मोन पथ्य गेल आ लागल जे करेज िश्च जायत। नोरक मेघ ऐ बेर नै मानलक। हम सहयाती सबसँ नजश्च चोरबैत रेनक बािरममे ि◌श्क गेलौ । बािरमक भीतर हमर मेघ बान्ह तोथ्य देलक आ हम पुकी पाश्च क' कानय लागलौ। थ्यछोहक नोर आवाजक संग पूणवगश्चसँ बहय लागल मुदा हमर िन्दन रेनक धिधीक आवाजमे थ्यलीन भ' गेल।

राजदेव मण्डल

बीहैन कथा- अातथ्यिा चोट

चाहक दोकान लग किछु लोक ठाढ़ छल आ किछु बैसल छल। गप्पक छरका छुटि रहल छेलइ। विषय छेलै- आइ-काल्हिक लोक सभटा काज स्वार्थक कारण करै छइ।
मुदा हम ऐ बातपर अड़ल छेलौ जे किछु काज लोक ओहनो करैत अछि जइमे कोनो स्वार्थ नइ रहै छइ। जइ काजके 'उपकार' कहल जाइ छइ।
एम.एल.ए.क चुनाउ होइबला छेलइ। चुनाउक समैमे तँ पुलिसके जेना पाँखि लगले रहै छइ।
तखैने ओइठाम एकटा पुलिसिया गाड़ी रुकल। रुकल नहि बल्कि रोकए पड़लै। कारण छेलै, एकटा साइकिल सड़कपर ठाढ़ छेलै आ साइकिलबला केतौ चलि गेल छल।
एकटा सिपाही गाड़ीसँ उतैरते बाजल-
"केकर साइकिल छियौ रौ? साहैबक गाड़ी रुकल छइ। हटेबे जल्दी आकि देखबीही।"
मुदा कियो साइकिल हटेबाक लेल नहि आएल। सिपाही पूरा तमसा गेल छल। ओकर रौद्र रूप देख हम जेना भीतरसँ डेरा गेल रहौ। हम तेजीसँ गेलौ आ साइकिलके हटबए लगलौ। कमजोर रहने कनी अस्थिरसँ हटबै छेलौ। डरेबर बारम्बार हॉर्न बजा रहल छेलइ। सिपाही डण्टासँ हमरा पजरामे गोजी मारैत बाजल-
"तोहर खनदानी रोड छियौ। टेर मारैत केना चलैए! देखै नइ छै जे साहैबके लेट होइ छइ!"

हबिाइत आगू बढ़लौं अिक रोडक कातमे साइिकल नेने खिस पिलौं। चाहक दोकानपर लोक ठठाठठा कऽ हँिस देलक। पुछाछाया गािी हॉन्वदैत चिल गेल।

एक गोरे थपटकारी मारैत बाजल-

“की यौ उपकारीजी, की भेल?”

डण्टासँ तँ कमे चोट लगल छल मुदा ‘की यौ उपकारीजी’ सुनाते आतनाया चोट जेना कुहरा देलक। लोक िदस तकलौं तँ लगल जेना नँगटे ठाढ़ छी। लाजे मुिी गोतने थदा भऽ गेलौं।

<u>बीहैन कथा- छोटकू दोस</u>

कृष्णाष्ठीक मेला लगल छल। दू-तीनटा संगीक संगे मेलाक गेट लगस ठाढ़ छेलौ। कृष्ण-सुदामाक मितततापर चरचा भऽ रहल छल। एकटा संगी बाजल-

“देखियौ जे कृष्ण आ सुदामाक दोस्ती। एगो राजा आ दोसर रंक। दुनूक दोस्ती एकटा ऐतिहासिक उदाहरण बनल अछि ऐ जुगमे एहेन दोस्ती संभव भऽ सकै छइ।”

दोसर संगी बाजल-

“नहि यौ, दोस्ती बरबैरमे होइ छै, तबे निमाहलो जाइ छै, नहि तँ ओ टुटि जाइए।”

हमरा बाजए पड़ल-

“केना नहि भऽ सकै छइ। हमर बाबूजी आ जगाधर बाबू दुनूमे केना दोस्ती छइ। जगाधर बाबूक परिवारमे तीन-तीनटा इन्जीनियर छैन आ हमर बाबू बिलकुल गरीब, तैयो हमरा बाबूसँ हुनक परेम देखियौ।”

तखैने बगलमे एकटा कार रुकल।

गजाधर बाबूक संगे एकटा ऑफिसर कारसँ उतरल। हम गजाधर बाबूके देखते पएर छुबि पणाम केलिऐन। गजाधर बाबू बजला-

“की रौ बाबू ठीक छौ ने?”

कहलयैन-

“जी ठीके छथिन।”

गजाधर बाबू सँगे आगू बढ़ैत ऑफिसर पुछलकैन-

“के छी ई बालक? संस्कारी बुझाइत अछि..!”

मुँह घोकचबैत गजाधर बाबू बजला-

“धुर, छोिू ने। एकटा छोटकू दोसक बेटा छी।”

गप करैत दुनू गोरे आगू बढ़ि गेला।

गपके झापैले हम किछु बाजए चाहलौ कि बच्चेमे एकटा संगी चद-दे कहि देलक-

“चुप रहू यौ छोटकू दोसक बेटा।”

हमर बोलती बन भऽ गेल छल।

सुकेश साहनी

(पख्यात हिन्दी लघुकथाकार शी सुकेश साहनीक चर्चित आ पुरस्कृत लघुकथा "ठंढी रजाइ" क मैथिली रूपान्तरण- मुना जी दारा)

बीहनि कथा- ठ'रल सीरक

" के छल ?" ओ आगि दिस हाथ पसारि तपैत पुछलक .
" वएह. सोझा बालीक ओतए सँ , " कनिञा खिसिआइत सुशीलाक नकल उतारलक.
" बहीन, तुराय दीयय, हुनकर संगी एलखिन हे ." फिर सीरक ओढ़ि बडबडएल.
" हुनका सब हुनकेन सीरक मँगैत लाज नै होइ छन्हि ! हम त' साफि मना क' देलियै, कहि देलियै-" आइ हमरो ओत' कोइ अबै बला ऐछ."
" नीक केलौ " ओहो सीरक मे नुकाइत बाजल ," ओकरा सबहक इएह इलाज ऐछ . "
" बहुत ठंढी ऐछ !" ओ बडिबडएल .
" हमर अपने हाथ - पएर सुन भेल जा रहल ऐछ.कनिञा अपन खटिया के धधकैत आगि ल'ग घीचैत बाजल."
" सीरक त' जेना पुरे बरिफ भ' रहल ऐछ, नीन आओत कोना !" ओ करोट फिरैत बाजल.
" नीन के त' जेना कोनो पते नै ऐछ." ऐ सरदी मे भरल सीरक सेहो बेअसर सन भ' गेल ऐछ."
" एक बात कहू, खराप नै मानब ?" घ'रबला कहलक.
" केहेन गप्प करै छी ?"

" आइ खुब ठंढी छै , सोझा बला के ओतए कुटुमो आयल छै, तेहेन मे सीरक बड्ड बना बेशी कि होइत हेतै."

" हँ त',!" ओ आस लगा घ'रबला दिस तकलक .

" हम सोइच रहल रही...हमर..मतलब इ छल जे..अपना ओतए एक टा सीरक त' भिखमले पड़ि ऐछ."

" अहा त' हमर मोनक बात कहि देलौ, एक दिन ओसिला सँ सीरक पतरा निकालि ने जेतै, ओ चमकि क' के ठाढ़ भ' गेल, हम एखने सुशीला के सीरक द' के अबै छीयै."

जहन ओ सुशीला के सीरक द' घुरल त' हरान छल ओ ओही ठ'रल सीरक मे आसभेरि भ' सुतल छल.

" ओहो अपन सीरक मे आबि घोसिआया गेल. ओकरा सुखद आभियव भेलै , सीरक खुब गरमएल छलै.

मुना जी

बीहनि कथा- प्रधान

-- तो एना धौना किए खसेने छे गै, जो ने झंडा ल' के सब धीया पुता खुशी मनबै छै.
-- किए के खुशी यौ ?
-- आइये के दिन देशक अपन प्रधान (संप्रधान) बनल रहै.
-- उँह....! भइया लेल , हमरा लेल किछु ने ?
-- इह , छौंडी मुँह केना तुरच्छ जका केने ऐछ !
-- गै मम्मी, तो त' नहिये बाज, भइया के बड़का झंडा आ हमरा छोटकी सन !
" माने दुनू भए- बहीन लेल निराक प्रधान , नै ?"
-- गै बुच्ची ,एना किए घाउस बनै छे गै ?
-- यौ पप्पा, साझ खन मम्मी के कहलियै-' डोलकी ला दुध आइन दै छीयौ .'
कहलक -' बताह भेले हँ , मुनहारि साझ के जुआन- जबान छौंडी जेतै दोसरा बस्ती , भइया के कही अनतौ दुध .'
-- " ठीके बात गै, स्त्री एखनो पुरुषक चागुरक आकार भ' जाइए ".
--" माने एखनो बेटे के नामक पतक्खा फहराइए देश मे, बेटी पछुआ.....! "

बीहक्षा कि- िसाद !

-- पप्पा, बेर उनहल जाइ छै, मुश्चाक भसाओन मे कखन जेबै ?

-- िमिहू ने, देखै नै छीयै नमाज पढ़ै बला सब सगरो के बाट छेक्क रखने छै.

-- त' भसाओन आइ नै हेतै ?

-- यौ, भागू...भागू ! घर पैसू.

-- कीए पप्पा , की भेलै ?

-- िसाद !

-- िसाद की होइ छै ?

--" नेता सब के दोसराक चुक्ष्म पर अपन रोटी पकएब. "

बीहक्षा कि- ब्यावहता

-- धौर, तहन सँ एकरा सबहक खुशामद क' अपस्यात छी, कोइ टेरबे नै करैए.

-- कि ी मे अपस्यात छी यै ?

-- तील बहमे ? के रीत ब्यामाहै लए.

-- झुटे अपस्यात छी, आब की पञ्चलका जका पुत सब बैसल रहै छै घर मे मए बापक ब्यावहता लए.

-- से त' छै, मोन त' पञ्चाया लेब.

-- जे धीया - पुता, तील - चाउर खाय मे घैहर कटबैए ओकरा सँ तील बहबाक मनोरि रखै छी ?

--" हमरा नै खुएब तील- चाउर ?"

-- अहा के हमर ब्यावहता लए त' हमर मए- बाप , ब्यालाक्षिा द' जनम भञ्चक गेठजबिा क' देलक्षा.

" हम अहा त' ब्याना ब्याल- चाउर खेनहु, एक दोसराक ब्यानगी भञ्च ब्यामाहक्षा रहब."

बीहनि कथा- हुक्का

-- यौ , देखै छी जे सगरो लोक नव वर्षक अवैया मे उत्साहित ऐछ
.
पुरना के बिसरि जेतै की ?
-- अहा बिसैर गेलियै ?
-- छुरिया के कीया मे बन कतौ बहरए !
-- तहन पुरने के हुक्का पर नवका पोषेतै ने !

जवाहर लाल कश्यप

बीहनि कथा- कुकुर

कार के पछिला सीट पर बैसल कुकुर, गरदनि उठेने दूनु कात ताकि रहल अछि आदमी जँका | नहि ताकि रहल अछि पाछा जतय आओर कुकुर सब दौर रहल अछि कार के संगे , भुकैत एक दोसर क पछुआबैत । गाडि रुकल सब रुकि गेल । एकटा आदमी ओहि मे स पॉलीथिन मे किछु समान लेने उतरल, अपन कुकुर के बाहर निकाललक । ताबैत सब कुकुर आबि गेल छल । सब कुकुर के बीच ओकर चालि जेना ओ सिंह हो आ बाकि सब गीडर । आदमी आ कुकुर संगे-संगे आ बाकी कुकुर पाछा-पाछा। समुर कात तक गेल । ओतय ओ आदमी अपन पॉलिथिन मे स मासक बुटी नीकालि कि देलक सब कुकुर झाऊ-झाऊ क लुझय लागल । ओ आदमी संगे कुकुर वापस आबि गेल । कुकुर के चाली मे एकटा अजीब गौरब छल ओकरा ई नही पता छलै जे हमरा किछु नही अछि , जे अछि से हमर मालिक के , कुकुर संगे चलैत ओहि आदमी क सेहो नहि पता छल हमर किछु नहि अछि......

अब्दुर रज्जाक, हाल दोहा कतार

बहैन कि

मोश्नाया आ जश्वर दुनु बापुते मोहरम के बाद चलल परदेश कऽ। श्क करतै अतेटा भरल समाज मे श्नाक बेजाए काजला ऐच पैच लाऽसे हो श्वकते अछी अश्वलेल श्क ओ गश्वब छैि । पर ह मोश्नाया इमन्दार जरर छैि श्क आइ तक लेश्ना देश्ना लेल चौक पऽ अश्व समाज मे बैस्ला पश्चश बरख भऽ कश्वयो कोइ आङुर नै देखोलक । गाम सऽ श्नाकलैत श्कछहे अगा जनकपुर पहुचल । बहुत श्वनक बाद जहीर बाप सङे आइ शहर पहुँचल छैि ।श्कछ खेबाक इरादा अछी जहीर के लगे मे नस्ताक होटल देखाइ देलक ।

" बाबू कश्ना श्कछ खेबहो"

" रे का खेबहो कश्ना पुछहो अन्डा उस्नाहुवा श्कता मे देत है "

" ह बाबु चुरा भुजा हुवा हेबे है अश्व जोरे खालेबै चल त पुछै श्वये"

दोकान के लग मे जाऽक दुनु बाप बेटा खरा भेल

"हे सुनै छहो साउ श्न तोहरे कहै श्वयो उस्नाहुवा अण्डा कैसे देतहो"

"एकटा के ३० रपैया कैटा लेबहो?"

बाबू श्वस ताकैत जहीर कहलक

"बाबू लेलु दुटा"

"ने बेटा बडा महगा कहत है छोरदा अश्नाला स्टेशन पऽ देखत है"

रेल खुजल जाएत रहे दुनु बाप बेटा जब स्टेशन पऽ जलदी मे श्वकट लैत चैल गेल परदेश ।श्वन हफ्ता मश्वना श्वतैत देश्व नै लागल ।दुनु बाप बेटा परदेश सऽ ि र लौटल ि र स्टेशन के वश्व लग बला होटेल लग गेल बेटा कहलक बाप सऽ

"उसना हुआ अन्डा ललुबाबु"

"ह लेला"

" नए बाबू उ त कहतै ३०र पैया एकटा के बहुत महगा ने भेलै?"

"ना है महगा लेला चार पाच "

"पश्चने तुश्च कहने रहो से बडा महङा है?"

"रे बात नै बुझलही पहले परदेश जाए बेरमे पैसा कहा रहा रश्च उतना अश्चा पैसा है त सस्ते है ना "

बृषेश चन्द्र लाल

बुद्धचौ

टोलक अगज राम बहादुर हमर बनैत घरक शरीक्षण करैत बजलाह 'घर बनवैत छह तँ आब तोरा बुझा अएतह ! बिना सोच आ विश्लेषणके, तकरबाद निष्कषके आ तखन फेर योजना, साधनक सडोर, समन्वय आ कायान्वयनके घर नइ बनैत छैक !! छोट गलती सभ किछु गलति कयते जाइत छैक । कोन काज पहिने आ फेर कोन तकरबाद सेहो घोषिएक' सोचय पडैत छैक । नइ तँ नोकसाने परिणाम ! .... बुद्धबडारा (बद्धचौ) आकललह ?..."

हम कहलिअक्षह — " भाईजी आकलएकाल ततेक ने फिरए जे डाक्टरलग जाए पडल । पवीणमा जवसिँ उखाड़ि देलक !"

रामदाई जोरसिँ हँसि देलाह — " जा ... ! जनमए दितैक । सभ गलति गेल !!"

आब दोसर पसंग । बीएमे अंगेजीमे एकटा पाषक रहैक — The speed of life । ओहिमे एक गोट विश पसिद व्यापारी अपन पीडाक वणन कएने रहथि जे कोना जीवनक गति बढ़ल जारहल छैक आ ओ दौगए नहि सकरहल छथि । आरकेसर बडड नीक पढ़बथिन्ह। पूरा कोशिश कएलखिह हमरापर विशेषत बेशीए ध्यान ' क' जे ई बुझि लेअओ । हुनका कदाचित् बुझल रहखिह जे एकरा बुदचौ जनमल नइ छैक । मुदा, हम बूझि नइ सकलिऐक । बुदचौ जनमल रहैत तखन ने !

आब तेसर पसंग । अवकास प्रतसभक speed बडड तेज ! फेर त्वरण (acceleration) अकल्पनीय !! ठकमुथिया लागि जाइत

अछि। हमरासभ पकिए नहि सकैत छी । आकाश ि र एतेक जे धुरईक नेना जका पछुनक पयासमे आकाशे नाथ ली । केओ आ धकछु नीक लथाते नइ छथि । हरेक ठाम एकसं बेर पवतन चाहैत छथि । धनु पयासेक पणाम गनैत छथि । ि शकारी पवतन! कोनो व्यक्त, कोनो आणय अ ि वा कोनो पयास वा तासमे झापल रणनीके खोजक-बूझक समयक आभाव छथि ! ककरो सोझे धराधर अपन वाणसँ मुहँ कोचकएहेतु वाणसँ भरल असाइलसभ दाथ दैत छथिन्ह !

पता नइ अमेकी राषपत र मि भीतरसँ केहन छथि ? मुदा, लगैत अछि, भीतरसँ जे होथि आमशक ना ि पकथि नेने छलाह । हुनकर जमल बुदचौ आथि ते ग ि ल छल जे वजयशी देलकह । मुदा, समय तँ अकलनीय तत अछि । ि र सभकछु बदल गेलैक । फानसमे र मि क ब ि बोलापनक थपत युवा इमैनुएल मै ि राषपत भेलाह अछि ।

बूझब कठीन ! चल मन भजन करह !! बुद्चौ जे नहि अछि !!!

अखिलेश कुमार सिन्हा

बीहनि कथा- चुप्पी

ओ'अपन बहिन'क ओत' आएल छलीह. हमर घर आ ओकर बहिन'क सासुर एकहि ठाम अगल-बगल
मे छल. हम स्नातक'क फाईनल परीक्षा द' गाम आएल छलहुँ. हमर खान-पीन ओकरे
बहनोई , जे हमर लंगोटिया दोस्त छैथि, हुनके ओहिठाम होईत छल. दोस'क साथि, तं
स्वाभाविके छै....किछु हंसी-मजाक होइते छलै.
'ओ' लगभग मास दिन रहलीह..कहिया हमरा दुनू केर बीच पेम'क बीज अंकुरित
भेल, नहि कही ?
समय बीतलोपरान्त ओकर जेठ भाय ओकरा ल' जबाक वास्ते आबि गेलैथि. मोन भकदन क' गेल....

हमहुँ कहलहुँ जे हमरो दरभंगा तक जेबाक अछि चलू हम ओत' धरि साथि रहब, किछु
काज अछि क' वापस आबि जाएब !
बस सं विदा भेलहुँ. किछु आगू चलि क' एकटा चौक पर बस'क डरेभर,कंडक्टर,
खलासी आ आन याती सभ चाय-नाश्ता कर' लेल उतरि गेलाह संगहि ओकर भाय सेहो

उतरि गेलाह.

हम बसे मे....

किछु क्षण मौन रहलाक उपरात हम ओकर सीट लग आबि पुछलियै :

"की, चिन्हलिए जेबै ?"'

ओ' मौन....

"हम मोन आएब की नहि ?"

ओ चुप.....

ओ' हमरा दीस नोर सं भरल आँखि सं देखलनि....

ओहि काल हमरा दुनू के कोनो होश नहि छल की केओ आनो देख-सुनि रहल छै....ओ

सभ की सोचैत हेतैक ?

पेम'क आवेग मे मोन आंधर भ'जाएत छै ने ! सैह आब बूझि पडि.

"आब कहिया भेट हाएत ?"

ओकर आंखि टूभ-टूभ लाल....ओनी सं आंखि'क पोर पोछैत एतवे बजलनि,

"जे मोन होइए, भैया सं कहि दियौ ने...?"

ताबै बस'क खलासी सभ याती के बस मे बैस' लेल हल्ला कर' लागल. हमर

मोन'क बात मोने रहि गेल, किछु बाजि नहि पौलहुं.....

पन्द्रह'म वर्षक उपरात, हमरा एक विवाह समारोह मे शामिल होव' केर मौका भेटल.

एकसरे छलहुँ. मोन भेल किछु पानीपूरी'क आनंद ली. बढ़ि गेलहुं ओहि काउंटर लग.

भीि मे घूसू कोना...? 'गर खोजैते रही श्चक आवाज आएल,
"की हाल,कखन औलहुं ?"
चौश्चक पुछश्चयैह "के...?"
"हम.... हमहूं त' अहा के नश्च श्चान्हलहुं, उ त' भौजी कहलश्चन्ह श्चक अंही
श्चछयै ! इ दािी मे श्चानश्चये मे ने अबैत छी.... एश्च मे अखैन धश्च स्पाटव
लागैत छी !" एके सास मे बाश्चल गेलीह.
"ओहहो अहा....
हमहूं नश्च श्चान्ह पौवलहुं, आब त' अहूं मे पश्चवतवा आश्च गेलैए....''
हम बजश्चयै.
"मोन छी ने ?" ओ' पुछलकै.
"एह.... एहो श्चसर' वाला छै ?"
"हा, अपनेक ओ बस'क चुप्पी आई धश्च मोन मे सूईया सन चूश्चा रहल यै...."
"अहा अपन श्चयाह सं खुश छी ने ?" हम एश्च मुदा सं िराक होम' लेल पुछश्चयैह.

"हा,तन सं तं खुबे, मोन सं त' नश्चए ने ....!"
बाश्चल, अपन नोर पोछैत
िरवभ' गेश्चह.
मोन मे हिाि'क चोट सन लागल....
कंठ सूख' लागल....
पाश्च पर पाश्च गटागट पीवोपरात मोन शात नश्च भेल. वापस होटल मे आश्च,

धस्तरा पर धम्म सं खश्म पडलहुं. नीन जेना श्वला गेलैए टुकुर-टुकर नचैत
पंखा के आश्चकारे घुश्व रहल छी.

बीहनि कथा- आजादी

’अहा के जन्माष्टमी आओर स्वतंतता दिवस केर बधाई’ !’ पती बजलीह.

’अहूँ के बधाई !’

’ई शुभ दिन खासक’ अही वास्ते
आएल अछि !’ जबाब देलथिन्ह.

’किएक, हमरे वास्ते शुभ दिन . . ?
हम पुछलियैन्ह.

’से नै बुझलौहुँ ? अहूँ सात बहिन पर एगो छोट भाय.... कृष्ण भेलौहुँ आ
कृष्णो सन व्यवहारो अछि.... पेशा सं वकील छी हे, जे स्वतंत पेशा अछि....
अहा आज़ाद छी !’ पती बुझौलीह.

हम उसास ल’ मोने-मोन बजलहुँ,’ हं ठीके, कृष्ण त’ भेलहुँ मुदा आज़ाद....?’ दीवार पर टागल अपन विवाह’क फ़ोटो देखि, मुस्कि गोइंत लेलहुँ.

बीहनि कथा- माया

"हेह, सुनै छियै ?"

"----"

"सुनू नै !"

"की कहै छी ?"

"चाय नहि भेटतै की ?"

"पिन्टू अखन कनिआया के इस्कुल जाय मे बिलंब भ' रहल छैन्ह. हुनकर नाश्ता बना रहल छी. कनेक कृष्णा के सम्हारियौ नै, कनिआया के तंग कैने छै !" ककचन सं ठेसगर जबाब भेटलैन्ह.

"पप्पू केम्हर छै जे कृष्णा के हम सम्हार ?" ओ बजलाह.

"ओ मोटर साईकिल साफ क' रहल छै, कनिआया के इस्कुल पहुंचैते ने...!"

"बेस, कत' गेलौ यौ कृष्णा बाबूsss...?

चलू पोखरि मे माछ देखाबै छी !" चाह'क मोह त्याग उठि कृष्णा केर लगलाह पोलाव' !

कनिआया,पप्पू संग इस्कुल लेल बिदा भ' गेलीह.

"हे आबो त' चाय पीया दिय !"

"पिन्टू अखन, पप्पू लेल नाश्ता बनौबाक अछि, ओकरो ने आफिस जैबाक बेर भ' गेलैए ?" हुनक पती बजलीह.

पप्पूओ बिदा भ' गेलै अपान आफिस !

चाय'क आस मे ओ बेकल छलाह,"आबो चाय भेटतै की ?"

"हा, छानि रहल छी, लाबि रहल छी." पती'क मधूर आवाज भेटलैन्ह.

"लिअ"

"एसगरे खाली हमही ?"

"ई चाह'क बेर छै ?"

"लाबू एकटा कप, एकरे मे बाँटि लैत छी. कनी हमरो लग बैसू नै! खाली काम, काम....."

"देखही, एहि उमैर मे...." बजैत-बजैत झेंपि गेलाह.

"आइ कहू त'.... हमर अहा जीवन संगनी छीयै, हमरो दीस कखनो ध्यान दियौ !" ओ कनेक रोमांचित भ' गेलाह आ हुनक हाथ अपन हाथ मे लैत बजलाह,"हमर त' एकदोसरे मे नै संसार एहि, एको बिनु हम अधूरे छी, बाँकि सभ माया छिक.... सत्य छै त' हमर एकदोसर केर प्रति समर्पण.... प्रेम....!"

"की भ' गेलै यै ई बूढ़वा के ?" पती हंसैत बजलीह," देखियौ त' एहि उमैर मे बहैक गेलखिन यै !"

"नहि पप्पू मां, हम बहैक नहि रहलहुं यै. हम एकदोसर सं जखने विमुख भ' जायब तखने बेटा-पूतोहु सभ'क नजरि मे टूअर भ' जाएब, केओ नै भैल्यू देत....

ने बेटा, ने बेटी ,ने पूतोहु, ने आन केओ !"

"की पगला जका बात क' रहल छी , की भ' गेलैए ?"

"हमर एकदोसर केर प्रति आकर्षण कतओ हेरा गेलैए, अहा पर सं हमर अधिकार छीना गेलैए.... एकटा चाह'क लेल मजूरी कर' परैए.... की कहु पप्पू मा..... ककरा कहू, हमर ने मा छथिन नै बाबू, अंही सं ने कहबै, हमर सुनवो वास्ते किछु टेम राकलू पप्पू मा...." कहैत-कहैत ओ फिक-फिक कान' लागलाह.

पती अवाक, कृष्णा अवाक.....!!

शिवशंकर, बल्लभगढ़, फरीदाबाद, हरियाणा

कंबल

उमाकात बाबू बैकक अधिकारी छथि, गरीब घरसँ। मुदा शीमतीजी पैघ घरक बेटी छथिन्ह। अपने अपिलाक संस्कृतिक पोषक मुदा शीमतीजी विदेशी संस्कृतिक अनुगामी। शीमतीजी फैशनेबल, हवामे उडिए बाली पातली, विदेशी जका ओढ़रन पहिरन, जीस पैट, हाफ शटव़ हेयर कट, कगिंग, आइ बो, करिका चशमा, फिलायल चेहरा, हील बला चप्पल, टच स्कीन मोबाइल, ई थिक शीमतीजीक परिभाषा। देशी मुगी बिलायती बोल। एहि सभक विपरीप उमाकामत बाबू चंपल पैट शटर्मे नजरि आबथि। दूनू गोटेमे आकाश पतालक फिक। उमाकात बाबूके एकटा कंबल रहनि. जंगल बेडक, धरि रहैक नीमन। जे हुनका भाइजी बहुत पहिने देने रहथिन्ह। ओ कंबल बड बेसी पुरान भ' गेल रहै। फटिल नै रहैक परंच आउट आफ फैशन जरूर भ' गेल रहै। हुनका घरमे आर कंबल रहै मुदा ओहिमे खास बात रहै। उमाकात बाबू आबथि आ छतपर ओकरा सुखाबथि आ कनियो काल खीचथि। ओहि कंबलसँ हुनका बड़ स्नेह रहनि।
हमरा मोनमे कतेक बेर जिज्ञासा भेल जे ओहि कंबलमे कोन बात छै। एक दिन हुनकासँ पुछिए देलियनि। ओ अपन कथा बतबए लगलाह...."ई बात ओहि समयक अछि जखन हम बेरोजगारीमे परीक्षा देबए लेल एक शहरसँ दोसर शहर जाइत रही तखन हम एहि कंबलके संगमे लेने जाइ। ई हमर परमानेट साथी छल। खास क' सदीमे ई हमर रक्षा कवच छल। ई खाली कंबल नै हमर अभिन्न अंग अछि। एकर की महत्व अछि से हमरा छोडि ककरो नै बूझल सकैए।

उमाकात बाबूक छत आ हमर छत सटले अछि। शहरी सेक्टर बला मोहल्लामे जमीनक कमी रहै छै तँइ छत सटब स्वाभाविक। ई बुझाइत अछि जेना व्यंग्यक ढंग सभ आदमीक उपहास करैत हो जे हम अपना कोरामे कतेक परिवारके आशय देने छियै। मुदा मनुख हमरा कतेक वर्गमे विभाजित क' देने अछि। फिस्टव फ्लोर जेठक, सेकेंड फ्लोर मँझिला भाइजीक, फिडव फ्लोर देवरक, आ गाउंड फ्लोर मा बाबू जीक। कतेक भेद अछि मनुखमे।

ओहि कंबलसँ शीमतीजीके ध्यान छलै। ि‍शनक दौरमे ओ कंबल बूढ़ भ' गेल छल। पछुआ गेल छल आ अपन किस्मतपर कानि रहल छल। एहि मायावी संसारमे कतौ भुतला गेल छल। ओकर भविष्य गेल छलै। समाज हेय दृष्टिकोणसँ ओहि कंबलके परिभाषित क' देने छल। मनुख अपन इतिहास कतेक जल्दी बिसरि जाइत अछि एकर कल्पना करब कठिन अछि। एहि कंबलसँ मुक्ति पेबाक उपाय शीमतीजी कतेक दिनसँ ताकि रहल छलीह। आइ उमाकात बाबू दू दिन लेल शहरसँ बाहर जा रहल छलाह, ओ घरसँ निकलि चुकल छलाह। कबाड़ी बला गलीमे अवाज लगा रहल छल। शीमतीजी लेल सुअवसर छल। ओ ओहि कंबलके बेचि देलखिन। कंबल नहि उमाकात बाबूक आत्मा आइ घरसँ विदा भ' गेल।

कथलेशर राउत

चाहबला

"बाबू आब चाहक दोकान छोथि श्रयौ। हम सभ भाइ आब कमाए-खटाए लगलौ। आब अहाक उमेरो पचपन-साश्च भेल। सभ श्चन श्चक काम-धन्धा कश्वते रहब।"

"बौआ कहलह तँ बि नीक बात, मुदा चाहे दोकानक बदौलत तूँ सभ मनुख बनलह आ आइ शहर जा र पैआ-पैसा देखै छहक। हम तँ कौहुना अपन रोजगारमे लागल रहै छी। देहके धुश्च गुजर-बसर करै छी। कमाएल-खटाएल देह अश्छ, जेतेक शरीरके चलाएब-थिराएब तेतेक ने देहक खून चालू रहत आ अपनो दुरस्त रहब। तूँ सभ तँ हमरा काश्चल बनबैक बात कहै छह। जाबत धश्च पैरख अश्छ ताबत धश्च हम कमेबे-खटेबे करबह। रथिक श्चयाके नश्च देखलहक, पाचटा बेटा छै, पाचो कमासुत, वेचाराके सभ काम-धन्धा छोि देलक। काज छुश्चते वेचरा लोि भऽ कऽ मश्च गेल। नोकश्चयोबला के तश्चना होइ छइ। जहा ने श्चक काजसँ श्चटायरमेन्ट भेटल श्चक वेचारा अपनाके कोनो जोकरक नश्च बुझऽ लागल। श्चबाक बीस बखवतँ जीबत पाच बखव मने झूस भऽ जाइ छइ।"

सुखल नून, एकटा मोटगर रोटी आ एक लोटा पाश्च नेने रमाकान्त बाबू बालेसरके पनश्चयाइ लऽ कऽ गेल छल। आश्चपर ठाढ़ भऽ कऽ जोरसँ बजला-

"रौ बाले, पनश्चयाइ कऽ जो।"

बालेसर आसा-बाटीमे रहबे करए। झट-दे बरद ठाढ़ कऽ आश्चपर आश्च, हाि मुँह धो जलखै करए लागल।

भूखलमे जश्चना गुल्लैरो मीठ होइ छै तश्चना बालेसर हाइ-हाइ पाचे-सात कौरमे रोटी खा गेल आ एके नीशामे भश्च लोटा पाश्चा सेहो पीब गेल। मुदा आरो पाश्चा पीबैक इच्छा रहइ। तैबीच रमाकान्त बाबूसँ बालेसर कहलकैन-

"माश्चाक िकि कालक बाद एक लोटा पाश्चा लऽ कऽ आएब।"

रामाकान्त बाबू श्चकएक पाश्चा लऽ कऽ जेता! पाश्चा लऽ नश्च गेला। चैत-बैशाखक कर-करौआ रौद, तैपर पश्छया हवा चश्चा रहल छल। एहेन समयमे बालेसर गहुमक खेतके जोश्चा रहल छल। पाश्चाक आशा-बाटी तकैत रहल। मुदा जखन माश्चाक पाश्चा लऽ कऽ नश्च गेलैन तँ श्चश्चया कऽ हर खोश्चा देलक।

हर-बरद नेने घरपर पहुँच, बरदके खुटापर बान्श्च हरके गठुल्लामे राश्च अघोर मने बालेसर अपना घरपर आश्च गेल। िकि सुसतेलाक बाद भश्च इच्छा पाश्चा पीलक, तहन मन कनी शान्त भेलइ। मुदा मनमे तेसरे तरहक उी-श्चाी धऽ लेलकै।

रमाकान्त बाबूक पश्चवार गामक भश्चानमान। सभतूर पढ़ल-श्चाखल। रमाकान्त बाबूक पीती दरभंगा महराजक ओइठाम नोकरी करैत, श्चकयो श्चवान तँ श्चकयो पटबारी। रमाकान्त बाबू अपने सात भैयारी, सातो भाइमे दू भाइ गामपर रहैत छला बाकी पाचो भाइ श्चकयो सरकारी नोकरी तँ श्चकयो पाइवेट नोकरी करैत। रमाकान्त बाबूक मश्चला भाए- श्चनोद आ अपने गामक खेती-बाािक काज देखैत छला। ऊपरसँ श्चाच्चा पश्चवारक सभतूर धूतवनम्बर एक, जालिरेबी नम्बर एक। श्चकयो सोनाक कंगना लऽ कऽ नदीक कछेरमे बैसल तँ श्चकयो बहुरश्चया र प धऽ कऽ अपन उल्लू सोझ करैत। श्चाश्चा छोटका भाए जेहने नाम श्चनोद तेहने काम श्चनम।

बालेसरक श्चताक नाओं रामश्चकसुन। रामश्चकसुन अपना जाश्चाक मैनजन

छल। शरीर एकदम हटा-कटा रहै रामश्चकसुनक। रहबो श्चकए ने कश्चतै अखिाहा परक खेलेलहा देह रहै श्चकने। अपना जवानीमे रमाकान्त बाबूक अमलदारीसँ पूववहुनके पश्चवारमे हरवाश्च करैत छल। पछाइत जखन रामश्चकसुन हरबाश्च छोश्चि देलक तहन बेटा पकैि लेलकै, माने बालेसर हरबाश्च करए लागल।

आइ बालेसर जखन तबधल मने घरपर आएल तँ मनमे एकटा संकल्प केलक। संकल्प ई जे आब अनकर हरबाश्च नश्च करब। अपन रोजगार करब। अपन काज करब।

श्चहान भने रमाकान्त बाबू जखन हरबाश्च लेल बालेसरके कहलश्चन तँ ओ साि-साि कश्च देलकैन-

“आब हम हरबाश्च नइ करब। आ ने अहाक ओइठाम कोनो आने काज करब।”

रमाकान्त बाबू पुछलश्चन-

“श्चकए ने हरबाश्च करमे? आ हमर जे कजा-बजा अश्छ से पश्चने दऽ दे। बापे तेतेक खेने छौ से कहल ने जाए।”

बालेसर ने आव देखलक आ ताव, तर-दे बाजल-

“श्चसाब कऽ श्चअ।”

“ठीक छै, घरपर आ श्चसाब कऽ ले।”

ई कहैत रमाकान्त बाबू अपना घरपर चश्च गेला।

ऐ घटनाके आइ मास-दू-मास बीश्च गेल। तैबीच र पौलीमे कोनो महतोक घरमे डकैती भेलइ। डकैत घरवारीके मारबो-पीटबो केलकै आ लाखो र पैआक समान सेहो लूटलकै।

रमाकान्त बाबू जालिरेबी लोक तँ छश्चए। ब्लॉकक पमुख सेहो छैि। दरोगासँ श्चल कऽ बालेसरक श्चताके डकैती केसमे िँसा देलक।

रामश्ककसुनक घरपर पुश्लस सभ दौर-बरहा करए लगल। आब रामश्ककसुन बोन-झाि मे नुकाएल श्ी रए। घरक सभ समाग सबहक मुँहपर ि ि री उि ए लगलै।

अन्तमे रामश्ककसुन रमाकान्त बाबूक पएर-दाढ़ी पकै ि केससँ उबारैक आगह-बात करए लगल। बालेसरो हारल नटुआ जका ि र रमाकान्त बाबूक हरबाश्च करए लगल।

ओही समयमे पाहीपटीक एकटा माश्लकक जमीन छेलइ। जइ जमीनक सटले रामश्ककसुनक घर सेहो छेलइ। ओ पाचो बीघा जमीन माश्लक बेचैक सूरसार करए लगला। रमाकान्त बाबू पाचो बीघाक गप कऽ लेलैन। श्लखबै बेरमे रमाकान्त बाबू ओइ पाच बीघाक अलाबे रामश्ककसुनक जे पाच कटा जमीन सश्चत घरा ि ी छेलै तेकरो खाता-खेसरा आ रकबा चढ़ा लेलैन।

दखल-कब्जा बेरमे बालेसर रोकलक तैपर रमाकान्त बाबू बजला-

"रौ बाले, चूप रह। ई जमीन माश्लकक छेलै ओ हमरा श्लश्ख देने अश्छ। हे देखही दस्ताबेज।"

बालेसर मुखवतँए अनकासँ दस्ताबेज देखा चूप भऽ गेल। चुपे नश्च भेल बल्श्क बौक भऽ अँगना चश्ल आएल। श्ककछु ि रबे ने करइ।

रामश्ककसुनके तीन ल ि का। जेठकाक नाओं- बालेसर, मश्झला- राजशेखर आ छोटका- चन्रशेखर। बोश्न-बुता कश्र कऽ कोनो धरानी सभ समागक गुजर-बसर चलैत रहइ।

बालेसर नून-तेलक दोकान खोलने छल मुदा दोकान चलबै छेलै राजशेखर। समय बीतैत गेलइ। मुदा जखन समय खराप होइ छै तँ बारहोरंगक बसात बहए लश्गते छै, सएह भेलै बालेसरके। वेचाराके तेतेक ने दोकानक उधारी लाश्ग गेलै जे अन्तमे नून-तेलक दोकान छोि ए प ि लै। पूजीक अभाव भेने वेचारा चाहक दोकान खोललक।

कम पूजीमे चाहक दोकान नीक होइते छइ। चाहक दोकान खूब चललै। समय आब बोलसरक आपस एलइ।

बालेसरके तीन लड़िका। जेठका लड़िकाक नाओं- चन्द्रमोहन, मझिलाक- कृष्णमोहन आ छोटका नाओं छेलै- इन्द्रमोहन। तीनू भाइ पढ़ि-लिखि कऽ दिल्लीमे नोकरी करैले चलि गेल। नोकरियो नीक ठाम लगलै। एक एकाउण्टेट, दोसर संचार विभागमे आ तेसर कृषि विभागमे तृतीय शेणीक काज करए लगल।

बालेसरक मझिला भाए- राजशेखरके सेहो दू लड़िका। पहिल उमाकानत आ दोसर कृष्णकान्त। उमाकान्त एगारहवी केलाक बाद बम्बइ चलि गेल आ कोनो सेठक ओइठाम डाइवरी करए लागल। आ छोटका लड़िका चन्द्रशेखरके एक लड़िका जेकर नओं छेलै लालमोहन जे पढ़लक-लिखलक नहि। जहन पन्द्रह बखक भेल तँ भागि कऽ मामा गाम चलि गेल। आ एक गोरेक संगे लुधियाना जा रहए लगल। लुधियानामे ओ कोनो किराना दोकानमे काज करए लगल।

परिवारमे चार दिससँ आमदनी भेने बालेसर तीनू भाइक मन हरदम खुशीए-खुशी रहए लगलै। जहिना अदरा नक्षत्रमे झम-झमौआ बरखा भेने, अगहनमे नीक उपजा भेने किसानक मन हरियर होइ छै तहिना बालेसरोक परिवारमे सबहक मन हरियर रहए लगलै।

किछु दिनक बाद रामकिसुनक मृत्यु भऽ गेलैन।

बालेसर अपन पिताक शाद-कमव नीक जका केलक। रसगुल्ला-लालमोहनक भोज केलक। घरो-दुआर नीक बना लेलक। रेकटर सेहो खदीर लेलक। शानसँ गुजर-बसर कऽ रहल अछि।

बालेसर मुदा चाहक दोकान करिते रहल। धिया-पुता सभ जहन गाम आबै तँ चाहक दोकान चलबैत पिताके देख मन झूस भऽ जाइ।

बालेसरक पेरिवारक उनैत देख रमाकान्तक पेरिवार गलल जाइ। दुष्ट बुधिक लोक छलाहे।

एमहर उमाकान्तक जेतए धनकुबेरया मशील चलैत रहै, तेतइ छेलै एकटा आमक गाछ। बालेसरे ओकरा रोपने छल आ अपनेसँ गाछक सेवा सेहो केने छल। मुदा ओ गाछ कब्जामे छेलै रमाकान्त बाबूके, ओकर ि ल वएह खाइ छला। संयोगसँ एक दिन एकटा आम दुआरे झंझट भेलै, माने रका-टोकी भेलइ। एक दिन उमाकान्त ओही आमक गाछपर दाबा ठोकि देलकै। झंझट उठलै। केस-ि ौदारी भेलइ। कोटकचहरीक आबा-जाही शुर भेल। रमाकान्त बाबू बजै ि-

"चाहक दोकानबला कि हमरासँ केस ल ि त।"

उमाकान्तक पिता- राजशेखर अलगसँ कोटमे जमीन-जत् ा सम्बन्धी एकटा मोकदमा कऽ देलक, जइमे बाप-दादाक अरजलहा जमीन जे रमाकान्त बाबू दाखा नेने छला तैपर मुकदमा चलए लगल।

रमाकान्त बाबूके अपन केलहा पाप सभ भूत भऽ आगामे नाचए लगलैन। सबूतक जखन देख-भाल मजिस्ट्रेटक कोटमे होमए लागल तँ मजिस्ट्रेट रमाकान्त बाबूसँ कहलकैन-

"आपको खवािदत जमीन कैसे हासील हुआ और जिससे आप जमीन दाखबाये उनको ये खवािदत जमीन कैसे पाप्त हुआ, इसका सबूत दाखिल करे।"

रमाकान्त बाबूके तँ ऊपर-नीचच्चा सुझए लगलैन। दिनेमे तरेगन देखा लगलैन।

एमहर बालेसरक समाग सभ चौक-चौराहापर बजै ि-

"बहुत धन खेले रे बगरा आ प ि लौ मरदसँ रगरा। जेतेक बेइमानी कऽ कऽ अरजने छे से सभटा आब बेरा-बेरी निकलतौ। नहि तँ एकटा सभ्य मनुख जका समाजमे रह। हम तँ कौहुना अपन रोजगार

इमानदारी पूवक करैत चाहे दोकानसँ आगा बढ़लौ। अपनापर हमरा अपन कमक बिसवास अछि। ठकि-फुसला कऽ तँ नञि ने। कमाइबला खेतइ आ लूटैबला जेल जेतइ।”

यएह सभ बात आइ बालेसर अपन चाहक दोकानपर चन्द्रमोहनके कहि रहल छला।

८

गामे बीरान भऽ गेल

श्किसुन देव दुआर परहक चौकीपर असमंजस भेल बैसल छला। तेकर कारण छेलै जखन तीस-पैतीस बखक उमेर छेलैन, माने आइसँ साछ्ठ बखवपूवब जहन जुआनी चढ़ल छेलैन, तेहेन अवस्िामे कमाइ-ले मोरंग चश्ल गेला। गाममे कश्हयो कोनो साल रौदी, कोनो साल दाहीमे भूखमरीक समस्या उत्पन भऽ जाइत। मुटी भश्र लोकक हािमे जमीन-जत्ाि, अश्िकतर मजदूर तबकाक लोक। बोइन-बुतापर जीश्वहारके श्वकट समय रहने कएक साझ उपासे रहऽ पि छेलैन। अही सभ बातक सोच आइ श्किसुन देव भायके भेल छेलैन। हािमे चाहक कप देना पतीके एक घन्टा भऽ गेल छेलैन। चाह पाश्न-पाश्न भऽ गेल छल। तखने राम सेवक चाह पीबैले श्किसुन देव भाइक घरे लगक चाहक दोकानपर जाइ छला।

राम सेवक श्किसुन देव श्दस तकैत पुछलश्खन-

"भाय एना श्कए मन झूस अश्छ। की केकरोसँ झगि-झंझट भेल हेन, मुँह श्कए तुरछ केने छी?"

समाश्जक श्वस्तामे श्किसुन देव आ राम सेवकक बीच 'भाय-भाय' चलैत रहैन।

श्किसुन देव बजला-

"नश्ह भाय, कोनो बात नश्ह अश्छ, पैछला श्जनगीक बात सभ मोन पश्ि गेल हेन। आबह-आबह बैसह, केतए जाइ छह। चाह पीब लएह, तैबीच श्कछु गपो-सप्प हेतइ।"

राम सेवक ससैर कऽ श्किसुन देव लग जा चौकीए-पर बैसला। आ श्किसुन देव पतीके हाक देलश्खन-

"यइ सुलोचनाक माय, कनी एमहर आउ, नश्ह तँ एक श्गलास चाह

आरो बनौने आउ।"

अपना हाकि सरेलहा चाह थकसुन देव एके घोटमे पीब लेला। आ बजला-

"राम सेवक भाय, की कहब आब तँ हमर उमेर अस्सी-पचासीक लगभग भऽ गेल। पाचटा बेटा अछि। सबहक बिआह-दुरागमन भऽ गेलै, सभ बेटा धीया-पुता आ कनिया लऽ कऽ दिल्लीमे जमीन लऽ घर बना ओतै रहैत अछि।"

राम सेवक कहलकैन-

"भाय साहैब, से तँ नीके ने अछि, अपन कमाइए आ धीया-पुताक गूजर-बसर करैए। अहाके कोनो तरहक जवाबदेहियो तँ नइ अछि।"

बिच्चेमे टोन दैत थकसुन देव कहलकैन-

"नइ हौ सेवक भाय, से बात नै छइ। हम दुनू परानी बुढ़ा-बुढ़ी की कऽ सकै छी। थकयो एक लोटा पैनो देनिहार नइ अछि। गाममे की रोजगारक आब कमी छइ। पहिने ने रोजगारक कोनो साधन नहि छेलै, लोक ढाका, बंगाल, मोरंग, दिनाजपुर, सिलीगुरी जा कऽ धन रोपनी, मर आ रोपनी आथक पटुआ झाड़ि छल, आ केते गोरे बहलमानी सेहो करै छल। चन्द थकिसमक रोजगार करै छल।

हमही एक दिन बिराटनगरसँ पाचटा बहलमानक संग कटही गाड़ी लऽ कऽ जंगल लकड़ी आनैले जाइत रही। तीन दिनका रसता छेलै, रास्तामे बाघक दुआरे गाड़ीके गोल कऽ कऽ राखि दिऐ, बीचमे बरदके बान्ही आ काते-कात चार कोणपर लकड़ीए-के घूर कऽ दिऐ आ एक गोरे सिरपैह लऽ कऽ खड़ा पहरा दिऐ आ बैली सभ सुती। बिहान भने गाड़ी जोति कऽ थदा होइ। एक दिन लकड़ीसँ लादल गाड़ी छल। जंगलमे एकटा बाघ घात लगौने छल, डेरासँ दस लग्गा गाड़ी

जोइत कऽ आगा गेल हएब आ‍क ऐगला गाि‍क एकटा बरदक ऊपर बाघ झपटलक आ ‍ाचने-‍ारने घोर जंगल ‍दस लऽ गेल। कोनो तरहे ‍बराटनगर एलौ।”

राम सेवक पुछलकैन-

“ऐँ यौ भाय, तहन तँ पाण उ‍ि गेल हएत, डर न‍ भेल जंगलसँ बहराइत?”

‍कसुन देव कहलकैन-

“डर कहूँ नै हुअए, ‍म्मते ने क‍न-सँ-क‍न काजके हल्लुक बना दइ छइ। हमरा सभके तँ रेहल-खेहल रहए, एहेन-एहेन घटना सभसँ।”

राम सेवक कहलकैन-

“यौ भाय साहैब, हम जौ र‍तौ तँ एक तँ पाणे उ‍ि जाइत आ जँ बँ‍ायो जइतौ तँ नानी ने म‍हे जे ि‍र जंगल ‍दसक रस्ता दोहरा कऽ ध‍तौ!”

“हे सुनू एक बेरका घटना कहै छी।” ‍कसुन देव मुँहपर हाि‍रैत बजला-

“‍ाल्लीगुरीमे पटुआ झाि‍त रही,भ‍ जाघमे जोक धऽ लेलक। से की कहब तमाकुल चुना कऽ रखने रही, हँसूआ सेहो रखने रहैत छेलौ। ऊपरमे आ‍ हँसूआसँ सभ जोकके खि‍र ‍दऐ आ चुनेलहा तमाकुल सबहक मुँहपर दऽ ‍दऐ। ‍कयो सुइया-डोरा सेहो रखने रहैत छल, सुइएसँ गा‍ि कऽ डोरामे धऽ लटका ‍दऐ आ डाँरमे खो‍ ‍ाअए। जोक सभ पा‍ामे दहलाए लगए तहन पटुआ झाि‍।”

राम सेवक कहलकैन-

“यौ भाय, तहन तँ बि‍ जीबटगर काज करी।”

‍कसुन देव भाय ि‍र कहल‍न-

“तोरा एतबेमे अचम्भा लाथ्ा गेलह। हे सुनह- गाम आबी तँ सत-सत कटा खेतमे हम आ हमर भजार अच्छेलाल श्मल कऽ राश्वा-के कोदाश्वसँ ताश्म श्चए। दू-दू कटा खेतमे असगरे धान-मरआ रोथ्ा ली। तब ने अस्सी बखक उमेरमे दुरस्त छी। मरआ सनक श्वारोग अनके लोक त्याथ्ा देलक।”

श्वच्चेमे राम सेवक पुश्छ देलकैन-

“अच्छेलाल के छल?”

“नै श्चन्हलहक, श्यतमराक बाप छल। ओकरा तेतेक तागत छेलै जे सात मनक पटुआ सोनक गश्वयाके श्वराटनगरमे असगरे उठा कऽ गोदाममे राश्व दइ। एक श्वन गोदामक चौकीदार देखलकै, ओ जा कऽ नेपालक िनामे कश्व देलकै, वेचाराके पकै कऽ जेलमे दऽ देलकै। तश्वना खाइयोमे छल, एक श्वकलो चौरक भात कल्लौमे आ सातटा मरआ रोटी जलखैमे खाइ छल। एक श्वकलो राहैरक उसना तँ ओकर बामा-दश्वना हाि‍क खेल छल। केतेक कहब श्वतलाहा गप-सप्प। अखुनका श्वया-पुताके देखै श्छए जे दबाइयेपर खेपैए। झरो श्परैले साइश्वकल वा मोटरे साइश्वकलसँ जाइत अश्छ। बीसो श्वकलो गहुमक मोटरी लऽ कऽ श्यसबैले नइ जा होइ छै, ओहूले जने चाही। काजसँ देह चोरबैत रहतह।”

राम सेवक बाजल-

“भाय साहैब, आब तँ गाम-घरमे लोके माने जुआन-जहान कहा अश्छ। खेत सभ परती पि‍ल रहैत अश्छ। नश्व तँ गाछ-श्वरीछ लगौल अश्छ। गाम जेना सून भऽ गेल हेन।”

श्वकसुन देव भाय बजला-

“यौ सेवक भाय, हमरा तँ बुझना जाइत अश्छ जेना गाम उनैट गेल हेन आश्वक गाम सुनैट गेल हेन से बुझने ने जाइत अश्छ। कान तँ

सोन नक्ष, आ सोन तँ कान नक्ष।”
गाममे देखबहक जे पक्षने कच्ची सिक छल से आब पकीकरण भऽ गेल। जैठाम गाममे सबहक दुआरपर, केकरो एक पल्ला तँ केकरो जोि भक्ष बरद छल भैस छेलै, गाए छेलै तैठाम आब देखबहक जे दस हजार लोकक बस्तीमे पाच जोि बरद नै भेटत। जक्षना बिका माछ छोटका माछके खा जाइत अक्ष तक्षना खेतीक उपकरण भेने भऽ गेल। आब रेक्टर भेने जमीनक जोत-कोर, अनक दौनी, िक्षलक कमठान इत्याक्ष सभ तरहक काज हल्लुक भऽ गेल हेन। तक्षना अनक िक्षलक बीआ-बैल भेने, सुख-सुक्षधा तँ भऽ गेलै मुदा लोक गामे छोक्षि कऽ पिा गेल हेन तखन खेती तँ बीरान हेबे करत।
”

“हँ से तँ भाइये गेल हेन।” राम सेवक बाजल।
तैपर क्षकसुन देव बाजल-
“यौ भाय, एम.बी.बी.एस. डाक्टरके देखबै जे मनुखक खून-पैखानाक जाँच करत। हमरे पोती डोली क्षल्लीसँ गाम आएल छल, दसमीमे पढ़ैत अक्ष। एक क्षन दलानपर बैसल रही, तखने गाए गोबर केलक, पोतीसँ कहक्षाऐ ‘गइ डोली गोबर कनी कोदाक्षसँ हटा दक्षन तँ।’ मुदा पोती हमरापर आँक्ष गुिरैत अँगना क्षस चक्ष गेल। से कहू तँ कोदाक्षयोसँ गोबर उठबैमे क्षारना भेलइ!”
क्षचचेमे राम सेवक क्षकछु बाजए लागल मुदा क्षकसुन देव रोकैत िर बाजल-
“यौ भाय, गोबर तँ ओहन वस्तु अक्ष जइसँ पूजाक ठाउ नीपल जाइत अक्ष। खेतमे क्षयौ तँ उबबा शक्क्षा बढ़त, भानस कऽ सकैत छी, गोबरक छौरसँ माल-जालक िरके सािक कऽ सकै छी। कोनो क्षिनाइल वा अन्य दबाइक जररत नइ पिित। बरतन-बासन सािक

कऽ सकै छी। से कहू भाय, देहात सनक शुद कोनो वस्तु शहरमे भेटते। तेहेन गामके त्याथ्य कऽ लोक परदेशमे बास करैत अछ्थि। शहरमे जेकरा लेल र पैआ लगै छै से गाम-घरमे मंगथ्याायेमे भेट जाइ छइ।

ि ि काल चुप भऽ कऽ थ्यकसुन देव ि र बाजल-

“आब थ्यक ओ गाम रहलै जे सभ वस्तु लेल लोक कलहन्त छल। आब तँ गली-गलीमे पकी सि कि छै, घरे-घर टी.बी. छै, मोटर साइथ्यकलके के पुछैए चथ्यचथ्यकया गाि ि केतेको भऽ गेल अछ्थि गाम-घरमे। स्कूल छै, अस्पताल छै, थ्यबजली छै मुदा जुआन-जहान लोकक अभावमे गाम बीरान भऽ गेल अछ्थि, एकदम्म सुनसान जका। ”

राम सेवक अपन मुि ि डोलबैत थ्यकसुन देव थ्यदस तकैत रहल। मुदा थ्यकछु बाजल नथ्यह।

८

तीलके तार

लाल काकी साझ दइले दीप नेस कऽ तुलसी चौरा लग जाइ छेली। अँगनामे गहुमक बोझ जह-पटार राखल छेलइ। दोगे-दोग लाल काकी तुलसी चौरा लग पहुँचली। तखने पछिया रमकल। लाल काकीक नजैर रहैन तुलसी चौरापर। हवा आ गमीसँ गहुमक बोझ हरनाठ भेले छल, कखैन-ने-कखैन एकटा बोझमे दीपसँ आगि लपैक लेलकै। तखन लाल काकी किछु ने बुझि सकली। जखन बोझसँ धुआँ उठकलए लगल कि मझिली पुतोहु हल्ला केलखिन-

“आगि लागि गेलइ।”

घरक सटले दऽ कऽ पकी स कि छेलै, लोकक आवाजाही तँ छेलैहे। कियो बगलक गाम कछुबी-दे बाजल- ‘नवटोलियामे आगि लागल छइ।’

ओतुका लोक दौड़ि। कियो कछुबीके तँ कियो तमुरिया धसि गेल। ओ बाजल-

“नवटोलिया सुडडाह भऽ गेल!”

आब तँ नवटोलियाक जेतेक कुटमैती लागिमे छेलै ओ सभ दौड़ि। जखना कोनो नीक बात होइ कि अधला बात आकि कोनो समधिया एक दोसरक संग बात-चीत कहैमे किछु खिसिया-पिसिया लगा दैत अछि, आ किछु बातके घटा-बढ़ा कऽ कहैत अछि, तखना भऽ गेल। जहन देखए गेल तँ मात एकटा गहुमक बोझक किछु अंश झरकल छल।

तैबीच सुन्दरी पुतोहु बजली-

“यै लाल काकी, देखियौ लोकक किरदानी! एतेक ने तीलके तार बना कऽ बाजल जे कर-कुटुम तकक लोक पहुँच गेल।”

लाल काकी बजली-

"यै कनिञाया, अपना लोक सभके बजैमे कोनो कमि टका-पैसा खचा होइ छै, गपके छिलैन करैत-करैत केकरोसँ केकरो मुहो-ठुठी करा देतह। केकरो अपना बातसँ झूका देतह वा होशे उडि देतह। सही बात बुझत नञि, आ तीलके तार बना उबैत रहत।"

८

एक चुनौटी तमाकुल

महान ान्त्रकारी जुझार समाज सेवी कम्युनिष्ट नेता शुभंकर बाबू। अंगेजक शासन अन्तम अवस्ामे पहुँच गेल छल, गाम-घरसँ लऽ कऽ शहर तकमे गाधी बाबाक पूणव अजादीक घोषणा भऽ चुकल छल। जँ-पटार ान्त्रकारी सभ रेलक पटरी, टीलीानिक तार, सरकारी कागजातसँ लऽ कऽ भवन आ ाना तकमे तोा-ाा केलक, आो लगा-लगा जारलक। ार अंगेजक हाकम आ पलटन सभ सेहो ान्त्रकारी सभके पकैा-पकैा केतेके गाछमे टाो ाँसरीपर चढ़ा दैत तँ केतेकोके कालापानीमे भेज दैत छल। केतेक माए-बनके मागक नूर घुअ पालै। केतेक भायके शहीद हुअ पालै। केतेकके जेलमे साा देल गेलइ। केतेको लोक ललका मुरेठा देख घरमे ािकल रहैत छल।

शुभंकर बाबू सेहो कएक बेर जेल गेला। नमक सत्यागहमे भाग लेलैन अंगेजके भगबैमे जहाँ तक जे बुा छेलैन ओ गुलामीसँ मुक्ताक लेल लगौलैन। भंझारपुररेलक पटरी उखाामे नको जेलमे ठुा देलकैन। जाबत जीला ताबत ध कयो लोभ-लालच, घूस-पेच आसँ दूर रहला। साधारण भेष-भूषा छेलैन शुभंकर बाबूक।

शुभंकर बाबूके एकटा बेटा वाकर। पढ़ैमे तेजगर तँ न, मुदा जना गाइक नाँगैर पकैा वेतरणी पार होइत अछ तना वाकर दसमी तक पढ़लक आ ब्लौकमे करानीक नोकरी भेट गेलैन, सेहो स्वतंतता सेनानी शुभंकर बाबूक लाका छथान तँए। वेचारे शुभंकर बाबू तँ आब ऐ दुआयामे नइ छैा मुदा हुनक कृत अखनो गाम, मला आ राज्य तकमे छैन्हे।

हमरा एकटा वोगंगक जर रत भेल। ब्लौकसँ सतैर पाशत छूटपर

भेटैत रहइ। हमहूँ दरखास देलिऐ आ बाकी रपैओ जमा कऽ देलिऐ। दिवाकर बाबूक पमोशन भेलैन। हुनका नाजीर आ बड़ा बाबूक काज देल गेलैन।

हम वोर्डिंग उठबैले गेलौ। नाजीरके माने दिवाकर बाबूके कहलयैन-

"सर, हमर जे वोर्डिंग उठबैक आदेशबला कागज छै, ओ देल जाए।"

दिवाकर बाबू कहलैन-

"जाबत किछु खचा-वचा नै करब ताबत कोना कागज देब।"

पुछलयैन-

"सर, हम तँ सभ रपैआ आ जमीनक कागजात जमा कऽ देने छी। तहन फेर कोन खचबाचवा?"

दिवाकर बाबू बजला-

"से नहि बुझलिऐ, ऑफिसमे चन्द तरहक ने खचबाचव छै किने, तइमे किछु पैसा लगबे करत।"

ताबत एक गोरे सेहो नाजीर लग काज करेबाक लेल आएल। हुनको यएह बात कहलखिन।

हम बाहर आबि वेवेकसँ सभ बात कहलिऐ ओ कहलैन-

"यौ बाबू, हिनक हालत मैत पुछू। आश्चयक बात छै जे हिनक पिता शी शुभंकर बाबू गरीब लोकक लेल, देशके अजाद करक लेल कोन-कोन यातना ने सहलैन। मुदा हिनका तइ सबहक एको रती लाज-विचार नइ छैन। जाउ किछु एमहर-ओमहर कऽ कऽ काज करा लिअ।"

हम दिवाकर बाबूक कुरसी लग फेर गेलौ आ कहलयैन-

"सर, हमर काज कऽ दिअ ने।"

दिवाकर बाबू बजला-

"लाउ दू साए र पैआआ हे क्ष्माअ कागज।"

हम कहलयैन-

"सर, हम गरीब छी। सभ पाइ खचा भऽ गेल। हमरा लग आब र पैआ नइ अछ्छ।"

थ्द्रवाकर बाबू बजला-

"गरीबके तँ भगवानो सहायता नक्ष्म करै छथ्रिन। अही कहू तँ कोनो भगवान आक्ष्क इष्टदेवता ब्बना चढ़ौआ लेने केकरो काज करै छथ्रिन? तहन हम मनुख भऽ कऽ कोना छुच्छे कऽ देब..!"

हम कहलयैन-

"सर अहाक थ्रताशी तँ महान स्वतंतता सेनानी छला। गरीबेक श्वतक लेल ने जहल गेला। माहूर खेलैन। एते तक जे स्वतंतता सेनानीबला पेशनो नै लेलथ्बन आ सरकारीए कोषमे जमा करक लेल कहलथ्बन। ओ एहेन क्ष्यागी छला। आ अहा...।"

तैपर थ्द्रवाकर बाबू बजला-

"तँए ने, पाच बीघा जे जमीन छेलैन तइमे सँ लोके सबहक सेवा करैत-करैत तीन बीघा जमीन बेच लेलैन। बेसी गप-सप्प नक्ष्म कर। लाउ एके साए र पैआ आ कागज क्ष्माअ।"

हम कहलयैन-

"थ्द्रवाकर बाबू, हमरा लग तँ एकोटा टाका नइए, तहन हम केतए-सँ थ्द्रअ।"

थ्द्रवाकर बाबू आँथ्ब्र गुिंत कहलैन-

"पचासोटा टाका लाउ, नक्ष्म तँ पचीसोटा टाका थ्द्रअ।"

हम कहलयैन-

"सेहो नइ अछ्छ।"

ि र थ्द्रवाकर बाबू दराजसँ तमाकुलक क्ष्छब्बी आकाक्ष्म कऽ दैत

कहलैन-

"तँ जाउ, दोकानसँ एक चुनौटी तमाकुले नेने आउ। हम ताबत कागज तैयार कऽ दइ छी।"

हम सोचलौ आब की करी की नञ्, चुनौटी लेलौ आ पाच रपैआक तमाकुल लेल चलि देलौ।

हमरा परोछ भेलाक बाद दोसर कर्मचारीसँ दिवाकर बजला-

"एहेन बुड़ि लोकके नञ् देखलौ। पाचोटा टाका लऽ नञ् आएत ब्लौक! फिकटेमे काज कराएत!"

हम जाबत तमाकुल लऽ कऽ एलौ ताबत कागज तैयार छल। हाथिमे कागज दैत दिवाकर कहलैन-

"ई देब घर जा कऽ, बिना देने काज नै ससरत।"

कागज लऽ कऽ माल गोदाम दिस जाइत रही कि हमरा पंचायतक गामसेवक जदूवीर पासवान भेट गेला। हुनका सभ बात कहलयैन। सेवकजी कहलैन-

"दिवाकर बाबूके आदते एहने छैन। जहन हमरो सभके कहता जे तूँ सभ बड़ि माल मारैत छह, चलह चाह-पान कराबह। केकरो बिना किछु नेने काजे ने करै छथिन। तूँ तमाकुल देलहक ओकरा की करता तँ पनीमे झाड़ि कऽ राखि लेता आ दोसर जे कियो काज करबए लेल औत, तँ ओकरा फेर ओ चुनौटी धरा देथिन जे एक चुनौटी तमाकुल नेने आबह।"

"कियो देखनिहार-सुननिहार नञ् अछि एहेन चूप्पा चोर सभके।" -हम कहलयैन।

तैपर सेवकजी बजला-

"नाजीरक बेते ने तेहेन त्याग-तपस्या केने छैन जे दिवाकरक मुहे देख छोड़ि दइ छइ। जहिना कियो बाप-दादाक कृतसँ उदार होइत

चलैत अछि तँ ओकरयो अपना बदौलत बाप-दादाक काजके उदार करैत अछि। ओकरयो हाथ कऽ जीतैत अछि तँ ओकरयो जीतला बाद हारैत अछि। जेकर ओजने एक चुनौटी तमाकुल, तेकरासँ की उमीद कऽ सकै छह।"

८

आब कखनो चेतब

25 अपैल 2015 इस्वीक घटना छी। कियो स्नान करैत छल, कियो स्नान कए कऽ खेनाइ खा रहल छल, कियो अराम कऽ रहल छल। कियो रेक्टरसँ खेत जोता रहल छल जे रौदीमे जोतलाहा खेतक दुआ मरि जाएत आ खेत निरोग रहत। समय पछिला दिनुका सबा बारह बजे आ दोसर दिनुका साढ़े एगारह बजेक लगभग छलऐ। एकाएक धरती डोलए लगलै। अफरा-तफरी मचि गेल। के धनीक, के गरीब सभ एकरंगाह भऽ गेल, जेलक खेनाइ बेरका समय जका सभ कियो घरसँ निकैल भिन्न जगहमे चलि गेल। घरसँ निकलैमे आ अफरा-तफरी भेने केतेक गोरेके टाग-हाथ टुटल। केतेक घर-दुआर तहन-नहँस भेल। कोन दैत-दानो छेलै जे देवालयके सेहो नइ बकसलक। केतेके छातीक धड़किन बढ़ि गेल। अस्पतालमे रोगीके रखैक जगह नइ रहलै। एके अर्थीयापर दस-दसटा मुदाक डाह-संस्कार भेल। केतेक गोरे तँ मकानक मलबाके तरेमे रहि गेल। जेकरा मशीनसँ धरतीए-मे पचा देल गेलइ।

बाबाक नाम छेलैन छोटे लाल दास, लोक हुनका पारखी बाबा कहैत छेलैन। उमेर करीब 85-90 बखक छेलैन। पती सुशीला जीबते छेलैन। बबो स्नान कए कऽ भोजनपर बैसले छला। दू कर भात-दालि खेने हेता कि नहि, पती सुशीला कलपर सँ पानि आनए गेल छेली कि तखने धरती डोलए आ कुदकए लगलै। घर लगक पोखैरक पानि उछैल कऽ महार टपि गेल।

पती सुशीला बपहारि काटैत बजली-

"ई की भेलै..!"

कहैत सुशीला कलेपर धँइ भटका खसली आ अचेत भऽ गेली। बबो

ताबत कुश्द-ािश्म कऽ, िश्म आँगन छेलैन, चल गेला। दू-तीन श्मनट तक कनी-मनी धरती डोश्मते रहलै। केकरो श्मकछु िुरेबे ने करै जे की करी। धरती उठतै श्मक आ बैसते आश्मक धँसतै।

बाबा हल्ला केलैन-

"दौरे जाइ जा हौ..!"

श्मकछु गोरे आएल आ सुशीलाके उठा-पुठा कऽ दलानपर जे भागवत करौलहा मरबा छेलै, तेते बैसा कऽ पाश्मक छीचा देबए लागल। ताबत डाक्टरोके बजा कऽ आनल गेल। दवाइ-दार कएल गेल। बिी कालक बाद सुशीला ठीक भेली।

साझक समय छेलै, बहुत गोरे मरबापर बैसल छल तखने सजन, बाबासँ पुछलकैन-

"अँए यौ बाबा, एना श्मकए भेलै। ई की छेलै। हम तँ बौक भऽ गेल छेलौ। जहा श्मक देह डोलए लागल श्मक अँगनासँ भगलौ। रोडोपर जेना श्मकयो उठा कऽ पटैक देलक तश्मना बुश्म पिल।"

पारखी बाबा, कहलश्मखन-

"बौआ, ई भुमकम छेलै। तूँ सभ ने पश्मल बेर भुमकम देखलहक। हम तँ छोटका-मोटका छोश्मि तीनटा बिका भुमकम देखश्मए हेन। पैतीस इस्वीक भुमकम सभसँ जोरगर छेलै। केतेक ठाम बिका-बिका दराश्म िश्म गेलै, केतेक घर-दुआर नास भेल, केतेक जान-मालक नोकसान भेल तेकर कोन ठेकान। सतासीक बाश्मढ़ आ अठासीक भुमकम नामी अश्छ। ओहू बेरका कम नै छेलै अदहा भारतके पुरबसँ पच्श्छम तक आ उतरमे नेपालके सेहो डोला देलकै। अठासीक भुमकमक केन्र छेलै मधुबनी आ सीतामढ़ीक बीचमे आ ऐ बेरका केन्र छेलै नेपालमे काठमाण्डूक नजदीक, तँए ओतए बेसी छश्मत भेलै। जेकर केन्र जेतए रहैत अश्छ तेतए बेसी छश्मत आ

दूरबलाके कम असर पड़ै छइ।”

“एना किए छै बाबा?” सजन पुछलकैन।

ताबत पण्डित काका टीप देलखिन-

“रौ सजन, धरती तरमे कौछु छै, ओकरापर जहन पापी सबहक भार पड़ै छै ने तहन ओ देहके डोलबए लगैत अछि तखन भुमकम होइ छइ।”

सजन पुछलकैन-

“अँए यौ पण्डित काका, केतेकटा कौछु छै जे पूरा धरतीए-के डोला दइ छइ?”

पण्डित काकाके किछु फुरबे ने करैन। तैबीच भुलचन बाजल-

“नइ यौ पण्डित का, शेषनागपर ई धरती अछि। ऐ धरतीपर जहन बेसी पाप, अत्याचार, व्यभिचार, अपहरण आ हत्या हुअ लगैत अछि तहन शेषनाग अपन फनिके डोला हल्लूक करैत अछि।”

जेकरा जे जेना बुझल छेलै से तेना अपन-अपन तकवदैत छल। पारखी बाबाके जहन सबहक गप सुनि-सुनि कऽ मन घोर भऽ गेलैन तँ गप हँकरिआहारके पुछलखिन-

“जापानमे किए दसे दिनपर भुमकम होइ छइ?”

सभ चुप भऽ गेल। कियो ने किछु बाजए।

बाबा बजला-

“ई बात नहि छइ। पकृतिमे माने बहृाण्डमे जेतेक वस्तु-जात आकि पदार्थ अछि सभके अपन-अपन गुण-अवगुण छइ। पृथ्वीके सेहो अपन गुण-अवगुण छइ। पृथ्वी अपना पेटमे असंख्य वस्तु सभके रखने अछि। ठंढ-गमवतँ सभ वस्तु होइते अछि किने। सभके अपन गर्मी छै किने। धरतियोके अपन गर्मी अछि। ओकरो पेटमे जखन गैस वा पदार्थमे गमी होइ छै तँ केतौ ज्वालामुखी बनि, तँ

केतौ परत-पर-परत चश्ढ़ गेल तँ केतौ धरतीए घँश्म गेल, तँ केतौ झील बश्मा गेल तखनेने भुमकम होइ छइ। जश्मना लक्ष्मण रेखा टपला बाद सीता हरन भेलै तश्मना अश्मक कोनो वस्तुमे भेलाक बाद उग र प भाइये जाइ छइ।"

सजन पुछलकैन-

"ऑइ यौ बाबा, तश्मन तँ बाइढ़ोमे अश्मना होइत हेतइ?"

बाबा बजला-

"हँ, पकृश्मामे पाचटा जे तत्व अश्छ जेना अकास, सूयद्व हवा, जल आ धरती एही पाचो तत्वसँ बनल ई शरीर अश्छ आ अही पाचोक नजैर सभ मनुखपर बराबर अश्छ। यएह ने देवता भेल, जेकरामे कोनो भेद-भाव नइ होइ। अकासमे जेकरा जेतेक उ बाक होइ उश्मि सकैए। सुर जक नजैर सभपर बराबर प ेत अश्छ। मौसमक श्मसाबसँ अपन गुण-अवगुण छइ। बैशाख-जेठमे गमी जन-मार ख होइए आ वएह गमीक जा मे संजीवनी बुटीक काज करैत अश्छ। तश्मना जलोके छै, सबहक लेल बराबर बरसैत अश्छ। मुदा वएह जल कश्मयो पलयकारी बाश्ढ़ सेहो आश्मा दैत अश्छ तँ कश्मयो श्मयासक लेल तरसबैत सेहो अश्छ। तश्मना हवोके छै, सबहक लेल बराबर। कश्मयो मार ख तँ कश्मयो शीतलता सेहो दैत अश्छ। तश्मनाने धरश्मायोक अश्छ। धरतीके धरती माता कश्म कऽ लोक पुकारैत अश्छ, जश्मना माए अपन श्मया-पुताके केतबो कष्ट सश्म कऽ पालन-पोषन करैत अश्छ तश्मना ने धरती सेहो करैत अश्छ।"

ताबत सुशीला चाह नेने एलश्मन। सभ श्मकयो चाह पीबए लगला। चाह पीब, श्मकयो तमाकुल तँ श्मकयो बी ी पीबैत गप-सप्प करए लगला। भुलचुन बाजल-

"अँए यौ बाबा, हम सभ जे एतेक पुजा-पाठ करै छी से देवता सभ

छकए ने कष्टक बेरमे सहायता करैत अछि?"

बाबा बजला-

"रौ भुलचुन, लोकक चाइल बुझबीहीन तँ देहमे आगि लगा जेतौ। चलाकक काज छीऐ। अपन स्वा िक लेल मनुखके बँटैत-बँटैत लोक आत्मोके बाँटि नेने अछि। भगवान आ धरतीके के पुछैए।"

तैबीच सजन बाजल-

"तखन केना कऽ जीब?"

बाबा कहलखिन-

"बौआ, बार दक रिपर छह। कखन छह कखन नहि, तेकर कोन ठेकान। बाढ़ि, रौदी, भुमकम, अगिलग्गी, आतंकवादीक आ िमण, सुनामी आ पैलोनक आ िमण, ऐ सभके पछा ि सही रस्ता बना अपनाके ठाढ़ केने जे जीब लेता वएह पूजणीय भेला। हुनके समाजमे पूजल जाइत अछि। मृत्युए-क नाम छै ने सत्यम, शिवम, सुन्दरम्। आब मशीनी युग आबि गेल हेन। जखना घन्टोक काज सकेण्डमे होइत अछि, तखना आ िदो देखते-देखते पलय मचा दइ छइ। तँए आबो चेतइ जाइ जा। मनुख बनि आएल छह, मनुख जका आचरण बना जीबह। केतेक की कहबह। बि ओझरी सभ छै ओझरीके सोझरबैत चलैत रहह।"

८

विघटनकारी तत्त्व

जीवन बाबाके अपन पाँच कट्ठा बाड़ी-झाड़ी छल। जे एक दिनक बखामे एक मरद करीब पानि लागि गेल। तेकर कारण छल, चारु कात वस्ती रहने पानिक निकास नहि। जीवन बाबा एकटा दखास्त एस.डी.ओ. आ जे.ई.के देलथिन जे हमर सबहक पनरह बीघाक प्लॉट जे झीलनूमा बनि गेल हेन, तेकर समाधान कएल जाए।

जीवन बाबाक जिनगी सभ दिन संघर्षमे बीतल। जइ समैमे छातक जिनगीमे छला तहू समैमे बाबा गाइक सेवा आ खेती-बाड़ीमे तरकारी-फिरकारी उपजबैथि। वएह सोन सन चौमासमे करीब सतैर घौड़ केरा, पनरहटा अनरनेवाक गाछ, पाचटा सीमक गाछक संग करैला, सरीफा, धातीम आ अनारसक करीब एक साए गाछ आ तैसंग कटा भँटाक घेरा गाछक जड़िमे दू हाथ-तीन हाथ पानि लागि गेलैन। रंग-बिरंगक जे फिल-फिलहरीसँ लऽ कऽ तरकारी-फिरकारी तक छल ओ सुडडाह भऽ गेलैन। यएह दुदशा फिलक देख बाबा दरखास्त देने छेलथिन।

1960-65 इस्वीक अमलमे पुरना मुखिया छला। ओ दक्षिनवारि टोल आ मुसहरीक बीचमे एकटा पाइप देने छेलथिन पानिक निकास लेल। गामक जे गोठ टोल अछि जइमे करीब पचास घर मुसलमान, अस्सी घर मुसहर, सतैर घर धानूक, चालीस घर ब्राह्मणक बास अछि ओइ सबहक घर आ चौमासक पानि ओही पनरह बीघाक गोरहा खेतमे अबै छल आ पाइप देने पोखैर होइत दक्षिनबरिया बाध दिस चल जाइत छल। जइसँ धान, गहुम, मौसरी, खेसारी, सेरसो, तीसीक संग रंग-बिरंगक तरकारी-फिरकारी सभ उपजैत छल।

दस साल पहिनौ पंचायतसँ पुलियाक निर्माण भेल छेलइ। आर.डब्ल्यू.डी. सडकिसँ एकटा सडकि मूख्य मंतीक योजनासँ मंजूर

भेल। ओ सकि धनुकटोलीसँ दछनवा टोल होइत मुसहरी होइत मुसलमानक टोलमे जा कऽ खतम होइत अछ। जखन सकिपर अटीकारण होइत छल तखने पाक आकासी लेल गप-सप्प चललै। ठीकेदारके एकटा पूल देबाक छेलै पाक आकासी लेल। ओ वेचाराके कयो अपना घरक आक खेतक आँगामे पूल बनबैये ने देलक।

वेचारा ठीकेदार हा-िक कऽ गोठक पुबया चौरमे जा कऽ एकटा पूल बना देलकै जेकर कोनो उपयोग न। कहबी ठीके छै- लोल केतौ घोघ केतौ…। सएह पइर।

सरकायो ऐमला-िमला क कम पेच-पाच लगबै छइ। कयो अपना सीर अपजश लेब ने चाहत, गामसेवकसँ लऽ कऽ बी.डी.ओ; जे.ई. आ कलक्टर तक ओ ओकरा खत तँ ओ ओकरा खत। ताबे समैये बीत गेल। सएह भेलै जीवन बाबाक दरखास्तक। एस.डी.ओ. खलक बी.डी.ओ.के आ बी.डी.ओ. खलक जे.ई.के।

जे.ई. जहन सहर-जमीनपर मोआइना करए एला तँ दछनवा टोलक घटनकारी तत्त सभ जलखै-चाह-पान करा तेसरसँ कहबा देलक जे ऐठाम पुलक जर रते ने अछ। जहन ओहू टोलक लोकक जमीन ओइ पनरह-बीस बीघाक पलॉटमे। तेतबे न ओही टोलक एकटा पोिसर साहैबक आँगनमे पा भ छाबा लागल। आश्चयवतँ ई जे ओहो कहलन जे ऐठाम पुलक जर रत नइ छइ।

जहन िलाइ पूरा भऽ गेलै तहन िर जे.ई. साहैब सकिक मोआइनामे एला। संयोगसँ आइ गौआँ सभ उनटल जे.ई. साहैबपर।

जीवन बाबाक तँ सभ कछु दहाइये गेल छेलैन। मन खाएल रहबे करैन। जे.ई.के देखते बजला-

"रौ, घुरना इहे यो इन्जीयर, पकि! ला रासा बान्ह तँ आ काच-करचीसँ देह तता दहीन।"

जे.ई.के तँ होशे उश्चि गेलइ। तखने जोश्चियाक पाच बखक बेटा बािमे कलपर चश्चि गेल। ओ ओंघरा-पोघरा कऽ भश्चि डार पाश्चिमे चश्चि गेलइ। हल्ला भेलइ।

जे.ई.के आब तँ श्चिकछु िरबे ने करइ। बच्चा ताबे कश्चिाये पाश्चि पीने छल। जे.ई. बाजल-

“अहा सभ धीरज धर। हमरा जाए श्चिअ। कोनो-ने-कोनो श्चिादान भऽ जाएत।”

तैपर श्चिकसुन सदाय बाजल-

“नश्चि, नइ जाए श्चियौ यौ जीवन बाबा।हमर जे घर खश्चि पिल हेन दाबा लागल अखनो पाश्चि अश्चि, से की हेतइ।”

रहमान, जे कुजरटोलीक छल, तखने ओहो हहासल-श्चियासल दौिल आएल। अश्चिते बाजल-

“चलू तँ देश्चियौ तँ हमरा ऑंगनमे भश्चि ठेहुन पाश्चि लागल अश्चि। साप-कीिा सभ अँगने-घरे सहसह करैए।”

मुदा दश्चिनवाश्चि टोलक लोक श्चिकयो ने श्चिकछु बजैत। सबहक मन रहइ- धू: कनी-मनी कश्चिाये ने भेल। बेसीसँ बेसी ऐबेर उपजा नै हएत। मुदा श्चिरोधी सबहक तँ घर-दुआर खसतै ने। जान-मालक कश्चि हेतइ ने। बि जे संघषश्चिील सभ छला तँ आब बुझौत। हमरा सभके कोन अश्चि श्चिया-पुता सभ बम्बई-श्चिल्लीमे मारे कमाइए। गुजर-बसरमे कश्चियो कश्चिाको श्चिकत िि हएत।

जे.ई.सँ जीवन बाबा पुछलश्चिन-

“कहू तँ एक मश्चिना हमरा दरखास्त देना भऽ गेल। ताबे सिकपर माश्चिये पश्चि रहल छल। आब तँ श्चिाटी-गाटी दऽ कऽ श्चिमेन्टसँ िलाइयो भऽ गेल। कहू तँ दरखास्त जे देने रही से कश्चियो हमरा सूचनो देलौ जे अहा चुपे-चाप जाच कश्चि कऽ चश्चियो गेलौ। देखू

तँ हमर िश्वमल सबहक दशा।”

जे.ई. बाजल-

“ई हमरासँ गलती भेल। आब एना नै हेतइ।”

जीवन बाबा कहलथ्विन-

“तँ बाजू जे पूल वा पुश्वाया कश्वया बनतै आ हमरा सबहक घर-अँगनाक पाश्व कश्वया श्वाकलत?”

जे.ई. बजला-

“चाश्वसँ पाच श्वदनमे पाश्वाक श्वाकासी भऽ जेतइ।”

“ठीक छै जाउ, मोन राखब। नश्व तँ सभ गुण्डइ श्वाकैल जाएत।” - जीवन बाबा कहलथ्विन।

जे.ई. साहैब तँ चश्व गेला। 10 श्वदन समैयो बीत गेल मुदा कोनो तरहक कारगुजारी नश्व।

श्वघटनकारीलोक तँ अश्वना सोश्वाते अश्व जे श्वकछु गमेलोसँ जँ अनकर कश्वा होइ तँ ओहन सोचबला लोकक मुँह मश्वान नइ होइत अश्व। ओकरा खुशीए होइ छइ। सरकाश्वयो तंतके तँ वएह गश्वा अश्व। ऊहो श्वक आम जनताके खुशहाल िि देखए चाहैत अश्व। कुसी भेटलै सभ श्वकछु श्वसैर गेल।

नारायण यादव

चौदह नम्बर कोटव

रमेशक पढ़ाइ चश्न रहल छल। बी.ए. पास कए बी-एड. कऽ रहल छला। बी-एड.क परीक्ष दऽ घर आएल छला। आगू पढ़ैक श्मजासा सेहो छैन्हे। रमेशक श्यता श्कसान छैि। हुनक आमदनी न्यून छैन। जेना-तेना घर-पश्रवारक काम-काज चलै छैन। पैघ खचा लेल जमीन-जाल बेचए पि छैन। रमेशके देखते श्यता कहलश्वन-

“बौआ, परीक्ष केहेन भेलह। आब हम आगाक पढ़ाइ हेतु खचवकेतए-सँ देबह। औरो श्चया-पुता अश्छ। बेटीक श्वआह आ श्दनेशक पढ़ाइ कपारपर अश्छ। आब अहा केतौ नोकरी-चाकरी आश्क कोनो नीक धन्धा कर जइसँ घरमे खुशहाली बनल रहत। घरक काम-काजमे आब अहाक माए नइ सकै छैि। तँए आब श्वआहो कए श्वअ जइसँ माइयोके सुख भेटत आ हमहूँ पसन रहब। अही साल अखाढ़मे सभा गाछी चलू।”

श्यताक बात सुश्न रमेशजी मौन छला। मौन स्वीकार लक्णम्।

रमेशक बाबूजी रमेशक सहमश्त पाश्व सौराठक सभा गाछी जाइक तैयारी करए लगला। सौराठ मधुबनीसँ पाच-छह श्कलोमीटर उतर-पच्श्छम कोणमे अश्छ। श्मश्थलाक पौराश्णक परम्परा श्वश्यात अश्छ। श्मश्थला छोश्ि एहेन परम्परा केतौ नइ छइ। माल-जालक हाट जका बरक हाट लगै छइ। श्वआहक लेल बश्न-ठश्न कऽ बर सभा गाछी अबै छैि।

कश्नयाबला सेहो बरक खोजमे सभा गाछी पहुँचै छैि। कश्नयागत बरक नाम, ठेकान, मूल, गोत आ योग्यतासँ अवगत भऽ पंश्मकारसँ सम्पकवकरै छैि। बर-कश्नयाक मेल आ बरक सोभावसँ कश्नयागत

आशास्त भेला बाद बिआहक चचवकरै छैि। ई केतेक नीक बेवस्ि मैथिली बाह ण समाजक बीच अछि जे कन्यायागतके बरक खोजमे घरे-घर, दारे-दार नहि जाए पिै छैन। ओना, किछु कन्यायागत दलालक िरामे पिि ठकाइयो जाइत अछि।

सभा गाछीमे एकटा पीपरक गाछ अछि, सुनै छिऐ जे जइ दिन एक लाख बाह णक जुटान सभा गाछीमे भऽ जाइत अछि ओइ दिन ओ पीपरक गाछ मौला जाइत अछि।

जे कन्यायागत स्थिर मने, धैयबसँ छानबीन कए बरक चयन करै छैि हुनका सिलता हासिल होइ छैन। शादी-बिआह बि सोचि-समैझ कऽ करक चाही। बुढ़-पुरानक किन छैन जे हाि-बियाही मास नहि। पिवारक स्तम्भ नारीए होइ छइ। कुशल गृहणी घरके स्वगवबना दैत अछि। बिनु घरनी घर भूतक डेरा आ अछि घरनी तँ लागत िरा। तँए कन्याक शील-सोभावक संग खनदान देखिए कऽ कि-कुटुमैती ठीक करक चाही।

रमेशक बाबूजी गामक दू-चािर भल मानुषके संग कए सभा गाछी पहुँचला। एक-दू दिन केतेक कन्यागतके आपस केलैन। बर, पाच-सात िट नमगर, छरहरा बदन, गोर वणवबि सुन्दर भव्य शरीर। बरक अनुर प कन्याया चाही आ बरातीक स्वागत सत्कार सेहो खूब नीक जका हेबाक चाही। तैसंग किछु दानो-दहेज गुप्त र पे हेबाके चाही। ओना, ई बरक पिताक इच्छा रहैते अछि। तँए बुढ़-पुरान कहै छैि जे सभ वरयाती कए मन? तँ ओकर जवाब होइत अछि- 'तीन मन।' तीन मन ओजनमे नहि, तीनटा मन, एकटा लिकाक मन जे खूब नीक कन्याया हुअए,दोसरमन बरक पिताक होइ छैन जे हमरा खूब दहेज भेटए आ तेसर मन बरियातीक होइ छैन जे बरियाती लोकैनके खूब स्वागत-सत्कार हेबाक चाही।

एकटा पच्छिम तरि क कन्यागत छनका लग जे बरक बापक दूरक सरोकारी ये छेलैन- टकरेला। बर-कन्याक विषयमे दुनू पक्के पछिनसँ जानकारी छेबे केलैन। बिआहक दिन-ठेकान तय भेल।

मैथिल लोकैन बि बुझियार होइ छैि। बिआहक अन्याम लग्नक आस-पास सभा गाछीमे सभा लगबै छैि। आ धिििमे एके-आध दिनक बीच बिआह ठीक करै छैि। जइसँ ने काडवछपबए पि छैन आ ने गाि-घोिक बेवस्ि करए पि छैन। पाच-दसटा बराती लए कम खचमे बिआह कए लइ छैि।

हमरा गाममे एकटा पण्डीजीक बेटीक शादी ठीक भेलैन। कन्यागत पुछलकैन-

“समैध बराती केतेक एबइ?”

बरक पिता कहलखिन-

“बरियाती न्यूनतम तीन अंकमे रहत।”

तैपर कन्यागत बजला-

“हम नहि समैझ सकलौ!”

ताबत शीबू काका बजला-

“नहि बुझलहक, तीन अंकक सभसँ छोट अंक भेल- 100 यानी एक साए बरियाती औता।”

कन्यागत साए गोट बरियातीक बेवस्ि केने छला। जखन बरियाती दरबज्जापर पहुँचला तँ मात एकटा मोटर गािमे बर लगा पाचटा आदमी छल। ओना, बरक पिनती बरियातीमे नहि होइ छइ। तँए घरवारी पुछलखिन-

“समैध, आरो गाि सभ अछि पछने?”

बरक पिता कहलखिन-

“नहि समैध, मात चारिटा बराती छी।”

ई बात सुनिते कन्याक पिता आगि-बबूला भऽ गेला। तामसे रिरिआइत बजला-

“अहा हमर सभ भोजनक सामगीके बरबाद करेलौं। अहा कहनेरही जे हम एक साए बरियाती आएब। मुदा तैठाम चारिटा बरियाती एलौं अछि! कहू तँ हमरा सभके बेइजत करा रहल छी कि ने।”

बरक पिता बजला-

“समैध, चारिटा बराती घरपर एला आ एकटा पुरंधर काका पौखैर महारपर उतैर गेला। ओ पर-पैखाना करि कऽ औता।”

कन्यागत कुदैत बजला-

“हमरा अहा बुद्धिबक बनबै छी कि ने।”

पुन: बरागत बजला-

“समैध, बरातीमे अहालू बाबू। देखबू बाबू, शीबू बाबू, हम आ पुरन्धर काका छैथि।अहाक एको चुटकी भोजनक कोनो सामगी बबाद नहि होएत। सुनू नौ (9) नेहालू (17) सतह देबू, बारह-बारह हम शीबू जखन औता पुरन्धर काका लगौता पचासक धका। कहू सौ आदमीक पारस सधत कि नहि। अहाक हम उपकारे केलौं जे 100 आदमीक बदलाइक बदला मात पाच आदमीके देबए पति।”

कन्यागत किछु नहि बजला।

रमेशक बिआह साधारणे पूवक भेल। आब पत्नी आ पती खुशी पूवक दामपत्य जीवन बिता रहल छला। किछु दिन सासुरेक र पैआ-पैसासँ सुख-मौज करैत रहला। मुदा आब पतीक रिमाइशक पूर्त्तिवनहि भऽ रहल छैन।

रमेश मने-मन सोचैथि जे केतौ जा कऽ कोनो नौकरी करी। रमेशक एक मीत सुरेश छेलखिन। दुनू मीत टाका-पैसा कमेबाक हेतु कलकता जेबाक विचार केलैन। पिताक विचार सेहो छेलैन जे बेटा बाहरसँ

किछु टाका-पैसा कमा कऽ घर लाबैि। पाय: सभ पिताक ई इच्छा रखैत छैन जे बेटा नौकरी करैि, टाकाक उपाजान करैि आ घरके खुशहाल बनाबैि।
रमेश आ महेश माए-बापसँ अनुमति लऽ कलकता पस्िान केलैन। कलकता 'कल'पर अछि से ओ बुझैत छल। सोहे आइ देख लेत। बरौनी होइत िसमिरया पूलपर पहुँचल। रमेश गंगा मैयाक मने-मन नमस्कार केलक। आ जेबीसँ किछु पैसा िनकािल दुनू भाइ मा गंगाके चढ़ा देलक। आ मा गंगासँ पािथना करैत बाजल-
"हे गंगा मैया, हम सभ जइ धारणासँ कलकता जा रहल छी, से पूरा करब।"
गाि़ी िनयत समयपर कलकता स्टेशन पहुँचल। ऐसँ पिहने दुनू भाइ घरसँ कखनयो िनकलल निह छल। शुद देहाती जका दुनू गोरेक देह-दशा आ बगे-वािन रहइ। धोती-कुता आ ललाटपर चानन िचिलाक पहचान छल। कलकता पहुँच ओ सभ अपने गौआँ-घर आसँ भेट केलक। गाम-घरक लोक सभ अपना गौआँ-घर आके बि आगत-भागत करैत अछि जे भेलैन। खूब स्वािदष्ट भोजन आ सम्पूणव कलकताक भमण, महत्वपूणवस्िानक दशवन करौलकै।
रमेश आ सुरेशक मेहमानी गौआँ-घर आक ओइठाम चलए लगलै। ऐ तरहे दस-बारह िदन बीत गेल। दुनू भाइके मन लागए लगलै। एक िदन दुनू भाइ सबेरे उठला। स्ना-िधयान आ भोजन कए बजार िदस िवदा भेला। बाट गली जका छल। ई बाट गली होइत आगा मेन रोडमे िमलैत छेलइ। जाइतकाल रमेशके लघी लािग गेलैन। लघीक संवेदना िधियात होइते अछि। जखन एक संगीके लघी लगै छै तँ संगमे जे भाइ रहल हुनको लघी लािगये जाइत अछि। सुरेश सेहो एकटा नालीमे लघी करए लगला। लघी समाप्तो ने भेल छल िक

पाछूमे दूटा बंगाली पुिलस ठाढ़ देखलक। जी तँ उिड़ गेलइ।
तैबीच पुिलस बाजल-
“आप इस गलीमे क्यो पेशाव किये है। बगलमे पेशावखाना बना हुआ है। वहा क्यो नही पेशाव किये। गली को पदूिषत करने के जूमवमे आप दोनो को िगरफ्तार किया जाता है।”
दुनू भाित अचम्भित भऽ गेला। बंगाली पुिलसक सामने बिड़ िगड़िगड़ेलाह। किछु रपैआ-पैसाक पलोभन सेहो देलैन। मुदा िबहार पुिलस जका बंगालक पुिलस निह छल। ओ रमेशआ सुरेशके डािट-टपैट देलक।आ बाजल-
“िबहार से आये हो?”
दुनू गोरे एके बेर बाजल-
“जी हुजुर, िबहारसँ आएल छी।”
ओ सभ सोचलैन जे घूसखोरीमे िबहार केतेक बदनाम अिछ जँ िबहार रहैत तँ जर र छोिड़ दइत।
दुनू गोरेके पकिड़ने पुिलस िानापर लऽ गेल। दुनूके देखते िाना पभारी बजला-
“आप लोग पाच-पाच रपैआ जमा कीिजए।”
सुिनते दुनू भाितके मन बिड़ खुशी भेलैन। जे पाचे रपैआमे जान छुिट गेल।
पँच-पँचटा रपैआ दुनू भाित जेबीसँ िनकािल दरोगाके देलैन।
दरोगा एकटा रसीदक संग एकटा िामवसेहो भिर कऽ दैत दुनूके कहलक-
“ये सभ कागजात 14 नम्बर कोटके मिजस्रेट को दे दीिजएगा। वहा केश दायर हो जाएगा। आप लोग भािगयेगा नही। नही तो िरामे पिड़ जाइयेगा। और वारण्ट हो जाएगा।”

िनापर सँ दुनू भ्रात उदास मने चलदा भेला। कागजात सेहो जमा कऽ रखलैन। राितमे डेरापर एला। भिर राित आँिख नै लगलैन। भोरे उिठ स्नान-भोजन कए दस बजे कचहरी िदस चलदा भेला। लाजे कोनो गौआँ-घर आके ई बात नै कहलिखन। रामसँ कचहरी पहुँचला। कचहरीक दृश्य देख आ िरचयकित भऽ गेला। एहेन सुन्दर आ एतेक मोट-मोट पायाबला मकान किहयो ने देखने। िकछु काल धिर रमेश आ सुरेश मकानक भव्यता आ लोकक चहल-पहलके देखैत रहला। तेकर बाद चौदह नम्बर कोटके ताकए लगला। तकैत-तकैत लोगो सभसँ पुछैत-पुछैत आगाबला मकान तक पहुँचला। ओतए एकटा दफ्तरक आगाबला मकान तक पहुँचला।

दफ्तरक आगा िकछु लोक चटाइपर बैसल छल। चटाइपर बैसल बेकती सभसँ पुछलैन-

"यौ 14 नम्बर कोटवयएह छिऐ?"

मुंशी जे चटाइपर बैस िकछु िलख रहल छला। साकाच भऽ गेला। आ ओइ दुनू भ्रातके शोर पािलैन।

रमेश आ सुरेश मुंशीक ओतए पहुँचला। मुंशी पुछलिखन-

"आप लोग मोडल एपाटमेन्ट गली मे पेशाव कर रहे है।"

दुनू गोरे एके बेर बजला-

"हँ यौ।"

रमेशजी दरोगाक दारा देल कागज िनकािल कऽ मुंशीजीक हािमे िमा देलैन।

मुंशीजी बजला-

"तीन-तीन र पैआ लाइए।"

मुंशीजी के तीन-तीन गोट टाका िनकािल दुनू भ्रात देलैन। मुंशीजी दूटा िमव िनकािल दुनूपर िकछु िलख रमेश आ सुरेशसँ हस्ताक्षर

करा कोटक अन्दर जा कऽ पेशकारके सभ कागजात दए देलखिन। आ बाहर आबि रमेशके कहलैन-

“आप लोग यही बैठिये। 2 बजे कोटके अन्दर चले जाइयेगा। यहा कोई आप लोगोको बुलाएगा नही।”

दू बजेक इन्तजार करैत दुनू भाँत बैसल रहला। जखन दू बाजल तँ दुनू गोरे कोटक अन्दर पवेश केलक।

कोटमे मजिस्ट्रेट बैसल छला। पेशकार इजलासक नीचा एकटा कुसीपर बैसल आगा टेबुलपर किछु संचिका सभके उलट-फेर करैत छला। ओही समैमे रमेश मुंशीक दारा देल कागजात पेशकारक आगामे राखि देलैन।

पेशकार छीनकर कागज साहैबके बढ़ा देलखिन। साहैब कागजके उलटा-पुलटा कऽ पढ़ि बजला-

“आप लोग मोडल आपाटमेन्ट गलीमे पेशाब कर रहे थे?”

दुनू भाँत अपन-अपन हाथ जोड़ि बजला-

“जी सरकार! हम लोगो से गलती हो गई। अब से इस तरह की गलती नही होगी।”

मजिस्ट्रेट साहैब सहृदय बेकती छला। ओ पुछलखिन-

“आप लोग बाहार से आये है?”

रमेशक मुहसँ निकलल-

“जी सर।”

साहैब बजला-

“आप लोग आठवे दिन आइयेगा आपका मुकदमा खत्म कर देगे।”

रमेशक मुहसँ एकाएक बजा गेल-

“कलका इजभेशन है। घर जाना है।”

मजिस्ट्रेट साहैब दयालू सोभावक छला। पुछलखिन-

“बिहार मे आप लोगो का घर कहा पड़ता है?”

रमेश कहलथिन-

“मधुबनी जिला, सर।”

साहैब बजला-

“जहा सौराठ सभा लगता है?”

रमेश कहलकैन-

“जी सर।”

मुंशी डोलबैत मजिस्ट्रेट साहैब पेशकारके कहलथिन-

“पेशकार साहेब, ऑडर सीट तैयार कीजिए।”

कहि, मजिस्ट्रेट साहैब फाइलपर किछु लिखए लगला। आ पेशकार साहैब ऑडर सीट तैयार कऽ मजिस्ट्रेट साहैबक टेबुलपर देलथिन। साहैब, रमेश आ सुरेशके ऐ मुकदमासँ बिहा करैत बजला-

“आप दोनो व्यक्ति ये ऑडर लेकर थानापर दे देगे तब पाच-पाच रपये जो जमा किये है, ओ ले लेगे।”

रमेश आ सुरेश थानापर आबि दरोगाके मजिस्ट्रेट साहैबबला कागज देलकैन।

दरोगा दुनू बेकतीके पँच-पँच टाका जे बॉण्डबला छल से आपस दए देलैन।

दुनू गोरे सोचए लगला जे कोन रूपमे भगवान हमरा लोकैनके दऽ देलैन।

८

चौरचनक बरतन

अन्धराक हाट शुि आ सोम श्चन लगैत अछ्छ। वरस्पैत श्चन चौरचन पावैन छ्छऐ। इलाकाक लोक सभ पावैन-ले माश्चक घैला,मटकुरी, लावन, दीप आ छाछी कीनैक जोगारमे अछ्छ। चौरचनक धाश्मक मान्यता जे होइ ई जानकारी दाइ-माइ लोकैनके होश्म वा नश्च होश्म मुदा बहुत ताम-झामक संग ऐ पावैनके मनौल जाइत छइ।
सुवंश बाबू घरसँ बाहर श्नकलला। श्चनका घरक आगाँमे एकटा यादवजीक घर छैन। सुवंश बाबू यादवजी के कहलैन-
"यौ जेठरैयश्म, चलू हाट चौरचनक बरतन आनए।"
दुनू गोरे संगतुश्चया छैि। दुनूमे भजार लागल अछ्छ। दुनू भजार हाट श्चस श्चदा भेला। भश्च बाट आन घरक जनानी सबहक श्चकरदानीपर गप-सप्प करैत ससैर रहल छला। सुवंश बाबू बजला-
"यौ भजार, आइ-काल्श्चक कश्मया-बहुश्चया केकरो लाज-धाक िि मानैत अछ्छ। देश्चयौ ने हमर पश्टनवाली कश्मया अपन स्वामीसँ सबहक सोझेमे खूब बश्मयाइत रहैत छइ। कहू! हमरा सबहक श्चआह-दुरागमन भेल। दूटा बाल-बच्चा भेल तैयो ने दोसरक सामने घरवाली हमरासँ बाजल हेती। बश्मयाइत अछ्छ ओ सभ आ लाज होइए हमरा।
"

जेठरैयश्म बजला-
"की करबै! देश दुश्मयाक हालत देश्चए रहल छी। ऐ समैमे कनी अपने आँश्च मुश्म लेब नीक। की कहूँ हमर पुतोहु हमरा लग आश्च बाबूजी-बाबूजी करैत रहैत अछ्छ आ बेटाक श्चाकायत करैत रहैत अछ्छ। ने मािपर नुआँ रखैत अछ्छ आ ने बदनपर कपिा। हम तँ लाजे कठौत बनल रहै छी। जेना हमर बेटी रहए तश्चना करैत रहैत अछ्छ। की कहूँ, बेटो ने एको बेर डाटै-डपटै छइ। आनो बेकतीक

लाज-धाक नइ होइ छइ।”

दुनू भजार गप-सप्प करैत अन्हरा हाट पहुँचला।

हाटपर चौरचन पावनिक सभ समान कीनलैथि। दूटा घैला सुवंश बाबू कीनलैथि आ एकटा जेठरैयतजी। दुनू भजार बात-चीत करैत पुन: हाटसँ घर दिस विदा भेला। गाम अबैसँ पहिनहि जेठरैयतजी मजाक करैत सुवंश बाबूके कहलखिन-

“यौ भजार, हमरा हाथिमे एकटा घैल आ अहा हाथिमे दूटा। ई अहाके नीक लगैत अछि?”

ई गप सुनिते सुवंश बाबू एकटा घैलके जोरसँ पटैक देलखिन आ कहलखिन-

“लिअ आब दुनू भजारके एक-एकटा घैल रहल ने।”

८

छोटकी पुतोहु

आनन्दक ब्याह बड़ धूम-धामसँ भेल छल। कन्याया अछि सुनैर, तँए दानो-दहेज कमे भेटल छेलैन। आनन्दक घोताशीक घोषणा छल-
“कद ऊँची, नाक लम्बी और रंग गोरी तो आओ, नही तो बाहर जाओ।”
अही अधारपर कन्याक चुनाव भेल छल। कन्याक आगत-भागतमे आनन्दक माए राधादेवी परेशान छेली। मनमे होइत रहैन जे पुतोहु औत तँ काम-काजमे मदैत करत। सेवा सुशुषा करत। भानस-भात करत। माल-जालक नेकरम सेहो करत। बाधसँ आएब तँ एक लोटा पानि लाबत आ बिऐन हौकैत...। आङ्ग-आङ्ग सभ टहल-टकोरा करत...।
आइ आनन्दक माए राधा देवी बड़ खुश छैथि। खुश ऐ लेल नञि जे आनन्द कन्याया लए कऽ आबि रहल छैथि, खुश ऐ लेल जे आनन्द ब्याह करैले तैयारे नञि भऽ रहल छल। ब्याहोक उमर होइ छइ। उमर टुटल जा रहल छेलइ। ओ ब्याह नइ करबाक हेतु अनेको बहाना बना रहल छल। कहैत छल ऐगला साल करब, आ जब ऐगला साल आएल तँ फेर ऐगला सालक बहाना करैत रहै छल। राधाक आगहपर ब्याहक लेल तैयार भेल छल।
ओ दिन आबि गेल जखन आनन्द अपन पतीके अपना घर अनलक। मोटर गाड़ीक अबाज सुनिते अड़ोस-पड़ोसक दाइ-माइ लोकैन सभ अपन काम-काज छोड़ि-छोड़ि कन्याया देखए आबए लगली। ननौरवाली सागमे सँ अटकी-मटकी बीछि रहल छेली। ओहो सभ किछु छोड़ि दौगल एली।
लौड़िवाली बच्चाके दूध पियाबैत छेलीसे बच्चाके नेनहि दौगली। हड़िवाली आ ठाढ़ीवालीके आमक टुकला लेल झगड़ा होइत रहै, ओहो

दुनू गोरे झगाि छोिथ कयाया देखए लिरल थदा भेली। राधा बरतन माजै छेली। बरतन माजब छोिथ कयायाक पछण हेतु सामगी ओयाबए लगली। सभ दाइ-माइ जमा भऽ गेली। मािपर दौरा जइमे दीप जरैत छेलै, लय भरैत बन्हने गीत गबैत मोटर गाि लग, पहुँचली। गीतक बोल छल-

“एलै शुभ-के लगनमा शुभे हे शुभे...।”

पाच-सात गोट सधवा मौगी सभ कयायाक पछण केलक। तेकर बाद कयायाक ननैद र पम दाइ कयाया-बरके आँगन लए गेल। जेतेक दाइ-माइ लोकैन आएल छेली ओ सभ अपन-अपन घर थस थदा भेली।

बाटमे कयायाक थका-थपणी हुअ लगल। थसवाथवाली काकी जे सभसँ बुजुगवछेली ओ बजली-

“गे दाइ, आइ तक एहेन कयाया नइ देखने रही। देखही ने केकरो देख कऽ माि झँपलकै। हमर पुतोहु एहेन रहैत ने तँ छाउर लगा कऽ जी खीच लैथाए। कहू तँ ससुरोक लाज केलकै।”

नवानीवाली बजली-

“एतेकटा कही मौगी होइ छइ..!”

तैपर भेजावाली बजली-

“पीठ केहेन चाकर-चौरस छै, जेना सुकदेव पहलमान होइ!”

गुलछरा छोित सभ अपन-अपन घर गेल। राधा भनसा घरमे जा बेटा-पुतोहुक लेल खूब नीक तीमन-तरकारी बनौलक। पापि, थालौरी, थालकोरक तर आ िरीमे सजा बेटा आनन्द आ पुतोहु सुलेखा लेल ओकरा कोठलीमे पहुँचली।

माएके देखते आनन्द बाजल-

“माए, अखन आठो नथ बाजल अथ आ तूँ खेनाइ लऽ कऽ आथ

गेले।"

राधा बजली-

"हँ बेटा,कथाया जे आएल अछि। नहि जानि कथाया कखन भोजन केने हेती।"

बजैत राधा टेबुलपर िारी राखि चापाकलपर सँ एक लोटा जल आ एकटा गिलास सेहो आनि कऽ टेबुलपर राखि देलक।

आनन्द आ ओकर पती सुलेखा दुनू गोरे भोजन करए लागल। सुलेखा बजली-

"भोजन के बनौलक अछि।"

आनन्द कहलकै-

"भोजन मा बनेने हेती।"

सुलेखा बजली-

"खाना बनबैले नौकरानी नहि रखने छी। हमरा ओतए तँ आँगनक लेल एकटा नौकरानी आ दरबज्जा परहक लेल एकटा नौकर अछि।"

आनन्द आ सुलेखा भोजन करए लागल।

राधा बीच-बीचमे आबि परसन दए दैत रहथि न। भोजन समाप्त भेल। राधा आँचि ि थि एक जग पानि आ एकटा गिलास आनि टेबुलपर राखि गेली।

आनन्द आ सुलेखा पूरब-पच्छिमक गप-सप्प करैत कखन सुतली से राधा नहि बुझि सकली।

राधा भोरे उठि अँगना-दरबज्जामे झाि लगौलक। घर आ आँगनमे थि नाइलबला पानिसँ पोछा लगौलक, तेकर बाद रसोइ घरमे जा सभ बरतन सभ साि केलक। चाह बनौलक। दू कप चाह पहिने सुलेखा आ आनन्दक हेतु छनलक। दू कप चाह लऽ कऽ आनन्दक कोठरीक दरबज्जा खटखटेलक आ बाजल-

“बेटा आनन्द, उठू। देखू सुरज भगवान श्चकैल गेल छैि। चाह पीब लीअ तखन सुतब।”

दरबाजा खुजल राधा चाहक रे टेबुलपर राश्च बाहर आश्च गेली। एक कप चाह अपन बेटी रपम लेल आ एक कप चाह अपने वास्ते लए पीअ लगली।

आनन्द आ सुलेखा सेहो चाह पीबैत रहैि। सुलेखा रौतुका भोजनक आ अखुनका चाह पशंसा करैत बजली-

“आनन्दजी, अहाक माए अनमोल रत छैि। श्चनका हाि क चाह आ भोजन तँ मुहोसँ नश्च छुटैत अश्च।”

आनन्दजी बजला-

“सुलेखा, माएके सभ लूश्च छइ। एकटा बेटी छइ। देश्चयौ ने ओकरो सभ लूश्च श्चखा देने अश्च। हमरा बश्चनके कोन लूश्च ने अश्च। ई सभटा माइक देन अश्च।”

ताबत चाहक चुस्की लैत रपम भौजीक कोठरीमे पवेश केली आ बजली-

“भौजी, हमर चचा श्चकए करै छी।”

सुलेखा ऐंठैत बजली-

“हम अहाक चचा श्चकएक करब। अहाक भाइये अहाक चचा करैत अश्च।”

आनन्दजी बजला-

“बश्चन, कनी भौजीके अपन लूश्च सभ सीखा दहीन।”

भौजी चद-दे बजली-

“हमरा कोन लूश्च नइ अश्च। जे हम अहाक बश्चनसँ लूश्च श्चखब। ओ अपन लूश्च अपने लग रखि।”

रपम अपन भौजीक हाव-भाव, बात-श्चचार आ अहंकारके भाश्च चुकल

छल। ओ चाह पीबैत अपना कोठरीमे चल गेली।
आनन्द अपन खेती-पथारीके देखैले बाध-बोन जाए लगला। राधा जन-बोनिहारक जलखै लए खेतपर पहुँचाबए लगली। राधा ओमहरसँ माल-मवेशीक लेल एक पथिया घासो नेने अबैत छेली। राधाके मनमे होइत रहैत छल जे पुतोहु खाना बना कऽ रखने हेती। मुदा पुतोहु तँ जलखै कए जे सुतै छेली से सासुके बाधसँ एलाक बाद आ भोजन बनलाक बादे उठै छेली। उठि स्नान कए अपनेसँ खाना परैस बिनु केकरो खुऔनहि अपने खा कए पुन: कोठरीमे बन्द भऽ जाइत छेली।
ऐ तरहे बहुतो दिन बीति गेल मुदा सुलेखामे कोनो सुधार नहि भऽ सकल। कएक बेर आनन्दो कहि कऽ थाकि गेल छला। सुलेखा घरक वातावरणके बिगारए लागल। सासु-पुतोहुमे मन-मुटाव बढ़ि गेल। राधाक मनमे भेल छलैन जे पुतोहु औत। सेवा करत। कपाि-लता साि करत। मुदा सभ मनोरि...। सेवा केनाइ तँ दूर जे पेमसँ बातो नहि करैत छेलैन।
राधा भोरे उठि सभ घर-दुआरके झाड़ूसँ साि कए पोछा लगा मवेशीक लेल चारा लाबए चल गेल। जखन ओ बाधसँ आबैि तँ सुलेखाके सुतले देखलैन। मन तँ घोर भऽ गेलैन। मनमे ई आशा लागल रहैत छेलैन जे घर जाएब तँ सुलेखा एक लोटा पानि आनि आगामे देती। बिएेन डोलेती। मुदा एकोटा मनोरि पूर नहि भेल।
पुतोहुके सुतल देख राधा अपनेसँ चापाकलपर जा हाि-पएर धोलैन। रसोइ घर खोलि नाश्ता परोसि कए हवामे बैस नाश्ता कए लैत छेली। राधा सुलेखाक खातिरदारी करैत-करैत उबि चुकल छेली। बिना किछु बजनहि। किछु ठंढ़ाइत ि र भनसा घर खोलि भानस करए लगली। मुदा सुलेखा सुतले रहली।
राधा मनमे सोचै छेली जे बेटा खेतसँ आएत आ भोजन समयपर नहि

भेटतै तँ सुलेखाके गाञ्-िज्झैत करत। आइ बेटासँ श्वाकायत करबाक उश्चात मौका देख रहल छल। तँए सुलेखाके सुतले छोश्वि देलक।

सुलेखाक नीन अचानक टुश्च गेल।ओ धिििइत भनसा घर गेली। ओतए देखलैन जे सासु भनसा बना रहली अश्छ। सुलेखा बजली-

“चुल्हा लगसँ हटश्चिन ने हम भानस कऽ लइ छी।”

राधा चुल्हा लगसँ नश्च उठली। सुलेखा मुँह श्वजकबैत अपना कोठरीमे जा सुश्चा रहली।

आनन्द खेतमे काम-काजके सलश्चया जखन कलौ बेरमे घर एला तँ देखै छैि माए खाना बना रहल अश्छ आ सुलेखा अपना कोठरीमे सुतल अश्छ। माएसँ पुछलश्चन-

“माए, भानस तूँ बना रहल छे! सुलेखाके श्वकछु भऽ गेलैहे की?”

राधा अपन बेटाक मुहसँ ई बात सुश्चाते तमशाएल मुरामे बाजल-

“कश्चायाके की हेतइ। हम तँ तोरा सबहक नौकरानी छीहे।”

आनन्द तामसे सुलेखाके उठौलक आ ओकरा गाश्चि-िज्झैत करए लागल। सुलेखा मानएवाली नश्च। ओहो आनन्दक तेरहो-पुरखाके उकटए लगल।

आनन्द खेतसँ गरमाएल आएले छल, तमसाएल छलाहे सुलेखाके एक-दू िप्पर लगा देलक। आब तँ सुलेखा जोर-जोरसँ कानए लगली। कानब सुश्चा अिश्चया-पिश्चया जमा भऽ गेल। राधो भनसा घरसँ दौगल एली। आ बेटाके डाँट-िटकार देबए लगली। आनन्दके हाि पकैि कोठरीसँ बाहर केली। आ सुलेखाके बोधए लगली।

पुतोहु पैघ बापक बेटी तँए ओ केकरो ताना-बाना सहएवाली नश्च छेली। राधोके गाश्चि-िज्झैत करए लगली। बात श्चनानुश्चन तनाव आ अशान्श्चाक तरि बढ़ए लगल। सुलेखा दू श्चनसँ श्वकछु ने खेने

छेली।

राधाक काम-काज बढ़ि गेल। आब तँ आनन्द आ आनन्दक माइयो परेशान रहए लागल। दुनूके डर होमए लगलैन जे कही आत्महत्या ने कऽ लिअए। केतेक बुझैला-सुझेलासँ आ घटनाक जिम्मेदारी अपना ऊपरमे लए दुनू माय-पुत गलती सुलेखासँ मानलक, तखन सुलेखा जे दू दिनसँ भूखल-पियासल छल। दतमैन केलैन आ मुँह धोलैन। आ पछाइत भोजन केली।

राधा हाथ-पाएर सभ कायवपूववते करैत रहल। धीरे-धीरे दुनू पति-पतीमे मिलान भेलइ। आनन्द बाजल-

“सुलेखा सभ माइ-बापक इच्छा होइ छैन जे पुतोहु घरक काम-धन्धाके देखैथि आ सासु-ससुरक सेवा करैथि।”

आनन्दक एतेक बजनाइयो समाप्त नहि भेल छल कि बीचेमे सुलेखा बाजि उठल-

“हम अहा-सबहक नौकरानी बनि नहि आएल छी। हमर बाप केहेन छला जे हमरा एकटा पाखमंगा ओतए बियाहि देलक।”

कहैत सुलेखा कानए लगली।

सुलेखा धनिकाक घरक बेटी। कहियो भानस केनाइ तँ दूर जे अपन कपड़ो नहि साफ करैत छल। ऐ पकारे ओ अपन मजीसँ काम-काज करैत छल।

राधाक इच्छा छल जे पुतोहु हमरासँ पुछैथि जे खानामे की सभ बनेबाक अछि। केतेक चाउर, केतेक दालि... इत्यादि इत्यादि। मुदा सुलेखा अपन मजीसँ कोनो काज करैत छल। अपना मन मोताबिक रसोइ बनबैत छल। ओ खाना दोसरके पसिन होइ अकि बा नहि।

एक दिनक बात छी। सुलेखा तर आ छालि रहल छल। ई देख राधा बाजल-

“छाश्रा कऽ खेबाक छह तँ बापके कहक जे एक टीन तेल भेज देतह।”

ऐपर सुलेखा जवाब देलक-

“श्रुनकर बाप कश्चयो एक श्वकलो तेल भेज देने छेलैन।”

राधा सुलेखाक जवाब सुश्रा श्वालश्रला कऽ रश्च गेली।

ऐ पकारे सासु आ पुतोहुमे कोनो-कोनो छोटो-छोटो बातपर कखनो बहसवाजी शुर भऽ जाइत छल।

राधा अपन मन मसोइस कऽ रश्च जाइ छेली। कामकाजु राधा श्वन-पश्चा-श्वन श्चा श्चा सोभावक होबए लागल। ओना, एहेन बात नश्च छल जे आनन्द अपना पती सुलेखाके नश्च समझाबैत छल। परन्तु सुलेखा अपना सामने केकरो मोजरे ने दैत दल। एवम् पकारेण पश्चा-पतीमे सेहो मन-मुटाव बश्च़ गेल।

सुलेखा अपना पश्चवारके नरक बना देने छल। सुलेखा र पवती छल तँए दहेजोमे छूट भेल छल। ओकरा अपन सुन्दरता आ बापक सम्पैतपर घमण्ड छेलैन। ओ अपनाके घरक मालश्चकन आ अन्य सदस्यके नौकर बुझैत छल।

राधा टुश्च चुकल छल। एक तँ काम-काजक बोझ, दोसर छोटो-छोटो बातक लेल हर-हर खट-खट होइत छल।

एमहर दोसर बेटा सुरेश पश्चायोश्वाता परीक्षामे श्वन-राश्चा लागल रहैत छल। बी.एड. पास कए चुकल छल। टीईटी परीक्षामे सेहो नीक अंक आएल रहइ। तँए ओ श्वाक्क भऽ गेल छल। मुदा सुरेश अपना घरमे जेठ भाइक पत्नी जे बिका घरक बेटी छल, ओकर श्वकरदानी देख नेने छल। तँए हेतुए ओ सोचैत छल जे हम कोनो मध्यम वगक पश्चवारक लिकीसँ शादी करब। लिकीक शील-सोभाव नीक होइ। काजुल होइ। घरक काज-करैमे श्रापुण होइ। ओहन गुणवाली लिकीसँ

शादी करबाक सोचमे छल।

सुरेशक पिताजी आब बुढ़ भऽ गेल छला। ओ जेठकी पुतोहुक बेवहारसँ एतेक ने आहत भऽ गेल छला जे ब्लड-पेसरक शिकार भऽ गेला। सुरेशक माएके जेतेक पसनता जेठका बेटाक बिआह करैमे छल तेतेक सुरेशक बिआहमे नहि। ओ गोनू झाक बिलाधि जकाँ पाबि चुकल छेली। तँए छोटका बेटाक बिआहक चचो नइ करै छेली। आ राधाके कोनो विशेष दिलचासो नहिये छल।

संयोगवश भवानी पसादजी अपन बेटी रोशनीक रिश्ता लऽ कऽ एला। सुरेश पहिनहिसँ ओइ परिवारके जनैत छल। भवानी पसादक पुत सुरेशक संगी छल। तँए सुरेश भवानी पसादक ओइठाम जाइत-अबैत छल। रोशनीक शील-सोभावसँ सुरेश तेतेक ने पभावित छल जे एको बेर नाकर-नुकर नहि केलक। रिश्ताक मंजूरी दए देलक।

दुनू परिवार स्वजातीय छल। अन्तरजातीय विवाहसँ ओ घृणा करैत छल।

एमर राधाके कोनो उत्सुकता आ पसनता नहि छल। ओ मने-मन सोचैत छल बकिी पुतोहु तँ सभ गुर गोबर काइये देलक। आब ई की करत ओ भगवान जानैि...।

सुरेशक बिआह भेल। बर-कनिआया घर आएल। राधाक मन टुटल छल तँए ओ परिछनोमे नहि गेल। लाचार भऽ दियादिनी सुलेखा बर-कनिआयाक परिछण कए घर लौलक। राधा तबियत खरापक बहाना केने छेली।

रोशनीके जखन पता लागल जे सासु मा बीमार छैि तँ ओ कोहबर घरसँ निकैल सासुक कमरामे गेल आ पहिने राधाक पएर छुबि पणाम केलक। आ पुछलक-

“मा, तबियत ठीक अछि की नहि।”

एकाएक नबकी पुतोहुके देख राधा लजा गेली। उठ कऽ बैसैत बजली-

“कनिया, माि मे ददवभऽ रहल अछि।”

रोशनी तुरन्ते बाक्स लए सासुक माि मे लगौलक। आ कनिछु काल धरि पएरके सेहो दबलक।

आइ बि ि तीसँ सुलेखा खूब नीक जका भानस-भात कए रोशनीके भोजन परोसि खेबाक लेल दैत बाजल-

“कनिया, खाना खा लीअ, कखन खेने हएब कखन नहि।”

रोशनी बजली-

“जखन सासु मा भोजन करती तेकर बादे हम भोजन करब।”

तैपर सुलेखा बजली-

“माक तबियत खराप छैन, जखन इच्छा हेतैन खा लेती।”

रोशनी अपन खाना लए खुद सासु माक कमरामे गेली आ एक कौर भात दालिमे सानि ला हाि मे लए बजली-

“मा, छोटकी पुतोहुक हाि सँ एक कौर खाना खाि ।”

कहैत हाि सासु माक मुँहमे देलक।

राधाक एक कौर भातसँ सभ दुख दूर भऽ गेल। भोजन करैत कहलक-

“बेटी, जाउ अहूँ भोजन कए लीअ।”

“नहि मा जाबत अहा नहि खाएब ताबत हमहूँ नहि भोजन करब।”

राधा छोटकी पुतोहुक जिदके नहि टारि सकल। राधा भरि पेट भोजन केलक। राधाक खाना खेलाक बाद रोशनी आँठि िथ कोठरीसँ बाहर भेल।

पछाइत सुलेखा आ रोशनी माने दुनू दियादनी संग-संग भोजन केलक। भोजन केला बाद सुलेखा सुतबाक लेल अपना कोठरीमे चल गेल।

आ रोशनी एक लोटा पािन लए सासु माक कोठरीमे जा राखि देलक आ सासु-माक पएर दबाबए लगल।

राधा जखन बाजल-

“जाउ किनयाया, अहाक आइ पिहल िदन अिछ, िकल ठेिहयाएल हएब। अराम कर गे।”

तखन रोशनी सासु-माके िबछौन झािड़ मशहरी लगा कए अपन कोठरीमे आराम करक लेल चल गेली।

राधा मने-मन रोशनीके आिशरवाद दऽ रहल छल। आ सोचैत छल। भिरसमे जे हुअए मुदा अखन तँ अबैत देरी एतेक खाितरदारी तँ केलक। राधा छोटकी पुतोहुक पिरछणमे नइ गेली तेकर आब पिताप हुअ लागल छैन। रोशनी साक्षात देवी छैि जे हमरा घरके स्वगव बनौत...। यएह सभ सोचैत-िवचारैत राधा कखन सुित रहली से निह जाइन।

रोशनी आ राधाक बीच जे िक्रयाकलाप होइत छल से सुलेखा देखैत रहल। सुलेखा अपन सासु-माक अदखोइ-बदखोइ रोशनीके सुनाबए लगली। रोशनी सुलेखाक कोनो बातक जवाब निह दइ छेलिथन। रोशनीके अपन िबआहक पूविहसँ सुलेखाक िकरदानी सुरेशक माध्यमसँ बुझल रहैन। भोरे रोशनी उिठ झािड़ लऽ कऽ घर-आँगनके बाहरए-सोहरए लगली। िरीच निह भेलाक कारणे जखन सुलेखा अँगना बहारैत देखलक तँ ओकरा पिहने भेलैन जे राधाआन िदनुका जका आँगनमे झािड़ लगा रहल अिछ। मुदा जखन आगाँ बढ़ल तँ रोशनीके बाढ़ैन लगबैत देखलक तँ आियाचिकत होइत बाजल-

“किनयाया, अहा काल्हिये एलौ आ आइये बाढ़ैन पकैि लेलौ। कहू तँ अहाक माए-बाप की कहता। एतेक काज केनाइ कोनो जररी छइ!”

रोशनी बजली-

“बझुन, ई तँ हमर अपन काज अछि। हम नइ करब तँ के करत।”
सुलेखा चुपे रहि गेली। राधा भोरे उठि बाधसँ घास आनए गेल छेली। छोटकी पुतोहुक बेवहारसँ राधा गदगद छेली। तँए राति खूब मनसँ सुतलो छेली।
रोशनी घर-दुआरिके बहारि एकटा टोकरीमे बाहरन-सोहरन उठा रहल छेली। ताबत राधा घास लऽ कऽ आँगनमे पवेश केलैन। आकि रोशनी देखलक, चटे बाढ़ैन छोड़ि सासुक माथपर सँ घासक छिट्टा लऽ घास रखैक जगहपर जा कऽ राखि आएल।
राधा रोशनीके कहए लगल-
“तूँ एकएक बढ़नी धेलह। हम अबिते तौ तँ झाड़ि लगा दैतौ।”
ई कहैत रोशनीक हाथसँ बाढ़ैन लेबए लगली। मुदा रोशनी बजली-
“माए, आब अहाके काज करैक जमाना नइ अछि। अहा बैसू, अराम कर आ हम सभ काज करब।”
राधा सुसताए लागल। ताबत रोशनी सासुक लेल एक लोटा पानि आ एकटा दतमैन आनि हाथिमे थम्हबैत बजली-
“सासु-मा, ई दतमैन करौथि हम ताबत जलखै बना दइ छिऐन।”
जलखै तैयार भेल। सुरेशक लेल भोजन आ टिफिन सेहो तैयार केलक। एकएक तँ सुरेशके विद्यालय जेबाक छेलैन। आनन्द आ राधा जलखै कऽ अपन-अपन काजमे लागि गेल। एमहर रोशनी अपन जेठ दियादिनीके माने सुलेखाके हुनक कोठरीमे जलखै लऽ कऽ पहुँचली।
सुलेखा रोशनी संगे जलखै केलैन। आ दुनू अपना-अपना काजमे लागि गेली। रोशनी राधाक आधासँ बेसी काजके सम्हारि लेलैन। सुलेखा रोशनीक बेवहारसँ आहत होइत रहली आ मने-मन अपनाके अपराधी मानि पश्चातापो करैत रहै छेली। रोशनीक जान, मृदुता आ

चाल्हि-चलन ओकरा घमण्डके तोड़ि देलक।

राधा आब सकुन महसूस करए लगली। फेर घरमे खुशहाली आबए लागल। एक दिन रोशनी अपन घरक सभ काम-काज निपटा भोजन कए सुतल छेली।

ताबत रोशनी कोठरीमे चौकीपर सुतल राधाक पएर दबा रहल छेली। ओही समैमे ग्लानिसँ ममाहत सुलेखा कनैत ओइ कमरामे घुसल आ बाजल-

“माए, ऐ अभागिनके क्षमा कए दीअ। अहा हमरा सबहक सुख-सुविधा लेल एतेक दिन-राति खटैत रहै छी। माए, हमरासँ अहाके बड़ कष्ट भेल। हम अहंकारी भऽ गेल छेलौ। रोशनी हमरा घरक साक्षात लक्ष्मी छैथि। एतेक पढ़ल-लिखल भऽ कऽ जे हमरा सबहक सेवा करै छैथि ओहीसँ हमरो रोशनीसँ शिक्षा भेटल जे परिवारक सदस्य खास कए सासु-मा सँ बढ़ि ऐ संसारमे किछुयो नहि अछि। तँए हमरा सन अभागिनके माफ कए दीअ।”

कनैत सासु-माके पएर दबाबए लगली। राधा बजली-

“बेटी भोरक हेराएल जँ साझमे घर आबि जाए तँ ओकरा हेराएल नहि कहल जाइ छइ।”

आनन्द पढ़ल-लिखल युवक, सभ तमाशा देख रहल छल। बाजल-

“माए, सुलेखाके माफ कए दहीन। कुल आ नीक खनदानक बेटी छोटकी कनिञाया हमरा घरके साक्षात् लक्ष्मी छैथि। मध्यम घरक बेटी एहेन होइत अछि जे बिगरल घरके सुधारि दैत अछि।”

ई कहैत आनन्दोक आँखिसँ नोर झहरए लगल।

८

गोबर बिछनी

कमली आ मंगली बाल-संगनी छेली। दुनूक घर सटले रहैन। दुनू माए-बाप अमीर श्चकसानक ओतए मजदूरी कए घर चलबैत छेलश्चखन। घरक श्चधया-पुता सेहो ऐ काजमे हुनका लोकैनके सहयोग करैत रहैन। कमली आ मंगली भोरे उश्चठ घरक सभ काम-काज कए जलखै कऽ गोबर बीछैले गाइक पाछू-पाछू चलैत रहै छेली। साझ-श्चभनसर गैवार-महीसवार अपन-अपन गाए-महीसके चरबैले खोलै छल। कमली आ मंगली मा िपर पश्चथया लेने महीसक पाछू-पाछू गोबर श्चदस तेना श्चधयान लगौने रहै छेली जेना पोखश्चरक कछेरमे बौगला माछ पकि खाश्चतर श्चधयान लगौने रहैत अश्छछ। तपस्वी जेना तपस्यामे लीन रहै छैि तश्चहना कमली आ मंगली गोबर बीछैमे लीन रहैत छल।

श्चचतकबरी गाए गोबर केलक आश्चक दुनू सहेली दौि ल आ कमली अगुआ कऽ गोबर उठा लेलक। दुनूमे कम्पेश्चटशन रहै छेलइ। हम अश्चधक गोबर श्चबछी तँ हम अश्चधक गोबर उठाबी।

जखन गोबरसँ पश्चथया भश्चर जाइत रहै तखन दुनू सहेली नमहर आश्चरक कछेरमे ओकरा जमा कऽ लैत छेली। आ ि र गोरब बीछैमे लीन भऽ जाइ छेली।

गोबरक उपयोश्चगता आ ओकर महत्व कमली आ मंगली बुझौ श्चक नश्चह मुदा गोबर जमा कए ओकर गोरहा-श्चचपि ी बनाएब तँ जश्चनते छेली। समय-समयपर ओकरा बेच श्चकछु आमदनीक जोगार सेहो कए लैत छेली।

एक श्चदन गोबर बीछैक ि ममे गामक नेना-भुटकाके श्चसलेट-पेन्श्चसल लए श्चवद ालय जाइत देखलक। दुनू अपनामे संकल्प केलक जे हमहूँ सभ पढ़ब। ई श्चवचारक भाव दुनूक मनमे जगलै। ई श्चवचार करैत अपन-अपन घर पहुँचल। दुनू अपन-अपन माए लग पढ़बाक इच्छा

जाइर केलक। दुनूक उमेर तकरीवन आठ-नअ बखक भेल छेलइ। दुनूक माए अपन बेटीके डाँट-फिटकार देबए लागल। कहलक-

“गइ लिखियो केतौ पढ़लकै हेन। तूँ पढ़ि कऽ हाकीम बनबे की। तो पढ़बे तँ की नौकरी करबे? घरक काम-काज के करत? बेटीके पढ़ौला-लिखौलासँ ओ दूर भऽ जाइ छइ। ओकरामे उदण्डता, लोक लज्जा, असभ्यता आ आरो-आरो दुगुण सभ आबि जाइ छइ। तँए तोरा नइ पढ़ए देबौ।”

दुनूक माए एकठाम जमा भऽ अपना-अपना बेटीके समझाबए-बुझाबए लगली।

ओही समैमे कमलीक पिताजी सेहो आँगन आबि गेला। घरवालीके बिगिबाक कारण पुछलखिन।

घरवाली व्यंग पूवक बाजल-

“अहाक बेटी पढ़त आ हाकीम बनत। सुकदैन कहलकै जे हम पटोर पहिरब तँ आँखि कहलकै जे हम संगेमे छियौ।”

कमलीक पिताजी बजला-

“कमली पढ़त तँ अहाक देह एना किए जरैत अछि।अहाके एना ईर्ष्या किए भऽ रहल अछि। अहाक माए-बाप नहि पढ़ौलक सएह एकरो पहिना सोचै छी।”

कमलीके ओकर पिता दुलारसँ गोदमे लैत पुछलखिन-

“बेटा, तो पढ़बे तँ हम सिलेट, पेन्सिल, किताब-कॉपी सभ कीनि कऽ आनि देबौ।”

कमली डेराइत बाजल-

“बाबूजी, हम घरक कामो-काज कए देब आ पढ़बो करब।”

तैपर कमलीक पिता कहलखिन-

“तो जहा धरि पढ़मे हम पढ़ेबो।”

कमली बि खुश भेली। तुरन्त दौग कऽ सभ हाल मंगलीके सुनौलैन। कमली आ मंगली खुश भऽ नाचए लगली आ बजली-
"हमहूँ पढ़ब, हमहूँ पढ़ब।"
दोसरे दिन दुनूक पिता मजदूरी कऽ कऽ पैसासँ प्राथमिक विद्यालयमे नाम लिखा देलक। आ ओइ दुनू छाताक नाम बदैल देल गेलइ। आब कमलीक नाम राधा आ मंगलीक बदला नाम कुसुम भऽ गेल। राधा आ कुसुमके स्लेट-पेन्सिल आ मनोहर पोथी खरीद देल गेलइ। दुनू सहेली मन लगा कऽ पढ़ए लगल। राधा ओ कुसुमक काम बढ़ि गेलइ। गोबर बिछनाइ, घरक बरतन-बासन मँजनाइ आ पढ़नाइ-लिखनाइ इत्यादि।
गोबर बीछि गोरहा-चिपड़ी बना ओकरा बेच अपन पढ़ाइक खर्च सेहो निकालि लैत छल। किछुए दिनमे ओकरा सभके किताब पढ़नाइ, लिखनाइ सेहो आबि गेलइ। 'बाले दण्ड आ सियाने पाठक' ऐ आधारपर ओ दुनू वर्गमे नीक स्थान आनए लागल। शिष्ट रहबाक कारणे शिक्षको लोकैन अधिक मानए लगलैन।
सर्व शिक्षा अभियानसँ दुपहरक भोजन आ पोशाकक राशि सेहो भेटए लगलै। दुनूक लगनशीलता, कर्मठता, अनुशासन आ गुरुभक्ति देख शिक्षको लोकैन ओकरा प्रति अधिक संवेदनशील रहैत छला। दुनूक हरेक समस्याक समाधान शिक्षक लोकैन करैत छला।
ऐ तरहे दुनू सहेली प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कए माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करबाक लेल उच्च विद्यालयमे नामांकन करौलैन। सरकारी योजनाक तहत दुनूके साइकिलक आ छात्रवृत्तिक राशि सेहो भेटलै।
दुनू सहेली मैट्रिकक बोर्ड परीक्षामे प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेली। सरकारी योजनासँ दस-दस हजार रुपैआक प्रोत्साहन राशिक चेक सेहो भेटलै। आब राधा आ कुसुम गर्ल्स कौलेजमे इन्टरक पढ़ाइ करए लगली।

अपन मेहनतक बलपर दुनू सहेली इन्टरमे सेहो पथिम शेणी पाप्त भेलैन। आ पुन: पनरह-पनरह हजारक चेक पाप्त भेलैन। आगाँ पढ़बाक श्चालसा बनल छेलइ। माए-बापक सेहो मनोबल बढ़ैत रहलै। दुनू सहेली बी.ए. मे नाम श्चाखा कौलेज जाए-आबए लगली।

राधा आ कुसुम आब वयस्क भऽ गेल छेली। वसन्तक मादकता, कोयलीक कूक सावनक ि हार आ कामदेवक पहारसँ अवगत होमए लागल छेली। कौलेजक छात-छातामे एक-दोसरक पश्चा आकषचा बढ़ए लागल छेलइ। ओही िममे राधाके एकटा राजेश नामक लिकासँ दोस्ती भऽ गेलइ। राजेशके कपि-दोकान छेलै आ बी.ए.क िडव पाटचे पढ़ैत सेहो छल। कभी-कभार कौलेजमे मौज-मस्तीक लेल जाइत छल।

राधा आ राजेशक दोस्ती पगाढ़ हुअ लगलै। दोस्तीक बहाने दुनू एक-दोसरसँ पेम करए लागल। राजेश-राधाक लेल नव-नव उपहार लाबए लागल। कुसुमके राधा-राजेशक दोस्ती पश्चन नश्च छेलैन। तिथ्य ओ दुनूक श्चिया-कलापपर श्चशेष श्चयान देमए लगलै।

राजेश चाहैत छल जे राधाके बहला-िसला कऽ अपना िासमे िँसा घरसँ श्चाकैल जाइ। मुदा राधा पढ़ल-श्चाखल आ होश्चायार लिकी, तँए घरसँ श्चाकललासँ पश्चनश्च ओ एक श्चन राजेशक घर पहुँचली। राजेशक माए घरमे छेलश्चन। राजेशक माएके पाणाम करैत राधा अपन पश्चचए देलैन-

“माइजी, हम राजेशक श्चात छी।”

राजेशक माए कहलश्चन-

“आउ बेटी, बैसू। राजेश तँ दोकानपर अश्छ।”

ताबत ओकरा ओइठाम गामक श्चकछु सम्भान्त पश्चवारक मश्चला लोकैन आश्च गेलश्चन। राजेशक माए ओइ मश्चला सबहक खाश्चारदारीमे लाश्च

गेली। राधा आँगनमे असगरे बैसल छेली। तखने छोट बच्चाक कनबाक ध्वनि सुनाइ पड़लैन। एकटा दुबर-पातर महिलाके एक घरसँ दोसर घरमे जाइत देखलैन। ओ औरत राधा दिस घुरि-घुरि कऽ तकैत छेलखिन।

राधा ओइ औरतके अपना लग बजा पुछलखिन-

“अहा हमरा दिस एना किअए गुम्हरै छी? अहा के छी?”

ओ अपनाके राजेशक पती बतौलक। छोट-छोट बाल-बच्चाक कारणे ओ परेशान छेली। राजेशक पती राधासँ पुछलखिन-

“की अहीक नाओं राधा छी? अहा तँ पढ़ल-लिखल बुझना जाइ छी तखन केना अहा हुनका चकरमे फँसि गेलौ?”

एकाएक राधाके धोखाक आभास भेलैन। सोचए लगली। हम वास्तविकतासँ दूर हटि एक कपटी, छली, लम्पट आ चरित्रहीनक जालमे फँसि रहल छेलौ।

राधा राजेशक माएसँ विदा लैत अपना घर एली। कुसुमसँ भेट कए सारा वृतान्त सुनौलैन। दुनू सहेली राजेशके सबक सिखेबाक लेल षडयंत रचलैन।

साझमे राजेशसँ भेट करैले ओ आइ पहिलुकसँ इन्तजारमे छेली। साझ पहर देरी राजेश दोकान बन कए घर अबैत छल। वापस आयत समैपर राधासँ भेट भऽ गेलैन। कुसुम गाछक अढ़मे नुकाएल छेली। राजेश राधासँ पेमक वाता करए लागल। तइ बीच्चेमे राधा जोरसँ हल्ला करए लगली।

हल्ला सुनि लोक सभ जमा भऽ गेल। कुसुम पुलिसके खबर पहिलुकसँ कए देने छेली। पुलिस राजेशके धारा 376 केर अन्तर्गत गिरफ्तार कए जहल भेज देलक।

राधा अपन नजैर कुसुम दिस दैत बाजल-

“गोबर बिछनीमे की शक्ति छै से देखौ...।”

राजेश वमा "भवाश्वत्थ", पटोरी (पछवारि टोल), सहरसा 852124

बीहनि कथा- सोगर

मोहना राइतो-राति हीरो बनि गेलै। गाममे सभ ओकर पशंसा कऽ रहल छै।पशासनिक सेवाक परीक्षा जे पास केलकै अछि। तीनबटी पर गप्प चलि रहल छै--
"बूझि लिअए भाय! आय एकटा सुच्छि वगक छातक कल्याण भऽ गेलै।"
"एँ हौ कथीक सुच्छि? बाप-भाय-भौज-घर-घरेना सभ तऽ सरकारीए नौकरीमे छै।" दोसर टोकलकै।
"एँ रौ रौशना सेहो एक नम्बर पास केलकै? ओहो तऽ दिन-राति एक केने रहय।"
तेसर बाजल।
"हँ से तऽ ठीके। रौशना तऽ पढ़िबो मे बेसी तेज छलै। सभ दिन इसकुलमे फस्टे आबय। बेचारा माय बापक एकमात सहारा।टीसन क' कय घर चलबैत छैक। ओकरा एकटा नोकरी भेनाय बड्ड जरूरी।"
सुनैत-सुनैत शंभुआ के नहि रहल गेलै--
"हे हौ! तो सभ तऽ अनठा-अनठा कऽ गप्प करैत छहक। जेना बुझले नञ। मोहना के पीछा से बड़का सोगर लागल छैक। संवैधानिक सोगर! ते नञ ओकर परिवार दिनोदिन अकास ठेकल जाय छै।"
गप्प के आब झगड़ा मे बदलबाक पबल संभावना देखि हम ओतय सँ ससरि गेलहुँ।

बीहनि लेख : वैश्विक य

स्त्री आ पुरुष कहियो समान नहि भऽ सकैत अछि। जे बुद्धिजीवी लोकनि स्त्री- पुरुषक समानता लेल हो हल्ला मचबैत रहैत छथि, हुनकर बुद्धि पर हमरा तरस अबैत अछि। अहीसभ कहू जे मंजरसँ लदल आमक गाछ आ बबूरक गाछ मे कोन समानता? सृष्टिक सभ जीव एहि संसारमे अपन अपन विशिष्टता लऽ के आयल छैक। सभक अपन-अपन विशिष्ट पहिचान छै।एहि मे समानता आ असमानता कतय सँ आबि गेल।

स्त्री तऽ विधाताक एहन अमूल्य वरदान थिक जिनकर बिना सृष्टिक कल्पनो नै भऽ सकैत अछि। सृष्टिक एकटा एहेन अमूल्य उपहार जिनकर बिना पृथ्वीलोक मनुष्य विहीन भऽ जायत। चूँकि स्त्रीलोकनिक एकटा विशिष्ट व्यक्तित्व होइत छैक ते हुनकालोकनि के संसारक सभ क्षेत्रमे विशेष सुविधा भेटबाक चाही।

प्रणव झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली

<u>सदाचार क तावीज (मैथिली लघु नाटिका)</u>

(ई नाटिका हरिशंकर परसाई जी क एकटा निबंध सं प्रेरित अछि)

सदाचार क तावीज (मैथिली लघु नाटिका)

पात:

१. राजा (भानु पताप सकरवार)

२. सूचना एवं पसारण मंती (मञ्जुला)

३.वित्त मंती

४. गृह मंती

5. महामंती

6. विशेषज (खटर झा)

7. शिष्य विशेषज-१

8. शिष्य विशेषज-२

9. साधू

१०. शिष्य साधू -१

११. शिष्य साधू -२

12. कर्मचारी

दृश्य - १

पृष्ठभूमि : (भ्रागम देश मे हल्ला मचल छल जे भ्रष्टाचार अनहद रूपे पसरि गेल अछि |) राजा दरबार मे चिंता के माहौल अछि |

राजा(भानु प्रताप सकरवार) मंत्रीगण सं : हे हमर मंत्री रत्न गण ! प्रजा बहुत हरबिरो मचा रहल अछि जे पूरा चौहद्दी मे भ्रष्टाचार पसैर गेल अछि ! मुदा हम त आई धरि ई वस्तु के नै देखलहुँ अछि | यदि अहा सब के कतौ देखना मे आयल होय त बतायल जाउ |

सूचना प्रसारण मंत्री : महाराज ! भ्रष्टाचार जखन हुजूरे के नजैर मे नै आयल, त हमारा लोकैन के कोना क देखयात ?

राजा(गदगद भाव सं): ईह ! एहन कोनो बात नै अछि, सूचना मंत्रीजी ! कखनो काल जे हमारा नजैर मे नै आबैत हेतै ओहो त अहा सभ के देखना मे आबैत होयत की ने | जेना मानि लिअ्य जे हमरा त खराप सपना कखनो नै देख मे आबै अछि , मुदा अहा सब त खरापो सपना देखैत हेबै !

वित्त मंत्री : जी देखैत छी महाराज | मुदा ओ त स्वप्न के बात अछि की ने |

राजा : से बुझलौ, तखनि अहा सब सगरो राज्य मे खोज पर निकलु आ पता करू जे कतौ भ्रष्टाचार त नै अछि | जौ कतौ भेट जाय त हमरा देख लेल नमूना नेने आयब | हमहुँ त देखी की आखिर ई भ्रष्टाचार होइ केहन अछि !
गृह मंत्री (चाटुकार अंदाज मे) : हुजूर ओ हमरा सभ के नै देखा

सके अछि | सुनबा मे आयल अछि जे ओ बडड महीन होइ अछि| हमरा सब के नजैर के त अहाक विराटता देख के एतेक अभ्यास भ गेल अछि जे महीन वस्तु हमरा सब के देखाइते नै अछि |

राजा (गंभीर होइत) : तखन िर की करल जाय ?

महामंती : महाराज ! अपनेक राज्य मे एकटा जाति रहै अछि जिनका विशेषज कहल जाइ अछि | एहि जाति वगवके लग किछु एहन ऐनक होइ अछि जकरा अपन आइङ पर लगा क ओ सब सूक्ष्म सं सूक्ष्म वस्तु के भी देख लैत अछि | अस्तु, सरकार सं ई आवेदन अछि जे ई विशेषज जातिए के कोनो लोक के हुजूर ई भ ाचार के खोजय के काज सौपै |

राजा (हुक्म देइत) : बेस त ठीक अछि | विशेषज जाति के एकटा सभापति गठित करल जाय आ हुनका राज दरबार मे उपस्थित होय के आजा देल जाय |

दृश्य - २

दारपाल : महाराज के जय होय ! महाराज ! धर्मशेषज खटर झा अपन सभाक सदस्य सड्डत महाराज के दर्शन के अभिलाषी छैि |

राजा (पशन होइत) : हुनका सभ के ससम्मान उपस्थित कैल जाय|

(दारपाल चल जाइ अछि | खटर झा के चेला सड्डत पवेश)

खटर झा (चेला सड्डत) : पणाम महाराज !

राजा : पणाम महोदय ! महोदय, जनता हरबिरो मचेने अछि जे राज्य मे चौतरि ा भि ाचार पसरल अछि | अस्तु हम जानै चाहै छी जे ई भि ाचार केहन होइ अछि ? की अहा के कतौ भि ाचार भेटल अछि?

खटर झा : जी महाराज कतेको रास भेटल अछि |

राजा (हाि बिबैत) : अच्छा ! त लाउ देखाबू त | देखी त केहन होइ अछि ई भि ाचार ?

खटर झा : सरकार, ओ हाि के पकि मे आब वाला नै अछि | ओ सि ूल नै अछि परंच सूक्ष्म अछि, अगोचर अछि | मुदा ओ सवत्र अछि | ओकरा देखल नै जा सकै अछि, बस अनुभवे टा कैल जा सकै अछि |
राजा (सोच मे पिंत) : मुदा महोदय ! सूक्ष्म , अगोचर आ सवव्यापी

भेनाइ त ईशरक गुण अछि ! त की भ्रष्टाचार ईशर अछि ?

चेला १ : जी हं महाराज ! बेस कहलौँ आब भ्रष्टाचार बुझू त ईशरे भ गेल अछि |

सूचना एवं पसारण मंत्री : मुदा ओ अछि कत ? आ ओकर अनुभव कोना क कैल जाय ?

खटर झा (झौक मे) : ओ सवत्र अछि | एहि भवन मे अछि | महाराज के सिंहासन मे अछि ....

राजा (सिंहासन सं उछलैत): सिंहासन मे अछि .....!

चेला २ : जी हा महाराज, अहाक सिंहासन मे | पिछला महीना मे एहि सिंहासन मे रंग-रोगन करय के लेल जे बिल के भुगतान कैल गेल छल ओहि मे सं आधा त अहाक मंत्री सभ के खास लोक सब खा गेल अछि |

खटर झा (बीचमे चेला के खिसियाति) : दूर बूड़ि ! तोरा बीच मे बजनाइ जररी छौह |

(विशेषज के बात सुन के बाद राजा बडड चिंतित भ गेलाह आ संगहि मंत्री सब के कान सेहो ठाढ़ भ गेल)

राजा : ई त बडड पैघ श्चिंता के गप्प अछ्छि ! खटर महोदय, हम ई भि ाचार के श्चिलकुल जैि सं मेटाब चाहै छी | की अहा सब एकरा मेटाब के कोनो उपाय बता सकै छी जे ई कोना क मेटायत ?

खटर झा : जी हा महाराज | ऐ के लेल अपनेक एकटा योजना तैयार कर के होयत | भि ाचार मेटाब के लेल महाराज के व्यवस्ि ा मे आमूलचूल पश्चिवतन्न कर के पि ि | कोन कोन एहन कारण सब अछ्छि जै खाश्चितर मनुष्य भि ाचार मे श्चिप्त रहै अछ्छि ई सब श्चिचार कर पि ि |

राजा : बेस, त ठीक अछ्छि | अहा अपन योजना आ श्चिचार सब के एकटा श्चिपोटवबना क अश्चिला तीस श्चिदन के भीतर पस्तुत कर |

खटर झा : जे महाराज के आजा | ((चेला सश्चित पसि ान करै छश्चि)

दृश्य - ३

(दरबार मे दरबारी सब बैसल छथि |)

राजा: महामंत्री जी | की भेल, आई तीस दिन पुरल जा रहल अछि मुदा एखन धरि विशेषज खटर झा समिति अपन रिपोर्ट नै प्रस्तुत केलाह अछि ?

(तखने खटर झा के चेला समेत प्रवेश)

खटर झा : बंदा हाजिर अछि सरकार | ई लिय महाराज, ११०१ पृष्ठ क ई रिपोर्ट|

राजा (आश्चर्य सं चकित होइत) : एतेक मोट रिपोर्ट!

खटर झा : जी महाराज | हमर समिति दिन राति मेहनत आ विसचव क क ई रिपोर्ट तैयार केलक अछि | महाराज, समिति भ्रष्टाचार के कारण, तरीका आ निवारण के विस्तृत अध्ययन आ शोध क क ई रिपोर्ट तैयार केलक अछि | भ्रष्टाचार के बहुत रास दृश्य आ अगोचर कारण सभ अछि |

राजा : जेना किछु दृष्टान्त दिय |

खटर झा : जेना मे की बेसिर पैरक विज्ञापन सब के बाढ़ि आबि गेल अछि जेकरा हम-अहा उपभोक्ता संस्कृति के नाम द देने छी मुदा एहि मे भ्रष्टाचार के बीज सेहो छुपल अछि |

राजा : उपभोक्ता संस्कृति ! से कोना ?

खटर : सरकार, उदहारण के लेल एकटा विज्ञापन लेल जाउ जाहि मे देखबै अछि जे अमुक बाडक कपडा पहिरला सं मुखवआ उदंड टाइप छौडा के छौडी सब घेरने ठाढ़ अछि आ बगल मे साधारण कपडा पहिरने एकटा सीधा-सदा युवक हीन भावना सं ग्रसित भ रहल अछि | कखनो विज्ञापन मे ई नै देखना मे आयल अछि जे फलाना बाड के कपडा पहिरला सं बालक कतेक चरित्रवान बनि गेल अछि| आ की बुधन कक्षा मे प्रथम आबै अछि किएकी ओ फलाना बाड के जूता पहिरै अछि |

महाराज, एहि तरहक विज्ञापन सब साधारण परिवार के बच्चा सब मे कुंठा उत्पन्न क रहल अछि आ ओकरा सभ के भ्रष्टाचार के तरफ आकर्षित कय रहल अछि |

महाराज, एकटा सज्जन हमरा कहै छलैथ जे की हुनकर बालक गाडी के लेल जिद्द केने छैथ | मना केला पर की अपन ओकाइत नै अछि ओ उतर देलैथ जे भुटकुन के बाबू ओकरा कोना गाडी किनएलखिन | उतर मे जखन सज्जन कहलखिन जे भुटकुन के बाप त घूसखोर अछि त बालक पलैट क जवाब देलखिन जे - अहाक ईमानदारी के फायदे की जखन अहा बाइको नै किनया सकै छी !

आई-काल्हि के बालक-बालिका सब के ईमानदार बाप निकम्मा लाग

लागल अछि हुजूर |

राजा (गंभीर मुरा मे) : हूँ | दोसर कारण |

खटर झा : एकटा अन्य कारण शिक्षा के व्यवसायीकरण अछि महाराज |

राजा : से कोना ?

खटर : महाराज आई काल्हि इंजीनियरिंग, मेडिकल, मैनेजमेंट, लॉ आदि के पढ़ाई के लेल निजी क्षेत्र मे जे संस्थान सब खुजल रहल अछि ओहि मे स अधिकतर के एकमात ध्येय व्यावसायिक लाभ कमेनाइये रहि गेल अछि | एहि संस्थान सब मे छात्र सभ सं पैघ रकम डोनेशन के नाम पर ल क प्रवेश देल जाइ अछि | आब घूस के बीया सं त बैमानी आ भ्रष्टाचारे के फसिल ने तैयार हेतै यौ सरकार !

राजा : हुंह | बेस कहलौं ताहि शिक्षा के विकास के लेल त निजी शिक्षा संस्थान आवश्यक सेहो अछि |

खटर झा ; अरे सरकार, आशय एत शिक्षा के शुद्ध लाभक व्यवसाय बनाब से अछि | प्राथमिक सं ल क उच्च शिक्षा तक बच्चा सब के केवल लाभ कमब के ट्रेनिंग देल जा रहल अछि | शिक्षा मे नैतिक सामाजिक आध्यात्मिक मूल्य के नितांत अभाव प्राथमिक स्तर सं देखना जाइ अछि आ उच्च शिक्षा मे त ई विलुप्ते बुझू |

राजा : हुंह | अन्य कारण ?

खटर : एकटा अन्य पैघ कारण अछि भ्रष्टाचारी सभ के सामाजिक स्वीकार्यता आ प्रतिष्ठा सरकार |

राजा (विस्मय से) : अच्छा ?

खटर: हुजूर अपने जे राज्य के जनता के भलाई के लेल, खास क क वंचित वर्गक के लेल जे ग्रांड डे मील, ए.एन.एम, आशा, आंगनवाड़ी, मनरेगा आदि सामाजिक आ आर्थिक भलाई के योजना सब शुरू केलौं अछि, एहि सब मे कार्यगत भ्रष्ट कमी सब जे अछि से सब एहि योजना के राशि सं बड़का कोठा, गाडी आ सम्पत्ति ठाढ़ क लेलक अछि ओहि सम्पत्ति के वजह सं हुनकर सब के समाज मे इज्जत आ प्रतिष्ठा बैढ़ जाइ अछि | ईमानदारी से पढ़ाबय बला मास्टर सब के कोनो पूछ नै अछि मुदा जे मास्टर इस्कूलक मुंह देखने बिना दरमाहा हठबाई अछि आ पंचायत-पखंड मे जा क नेतागिरी आ वन टू का फॉर करै छथि हुनकर बडड नाम भ रहल अछि | एतबे नै सरकार कतेको कुप्रथा सब सेहो एहने लोक सब के कारण प्रतिष्ठा के विषय बनि गेल अछि | जे जतेक बेसी तिलक-दहेज़ देइत-लैत अछि समाज मे ओकर ओतेक बेसी मान-प्रतिष्ठा होइ अछि | स्वाइत लोक सब विवाह-दान, दहेज़-लेन-देन आदि के लेल भ्रष्ट तरीका सं बेसी सं बेसी धन कमब मे प्रवृत्त भेल अछि |

ई सब सुनैत सुनैत राजा साहब के माि दुखाय लगलन (ओ माि पर हाि धरैत बीच मे बात काटैत बजलाह : ठीक अछि महोदय अहा अपन श्वपोटवदेने जाउ । मंती मंडल एकर अध्ययन क उचात कायवाही करता ।

(खटर झा श्वपोटवसौप क ओतय सं श्वदा होयत छैि)

दृश्य ४

राजा (चिंतात मुरा मे)

सूचना एवं पसारण मंती : चिंता के कारण अहाक स्वास्थ्य दिनोदिन खराब भेल जा रहल अछि महाराज | ओ विशेषज सरबा सब अहाके अनेरे झंझट मे िंसा देलक |

राजा : हा, आइकाल्हि हमरा राति-राति धैर चिंता के मारल निन नै आबै अछि | की करी ना करी किछु ुरा नै रहल अछि |

वित मंती : मार बाढ़ैन ध क | एहन रिपोटवके त आइग लगा देब के चाही जेकरा चलते महाराज के नीद मे खलल पि |

राजा : लेकिन करी की ? अहो सब त रिपोटवके अध्ययन केलहुँ अछि | अहा सब के की राय-विचार अछि ? की ऐ रिपोटवके अमल मे लाब के चाहि ?

गृह मंती : ई योजना की अछि एकटा मुसीबत अछि सरकार | एकरा जो लागू करै के चेि ा करी त सबटा व्यवसि मे उलट ि र भ जायत | अपने सब के किछु एहन कर के आवश्यकता अछि जाहि सं व्यवसि ा मे बिना किछु उलट ि र केनेहे भि ाचार समाप्त भ जाय|

राजा : हमहुँ त इहे चाहै छी | मुदा से संभव कोना के होय ! हमर

परबाबा के त जादूओ टोना आबै छलैन मुदा हमरा त ओहो नै आबै अछि |

(तखने महामंती के एकटा साधू समेत पवेश)

महामंती (हल्का धीमा मुरा मे) : महाराज अहा चिंता जुनि करू |अहाक समस्या के समाधान हम ल क एलहुँ अछि |

राजा : से की यौ ? जल्दी बाजू | हमारा सब नै अछि एही माथ ला मे |

महामंती : सरकार हम अपना संगे ई महान साधक के जोहने एलहुँ अछि जे कइएक वर्षक खोज आ तपस्या के प्रति सदाचारक तावीज बनौलैन्हि अछि जे मन्त्र सं अभिमंत्रित कैल गेल अछि आ जेकरा बाधला सं मनुष्य स्वत: सदाचारी भ जाइ अछि |

(साधू अपन झोरा सं तावीज निकालि क राजा के दैत अछि |)

राजा: हे महात्माजी एहि तावीज के विषय मे हमरा विस्तार से बुझाउ|

साधू (दार्शनिक अंदाज मे) : हे राजा, भ्रष्टाचार आ सदाचार मनुष्य के आत्मा मे वास करै अछि ; विधाता मनुष्य गढ़ई काल मे आत्मा मे एकटा यंत फिट क दैत छैथि जाहि मे सं ईमान अथवा बैमानी के स्वर निकलै अछि , जेकरा आत्मा के पुकार कहल जाइ अछि |

त पश ई उठै अछि जे मनुखक आत्मा सं बैमानी के स्वर उठै अछि ओकरा दबा क ईमान के स्वर कोना निकालल जाय ? एहि विषय पर कइएक वर्षक शोध आ तपस्या के पति हम ई तावीज बनेबा मे सफल भेलौ महाराज | जै मनुष्य के बाहि पर ई बान्हल रहत ओ सदाचारी बैन जायत |

राजा : मुदा एकर की गारंटी ?

साधू: महाराज ई तावीज टेस्टेड अछि | हम एकर पयोग बिलाडियो पर क क देखने छी | ई तावीज बन्हला सं बिलाडियो रोटी नै चोरबई अछि | येह ई तावीज के खासियत अछि महाराज |

(दरबारी सब उठी उठी क तावीजक तजबीज कर लागै छैथि)

राजा (पसन मुरा मे हाथ जोडि क) : हम अपनेक बडड आभारी छी महात्मन | अपने हमरा घोर संकट सं उबारलहुँ अछि | हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार सं बडड परेशान छलहुँ आ एकरा रोक मे असमर्थ भेल छलहुँ| मुदा हमरा एकटा नै असंख्य तु करोड़ि तावीज चाहि | हम राज्य के तरफ सं तावीजक कारखाना खुलबा दैत छी आ अहा के ओकर सी.ई.ओ बना दैत छी | की औ मंतीगण ई पस्ताव पारित होय की ने ?

वित मंती : मुदा एकर की आवश्यकता सरकार ! राज्य एतेक झमेला

मे थ्ककये परौ ! थ्कएक नै एकरा लेल टेडर थ्नकालल जाय आ चुथ्नंदा एजेसी सब के एकर ठेका द देल जाय | आ साधू महाराज सं ई ि ामूला के पेटेट अथ्नकार राज्य के तरि स अथ्नगृहीत क के ओथ्ह कंपनी सब के द देल जाय | एथ्ह सं अथ्नशीघ तावीज उत्पादन के कायव संभव भ जायत आ राजदरबार एथ्ह झंझट से सेहो उबरल रहत|

राजा: ठीक अथ्छ | साधू महाराज के उथ्चत सत्कार कय के थ्वदाय कैल जाय | आ थ्हनकर बौथ्द्धक सम्पदा ई तावीज ि ामूला के जनथ्हत मे राज्य के तरि सं अथ्नगृहीत कैल जाय | आ यि ाशीघ टेडर के कायवपूरा क के तावीज के उत्पादन शुर कैल जाय |

(अथ्गला थ्दनक अखबार के खबर - "सदाचार क तावीज के खोज| जल्दीये तावीज बनाब के ि ैक्री खुजत आ जनता के तावीज मुफ्त उपलब्ध करैल जायत तथ्ा नागरीय सुथ्वधा लेब लेल तावीज पथ्हरनाई अथ्नवायवकैल जायत ")

(पटाक्षेप)

दृश्य - ५

राजा अपना आप सं : - सदाचार के तावीज त बन्हा गेल | आब एकबेर भेष बदैल क देखबाक चाही जे ई ठीक ि सं काज करै अछि की नै |

(ि र राजा भेष बदैल क एकटा कायालय पहुँचैत अछि)

ओतय एकटा कमचारी सं राजा : नमस्कार बि ा बाबू |

कमचारी : नमस्कार | कहु की सेवा कैल जाय |

राजा : हुजूर हमर एकटा टेडर पास होबय के अछि अहा एत सं |

कमचारी : ठीक छै, टेडर अखन प्रि या मे अछि | अगीला हफ्ता पणाम आबि जायत | जे सबसँ योग्य उम्मीदवार हेथि न हुनका नाम सं टेडर खुजत |

राजा (5०० के नोट दैत) : हे ई राखय हुजूर बच्चा सब के लेल मिठाई खाय लार राखि लय | नाचीज के बनवारी लाल कहल जाइ अछि बस एतेक ख्याल राखब |

कमचारी (डाटे के मुरा मे) : बेशमव! लाज नै होय छह घुस दैत | भागै छह एतय सं की बजाबी पुलिस के |

(राजा लंक ल क पराई छैि |)

(किछु दिन बाद एक दिन फेर राजा ओहि कर्मचारी लग जाय अछि)

राजा (फेर से ५०० के नोट पकराबैत) : हुजूर ई बाल-बच्चा के मिठाई खाइ लेल राखि लिअ | बस हमर टेंडर के ध्यान राखब |

(एहि बेर कर्मचारी नोट राइख ले अछि)

राजा (गुस्सा होइत) : हम अहाक राजा छी | अहा घूस लैत रागल हाथ पकड़ल गेलहुँ अछि | अहा घूस कोना क लेलहुँ ? की अहा सदाचारक तावीज नै बंधने छी ?

कर्मचारी (डरे कँपैत स्वर मे) बाधने छी महाराज | ई देखल जाय (देखबै अछि) |

(राजा आश्चर्यवसं तावीज मे कान लगबै अछि)

तावीज सं आवाज आबै अछि : "आई त ३० तारीख छै आई त ल ले नै त फेर आई कनिया आ बाल-बच्चा सब अपन अपन माग ल क बेइज्जत आ गंजन करतौ |

ई सुनैत राता के तावीज के उत्पादन मे गड़बड़ी के भान भ जाइ अछि आ ओ अपन माथ पीट ले अछि |

(पटाक्षेप)

राजा खानदान (संस्मरण)

बात आठ नौ बरष पछुने के अछ । एक बेर हम अपन थयायौत भैया-भौजी संगे दरभंगा घुमय के योजना बनेलौ। भोरगरे उठ क नहा-सोना कऽ तीनु गोटे टेपू से दरभंगा के लेल बदा भ गेलहुं। ओतय पहुंच क सवघ मि श्यामा माई के दशब केलहुं । शदालु हमर आ गृहणी रौजी के िन दशम ि रा िवरोि र हिल िल, ‍िदा का िडि रैया के ओक दशम ि दाशमाक तेज पजवलत र गेल िलैन। ओतय से कालला प ि बाट ि ओ बजलाह जे ईह, ऐ किद पागण के िताि णि बडड पवि र अिव ‍िदा बुजह जे इहो जे ि ह से सा ितिदऽक पतीक ि ह। ह ि पुक्लयैन जे से कोना यौ रायजी? रायजी बजलाह जे देखह ई कि द जे अिव से ि हजि ि ि शि कसंहऽक कता प ि बनायल गेल अिव । “ह ि कतो प ि लोक पूजा अचमा कयि” ई सा ि ती सोच नै अिव त की अिव?

ह ि बजलहुं जे ईह! अहुं रायजी कहा के कलक कहा क डा दैत ि ी। ऐ प ि रायजी बजलाह हौ ह ि ठीके कहैत विद यह। एतबे ि रौजी

पागण के सरटा िाट-नहिि क्दिि, गाि-िृकि आक्द के पूजा क के आक्ा गेक्लह आ बजक्लह जे आब चलै चलू आगा। हिाि श्यािा िाई के पसाद ’लडडू’ बडड पक्सन्द िल हि बजलहुं जे रौजी पसाद त द क्दय ने। तै पि ओ बजक्लह जे एह एतेक दूि सपैि कऽ एलहुं अवि त सरटा िदीिि पूजा-पाठ केला के बादे खायब। ऐ पि हि की बक्जतहुं जे आधाटा लडडू त हि पंक्डतजी से िावा क पक्हनेहे खा नेने िाी! चुपे हिय िि रलाई बुझलहुं आ सर गोटे आगा बवि गेलहुं । आगा िनोकािना क्दिि िि पूजा कि ति, लक्क्शि क्ािस(संथ्कृत विशविदालय), निगौना पैलेस, विविला विशविदालय के कैपस घुिति, फ़ोटो क्खंचबैत दरिंगा हििजऽक क्ला पहुंचलहुं जहा से आगा बिति कंकाली क्दिि पागण िि जा पहुंचलहुं ।

ओतय श्यािा िाई क्दिि पागण सन चहल पहल नै िल, िुदा िातािणि ओतुको क्दव्य बुझना गेल िल। एकटा िाट-विन दोकान पि दूि टा िडा पसाद बेच हिल िल । पसाद क्नला के बाद क्दिि िि िुकिलहुं त देखल जे क्दिि िि त केयौ अवि ए नै। तखने हिाि नजैि एकटा पुरि ष पि पडल, क्जनकि उिि गोटैक पचपन बिखि हेतैन । गंजी-धोती पक्हनिे, िाि पि चानन ठोप, गौिि णिभपि आि शोरा बिा हिल िलैन। गंजी-धोती कतौ-कतौ खोचायल सन िल िुदा उज्जि बग-बग िल। हि पुक्लयैन जे की यौ हििज अक्हं पंक्डत जी िाी ? ओ बजलाह जे िाी त हिहुं पंक्डते िुदा ऐ क्दिि के पुजािा नै िाी । हि अपथ्यात हौइत बजलहुं जे की र गेलै त। िाी त अहा पंक्डते ने से क्क हिाि सब के पसाद चिाब के अवि से अहा चिा ने क्दयौ।

ऐ पि ओ बजलाह जे बौआ चिी त हिहुं सकै िी ुदा "ककी हक नै िाबिाऽक चाही"। हिहुं िाजे खानदान के िी, ऐ क्विि के सेिी कित एलहुं अवि। अहा सब पाच विनट बैसै जाउ पुजािी जी आवा जेताह ।

बैसे के त पड.बे कविैतै, हि सब बैक्सयो गेलहुं, ुदा आसू रायजी त विशुध पंचोवरया बाम्हण िलाह, गोटगि टीक-ठोप बला। ओ ओय बाम्हणदेि से शाथ्राििमक ुरािि बजलाह जे औ जी अहा कोन िाजा खानदानऽक िी । औइनिवि िशि के वि आ की खंडिला िशि के िी। ओ बजलाह जे हि िाजा िहेश ठाकुिऽक िशज िी। ुदा आसू रायजी एतबे से कहा िानय बला िलाह। ओ यक जेना सिाल पि सिाल कित गेलाह आ ओ बाम्हणदेि युवधवा ि जेना सरटा सिालऽक यििवत जिाब दैत गेलाह। ऐ तिहे लगरग आधा-पौन घंटा बीत गेल िल। अंततोगतिा आसू रायजी हुनका से बजलाह जे अचिा चलू िाजा िहेश ठाकुिऽक खानदान के िशािली बताउ त। ओ पंवडतजी, टिाओल सुगाा जेना धुिझाि बाजय लगलाह िाजा िहेश ठाकुि, िाजा गोपाल ठाकुि, िाजा पििनंद ठाकुि, िाजा सुरंकि ठाकुि, िाजा पुिषोतिि ठाकुि, नािायण ठाकुि, सुन्दि ठाकुि, क्विनाि ठाकुि, वािपित ठाकुि, िघु वसंह, वािषणु वसंह, निनिर वसंह, पताप वसंह, िाधो वसंह, िि वसंह बहादुि, रर वसंह बहादुि, िहेशि वसंह बहादुि, लक्ष्िशि वसंह बहादुि, ििशि वसंह, काििशि वसंह................एक थरि ई नाि-पाठ सुवन क हिि नजैि के सािने ओ िशिि×वकऽक वार नाचै लागल जे हि दविरंगा के म्युवजयि ि एकबेि देखने विि।

ऐ उतिि के सुनला के बाद आसू रायजी ठीक ओविना आथथिा

रेलाह जेना अजुर्न के दाि अपन दसो टा नाि बतौला पि ’उतिवशिथ्त रेल िलाह जे कनि िशधाि हुनकि साििी आन केयौ ने ’अजुर्न’ विकाह।

एही बीच ि घंटी डोलबैत संठी सन कायाबला पुजाििजी सेहो आब गेल िलाह। हि सब रगिती के दशर्न केलहुं, रौजी पूजा केलह आ पुजाििजी पसाद चिालाह, दान-दक्षणा दैत हि सब ओत से विदा रेलहुं आ क पाि से ओ बाणिशेष टोकलाह जे “हे बाउ, हििि कि देने जाउ, दू दिन से हि रोजन नै केलहुं अर्वि”।

ऐ पि हि कक्ष विथिक्षित रेल िलहुं। ता रौजी पसाद बला डब्बा से ४ टा लडडू ननकाल क हुनका हाि ि िम्हा देलनखन आ हिहु अपन पसभसे एकटा दसटकिया ननकाल कऽ हुनका हाि के िम्हा देलियैन। ऐ के बाद ओ हििि सब के खूब िसि आशीिदि दैत विदा केलाह। ओतय से विदा होइत हििि िनि ि दू टा बात गूंज लागल िल “हिहु िजे खानदान के िी”, “ककि हक नै िििऽ के चाही” ।

िसबुक केऽर चकर (मैथिली थ्यसरसा)

कुशल जी, नोयडा के एकटा बहुराष्ट्रीय कंपनी मे मैनेजर छलाह। जहिना नाम कुशल तहिना ओ अपन पेशा आ बेयक्तिगत जिनगी के सब कायवमे कुशल छलाह। समाजिकता सेहो छलैन्हि आ समाज सं जुड़ल रह के शौख सेहो। महानगरीय जिनगी के एकटा साईड इफ़ेक्ट इ अछि जे एतुका जिनगी के भागाभागी मे अहा नहियो चाहैत समाज से कटल जायत छी!

आधुनिक काल मे मनुक्खक जिनगीशैली मे तकनीक के बडड योगदान अछि। एहि क्रम मे तकनीक, भागादौरी मे व्यस्त मनुख के समाज सं जोडै मे सेहो मददगार साबित भऽ रहल अछि । जतय एक तरफ़ नेता से लऽ के अभिनेता सब भरि दिन टवीटर पर टिटियाइत रहै अछि ओतै आनो आन लोक सभ फ़ेसबुक आ व्हाटसएप के मदैद सँ अपन बिछुड़ल समाज-समाग आ संगी सब सँ जुडल रह के नया पयोग मे लागल छैि। एहन लोक मे कुशलजी के नाम अगणी शेणी मे राखल जा सकै अछि कियेक त हुनका फ़ेसबुकिया कीडा़ खुब कटलकैन अछि। दिन भरि मे देखल जाय त २४ घंटा मे ओ १८ घंटा त अधिकते फ़ेसबुक पर ओनलाईन भेट जेताह। नाना पकार के पोस्ट करैत रहताह राजनीति सँ ल के समाज तक आ फ़ूल-पत्ति से ल के जंगल-झाड तक । हुनका अंदर दिनोदिन ई फ़ेसबुकिया कीडा के संक्रमण बढ़ि जा रहल छलैन्हि जेकर परिणाम ई भेल छल जे हुनकर कनियां के आब ई आदैत से किछु असोकजवजेना होमय लागल छल । दोसर गप्प जे ई किछु समाजिक आ केन्द्रिय समस्या पर सेहो अपन पतिक्रिया ठाय पर ठाय दैत छलाह, जे किछु गोटे के अनसोहांत बुझना जाय छल। ऐ बातक शिकायत सेहो इनबोक्स

मे खूब भेटय छलैन्ह । चलु जे से मुदा दोसर गप्प के गैण बुझि पहिल गप्प के पमुख मानल जाय।

अहिना एक दिन घर मे ऐ फ़ेसबुकिया रोग के ल के खुब महाभारत मचल। कनियां हुनका खुब सुनौली। विवाह स ल के आई धरि के जतेक उपराग छल सभटा मोन पारि पारि के ओय सभसं कनियां हुनका पुन: अलंकृत केलाह।

उपरागक एहन दमसगर डोज सं कुशलजी के मोन अजीर्णता के शिकार भ गेल। हुनका अतेक रास गप्प पचलैन नै। ओ अपन मोबाईल मे से फ़ेसबुक के अनइंस्टल करै के कठोर फ़ैसला लेलाह। हुनका लेल ई फ़ैसला लेनाई नोटबंदी के फ़ैसला से कम कठोर नै छल मुदा जेना सरकार के नोटबंदी मे देश कऽ हित बुझना गेल छल तहिना हुनको अखुनका परिस्थिति मे फ़ेसबुक बंदी मे अपन हित बुझना गेल छल । तथापि फ़ेसबुकिया कीडा़ के असर अतेक जल्दी कोना जा सकै छल से ओ फ़टाफ़ट अपन मोबाईल निकाललाह आ लगलाह अपन फ़ेसबुक स्टेसस अपडेट मे "पहिलकक भारी डिमाड पर हम काल्हि सौ फ़ेसबुक छोडि रहल छी, तानि लेल जिनका जे किछु कहबा-सुनबा के होइन से आई अधरतिया धरि कहि सकै छी ! "

तकरा बाद त अधरतिया तक पोस्टऽक जेना 'बाढ़ि' आबि गेल होय। आ तहिना 'सियादरऽक हुआ-हुआ' जेना ओय पोस्ट सभ पर कमेटऽक हुलकार होमय लागल छल। जौ जौ समय बितल जाय छल कुशल जी के मोन कोना दैन करय लागल छल । मुदा एहि

बेर फ़ेसबुक बंद करय के पण ओ कदाश्चत भीष्म श्वतामह के साक्री माश्च के लेने छलाह आ श्चक कश्चायां के शब्द वाण हुनका तश्चना घायल केने छलैन जेना अजुर्न के वाण कुरक्षेत्र मे भीष्म श्वतामह के। पश्चणाम ई भेल जे अंतत: ओ फ़ेसबुक बंद क देलाह।

मुदा ककरो एने-गेने की श्चनगी क चि र कल अछि! एश्चना फ़ेसबुको के चि श्चनका अनुपश्चश्चायो मे अपन गश्च से चश्चते रहल। यदश्च श्चकछु श्चकटवती सर-समाग सब से वाया व्हाटसएप श्चमशव क श्चलश्चला चालुए छल। ऐ घटना के श्चकछु श्चन श्चतल हैत की एक श्चन कुशलजी के एकटा फ़ोन आयल। ’हेल्लो!’

"हे..हे…हे…मनेजर साहब यौ….नमस्कार"

"नमस्कार। अहा के?" पश्चउतर मे कुशल जी बजलाह।

" हे..हे…हे…नै श्चन्हलौ? आह! श्चन्हबो कोना के करब, पश्चने कतौ भेट भेल हैब तखन की ने। हम अहाक फ़ेसबंधु छी। नाम अछि पुष्पेन्द्रनाि चौधरी। पुष्पेन्द्रनाकि अि विभेल पुष्प क राजा अिात कमल आ हुनकर नाि अिात कमलपश्च भगवान श्चष्णु । हे..हे…हे …" अपन साश्चश्चयक पश्चचय दैत ओ फ़ेर सँ बलहंसी हंसय लगलाह।

कुशलजी श्चकछु याद करबाक चेि ा करैत फ़ेर बजलाह "ओह। अच्छा। कहु की समाचार।"

" हे..हे…हे… हमहु अतै सोनीपत मे रहै छी। अहांक फ़ेसबुक पोस्ट

सब सँ बहुत पभाश्वित छी। समाज मे अहाँ सन लोक सब के बडड आवश्यकता अछि। अतएव अहांके फ़ेसबुक छोड़ला से हम बहुत दुखित छी। अहाँ के अंतिम पोस्ट सब हम देखने छलहुँ । हम जनैत छी जे अहांक बात सब किछु गोटे के लोभाया सचाई सन लगै छलैन । आ एहने लोक सब के धमकी के कारणे अहाँ फ़ेसबुक छोड़लहुँ अछि। मुदा जखन तक हमरा सन लोक जीवित अछि अहाँ के डराय के कोनो आवश्यकता नै अछि। एहि संबंध मे हम अहाँ से भेट क के विमशव करै चाहै छी। बडड परिकरम से अहाँ के नंबर उपलब्ध भेल अछि। आई हम नोयडा आबि रहल छी आ अहाँ से भेट करै के अभिलाषी छी ।"

"मुदा हम आफिस क काज मे कनि व्यस्त छी" कुशल जी बजलाह

"आउ आउ आउ। बस किछु मिनट के भेट चाहै छी। हम बस एक घंटा मे पहुंच रहल छी।" ई बजैत उतर के पतीक्षा केने बिना ओम्हर से फ़ोन राखि देल गेल ।

फ़ोन राखि के कुशलजी पुन: अपन कायवमे व्यस्त भ गेलाह। करीब डेढ़ घंटा के बाद रिसेप्शन से फ़ोन आयल "सर कोई पुष्पेरनाि चौधरी आपसे मिलने आए है ।"

"ठीक है भेज दो" कहि कुशलजी फ़ेर अपन काज मे व्यस्त भ गेल छलाह।

दू मिनट बाद अदकी एकटा ललित काय व्यक्ति के संग नेने हाजिर

भेल। उजरा धोती, ताहि पर से घाम मे लभरायल चमकैत के कुता, लंबा टा चानन केने ई व्यक्तित्व भीडो मे आराम सँ चिन्हल जा सकैत छैथि से इ छथि मैथिल चीकाह।

"आउ बैसु" अभ्यागत के स्वागत करैत कुशलजी बजलाह।

आह मैनेजर साहेब आइ अहाँ स भेट भेने हमर जिनगी धन्य भ गेल। कतेक दिनुका से विचारने छलहुँ, आइ जा के अहाँ पकड़ मे एलहुँ अछि। अच्छा से सब जाय दिय, पहिने ई बताउ जे अहाँ फ़ेसबुक किये छोडलहुँ अछि? अहांके भाषा बचाउ आन्दोलन बला किछ कहलक अछि आ कि विशेष मिथिला राज्य बला धमकेलक अछि, आ कि मिथिला हुरदंगिया सेना बला सब घुरकेलक अछि? अहाँ बस एक बेर नाँ बताय दियौ हम देख लेब। हम सभटा बुझै छि एकर सब के खेल-बेल। यौ महराज हमहुँ बीस बरख सँ एम्हरे रहै छी आ दिल्ली के गोट-गोट कालोनी सब जै मे मैथिल-बिहारी सब बसल अछि,मे पैठ बनौने छि। इलाका के छांटल बदमाश सब हमरा नाँ से धोती …धोती त खैर पहिरैत नै जाय अछी धरि पैजामा मे लघी क दैत अछि। एहि पकारे चौधरी जी आधा-पौना घंटा तक खूब हवा-बिहारि देलखिन ।

जखन हवा-बिहारि के मिझ किछु रकले तखन गप्पक दिशा मोडैत चौधरीजी बजलाह: ‘‘हे..हे…हे… अहा भोजन त कैये नेने हैबैक?’’

आब चरबजिया बेरा मे एहन पश के की उतर देल जाय! अस्तु कुशलजी एहि पशक उतर एकटा पशे से देलाह "कि अहा भोजन नै

केने छी की?"

"आह। हम त घरे सं भोजन क के थ्यदा भेल रही। आब त जे हतै से नस्तो-पानी हेतै की। हमर घरनी त जलखै संगे बान्है छलथ्यन। मुदा हम मना करैत कहथ्नयैन जे मनेजर साहेब थ्यना नस्ता करेने मानथ्यिन्ह िरेक ने। से अनेरहे हमरा ई सब फ़ेर घुरा क नेने आबय परत।"

चौधरी जी के आशय बुझ मे कुशलजी के कोनो भागट नै रहैन। तािथ्य ओ मोने मोन थ्यकछ राहत अनुभव करैत सोचय लगलाह जे हाि एथ्यना टाईट अथ्छ, एहन मे यथ्द जलखै भथ्य कराक थ्यनका सँ थ्यंड छूटै त सौदा महरग नै अथ्छ।

एथ्य थ्यणय पर पहुंचैत ओ चौधरीजी से बजलाह। जे चलु तखन थ्यकछु जलपाने क लेल जाय। हुनका संग नेने कुशलजी बगल क एकटा रेस्टोरेट मे पहुंचलाह।

ओतय बैरा के बजाय ओकरा दू टा थ्यंहारा, दू टा लालमोहन आ दू टा चाह क आडब दैते छलाह आ की चौधरी जी बीच मे कूदैत बजलाह " इह! एकटा जमाना छल जे एक प्लेट थ्यंहारा माने दू टा थ्यंहारा बुझल जाय छल। आ ताथ्य पर से उपर से परसन जतेक लेल जाए तकर थ्यसाब नै। आ आब त एकटा थ्यंहारा के फ़ैशल आयल अथ्छ। जे कहु, हमरा सन लोक के त एकटा थ्यंहारा से मोन छुछुआएले रथ्य जाय अथ्छ। आ लालमोहन के की पुछल जाए। बथ्ययाथ्य सब मे त थ्यानती के कोनो थ्यसाबे नै रहै छल। खौकार

सब के बाजी लागय त सै, डेढ़ सै, दू सै टका दैत छल। मुदा आबक जुग के की कही!"

ई बजैत ओ बैरा के चारि टा पनिहारा, २० टा लालमोहन आ दू कप चाह क आडर क देलखिन, आ व्यापार कुशल बैरा सेहो कुशलजी दारा कोनो संशोधन के इंतजार केने बिना आडर ल के निकलि गेल। पांच मिनट बाद किछुनकर सभक मेज पर पनिहारा आ लालमोहन के परिर लायल गेल छल।

कुशल जी नहु नहु चम्मच काटा स तोड़ि तोड़ि पनिहारा आ लालमोहन खाय लगलाह आ ओम्हर कुशलजी बुलेट क गति से पनिहारा आ लालमोहन के सदगति देबय लगलाह। जा कुशलजी संग दैत २ टा पनिहारा आ २ टा लालमोहन खेलथि तेन्ह टा बचलाहा सबटा माल चौधरीजी के पेट मे अपन जगह पाबि गेल छल। चाह क अंतिम चुस्की लैत चौधरीजी बजलाह "ईह! इ नास्ता की भेल बुझू जे भोजन भ गेल।"

"बेस तखन आजा देल जाउ।" बैरा के बिल के बदला मे पाच सौ के नोट पकराबैत कुशल जी बजलाह।

"हे.. हे ..हे ... हे आब त अपने घरे जाकलबै की ने। हम सोचै छलहुँ जे एतेक दूर आयल छी आ आई संजोग बनल अछि त भौजियो से एकरती भेट भैये जैतै त ...हे.. हे ..हे ... हे।" इ बजैत चौधरीजी फिर सं बलहँसी हँसय लगलाह। आब ऐ ढिठाई पर कुशलजी की कहि सकै छलाह! लाचारहुताम के रक रखैत मौन स्वीकृति दैत चौधरी

जी के संग क लेलै आ गाि मे बैस घरक बाट धेलाह।

घर पहुंचला पर चौधरीजी कुशलजी के कश्नाया 'चँदा दाई' आ बुतर सब के बीच रैम गेलाह आ तुरते हुनका बीच मे अपन वाक्-कुशलता के धाक जमा देलश्वन।

गप्प-सप्प एम्हर आम्हार से होयत माछ क गप्प पर पहुँचल। चौधरीजी बजलाह "ईह! अहाक बगले मे त छलेरा गाव मे बिका मछहटा लगै अछ. बिका-बिका श्नबैत रहु भेटै छै. चलु घुश्च क अबैछ।" ई बजैत ओ कुशल जी के हाि धेने बाहर जाय के उपिम करय लगलाह।

आब आगा के श्वस्सा अहा अपनहुँ सोची सकै छ। अस्तु राश्च पहर श्चवगर माछ-भात-दही-पापड के भोजन भेलै। भोरे कुशलजी के छए बजे से एकटा मीश्टंग छल श्वदेशी क्लाइंट संगे वीश्डयो काफेश्नंग पर। ओ पँचबज्जी भोरे ऑश्ि स श्चकली गेलाह आ एम्हर चौधरी जी आठ बजे तक चदर ताश्च क िि कटैत रहलाह।

उठला पर चाह-चुका संगे िर सं दमसगर नस्तो भेलै। चलै काल ओ कुशलजी के कश्नाया के कल जोश्च के क्मायाचना के भागट पसारैत बजलाह "हे ..हे...हे... भौजी तखन आब आजा देल जाउ। हमारा कारणे जे अहा सब के कि भेल होयत तकरा लेल क्मापाि छ हे ..हे...हे..."

"नै नै ऐ मे कि के कोन गप्प छै। अश्चाश्ि सत्कार त हमर सबहक

परम कतव्य िक" ई बाथ्म चँदा दाई श्वुनका जेबाक आशा मे केबार लग ठाढ़ भ गेल छलीह मुदा चौधरीजी एक बेर िर श्वकछु संकोच करैत आ बलहँसी हँसैत बजलाह "हे ..हे...हे...जै काज से नोयडा आयल रही तै मे श्वकछु पाई के खगता भ गेल। मैनेजर साहब अपनश्वु रश्वुतै तखन त श्वकछु बाते नै रश्वुतै जतेक कहश्वायन पुराइये श्वुतथ्िन मुदा ओ त भोरे भोर मीश्वटंग के लेल श्वाकली गेल छै। से दूओ हजार टका जौ भ जैतै त ...."

चँदा दाई श्वकछु धकमकाइत चौधरी जी के हा मे एकटा दू हजश्वरया के नोट म्हा देलीह।

साझ मे कुशलजी जखन आश्वि स से घुरलाह त चँदा दाई श्वुनका हा से मोबाइल छीन श्वकछ करै लगलीह। कुशलजी के भेलैन जे हौश्वबा! आब कोन काण्ड भ गेलै। कश्वाके काल मे कश्वाया श्वुनका हा मे मोबाइल दैत बजलीह "श्वाय अहाक मोबाइल मे िसबुक इंस्टॉल क देलौ अश्वछ ... आब अश्वु पर करैत रहु शोशल नेटवश्वकंग।"

"च ास (मैथ्िली श्ववस्सा) "

दीपक बीसीए क के पूना के एकटा कंपनी मे डाटा पोसेसर के पद पर काज करय छलाह । बीसीए कयलाक क बाद इ नौकडी़ हुनका कोनो अनेरहे भेट गेल होय एहन बात नै छल, मुदा हुनकर लगन, पश्चभा आ भाग्य बले हुनका ई नौकडी़ भेट गेल छल अन्यथा हुनके कै टा संगी सभ एम्हरे-आम्हरे कय रहल छलाह। ओना जौ लंगोश्टया दोस सब के बात करी त ओ सब श्चनका स बश्यिे पोश्मसन पर पहुंच गेल छलाह। र पेश इलेक्रोश्नक इंश्मश्नयश्यंग क के इन्फ़ोश्मस मे छलाह त नंदन मैकेश्नकल इंश्मश्नयश्यंग क के श्यलायंस मे । आषीश सेहो सरकारी बैक मे क्लकवभ गेल छल । तखन इ छल जे दीपको ठीक-ठाक पोश्मशन पकैड़ नेने छलाह । एही बीच मे देशऽक युवा वगवसब मे राष्ट्रभश्कत के नया हरश्बरो उश्ठ गेल छल। इलेक्रोश्नक श्मश्डया से ल के सोशल श्मश्डया तक मे श्यश्यध पकार के उतेजक फ़ोटो, श्यश्डयो आ श्लंक साझा करय जाय लागल छल । कालेजऽक कैटीन से ल क आश्फ़सऽक कैटीन तक बस एतबे बहस। सेना की कय रहल अश्छ पाश्कस्तान की कय रहल अश्छ, अमुक गुप के छात सब देशरोही श्थकाह, अमुक क्षेत्र के लोक सब देशरोश्ह श्थकाह, बस यैह सभ चचा। दीपक सन भावुक लोक के कखनो काल ई अश्लाश्योश्क्त देख मोन आश्वज भऽ जाय छल त कखनो के ओ भावुक भऽ अपने आपे के कोसऽ लागै छहाल। इंटर पास करय के बाद दीपक एनडीए के परीक्षा मे बैसल छलाह। पश्हल पयास मे त नै भेलैन ,मुदा दोसर पयास मे ओ श्लाश्खत परीक्षा पास कऽ गेल छलाह। मुदा जखन एसएसबी के लेल भोपाल गेल छलाह त ओत घोर श्नराशा हाि लगलैन। गांव आ दश्यभंगा मे पलि लड़का, नै अंगेजी बाजय मे फ़राटेदार आ नै

छन्दी बाजय मे ओ दृिता आ आत्मविशास! शाश्वत परीक्षा आ क्षमांग राउंड तक त ठीके रहलैन मुदा जखन स्टोरी राईटिंग आ गुप डिस्कसन राउंड आयल त हुनकर हाि-पैर फ़ुलय लगलैन। अस्तु, ओ अगिला राउंड मे नै पहुंच सकल छलाह।

अहिना एक बेर बिहार मे पाथमिक-माध्यमिक शिक्षक के भती निकलल। हुनको कै टा संगी आ गौआ सब फ़ोमवभरलक। ओ सब हुनको उकसैलक जे तोहुं भैर लैह हौ मीता, भ गेलह त बुजह जे आरामऽक नौकडी भ जेत अपन पदेश मे । बाबू सेहो सैह राग अलापै छलथिन्ह। बाबू बाजल छलथिन्ह जे जतेक पाई ओत दै छौ लगभग ततेक पाई त एतौ भेटिए जेतौ। दीपक उतर मे बजने छलाह जे बाबू से त ठीक अछि मुदा एत हमरा आगा तेजी स उनति भेटत ओतय से बात नै ने रहतै यौ। ऐ पर बाबू बजलाह जे देखह ओतय जतेक खचवछ गाम-घर मे ओकर अपेक्षा खचवकतेक कम हेत सेहो ने सोचह। तै एकबेर राई करऽ मे कोनो हजवनै। एहि पकारऽक घमिा के बीच दीपक के मोन मे एकबैगे एकटा सोच जगलैन। ओ सोचय लगलाह जे जौ हमरा मास्टरी मे भ जाय त हमरा लेल इ एकटा अवसर हेतै अपना गाम-घर देस के बच्चा के पिबय-लिखाबय के । यदि हम अपन पाप्त ग्यान आ अनुभव के उपयोग क के मेहनत से किछु धीया-पुता के पिबय के पयास करब त आगाि ते पाथमिक-माध्यमिक स्तर पर किछु बच्चा मे ओ ग्यान आ आत्मविशास भैर सकै छी जैसे ओ आगा दुनिया मे स्पधा क सकै। फ़ेर बाबूओ ठीके कहै छथिन जे भ सकै अछि जे वापस गामऽक रस्ता धेने हमर कथियर ओ मोकाम हासिल नै क सकै जे पूना मे रहि क अगिला १०-१५ साल मे हम पाप्त क सकै छी मुदा गाम-घर मे ओइ

अनुसार खर्चो कम हेतै आ अपन केत्त मे रहय के आनन्द सेहो त भेटतै । यैह सब सोचि क दीपक अप्लाई क देलाह। भगवती के इच्छा एहेन भेलैन जे दीपक ओई परीक्षा मे सेलेक्ट भऽ गेलाह आ हुनका रेलवे विभाग के लेल सरकारी पत प्राप्त भेलैन ।

आब ऐ विषय पर लंगोटिया सब मे हाटसएप गुप मे घमर्थन शुर भेल । नंदन बजलाह जे बडड पाक चाहता जाउ विजनस विनय अपन जिनगी....क विनय मजा । ऐ पर रमेश बाजल छल जे एहेन कोन बडका नौकडी लागल छैन, से हमरा लेखे त ऐ मे ज्वाईन केने कैरियर गोलि पर बेक लागि जेतैन । दीपक संग दैत बजलाह जे हमरो येह चिन्ता अछि। उतर मे नंदन फ़ेर बजलाह जे "यौ भाई ई किएक नै बुझै छि जे कतबो अछि त अछि त ई सरकारिए नौकडी की ने । ऐ मे सेलरी से बेसी उपरी कमाई देखल जाई अछि। आब देखियौ ने आशीष भाई के छैन त क्लर्के के नौकडी ने यौ मुदा हुनका हमरा- अहा से बेसी बालक भेटलैन अछि से किछु देखिए के भेटलैन अछि कि ने! औ दीपक मीता अहौक जैम क बालक भेटत, ज्वाई कर मास्टरी ।"
"हमरा बालक-दहेज के कोनो लोभ नै अछि मुदा आशीष एहन कोन कमाई करै छथि बैक मे !" __दीपक बजलाह।

ऐ पर आशीष दाशपाक के मुरा मे बजलाह जे बैक लोक सभ के बकरी कीनय से ल के बकरी फ़ामवखोलय तक के आ इंजिनियरिंग मे नाम लिखबय से ल के इंजिनियरिंग कालेज खोलय तक के लेल लोन दैत अछि। आ ऐ सभ पकारऽक लोन मे बैक अधिकारी- कर्मचारी सभ के 'कट' फ़िक्स रहै अछि। अहुना अहौ के चुप

दऽ दैत छी जे स्कूल मे मिड डे मील से ल के भवन के रख-रखाव आ साईकिल वितरण से ल के स्कोलरशिप वितरण तक मे 'कट' के जोगार रहै अछि आ बेसी हाकि-पर मारी त वोटर कार्ड से ल के राशन कार्डवआ स्वच्छ भारत से ल के इंदिरा आवास तक मे 'कट' भेटय के गुंजाइस रहै अछि। आ मास्टरी संग त अहा साईड बिजनेसो क सकै छी। एलआईसी एजेंट बनि जाउ, या लोन एजेंट या कोनो आन धंधा क लिय। बीच-बीच मे स्कूल जाय हाजरी बना लिय आ हावा-पाईन लय आबु।

इ सब सुनि क दीपक व्यथित भाव स बजलाह जे हम ऐ पोफ़ेशन मे इ सब गोरख-धंधा करय लेल नै जाय चाहै छी । हमर उदेश्य अछि अपन क्षेत्र क बच्चा सब के नीक शिक्षा भेटै तय मे हमर योगदान हो। तै हम बस अपन आर्थिक भविष्य आ करियर गोलि क आशंकित छी।

"तखन अहा बूझि छी" एहि बेर नंदन टोकलक । यौ भाय लोक एकटा काज छोड़ि क दोसर धरै अछि अपन पगहा के लेल दू टा पाई बेसी कामाबी तानि लेल आ कि अनेरहे ... ...
बीच मे बात कटैत दीपक चिंता से बजलाह जे नंदन भाय, अहा जे व्हटसएप से लय के फ़ेसबुक तक पर भरि दिन राष्ट्रभक्ति के राग अलापैत रहै छी से खाली अनका जान ठेलय लेल आ कि किछु अपनो अमल मे लाबय लेल आ कि बस अपन कुंठा निकालब के लेल! नंदन के समर्थन करैत रपेश बजलाह जे दीपक भाय अहा अनेरे भावुक भ रहल छी। वास्तव मे ई देशभक्ति, राष्ट्रवाद, ईमानदारी आदि शब्द नेता सभ के गढ़ियाब लेल, कि समर्थन लेल आ कि अपन

कुंठा मेटाब लेल, हवाबाजी लेल, दोसरा के परतार लेल पयुक्त होई अछि, मुदा वास्तविकता के धरातल पर अहा कोना क के अवि(धन) कमाबी यैह सबसं पैघ सोच होय अछि। अहाके समाज मे इज्जत ऐ ल के नै भेटत जे अहा कतेक शुद आ समाजवादी आचरण रखै छी बल्कि ऐ से भेटत जे अहा धन संचय करय मे कतेक काबिल छी (चाहे ओकरा लेल जे तरीका अपनाबी)। आ देखु अहौ जे दुविधा मे छी ओकर कारण कथियर गोिट त अछि ।

ऐ घमिबा के बीच दीपक के मोन के दुविधा मेटा गेल छल ओ उतर दैत बजलाह "भ सकै अछि जे लोक हमरा बताहे क के बुझि लैि मुदा आब हम इ नौकडी ज्वाईन करब आ ओहि उदेश्य लेल करब जे हमर मोन मे अछि। रहल बात अिपाजबा के त किछु आर तरीका सेहो अपनायब जेना विदालय के बाद के समय मे टयुशन, छोट-मोट सोफ़्टवेयर/वेबसाईट/पोजेक्ट/डाटा-एन्ट्री वकवआदि के कायव करय के पयत सेहो रहत। जौ भगवति क ऽ आशिवाद बनल रहलै त जिनगी ठीके-ठाक कटि जेतै ।"

दीपक के पोस्टिंग अपने जिला के एकटा आन पखंड के एकटा माध्यमिक विदालय मे भ गेल छल । दीपक ओतबे उत्साह आ आशा के संग विदालय ज्वाईन केलाह जतेक उत्साह आ आशा सं कोनो सासु अपन नबकी कनिया के दुरागमन काल मे पतिछण करै छथि। मुदा किछुए दिन मे दीपक के विदालय मे पसरल अव्यवसि के भान भ गेल। विदालय मे अनुपस्थिति के माहौला मे मास्टर आ विदािी मे जेना कोनो अघोषित शतवलागल होय! माने पचास पतिशत सं बेसी नै मास्टर के उपस्थिति रहै आ नै विदािी के । विदालय

भवन के हाल सेहो तेहने सन भेल छल जेना कोनो स्त्री के, ज्ञनकर वर बहुत ध्यन से बाहर कमाय लेल गेल होइ आ सासुर मे केयौ मानऽ बला नै होइन । शौचालय के नाम पर २ टा शौचालय टूटल-फ़ाटल गन्हाइत जैमे नाक नै देल जा सकै अछ्छ आ दू टा मास्टर सब लेल कक्ष ठीक-ठाक अवस्था मे जै मे ताला मारल रहै छल । क्षयेक आधा मास्टर सद्वखन अनुपस्थिति रहै छलाह तै क्षकछु क्लास या त खाक्षाए रहै छल अथवा दू टा तीन टा क्लास के एके संगे बैसा देल जाय छल । ई अव्यवस्था देख दीपक के मोन ध्वखसाया गेलैन। ओ एकरा क्षषय मे ब्बईओ साहेब के क्षस्तार पूवक ख्षखलाह आ हुनका से ऐ क्षषय मे उच्चत कायवाही कर के आवेदन केलथिन्ह। क्षकछु ध्यन बाद ब्बईओ साहब एलाह आ क्षदालय के क्षरक्षण केलथ्वन। पूरा काल हेडमास्टर, क्षकरानी आ लगुआ-भगुआ मास्टर सब हुनका घेरने रहलैन आ क्षदालय के अव्यवस्था के झाप के पूणव पयास केलाह ।

आब दीपक उम्मीद करै छलाह जे पखंड से क्षकछु कायवाही हैतैक। मुदा एहन त क्षकछु नै भेल परंच एक ध्यन मुख्वया आ सरपंच पहुंचलाह स्कूल पर। पंहुचैत देरी दीपक के पुछाक्ष भेलैन। दीपक आक्ष क हुनका सब के पणाम-पाती केलथ्वन्ह। मुदा पणाम के उतर देने ब्बना हुनका पर पश दागल गेल जे यौ दीपक बाबू! अहा एतय नौकडी करय लेल एलहु अछ्छ क्क राजनीक्ष करै लेल? जं राजनीक्ष करै के अछ्छ त खुक्ष क बाजू आ नै त एम्हर-आम्हर के बात सब नै कैल कर । चुपचाप क्षदालय मे आउ, समय ब्बताबु आ आराम से दरमाहा लेल कर बस।

"आ जौ दरमाहा कम बुझना जाय त टोली बना के सरकार के आगा

धरना-पदर्शन कर " क्लरानी बाबू बीच मे बात लोकैत व्यंगात्मक लहजा मे बजलाह ।
दीपक उतर मे कुछु नही बजलाह। हुनकर मोन बडड कुंठित आ व्यथित भ गेल छल ।

दीपक के मलिन मुंह देख के एक दिन मंडल सर पुछलथिन जे हौ दीपक, एना किएक मोन मलिन केने छहक? सिनेहऽक छांह भेटने दीपक के मोन रचित भ गेल। ओ बजलाह जे सर, हम अपन कैरियर आ महानगरऽक जीनगी छोड़ि क इ नौकडी़ पकड़ने छलहुँ ई सोचि क जे अपन गाम-घर के धीया पुता सब के शिक्षा देबय मे अपन योगदान करब। मुदा एत ओकरा लेल जे माहौल भेट के चाहि से त अछिए नै, उल्टे धमकी भेटै अछि।

ऐ पर मंडल सर बजलाह "हौ कि करबह, इ समाजे एहने अछि। ई हेडमास्टर, क्लरानी, मुखिया, चपरासी, इ सभ एहि समाज के छैथ कि ने हो, कोनो लंदन से त आयल नै छैथ! तोरा कि लगै छ: जे इ जतेक गोरख-धंधा होय अछि से कि मुखिया-सरपंच के बुझल नै रहै छै। हौ, ऐ सब मे ओकर सब के हिस्सा राखल रहै छै।"

मुदा सर ऐ विद्यालय मे बच्चा त गामीणे के ने पढ़ै अछि, तखन लोक सब एहन चोर मुखिया-सरपंच के किएक चुनै छथि! "हौ ई एकटा जटिल सिस्टम चलि अछि जै मे सबहक भागीदारी के तीली देखबह।" मंडल सर प्रतिउतर मे बजलाह। "देख, ऐ विद्यालय मे समाज के किछु एहनो सकर्म वगवके बुतर सब के नामाकन भेल अछि जिनकर बुतर सब वास्तव मे कोनो पब्लिक स्कूल मे पढ़ि

रहल अछि। मुदा सरकारी योजना के लाभ लेब हेतु ओ सब नामाकन एतहु करौने छथि। विदालय पशासन से हुनका ई लाभ भेटै छैन जे बिना विदालय एनहुं हुनकर सब के हाजरी बनि जाय अछि आ सरकारी योजना सब के लाभ भेट जाय अछि। तासु एवज मे ओ सभ एहन चोर मुखिया-सरपंच के चुनै छथि। "

"मुदा एना करै के बजाय यदि ओ सक्षम लोक सब एतहु शिक्षाक पढ़ाई के लेल जे दवाब बनेथिन त कदाचित एतहु शिक्षाक पढ़ाई भेट सकै छैन जै से ओ सभ पब्लिक स्कूल के महरग फ़ीस के चकर से सेहो बांचि सकै छैि!" दीपक बजलाह।

मंडल सर एकटा गम्भीर सांस छोडैत बजलाह "हँ। मुदा ऐ मे हुनका सब के एकटा भागट ई बुझना जाय छैन जे फ़ंडऽक कमी सँ सरकारी विदालय मे ओ इंफ़ास्ट्रक्चर आ सुविधा नै अछि जेकर दरकार अछि आ दोसर जे कदाचित इ मनोविचारधारा सेहो काज करै अछि जे तखन त हुनकर बच्चा संगे आनो (आर्थिक अक्षम) लोक सब के बच्चा सब सेहो आगु बढ़ि जायत जे कदाचित इ वगव के पसंद नै छैन ।"

मुदा एहनो लोक सब के त समाज मे कमी नै जिनका सब के सरकारी विदालय मे शिक्षाक शिक्षा भेटय से लाभ होउ। से सब किये नै एहन मुखिया-सरपंच सब के विरोध करै छैि? —दीपक पुछलाह।

"नाना पकार के दबाव, जागरकता के कमी, रोटी-पानि मे ओझरायल रहै के कारणे आ भामक पचारतंत एकर कारण अछि" —मंडल सर बजलाह।

ऐ पकारे कछुए मास मे दीपक के ओय कुचक्रव्युह के जानकारी भ गेलैन जै मे शाका व्यवस्था(सिस्टम) ओझरायल छल । मुदा ऐ चक्रव्युह के तोडी कोना से कोनो मागवनै भेटय छल। कोनो आर सक्रम लोक के सहायता के उम्मदो लगेता त मागवरोकय लेल कैएक टा जयरि ठाि भेल छल। छुटी मे जखन ओ गाम गेलाह त अपन मोनऽक व्यथा बाबा के सुनेलथिन्ह। बाबा कहलथिन्ह जे बौआ जखन उखैर मे मुंह दैये देलह त मुंसर सँ कये घबराय छह। तो त बस अपन कतव्य करह, बांकि विधाता पर छोड़ि दहक। मोन लगाक माया-पुता के पिबह सिखाबह। एहन त नै अछि जे तो कछु अजगुत देख रहल छह। हमरा पीढ़ि सँ ल के तोरा पीढ़ि तक लोक सीमित साधन मे ने पलिक अछि हौ।

दीपक के बाबा के बात जंचि गेल । बस फ़ेर की ओ एम्हर-आम्हर के कुव्यवस्था के देखनाय छोड़ि क बच्चा सब के पिबै पर ध्यान देबय लगलाह। एकसरा क्लास सेहो लेबय लगलाह। जल्दिए ओ छात सब आ कछु गामवान के बीच लोकप्रिय भ गेलाह। एम्हर ओ १५ अगस्त के अवसर पर छात सब के बीच छोट-मोट पतियोगिता के आयोजन के योजना बना रहल छलाह आ ओम्हर करमनेि स्टाफ़ सब मे खुसुर-फ़ुसुर चालु भ गेल छल। फ़ेर एकदिन दीपक जखन अपन योजना ल के हेडमास्टर लग पहुंचलाह त हेडमास्टर बात कटैत बजलाह जे पहिने इ कहु जे कि अहा विदालय के बाद टयूशन करै छी? जी हं।-दीपक उतर मे बजलाह। त की अहाक नियमावली नै बुझल अछि?-हेडमास्टर बजलाह।
जी बुझल अछि मुदा हम ई विदालय समय के बाद करै छी आ ऐ

से विद्यालय मे हमर विकास पर कोनो पभाव नै पडैः अछि, विद्यालय मे सबसं बेसी क्लास हम लै छी ई विद्यालय के बच्चा-बचा जनै अछि। आ आन आन विकास सभ त नै जानि कतेक तरहक व्यवसाय करै छैि आ ओहो विद्यालय के समय मे, आधा टाईम गैबे रहै छैि।
- दीपक आवेश मे एकै सुर मे बाजि गेलैि।
"अहां बेसी काबिल बनै छि की? लोक की करै अछि से देखनाहर अहा के? अप्पन काज कर, हमरा की करय के चाही से जुनि बताउ। बेसी उडःब त शिक्षित मे ग्यापन पकडाः देल जायत अहा के ।" हेडमास्टर साहेबा झिडःकी दैत बजलाह।

दीपक उखरल मोन सं ओतय से घुरलाह। हुनका हेडमास्टरो के गोरखधंधा बुझल छल। ओकर वर ठेकेदार अछि, आ विद्यालय के अधिकाकाश कार्यआपूर्तिवके ठेका ओकरे भेटै अछि। मुखिया-नेता सब से सेहो संबंध। आ जे लोक समाजऽक लेल किछु काज करय चाहै अछि तेकरा जान देबय चलिलाह अछि!

अगिला दिन शिक्षरानी हुनका हाि मे एकटा आडबिम्हा देलैन जेकर अनुसार हुनका पखंड के कोनो योजना के कायान्वयन के लेल सवेक्षण के कायवमे लगा देल गेल छल। मतलब जे हुनका विद्यालय मे छात के पििबै के कायवसे हटाब के नया षडयंत रचि देल गेल छल। दीपक हाि मे आडबि नेने ई नव-संघषवके विषय मे सोचय लगलाह।

आब त इ समये बता सकै अछि जे दीपक व्यवस्था(सिस्टम) के ऐ चाफ़ांस सँ बचबा क उपाय कैल पाबै छैि की नै?

लघुकथा- अरजल जमीन

"की भेल यौ, कोनो समाधान भेटल कि नै?" लालकाकी लालकका के दुआरि पर कपार धऽ कऽ बैसल देख के बजलखिह।
कहा कोनो बात बनल ओ त अडल अछि जे नै अहाक के त पाई देबैये पडत नै त ई जमीन हम आन ककरो हाथ बेच देब आ अहा के बेदखल होबय पडत।
आ पंच सब कि बाजल?
पंच सभ की बाजत, कहै ये जे अहा लग पाई देबाक कोनो सबूत नै अछि , नै अहा के नाम सं जमीन लिखायल गेल अछि त इ बात कोना मानल जाय जे अहा ई पाच कटा जमीन कीनने छि! बेस त किछ बीच के रस्ता निकालल जा सकै अछि । आब देखियौ जे काइल कि फ़ैसला होई अछि।

बात इ छल जे करीब पच्चीस-तीस बरष पहिने लालकका अपन मेहनत आ शम के कमाई सं पाच कटा घरारी के जमीन गामक जमीनदार 'सेठजी' से कीनने छलाह । ओइ टाइम मे जवान जुआन छलाह, कलकता के एकटा मील मे नौकरी करै छलाह, किछु पाई भेलैन त माय कहलखिन जे एकटा घरारी के जमीन कीन ले। बेस त किछु जमा कैल आ किछु ईपीएफ़ के पाई निकाईल के इ सेठजी से पाच कटा घरारी के जमीन कीन नेने छलाह. मुदा भागट एतबे रहि गेल छल जे ओ जमाना शुदा लोक सभ के जमाना छल, लिखा-परही, कागज-पतर गाम घर मे कहा होई छल ओइ टाईम मे ! बस मुंहक आशासन चलै छल । से लालकका के इ घरारी के दखल त भेट गेल छल मुदा जमीन के रजिस्टरी नै भेल। इ गप्प सब लालकाकी के बुझलो नै छल। के ओई जमाना मे इ गप सब अपन

नबकआया के बतबै छल! बेस लालकका धीरे-धीरे ओय बंसबटी के उपटेलाह, आ कछेक साल मे एकटा छोट छन पका के घर बना लेलाह. ओई टाईम मे गाम मे गोटैके घर पका के बनल छल, तखन लालकका के नाम सेहो बजै छल गाम मे । बाद मे जुआनी गेलैन आ काजो छुटलैन, आ ओ गाम धेलाह। गाम मे कोनो बेसी खेत पार त छलैन ने जे ओ मे लागल रतै, तखन कोहुना समय कैये रहल छल ।ओना लालकका के इ क्यगत चार छल जे लोक के जीवन मे तीन टा कमवपूरा करबा के रहै अछ घर बनेनाई, बेटी याह आ बेटा के अपन पैर पर ठारह रहै योग बनेनाई। से लाल कका इ तीनो काज सं अंत भ गेल छलाह आ कखनो गाम मे त कखनो बेटा लग मे जीवन बताबय लगलाह। मुदा कछु न पने एकटा एहन बम फ़ूटल जै कारणे लालकका के अपन अरजल घरारी हा सं आकलैत बुझना गेलैन । जेना होमय लगलैन जे जीवन मे कछु नै केलहुं। बात इ भेल छल जे अचानके से गाम मे बात ई उठल जे नकर घरारी के जमीन त नका नाम पर अछए नै। सेठजी के मुईला उपरात इ जमीन हुनकर बडका बेटा के नाम पर चा देल गेल छल आ आई सेठजी के मुईला के कतेक बरष उपरात जमीनदारजी के इ जमीन ककरो आन के बेचय के बात कय रहल छलाह। लालकका के जखन ई खबर दलालबौआ दारा लगलैन ओ जमीनदारजी लग जाय कहलन जे औ जमीनदारजी! ई क अन्याय करै छ। इ घरारी हम अहाक बाबूजी से कनने छलहुं चा हजार कटा के भाव से बीस हजार रपया मे से अहुं के बुझल अछ, अहा के सामने पैसा आन के देने छलहुं। कतेको बरष से ए घरारी पर घर बना के वास कय रहल छ, से ओय समय मे त लीखा परही भेल नै छल, आब अहा करै चाहै छ

त इ जमीन हमरा नामे क्षयथियौ। इ बात पर जमीनदारजी भौ चि के बजलाह जे देखू अहा दूइए कटा के पाई देने रही आ बाक्ष्क के तीन कटा मे एक्षना बास क रहल छी, से जौ यश्च अहा सभटा जमीन क्षखबऽ चाहै छ्छ त लाख रपए कटा के दर से तीन लाख टाका लागत आ नै जौ अहा लग पाच कटा जमीन कीनय के कोनो सबूत अछ्छ त से बताबु। एतेक घुडकी लालकका सन शुदा लोक के थ्यचक्षत करय लेल बहुत छल । तथ्य ओ श्रम्मत कऽ के बजलाह जे यौ शीमान एना कोना अहा बाश्म रहल छ्छ अहाके सामनेहे हम अहा बाबू से ई जमीन कीनने छलहुं आ कतेको बरष सं एतय रहै छ्छ, आई सं पश्चने त अहा क्षकछु नै बजलहुं । बीच मे दलालबौआ बजलाह जे कका अहा लग लेन-देन के कोनो सबूत कोनो कागज ऐछ क्षक? यश्च नै अछ्छ त फ़ेर त पंचैश्च करा क जे क्षणय होय अछ्छ से स्वीकार करय परत अन्यथा अहा के ओइ जमीन से बेदखल होबय परत ।

काश्च भेने पंचैश्च बैसल पंचैश्च क्षक बुझ्रु, दलालबौआ, जमीदारबाबू, आ दू-चाश्च टा लगुआ-भगुआ । पंचैश्च मे जमीनदारबाबू तीन लाख टका के माग रखलैथ, लालकका सेहो अपन पक रखलैथ। अंतत: ई क्षणय भेल जे लाल कका या त दू कटा जमीन जै पर घर बनल अछ्छ से सोझा जमीनदारबाबू से क्षखा क्षयैथ आ नै जौ पाचो कटा के घरारी चाश्चएन त डेथ लाख टाका (जमीनदारबाबू दारा पस्ताश्चत मूल्य के आधा) जमीनदारबाबू के देबय परतैन ।

लालकका कश्चयो सपनो मे नै सोचने छलाह जे हुनका संगे एहनो कपट भ सकै अछ्छ । मुदा आब कोनो चारा नै रश्च गेल छल ।

बेटा के जौ इ बात कहलखिन त ओकर अफसोस ठंिा छल. पछिने त अफ़सोच केलक जे बाबूजी अहा आई धरि ई बात नै मा लग बजने छलहु नै हमरा सभ लग। फ़ेर कहलक जे दूइए कटा राखा ने जाय, घरारी ल के की करब, हमरो सभ के कियौ गाम मे नै रह दै चाहै अछि आ साल मे कछुए दिन लेल त गाम जाय छी। मुदा लालकका के लेल ओ जमीन कोनो बाया-पुता से कम छल कि! अपन पसीना के कमाय से अरजल घरारी। ओ आणय केलाह जे डेि लाख टाका दऽ के पाचो कटा राखबा लेब। राखबाय सेहो पचास हजार टाका लगाए जाएत। माने जे आब सवाल छल दू लाख टाका के जोगार के । किछु पाई एम्हर-आम्हर से कजवलेलैि । बाकि के लेल बेटा के कहलखिन त ओ कहलक ठीक छै अहा ओकर अकाउंट नं० भेजु हम दस दिन मे कतौ से जोगार क के रासफ़र क दैत छि। लाल कका जखन जमीनदारबाबू लग अकाउंट नं० मागय गेलाह त एकटा नबे ताल शुर भ गेल । जमीनदारबाबू कहलाह जे पाई त अहाके सभटा नकदे देबय परत से अहा अपना अकाउंट पर मंगबा लाय आ हमरा बैक से आकाश क दऽ देब।

लाल कका सभटा गप्प बेटा के कहलखिन। बेटा कहलक जे नै ई ठीक नै अछि, ओ कैश मे पाई ल के ब्लैकमनी बनबै चाहै अछि से अहा मना क दियौ। आ ओनाहुं जौ आइ अहा से पाई ल लेत आ पछिनेहे जेना मुकैर जायत तखन की करबै? से अहा साफ़ कहि दियौ जे जौ पाई बैक के माफ़त लेताह त ठीक नै त हम नकद नै देब।

लालकका के इ बुरहरी मे एहन उपरव भेल छल दिमाग अछिना

सनकल छल तै पर से अपन अरजल जमीन हाथि से निकलि जाय के डर। तखन लेल शायद हुनका बेटा के इ आदशवादी बात नीक नै लागल छल। उल्टा-सीधा सोचय लगलाह । भेलैन जे छौडा कखनो टाका त नै रहल अछि।

फ़ेर ध्यान पडलैन अपन एफ़डी दऽ। करीब डेढ़ि लाख हेतै। बडड जतन सं जमा क के रखने छलाह। कोनो मनोरथि लेल। पता नै शायद पोता के उपनयन लेल की अपने शादि लेल हुनकर मोने जनैत हेतैन कि लालेलाकी के।
एकाएक निर्णय केलैथि आ लालकाकी के कहलखिन जे एकटा काज कर पेटी से हमर एफ़डी के कागज सभ निकालू त । लालकाकी उदेश्य बुझैत कहलखिन जे धैयवधर ने, कंटीर कहलक अछि ने जे जमीनदारबाबू के अकाउंट नं० पठा देब लेल ओ पाई भेज देत, से कहै त ओ सखिए अछि कि ने ईमानदारी के पैसा कमसेकम ईमानदारी से जमीनदरबा के भेटै ने, एकबार फ़ेर जाउ ओकरा से माथियौ अकाउंट नं०, जौ पाई के ओकरा बेगरता छै त देबे करत ने।
हं! हम भरोसा कऽ के पछताय छी आ आब बेटा ईमानदारी देखा रहल अछि। यै, आब सज्जन आ ईमानदार लोक के जुग रहलै अछि! देखलियै नै कोना जमीन लेल दरिभंगा मे एकटा के आथि लगा के मारि देलकै। ई लोभी आ बैमान दुनिया के कोनो ठेकान नै। तै निकालू झट द कागज सब, आईए बैंक भ आबि।

आब एतेक सुनला के बाद लाल काकी की जवाब दऽ सकै छथिह। हुनका लग एतेक गहनो त नै छल जे आवेश दैत कहितथि जे "त

बेस इ गहने बेच ध्रदय"। बस चुपचाप पेटी खोश्ल क कागज श्आकालै लगश्लह।

<u>रश्कता (लघु कि ा)</u>

आई रश्क्ता भारतीय सेना के मेश्छकल कोपवमे कमीशंड होबय जा छश्नह । ऐ समारोह मे हुनकर मा पप्पा अति श्वव्द आ रोहन सेहो आयल छलाह । श्वव्द के आई अपन बेटी के लेल श्ककछु बेश्नए दुलार आ फ़ि बुझना जा रहल छल । समरोह मे कुसी पर बैसल बैसल ओ पुरना खयाल मे डूश्ब गेल छश्नह ।

जखन पीजी - सुपर स्पेशश्लटी के एंरेस मे रश्क्ता नीक रैक नेने छश्नह तखन रोहन हुनका श्वल्ली के एकटा जानल-मानल पाईवेट मेश्छकल इंश्स्टच्युशन मे पवेश लेब लेल कहने छलाह । ओ रश्क्ता के बुझा रहल छलाह जे देखह बेटी ओ नामी कॉरपोरेट अस्पताल छै, नीक पाई भेटत, संगश्ह नाम आ शोहरत सेहो बति त श्मनगी ठाठ से कटत, तश्ह लेल कहै श्छ जे आमी अस्पताल मे पवेश लेबय के श्मद जुश्न कर । ओतय अहा सं पश्हनेहे बॉण्ड भरायल जायत आ पोस्ट डोक्टोरल (सुपर-स्पेशलटी) करय के बाद अहा के कैएक साल धश्र सेना मे श्मवन घस पडत आ नै त लाखक लाख टका बॉन्ड भर ! मुदा रश्क्ता कहा मानय वला छश्नह, छुश्ट्ते ओ बजश्नह: अहुं ने पप्पा श्ककछु बाश्न दैत छी! हमरा जतेक नीक एक्स्पोजर आ लश्नंग के सुश्वधा आमी अस्पताल मे भेटत ओहन सुश्वधा अहाक ओ कॉरपोरेट अस्पताल मे कतय सं भेटत! आ आमी अफ़सर के यूश्नफ़ामव देखने छी पप्पा कतेक चाश्मंग आ मस्त होई अश्छ ने, आ ओईपर सं आमी के रैक पप्पा सोश्चयौ जे डाक्टर के संगश्ह जौ हमरा कैप्टन , मेजर आ कनल रश्क्ता रोहन के नाम सं पुकारल जायत त कतेक सोहंतगर लगतै ने । आ अहा! ओना त टीवी श्छबेट देख देख क हरदम सेना आ राष्ट्रवाद के जप करैत रहै छी आ आई जखन हम सेना के सेवा करय चाहै छी त अहा

हमरा रोक्क रहल छी! इ सब गप्प ओ एक सुर मे कह्ने गेल छथ्लाह ।

एतेक सब सुनला के बाद कहा रोहन हुनका रोक्क सकल छलाह । आ फ़ाईनली ओ आमी अस्पताल मे डीएनबी-प्लास्टीक सजबी पोगाम मे पवेश ल लेने छथ्लाह। थ्मदीयो त ओ बहुत बडका छथ्लाह । पीजी एडमशन के टाईम पर सेहो थ्वद्ध हुनका सं कहने छथ्लाह जे अहा लडकी छी अह्र लेल लडकी बला कोनो स्पेशल्टी ल थ्माय ओब्स गायनी, रेड्रयोलोजी या एहने सन कोनो मेड्रकल स्पेश्वाश्वटी ल थ्माय; कतौ, कोनो अस्पताल मे आराम सं काज भेट जायत अ नै त अप्पन थ्क्लथ्माक सेहो खोश्म सकै छी । फ़ेर थ्ववाह दान भेला के बाद बर संगे एडजस्टमेट सेहो बनल रहत ।
"बर गेल अंगोर पर । हमरा त प्लाश्वटक सजबा बनै के अछ्छ आ ओकरा लेल हमरा जनरल सजबी पयि के हेतै, त हम सजबी मे एडमशन ल रहल छी बस । " मा के बात के जवाब मे ओ इ बात एक सुर मे कह्ने गेल छथ्लाह ।

रथ्क्ता बाल्यावर्स सं होनहार बच्ची छथ्लाह आ एकर शेय वास्तव मे रोहन के जाइ अछ्छ । नेनपने सं ओकरा पबै के थ्मम्मेवारी रोहन अपने सम्हारने छलाह । १०-१२ घंटा के डयूटी के बाद जखन ओ हारल थकिल घर आबै छहाल तखनो ओ बडड लगन सं रथ्क्ता के बैसा क पबै छलाह । हुनका पबै खाश्वार समय थ्माकालबा के चकर मे कैएक बेर हुनका ऑफ्रिस मे अपन अथ्माकारी से सेहो उलझय पडय छल । एहन थ्मथ्स्था मे कै बेर थ्वद्ध कहने छथ्लाह जे कतौ टयूशन लगा थ्दयौ, आई-कैल थ्बना टयूशन के कही

बच्चा पलिकै अछि, मुदा रोहन हुनकर गप्प कहियो नै सुनलाह । इंटर मे गेला पर इ सब दास सर के संपर्क मे आयल छलाह, जे बडड योग्य शिक्षक छलाह, आ दास सर सेहो रश्मिता के पढ़बै मे बहुत मेहनत केने छलाह, जेकर ई परिणाम छल जे रश्मिता एमबीबीएस के लेल सेलेक्ट भ गेल छलिह । जखन ओ दास सर सं गुर दक्षिणा मागय कहने छलिह त सर कहने छलाह जे "बेटी चिकित्सा मनुख क सेवा करय वला पेशा अछि, त जतेक भ सकै लोक सभ के सेवा करिह, यैह हमर दक्षिणा होयत ।

याद क पाइख लगा क रश्मि अतीत के गहराई मे उतरय लागल छलिह । रोहन के संग हुनकर विवाह क कैएक वर्ष भ गेल छल मुदा हुनका कोनो संतान नै भेल छल । एक दिन अचानके स रोहन एकटा जन्मौटी नेना के कोरा मे नेने आयल छलाह आ ओकरा रश्मि के कोरा मे राखि देने छलाह आ कहलाह जे "अपन राजदुलारिया रानी"। "हाय राम! इ केकर बच्चा उठा के नेने एलहु अछि?" रश्मि रोहन से पुछने छलिह । रोहन उतर दैत कहने छलाह जे "हम अनाथालय मे एकटा बच्चा लेल आवेदन केने छलहु, आई ओतय स खबर आयल छल जे एकटा जन्मौटी बच्चा के केयौ राइख गेल अछि अनाथालय मे यदि आहा देखय चाहै छी त ......।" बस हम ओतय पहुंच गेलहुं आ एतेक सुनैर नेना के देख क झट हं कहि देलहुं आ सभटा फ़ोर्मेलिटी पुरा कय क एकरा अहा लग नेने एलहु अछि।

"मुदा इ ककरो नाजाय बच्चा... ..."

"हा..हा..हा... बच्चा कोनो नाजायज नै होई अछि, नाजायज त ओकरा समाज बनबै अछि" रश्मि के बात काटैत रोहन बजने छलाह, आ जवाब बे रश्मि बस एतबे बजने छलिह जे "अहा एकर रक्षक भेलहु आ इ हमर रश्मिता अछि।"

अतीतक गहराई मे डूबल **श्रद्धा** के कान मे अचानक से रोहन के उ स्वर गूंजय लागल छल, आ हुनकर तन्द्रा तखन टूटल जब हुनका कान मे र**क्ता** के नाम गूंजल जे र**क्ता** के क**मीश**निंग आ बैज ओफ़ ओनर के लेल बजाबय लेल पुकारल गेल छल । **श्रद्धा** के आंखि सं मोती जेका नोर टपकय लागल छल, **कियेक** आई हुनकर बेटी एकटा आमी अफ़सर का एकटा कुशल फ्लाइटक सजल जे बनि गेल छलीह।

<u>अवस्था- सुखैत पोखैर प्यासल गाम</u>

एकबेर बेर गाम मे एकटा भाखाजऽक उपनेन छल आ आफ़िस मे सेहो ३-४ टा छुटी लगातार भेट रहल छल । बस फ़ेर की एकबैगे गाम जेबा क प्लान बना गेल । प्लानो तेहन जे जूर-शीतल दिन साझ तक गाम पहुंचबतौ। मगध एक्सप्रेस अपन आदत अनुसार चारि घंटा विलंब सं पटना पहुंचेलक । आब ओत से बरौनी के रेन पकरबाक छल । गमी के दिन मे सूयास्त किछ विलंबे स होइ अछि, स्वाइत राजेन्द्र पूल पर जखन लगभग साढ़े छ: बजे पहुंचल छलहुं त सूयास्त क मनोरम दृश्य दृष्टि गोचर भेल छल। ओई मनोरम छटा मे ३-४ टा छौरा सब गंगा जी के बीच धार मे चुभैक रल छल। ई दृश्य देखय बला छल। मुदा इ कि! अचानक से ध्यान गेल जे गंगाजी त सूखि के आधा भ गेलहह आ पाईन क धार केवल पाजर धरि मे बचल छल । आब ई स्थिति भयावह बुझना गेल। त एकर की मतलब जे सुखार अपनो गाम-घर दिस दस्तक द देने अछि ! जखन गाम पहुंचलौ त जूर-शीतलऽक कोनो नामो-निशान नै देखना गेल। यदपि गाम हम अन्हार भेला के बादे पहुंचल छलहुं ।

अगिला दिन भोरे भोर गाम दिस विदा भेलहुं, बाट मे भेटनाहर लोक सब सं दुआ-सलामी लैत नदी कात पहुंचलहुं । मुदा देखै छी त ई की; नदी त अछिए नै! गामक बलान नदी सुखि क पीच रोड बनल अछि आ साइकिल, मोटरसाईकिल सभ ओई बाटे सरसरायल ऐ पार से ओइ पार भ रहल अछि। ध्यान गेल जे गामऽक मुखिया (जेकर जनेर-धैचा के फ़सल नदी कात मे लहलहायत छल) के अतिक्रमणक सीमा आउर अधिक बढि गेल अछि आ जत हरदम नदी के धार रहै छल ततौ मुखिया के फ़सल लागल छल। ओना फ़सलऽक हालत

सेहो थलथल सन भेल छल । गाम सं नदी चला जेनाइ मने छक जे मानु जेना कोनो सौभाग्यवती के थमहुंि से सेनूर पोछ देनाई भेल!

मानै छी जे हम बेसी दन गाम नै रहलहुं अछ, मुदा जतबे दन रहलहुं अछ, ई नदी से एकटा लगाव रहल अछ। बाल्यावस्ा मे नदी नहाय के अपन उत्साह होय छल, मा के मनो केला पर कहा मानै छथयै। आ गमी मझना मे त बुझ्रू जे जखने मोन होय तखने चैल दय नहाय लेल, कोनो अंगा-गंजी लेबा के काजे नै, बस ककरो सं गमछा मागू आ कूद जाउ। जा कश्रा काल नद मे चुभक ततबे काल मे नद कात के भाईटऽक गाछ पर पसरल गंजी-जंघया सभ सुख जाय छल । हं ई बात के अफ़सोस रहत जे हम हेलनाई नै सीख पेलहुं। यदथ गामक भैयारी सब िरे-बहुत सीखेने छल मुदा कालातर मे सेहो बसथ गेलहुं। ओना गाम-घर मे धया-पुता के दुपहर काल मे नदी कात जाय लेल मना करल जाय छल, जै के लेल भूत सं ल के पंडूबी तक के डर देखायल जाय छल। नदी कनार मे ओना माछ आ डोका पकरय के सेहो अनुभव रहल अछ। ऐ मामला मे मीता भाईजी बडड तेज छलाह। बुझु से बंसी आ बोर के असल खेलाडी वैह छलाह आ हम सभ त स्टेपनी टाइप मे संग लागल रहै छलहुं ।

खैर छोडू, हमहुं कहा पहुंच गेलहुं। हलुमान चौक पर पहुंचलहु त देखै छी जे छौरा सभ के चौकडी जमल अछ। मीता भायजी सेहो छलाह। हम कहथयैन जे यौ मीता भायजी इ त जुलुम भ गेल। ओ सशंकत होइत बजलाह <u>जे</u> से की? की भ गेलय? हम पश्राउतर मे बजलहुं जे "महराज गामऽक नदी चला गेल आ अहा

पुछै छी जे की भेल!" मुदा हुनकर श्वसप्रास बडड सदव छल। ओ बजलाह जे ई सब भगवानऽक माया अछि। देश-दुनिया मे पाप बढि रहल अछि, तेकर दुष्परिणाम त एहने ने हेतै हौ। हम बजलहुं जे भायजी, तैयो गमैया के त अपन कतव्य करबाक चाही ने नदी के बचाब के लेल। सालो-साल नदी के तह गाद से भरि क उपर भेल जाय अछि, तै पर से नदी तट पर मुख्यया के अतिक्रमण बलि जाय अछि। आई नदी सुईख गेल, सोचु जे ऐ संगे कतेको जलीय जीव सभ के त समूले नि भ गेल हैत। केतऽक जमीन मे पानिऽक लेवल भी नीच्चा खसि परल हैतैक...हं, से त सते. पहिने पचासे फ़ीट पर कल गडा जाय छल मुदा आब सै फ़ीट से कम मे कहा नीक पाईन अबै छै बीच मे बात कटैत कनकिरबा बाजल । हम बात के आगा बबैत बजलहुं जे देखु ई नदी मे लोक सब नहाइ जाय छल माल-जाल के नहब आ पाईन पियाब लेल नदी ल जाय छल, मौगमेहर सब कपडा-लता सभ टा त नदिये मे करै जाय छल ने यौ। त जै नदी सं एतेक उपकार भेटै अछि ओकरा लेल किछ त संवेदनशील होयबाक चाहि ने। एना जे नदी के भूमि के अतिक्रमण होयत रहतै, त अवधि ते ने नदी बिला जायत।

औ जी अहा शहर से आयल छी, ऐश-मौज मे रहै छी तै इ आदशवादी गप्प सब फ़ुरा रहल अछि। दिल्ली से ऐलाहार सब के एहिना गोल-गोल गप्प फ़ुराईत रहै छै। ऐ बेर बीच मे बात काटैत बंठाबबाजी बाजल ।

हम कनि व्यथित होयत कहलहुं जे हं शायद अहा ठीके कहै छी, हम पहिने भेलहुं जे गामऽक चिन्ता केलहुं । ई गाम त जेना हमर

अछिए नै। आ अहा कि जनै छी शहरऽक जिनगी के विषय मे । पाईनऽक किल्लत आ ओकर मोल की होई अछि ई कोनो दिल्ली-बंबई बला से बढ़िया के बुझि सकै अछि! कालोनी सब मे पाईन के लऽ कऽ झगडा-झंझट त डेली के किस्सा रहै अछि, बात त मरै-मारय तक पहुंच जाय अछि। बडका कोठी आ फ़्लैट मे रहऽ बला लोक सभ के सेहो सभ सुविधा त भेटै अछि मुदा पाईन हुनको नापि-जोखि क भेटै अछि आ ओकर बडड मोल चुकबय परै अछि। जे स्थिति अखन हम-गाम गमय दिस देख रहल छी, जौ लोक नै चेतल त भविष्य मे एतुको स्थिति वैह होबय वाला अछि।

खैर किछ काल गप्प-सरका मारलाक बाद हम गाम पर पहुंचलहुं आ नहाय के लेल बौआजी ईनार दिस विदा होबैये बला छलहुं कि मा टोकलक जे कले पर नहा ले, बौआजी ईनारऽक पाईन कदुआह भ गेल छै। ओह! एकटा आउर अफ़सोचऽक गप्प। जहिया से हमर नदी नहेनाय छुटल छल गाम मे हम बौआजीए ईनार पर नहाइत एलहुं अछि। बडड पवित्र आ शीतल पाईन होय छल ओहि ईनार के। गमी के दूबजजी दुपहरियो मे एकदम शीतल पाईन। हमरा याद अछि जे बचपन मे देखै छलहुं जे जूरशीतल दिन गौआं लोक सभ एकटा भ के एहि ईनारऽक सफ़ाई करै छल, किुल कसाई छल, नब रस्सी बान्हल जाय छल। रामनन्दन पंडितजी यजमानी मे भेटल एकटा नबका डोल बान्है छलाह। माने बच्चो सभ के लेल ई उत्सव के माहौल होय छल । मुदा आब......!

गामऽक दोकान मे आब कोल्ड-ड्रिंक संगे मिनरल वाटरऽक बोतल सेहो बिकाय लागल छल। किछु समृद लोक के घर मे २० लिटरा

आरो-पाईनऽक बोतल सेहो थ्कनाय लागल छल।

भोज-भात मे अक्सरहा कोनो छोट बच्चा जेकरा परसऽ के शौक होई अछ्छ मुदा ओकरा लुथ्वगर नै बुझल जाय अछ्छ के पाईन परसय लेल द देल जाय अछ्छ। कुम्हरम के भोज काल मे गुरकेलवा पाईन परसै छल। हम टोन दैत बजलहुं थ्क रे गुरकेलवा! तो पाईने परसै छै। ओ बाजल- ईह भायजी ! सबसं महरग चीज त हमही परसै छी।
- से कोना रौ? हम पुछथ्लयै
ओ बाजल जे भाईजी, भोजन त कतौ भेट जायत मुदा ई गमी मे सभसं सोहतगर चीज त ठंि पाईने लगै छै यौ। गामऽक आधा कल त सुखा गेल अछ्छ आ ईनार-नदी सब के हाल त अहा देखनेहे हेबै। तखन अथ्हं कहु जे हम की गलत बजलहुं?
एतनी गो गुरकेलवा एकटा गंभीर बात के बडड थ्वनोदी भाव मे बाथ्न गेल छल ।

पता लागल छल जे गामक चौधरी सरकार से सस्ता लोन ल के एकटा पोखैर खुनेला हन । हमरा पसनता भेल जे चलु नीके अछ्छ जे एकटा पोखैर भेने थ्कछ त राहत अछ्छ आ ताजा माछ खाय लेल सेहो भेट जायत । मुदा मा से जखन चचा केलहुं त ओ बाजल जे एंह । ओ पोखैर मे थ्कछु अछ्छयो! ओ त बहु पंचायत सदस्यऽक चुनाव थ्जतलैन त जोगार से लोन पास करा लेलाह। बैक के देखाब लेल खाईध खुना के माईट सेहो बेच लेलाह आ लोनऽक पाई सूईद पर चिा क सूईद खा रहल छैि। हम कहलहुं देखु त धंधा। सोझ रस्ता पर चथ्ल क थ्कयौ पाई कमाइये नै चाहै अछ्छ, जै से लोक संगे समाजऽक सेहो भला होय।

बश्चन एत गेलहुं त ओतौ वैह हाल देखय लेल भेटल। कश्चयो ओकर गाम एश्च बात लेल नामी छल जे ओई गाम मे बहतर टा पोखैर। आगा-पाछा, एम्हर-ओम्हर जेम्हरे मुडी घुमाउ तेम्हरे छोट-पैघ पोखैर-डाबर देखाय परै छल। मुदा देखलौ जे ऐ बेर ओइ मे स कतेको पोखैर-डाबर भैस गेल छल । बचलाहो मे से बहुते रास जीणवअवसि ा मे छल। भाईजी(बश्चन के भैसुर) के बुझल छल जे हम माछऽक पेमी आदमी छी। जै बेर बश्चन ओत जाय छलहुं, ओ कोनो ने कोनो पोखैर से माछ ल आबै छलाह । बेर पहर जखन भाईजी सकरी जाय लेल श्चदा भेलाह हम पुछश्चयै जे भाईजी कतऽ जा रहल छी। बजलाह जे अबै छी सकरी से माछ नेने। हम बजलहुं जे श्चकए गाम मे ऐ बेर उपलब्ध नै अश्छ की? ओ बजलाह जे ओह! गामऽक पोखैर सब सुखल जा रहल अश्छ। आई-काइल कतौ मछहर कहा भ रहल अश्छ। तै ऐ बेर अहा के सकरीए के माछ खोआबै छी।

हमर एकटा मधुबनी के श्चत्र सं सूचना भेटल जे शहरऽक आस पास जे डाबर-पोखैर सभ छल जै मे से कतेको मे शहरऽक नाला सेहो बहै छल, ओकरा सभ के मुईन क ओय जगह पर मकान-दोकान सभ बनाओल जा रहल अश्छ। जै कारण भूजल स्तर मे श्चरावट के संगश्च शहर मे जलऽक श्चकासी के सेहो समस्या भ रहल अश्छ।

वापस घुरै काल रैन मे जखन एकटा मश्चला के पंरह टाका एमआरपी बला पाईनऽक बोतल के बीस टाका मे बेचै बला भेडर से ऐ बात के लेल श्चरह करैत देखलहुं त इ बात सब एक-एक कय के मोन

परै लागल। हम सोचै लगलहुं जे अपन देश मे जे हजारो-हजार के संख्या मे पोखैर-डाबर-थ्चग्गी सब छल या अछ्छ से अचानक से त नै पकट भ गेल हेतै। एकर पाछा श्चाथि ते जौ बनबाब बला के इकाई छल हैत त बनाब बला सभ के दहाई छल हैत। आ ई ईकाई-दहाई सभ श्चाल क सैकडा-हजार बैन गेल हेतै। थ्यछला थ्ककछु दस-बीस साल मे थ्यकासऽक नया पाठ पैि गेल समाज ऐ इकाई, दहाई, सैकडा, हजार के सोझे शून्य मे पहुंचाब के काज कय रहल अछ्छ। ऐ थ्यरासत के सम्हार के थ्यंता नै समाज के भ रहल अछ्छ आ नै सरकार के । आ जौ कतौ भऽओ रहल अछ्छ त सरकार आ समाज मे सामन्जस्थ्ये नै बैस रहल अछ्छ। हम इहो सोचय लगलहुं जे जौ थ्यनगी मे भगवती अवसर आ सामथ्र्यवदेलथ्यन त गाम मे पाच कटा जमीन कीन क ओतय एकटा पोखैर खुनायब आ ओथ्य मे माछ पोसब। आब रेनक गथ्य संगे हम यैह सभ योजनाऽक खाका खीच रहल छी।

बस एतबे छल ई थ्यवस्सा ।

कल्पना झा

बीहनि कथा- आवाहन

-- माय गे ! दादी त हाथ सँ लपे - लप खाइत , चाउर परसै छलीह,
मुदा तो त चम्मच सँ परसे छे ?
-- धुरररररररर !
ताहि सँ की हेतैक ?
-- नहि हेतेक की......?
हमरो सभ के नीक रस्ता भेटल .
-- से की ?
-- येह जे ' आवाहन' मे सेहो 'चम्मच' लगौल जा सकैछ

बीहनि कथा- अंतर

-- माए गे , माए !
लक्ष्मी की होइत छथि ?
-- ध'नक देवी ,,
-- धनक देवी माने ?
-- जे सब के र पैया - पाइ, बौस्त - जात देथि.
-- तहन बुच्ची के जनम पर बाबा किएक
कहलथि 'घर मे लक्ष्मी एलीह हए'
-- लबरि नहितन चुप्प !
बेटी सेहो घरलागथि होइत छैक.
-- तहन बुच्ची के देखिते तोहर ऑखि किएए नोरा
गेलौ ?
"लक्ष्मी नहि सोहाइ छौ की"?

अभिलाष ठाकुर

बीहनि कथा- साठ गाठ

बौआ - यै भौजी ऐना तमसैल किए छी।
भौजी- यौ बौआ की कहु आब अहा के भैया िन केनाइ सेहो बिसरि जाइ छैि, बूझि पिड़ए कोनो ककरो सँ कोनो साठ-गाठ तऽ नहि।
बौआ- एना जुिन बाजु, हमर भैया राम िथ काह औ्र अपन सीता छोइर साठ-गाठ असंभव।

बीहनि कथा- नोटबन्दी

लाल काका- हौ आइ झुमना बजै छल मोदीके कारने बैकमे पुरा दुपहरिया लाइनमे लाग् पिल आ गाइ एखन धिर भुखले छल।
टुनटुनमा- हाहाहा कका यौ कारी धन जमेने हेतैि।
लाल काका- धुर बुरबक।
टुनटुनमा- त ॥
लालकाका- िचन बाबु कहलिथन 1000 हजार बेसी देबौ इ िकी जमा केने आ तखन रौतका भोजन संगे।
से पुरा िदन साझ भ गेलै आ बरका बौआ गाइ कऽ सानी लगेलक॥
॥पाइ की नै कराबै॥

डॉ. वीणा कणव

मैथिलीक धरोहर 'सीता-शील' (खडगबल्लभ दास 'स्वजन' जीक 'सीता-शील' मैथिली काव्यक साहित्यिक विवेचना)

मानवीय आदशव ओ अध्यात्म चिन्तनक अभिव्यक्तिक लेल काव्य अमृत्वक काज करैत अछि। भक्तिक भावुकतासँ भरल मोनके काव्य सृजक पेरणा सोत कहब अनुपयुक्त नहि होएत। एहि काव्यक शब्दावि होइत अछि कथ्य-कमव जकर काव्य सम्पादनमे रचनाकारक काव्य रचनाक पवृत्ति ओ अभ्यास कायवत होइत अछि आ अहि व्युत्पत्ति ओ अभ्यासक बलपर ओ जे रचना पाठकके समर्पित करैत छथि से काव्य कहबैत अछि। वस्तुत: काव्यक रसानुभूतिसँ हमर हृतंतीमे जे तरंग उत्पन्न लेइत अछि ओकर लय ओ छन्दमे बान्हल रहब आवश्यक होइत अछि जे शैलीक आधारपर िमश: तीन कोटिमे बाटल रहैछ, यिा- गद, पद ओ मिश। मिशके चम्पू काव्य सेहो कहल जाइत अछि। छन्दरहित काव्य पधानके जँ गद तँ छन्दयुक्त रचनाके पद कहल जाइत अछि। पुन: गदमे अनेकानेक विधा अछि, जेना- किा, उपन्यास, संस्मरण, यातावृतात , रिपोटाज, नाटक ,एकाकी आदि-आदि। ओहिना पदक सेहो दू भेद होइत अछि: पबंध ओ मुक्तक। पबन्ध काव्यक सेहो दू भेद होइत अछि महाकाव्य ओ खण्डकाव्य। महाकाव्यमे जँ इतिहास पिसद महापुरष अिवा महीयशी नारीक सम्पूणव जीवनक गतिविधिक चारित्रिक लीला-गान रहैत अछि तँ खण्डकाव्यक विषयवस्तु होइत अछि एहने महापुरष अिवा महीयशी नारीक जीवनकपसिद खण्डविशेषक घटनािमक विवेताकन।

पस्तुत कसौटीक आधारपर 'सीता-शील' के पबन्धकाव्यक कोटिमे

राखल जा सकैत अछि सेहो महाकाव्यक कोटिमे। हँ, महाकाव्यक संज्ञासँ अभिहित करबाक निमित्त एहि रचनाक सन्दर्भमे किछु नियमके शिथिल करए पड़त। एहि रचनाक महाकाव्यत्व सिद्ध करएमे मात्र दू टा तत्व,विविध छन्दक प्रयोग ओ सर्गबद्धताक अभावके शिथिल करए पड़त। 'सीता-शील'क रचनाकार स्वयं एकटा साहित्यिक विधाक कोनो कोटिमे नहि राखि पद-रचना कहैत छथि "सामान्य जन के ओ सुगम कि अविसमझ पड़ि जे स्पष्ट सुन्दर भाव समझैमे कठिनता होअए ते से जाहि रचलहुँ मधुर भाषा मैथिली के पदमे लागत पढ़मे पढ़ रहल छी जाहि तरहे गद मे"

वस्तुत: रचना कोन कोटिक अछि से प्रतिभाषित करब रचनाकारक नहि अपितु आलोचकक काज होइत छनिह। ई हमर सभक दायित्व अछि जे एहन महानतम रचनाक प्रति संवेदनशील भए एकर उपयोगिताके देखैत एकरा प्रति न्याय कए सकी। एकरा अहू लेल खण्डकाव्य नहि कहल जा सकैत अछि जे खण्डकाव्य तँ महाकाव्यक शैलीमे प्रधान पात्रक जीवनक कोनो एक खण्ड विशेष के लए कए लिखल जाइत अछि, किन्तु एहि रचनामे भगवती सीताक जन्मसँ लए कए जीवनक अन्तमे धरती प्रवेश धरिक घटना निबद्ध अछि। वास्तवमे देखबाक ई अछि जे प्रबन्धकाव्य लेल जे आवश्यक अहर्ता होइत अछि तकर समाहार एहि महाकाव्य मे भेल अछि अथवा नहि।

प्रबंन्ध-काव्यमे सर्वप्रथम कथानकक अनिवार्यता होइछ आ तकर प्रयोजन ओहि पात्र विशेषक क्रियाकलापक कथा होइत अछि जाहि कथासँ प्रभाव ग्रहण कए भावक अपन स्वच्छ चरित्रक निर्माणक दिशामे अगसर भए लोक-कल्याणक भावनाके सबलता प्रदान करैत छथि। एहि महाकाव्यक कथानक सेहो एकटा महत् उद्देश्यके लए कए सृजित भेल अछि जाहिसँ समाज सुधारक मार्गप्रशस्त भए सकए। भगवती

जानकीक जीवन-चश्वतक पसंगमे रचनाकारक जे भावोश्वार छश्वह ताहीसँ एकर कानिकक चयनक औश्वत्य पश्वापाश्वत भए जाइत अश्वछ। देखू जे महाकश्व स्वयँ की कहैत छश्वि ——"ओश्वठाम पाश्वजाबद भ गेलहुँ जे रामायण मे वश्वाता जगत जननी जानकीक आदशवचश्वतक वणना अपन मातृभाषा मैश्विली मे पद रचना कए पुस्तक पकाश्वात कराबी, ते ——

"आदशवपुरषक पेश्वका के चश्वत शुभ लीखैत छी
उपदेश नारी लेल 'सीता-शील' मध्य पबैत छी
अश्वछ धारणा सीताक पश्व उर-मध्य शदा-भश्वक्त जे
पद रश्व पकट कS रहल छी अश्वछ योग्यता आ शश्वक्त जे"

एकरा संगश्व एश्व महाकाव्यक कानिकक चयनमे रचनाकार जे एहन सालिता पाप्त कएलश्वह अश्वछ से अहू कारणे जे गामीण श्वाषकलुष वातावरणमे रश्व कS महाकश्व खडगबल्लभ दास अपन एकान्त साधनासँ सुन्दर कानिकक चयन कएलश्वह अश्वछ जाश्वमे पेमक मधुर संगीत अश्वछ तँ उदाम उत्साह सेहो। मानवताक व्याकुल आहाहन अश्वछ तँ पकृश्वाक मधुर सौदयवअश्वछ। सीताक वैभवक संग आदशक आकषणा सेहो सशक्तता सँ श्वयश्वात भेल अश्वछ।

कहल जा सकैत अश्वछ जे एकर कानिक संयश्वात भावात्मकता ओ संयश्वात कलात्मकताक संग सामंजस्य सँ अत्यन्त पभावोत्पादक भए उठल अश्वछ। वास्तवमे एश्व महत् काव्यक कानिकक माध्यम सँ मानवीय मूल्यक अवमूल्यन कएश्वाहार लोकके मयादा रक्षाक पाठ पढ़एबाक आवशयकता बूश्व एहन कानिक पस्तुत कएल गेल अश्वछ जकर कानिक चयनक मादे पटना श्वशश्वदालयक अवकाशपाप्त मैश्विली श्वभागाध्यक पो। आनन्द श्वश श्वखैत छश्वि -"एश्व पुस्तक दारा कश्व साधारणो व्यश्वक्त के ओश्व उदात चश्वत सँ पश्वचय कराय

नैश्चाकता एवं शालीनताक पाठ दए रहल छथि। लोकक चाश्चश्चाक उतानिश्च सँ समाज एवं देशक उतान भए सकैछ। सम्पश्चा लोक आधुश्चाक चाकथ्यकमयक जाल मे िँसल अपन संस्कृश्चा एवं सभ्यता सँ हँटल जा रहल अश्छ। मानवीय मूल्यक अवमूल्यन भए गेल अश्छ। लोक अपन आदशवचश्चत सँ अनश्चाज भए रहल अश्छ। श्चना संस्कृश्चाक उतानिश्च आन पगश्चा अकश्चक भए जाएत।” वस्तुत: एश्च कारणसँ एहन आदशवकानिकक चयन कएल गेल अश्छ।

महाकाव्यक दोसर तत्व होइत अश्छ नायक। जे श्चक पातक माध्यम सँ कश्चके समाजकल्याणकारी महत् उदेशयक पश्चापादन करबए पति छैश्चह ते महाकाव्यक पातमे लोकनायकत्व क्षमता रहब अत्यन्त आवश्यक होइत अश्छ। संगश्च कानिकक पश्चापादनमे एश्च लोकनायकक उदेशयक पूश्चाक लेल अन्य सहयोगी पात सभक अश्चावायता सेहो छैक। ‘सीता-शील’मे पातक सुन्दर पयोगसँ एकर सलिता श्चद भेल अश्छ। भगवत् भश्चतक पश्चा अनुरश्चतसँ मनुष्यके जाश्च बहानन्द सहोदरक पाश्चत होइत अश्छ सएह जीवनक चरम उत्कषवबूझल जा सकैत अश्छ। परमात्माक असीम सत ओ हुनक लोककल्याणक भावनाक अजस धारमे सराबोर करबाक करण श्चतण मैश्चली सीताराम श्चषय महाकाव्यक श्चषय वस्तु बनल अश्छ। मयादा पुरषोतम राम ओ अयोश्चजा भगवती सीताक चश्चतक स्मरण मातसँ एश्च भावक बोध होइछ जे संसारमे जे श्चकछु अश्छ से अही महत् चश्चत परमेशर ओ परमेशरीसँ ओत पोत अश्छ आ अही परमात्मा सीता-रामक लीला-गानके पस्तुत रचनामे सान देल गेल अश्छ।

भौश्चाकताक सीमासँ ऊपर उश्च कए ‘सीता-शील’क रचनाकार ओश्च परम सताक संग अपन चेतनाके एकाकार करैत अपन ‘स्व’ केर उत्सगवकए देने छथि। परमात्माक चाश्चश्चाक उत्करषक पकाश एश्च

रचनामे सवत्र पश्चव्याप्त अछि जे ‘यावच्चंर श्चवाकरौ’ हमरा सभक आचार श्चचारके अनुशाश्चत करैत रहत। मानवीय मूल्य संरक्णक जेहन व्यवसि ा, ओश्च व्यवसि ाक पश्चा व्यश्चक्तक उतरदाश्चत्व श्चवहन जेहन श्चदशा-श्चदेश जाश्च र पे एश्च रचना सँ पाप्त होइत अछि तकर समाजकल्याणक मागव पशस्त करएमे अत्यन्त पैघ भूश्चका छैक ते एकर रचनाकार एहन पातक चयन कएलश्चह श्चनक आदशक आलोकसँ समाजक मानश्चकताके पकाश्चत करबाक सदपयासमे ओ कहैत छश्चि :-

“आदशवपूर षक पेश्चका के चश्चत शुभ लीखैत छी
उपदेश नारी लेल ‘सीता-शील’ मध्य पबैत छी”

XXXXXXXXXX

आ पुन: -

“ई चश्चत पश्च़ आदशवजीवन के बनौती नाश्च जे
बनतीह जग मे परम पूज्या पश्चाक परम श्चयाश्च से”

महाकाव्यक लेल सगबद ता अश्चवायता के स्वीकारल गेल अछि श्चकन्तु एकर कि ानकके श्चषयवस्तुक अनुर प शीषक दए श्चषयके श्चश्लेश्चत कएल गेल अछि। सगक अश्चवायत्वाक सि ानिपर एहन पयोग महाकश्चक भावुक मानश्चकताक पश्चचायक तँ अछिए संगश्च एश्च श्चदशा मे सश्चि य रचनाकारक लेल ई पोि ी एकटा नव दृश्चि कोण सेहो पदान करैत अछि।

महाकाव्यमे श्चश्चध छन्दक पयोग हएब सेहो आवश्यक अछि। अश्चाला

विषयक विश्लेषण लेल पछाति सगक अन्तमे छन्द परिवर्तन कए देल जाइत अछि किन्तु एहि वृहत् रचनाक विषयवस्तुके एकहि छन्दमे आयोजित कए कवि पवर चमत्कार उत्पन्न कए देने छथि। महाकाव्यमे अनेक छन्दक पयोगसँ ओकर अनेक तरहक रसास्वादनक सम्भावना नहि आएल अछि किएक तँ रसास्वादनक पवाहक गतिशीलता कखनहु अवरोध उत्पन्न नहि करैछ। एहन छन्द पयोगक मादे कवि स्वयं कहैत छथि :-

"माता अठाइस पाबि पबि लघु-गुर चरण के अन्त मे

सुन्दर शवण- सुखकर मधुर हरिगीतिका के छन्द मे"

आ यिक बात तँ ई जे मात एकहि छन्दमे पयुक्त कनिक भेलोपर एहिमे कतहु रसहीनताक अवसर नहि भेटैछ। काव्यकलाक अन्तरंग ओ बहिरंग नवीनता, भावनाक माधुयवओ रसनिदग्धताक कारण कविके अपन अन्तर्स लि सांस्कृतिक चेतनाके सावजनिक करबाक सुअवसर पप्त भेल छन्हि।

रसके काव्यक आत्मा मानल गेल अछि। संस्कृतक पाय: सभ विदान रसक महताके स्वीकार केने छथि। पंडित राज जगनाथ रसेके काव्यक आत्मा स्वीकार करैत चाथि: -"रमणीयार्थ पतिपादक: शबद: काव्यम" रसेमे ई शक्ति छैक जे काव्यक रसास्वादनक सत्य अभिव्यक्ति अवसर पदान करबैत अछि। सहृदयक हदयमे आलाद एवं मनके तन्मय बना देबाक रसक क्षमतासँ वाणी गद्गद ओ शरीर रोमाञ्चित कए जायत अछि। साहित्यमे एकर सुन्दर पयोगसँ बह ानंदक सहोदरक र पमे परमात्माक साक्षात्कार होएबाक अनुभूति होइत अछि। आध्यात्मिकताक भावभूमिपर रचल-बसल एकर विषयवस्तुक आवहनक लेल 'सीता-शील'मे शान्त रसक पयोग तँ भेले अछि, एहिमे शृंगार रसक एहन पभावशाली ओ उत्पेरक वर्णन भेल अछि जे काव्यमे

साधारणीकरणक उपयोगिताके साबित करैत अछि। महाकाव्यमे रसक उपस्थितिक केहन सशक्त प्रभाव पड़ैत अछि, पाठकक भावुकताके उद्दुद्ध करएमे एकर की भूमिका छैक, एकर समालोचना एकरा कोन रूपे स्वीकार करैत छथि तकरा एहि महाकाव्यक पढ़ला कहल गेल बिहार विश्वविद्यालयक भूतपूर्व राजनीति विभागक अध्यक्ष प्रो.देवनारायण मल्लिकक शब्द मे देखल जा सकैत अछि- "रचनाकारक पारम्भिक विनययुक्त पद पर दृष्टि पड़ितहिं पढ़बाक उत्सुकता भेल। एके बैसक मे 'सीता-शील' के आद्योपान्त पढ़ि गेलहुँ। एहि पाठयातर मे कतेको बेर आँखि सँ नोर बहल अछि, कतेको बेर रोमाञ्चित भए उठलहुँ अछि, कतेको बेर देवत्वक परिवेश मे आत्मा के विचरण करैत पौलहुँ।"

काव्यमे जँ रसास्वादन करएबाक क्षमता नहि हो तँ ओकरा काव्यक कोटि मे राखले नहि जा सकैत अछि। काव्य सृजनक आधार होइत अछि रस। प्रबन्ध काव्यमे एकटा प्रधान रस होइत अछि जकरा अंगी रस कहल जाइत अछि आ अन्य रस सभ ओहि अंगी रसक सफलतामे सहयोगीक काज करैत अछि।

काव्यमे रसक अनिवार्यता पाय: सभ विद्वान मानने छथि। हँ,ई बात फराक अछि जे केओ एकरे काव्यक आत्मा मानैत छथि तँ केओ अलंकार के। केओ काव्यमे ध्वनिक समर्थक छथि तँ केओ छंदपर जोर दैत छथि किन्तु समग्र रूपसँ विद्वान सभक कथनक निचोड़ ई अछि जे रसोत्कर्षक सहायकक रूपमे अलंकार के राखल जा सकैत अछि किन्तु एकरा काव्यमे सार्वभौम सताक कारण नहि कहल जा सकैत अछि। अलंकार काव्यक सौदर्यवृद्धिमे सहायक तँ होइत अछि किन्तु एकरा काव्यक आत्मा मानब अनुपयुक्त होएत। वस्तुत: रसेके काव्यक आत्मा मानब उचित अछि से रस 'सीता-शील'क पाणवन्तताक

पमाण पस्तुत करैत अछि। जे एक पस्तुत महाकाव्य भगवती सीताक सुशीला स्वभावक दस्तावेज अछि, भारतीय संस्कृतिक पक्ष कथ्यक उच्चादशक आरपण अछि आ पोिक पारम्भसँ लए कए अन्त धरि सीताक पक्ष करणाक अजस धार बहएबाक अवसर पदान करैत अछि ते एकरा करण रस पधान महाकाव्य कहि सकैत छी अित् करण रस एहि महाकाव्यमे अंगी रसक रपमे उपस्थित अछि आ अंगक रपमे अन्य रस सभ सहयोगीक काज करैत एकर रसास्वादनक केत्र विस्तार करैत अछि जेना - सीतारामक अपश्यित पेम पसंगमे संयोग ओ वियोग शृंगार, सूपनखाक विरवित रपमे हास्य रस, जानकीक जन्मक िममे वात्सल्य, परशुराम-लक्ष्मण संवादमे रौर, राम-रावण युद, बालि-वध, खरदूषण वध, मारीचवध आदिमे वीर रस, सीताक जनकपुरसँ विदाइ ओ वनगमनक काल सासु सभक उपदेश ओ सीतासँ विछोहमे करण रस आदिक उपादेयताके देखल जा सकैत अछि।

काव्यमे अलंकारक उपस्थितिसँ एकर सौदयवृद्धि ठीक ओहिना होइत अछि जेना कोनो नारीक सौन्दयवअलंकारक पयोगे द्विगुणित भए जाइत अछि। अलंकारसँ काव्यमे जे पभावोत्पादकता उत्पन होइत अछि से ओकर इएह शक्तिमता अछि जाहिसँ काव्य सुकोमल ओ मधुर रप गहण कए पाठकके भाव-विभोर करैत अछि। एकरामे हृदयगहता ओ सुषमासृष्टि करबाक क्षमतासँ एकर पभावाभिव्यक्तिक पवाह तीव्तर भए पबैत अछि। अलंकार पयोगक दृष्टिएँ 'सीता-शील' अदुत उदाहरण अछि। एहिमे उपमा, रपक, अनुपास, अपस्तुत पशंसा आदिक आधिक्य रहितहुँ यमक उत्पेक्षा, विभावना आदि अधिकाधिक अलंकारक पयोगे कथ्यक कथ्यक माधुकता पाठकके साधारण स्तरसँ ऊपर उठाकए तन्मय कए दैत अछि।

अपन सुकोमल भावनाक अभिव्यक्तिमे कवि प्रकृतिके कखनहुँ बिसरल नहि छथि। काव्यमे प्रकृति चित्रणक कारण होइत अछि कविक सौन्दर्यबोध ओ प्रकृतिसँ हुनक साहचर्य से हुनक सौन्दर्योपासनाक प्रत्यक्ष साक्षी तँ प्रस्तुत रचना अछिए तखन ओहि सौन्दर्यके आत्मसात कएनिहार महाकविक वैभवपूर्ण सौदर्यक वर्णन कोना ने करितथि।

हुनक उत्कर्ष प्रकृति प्रेमके पोथीमे अनेको ठाम देखल जा सकैत अछि जेना मिथिलाक शोभा वर्णनक क्रममे कवि प्रवर कहैत छथि -

"हिमधवल पर्वत-पुत्र तल मे बसल मिथिला प्रान्त ई

"सम्पूर्णविधशक देश एवं प्रान्त सँ शुभ शान्त ई"

सीता हरणक पश्चात रामक विलापमे कविक प्रकृतिसँ साहचार्यक एहन अभिव्यक्ति भेल अछि से देखिते बनैत अछि। कखनो ओ अशोकके सम्बोधित करैत भगवती सीताक पता जात होएबाक जिज्ञासा करैत छथि तँ कखनो जामुनसँ पूछैत छथि। कखनहुँ शालसँ पूछैत छथि तँ कखनहुँ आम आ कटहरसँ। कखनो पीपरसँ पूछैत छथि तँ कखनो जूही, कनाओल, गेना, गुलाब, चम्पा, चन्दन, वर, कदम्ब, अनार, गूलरिसँ। कखनो कोमल हरिण, गजराज सिंह, बानर, भालू, सूया, वायु, चंर, धरती, वरुण, आकाश आदि जड़ हो अथवा चेतन, प्रकृतिक कण-कणसँ पूछैत छथि। कविके प्रकृतिसँ आत्मीय सम्बन्ध छन्हि जे प्रकृतिक लेल रामक सम्बोधनमे देखल जा सकय अछि। प्रकृतिक मानवीकरणसँ कथ्यक प्रशसनीयता द्विगुणित भए जाइत अछि जकरा आलम्बनक रूपमे ग्रहण कए महाकवि 'स्नेहजन' जी एहि महाकवि 'स्नेहजन' जी एहि महाकाव्य के चिरनूतन सौन्दर्य प्रदान करलन्हि अछि।

चित्ताकर्षक ओ प्राजल भाषा मन-प्राणके पुलकित कए दैत अछि से

’सीता-शील’क रचनाकार भाषाके बोधगम्य, श्रुतोपम एवं सस्वर बनएबाक भावुक पयास कएने छथि जाहि कारणे एकरा पक्ष उदाम श्रुताकर्षण होइत अछि। कोनो साहित्यिक अपन रचनाके श्रुताकर्षक बनएबाक लेल भाषा-पयोगक पक्ष साकाक रहैत छथि आ कनिके भव्यतर बनएबाक लेल नै मात अपनहि मातृभाषाक पयोग करैत छथि अपितु तत्सम, तदव, देशज ओ विदेशज भाषाक चार रूपक सानुपातिक पयोगसँ रचनाक उत्कृष्ट बनएबाक सत्पयास करैत छथि। महाकवि ’स्वजन’ जीक एहि रचनामे तत्सम, तदए आ देशज शब्द तँ एकर आधार स्तम्भ अछिए विदेशज शब्दल पयोगइ सेहो रचनाकार अत्यन्त कुशल आ पबुद छथि जाहि कारणे ठाम-ठाम ओकर सुन्दर पयोगसँ वाक्य संगठनमे कतहु मोनके अकछा देबाक अवसर नहि देने छथि। जेना औषधिक स्थान पर दवा, उनहि देबाक स्थान पर उलहि देब, घुरबाक स्थान पर वापस, लोकक स्थान पर लोग, पिताक स्थान पर बाप, नमहरक स्थान पर लम्बा, कायरताक स्थान पर कायरपना आदि अनेको शब्दके देखल जा सकैत अछि।

वस्तुत: कवि ’स्वजन’ जी जाहि कुशलतासँ एहि रचनामे सीता-शीलक महताक स्वरूपणमे अपन संवेदना ओ विस्तारके भाषाक कसौटीपर कसि कए भावनाके अभिव्यक्ति देने छथि से वाचित रूपे एहन महाकाव्यक लेल उपयुक्त, सुष्ठु भाषाक अनुरूप अछि जाहिसँ एहन भाषाक भावुकता महाकाव्यमे पयुक्त रस ओ अलंकार जका धारदार, तीक्ष्ण ओ पभावोत्पादक भए सकल अछि। कवि अपन अतुल शब्द भण्डार सँ सुन्दर, सुकोमल ओ भावाभिव्यंजक शब्दक चयन कएने छथि जाहिमे अपन हृदयक रसरंग रंग टीपि देने छथि।

कोनहु रचनाकारक ई दायित्व होइत छन्हि जे ओ अपन एहन रचनामे स्थानीय विशेषताके स्थान अवश्य देथि से ’सीता-शील’ मे मिथिलाक

सौन्दयवओ संस्कृश्चाक वणबाक िममे महाकश्च अपन उदात पातक मुँहसँ की कहबैत छथ्यि से देखू -

"श्वारहुतक तुलना मे कोनो नश्च देश-पान्त पबैत छी

भ्यथ्यिला सदृश सौन्दयवहम संसार मे न सुनैत छी"

तश्चना वनक मनोरमताके सीता-रामक वनवासक िममे ओ रावणक ऐियके लंकाक वैभव सम्पन केतमे देखल जा सकैत अछ्छि।

पबन्ध काव्यक लेल कििपकिन सेहो अत्यन्त आवशयक तत्व अछ्छि थ्यकएक तँ एकर एक पात दोसर पातसँ जाश्च बातक अपेका रखैत छथ्यि से वातालापश्चसँ सम्भव भए सकैत अछ्छि। रचनाकार कििपकिनक पयोगमे केहन श्चापुण छथ्यि तकर संगठन ’सीता-शील’मे सवत्र देखएमे अबैत अछ्छि खास कए परशुराम-लक्ष्मण संवाद, लंकामे रावण ओ सीताक मध्यक वातालाप, अनुसूया-सीताक मध्य वैचाश्वक आदान-पदान आश्च पसंग मे देखल जा सकैत अछ्छि।

महाकाव्यक महत् उदेश्य होइत अछ्छि आ रचनाकार दारा ओकरा अपन रचनाक श्वना आलम्बन बनौने कोनहु रचनाक साकिता श्चाद नश्च कएल जा सकैत अछ्छि से अहू रचनाक पाछा महत् उदेश्य छैक आ ओ छैक संसारसँ आसुरी शश्चक्तक नाश, मानवताक उच्चस भावनाके सम्माश्चात करब आ भगवती सीताक शील के समक राश्च नारीक थ्यशुदाचरणक माध्यमसँ जन-कल्याणक भावनाके पल्लश्चत करब। अपन एश्च महत् कायबसम्पादनमे महाकश्च अनेक ठाम सटीक सूश्चक्त वचनक पयोग कए समाजसुधारक कायवसम्पादन करैत छथ्यि जकरा देखबाक होयए तँ ’सीता-शील’क अनेक पसंग एकर गवाही देत। नारीक आदशके जीवनक अकव्यश्चाश्च माश्चा ओकरा सम्माश्चात करब एश्च रचनाक मुख्य उदेश्य अछ्छि जकरा एकर चश्वत-पधान शीषकमे देखल जा सकैत अछ्छि। कहाकश्च ’स्वजन’ जी स्वयं कहैत छथ्यि -

"सीखि जगत मे नारिगण शोका त्यागक चरित सँ
स्वामी पसनक लेल सब किछु करथि हृदय पवित सँ"
आ पुन:-
"ई चरित पथि आदर्श जीवन के बनौती नारि जे
बनतीह जग मे परमपूज्या पाबि परम प्रयास से"
नारीक कर्तव्य ओ आदर्शक पक्ष समाजके साकाक करबाक एहि उदेश्य प्रतिपादनमे महाकवि खडगबल्लभ दास जी अत्यन्त संवेदनशील छथि। भगवती सीताक भाव संकल्पयुक्त कर्तव्यपरायणता ओ पातिव्रत्य हुनका अत्यधिक भावुक बनौने छन्हि लित: कवि कहि उठैत छथि -
"ई जौ पढ़थि सभ व्यक्ति 'सीता-शील' अति पवित सँ
पबि नारि-नर आचार सीखथि जानकीक चरित सँ"
नारी चरितक सहिषणुता, सच्चरित्रता, त्याग, क्षमाशीलता, ममता आदि गुण स्वस्थ समाज-निर्माणक दृष्टिमे आवश्यक तत्व अछि जे लोककल्याणकारी विचारधाराके सबल बनबैत अछि आ इएह अछि महाकवि खडगबल्लभ दास 'स्वजन'क लोककल्याणकारी नारी जीवनक आदर्श आ ओहि आदर्शक अक्षरस: पालन करबाक पाठक सँ अपेक्षाक उदेश्य प्रतिपादन।

उमेश मण्डल

’सगर राति दीप जरय’ क ९३म आ ९४ म आयोजन

१

25 मार्चक राति, रतनसारा गाममे जे ‘सगर राति दीप जरय’ क 93म कथा-साहित्य गोष्ठी सम्पन्न भेल, तइमे बीहैन आ लघु कथा मिला दू दर्जनसँ बेसी कथाक पाठ भेल। सात पालीमे कथा सभके मंचपर पढ़ल गेल आ तैपर समीक्षक लोकैन समीक्षा करैत भोर राति‍क समए केना बितौलैन से ककरो नहि पता चलल। भोर नहि, अनसर धरि गोष्ठी दनदनाइत रहल। समीक्षक, आलोचक आ कथाकारक संग श्रोता सेहो सगर राति जागि गोष्ठीक आनन्द लैत रहला। ओना तँ गोष्ठीक आरम्भ साझे, करीब छबे बजे भेल मुदा कथा पाठक क्रम राति‍क आठ बजेसँ, जेकरा दोसर साझ सेहो कहि सकै छी-भेल। दीप प्रज्वलनक पछाति स्वागत, स्वागत भाषण, पोथी लोकार्पण, लोकार्पित पोथी सभपर टीका-टिप्पणी इत्यादिमे करीब दू घन्टा लागि गेल जाइए। तहूमे चारिटा पोथीक लोकार्पण छल। जइमे पहिल छल श्री राजदेव मण्डल रचित उपन्यास- ‘जल भँवर’ , दोसर- श्रीमती मुनी कामतजीक काव्य संग्रह- ‘सुखल मन तरसल आँखि’ आ तेसर तथा चारिम छल लघु कथा-संग्रह- ‘बीरांगना’ आ ‘स्मृति शेष’ जेकर रचनायिता छैथि- श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी। श्री मण्डलजी एवं डॉ योगेन्द्र पाठक वियोगी, प्रो. शिव कुमार प्रसाद तथा श्री नारायण यादवजीक अध्यक्षता एवं श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री उमेश पासवान तथा उमेश मण्डलक (अर्थात् अपने) संचालनमे सगर राति‍क ऐ साहित्यिक कार्यक्रमके मंचपर सफल बनौल गेल, जइमे कथा सभ जे आएल छल

तेकर शीषक अछि- 1. टुटैत मनक जुडि़उ, 2. घुरि गाम चलु, 3. देशक इतिहास, 4. टुटल मन, 5. छोटकू दोस, 6. अछूत, 7. दादा, 8. स्टाटस, 9. हमर पतीक मनोरि, 10. कमवमुसलिम, 11. लौल, 12. गामक कटान, 13. बोझ, 14. गोमुखी, 15. हिन्दु-मुसलिम भाई-भाई, 16. सठर काका, 17. रोहानी, 18. मानव संग माछ, 19. शराब संगे शराबी, 20. दूध बेचनी चमेली, 21. तोबा बनल अंगेज, 22. लकबाबला, 23. घरक बास, 24. अन्धविशास, 25. आतमिया चोट।

अखन तत्काल अपनौ लोकैन आम कनिक आनन्द lel jau

आतमिया चोट

चाहक दोकान लग किछु लोक ठाढ़ छल आ किछु बैसल छल। गप्पक छरका छुटि रहल छेलइ। विषय छेलै- आइ-कालिक लोक सभटा काज स्वार्थ कारण करै छइ।

मुदा हम ऐ बातपर अडि़ल देलौ जे किछु काज लोक ओहनो करैत अछि जइमे कोनो स्वार्थ नइ रहै छइ। जइ काजके 'उपकार' कहल जाइ छइ।

एम.एल.ए.क चुनाउ होइबला छेलइ। चुनाउक समैमे तँ पुलिसके जेना पाछि लगले रहै छइ। तखैने ओइठाम एकटा पुलिसिया गाडि़ रुकल। रुकल नइ बल्कि रोकए पडि़लै। कारण छेलै, एकटा साइकिल सडि़केपर ठाढ़ छेलै आ साइकिलबला केतौ चलि गेल छल।

एकटा सिपाही गाडि़सँ उतैरते बाजल-

"केकर साइकिल छियौ रौ? साहैबक गाडि़ रुकल छइ। हटेबे जल्दी आबि क देखबीही।"

मुदा कियो साइकिल हटेबाक लेल नइ आएल। सिपाही पूरा तमसा गेल छल। ओकर रौर रुप देख हम जेना भीतरसँ डेरा गेल रहौ।

हम तेजीसँ गेलौ आ साइकलके हटबए लगलौ। कमजोर रहने कनी अिरसँ हटबै छेलौ। डरेबर बारम्बार हॉनव बजा रहल छेलइ। पाही डण्टासँ हमरा पजरामे गोजी मारैत बाजल-

"तोहर खयानी रोड छयौ। टेर मारैत केना चलैए! देखै नइ छै जे साहैबके लेट होइ छइ!"

हबिाइत आगू बढ़लौ क रोडक कातमे साइकल नेने ख पिलौ। चाहक दोकापर लोक या कऽ हँस देलक। पुयाा गािी हॉनव दैत च गेल।

एक गोरे टकारी मारैत बाजल-

"की यौ उपकारीजी, की भेल?"

डण्टासँ तँ कमे चोट लगल छल मुदा 'की यौ उपकारीजी, की भेल' सुआ तया चोट जेना कुहरा देलक। लोक स तकलौ तँ लगल जेना नँगटे ठाढ़ छी। लाजे मुिी गोतने दा भऽ गेलौ।

कािकार- शी राजदेव मण्डल।

टुटैत मनक जुिाउ

मन टुटने जना अपना संग दुाया टुटए लगै छै तना हमरो भेल। हलाकी मनो सबहक एके कारणे नइ टुटै छै, सबहक अपन-अपन-अपन-िराक-िराक कारण रहै छै। हँ, कछु कारण एहेन जरर अ जे एक-दोसरसँ लैए। तँए कारणक महत् केकरोसँ केकरो कम अ सेहो नये कहल जा सकैए। जँ से रहैत तँ अपने चयो जाइत आ दुायासँ सम्बन्ध रखैत वा दुायेसँ च जाइत आ अपनासँ रखैत, सेहो तँ नये अ तँए सबहक महत्वक महत अए। तना ने जुिाउ सेहो छी। ओना, टुटब आ जुिव दुनू परीत पाशापर अ, कन्तु पाशापर दुनू नइ अ सेहो नये कहल जा सकैए। भले एक पेम-स्पर प आ दोसर योगे-स्पर प कए

ने हुअए।
ओना, टुटैत मनक थ्रिया एकरंगाहो होइए आ एकरंगाह नश्चयो होइए। भले गाछ-गाछमे अन्तर रहने िलो आ िलक सुआदोमे अन्तर थ्कए ने होइत हौउ मुदा िलाि ल तँ पाय: एकरंगाहे होइए। अिात् थ्मनगीक अन्त वा एक दुश्मायासँ दोसर दुश्माया जाएब तँ एकरंगाहे होइए। तँए ने थ्कयो अपन जान दइले कनैलक बीआ िथ्रि खाइए तँ थ्कयो सम्पनता रश्चतो बालो-बच्चा आ थ्रवाश्चत संश्मायो छोथ्रि आन घर चश्च जाइए। तश्चना थ्कयो रेलगाििमे कटैले पश्चया-तरमे गरदैन दइए तँ थ्कयो गरदैनमे िँसरी लगा घरक धरैनमे लटैक जाइए, चाहे पंखामे झूश्च जाइए। मुदा तँए थ्क सभ एकेरंग अश्छ, सेहो नश्चये कहल जा सकैए। थ्कछु एहनो तँ ऐछे जेकर अपन जुिाउ अपना संग आनोसँ रहने दुश्मायोक संग ऐछे जइसँ अपन कोन बात जे आनो-ले अपन जान गमैबते अश्छ।
अस्तु अपनो आ अपन पश्चवारो आ दुश्मायोक संग मन टुटैक कारण अपन अपने अश्छ। खाएर जे अश्छ सएह अहा सभके सुनबै छी।
थ्रदािी-जीवनमे जखन रही तखन बुश्चश्चाऐ जे अपना-ले िि पढ़ै छी माइये-बाप-ले पढ़ै छी, तेकर गवाश्चयो भेश्चये जाइत रहए। गवाही ई भेट जाइत रहए जे जँ अपना-ले पश्चढ़तौ तँ अपने मन ने तैयार होइतइ, माता-थ्रताके थ्कए कहए पि छैन, हुनका सभके कोन खगता छैन। जँ अपन-अपने होइए तखन हुनको सभके ने अपने काज दइतैन तइले हमरा पाछू थ्कए पि छैि..?
बचकानी मन दुआरे आश्क पढ़ैसँ देह चोरबै दुआरे, से नश्च बुश्च पश्चाऐ, तँए स्कूल-कौलेजक तँ खानापुरी करैत रहलौ मुदा पुरी-खाना नइ बुश्च पबी। तँए भुसकौलोसँ भुसकौल होइत गेलौ। ई तँ बुझू कहुना कऽ जान बँचल जे िडवश्चवीजनसँ बी.ए. पास कऽ गेलौ।

नोकरी करै-जोगर तँ बझाये गेलौ, तँए जेतबे-तेतबे ध्न-ले मनमे संतोखो भाइए गेल आ मातो-पिता अपन बेटाक कजबाँ मुक्त भेला, तँए हुनको सबहक मनमे खुशी एबे केलैन जइसँ पितृ-प्रेमनेहमे बढ़ोतरीए भेल जे कमल नहि। अपन दोसर ऋृण माता-पिता ईहो चुका लेलैन जे समैपर बिआहो काइए देलैन। ओइ समयमे माता-पितापर आश्वात जिनगी रहए, तँए बिआहक बेसी विचार अपनो नकए कलितौ, खुशी-खुशी बिआहो काइए लेलौ। बिआह होइते सासुर सन अडडा भेटिये गेल। आबाजाहीमे आनसँ कनी बेसीए पेम रहल।

बी.ए. पास रहबे करी तँए मनमे आशा भरले रहए जे एतेटा देशमे जखन छी आ एते लोकके जखन नोकरी भेबे केलै तँ हमरा नकए ने हएत। मुदा समय बिकलल जाइत रहइ। बिआहक पछाइत पत्नियो कहलैन, आ संगियो-साथी हुलिक, तखन अखबारमे पत्र-पत्रिका भँजिया-भँजिया नोकरीक दरखास दिअ लगलौ।

केतौ लिखित परीक्षामे पासो करी तँ मौखिकमे छँटा जाइ, नकए तँ किताबमे पढ़ल रहैत तखन ने बिसवासक संग भरल-पूरल जवाब देतौ से तँ मने रिरिरा जाए। जइसँ बोलीए बन भऽ जाए, िल कऽ जाइ। अन्तो-अन्त नोकरी नहिये भेल।

जिनगीक आशा टुटए लगल। टुटैत-टुटैत एते टुटि गेल जे जिनगीए-सँ घृणा भऽ गेल। घृणात मन अपनासँ लऽ कऽ दुनियाँ धरिसँ टुटि गेल। जखन सभसँ टुटिये गेल तखन मरबे नीक छल तँए सोचैत-विचारैत गरदैनमे िँसरी लगा धरैनमे लटकए लगलौ। मुदा पती देख लेलैन। हलाकी घरक संग बिब्बिकयो बन कऽ देने रहुए, पता नहि, केना देख लेलैन- लगैए खिड़कीक दोग-देने देख लेलैन।

गरदैनमे िँसरी लगा जखन िासीपर चढ़ए लगलौ कि पती हल्ला केलैन। ओना, जौ कि दोस छोर दोसर दोसर खुटामे नइ बन्हने

छेलौ, तइ बच्चोमे हल्ला भेल! केबाि तोिथ गरदैनमे जौि बान्हल सभ देखलैन। अपन मने हेरा गेल जे की केलौ तँ िकछु ने!
हल्ला सुिन जीवन काका सेहो एला। अबैते बजला-
"ईह बुिध कही के! जेकरा हाि मे र खाने-बैसला नइ रहत ओ गाम कमा गुजर कऽ लेत।"
ओना जीवनो काका तमसाएले बुझेला, मुदा अपनो मनमे मरैक तामस चढ़ले रहए। िधुआएल मुहे की बिजतौ, तैयो कहलयैन-
"काका बि गलती भेल।"
जीवन काका बजला-
"बि गलती नइ भेलह, भेलह एतबे जे जखना तूँ समैयक महत् नइ देलहक, तखना समैयो तोरा छोिड़ देलकह।"

२

1990 इस्वीमे आरम्भ भेल मैिथली सािहत्यक पमुख कि-संगोषी 'सगर राित दीप जरय' क 94म आयोजन जालपा मध्य िवदालय पिरसर- लौि (मधेपुर)मे 24 जून 2017 संध्या 6 बजेमे शुर भ' िभनसर 6 बजेमे सम्पन भेल। डॉ. योगेन्द्र पाठक 'िवयोगी' (वैजािनकजी) केर संयोजकत्वमे आयोिजत ऐ सगर राितक कि संगोषीक उदाटन केलैन मैिथली सािहत्यक सविशेष रचनकार शी जगदीश पसाद मण्डल। शी अरिवन्द ठाकुर, डॉ योगानन्द झा, शी केदार नाि झा, डॉ. िशव कुमार पसाद एवम् डॉ. योगेन्द्र पाठक 'िवयोगी' क संग दीप पज्वलन कायकिमके आगा बढ़ौल गेल। शीमती कुसुमलता झा, शी ि ुलेन्द्र पाठक, राम सेवक ठाकुर एवम् शी राम िकशोर िसंह स्वागत गीत एवम् डॉ. योगेन्द्र पाठक 'िवयोगी' क स्वागत भाषणक संग पोि लोकापण सतमे पवेश भेल।

पाच गोट पोथीक लोकापर्ण भेल। जइमे पहिल पोथी छल डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' क दारा अनुदित- 'रोबो' । रोबो चेक भाषामे कारेल चापेक दारा लिखित 'RUR' नामक नाटक अछि, जेकर अंग्रेजी अनुवाद पॉल सेल्वर नामक लेखक केलैन। रोबोक लोकापर्ण शी अरविन्द ठाकुरजीक हाथेँ भेल। दोसर एवम् तेसर पोथी छल शी जगदीश पसाद मण्डलक मौलिक कृति लघुकथा संग्रह- 'बेटीक पैरख' तथा 'शिव्रयोग' । बेटीक पैरख' क लोकापर्ण केलैन- डॉ. शिव कुमार पसाद एवम् 'शिव्रयोग' क लोकापर्ण कता छला- शी दुर्गानन्द मण्डलजी। चारिम पोथी छल शी राम विलास साहुक रचित काव्य संग्रह- 'कोसीक कछेर' , जेकर लोकापर्ण केलैन- शी राजदेव मण्डल आ पाचम पोथी छल शी बेचन ठाकुर दारा रचित नाटक संचयन- 'नबघर' । 'नबघर' क लोकापर्ण केलैन डॉ. शिव कुमार पसाद।

लोकार्पित पाचू पोथीक सन्दर्भमे लोकापण कता अपन-अपन संक्षिप्त मनतव्य व्यक्त केलैन। 'रोबो' क सन्दर्भमे शी अरविन्द ठाकुर कहलैन- आइसँ करीब साए बखवपूववऐ पोथीके चेक भाषामे लिखल गेल छल, जेकरा मैथिली साहित्यमे डॉ. 'वियोगी' भावा अनुवाद केलैन। 'रोबॉट' क कपल्पना कारेल चापेक आइसँ साए बखवपूवव केने छला जे आइ अपना सबहक सोझा अछि। नाटकमे ईहो देखौल गेल अछि जे केना रोबॉट मानवक संहार करैए...।

'बेटीक पैरख' कथा संग्रहक सन्दर्भमे डॉ. शिव कुमार पसाद कहलैन- बेटीक पैरख संग्रहक सभटा कथा महिला सशक्तीकरणपर आधारित अछि। जँ पाठक आत्मसात् करैथि तँ स्वत: हुनकामे आत्मनिर्भरता केना जाग्रत जेतैन यएह ऐ पोथीमे संकलित सभ कथाक उत्स अछि।

'विश्वासघात' लघु कथा संगहक सन्दर्भमे श्री दुर्गानन्द मण्डल कहलैन- बेकती अपने-आपमे अपन गुण-दोष केना स्वीकृत करता तथा दोष मुक्त केना हेता, समयक संग चलबाक खगताके केना बुझता तथा समयक संग मानवीय चेतनाके जगबैत चलैले केना आ कोन बाटपर चलता इत्यादि ऐ संगहमे कथाकार अपन कथाक माध्यमे कहलैन अछि।

'कोसीक कछेर' काव्य संगहक सन्दर्भमे श्री राजदेव मण्डलजी कहलैन- कवि राम विलास साहुजी कोसी कातक वासी छैथि, कोसीक कछेरमे जीवन-यापन करै छैथि, अपन जीवनक अनुभवके श्री साहुजी अपन काव्य सभमे बिना कोनो छान-बान्हक एव धरी-धोखाक रखलैन अछि।

'नबघर' पोथीक सन्दर्भमे डॉ. शिव कुमार पसाद कहलैन- ऐ पोथीमे चारि गोट नाटक/एकाकी अछि। चार रचनामे वर्तमान समाजक दशा-दुर्दशाके नाटकरकार देखबैत अछि।

लोकापर्ण सतक पछाइत कथा सतमे पवेश भेल। अध्यक्ष मण्डलक गठन भेल। श्री नारायण यादव, डॉ. योगानन्द झा, श्री अरविन्द ठाकुर आ श्री जगदीश पसाद मण्डल चयनित भेला। एवम् मंच संचालन हेतु डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', श्री दुर्गानन्द मण्डल, उमेश मण्डल तथा श्री नन्द विलास राय।

कुल सात पालीमे पाय: तीन-तीन गोट कथा पाठ भेल एवम् पठित कथा सभपर आलोचक लोकैन आलोचना केलैन। विवरण निम्न अछि-

पहिल पालीमे-

1. हमर भीतरका सियाना : अरविन्द ठाकुर
2. आशीवाद : राम विलास साहु
3. कौआ के बौआ : पीतम निषाद

पि म पालीक पश्चत कि ापर आलोचना केलैन-

डॉ. शिव कुमार पसाद, नन्द विलास राय, डॉ. योगानन्द झा।

दोसर पाली-

4. विघटन : जगदीश पसाद मण्डल

5. विलजान आंटी : शम्भु सौरभ

6. कृतघ : आनन्द मोहन झा

आलोचना- कमलेश झा, नारायण यादव, दुगानन्द मण्डल।

तेसर पाली-

7. सरकार हम पापी छी : नन्द विलास राय

8. संवेदनाक शरण : आनन्द कुमार झा

9. घरवालीक झिरकी : लक्ष्मी दास

आलोचना- राजदेव मण्डल, अरविन्द ठाकुर, राम विलास साहु ति ा दुगानन्द मण्डल।

चाथम पाली-

10. जएह अपन सएह आन : अजय कुमार दास 'विन्दु'

11. गामे बीरान भऽ गेल : कपिलेशर राउत

12. पथि क : विदा ाचन्र झा

आलोचना- गोविन्दाचायव, कमलेश झा, उमेश मण्डल, योगान्द झा।

पाथम पाली-

13. उपराग जमीन : उमेश मण्डल

14. होनी-अनहोनी : नारायण यादव

15. स्वािन्ध : बेचन ठाकुर

आलोचना- योगेन्र पाठक 'वियोगी', राजदेव मण्डल, दुगानन्द मण्डल।

छठम पाली-

16. जुिशीतल : शारदा नन्द सिंह
17. श्रणया : योगेन्र पाठक 'वियोगी'
18. मानव आ माछ : राधाकान्त मण्डल

आलोचना- कमलेशर राउत, पीतम प्रसाद, नन्द विलास राय।

सातम पाली-

19. स्वाभिमान : उमेश पासवान
20. विशास : आनन्द मोहन झा
21. होइ छै गोहाय : शारदा नन्द सिंह
22. कमक िल : दुगानन्द मण्डल

आलोचना- कमलेश झा, आनन्द झा, संजीव कुमार 'शमा' डॉ. शिव कुमार पसाद।

ऐगला आयोजन अिात् सगर राति दीप जरय' क 95म खेपक आयोजन लेल माला उठौलैन शी नारायण यादवजी। नारायण यादवजी अवकाश पाप्त शिक्षक छैि, किाकार एवं आलोचक सेहो छैि। जयनगरमे रहै छैि, डुमरा घर छिऐन। शी यादवजी दीप-पंजी हस्तगत करैत कहलैन- 'ओना तँ हम रहै छी जयनगरमे मुदा जहिना सगर राति दीप जरयक याता कछु दिनसँ गाम दिस मुखर अछि तहिना हमहूँ गामेमे अिात् जलसैन डुमरामे पनचानबेअम आयोजन कराएब।'

हलाँकि भावी संयोजक आयोजनक तिथि सेहो निधारित क' लेलाह मुदा ओ अखन दूमजा अछि तँए संभावित तिथि- सितम्बर मासक पहिल शनि।

1990 इस्वीसँ आइ धरिक 'सगर राति दीप जरय'क आयोजनक विवरण- (क्रम संख्या, स्थानिक नाओं एवं तिथि संकलित- उमेश मण्डल)
1.
मुजफ्फरपुर
21.01.1990
2.
डेओढ़
29.04.1990
3.
दरभंगा
07.07.1990
4.
पटना
3.11.1990
5.
बेगुसराय
13.01.1991
6.
कटिहार
22.04.1991
7.
नवानी
21.07.1991
8.
सकरी

22.10.1991

9.

नेहरा

11.10.1992

10.

विराटनगर

14.04.1992

11.

वाराणसी

18.07.1992

12.

पटना

19.10.1992

13.

सुपौल 1

18.10.1993

14.

बोकारो

24.04.1993

15.

पैटघाट

10.07.1993

16.

जनकपुर

09.10.1994

17.

इसहपुर

06.02.1994

18.

सरहद

23.04.1994

19.

झंझारपुर

09.07.1994

20.

घोघरडीहा

22.10.1994

21.

बहेरा

21.01.1995

22.

सुपौल (दरभंगा)

08.04.1995

23.

काठमाडू

23.09.1995

24.

राजश्वराज

24.01.1996

25.

कोलकाता

रजत जयंती

28.12.1996

26.

मञ्जुषी

13.04.1997

ि.सं.

सि ान

श्राथि

27.

तरौनी

20.06.1997

28.

पटना

18.07.1997

29.

बेगूसराय

13.09.1997

30.

खजौली

04.04.1998

31.

सहरसा

18.07.1998

32

पटना

10.10.1998

33.

बलाइन; नागदह

08.01.1999

34.

भवानीपुर

10.04.1999

35.

मधुबनी

24.07.1999

36.

अन्दौली

20.10.1999

37.

जनकपुर

25.03.2000

38.

काठमाडू

25.06.2000

39.

धनबाद

21.10.2000

40.

खटठो

21.01.2001

41.

हटनी(घोघरडीहा)

19.05.2001

42.

बोकारो

25.08.2001

43.

पटना (श्रकरणजयंती)

01.12.2001

44.

राची

13.04.2002

45.

भागलपुर

24.08.2002

46.

श्वदापश्व भवन पटना

16.11.2002

ि.सं.

स्ािन

श्वथि

47.

कोलकाता

22.01.2003

48.

खुटौना

07.06.2003

49.

बेनीपुर

20.09.2003

50.

दरभंगा

21.02.2004

51.

जमशेदपुर

10.07.2004

52.

राची

02.10.2004

53.

देवघर

08.01.2005

54.

बेगूसराय

09.04.2005

55.

पूथ्राबाया

20.06.2005

56.

पटना

03.11.2005

57.

जनकपुर (नेपाल)

12.08.2006

58.

जयनगर

02.12.2006

59.

बेगूसराय

10.02.2007

60.

सहरसा

21.07.2007

61.

सुपौल-2

01.12.2007

62.

जमशेदपुर

03.05.2008

63.

राची

19.07.2008

64.

रहुआ संगाम

08.11.2008

65.

पटना कि ा

गंगा-3

21.02.2009

66.

मधुबनी

30.05.2009

67.

मानारायटोल नरहन- समस्तीपुर

05.09.2009

68.

सुपौल- 3

05.12.2009

69.

जनकपुर

03.04.2010

70.

कब्बलपुर (दरभंगा)

12.06.2010

71.

बेरमा (झंझारपुर)

स ान- मध्य ष्वद ालय पब्बसर- बेरमा।

(सावब्जब्बाक स लपर)

02.10.2010

72.

सुपौल

04.12.2010

73.

मधुबनी

कवि राजकमल

05.03.2011

74.

हजारीबाग

10.09.2011

75.

पटना

हीरक जयन्ती

10.12.2011

76.

चेन्नै

14.07.2012

77.

दरभंगा

शुकरण जयन्ती

01.12.2012

क्र.सं.

स्थान

अवधि

78.

घनश्यामपुर

09.03.2013

79.

औरहा

(लौकही)

(सावर्जनिक स्थलपर)

15.5.2013

80.

सिमरी

(स्थान- मातृक राम-बैजनाथ बजाज धर्मशाला, सुभाष चौक, सिमरी-सुपौल)

30.11.2013

81.

देवघर

(स्थान- बिजली कोठी, बम्पासटॉन, देवघर)

22.03.2014

82.

मेहथ

(झंझारपुर)

कवि बौध स्मारक मेहथ

31.05.2014

83.

सखुआ-भपटियाही

सार्वजनिक स्थान- उत्क्रमित मध्य विद्यालय परिसर।

30.08.2014

84.

बेरमा

मध्य विद्यालय

परिसर

(बेरमा,मधुबनी)

20.12.2014

85.

भागलपुर

'श्याम कुंज'

(दाउदबाटकापुरी

भागलपुर)

04.04.2015

86.

लकसेना

उनमुक्त आशमक

गाधी सभा कक

जिला- मधुबनी

20.06.2015

87.

श्यामा रेसिडेन्सी कॉम

विवाह हॉल

(एस.बी.आइ. केम्पस)

आमली (सुपौल)

19.09.2015

88.

मध्य विद्यालय- डखराम (बेनीपुर)

30.01.2016

89.

लौकही

स्थान: सूयवपसाद उच्च विद्यालय- लौकही

26.03.2016

90.

लक्ष्मीसाया

(मधुबनी)

18.06.2016

91.

गोधनपुर

(अधिला दीपसँ उतर) जिला- मधुबनी

24.9.2016

92.

नवानी

(मधुबनी)

31.12.2016

93.

रतनसारा

(घोघरडीहा)

जिला- मधुबनी

25.03.2017

94.

लौि ा

(मधेपुर)

जिला- मधुबनी

24.06.2017

अथ्रिलाक लोक संगीत/ लोक कला- भगैत गबैया

(धमबाज, ज्योश्राश महराज, अंदू माश्र, उदय साहु, हश्रया डोम, बेनी, शती अवला, कार बाबा इत्याश्व भगैत श्रामश्रश्रव्त 'रसुआर-भगैत पाटी ' 1980 ई.सँ गबै छथि।)

शी शम्भु पसाद मण्डल

सुपुत स्व. लखन मण्डल

भगैत गायन सह खजरी वादन

उमेर- 42 साल

1980 ई.सँ भगैत गबै छथि।

पता- गाम- बथियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- ृश्रामक्षी, श्रला- सुपौल।

शी गंगाराम मण्डल

सुपुत शी अशर्िी मण्डल-

झाश्र वादक

उमेर- 40

1980 ई.सँ झाश्र बजबै छथि।

पता- गाम- बथियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- ृश्रामक्षी, श्रला- सुपौल।

शी जनक मण्डल

सुपुत स्व. उश्रत मण्डल

उमेर- 60

रमझाश्र/ कठझाश्र/ करताल वादक

1975 ई.सँ रमझाश्र बजबै छथि।

पता- गाम- बथियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- ृश्रामक्षी, श्रला- सुपौल।

श्री रवीन्द्र मण्डल

सुपुत श्री खटर मण्डल

उमेर- 32

नाल वादक

पता- गाम- बथनियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

श्री परमेशर मण्डल

सुपुत स्व. बिहारी मण्डल

उमेर- 41

गुमबाजा/ गुमगुमिया

1980 ई.सँ गुमगुमिया बजबै छथि।

पता- गाम- बथनियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

श्री महेन्द्र पसाद मण्डल

सुपुत स्व. छेदी मण्डल

उमेर- 48

कठझालि वादक

बचपनसँ गेबो करै छथि आ रमझालि/कठझालि बजेबो करै छथि।

पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

बेचन ठाकुरक दूटा एकाकी

नीशा मुक्शा आ बरहम बाबा

नीशा मुक्शा

पात पश्चिचय : नीशा मुक्शा

1. शंकर : एकटा गरीब श्किसान
2. सुनैना : शंकरक पती
3. सुनर : शंकरक बिका बेटा
4. खखन : शंकरक छोटका बेटा
5. शान्शा : शंकरक बिकी बेटी
6. चानी : शंकरक छोटकी बेटी
7. खटर : शंकरक दोस
8. मीना : सतमा वगक छाता
9. राजीव : मीनाक इसकूलक छात
10. रौशन : मीनाक इसकूलक छात
11. केदार श्मंह : पश्िल पुश्मस
12. बदरी श्मंह : दोसर पुश्मस
13. रघुनाि : पश्िल चौकीदार
14. देवनाि : दोसर चौकीदार
15. मटरा : स्िानीय श्किराना दोकानदार
16. रामनाि : रेल याती
17. पभुदयाल : रेल याती

18. नन्द श्कशोर : रेल याती
19. श्रयंका : रेल याती
20. शश्लाकान्त : पधानाध्यापक
21. सोमदेव : सहायक श्लाक्क
22. अनूप : सहायक श्लाक्क
23. सोनी : सहायक श्लाश्क्का
24. चन्दन : मानव शृंखलाक श्वदाि
25. गुंजन : मानव शृंखलाक श्वदाि
26. रानी : मानव शृंखलाक श्वदाि
27. अमन : मानव शृंखलाक श्वदाि
28. महारानी : मानव शृंखलाक श्वदाि
29. कश्लदेव : मानव शृंखलाक श्वदाि
30. रामदेव : मानव शृंखलाक श्वदाि
31. हश्रदेव : मानव शृंखलाक श्वदाि
32. लश्लता : मानव शृंखलाक श्वदाि
33. कश्वता : मानव शृंखलाक श्वदाि
34. महेशर : मानव शृंखलाक हाश्कम
35. श्वनेश : िटोगाि र
36. बच्चन : एकटा समाश्मक बेकती
37. राम शरण : बच्चनक सहयोगी
38. रामलाल : एकटा समाश्मक बेकती
39. रामबाबू : चाह दोकानदार
40. ललन : रामबाबूक सहयोगी

दृश्य एक

(स्िान- शंकरक घर। शंकरक पती सुनैना। दूटा बेटा। सुनर आ खखन ति दूटा बेटी शान्िा आर चानी मंचपर उपस्थित अछि। सुनैना पथवावक दयनीय स्थिाक सम्बन्धमे थिन्तामग्न अछि। शान्िा आर चानी तीती-तीती खेलैए। सुनर आर खखन गुल्ली-डन्टा खेलैए।)

शान्िा- ती ि।

चानी- ती ि।

शान्िा- ती ि। ई हमर राज भेलौ। हमरा राजमे पएर नै दीहे।

चानी- ती ि। ई हमर राज भेलौ। तूँ हूँ हमरा राजमे पएर नै दऽ सकै छे।

शान्िा- (चानीक राजमे जा कऽ) हम एबौ तोरा राजमे। तूँ की करबान?

चानी- तूँ हमरा राजमे सँ चिा जो। नै तँ कोनो बाप काज नै देतौ।

शान्िा- नै जेबौ गइ, नै जेबौ।

चानी- एक दू तीन कहै छियौ मारबौ। नै तँ हमरा राजमे सँ अपना राजमे चिा जो।

शान्ति- माथि कऽ देखही तँ। बापसँ भेट करा दइ छियौ।

(दुनूमे माथि फिँका गेल। दुनू उटम-पटका करैए। सुनैना दौग कऽ आबि दुनूके छोड़ि दू थापर केलक।)

सुनैना- सरधुआके खाली जनमाबै ले होइ छइ। पशुपाल करैमे करौआ लागल छइ। दार -ताड़ी-गाजा पीऐ ले होइ छइ। मुड़ी मचर आके एकौटा नीशा नै छूटल छइ। भाग खाइए। खैनी खाइए, बीड़ी-सिकरेट पीते अछि। जदाबला पान खाइते अछि। चाह पीबते अछि। हे मैया सरसती, एहेन घरबला सात घर दुश्मनोके नै देबइ।

(सुनैना फेर माथि-हाथ दऽ बैस रहली।)

सुनर- (गुल्ली फेंक कऽ) ओतैसँ पढ़ैत आ।

खखन- (एक टागपर) चैत-कबडडी, चैत कबडडी, चैत कबडडी चैत कबडडीऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।

(खखनके रस्तेमे सास टुटि गेल।)

सुनर- सार नै भेलौ, फेर पढ़।

खखन- (फेर जगहपर जा कऽ) चैत कबडडी आबए दे, तबला बजाबऽ दे। गीत-नाद गाबए दे, नटुआ नचाबऽ दे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। (खखन ठाढ़ भऽ हकैम रहलए।)

सुनर- फेरो नै भेलौ सार। फेरो जो। पढ़ गऽ।

खखन- (तुरैछ कऽ) हम नै जेबौ सार। हम हकैम गेलौ हेन। (सुनर खखनके एक सटका बैसा देलक। खखन चिचिआ कऽ कानऽ लागल आर हाथि पएर पटकऽ लागल।)

माए गै माए, बाप रौ बाप, सार सभ माथि देलक, जे सार हमरा मारलकै ओकरा माएके।

(सुनैना उठि कऽ दौगली। दुनूके एक एक चाट माथि अपना लग लऽ जा कऽ बैसेली। दुनू एक-दोसरपर कन्हुआइए।)

सुनैना- तूँ सभ इसकूल थ्कए ने गेलहीन? घरपर गुल्ली-डन्टा खेलै छे आर माथ्व-गाथ्व करै छे।

सुनर- कॉपी छे नथ्इये तँ इसकूल केना जेबै?

खखन- हमरो पेन नइए तँ मुिी लऽ कऽ जेबै इसकूल?

सुनैना- बापसँ पाइ मागए जाइ गेलहीन?

सुनर- मंगथ्नाऐ तँ कहलक- पाइ नै छौ। बुढ़बाके दार -गाजा पीऐ ले होइ छै पाइ आर कॉपी ले नै होइ छइ।

खखन- हरदम बुढ़बा थ्खथ्नयाएले रहै छइ। हम मंगथ्नाऐ तँ कहक- जो ने कथ्इऐं माएके।

सुनैना- हँ हँ, थ्कए ने? हमरा िैली देने छै रखै ले। अपना ले लल आर गोइठा बीछऽ चल। अपना दार -तािी, गाजा-भाग ले पाइए नै होइ छै आर हमरा रखै ले पाइ दइए। एतै केतौ नीशा केनाइ होइ छइ। बाप रे बा, हरदम नीशेमे चूर। चकेठबा जेतै कथ्इयो चटपटमे। टुनकीबा कमाइ कम नै छइ। मुदा पीऐ ले बेहाल रहै छइ। हम सभ अन बेगैर मरे छी। थ्नया-पुता कुकुर-बानर जका एमहर-ओमहर िहनाइए। हे भगवान, हे दाता थ्दनकर, ओकर नेत सुधारहक। नै तँ हमरा सभके मौगैत दऽ दएह।

(सुनैना कानए लगली।)

सुनर- माए गइ, खाइ ले दे। बि भूख लागलए।

खखन- (कनैत) केतए सँ देबौ। की देबौ? घरमे थ्कच्छो नै छौ।

शान्थ्त- खाइले दे नऽ माए। हमरा बि भूख लागलए।

चानी- (कनैत) खाइले दे नऽ गइ। खाइ ले दे नऽ गइ।

सुनैना- (थ्खथ्नया कऽ) खाइ जाइ जो नऽ हमर देह। नोथ्च ले हमर देह आर खाइ जाइ जो।

(सुनैना कानऽ लगली। झूमैत-झामैत शंकरक पवेश।)

शंकर- की भेलै हन? सुनर माए थ्कए कनै छे? शान्थ्ा, की भेलौ हेन माएके?

शान्थ्ा- खाइ ले मंगथ्ाऐ तँ कानऽ लागल।

शंकर- सुनर माए, तूँ कनले थ्कए? हमरा कथ्ुते। खाइक जोगार हम कथ्थ्ाऐ।

सुनैना- आबो की भेलै? दहक पाइ। कीन आनै छी।

शंकर- (जेबी- िटामे ताथ्क कऽ) पाइ कहा छौ जे देबौ? पाइ तँ छेलै हन। की भेलै? लगैए केतौ खथ्ा पिलै। अच्छा जो, आइ केकरोसँ उधारी आथ्ा लीहे।

सुनैना- जा नऽ तूँही। आथ्ा दहक नऽ। हमरा कोइ उधारी नै दइए। सभके धरने थ्छए। सभ खोथ्थ्या कऽ दौगैए। तूँही आथ्ा दहक।

शंकर- तूँही जो। हमरा तँ आओर कोइ नै दइए। तूँही जो। तोरा दऽ देतौ। तूँ मौगी थ्छीन।

सुनैना- हम नै जाएब, हम नै जाएब, हम नै जाएब। हम मुँह नोचबै ले जाउ गऽ।

शंकर- (थ्थ्थ्या कऽ) तोरा जाए पितौ। हमर कहल करए पितौ। नै तँ देखा देबौ।

सुनैना- हम नै जाएब। हमरा कोइ उधारी नै दइए। अपने जा।

शंकर- (थ्थ्थ्या कऽ) हमर कहल नै करथ्ान तँ देखही हमर खेल। (शंकर सुनैनाके अनधून मारऽ लागल चार थ्ाया-पुता कानऽ लागल। सुनर आर शानथ्ा शंकरके अपन-अपना थ्दस घीच कऽ छोिबऽ लागल आथ्क सभ थ्ायो-पुताके अनधून मारऽ लागल। सभ थ्कयो जोर-जोरसँ थ्थ्थ्याए लागल- माए गै, बाप रौ। अन्तमे सुनैनाके मारऽ लागल। सुनैनाक मुहसँ खून खसैत देख शंकर भागल।)

ृपटाक्षे।

दृश्य दू

(स्ािन- समूदाथ्रमाक भवन। शंकर आर खटर दार पी रहलए। दुनू गोरे दोस छैि। दुनू चखनो खा रहलए।)

शंकर- रौ बैह खटरा, औझका दार बि सुअदगर छौ। आइ भथ्र मन, भथ्र छाक पीबौ।

खटर- शंकर सार, आइ मटराक दोकानक ताला तोिड़ के छइ। छेनी, मथ्रया आर रीन्च लऽ लीहे।

शंकर- लै के कोन जररी छइ। संगेमे छइ।

(िािसँ थ्राकाथ्र खटरके देखौलक।)

खटर- सार, तूँ पहुँचल िकीर छे रौ।

शंकर- तब नऽ मलिड़ उिबै थ्रछए।

(एकटा तेरह बखक सुनैर लथ्रिकी मीना बस्ता लऽ कऽ गुजरली।)

खटर- रौ सार शंकर, थ्रकछु देखबो केलही?

शंकर- किी रौ?

खटर- समान। चारा।

शंकर- किी कहै थ्रछहीन रौ? खोथ्र कऽ बाज नऽ।

खटर- एगो लिकी इसकूल जाइ छेलै। उ छेलै कमाल के।

शंकर- चल नऽ कनी देथ्रखए। सुनसान हेतै तँ देखबै।

(शंकर आर खटर अन्दर गेल। मीना जोर-जोरसँ माए गै, बाप रौ थ्राथ्रआ रहलए। कनीकालक पछाइत मीना दम तोथ्रि देली।)

खटर- (अन्दरसँ) रौ सार शंकरबा, तोरा बुते मरलै।

शंकर- (अन्दरेसँ) रौ बैह खटरा, तोरा बुते मरलै।

खटर- लऽ चल एकरा। केतौ सिक कातमे िक देबै।

शंकर- जल्दी चल। थ्यदाि सभ अबै छइ। पकि जाइ जेबे।
(शंकर आर खटर मीनाके उठौने पवेश केलक। शीघ दुनू गोरे मीनाके मंचपर पटैक भाथ्य जाइ गेल। राजीव आर रौशनक पवेश। दुनू थ्यदाि मीनाक लाश देख डथ्य कऽ चौकल।)
राजीव- रौ रौशन, उ तँ मीना छै। अपने इसकूलमे पढ़ै छइ। इसकूलक डरेशो पहीरने छइ।
रौशन- राजीव, हमरा बि डर होइ छौ। भाग एतए सँ। जल्दी चल, इसकूलमे सरके कहबै।
(राजीव आर रौशनक तेजीसँ पस्िन। कथ्याये कालक पछाइत दूटा पुथ्यास केदार थ्यांहआ बदरी थ्यांह अपन दूटा चौकीदार रघुनाि आर देवनाि‍क संग पवेश केलैि। चार गोरे लाशके देखलैि।)
केदार थ्यांह- रेहे चौकीदार, लाश को लादो गाि मे।
बदरी थ्यांह- सर, ई लिकी इसकूल जा रही ि। रस्ता मं मौका पाकर कोइ दार बाज इसका जान ले थ्याया। साला थ्याशेवाज सभ, हरामी बच्चा ऐ भोली-भाली बच्ची को लगत काम करके मारकर िक थ्यया।
केदार थ्यांह- रेहे चौकीदार सभ, मुँह का देखता है? जल्दी लादो लाश को गािमे।
(रघुनाि आर देवनाि लाशके उठा कऽ अन्दर लऽ गेलैि। दुनू पुथ्यास सेहो पाछू-पाछू अन्दर गेलैि। कनैत-कनैत मटराक पवेश।)
मटरा- (छाती पीटैत) माए गै माए, बाप रौ बाप। जुलुम कऽ देलक चोरबा जनमल सभ। हमर बाल-बच्चा आब केना जीयत? बाप रौ बाप। सार चोरबाके पकैथ्याए तँ टेगारीसँ कुटी-कुटी काथ्य दैथ्याए।
(रघुनाि‍क पवेश।)
रघुनाि- की भेलह हन मटरा भाय?

मटरा- बाप रौ बाप, जुलुम भऽ गेलह हौ चौकीदार। श्कल्लीसँ कमा कऽ एलौ। एक लाख पूजी लगेलौ। श्करााना दोकान खोललौ। मश्कनो नै कमेलौ। साला चोरबा ताला तोश्चि देलक। सभटा समान लऽ गेलऽ। आब किी हम बेचबऽ? श्चया-पुता किी खेतऽ? आब हम की करबै हौ चौकीदार? हमरा श्कछु नै िराइ छह हौ चौकीदार।

रघुनाि- ई गप तूँ िानामे इन्‍री करा दहक।

मटरा- हमरा माहुरो खाइले पाइ नै छह। तँ िानापर केना जेबै? तूँही मदैत करऽ ने?

रघुनाि- छोश्चि दहक। हमही बाि बाबूके कश्ह देबैन।

(रघुनाि क पस्िान)

मटरा- लगैए, शंकरबा सार लऽ गेल समान। मुदा हम देखश्कएे तँ नश्ह। जौ पकैश्िएे तँ सारके टेगारीसँ कुटी-कुटी काश्ट ओतै राश्ख दैश्िएे।

८

पटाक्षेप।

दृश्य तीन

(स्िान- सामूदाथ्यक भवन। शंकर आर खटर दुनू दोस चखनाक संग तािी पी रहल अछ्छ। दुनू मस्तीमे अछ्छ।)

शंकर- सार खटर, तूँ अनािी छे। कथ्याये ले राथ्यमे बाथ्य गेले। नथ्य तँ दुनू गोरे धरा जैते। चौकीदर अबै छेलै हन।

खटर- सार शंकर, तूँही अनािी छे। केहेन-केहेन पुथ्यास हमरा पकैि नै सकल। ई चौकीदरबा कोन माल-मे-माल छइ। बेसी एमहर-ओहमर करतै तँ ओकरो घरमे चोथ्य कऽ लेबै। लैत रहत गदहाबला।

शंकर- औझका की पोगाम छौ से कह सार खटरा।

खटर- औझका हमर थ्यचार ई जे बहुत परदेशी सभ िगुआमे गाम अबैत हेतै थ्यल्ली-पैजाब-मुम्बइसँ कमा कऽ सभ लग बहुत-बहुत पाइ हेतइ। होथ्ययारीसँ सबहक जेबी माथ्य लेबै। चल आइ टीशनेपर।

शंकर- ठीक थ्यचार छौ। चल टीशनेपर। जेबी नै सुतरतै तँ बैग-एटैची सुतरतै नऽ। मुदा जाइसँ पथ्यने गाजा पी कऽ मूड बना ले।

सटर- हमरो तँ सएह मन छेलौ। जेबी मारनाइ आथ्यक बैग-एटैची पार केनाइ भीिमे बथ्यढ़या होइ छइ।

(दुनू गोटे गाजा पीलक। िर दुनू गोरे थ्यकरेट धरा कऽ पीबैत टीशन थ्यस थ्यदा भेल।)

शंकर- रौ बैह खटरा, टीशनपर छौिी-मौगी सभ बि रहै छइ। एक-पर-एक सुनैर सभ रहै छइ। अपना सभके जएह थ्यकछु तँ संतोख हेतइ।

खटर- शंकरबा सार, हमरा ओतै नै पढ़ा। हम अपने ओइ सभसँ थ्यटाइर छी। भीिमे केतेके हम की नै करै छी। चल, चल। जल्दी चल। गािीक समए भऽ गेलै हन।

(दुनू गोरे टीशन जा रहलए। दुनू गोरे कथ्याक समए ले अन्दर गेल। कथ्याक पटाक्षेप भेल। अन्दरमे रामनाि, पभु दयाल, नन्द क्षकशोर आर थयंका रेन पर्की ले तैयारअछ्छि। शंकर आर खटर मंचपर आएल। शीघ पदा हटल। याती चार गोरे कुरसीपर बैसलए। शंकर दुनू गोरे घुश्म रहलए।)

शंकर- गाि आश्ब रहल अछ्छि। पॉकीटमार सँ सावधान। (याती चार गोरे उठलैि। पभुदयाल जेबी टटोललैि। शंकरसहैट कऽ पभुदयाल लग आर खटर थयंका लग गेल। शंकर दुनू गोरे पॉकेट मारऽ लागल आश्क धरा गेल। चार आदमी शंकर आर खटरके माश्ब रहलए। मार सार के- मार सार के हल्ला भऽ रहलए। केदार श्चांह आर बदरी श्चांह पवेश कऽ दुनूके अनधुन मारऽ लागल। शंकर दुनू गोरे ओंघरा रहलए। बदरी श्चांह शंकरके आर केदार श्चांह खटरके माश्ब रहल छैि।)

अनुवोधक- (अन्दरसँ) यातीगण कृपया ध्यान दे। जयनगर से चलकर नई श्चल्ली को जानेवाली गरीब रि एक्सपेस प्लेटिॉमवनं. १ पर आ रही है।

(अनुवोधक ऐ गपके दू बेर कहलैि।) चार याती अन्दर गेल। दुनू पुश्चास शंकर दुनू गोरेके मारनाइ छोश्चि देलैि। दुनू उश्च कऽ हाि-पएर झाािलक।)

बदरी श्चांह- ला साला, माल-पानी।

शंकर- आइ नै देब सर। आइ बि मारलौ हन।

केदार श्चांह- तूँ बिि चौसठ बा। बहोत माल मारता है। लाउ एक हजार।

खटर- आइ श्कनौ नै देब। अहा बड मारलौ हन।

केदार श्चांह- ना मारी तँ पब्श्चाक कैसे बुझी। पब्श्चाक के बुझाना

हाय जे हम पुश्नस हाय। कुछ शो भी करना पिता हाय नऽ। जो ही कुछ देना है दे दऽ।

खटर- आइ हम श्कनौ नै देब। हमरा दवाइ कराबऽ पित।

केदार श्नंह- जाउ साला सभ, जाउ। आज छोि देते है।

(शंकर आर खटर लिखिाइत-लिखिाइत अन्दर गेल।)

बदरी श्नंह- केदार भाय, एगो गप बुझश्नाऐ हन की नश्न, दार क सम्बन्धमे?

केदार श्नंह- नश्न, की भेलै से?

बदरी श्नंह- दार बन भऽ गेल। हम भोरे पेपरमे पढ़लौ। हेन सरकार चाहै छैि जे देवराज्यके नीशा मुक्त करी। कारण ऐ सँ राज्यमे अनेक तरहक घटना दुघर्टना भऽ रहलै हन। जेना- चोरी-डकैती, छीनरपनी, बैमानी, लूट-पाट, बलत्कारी इत्याश्द। ऐ सभ तरहक श्नाकाइत सरकारके बहुत भेलै हन। तही दुआरे सरकार नीशा मुक्श्नाक करगर कदम उठेलक हन। (दुनू पुश्नस कुरसीपर बैसलैि।)

केदार श्नंह- कदम जदी सिल भऽ जेतैन तँ देवराज्य सरकारके दुश्नयामे नीक पश्नाष्ठा भेटतैन। मुदा भाय, अपना सभके बिश्चकत भऽ जाएत। कारण ओइ बेगैर अपना सभके एको श्चन नै श्नामहत। अपना सभ ले सरकार श्ककछु जोगार करतै, की नश्न?

बदरी श्नंह- उम्मीद कम आर भरोस ज्यादे। ओना पेपरमे दार, तािी, गाजा, भाग, खैनी, बीिी, श्नकरेट, पान इत्याश्दपर रोक लगाएल गेल हन। कारण सभ मे नीशा छै आर उ नीशा कोनो-ने-कोनो रपमे देहक लेल नोकसानदायक अश्छ। जेना खैनीमे श्नाकोटीन पएल जाइए जइसँ कैसरक सम्भावना रहैए। ओही खैनीसँ बीिी, श्नकरेट, पान मशाला इत्याश्द बनैए। सोभाश्वक छै उ समान अपना सभके नोकसान करत। दार सँ िििि जरै छै, कीडनी िल करै

छै। गाजासँ ि ि ि जरै छै, दम्मा होइ छइ। ऐ तरहे हम कह्र सकै छी जे पाय: सभ नीशाबला पदाविदेहक लेल खतरनाक अछ्रि जेकरा क्षायागने स्वास्ि्यक रक्रा हएत।

केदार सिंह- भाय बदरी, सरकारके जे करबाक हो, से करौ। मुदा हमरा ले दार क जोगार सरकार करैत रहौ।

बदरी सिंह- अहा बताह जका गप करै छी भाय। अहा आब दार सँ छातीपर मुका मारू क्षाअ।

केदार सिंह- भाय, हमरा ओइ बेगैर नै बनत।

बदरी सिंह- किए नै बनतै? मनके जेते चसकेबै, मन ओते चसकतै। मन जेते काबूमे रहत, ओते मानवतामे धक्षाक रहब। मने सभ किछु छिऐ। कोनो शायर कहने छथि न- मन ही देवता, मन ही ईशर, मन से बि न कोय। मन उक्षयारा जब जब िले, जग उक्षयारा होइ।

केदार सिंह- भाय, अहा के अध्यात्मक जान बि अछ्रि यौ।

बदरी सिंह- हमरा अध्यात्मक जान सूइयाक नोको बरबैर नै अछ्रि। ओना, समए आकाक्ष कखनो-कखनो कोनो-कोनो अध्यात्मक पोि पढ़ लै छी। सरकारक नीशा मुक्षा कदमक स्वागत करैत हम आइ संकल्प लै छी जे हम कोनो नीशा नै करब, नै करब, नै करब।

८

पटाक्षे।

दृश्य चारि

(स् ीन- शंकरक घर। सुनैना सूपमे चाउर ि टैक रहलए। सुनर आर शान्ति एक दिस त ि खखन आर चानी दोसर दिस भऽ कबडडी खेल रहलए।)

सुनर- कबडडी, कबडडी, कबडडी, कबडडी, कबडडीऽऽऽ।

खखन- चैत कबडडी, चैत कबडडी, चौत कबडडी, चैत कबडडीऽऽऽ।

शान्ति- कबडडी कबडडी, कबडडी खेल।

घृणा त्यागि, राखू मेल।

चानी- चैत कबडडी अडडा, बाप तोहर बुडढ़ा।

तोडि देबौ नेगरी, बना देबौ बोगरी।

सुनर- चैत कबडडी एला, माए तोहर लैला।

बाप तोहर मजलूम, तूँ बाबा मखदूमऽऽऽऽ

(खखन आर चानी सुन्नरके टाग पकैि घीचैए अपना दिस आर सुनर अडडा दिस घीच कऽ लऽ जाइए। सुनरके अडडासँ पहिने सास टुटि गेल। खखन आर चानी ि पि ि बजा कऽ खूम हँसए लागल।)

खखन- कबडडी कबडडी, तोडि देबौ हडडी।

फाडि देबौ पोटा, मारबो दू सोटाऽऽऽऽ।

(खखन शान्तिके घीचने-घीचने पढ़ैत-पढ़ैत अपना घर लऽ गेल। ि र खखन आर चानी ि पि ि बजा कऽ हँसए लागल।)

खखन- (नचैत-नचैत) हरा देलियौ, हरा देलियौ।

चानी- (हारि गेले हर आ, खा ले गूँहके तर आ।) 3

(चार भाए-बहिनमे मारि ि ढ़ि गेल। सुनर-खखन आर शान्ति-चानी उटम-पटका करैए। सुनैना चाउर ि टकनाइ छोडि दौग कऽ आबि

झगिा छोिाबऽ लगली। चार के दू-दू चाट दऽ कऽ सुनैना अलग-अलग केली। चार हकमैत एक-दोसरपर कन्हुआ रहलए।)

सुनैना- तूँ सभ झगिा थ्कए करै जाइ गेले?

सुनर- तोहर बेटी हमरा थ्कए कहलकौ- हाथ्र गेले हर आ, खा ले गूँहक तर आ? तीन बेर कहलकौ।

सुनैना- आब नै कहतौ। झगिा नै करै जाइ जो। भाए-बथ्रनमे झगिा करै जाइ जेबहीन तँ लोक बुिबक कहतौ।

खखन- माए गै, पापा केतए रहै छै? काए थ्दनसँ घर पर नै देखै थ्छऐ।

सुनैना- केतौ रहौ सरधुआ। ओम्हरै मथ्र जाउ।

शान्थ्त- पापाके गाथ्र थ्कए दइ थ्छहीन गै?

सुनैना- तोहर पापा तािी-दार -गाजा पी कऽ बुच्च रहै छौ। अपना सबहक पेटक जोगार नै करै छौ। हमरा मजूरी कऽ पेटक जोगार करए पिैए। तोरा सबहक पढ़ैक जोगार नै करै छौ। दोकानदार सभके उधारीबला पाइ नै दै छौ। अही सभसँ थ्दल बड दुखाएल अथ्छ। तँए ओकरा गथ्रयबै थ्छऐ।

शान्थ्त- ओहेन पापाके हमहूँ गथ्रयेबै। ओहेन पापाकेसुपैन धारमे देबै, गजहर गाछमे सुतेबै।

(शंकरके पकिने खटरक पवेश। खटर साधुक भेषमे अथ्छ। शंकर एककातमे नीशामे ठाढ़ भऽ असथ्थरे-असथ्थरे थ्खलैए आर खटर ओकरा पकिने ठाढ़ अथ्छ।)

खटर- दोसतीनी, दोसके परसू साझमे घुमैकाल एन.एच.पर एगो बोलेरोबला ठोकर माथ्र देलकै। हम उठा-पुठा कऽ टेम्पूमे लाथ्द होस्पीटल लऽ गेलौ। डाक्टर जाच-परतालक पछाइत कहलैन- थ्हनकर िाि जरल छैन आर थ्कडनी सेहो िल छैन। ई बहुत

ध्यानध्ययस छैि। ई दू-चाध्य ध्यनक मेहमान रध्य गेल छैि। ध्यनका घरेपर लऽ जाउ।

सुनैना- अहा तँ एकरा बहसा कऽ तूल कऽ देध्याऐ। दार पीआ-पीआ जान लऽ लेध्याऐ ध्याशेवाज कही के।

खटर- दोस्तीनी, जध्ययासँ सरकार नीशा बन केलकै तध्ययासँ हम नीशेबाजी छोध्यि देध्याऐ। बबाजी बध्य गेलौ हन। देखै ध्यछऐ, हमर बगे।

सुनैना- झूठा नध्यतन। देखबैले बबाजी भऽ गेल हन।

खटर- (कण्ठी देखा छुबैत) हम कण्ठी छुबै छी। झूठ नै कहै छी। हम सभटा नीशा छोध्यि देलौ।

(शंकर बैस गेल। खटर ठाढ़े रहल।)

सुनैना- तँ दोसोके ध्यकए नै छोि देध्याऐ?

खटर- दोसके हम कहध्याऐ। मुदा ओ नइ मानलैि। केना-ने-केना केतौ-ने-केतौसँ ऊपर कऽ कनी-मनी पीए लै छैि।

सुनैना- अखनो तँ दोस पीनेए।

खटर- हमरो लगैए। हमरा आश्चयवलगैए जे केना उपरा कऽ माध्य दै छध्यिन।

सुनैना- (ध्यव्ध्यया कऽ) बि पीयाक छै तँ भने ओम्हरे होस्पीटलेमे मध्य जइतै से नध्य।

शंकर- (ध्यव्ध्यया कऽ झूमैत) तोरा बापक कमाइके नै पीलौ हन। अपना कमा कऽ पीलौ हन। हमरा अपने बि मन खराप अध्छ। तैपर ध्यव्ध्ययबैए।

खटर- दोसतीनी, हम जाइ छी। सोसराइरमे साइरके ध्यहा ध्यछऐ। दोसपर नीक जका ध्ययान देबइ।

(खटरक पस्िान।)

सुनैना- दार -गाजा पीऐत-पीऐत मन खराप कऽ लेलक हन। पश्चवारपर कोनो श्चयाने नश्च। लेबरमे खश्च-खश्च हम कौहना पेट चलबै छी। एकरा एकर कोनो लाज नश्च।

(शंकर टश्च कऽ मश्च गेल। सुनैना माए गै, बाप रौ श्चश्चयाए लगल। चार श्चया-पुता सेहो खूम कानए लागल।)

केतए चश्च गेलहक हौ सुनर पापा। केतए चश्च गेलहक हौ शान्श्च पापा। आब केना रहबै हौ चानी पापा।

८

पटाक्षेप।

दृश्य पाच

(स्ािन- एन.एच.। नीशा मुक्ति हेतु मानव शृंखलाक पूणवतैयारी भऽ चुकल अछि। पधानाध्यापक शशिकान्त आर सहायक शिक्षक सोमदेव नीशा मुक्तिक सम्बन्धमे गप-सप्प करै छैि।)

शशिकान्त- सोमदेव बाबू, देवराज्य सरकारके नीशाबन्दी कानून बि नीक रहलैन। पाय: सम्पूणवराज्य नीशा मुक्त भऽ गेल हन। दार बाज सभ तँ छरपटाइए। मुदा केतौ दार नै भेटैए ओकरा सभके। दार ए-टा नहि, तािी, भाग, गाजा, खैनी, बीिी, पान, सिकरेट सेहो बन भऽ गेल।

सोमदेव- सर, देवराज्य सरकारक ई कदम बहुत सराहनीय रहल। मुदा किछु हेहर, पतीत अखनो चोरा-नुका कऽ दार -तािी-गाजा मारिए लै छइ। आखिर रजबुधिसँ चोरबुधि भारी होइ छै किने।

शशिकान्त- से जे हौउ। मुदा सरकारक ई नीशाबन्दी नीशामुक्ति कायिम 99 पतिशत सिल रहल। ऐ ले हम सरकारके हािदक धैनवाद दै छिऐन। अहिना जदी सरकार अपराधपर नियंतण करै तँ देवराज्य देवलोक बनि जाएत।

सोमदेव- सरकारेक मन छिऐ। ऊहो भऽ सकैए। सर, अखैन धरि छिदािी सभ नै जुटल हन। कही चेकमे अपना सभ पकिा नै जाइ।

सुनैना- पकिबै किए? हाकिम नै बुझै छथिन ठंिक समए छइ। सभ छिदािी खा-पीब कऽ मजगूत भऽ कऽ आएत किने। कारण एन.एच.पर रौदमे ठाढ़ हुअ पितै। गाम-गामसँ छिदािीके पहुँचैमे कनी-मनी अबैर-सबेर हेबै करतै।

(सहायक शिक्षक अनूपक संग चन्दन, गुंजन, अमन, रानी आर महारानी अन्दरमे नारा लगा रहलए।)

चन्दन- तािी-दार बन कर। (शशिकान्त सोमदेव उिक कऽ टहैल रहल छैि।)

सभ िकयो- बन कर, बन कर।

(सभ िकयो पवेश केलैि। चन्दनक हाथिमे झण्डा छैन। अनूप सभसँ पाछू छैि झंडापर नीशामुक्त देवराज्य िलखल अिछ।)

चन्दन- गाजा-भाग बन कर। (घुिम-घुिम कऽ)

सभ िकयो- बन कर बन कर।

चन्दन- खैनी-बीिी बन्न कर।

सभ िकयो- बन कर, बन कर।

चन्दन- िसकरेट-पान बन कर।

सभ िकयो- बन कर, बन कर।

(अनूप सभ िवदािीके पतयानीमे लगेलैि। सहायक िशक्का- सोनीक संग कमलदेव, रामदेव, हिरदेव, लिलता आर किवता अन्दरमे नारा लगा रहलए। अनूप अपन टीम लग ठाढ़ छैि।)

(शशिकान्त आर सोमदेवक पस्थान।)

कमलदेव- तािी-दार, बन कर।

सभ िकयो- नीरोग रहू, नीरोग रहू।

(सभ िकयो पवेश केलैि। कमलदवेक हाथिमे झण्डा छैन। सोनी सभसँ पाछू छैि। झण्डापर नीशा हटाउ, देवराज्य बँचाउ िलखलए।)

कमलदेव- गाजा-भाग बन कर। (घुिम-घुिम कऽ)

सभ िकयो- बन कर, बन कर।

कमलदेव- खैनी-बीिी बन कर।

सभ िकयो- बन कर, बन कर।

कमलदेव- िसकरेट-पान बन कर।

सभ िकयो- बन कर, बन कर।

कथलदेव- सुपारी-गुटका बन कर ।

सभ बकयो- बन कर , बन कर ।

(सोनी सभके पतयानीमे लगेलै। सोनी अपन टीम लग ठाढ़ छै।)

अनूप- (घुम कऽ) सभ गोरे ठाढ़ रह। ऊपरसँ हाकम सभ एथिन। िटो झीकैबला एथिन। िटो झीका कऽ जाइ जइहे। सभ बकयो सच-सच कऽ ठाढ़ रह आर नारा लगबैत रह।

सोनी- (घुम कऽ) जखन तोरा सभके टाग दुखा जेतौ तँ बैस जाइ जइहे। बना िटो झीकेने कोइ नइ जाइ जइहे।

कथलदेव- नीशा हटाउ, नीशा हटाउ।

सभ बकयो- राज्य बँचाउ, राज्य बँचाउ।

चन्दन- नीशा छोि, पाय बँचाउ।

सभ बकयो- बया-पुता, पढ़ाउ-सखाउ।

(एकाएकी सभ गोरे बैस गेल। रामशरण आर बच्चनक पाम लऽ कऽ पवेश। सभ गोरे ठाढ़ भऽ जाइ गेल। रामशरण आ बच्चन पाम बँटै छै। पाम बाच दुनू गोरे पस्िन केलै। रामलाल बसस्कुट लऽ कऽ पवेश केलै। रामलाल बसस्कुट बँटै छै। बसस्कुट बाच रामलालक पस्िन। राम बाबू आर ललनक चाह लऽ कऽ पवेश। ई दुनू गोरे चाह बँटै छै। चाह बाच दुनू गोरे पस्िन केलै।)

अनूप- चन्दन, नीशामुक्तपर जे ऊ गीत तैयार केने छेलहीन से, गाबही ने।

चन्दन- जी सर, गाबै छऐ।

(चन्दन आर रानी एक दस झिनी लऽ कऽ ति गुंजन आर लमता दोसर दस झिनी लऽ कऽ गीत गाबैले तैयार भेल।)

चन्दन+रानी- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, दार -तािी बन भेलइ।

बन भाग गाजा।

खैनी बीड़ी सिकरेट बन भेलैजी।

गुंजन+लक्ष्मीलता- हाएजीऽ ऽ ऽ ऽ, गुटको पान सुपारी हटलै।

रोगी सभ निरोग भेलइ।

राज्य नीशामुक्त भेलैजी।

चन्दन+लक्ष्मीलता- हाएजीऽ ऽ ऽ ऽ, चोरी हटलै डकैती घटलै अपराध बलत्कारी भगलै।

समुन्नत विकास बढ़लै जी।

गुंजन+रानी- हाएजीऽ ऽ ऽ ऽ, अनुशासन, भ्रष्टाचार एलै।

सुख-शान्तिक बहार एलै।

सहानुभूतिक परेम बढ़लैजी।

चन्दन+रानी- हाएजीऽ ऽ ऽ ऽ, आब नै कखनो नीशा औतै।

औतै सत्यानाश हेतै।

सम्हरल घर आंगन जेतैजी।

गुंजन+लक्ष्मीलता- हाएजीऽ ऽ ऽ ऽ, चोरबुदी भारी रहलै।

रजबुदी हल्लुक।

चोर उपरा कऽ पीतैजी।

(थपड़ीक बौछार भेल।)

अनूप- (फोन रिसीभ कऽ) हेल्लो, सर पणाम। जी जी। जी सर। हम सभ तैयार छी। (फोन कटि गेल)

सोनीजी, अहा एक-एक हाथिपर लाइन लगबा दिअ। हाकिम आर फिटोगाफर आबि रहल छैथि।

सोनी- जी सर, हम लाइन लगबा लै छी। सभ कोइ एक-एक हाथिपर लाइन लगबै जाइ जो।

(सोनी एक-एक हाथिपर सभ सदस्यके लाइनमे लगेलैन।)

(शाश्वाकान्त आर सोमदेवक पवेश।)

चन्दन- नीशेवाजी बन कर ।

सभ श्कयो- बन कर , बन कर ।

कथ्लदेव- नीशा भगाउ, इज्जत बँचाउ।

सभ श्कयो- इज्जत बँचाउ, इज्जत बँचाउ।

(नीशाबन्दी कायग्रिमक पखण्ड स्तरीय हाश्कम बैचयुक्त महेश्वर आर िटोगािर श्वनेशक पवेश। महेश्वर श्वारीकग करै छैि आर श्वनेश िटो झीकै छैि।)

महेश्वर- अनूपजी आर सोनीजी, हमरा दुनू गोटेक गेला पछाइत अहूँ सभकेछुटी। सरकारक नीशामुक्श्वा कायग्रिम पूणवसि ल रहल। (महेश्वर आर श्वनेशक पस्िान।)

अनूप- आब सभ श्वदािी अपन-अपन घर ओश्वया कऽ जाइ जाइ जो। एन.एच. नीक जका पार कश्वहे दुनू कात देख कऽ।

(सभ श्वदािीक पस्िान भेल। शश्वाकान्त, सोमदेव, अनूप आर सोनी हाि जोश्वि पणाम कऽ मुिी झूका लेलैि।)

पटाक्षेप। इश्वा शुभम।

बरहम बाबा

पात-पश्चचय

(1.) बौकु- एकटा गरीब श्कसान

(2.) ि ूलो- बौकुक पती

(3.) बुधन- बौकुक पि ीसी

(4.) चानोदाइ- पश्चल कारणी

(5.) रामबती- दोसर कारणी

(6.) बदरी- पश्चल दशक

(7.) कारी- दोसर दशक

(8.) भूल्ला- तेसर दशक

(9.) अशर्ि ी- चाश्चम दशक

(10.) राम उदगार- पाँश्चम दशक

(11.) मुसना- बौकुक दू बखक बेटा

(12.) राम कुमारी- बौकुक बि की बेटी

(13.) रामपरी- बौकुक छोटकी बेटी

दृश्य- एक

(स्थान- बरहम बाबाक गहबर। समए-सौझका बौकु आ ढ़ोलो बरहम बाबाक पूजा ले सभ शमजानक संग उपस्थित छैथि। ढ़ोलो गहबर साफ कऽ रहली अछि। तखने बुधन मृदंग आ झालिक संग पवेश करैए।)

बुधन- भैया, बरहम बाबाक महिमा अगम अछि हि छैन। सुनलौ, हुनके कृपासँ तोरा बेटा भेलह। मन बड़ हरखित भेल। आब ठीक छह- दूगो बेटी आ एगो बेटा।

बौकु- हुनकासँ पैघ दुनियाँमे आर के? हुनका शरणमे जे कियो एला, हुनकर कल्याण आइ धरि भेल हन आ आगूओ हेबे करत। तँए ने हमर मुसना माए हुनक पूजामे जी-जान लगौने रहैए।

बुधन- भैया, तूँ केतेक दिनसँ भीख माँगै छेलह?

बौकु- तीन पुस्तनासँ बेसीए बुझीन।

बुधन- ऐ बेर बरद नै ने बेचए पड़तिह?

बौकु- से नै पूछ। ओइ बेरका मारल अखैन धरि छी। होश नै भेल हन। ओइ बेर पनरह दिन भीख माँगने रही। मुदा ऐबेर दुनू परानी तीन महिनासँ भीख ले कोन-कोन गाम नै बौआके कोरामे लऽ कऽ वौएलौ। लगैए ऐ बेर नै घटतै। ओहीसँ पेटो चलै छेलए रहने। साँझू पहर घर चलि अबै छेलिऐ।

बुधन- अँए हौ, पूजा ले भीख माँगै छेलहक आ ओहीसँ पेटो चलबै छेलहक? ई नीक बात नै भेलह। अइसँ पुन नै पापे हेतह।

बौकु- की करबै, हमरा तँ और कोनो जोगार नै छेलए। बाबा नै बुझै छथिन जे हमरा भगतके पाच आदमीक परिवार छइ।

(अपन-अपन डालीक संग चानोदाइ आ रामबतीक पवेश। पूजाक सभ तैयारी िूलो कऽ लेली अछि। बौकु झाि आ बुधन मृदंग बजबैत भगैत गाबि रहल अछि। िूलो ध्यानस्ि भेली। बदरी, कारी, भूल्ला, अशिी आ राम उदगारक पवेश। राम कुमारी कोरामे मुसनाके लऽ कऽ पवेश केली। संगमे बहीन-रामपरी सेहो अछि।)

बौकु+बुधन- बरहम अँगनमामे, पीपरकेर गछिया हे।

तै पर देवी ऽ, दे ऽ वता हे।

बरहम अँगनमामे...।

कौन िूल चढ़ै देवी, कौन िूल देवता हे।

कौने िूल चढ़ै बरहम, बाऽ बाऽ हे।

बरहम अँगनमामे...।

अरहुल चढ़ै देवी, गेदा िूल देवता हे।

गुलाब िूल चढ़ै बरहम, बाऽ बा हे।

बरहम अँगनमामे...।

िूल दीप मधुर देवी, लडडू पान देवता हे।

खीर पूिी बरहम, बाऽ बा हे।

बरहम अँगनमामे...।

(िूलोक देहपर बरहम बाबा अबै छथिन। मृदंग बजनाइ बन भऽ जाइए। सभ कारणी शान्त भऽ हाि जोिि लइ छैि।)

िूलो- बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, के छियह तूँ?

िूलो- बोल जय गंगा। हम बरहम छियह। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। बिी कालसँ कारणी सभ बैसल छइ। कनी एकरो सभके कल्याण करहक।

िूलो- हम कोन जोकरक छी जे लोकके कल्याण करबै। बोल

जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हम बुझै छेऐ जे अहाँ कने तूँ कोन जोकरक छहक से। एते दूरसँ जे कारणी अबै जाइ छै से अहाँ बान कल्याणे अबै छइ। तूँ हीरा छहक। हीरा अपन मोल नै बतबै छइ।

िूलो- बोल जय गंगा। हमरा बुते जे हेतह तइमे हम नै चुबहक। सएह ने। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हे, ऐ कारणीके देखहक।

िूलो- (चानोदाइ दिस ताकि) हइ, तोहर घरबला कमाइ बि छह मुदा भाभंश नै होइ छह। पाच आदमीक परिवार छह। तीन सए टाका रोज कमाइ छह। कनियो बैसलो नै रहै छह। मुदा पेटोपर आि द रहै छह। इएह बात छै की ने?

चानोदाइ- (घोघ तरसँ मुिी डोलबैत) हँ।

िूलो- हम जे कहबह, से करबहक की ने?

चानोदाइ- हँ, करबैन।

िूलो- सत करह। बाजह- 'एक सत दू सत, बह तिगुण सत्त अहाँक कहल जे नै करए, अस्सी कोस नरकमे खस।

चानोदाइ- एक सत दू सत, बह तिगुण सत
अहाँक कहल जे नै करए, अस्सी कोस नरकमे खस।

िूलो- बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा।

िूलो- तोहर घरबला दार आ गाँजा पीऐ छह। काजो करैले जाइ छह तँ पीकऽ बुच्च रहै छह। ओकरा कखैन की हेतह, कोनो ठेकान नहि। अँए हइ, तीन साए टाकामे दू साए-अढ़ाइ साएक पीए लेतह तँ बँचल-खोचलसँ की भाभंश हेतह? तहूमे मँहगाइ अकास छूने जा रहल अछि। घरवलाके कौहुना ई आदैत छोिबह। कहक- 'दार -

गाँजाक बदलामे दूध-दही-घी खाउ। िकान ले हम सभ श्चन माश्वश कऽ देब।' आ करबो करहक। अइसँ पश्चने तूँ कश्चयो माश्वश नै करै छेलहक। की, बात साँच श्चछऐ, की नइ?

चानोदाइ- हँ, साँचे श्चछऐ।

िूलो- बोल जय गंगा।

बौकू- जय गंगा।

िूलो- घरवलाके हँसा कऽ खेला कऽ माश्वश कऽ आ ओकरामे पैस कऽ रसे-रसे किाइ करबहक तँ उ अबस्स चेत जेतह। उ सुधरतह आ तोहर सभटा दु:ख भाश्च जेतह। बाजह हमर कहल करबहक की ने?

चानोदाइ- हँ, अबस्स करबैन।

िूलो- जा, तोहर कल्याण हेबे करतह।

(हाि जोश्च पणाम कऽ चानोदाइक पस्िान।)

बोल जय गंगा। और के छह?

बौकु- (रामबती श्वस इशारा करैत) सरकार, ई छश्चन।

िूलो- बोल जय गंगा। तोहर दूटा बेटा आ एगो बेटी नै सुधैर रहल छह। हरदम नरहेर जका एमहर-ओहमर करैत रहै छह। तीनूक पाछू तोरा बि पाय खरच होइ छह। मुदा कोइ रस्तापर नै आश्च रहल छह। तोरा अपन श्चयादनीपर शक होइ छह जे वएह श्चकछु कऽ देलक हन। सएह ने?

रामबती- (मुँह उधाश्च) हँ, बाबा। अपने अंतयामी छश्चन बाबा।

िूलो- बोल जय गंगा। हइ, श्चयादनीक कोनो दोख नै छह। तोहर अपने दोख छह। तीन साल पश्चने परमानन्द मासाएबसँ छअ मश्चना पढ़बा कऽ िील ले आइ-काल्श्च, आइ-काल्श्च करै छेलहक। एक श्चन बेचारा खगने कनी जोरसँ पाय माँगलखुन तँ तूँ सभ हुनका सातू

पुरखाके उकटलहक आ मारबो करै जाइ गेलहक। बेचारा काश्मा कऽ दुआश्बपरसँ गेलह। हुनके आप छयह। कहह तँ वेचरा टीशन कऽके गुजर-बसर करै छथ्नि। बेचारा बि असिीर लोक छथ्नि। हुनका संग हुनके बोश्मा ले एहेन खराप बेवहार! ई बि पैघ गलती भेलह। बोल जय गंगा।

रामबती- बाबा, आब ओकर कोन उपाए छइ?

िूलो- बोल जय गंगा। (कनीकाल श्कछु सोश्च कऽ) दुनू परानी हुनका ऐठाम जा कऽ पएर पकैि क्मा माँगहक। उ दयालु लोक छथ्नि अबस्स क्मा कऽ देिुन। तेकर पछाइत हुनका बाँकी िसक दोबर िसि दऽ श्दहौन आ हुनकासँ अनुनय-श्वनय करीहक। जे श्माया-पुताके िर पढ़ा श्दयौ। अही बुते उ सभ सुधैर सकै छइ। आब अहाँके नै छोिबि आ ने अहाँ संग गलती करब। बोल जय गंगा। हइ, हमरा श्बसवास छह जे उ माश्म जेतह। जा, अक्खैन जा। उ घरेपर छथ्नि।

(हाि जोश्ि पणाम कऽ रामबतीक पस्िान।)

बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, हम जे सकश्ैयह तइमे जी-जान लगा कऽ पूजा केश्ैयह आ एश्िना करैत रहबह।

िूलो- बोल जय गंगा। हमर पूजा करै छह, नीक बात। मुदा हमरा पूजा खाश्तर तूँ बीश्क जाह वा तकलीि उठाबह वा पश्ताष्ठा हनन करह, से बात हमरा एको रती पसीन नै छह। हम तोरा पूजासँ एकेअना पसन श्छअ। तोहर पूजा पनरहअना बेकार भेलह। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हम तँ जी-जान लगा पूजा केश्ैयह जइसँ सरकार हमरापर सोलहनी खुश रहथ्नि आ मनसँ अश्ीरवाद देथ्नि। मुदा

केतए की गलती भेलै, उ तँ सरकार अपने कहबै।

िूलो- हमरा पूजा खाक्षार तूँ बरद बेचलहक। से क्षकए? आ जँ बरद रक्षतह तँ हरो जोक्षा गुजर-बसर कक्षतह। कहह तँ, केते क्षन कमेबह तँ बरद कीनबह? तहूमे पेटोक सवाल छइ। गरीब क्षकसान छह। बरद तोहर हाि-पएर छह। बरद खाक्षार तोरा तकलीि भऽ रहल छह। ओइसँ हमरो तकलीि छह।

तूँ भीख माँक्षा पूजा करै छह से क्षकए? अपन पसेनाक कमाइसँ पूजा करबहक तँ बेसी िल हेतह। भीख माँक्षा कऽ करैमे भीख देक्षाहार तोहर िल बाँक्ष लइ छह। कनी देरी वा बेसी देरी हेतै पूजामे, सएह ने? तँ की भऽ जेतइ? हम तँ केतौ भागल नै जा रहल छी। तहूमे बेसी खरचा करबाक कोन खगता छइ। हम खीरक भूखल नै छी। हम पेम-शदाक भूखल छी। पेमसँ जे क्षकछु भेलै आ जेतबे भेलै, वएह बि भेलइ। जी-जान लगेबाक कोनो खगता नै छै। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, दोसर बेरसँ ऐ सभ बातके क्षायान रखबै। अखैन धक्ष जे क्षकछु घटी-कुघटी भेल हो, ओकरा माि कक्षहक।

िूलो- जा, माि छह। आन बेरसँ लगती माि नै हेतह। आब जाइ क्षअ। केसटोलीमे पूजा िरिल छइ। बोल जय गंगा।

(िूलो धरतीपर माि टेकलैि। बौकु गंगाजल छीटलैि। िूलो उक्ष देह-हाि झाक्षि सम्हाक्ष कऽ बैसली। दुनू परानी दशकके हाि जोक्षि पणाम केलैि। िपिीक बौछार भेल।)

इक्षा शुभम्

पद खण्ड

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

पेम-चालीसा

सभ कियो दुनियामे अपन, कतहु कियो नहि आन
इएह सोचि सदिखन करी, हम सबहक सम्मान |
ई दुनिया भगवानक दुनिया
सुरज तरेगन चानक दुनिया

न'व दृष्टि नव युगकेर दुनिया
शात सुखी सतयुगकेर दुनिया

वन पर्वत खग सिन्धु सरोवर
ई दुनिया सुन्दर-सुन्दर

भिन्न मुदा सभ दृश्य मनोहर
स'भ देश सुन्दर-सुन्दर

पोखरि गाछी बाध रमनगर
स'भ गाम सुन्दर-सुन्दर

सुनू पराती. लगनी. सोहर
सभ लोक सुन्दर-सुन्दर

पेम क्षमा शदा आ आदर

सभक सोच सुन्दर-सुन्दर

कमल फूल सन श्यामल शीतल
सभक बोल सुन्दर-सुन्दर

जाग्रत आतमा धमवश्चव्यता
सभक दृष्टि सुन्दर-सुन्दर

तन-मन-धन सभ सत्यक पिपर
सभक सृष्टि सुन्दर-सुन्दर

चलय अहर्निशा शाश्वतक पूजा
सभक कृत्य सुन्दर-सुन्दर

राग भैरवी ताल भैरवी
सभक नृत्य सुन्दर-सुन्दर

ह’म आतमा शुद्ध आतमा
ज्योत्स्ना बिन्दु चैतन्य आतमा

जान पेम सुख शाश्वत रूप हम
पवित्रता आनंद शक्ति हम

सहनशीलता अस्त्र हमर अछि
देह हमर ई वस्त्र हमर अछि

परम धाम केर बासी छी हम
अजर अमर अविनाशी छी हम

सभले' शुभ भावना अभ्यंतर
हमर सोच सुन्दर-सुन्दर

सदा सत्य सुन्दर कल्याणी
हमर बोल सुन्दर-सुन्दर

सबहक हितमे सदिखन तत्पर
हम्मर तन सुन्दर-सुन्दर

काम क्रोध मद लोभक बाहर
हम्मर मन सुन्दर-सुन्दर

सबहक छी हम,सभ छथि हम्मर
हमर दृष्टि सुन्दर-सुन्दर

हथियर नमहर और लश्कतगर
हमर सृष्टि सुन्दर-सुन्दर

धरती आ आकाश रमनगर
सभक भाग्य सुन्दर-सुन्दर

हम आनंदित सृजनक पिपर
हमर भाग्य सुन्दर-सुन्दर

हमर पिता माता वन्धु सखा ओ
परम पिता परमातमा ओ

ज्योत्स्ना चन्द्र करणासागर ओ
सकल कला सभ गुण आगर ओ

सदिखन हमरा संग रहै छथि
सत्य पेम आनंद भरै छथि

हम हुनके सभ काज करै छी
अपना मनपर राज करै छी

सभले’ देखी सुन्दर सपना
हम सभके स्वीकार करै छी

हम पूजै छी ध्यानक प्रतिमा
जान और अजानक प्रतिमा

अपन शक्तिसं परिचय भेल
विषय-वासना आ भय गेल

दुखकेर सागर तरि गेलौ हम

सभ संभव अछि जाए गेलौ हम

शान्तिक सीता ताकि एलौ हम
घ'र घूमिक' आबि गेलौ हम

लोभक लंका जरा-तराक'
मन रावणके डरा-हराक'

पहुंचि गेलौ सुखधाम अपन हम
स्वयं पवनसुत, राम अपन हम

हम भगवानक शक्ति पबै छी
दुनियामे सुख-शान्ति बँटै छी

हुनके आशीवाद बँटै छी
आनंदक परसाद बँटै छी

न'व दृष्टि नव सृष्टिक जय हो
सुख-समृद्धि केर वृष्टिक जय हो

अंध स्वार्थसं मुक्तिक जय हो
संस्कृति केर भक्तिक जय हो

पवित्रता केर जय हो जय हो
मानवता केर जय हो जय हो |

गजल

हुनका सोझा श्वबल ने भेल
'पेम करैछी' कहल ने भेल

हमरा मोनक चैन चोरेलौ
मुदा अहाके जहल ने भेल

छलै अशरि ओतै गाडल
हमरा जैठा रहल ने भेल

केश मा िमे जते,तते दुःख
गन' चाहलौ गनल ने भेल

ठोश्च पाश्चिक' श्चकयो कनै छल
घ' र बंद क' पडल ने भेल

नोरश्चसं श्चखने छलीह ओ
श्चटी हमरा पिल ने भेल

श्चना बहरके पद 'अश्चल'
कश्चता भेलै गजल ने भेल

(सरल वाश्चाक बहर/वणब11)

गजल

युद्ध कर जुआ शोक कर
हे अर्जुन जुआ सोच कर

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रमे छी
पापक तीब्र विरोध कर

मित्र कियो नै शत्रु कियो नै
बुझियौ और संतोष कर

जीतू भोगू सुख धरतीक
अथवा स्वर्गक भोग कर

अहा आतमा अविनाशी छी
तन आ मोनक योग कर

सत्य और शास्त्रक जय हो
नूतन आत्म प्रयोग कर

जय हो जय हो पवित्रता
आउ एखन उद्घोष कर

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण10)

<u>गजल</u>

वेद-पुराणक मञ्चमा सभटा बूझल अछि
मुदा लोक हमरे करतबसं र सल अछि

राक्षा आ थ्वन ओझराएल रहै छी हम जैमे
इहो जाल त अपनश्च हाकि बूनल अछि

भूश्य-भवन गहना-गुश्च्छया एि डी सभटा
सोश्च्य रहल छी की अरजल की लूटल अछि

हदय कहैए ई अन्हार हटतै एकश्चन
सपता-श्चपताकेर कि सभ सूनल अछि

जे जागल अछि ओकरा खाश्चार भश्च दुश्चाया
'अश्चाल' ओकर की जे सपनेमे डूबल अछि

(सरल वाश्याक बहर/वणब17)

गजल

रावणकेर संहार केलौ अपने मनमे
रामक हम दर्शन कयने छी जीवनमे

पिबा-खेबामे आनंद अबैत रहल
मोन रमल नै कतौ और किछु अजबामे

दूर रहैत एलौ सभसन चौका-छकासं
लागल रहलौ शब्दक सागर-मंथनमे

माए बाबू दादी दादा नानी नाना मामी मामा
सभ क्यो छथि हमरा संगे शुभ चिंतनमे

कोना बिसरबै रात्रि दिसंबर सोलहके
शाप सुनै छी आरभयाक ओइ दिनमे
(सरल वार्णिक बहर/वर्ण16)

<u>गजल</u>

शौयभशील आ घाि तकै ि
ह’ि थियं ि ि तकै ि

गाि ि व्ड़क’ एलौ पटना
आब अहूठा गाि तकै ि

अहा गीत ि अही गजल
अहीि चार धाि तकै ि

सर पोिि सर पनाि
खाली अपने नाि तकै ि

िवि ल ि िवि ल बथ्तीि
धोती औि खिि तकै ि
(सिल िवाक बहि/िणभा10)

<u>गजल</u>

कानि तूि धेने अवि लोक गजल की कहबै
रोसिं राग खेने अवि लोक गजल की कहबै

बवियातीके चाही िि िउस औि सिगुल्ला
कबैले’ जान देने अवि लोक गजल की कहबै

हो ब्लडपेशि डायबटीज क आन कोनो िग
रोजले’ िूह बेने अवि लोक गजल की कहबै

खुटा त गडतै ओहीठाि जत’ ह’ि कहै विऐ
एकेटा गीत गेने अवि लोक गजल की कहबै
िपाक जिब पािसिं देबाक चलन गेल
हािि बि नेने अवि लोक गजल की कहबै

चतुिी िधुशािनी कोजगिा औि जिउि
कालके ताड़ केने अवि लोक गजल की कहबै

चाव्हयै सरके जाडि िद आ गिीि बसात
खिड़की बंद केने अवि लोक गजल की कहबै

(सिल िवणक बहि/िणभा18)

गजल

ह’ि कनैि ी हँसैए लोक
पता ने की की बजैए लोक

कन्यादान अहाक घ’ि ि
लेकिन बखभगनैए लोक

सयि नबो फ़ूकस बजैए
हविशंर कहबैए लोक

पोनेपि ठोकै ि ी तबला
खूब अहूँके कयन्हैए लोक

कियो बनैए ि त कोनोठा
सीढ़ी जखन बनैए लोक

देखू कियो िवियोक’ जीबय
वजकाते कतौ ि िए लोक

(सलि िवाक बहि/िणभा10)

<u>गजल</u>

अपन उपर्थिक्त दजभकिब' चाहै ी ऐ संसाि
ताक्क हिल ी रोि-रोि नाि अपन अख़बाि

िओटा कन्यादान केलौ आ बाहिटा िदिान सेहो
एक पैि घ'ि िहै िल दोसि हाट-बजाि

राि-दौड़ आ रोज-राति स'र क्दन लगले हिलौ
स'र साल कजा पि कजा सटले हिल कपाि

उक्यतनुक्यतक ्यान नै केलौ नै गेलौ तिदानि
आब बैक्स टेटि गनैत ी ऐ चूनल सकाि

एक्ह धािसं ओक्ह धाि कबुला-पाती कविते हिलौ
नै केलौ कोनो पर्िितिन अपपन तुचि विचाि
राि्वा एलौ क्दि-िथिजद-वार्विजाघि-गुरदािसं
एखनो लोक तकैए हिि ऋक्षकेश-हर्विदाि

(सिल िवणाक्र बहि/िणभ-20)

गजल

सभ घर सभ आंगनमे देखल चोरा-नुकी
पसरल जन-जीवनमे देखल चोरा-नुकी

कखनो नाचय कखनो कानय सभ दुश्नायामे
सभतश्च तन-मन-धनमे देखल चोरा-नुकी

परवत-सन भारी आ हल्लुक तूरे-सन सभ
सभश्चन सभ दरपनमे देखल चोरा-नुकी

जश्चना आबय तश्चना जाइछ सरदी-गरमी
पल-पल पश्चवरतनमे देखल चोरा-नुकी

जे हेतै से नीके हेतै कहइछ गीता
अन्ताक अश्चानन्दनमे देखल चोरा-नुकी

(माता-िम :222222-222222)

गजल

भात दालि तरकारी ला
मंगनी पैच उधारी ला

सभ चाही एखने चाही
बेचिक' घ'र घरारी ला

उपनयनक अछि की
गहना आ धोती साडी ला

परम्परामे फँसा गेलौ
चल कोनो बुधियारी ला

ईहो दुःख, छैक पाहुन
झटद' पान सुपारी ला

बियाहसं खर्चाए भारी
बदलबाक तैयारी ला

राम-राज हो दुनियामे
हुनके-सन भैयारी ला

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-9)

गजल

ऐ ठामक लोक बदलाम भऽ गेल छै
सभ रस्तापर एते जाम भऽ गेल छै

ने खा सकैत छी ने पीब सकैत छी
एहनो वस्तुक एते दाम भऽ गेल छै

जकरा नै सोहाइ छै भाएक खुशी
ओकरा ठोरपर शीराम भऽ गेल छै

नै एलै झोडी टागैले' उपनैनमे
एहेन अफसोख चार माम भऽ गेल छै

ए सी कारमे बैसल भऽ गयो सोचैए
ओकरा लेल विधाता बाम भऽ गेल छै

(सरल वार्णिक बहर/ वर्ण13)

गजल

कखनो सागर कखनो झरझर कखनो फूल समान गजल
कखनो लागय धधरा धह-धह कखनो तीर कमान गजल

कखनो खुरपी कुडहरि खंती ऊखरि और समाठ जका
कखनो बाड़ी कखनो गाछी कखनो भेल मचान गजल

कखनो आंगनमे अपनापन सन कखनो नार-पुआर जका
कखनो चालनि कखनो बाढ़ि कखनो पान मखान गजल

कखनो गामक चौबटिया लग मंदिर और इनार जका
आ कखनो सीमापर लडइत देशक वीर जवान गजल

कखनो मौनी आ पौतीमे साठल जीर-मरीच जका
कखनो कोसीमे हलचल आ छटपट कोसिक परान गजल

ककरो खातिर मुरही-कचरी जामुन आम लताम 'अमल'
हमरा खातिर दीयाबाती अथवा देव-उठान गजल

(मात्रा-क्रम : 2222-2222-2221-12112)

<u>गजल</u>

कहलक जामुन आम साढू
नै जा सकलौ गाम साढू

सभ रस्तापर ालि-कादो
सभ रस्तापर जाम साढू

श्वकरदानी छै छोट ओकर
जकर ब िका नाम साढू

बाहर सभठा भेल आदर
घरमे छी बदलाम साढू

सबहक मा िक पाग छश्चायै
बनलौ आब खराम साढू

सोची कते भेल रावण
एके भेला राम साढू

(माता-ि म : 2222-2122)

गजल

सेवक छी हम राजा छी हम
बौआ बाबू बाबा छी हम

ककरो खाश्चार छी थाश्चजाघर
काशी छी हम काबा छी हम

कोनोठा पाछा छी जगमे
आ कोनोठा आगा छी हम

कहुना बाचल छी हमहूँ सभ
अश्चपन पुरहर लाबा छी हम

सबहक घरमे हमरे चलती
चकला बेलन आंटा छी हम

हमरे खाश्चार हल्ला-गुल्ला
गहना-गुश्चया कपडा छी हम

हम्मर दुःख जश्चना के तश्चना
मा सीताके श्चथिला छी हम

(माता-िम : 2222-2222)

<u>गजल</u>

बाजब ककरोसँ सिखलौ
कानब ककरोसँ सिखलौ

सिखलौ ककरोसँ झगडा
मारब ककरोसँ सिखलौ

सिखलौ ककरोसं छीनब
मागब ककरोसँ सिखलौ

िकब ककरोसँ सीखल
राखब ककरोसँ सिखलौ

सोचब देखब क’ रब की
ठानब ककरोसँ सिखलौ

हम के छी आ अ’ हा के
जानब ककरोसँ सिखलौ

हम भवसागरसँ थाकलब
िानब ककरोसं सिखलौ

(माता-िम : 2222-122)

गजल

सत्यक पूजा घर-घर रश्चतै
दुश्माया कते सुन्दर रश्चतै

सबहक श्चरदय रश्चतै नमहर
वाणी सबहक श्मठगर रश्चतै

ककरो कीयो दुःख नै दीतै
सभके सभले’ आदर रश्चतै

मापिर उघने चल अश्चतौ
मोटा कतबो भश्चगर रश्चतै

एते दुःख दीतै नै मनसा
यश्च अपनो ओ श्चितगर रश्चतै

एके सुरमे बश्मतै सभक्यो
भारत सबहक ऊपर रश्चतै

(माता-पिम : 2222-2222)

<u>गजल</u>

बाघ जका लोक आ हुरासि जका लोक
गाम-गाम भेटता सियार जका लोक

जहा-तहा पोखरि-इनार जका लोक
सागर नदी आओर धार जका लोक

खाथि जका लोक किछु आथि जका लोक
देखने छी नार आ पुआर जका लोक

सभठा करथि मोल-भाव नाप-तौल
भेटत जेता हाट आ बजार जका लोक

रसलके बौसय भूखलके नोतय
जामुन लताम कुसियार जका लोक

गंगाक ज'ल-सन किछु लोक भेटला
भेटला हिमालय पहाि जका लोक

लोकेले' जीबय आ लोकेले' जान देत
गेदा गुलाब हरसिंगार जका लोक

(सरल वार्णिक बहर/ वर्ण14)

गजल

गीत लीखब-लीखबक’ गजल लीखब-लीखबक’
ह’ म मौन भेल छी नोरेमे भीजब-भीजबक’

लोकेके देखब-देखब पेम हम करैत छी
लोकके ठकैत छी लोकेके देखब-देखबक’

संस्कृतिक ऊपर सभ्यता सवार भेल
फ्लैट हम कनैत छी खेत बेचब-बेचबक’

क्यो िशीसं जान दैत अछि मातृभूमिले’
क्यो मगन रहैए देशेके लूटब-लूटबक’

सत्यक पराजय ‘असत्यमेव जयते’
घोषणा करैछ क्यो ताल ठोकब-ठोकबक’

एना कए ओना कए एहेन कये भेलै
राशन-पानि झकैत छी यैह सोचब-सोचबक’

(सरल वार्णिक बहर/ वर्ण 15)

गजल

अहंकारमे सश्चखन छी
अहा कंस छी रावण छी

अहा बात सबहक काटी
अही बाउ दुरजोधन छी

महावीर मनभावन छी
अहा राम आ लछुमन छी

अहा चुपप रश्च जाइत छी
महाधीर मनमोहन छी

जते दृश्य अश्छ दुश्आयामे
महाभारतक जीवन छी

हमर मोन नीपल आंगन
अहा ओश्वमे अश्वपन छी

अबै राश्ना आ श्वन अश्वना
कते नीक आयोजन छी

(सभ पाश्वामे माता ि म-1221-2222)

<u>गजल</u>

मन अतीतमे भाथ्रा चलैए कखनो-कखनो
खीर कोबरक मोन पिॅए कखनो-कखनो

ललका धोती आँख्रमे काजर पाग मापिर
गीत मनोहर नेह भरैए कखनो-कखनो

पाकल-पाकल आम गाछमे केहेन-केहेन
मोनक गाछी गमक्क उठैए कखनो-कखनो

कुम्हरौिी ब’डी सकरौिी द’ही आ रसगुल्ला
भोज गामकेर सोर करैए कखनो-कखनो

सभतथ्र सथ्रखन िल-कीच लाठी आ भाला
थ्रठगर डंि िल बजैए कखनो-कखनो

कखनो-कखनो राम अबै छथ्रि तन-मनमे
खेल जका वनबास लगैए कखनो-कखनो

जेठक रौदजका ई जीवन-डगर ’अथ्राल’
शीतल मीठ बसात बहैए कखनो-कखनो

(सरल वाथ्राक बहर/ वणथ्र17)

<u>गजल</u>

ककरासं ई कही हम कहबामे लाज होइए
ल’ क’ श्चसश्च गेलाह ओ मड़बामे लाज होइए

ठुमरी ई सुश्चा-सुश्चाक’ परेशान भेल छी हम
भागब त ओ की कहता भगबामे लाज होइए

नभ्नो बरखमे एखनो दनदना रहल छथि
हुनका समक कारसं चलबामे लाज होइए

िस-बुक के ई जमाना मोबाइलकेर जमाना
अपनश्च श्चखा-श्चखाक’ डंटबामे लाज होइए

एश्च ठाम मैथिली छथि ओश्च ठाम मैथिली छथि
श्चन्दीमे हम ने बाजब बजबामे लाज होइए

(सरल वार्णाक बहर / वणव: 18)

गजल

ककरोले’ मजबूरी कथ्वता
हमराले’ कस्तूरी कथ्वता

लागय सौसे दुथ्नया अपने
गप्पक ब िका धूरी कथ्वता

कथ्व आ पाठक दूरे रहला
कम नै केलक दूरी कथ्वता

ककरो खाथ्नार बथ्ना-बथ्ना आबय
सीनुर थ्टकुली चूि ी कथ्वता

कथ्हया ककरो खाथ्नार बनती
तरकारी आ पूरी कथ्वता

(माता-ि म : 22222222)

<u>गजल</u>

गरमी जाकि खेल थ्मनगी
थ्सन आ राश्मक मेल थ्मनगी

कखनो लागय िूल गाछक
कखनो लागय रेल थ्मनगी

कखनो पाकल आम जामुन
कखनो काचे बेल थ्मनगी

कखनो लागय माछ पाश्मक
कखनो लागय जेल थ्मनगी

मेला सभश्सन पाप पुण्यक
संगम सन अश्छ भेल थ्मनगी

बाजय ताधश्व िल डंिा
जा दीयामे तेल थ्मनगी

(माता-िम : 2222-2122)

<u>गजल</u>

मौन रहत ओ
राम जपत ओ

जैह ऋाखेबै
सैह करत ओ

तेज चलेबै
तेज चलत ओ

जैह करत ओ
सैह कहत ओ

चोर कहू जुऋा
चोर बनत ओ

वाह कहै क्यो
खूब हंसत ओ

पाइ बहुत छै
भोज करत ओ

पाग खसै नै
पैर धरत ओ

आथा मुतै छल
आब मरत ओ

(माता ि म : 21-122)

<u>गजल</u>

नै अछि भुस्सा नार हमरा
आ रे बरदा मार हमरा

तकरे पाछा जैब हमहूं
जे देलक कुसियार हमरा

जकरा सबहिन गोर लागी
से बूझय बुधियार हमरा

कखनो सबकिछु ठीक लागय
आ कखनो बेकार हमरा

नारक तोशक आगि घूरक
मोने अछि ओ जाड हमरा

अनकर साडी फ्लैट गाडी
केने अछि बीमार हमरा

जकर खेबै गैब तकरे
एते अछ अधकार हमरा

जेहन खेबै गैब तेहन
कहने अछ संसार हमरा

जाधर खेबै गैब ताधर
सब केलक लाचार हमरा

भरि दुनयामे चोर डाकू
कहइत अछ अखवार हमरा

समले' सुख आ शान्त ताकी
सय कोसक अछ भार हमरा

(माता िम: 2222-2122)

<u>गजल</u>

घूमि एलौ हम जहा-तहा ऐ दुनियामे
कियो ने भेटल अहा जका ऐ दुनियामे

सूयक चार कात घुमथि धरती मैया
छथि जननीके चैन कहा ऐ दुनियामे

पाप ीिक अनकामे ताकब दोखक्षटा
सबसं बिका धमवकमा ऐ दुनियामे

जतेक सिकन्दर एला खाली हाि गेला
अंतमे टूटै सभक आशा ऐ दुनियामे

ओ सम्पति जे मुइलो पर जायत संगे
जतेक मोन हो कर जमा ऐ दुनियामे

चलू-चलू ऐ दुनियासं हंसते-हंसते
जुनि ककरोसं कर घृणा ऐ दुनियामे

(सरल वार्णिक बहर/ वणव-15)

गजल

काश्च कटै छी तोरे ले'
गीत गबै छी तोरे ले'

माश्च हवा आ जल बनलौ
आश्चा बनै छी तोरे ले'

चानक चोरी केलौ हम
भोर अनै छी तोरे ले'

रौद बहुत छै दुश्चायामे
छाह तकै छी तोरे ले'

बात हमर ई बूझत के
हम कुहरै छी तोरे ले'

(माता-ि म : 21122- 222)

<u>गजल</u>

सभके कमल सामान बूझू
संगमे छवि भगवान बूझू

बेटा पुतहु पौत और पौती
सभके गगनक चान बूझू

मोनक शान्ति अमोल होइए
एकरहि सोनक खान बूझू

छला जे पवित्र खाद्य बनला
समय कते बलवान बूझू

बाढ़ि और भूकम्पक ताडव
छटपट कोटि परान बूझू

अखिल त्याग धनु जिनगी की
धनु धानक खलिहान बूझू

(वर्ण 11)

गजल

देखबामे नीक लागल सुनबामे नीक लागल
शब्दक इनार पोखरि खुनबामे नीक लागल

आयल पहाड जते सभ तूर सन बुझायल
मनसं धुनैत रहलौ धुनबामे नीक लागल

अहा आंखिसं जे कहलौ से बात हम बुझलियै
सभ ठाम फूल गाछक चुनबामे नीक लागल

केलौ कतेक मेहनति भरलौ दुखक खजाना
अपनाले' जाल अपने बुनबामे नीक लागल

कखनियो बबूर वनसं भयभीत हम ने भेलौ
बीहरि कतेक सापक मुनबामे नीक लागल

वर्ण18

<u>गजल</u>

करणा आदर पेम सिखबैयौ ऐ बौरहबा मोनके
बटुक कनेक काबूमे रखबैयौ ऐ बौरहबा मोनके

देशक आजादीके खातिर ासी चिला युबक कते
भगत सिंहके किा सुनबैयौ ऐ बौरहबा मोनके

जहा-तहासं झोथि-झाथिक' झोरी अपपन भरइत छी
अयाचीक किछु पाठ पढ़बैयौ ऐ बौरहबा मोनके

अपने खातिर कते हरानीसँ बुनैत छी जाल अहा
सत्य,शान्तिकेर बाट धरबैयौ ऐ बौरहबा मोनके

नमन कर भारत माताके, अपन संस्कृति,भाषाके
सोझ बाटपर सत्य चलबैयौ ऐ बौरहबा मोनके

(वणब 20)

<u>गजल</u>

पर-श्चिंतनसं मुक्त करैए राम-कथा
जीवनमे सुख-शान्ति अनैए राम-कथा

असली धन की छैक भरतजीसं सीखू
मोनक सभटा व्याधि हरैए राम-कथा

सेवामे आनंद कते हनुमाने कहता
पवल आत्म विश्वास भरैए राम-कथा

रावणसं सीखू परिणाम अहंकारक
राज स्वयंपर कर कहैए राम-कथा

सहनशीलता, पौरुषके संगम देखू
भवसागरले' नाव बनैए राम-कथा

(वर्ण-15)

आशीष अनचिन्हार

किछु जोगीरा*

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा
सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

कहानी भेलै काच कविता भेलै तीत
पुरस्कार लेल जूरी लागै बापोसँ मीठ

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

पोथी लेने घूमैए बौआ कोने कोन
जूरी केर दशबा भेलै चानी ओ सोन

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

अहिर दरहर सभ छै राति
दरभंगा बलाके बचलै ने चार

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

पटना बला सूतल छै लऽ कऽ नेपाली
सहरसा बला बजाबैए खूब्बे ताली

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

कवि की कथ्यता लीखू मगजक खेतमे
पुरस्कार तँ जेतै दरभंगाये के पेटमे

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

दू दुनी चारि पाँच बनलै चारि सए बीस
जूरी के दरबज्जापर चरबै महीस

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

गोष्ठीमे गुष्ठीपर होइ छै चचा
तइ बाद भेटै छै चमचाके खचा

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

बोतल एक सोटल एक थाकेन मटन
जूरी लोभाबै देखा कऽ बदन

जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा

पुरना लेखक लेल अनेरे बबाल
नवका हँसोथि गेल सभहँक माल
जोगी जी सारा रारा रारारारारारारारा जोगी जी सारा रारा
* सनिक नाम साहित्यसँ संदर्भित अछि।

कविता- ि र

"चुप ठोरक अवाज बहुत दूर धरि जाइ छै"
"सिक्कामे अवाज होइ छै नोट चुप्पे रहै छै"
एही प्रशासक संग ओ चुप रहला बहुत दिन
आ अंतिम समयमे जखन किछु बजबाक जर रति बुझेलनि
तखन कमजोर अंग संग नै देलकनि

<u>रुबाइ</u>

अपन पीठ अपने ठोकि लेलियै हम
अपन गेद अपने लोकि लेलियै हम
आनक गला घोटलासँ की फायदा
अपन कंठ अपने मोकि लेलियै हम

बाल गजल

तीने वणक बनल थ्रठाइ
तीने वणक बनल मलाइ

तीने वणक बनल थ्रकताब
तीने वणक बनल पढ़ाइ

तीने वणक बनल सलाह
तीने वणक बनल लिाइ

तीने वणक बनल िचाथ्रि
तीने वणक बनल थ्रटाइ

तीने वणक बनल अकास
तीने वणक बनल लटाइ

तीने वणक बनल इजोत
तीने वणक बनल सलाइ

सभ पाश्चामे 22-2212-121 माताािम अश्छ

गजल

जे अछि जयकार विरोधी
से अछि दरबार विरोधी

ई मानू या नै मानू
सभ छै अधिकार विरोधी

संसारे खातिर देखू
भेलै संसार विरोधी

खाली संगे भरलाहा
बनतै अवतार विरोधी

चार दिस बंदूक मुदा
कहलक हथियार विरोधी

सभ पाँतिमे 222-222-2 मात्राक्रम अछि, दू टा अलग-अलग लघुके दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

गजल

रस रंग साधना काम्य हमर
मधु आसक्त वासना काम्य हमर

अछि हृदयमे राखल नेह मधुर
शेष सशक्त भावना काम्य हमर

छोट छीन जीवन रहै मुदा
सही प्रस्तावना काम्य हमर

अहा जपैत रहू अविनाशके
नीक संभावना काम्य हमर

संग रही स्पर्श रही अतबे
छोट शुभकामना काम्य हमर

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि (बहरे मीर),
दू टा अलग-अलग लघुके दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

<u>गजल</u>

क्कयो हँसलै कोनो बातपर
क्कयो कनलै कोनो बातपर

क्कयो उक्क गेलै बि ऊँच आ
क्कयो खसलै कोनो बातपर

क्कयो चुप्पे रहलै देर धक्ष
क्कयो बजलै कोनो बातपर

क्कयो पारि बक्ष क्षांदा रहल
क्कयो गललै कोनो बातपर

क्कयो रहलै तक्षआएल सन
क्कयो भजलै कोनो बातपर

सभ पाक्षामे 1222-22-212 मातामि अक्ष

<u>गजल</u>

नौकर बनलै गरीब बच्चा
होटल मोटल ईटा भटा

रसगुल्ले सन के जीवन छै
दुइए क्षनमे खटा खटा

अपना अपनी केलहुँ बड़ाइ
अपने कहलहुँ अच्छा अच्छा

अइ नेहक मारल हमहूँ छी
दुश्आया लागै थिका थिका

किछु परसादी हमरो भेटल
हमहूँ खेलहुँ फिके फिका

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि, दू टा अलग-अलग लघुके दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

<u>गजल</u>

छै सभ कियो असगर
अपने अपन सहचर

ई आँखि ओ आँखि
दुनू रहल मजगर

बुझबै अहा सभ किछु
एतै जखन अवसर

जीवन मने बिजनस
बिस्को रहत कसगर

संवेदना टूटल
खूनो रहै पनिगर

सभ पाँतिमे 2212-22 मात्राक्रम अछि
दोसर शेरक पहिल पाँतिक लघुके दीघवमानबाक छूट लेल गेल अछि।

गजल

छन भश्च के पश्चचान छै
जीवन भश्च अनुमान छै

सोना चानी बैकमे
आँचरमे दुश्आ धान छै

पुरश्चत आ जजमान संग
अपने ओ भगवान छै

चुप्पे रहलहुँ देश्वतो
केहन ई अश्आमान छै

स्वामी अनश्चन्हार जी
हमरे सन बइमान छै

सभ पाश्चामे 222+2212 माताा्िम अश्छ, तेसर शेरक पश्चल पाश्चाक अंश्चाम लघु छूटक तौरपर लेल गेल अश्छ, मकतामे हमरा जनैत दोष छै। पश्चल पाश्चामे "जी" आदर सूचक छै तँ दोसर पाश्चामे "छै" बराबरी सूचक।

<u>गजल</u>

लूटक मंडीमे बैसल छी हम
झूठक मंडीमे बैसल छी हम

भेटैए रंग बिरंगक समाद
दूतक मंडीमे बैसल छी हम

छै हुनके िरी सभहँक बुरसा
भूखक मंडीमे बैसल छी हम

अबियौ किनियौ हमरे दोकानसँ
छूटक मंडीमे बैसल छी हम

कोठा बनलै सौसे दुनियामे
खेतक मंडीमे बैसल छी हम

सभ पाँतिमे 222-222-222 मातािम अछि, दू टा अलग-अलग लघुके दीर्घ मानल गेल अछि — लघुके िायम शैथिल्यक तहत एकटा दीघवमानल गेल अछि

<u>गजल</u>

दिल्ली पटना गाम लखन
काजक मारल राम लखन

टुक टुक ताकै जेबी सभ
कोना चुकतै दाम लखन

ई सभ छै अग्निपरीक्षा
टप टप चूबै घाम लखन

सभहँक भीतर रावण छै
नाम भने हो राम लखन

बझाया बैसल बच्चे ठा
बेचै अप्पन चाम लखन

सभ पाँतिमे 22-22-22-2 मात्राक्रम अछि

<u>गजल</u>

देह बझ्आया गेल छै
मोन मसुआ गेल छै

बाद्ध्ध़ रौदी सभ सही
मेघ अगा गेल छै

ाइलो सभ कध्ध्ध रहल
काज अध्ध्धया गेल छै

आइ ि रो हेतै ध्ध्कछु
बात भध्ध्मया गेल छै

पाश्ा चाहै ठोरके
धार डेरा गेल छै

सभ पाश्ामे 2122 + 212 माता ि म अध्ध्छ, चाश्ाम शेरक पश्ल पाश्ाक एकटा अंश्ाम दीघके लघु श्ायम शैथिल्यक तहत मानल गेल अध्ध्छ

गजल

आइ ि र श्चांद नै अबैए आइ ि र श्कयो जागल हेतै
आइ ि र मोन नै लगैए आइ ि र श्कयो जागल हेतै

आइ ि र चोट लाश्चा गेलै आइ ि र श्कयो मलहम देलक
आइ ि र ददवबि उठैए आइ ि र श्कयो जागल हेतै

आइ ि र देह छू श्कयो चश्का गेल ि र श्कयो बैसल अश्छ
आइ ि र सेज सभ बुझैए आइ ि र श्कयो जागल हेतै

आइ ि र नोर आश्व गेलै आइ ि र श्कयो पोछत जल्दी
आइ ि र आँश्व ई बजैए आइ ि र श्कयो जागल हेतै

आइ ि र लोश्व लेत हमरा आइ ि र श्कयो छोति हमरा
आइ ि र नेह श्कछु कहैए आइ ि र श्कयो जागल हेतै

गजल

जै ठा अबाह नै हेतै
तै ठा उछाह नै हेतै

रहतै समुर नुनगर आ
पोखरा अािह नै हेतै

केना कहू जे किछु रहने
दुआया बताह नै हेतै

किछु झूठ लेल मरलो सन
सच तोतराह नै हेतै

सभ साधनाक एकै िल
जीवन कँचाह नै हेतै

सभ पाँमे 2212+1222 मातािम अछ, दोसर शेरक पहल पाँमे एकटा दीघके अायम शैथिल्यक कारण लघु_मानल गेल अछ

<u>गजल</u>

छौ तोहर केहन करतूत सखी

देखब जो कनी हमर सबूत सखी

छै काचे जौबन काचे जीबन
नेहो हुनकर काचे सूत सखी

बहुते झुकला टुटलापर लागल
दुनियामे किछु नै अजगूत सखी

हुनकर धारना सेहो बुझलहुँ जे
हम्मर नेह कते मजबूत सखी

नहिए रहलै प्रशंसो लायक
अनचिन्हरबा छै अवधूत सखी

सभ पाँतिमे 222-222-222 मात्राक्रम अछि, दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

<u>गजल</u>

कियो चूसि गेलै बहुत
कियो हूसि गेलै बहुत

कनी बातपर जानि कऽ
कियो रूसि गेलै बहुत

छलै मूँह बिसान के
कियो दूसि गेलै बहुत

रहै भूर कनिाये मुदा
कियो घूसि गेलै बहुत

अहा सन कि हमरे सनक
से महसूसि गेलै बहुत

सभ पाँतिमे 122-122-12 मात्राक्रम अछि, दोसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघु संस्कृतानुसार दीर्घ मानल गेल अछि, अंतिम शेरक दोसर पाँतिमे एकटा दीर्घकेँ लघु मानल गेल अछि

<u>गजल</u>

हरजाइ छलै ओ
कस्साइ छलै ओ

घाटा छथि अपने
भरपाइ छलै ओ

भोरक भूखल लग
लटुआइ छलै ओ

लक्ष्य जकर बहकल
अगुताइ छलै ओ

देखब कऽ अनचोके
पछताइ छलै ओ

अनथ्आन्हारेपर
थ्आतराइ छलै ओ

सभ पाश्नामे 22-22-2 माता मि अछि, दू टा अलग-अलग लघुके दीघवमानबाक छूट लेल गेल अछि

<u>गजल</u>

हम्मर हक केर बात के करतै
आ गुड लक केर बात के करतै

भागल जे छीनि छाउर मोनक नेह
ओहन ठक केर बात के करतै

चालू छै आन जान बहुते तँइ
उपजल शक केर बात के करतै

हीरा मोतीक भीरमे ओकर
नाकक छक केर बात के करतै

जागल सूतल अही छियै सरकार
टूटल भक केर बात के करतै

सभ पाँतिमे 22-2212-1222, दोसर आ पाचम शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघु छूटल शैथिल्य बूझल जाए

गजल

देशमे उत ाल नवका
ददवपुरने हाल नवका

धार जानै नेत सभहँक
माछ पुरने जाल नवका

किछु चुनौती ि र एलै
लोक ठोकै ताल नवका

छै जर रे खाद िटल
खेत पुरने टाल नवका

दाग लगने इज्जते छै
देह चाहै ि ल नवका

सभ पाँतिमे 2122+2122 मातािम अछि (बहरे रमल मोरब्बा सालिम वा बहरे रमल सालिम चारि र की)

<u>गजल</u>

बिका बिका धारे झा
सौसे छै बुधियारे झा

मुरदा सन के दुनिया छै
की करता हथियारे झा

सूतल दुखिया मोन हमर
जागल बस संसारे झा

हमरा लग सुखले सुक्खल
हुनका लग रसदारे झा

अगुआइ धेने एकै दू
बिच बैसल पछुआरे झा

सभ पाँतिमे 222-222-2 मात्राक्रम अछि

गजल

कश्माये दूर नबाबक गाम
बहुते दूर श्वकासक गाम

बीचो बीच िसादी ठाढ़
चार कात लहासक गाम

श्चकनको लेल हजारो लाख
श्चकनको लेल उधारक गाम

बि खुश बाश्च कऽ नव नौतार
चुपे चूप पुरानक गाम

अंश्चाम र प दुखक एहन छै
दाही मागै सुखाकि गाम

सभ पाश्चामे 2221 + 12221 माताि म अश्छ

<u>गजल</u>

मंच माला आ गजला भेटत
घोषणा छुच्छे घोषणा भेटत

मेहनतिक हेतु ने सकत कतौ
साध्य बनि गेने साधना भेटत

पेम छै देहक नेह छै मोनक
वासना केने वासना भेटत

रीत छै सभहँक एहने एहन
मान केने अवमानना भेटत

जज बनल अनसनहार लग खाली
एहने सन संभावना भेटत

सभ पाँतिमे 212+22+212+22 मात्राक्रम अछि

गजल

सरकार केकरो नै
दरबार केकरो नै

बकलेल जान दैए
बुधियार केकरो नै

जे बेचि देत एहन
अधिकार केकरो नै

जयकार छै छिनार
जयकार केकरो नै

हटले रहू बहुत दूर
चिन्हार केकरो नै

सभ पाँतिमे 2212+122 मात्राक्रम अछि, तेसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघुके संस्कृत परंपरानुसार दीर्घ मानल गेल अछि, चारिम शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघुके छूटक तौरपर लेल गेल अछि

गजल

नेह लगाबैए कियो कियो
भाग बनाबैए कियो कियो

आँखि बला भेटल बहुत मुदा
नोर लुटाबैए कियो कियो

आब तँ छै बेपार चोट केर
ददवनुकाबैए कियो कियो

बात सुनाबैए सगर नगर
बात बुझाबैए कियो कियो

देह छुआबै आदमी बहुत
मोन छुआबैए कियो कियो

सभ पाँतिमे 21-1222-12-12 मात्राक्रम अछि, तेसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघु छूटक तौरपर अछि

<u>गजल</u>

एकै रातिमे फकीर भऽ गेलै
दुइए पाँतिमे कबीर भऽ गेलै

भरि देने रहै जै खाद्यान्न समस्याक
कहियाये कालमे गँहीर भऽ गेलै

जे सुंदर इजोरिया लऽ कऽ नाचल
गहणक नामपर अधीर भऽ गेलै

पहिने नाम बि सुनलकै विकासक
ओकर बाद सभ बहीर भऽ गेलै

मेटा देलकै अभिमान गरीबक
एनाही तँ सभ अमीर भऽ गेलै

सभ पाँतिमे 2221-212-1122 मात्राक्रम अछि, दोसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघु छूटक तौरपर अछि, किछु दीर्घके लघु मानबाक छूट लेल गेल अछि

<u>गजल</u>

पशो चुप छै
उतरो चुप छै

आँखिक दुखपर
सपनो चुप छै

उघलि बरतन
झँपनो चुप छै

मेल अलापो
झगड़ो चुप छै

अनका संगे
अपनो चुप छै

सभ पाँतिमे 2222 मात्राक्रम अछि, दूटा अलग अलग लघुके दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

गजल

सौसे दाबल अछि आँजुर भरि संघर्ष
किछुए बाचल अछि आँजुर भरि संघर्ष

ओ अनलथि हीरा मोती हुनका लेल
हमहूँ आनल अछि आँजुर भरि संघर्ष

नोटक संगे भोटक संगे घुमि घुमि कऽ
बहुते नाचल अछि आँजुर भरि संघर्ष

सुंदर हाथि बच्चे आँगनमे खूब
अरिपन पालि अछि आँजुर भरि संघर्ष

चिन्हारो एतै अनचिन्हारक बाद
ता धरि राखल अछि आँजुर भरि संघर्ष

सभ पाँतिमे 22-22-22-22-221 मात्राक्रम अछि

<u>गजल</u>

कना कऽ पूछै हाल जगत
बहुत पसारै जाल जगत

अहीसँ भेलै दीन दुखी
अहीसँ मालामाल जगत

सुतल सुतल छै डाइवरे
खसल पलि श्चारपाल जगत

के के बढ़ल अछ्छ आगू तकर
बहुत करै पिताल जगत

हुनक जगत छश्चा सोन सुगंश्चा
हमर तँ कादो िल जगत

सभ पाश्चामे 12-122-21-12 मातामि अछ्छ, तेसर शेरक पश्चल पाश्चामे दीघके लघु मानबाक छूट लेल गेल अछ्छ, अंश्चाम शेरक पश्चल पाश्चाक अंश्चाम लघु छूटक तौरपर लेल गेल अछ्छ

गजल

आश्चु उठबे करतै इयाद एलापर
नोर खसबे करतै इयाद एलापर

पाश्चा खाली देहक श्चझा सकैए बस
मोन जरबे करतै इयाद एलापर

हाल केहन से अनुभवेसँ बुश्झ सकबै
ि ूल झ िबे करतै इयाद एलापर

मलहमो बेकारे बुझाइए हमरा
घाव रहबे करतै इयाद एलापर

पश्चि रहब ओछाएनपर नै छै सूतब
आँश्चि जगबे करतै इयाद एलापर

सभ पाश्लामे 2122+2212+1222 माता ि क अश्छ, अंश्लाम शेरक पश्छल पाश्लामे एकटा दीघके लघु मानबाक छूट लेल गेल अश्छ

गजल

आर जलेबी पार जलेबी
बि सुंदर संसार जलेबी

किछु ने कहबै चुप्पे रहबै
अपने छै बुधियार जलेबी

चाक कहू चि कहू या किछु
सभ सुनतै कुम्हार जलेबी

ओ सभ कहथिन भोजन साजन
हम कहबै हथियार जलेबी

रसगुल्ला सभहँक संगतमे
बनि गेलै खुंखार जलेबी

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि, दू टा अलग-अलग लघुके दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि

अशोक कुमार सहनी, लहान- ४ रघुनाथपुर , सिरहा, नेपाल, हाल- दोहा कतार

गजल

नहुं ऐलै रात्रि आन्द बस ताकैत गेलहुँ
अपन ददवकागज पऽ आखारैत गेलहुँ

रही जआनपऽ कोना छुब सकब अकाश
बस तरेगन बिच, चान्द निहारैत गेलहुँ

कमजोर रस्सती तऽ कखुया टूटल जैतहुँ
छी नरम ठाब सभ आगु झुकैत गेलहुँ

ओ जखना-जखना बदलैत गेलै रसता
हम इ जीनगीके ओखना थसैत गेलहुँ

आयल अशोकके जीनगीमे हावा बसाक
ओंहे आँखिसँ हम जीनगी ताखैत गेलहुँ

सरल वार्णाक बहर--१६

डा जियाउर रहमान जाफ़री, माफ़ी, आस्थावा, नालंदा, बिहार 803107

मुक्तक

जिनगी अपन कम नहि अछि
आँखि हमर ते नम नहि अछि
देश विकल अछि पेमक संग
गोली बारूद बम नहि अछि

आजाद गजल

अहा यदि उपकार करब
हमहूँ नीक व्यवहार करब

खुशी जिनगीमे नहि आयत
दुख के जब विस्तार करब

धमवजात पे नाम पे आडम्बर
कब तक अत्याचार करब

चि के बोलत मिथ्यावादी
सच के जब इनकार करब

ईहे सोचि के बिसरल सभ दिन
जनसर मे दीदार करब
केकरा अहा कहै छी नायम
हमर अछी सरकार करब

हमर भाखा मैथिली भाखा
कोना अकर इनकार करब

डॉ॰ शशिधर कुमर “विदेह”

६ टा कविता

हमर ई छओ गोट कविता मौलिक रूपसँ मैथिलीमे लिखित ओ अप्रकाशित अछि । ई कविता सभ तहिया लिखल गेल छल जहिया हम कॉलेज ऑफ आयुर्वेदमे (भारती विद्यापीठ, पूना) B.A.M.S. द्वितीय ओ तृतीय वर्षक (2nd & 3rd PROFESSIONAL YEAR) छात्र रही । ताहि समएमे महाविद्यालयक छात्र लोकनिमे EXTRA CO-CURRICULAR ACTIVITY के बढ़एबाक लेल “आयुर्वती” नामक WALL MAGAZINE पर कविता आदि साहित्यिक कृति लगाओल जाइत छल जकर संयोजिका शीमती इण्दापुरकर मैडम (तत्कालीन लेक्चरर आ बादमे विभागाध्यक्ष - शारीर क्रिया विभाग) छलीह । हमहूँ मैथिली कविता लेल प्रस्ताव देल मुदा पाठक आन केओ नहि छलाह ते ओकर हिन्दी अनुवाद (स्वयं द्वारा अनुदित) देब स्वीकृत भेल । ताहि अनुदित रचना पर स्पष्ट उल्लेख रहैत छल जे मूल रचना “मैथिली” भाषामे अछि । - डॉ॰ शशिधर कुमर “विदेह”

१

<u>कालचि (कविता)</u>

पना पर पना उनटैत रहल,
हर पृष नवल आत्-नूतन छी ।
जे बीतल चुकल से छल अदुत,
आबएबाला सेहो अनुपम छी ।।

ई समय-सत् अविरल बहइछ,
अपन पवाह - गति ओ लयमे ।
हम मूक ठाढ़ भऽ देखैत रहल,
हर एक दृश्य अविस्मयमे ।।

पाचीर कतेकहु ध्वस्त भेल,
कतबा तटबन्ह भेल कवलित ।
ि र ओकरहि सिञ्चल-सुधा-रससँ,
कतबा कोढ़ी* भेलहि विकसित ।।

एकरहि पभाओसँ ि र अज्ञान,
पारि मोती बनि आखरि गेल ।
अगणित हीरा पुनि भेल मलिन,
आ सीसा - टुकिड़ी बदलि गेल ।।

जे शेत पतीत होइत छल से,

देखल तँऽ कारी - गुजगुज छल ।
पाषाण-पश्चिम छल जे लगैत,
खन मोम जेका देखल पघिलल ।।

के भेल एतए जे कालचक्रिसँ,
बाचल सकल कहुखन कहियो ?
सुरपुर - जओ इन्द्र ने बचा सकथि,
की मानव केर हस्ती - कहियौ ??

* एहि कवितामे “कोढ़ी” शब्दक पयोग “पुष्प-कलिका” अछि वा अधकखिलत फूल वा फूल केर खिलएबासँ पुवक अवस्थाक अछि भेल भेल अछि ।

शब्दार्थ-

कोढ़ - ई शब्द मैथिलीमे “अनेकार्थिक शब्द” जेका पयुक्त होइत अछि । एकर एकटा अर्थ अछि“कुष्ठ वा महाकुष्ठ ” (अंगेजीक लेपसी वा LEPROSY) नामक बेमारीक सन्दर्भमे होइत अछि । दोसर पयोग “डाढ़” (हिन्दीक “कमर” आ अंगेजीक “वेस्ट वा WAIST”) केर सन्दर्भमे होइत अछि (यथा - कोढ़ तोड़ि देलक ... ...इत्यादि) । कल्याणी कोशकार “कोढ़गर” माने “कलेजगर” बतओलन्हि अछि । मुदा मैथिलीमे “कोढ़-करेज” दूनू संगहि-संग सेहो पयुक्त होइत अछि (यथा - ओकरा कोढ़-करेज काटि कऽ दऽ देबाये की ? ... ... आदि) जाहिसँ ई ध्वनित होइत अछि जे दुनू अछि “कोढ़” आ “करेज” दूनू अलग-अलग अर्थ रखैत अछि ।

कोढ़ी - ईहो शब्द मैथिलीमे “अनेकार्थिक शब्द” जेका पयुक्त होइत अछि । एकर पहिल अर्थ अछि पुष्प कलिकाक (हिन्दीक “कली” आ

अंगेजीक “फ्लोरल बड् वाFLORAL BUD”) केर अर्थमे होइत अछि । दोसर पयोग “कुष -रोगी” केर अर्थमे होइत अछि ।
कोढ़ि - एकर उच्चारण मैथिलीमे “कोइढ़” होइत अछि जकर मतलब अछि “आलसी” । यथा - कोढ़िआ बदि, कोढ़िआ मचान आदि ।
कोढ़ - ई शब्द सेहो दू अर्थमे पयुक्त अछि । पहिल “कोढ़” रोगसँ गसित व्यक्ति आ दोसर एहेन ताकि गाछ जाहिसँ ताडी नहि गरैत हो ।
कोढ़ी आ कोढ़ी - किछु लेखक लोकनिक मानब छनि जे “कोढ़ी” शब्द “पुष्प-कलिका” केर पर्यायवाचक थिक जखनकि “कोढ़ी” शब्द “रोग विशेष”के आर व्यक्त करैछ । एहि बातक पुष्टि किछु सीमा धरि “कोढ़ि या कोइढ़” शब्दसँ होइत अछि जकर व्युत्पत्ति सम्भवतः “कोढ़ वा कोढ़ी” शब्दसँ भेल अछि । आयुवेदमे कुष रोगक (कोढ़क) पमुख कारण आलस्य आ आलस्यकारी भोजन (मधुर ओ स्निग्ध) बताओल गेल अछि आ मैथिलीमे “कोढ़ि या कोइढ़” शब्दक अर्थ सेहो “आलसी” अछि । “कोढ़ि” शब्दक उत्पत्तिक एहि आधारके मानलासँ “कोढ़” शब्द कुठक पर्यायवाचक बूझि पडैछ आ “कोढ़ी” शब्द कुष रोगीक पर्यायवाचक जखनकि “कोढ़ी” शब्द पुष्प कलिकाक रूपमे पयुक्त बूझल जाएत ।
परञ्च सामान्य रूपेण देखबामे अबैत अछि कि जे केओ जीवन भरि गाममहिमे रहलाह (वा रहलीह) आ हिन्दी नहि केर बराबर जनैत छथि ओ आनुनासिकक पयोग करैत पुष्प-कलिका ओ रोग-विशेष दुहुक लेल “कोढ़ी” शब्दक पयोग करैत छथि । जखनकि, विशेषतः शहरमे रहनिहार (वा रहनिहारि) लोक जे हिन्दी नीक जेका जनैत अछि से आनुनासिकक पयोग नहि करैछ आ उपरोक्त दुहु अर्थमे “कोढ़ी” शब्दक पयोग करैछ ।

२

<u>कागत केर ि ूल (कश्चता)</u>

हम छोश्चि चलल हुश्चाकर नगरी,
जश्चाकर दुश्चञ्ञामे प्श्चार ने छल ।
छल देष - लोभ - छल - कपट सगर,
नश्चि छल तँऽ केवल प्श्चार ने छल ।।

वन - उपवन आ ि ुलबाि ी छल,
पर डाश्चि़ कोनहु ने ि ूल एकहु ।
जे श्चकछु छल, सब श्चकछु कागत केर,
नश्चि छल सुगश्चन्ध वा गमक कोनहु ।।

हम जश्चाका लेल रही पागल,
नश्चि हुश्चाका छल श्चवशास हमर ।
सब लऽग रहश्चि बस कहबा लए,
केओ अप्श्चान कहश्चाहार ने छल ।।

श्चमशब्

गमक = सुगश्चन्ध (मैश्चिलीमे; यि ा - ि ूल गमश्चक रहल अश्चछ)
महक = दुगश्चन्ध (मैश्चिलीमे; यि ा - आलू सश्चि कऽ महश्चक रहल अश्चछ) = गन्ध (श्चहन्दीमे) (श्चहन्दीमे "महक" या "मेहक" शब्द दुहु पकारक गन्ध मतलब श्चक "सुगश्चन्ध" ओ "दुगश्चन्ध" केर लेल पयुक्त होइत अश्चछ) ।

गन्ह, गन्धि आ गन्ध - ‘‘गन्ध’’ तत्सम रूप थिक, ‘‘गन्धि’’ अर्धतत्सम ओ ‘‘गन्ह’’ तदव रूप । मैथिलीमे तीनूक मतलब एकहि थिक आ से नाक/घ्राणेन्द्रिय (NOSE / OLFACTORY RECEPTORS) ग्राह विषय थिक जकरा अंग्रेजीमे ‘‘स्मेल’’ (SMELL / OLFACTION) कहल जाइत अछि । मैथिलीमे एहि शब्दसभक प्रयोग तीन अर्थमे होइत अछि -

(१) गन्ध केर स्वरूप अजात भेला पर; यथा - ई कोन तरहक गन्ध/गन्धि/गन्ह अछि ?

(२) प्रायः दुर्गन्धि केर अर्थमे; यथा - ई की गन्ध करै(त) छै अथवा ई की गन्हाइत छै ?

(३) कोनहु आन विशेषण लगला पर अथवा पूर्वसर्ग या भाव विशेषक अभिव्यक्तिक कारणे सुगन्धिक अर्थमे; यथा - महमह गन्ध, सुनर गन्ह, गुलाबक मादक गन्ध, रातुक रानीक गन्ध, मीठ गन्ध आदि ।

३

दू शब्द - अहँक पक्ष (कथ्वता)

अहँ जाए छी तँऽ जाउ, अहँक मजी,
सप्पत हमरा, हम नथ्व रोकब ।
हमरासँ दूर जँ खुश अपने,
सप्पत हमरा, हम नथ्व रोकब ।।

अहँ केर थ्मनगी, अथ्वकार अहँक,
अहँ केर इच्छा, जे अहा करी ।
मधु - अमृत - पान करी या ि र,
हालाहल - घट केर वरण करी ।।

जाश्व मृगतृष्णामे भटश्क रहल छी,
गीरह बान्हू, अहँ पछताएब ।
जाश्व बाटसँ उनटश्व पएर गेलहुँ,
आथ्यस ओश्वठा घुश्व पुश्व आएब ।।

जकरा पाछा छी भाश्व रहल,
से तँऽ बस माया छी केवल ।
अप्पन मश्वभमके ि र कर ,
पुश्व सोचू की छूटल - भेटल ।।

४

हे आकाके ! (कथ्वता)

हम आपना पक्षा उतरदायी छी,
तोहर कृत्यक तोऽऽहीऽ जानए ।
हम कएलहुँ जे से उक्षात रहए,
तोहर औक्षत्य तोही जानए ।।

अप्पन छक्ष अपनक्ष सोझामे,
कारी-मलीन नक्ष बनल रहए ।
अपनक्ष समक अप्पन मा ि,
लाजे बोक्षल ने झूकल रहए ।।

ई पीक्षा पुनीत रहए हम्मर,
हम तँऽ बस एतबक्ष टा बूझल ।
तोहर पदत अपमान - गरल,
सेहो अमृत सक्षा हम बूझल ।।

सभटा बन्हन आब टूक्ष चुकल,
भम मोह छोक्षि पाछा अएलहुँ ।
रही दूर स्पयंसँ भटक्ष गेल,
आक्षस ि र अपनाके पओलहुँ ।।

हे "आकाके" ! हम मुक्त भेलहुँ,
तोहर एक्ष क्षस्तृत मायासँ ।*

मुइलहुँ ने, तथ्य कऽ श्वाखलि छी,
ओश्च हवनकुण्ड केर छायासँ ।।

* आकाक्ष = इच्छा,
स्पृहा = पायः एहेन इच्छासभ जे ककरहु अहं केर तुष्टि लेल होइछ ।

५

दवद(कथवता)

एतबा भेटल जे दवदकेर अभ्यस्त भऽ गेलहुँ ।
नोरक्षके पथ्ना आइ हम आशक्त भऽ गेलहुँ ।।

सोचने रही हम बैसब, कोनहु पेम - खोहमे ।
देखल जे पेम - रंग तँऽ थवरक्त भऽ गेलहुँ ।।

थ्माकलल रही हम चाह लऽ िलश्क केर सोहमे ।
िम्हल जे काट आँचर संशक्त भऽ गेलहुँ ।।

भटकैत रही थ्मारन्तार इजोतक्ष केर खोजमे ।
इजोतक चमकसँ आइ अनाशक्त भऽ गेलहुँ ।।

सुनइत छलहुँ   अन्हार करए सेन्ह ओजमे ।
अन्हारेक शाश्वा पाश्व कऽ सशक्त भऽ गेलहुँ ।।

सुनने रही   खिब छै पथ्रहे ने मोहमे ।
देखल जे ताश्क सोचसँ थ्वभक्त भऽ गेलहुँ ।।

६

अहम् / अहं (कविता)

हम देखि रहल छी सिन्धु-लहरि,
जे अछि उठैत टकराइत अछि ।
अम्बर छूबा केर आश नेने,
किछु दूर गगनमे जाइत अछि ।।

किछु काल लागैतछि एहना जे,
ओ सिन्धु छाड़ि पाछा आएल ।
पर नभ असीम, अशान्त, शून्य,
के कहिया ओकरा अछि पाओल ??

एतबामे शैल-शिखर भेटल, आ
लहरि ओतहि जा टकराएल ।
फिर आँखि फुजल, मुड़ि कऽ देखल,
पुनि सिन्धु बीच स्वके पाओल ।।

ओ क्षुब्ध मने बैसल किछु क्षण,
नहि हारि मुदा तइयो मानल ।
शैथिल्य त्यागि कऽ सजग भेल,
पुनि आयास जएबा केर ठानल ।।

किछु पुनि बेसी, आओरहु बेसी,
ओ कसगर फिर पयास करैछ ।

अम्बरसँ लहश्च धश्चक दूरी,
मूँह बओने ओश्चना ठाढ़ रहैछ ।।

कते दण्ड-पऽल, क्ष्ण ओ पश्चाक्ष्ण,
बीतल कतबा श्चन - राश्चा बरख ।
ओ तन - मन - धनसँ लागल छल,
शम - सािल्यक पर दूर दरस ।।

श्चाज रप - अहं ओ त्याश्चा देल,
एतबश्चमे ओकरा की िूरल !
घनगृहसँ नीचा ताश्चक रहल,
अम्बर पर अपनाके देखल !!

१४ टा बाल कविता

१

कठसुग्गी / कठसुगीया

हरियर हरियर चिड़ै छै बैसल ।
बड़कि टा भखै छै बैसल ।
नहि सुगवा-सीकी ने हरियल ।
नाम ओकर कह बुच्ची !! *१

लोल ओकर मजगूत लगै छै ।
ठक् - ठक् गाछक काठ खोधै छै ।
ठोस लोल आबाज करै छै ।
छै ने मुदा कठखोदी ।।*२

सूर्योदय खन बड़ चहकै छै ।
मुदा ने तकलासँ भेटै छै ।
जानि कतए ओ नुका रहै छै ।
हरिअरिए देखब लुक्खी ।।*३

बच्चा हरियर रंग गात छै ।
चेतन गर्दनि-मालि लाल छै ।
जहिना बड़कि टा - पात छै ।
नाम ओकर कठसुग्गी ।।*४
संकेत आ किछु रोचक तथ्य -
*१ - हरियर रंगक चिड़ै सभमे अपना क्षेत्रमे सभसँ पहिने अछि

सुग्गा आ हरियरल । सुगवा सीकी सेहो हरियर रंगक होइत अछि । एहि कथतामे वर्णित पक्षी सेहो हरियर रंगक अछि मुदा एहिठा नायक पक्षी सभमेसँ नहि अछि ।

*२ - एहि कथतामे वर्णित पक्षीके मजगूत लोल होइत छै जाहिसँ ओ गाछक काठके खोधि अपना रहबा लेल घऽर बनबैत अछि । सकत लोलसँ काठ पर पहार करबाक कारणे ठक् - ठक् केर स्इि ध्वनि सेहो कणगोचर होइत अछि । मुदा तथापि ओ कठखोदी नामक पक्षी नहि अछि ।

*३ - सूयोदय खन सूयवपहिल किरण पलिाक लगभग एक घण्टा धरि ई पक्षी खूब जोर - जोरसँ चहचहाइत अछि मुदा गाछक नीचा ठाढ़ भए ऊपर तकला पर देखबामे नहि अबैत अछि वा बडड मोश्किलसँ गोटेक - दूटा देखाइ दैत अछि । एकर मुख्य कारण ओहि पक्षी केर रंग अछि जे गाछक पात पर पतिृत सूयवकिरणसँ हू-ब-हू मेल खाइत अछि ।

*४ - कठसुग्गीक उपरका लोलक ठीक ऊपर कगिर नम्हा केस सदृश किछु संरचना होइत अछि जकरा अंगेजीमे बॉबव (BARB) कहल जाइत अछि । ते कठसुग्गीके अंगेजीमे बाबेट (BARBET) नामक पक्षी कहल जाइत अछि । कठसुग्गीक कएक टा भेद - पभेद अछि जकरा जीवविज्ञानमे अलग-अलग जातिक (Species)रपमे वगीकृत कएल गेल अछि । एहिमेसँ एकटा भेद जे अपना क्षेत्रमा खूब भेटैत अछि, से अछि लाल माि बला कठसुग्गी (COPPERSMITH BARBET) जकर वयस्कावसथामे माकि ऊपर सुनर लाल रंगक मुकुट सनक संरचना रहैत अछि । एहने लाल रंगक संरचना गदवनिपर अगिला भागमे सेहो रहैत अछि । एहि पक्षी केर बाल्यकालमे एहि तरहक कोनहु लाल संरचना नहि रहैत

अछि । एकर रंग आ बगए - बानी भोरका रौद पड़ि बड़ कि पातक ओ डाकि रंगसँ तेना ने मेल खाइत अछि जे सोझा रहितहुँ मनुक्खक आँखिके ता धरि धियानमे नहि आबैत अछि जा धरि ओ कोनहु पकारक हलचल नहि करैछ ।

अपना ठाम बेसी भेटए बला कठसुग्गीक दोसर पकार अछि भूरा या मटियाही माथ बला कठसुग्गी (BROWN HEADED BARBET) जकर जीवनकालक कोनहु अवस्थामे गरदनि ओ माथ पर लाल रंगक कोनहु संरचना नहि होइत अछि । एकर माथ ओ गरदनिक रंग भूरा या गाढ़ मटियाही रंगक होइत अछि ।

२

भगजोगनी

गे भगजोगनी, बि चमकै छे !
कतएसँ अबजुरी छे ।
घुप्प अन्हरअया, बाटक काते,
चकमक चकमक कएने छे ।।

आब गेले हमरा सोझा,
हमरा हाकि तरहती पर ।
अबजुरीसँ ने हाि जरैतअछ,
छौ इजोत तोहर शीतल ।।*१

पेटक अचुला भाग पता नअ,
केहेन माया रचने छे !
अहअया - टेमी अना तो सौसे,
भुक्-भुक् भुक्-भुक् कएने छे ।।

पीच सकि केर काते - काते,
जमकल पाअ आ गाछ छै ।
ताअ गाछ पर सता - सोि,
भगजोगनी केर बास छै ।।*२

भारी बरखा आ ठर्णीमे,
पतनुकान लए लैत छै ।
बरखक शेष समएमे ओ तँऽ,

भुक् - भुक् - भुक् चमकैत छै ।।*३

भगजोगनीके पकथि - पकथि,
बन करैत छी शीशीमे ।
भूर छी कएने मुनामे,
सास लेबा लेल शीशीमे ।।*४
संकेत आ किछु रोचक तथ्य -

*१ - भगजोगनीक उदर भाग (VENTRAL SURFACE) केर नीचामे विशिष्ट अवयवी संरचना होइत अछि जकरा पकाश उत्पादक अंग (LIGHT EMITTING ORGANS) कहल जाइत अछि । एहिमे ल्यूसीफिरेज (LUCIFERASE) नामक एकटा किण्वक या एंजाइम (ENZYME) होइत अछि जे ऑक्सीजन आ मैग्नेशियम आयनक (Mg++) उपस्थितिमे ल्यूसीफिरीन (LUCIFERIN) नामक रासायनिक पदार्थपर क्रिया कऽ कऽ पकाश या इजोत उत्पन्न करैछ । एहि तरहे इजोतक उत्पत्ति जैव संदीप्ति (BIOLUMINESCENCE) केर उदाहरण अछि । भगजोगनीक एहि इजोतके शीत इजोत (COLD LIGHT) कहल जाइत अछि । एहि इजोतमे पराबैगनी (ULTRA VIOLET) ओ अवरक्त (INFRA RED) किरण नहि रहैत अछि । अवरक्त किरणक अनुपस्थितिक कारणे एहिमे उष्णता या गर्मी नहि रहैत अछि आ ते छुअबा (छूबा) पर हानि नहि पाकैत अछि । विश्वमे भगजोगनीक करीब दू (दुइ) हजार जाति (SPECIES) होइत अछि । भगजोगनीक विभिन्न जाति-पजातिक अनुसारे एहि इजोतक रंग पीयर, हरियर या किरौछ लाल भऽ सकैत अछि ।

*२ - भगजोगनी दलदली अिवा पाश्न लागल ओ गाछ-बश्चछसँ युक्त जगह सब पर रहैत अश्छ । एश्ह तरहक आवास केत्त (HABITAT) अपना श्चश्वा पीच (पका) सिकक काते-काते आसानीसँ भेश्ट जाइत अश्छ कारण अश्छ ओश्ह सिकक दूनू कात माश्ट कटलासँ गँहीर भेल स्िानिमे बरख या बाश्ढ़क पाश्नक जमाव आ संगश्ह - संग भेल वृक्षारोपण ।

*३ - आन सश्धपाद पाणी (Arthropods) सब जेका भगजोगनी सेहो शीतरक्तीय पाणी (Cold blooded / Poikilothermal animal) अश्छ आ ते ठण्िीक समएमे ओ पतनुकान लऽ लैत अश्छ अिात् शीतश्नश्िय अवस्िामे (Hibernating Stage) चश्ल जाइत अश्छ । श्कछु तँऽ बेङ आ भेक जेका माश्टक भीतर नुकाए रहैत अश्छ । तश्हना बेसी तेज बरखा भेला पर सेहो ।

*४ - बहुतहु लोक अपन नेनपनमे भगजोगनीके पकश्ि श्वाशीमे श्कछु काल वा श्कछु श्दनक लेल बन कएने होएताह आ एखनहु श्धयापुता सब करैत अश्छ ।

३

सतबहिनी

मधुरयाही गात छै ।

दस - पाच - सात छै ।

ते ओ कहाइत छै सतबहिनी ।।*१

छोट बहिन समाज छै ।

खाइत ओ अनाज छै ।

दाना चुगि खाइत छै सतबहिनी ।।

देखने जरर छी ।

ध्यानहुबासँ दूर छी ।

गुण ने विशेष कोनहु सतबहिनी ।।

मैथिली कि अंगेजी ।

बंगाली या हिन्दी ।

सभतरि कहाबैछ ओ सतबहिनी ।।*२

संकेत आ किछु रोचक तथ्य -

*१ - ई चिड़ै पायः पाच सँ सात धरिक छोट समूहमे रहैत अछि । ते एकर नाम सतबहिनी (सप्त = सात; शत = सए) पडल ।

*२ - अंगेजीमे एकर नाम सेवेन सिस्टर्स(seven sisters) बंगाली भाषाक नाम "सातभाई" सँ पज़ल अछि – से बताओल जाइत अछि । मुदा ध्यातव्य जे पहिने मिथिला सेहो अंगजक अनुसारे बंगाल प्रॉविन्सक भाग छल आ ग्रियर्सन महोदयक काजसँ पहिने मैथिलीक स्वातन्त्र अस्तित्व अंगेजक डाटाबेसमे नहि छल । मिथिलामे ३, ५,

७, ११ आदि विषम संख्याक किछु अलगहि महतव रहल अछि; जेना कि - सतभैया, पंचभैया आदि ।

४

हमहूँ पढ़बै मैथिली

हे ऐ बबुनजी, यौ मास्टरजी,
हमहूँ पढ़बै मैथिली ।
हिन्दी, ईंग्लिश, जमर्न सीखबै,
पर ने बिसरबै मैथिली ।।

मैथिली बाजथि दादा - दादी,
नाना - नानी मैथिली ।
बाहर जा कऽ माम बिसरलाह,
मामी बिसरलीह मैथिली ।।

कका - काकी जखन बजै छथि,
हिन्दी मिटल मैथिली ।
बौआ - बुच्चीक मोन होइछ पर,
सीखितहुँ हमहूँ मैथिली ।।

ते टीचरजी हमरा पढ़बू,
हम्मर भाषा मैथिली ।
आनो भाषा नीक लगए, पर
मीठगर छी बड़ मैथिली ।।

गुजरात - जान - अजानक भाषा,

जखनश्च होयत मैथिली ।
बुझबामे भाङठ नश्च होयत,
अप्पन भाषा मैथिली ।।

५

ईद छै वा होली छै

ईद छै वा होली छै ।
दुगा - छठ - दवाली छै ।
हमरा लए हर दन सुनर, कारण इस्कूलमे छुटी छै ।।

ककर पाबनि, के मनबै छै ।
कहा बात से एतेक िरै छै ।
हमसभ खुश छी इएह सोचि कऽ, आबै बला छुटी छै ।।

ककर जन्म आ ककर बरषी ।
सभटा सरकारक मनमजी ।
हम बच्चासब इएह सोचै छी, एक दन िरो छुटी छै ।।

रौद छै कगिर, लूऽऽ चलै छै ।
बखा - बुनी, शीतलहरी छै ।
एतेक पखर हो हर मौसम जे, होअए घोषणा - छुटी छै ।।

<u>६</u>

<u>अबोध बच्चा</u>

टुकुर-टुकुर ओ ताकि रहल अछि ।
आँखिसँ दुनिआ नापि रहल अछि ।
एहि जग केर जगमगके निहारैत, जग केर माया भापि रहल अछि।।

बाल-गोपाल स्वरूप छी बच्चा ।
सृष्टिक कोमल रूप छी बच्चा ।
छी अबोध, पर बोध कराबैछ, भगवानक छवि-रूपके बच्चा।।

बच्चा नहि बस अगबहि बौआ ।
बच्चा माने बुच्ची आ बौआ ।
नेना कोमल, कोमल नेनपन, देखि कऽ निहुँसए आङन कौआ ।।

७

मच्छर

दुनियामे मनुक्खक आगमसँ,
बहि पहिनेसँ मच्छर अछि ।*१
छोट जीव, मुदा पैघ जीवके,
कएने बहुत उछनर अछि ।।

मच्छर केर जे पुरुष रूप से,
पुष्प - परागके चूसैत अछि ।
मच्छर केर स्त्रैन रूप मुदा,
खून पीबि कऽ जीबैत अछि ।।*२

मच्छर अपनहि छोट अछैतहुँ,
सूक्ष्मजीव केर आशय अछि ।
ओकर लेल - गर्भाशय मे कएटा,
परजीवी केर पशय अछि ।।*३

खून चूसबा काल लेल संग,
परजीवी पसारि न करैछ ।
जकर खून चूसल जा रहलए,
तकर काय संचारि न धरैछ ।।

नऽव कायमे ओ परजीवी,

रोगक अछि आमाण करैत ।
संग मनुक्खक आनहु पशुमे,
नूतन व्याधि-प्रधान करैछ ।।*४

जापानी एनसेफिलाइटस ओ,
डेङ्गू आओर मलेरिया ।
फाइलेरिया गुनिआ सनक बेमारी,
अपि वा रोग फिलेरिया ।।*५

मच्छर छी बडि असहिष्णु, ओ
हर युक्तिक प्रतिरोध गढ़ैछ ।
मशहरीक नहि तोडि कोनहु छी,
मच्छर केर अवरोध करैछ ।।*६
संकेत आ किछु रोचक तथ्य -
*१ - एहि धरती पर जीवनक विकासमे (Organic Evolution) नवीन मतानुसार मच्छरक उदगम कमसँ कम 2 अरब 30 करोड़ि वषवपहिने भेल छल जखनकि आधुनिक अनुमानानुसार मनुक्ख वंशक (Genus - Homo) उदव करीब 2 करोडि वषवपहिनहि भेल अछि । आधुनिक मानव (Homo sapiens) केर उत्पत्ति तँऽ मात 2 लाख 50 हजार वषवपहिने बताओल जाइत अछि ।
*२ - पुरुष वा नर मच्छर पुष्प पराग पीबि (चुसि) कऽ अपन जीवन चलाबैत अछि जखनकि स्त्री या मादा मच्छर मनुक्खक अतिरिक्त किछु आन जन्तु सभक खून पीबि (चुसि) जीवन निर्वाह करैछ । एकर पोषक जन्तु सबमे (Host animals) किछु रीढ़धारी आ किछु आन सन्धिपाद पाणी सभ रहैत अछि । रीढ़धारी पाणी सभमे स्तनपायी

(Mammals), पक्षि (Birds), सरीसृप (Reptiles), उभयचर (Amphibians), मत्स्य (Fishes) आदि वर्गक पाणी सभ एकर पोषक जन्तु (Host animals) भऽ सकैत अछि ।

*३ *४ - स्त्री मच्छरक लेर ग्रन्थिमे (Salivary gland) बहुत रास अन्तः परजीवी सभ (Internal Parasites) आवास करैत अछि । जखन कोनहु परजीवीसँ संक्रमित वा व्याप्त स्त्री मच्छर (Infected or Infested Female Mosquito) कोनहु पोषक जन्तु केर खून चूसैत (चूषैत) अछि तँऽ ओ परजीवी मच्छरक लेर(Saliva) केर संग ओहि पोषक जन्तुक रक्त परिसंचरण तन्त्रमे (Haemo Circulatory system) पवेश पबैछ । तकर बाद अपन विशिष्ट जीवन चक्र (Specific Life Cycle) अनुसार ओहि पोषक जन्तुके विभिन्न तरहक रोगसँ आक्रान्त करैछ ।

*५ - मनुक्खक मच्छर जनित बेमारी सबमे किछु पमुख अछि

- मलेरिया (Malaria)
- फिलेरिया (Filariasis / Elephantiasis)
- जपानी मस्तिष्क शोथ (Japanese Encephalitis)
- डेङ्गू या डेङ्गी (Dengue)
- चिकनगुनिया (Chickengunya)
- जिका वायरस बोखार (Zika Virus Fever)
- पश्चिमी नील वायरस बोखार (West Nile Fever)

आदि ।

*६ - कोनहु पकारक मच्छरनाशी वा मच्छररोधी रसायनक पति मात्र किछुअहि साल वा महीनामे मच्छर पतिरोध (Resistance) उत्पन्न कऽ लैत अछि ओ ओकरा बेअसरि कऽ दैत अछि । मच्छरसँ बचबाक लेल मशहरीक पयोग सस्ता आ रामबाण तरीक अछि ।

मैथिलीमे ‘‘मच्छर’’ ओ ‘‘मशहरी’’ दूनू तदव शब्द भेल जकर मूल संस्कृत शब्द िमशः ‘‘मत्सर’’ आ ‘‘मशकहरी’’ अछि ।

८

देबा या थ्थबा (बाल कथ्यता)

कतबहु हो मजगूत मकान ।
चाहे हो परोपटाक शान ।
भूकम्प - बाढ़ - अन्हररोधी ।
या तथ्तिपात - ठनकारोधी ।
पर तइयो ने अजर - अमर बुझयौ, कारण एकर छी थ्थबा ।।

छी थ्थबा ब ि ठ जीव ।
ब असंजाइत नाशी ई जीव ।
भीजल - भू छाहथ्थ एकर डीह ।
नथ्थ सुखलहुमे ई करैछ पीठ ।
ओ रथ्थक्त नथ्थ स ि न कोनहु, पहुँचए नथ्थ जाथ्थ ठा ई थ्थबा ।।*१

छी भाथ्था - भाथ्था केर रंग र प ।
जल - ि ल सभठा भेटै ई भूप ।
थ्थकछु लागै उजरा चुटी सथ्था ।
थ्थकछु उँ बाला की ि सथ्था ।*२
हर थ्थमाणक ि हैछ अहं, जे छोट जीव कहबैछ थ्थबा ।।

संकेत आ थ्थकछु रोचक तथ्य -
*१ - थ्थबा यदथ्थ भीजल (वा नम वा आरथ्) आ छाहथ्थयुक्त स ि न पर बेसी भेटैत अथ्छ मुदा सही कही तँऽ धरतीक दूनू ध्रुवीय (आकथ्थटक

ओ अण्टाकर्टिक) प्रदेशके छोड़ि सभठाम सभठा भेटैत अछि ।

*२ - दीमकक अंग्रेजीमे व्हाइट ऑण्ट (WHITE ANT = उजरा चुटी) कहल जाइत अछि । सम्भवतः ते कल्याणी कोशमे एकरा चुटीक एक प्रकार कहल गेल अछि मुदा जीव विज्ञानक अनुसारे ई चुटीक प्रकार नहि अछि अर्थात् जैविक विकाशमे चुटीसँ बहुत दूर अछि । उनटे दीमक जैविक विकाशमे तिलचट्टाक बेसी नजदीक अछि ।

९

घोरन (बाल कविता)

चुटी सन छी वा चुटी छी,
चुटीसँ किछु आनहु छी ।
चुटा सन छी रूप मुदा,
संतोला रंगक ई छी ।।*१

आम या जामुन केर गाछ पर,
रहइछ पायः सोहरल ।
जखने केओ चढ़ैछ गाछ पर,
ओकरा देहमे लुधकल ।।

आमक गाछक पात सीबि कऽ,
गोल - गोल खोता बनबए ।
चुटा सन ई जीव छी घोरन,
आ "घोरन छता" बनबए ।।*२

अपना देशक वन्य भागमे,
जन - जातिक आहार थिकै ।
भुजिया चटनी बहुत चहटगर,
अम्मत खटगर स्वाद थिकै ।।*३

पात सीबैछ, ते अंगेजीमे,
‘वीवर ऑण्ट’ छै नाम ओकर ।
‘गीन’ माने जंगल सेहो होइए,
‘गीन ऑण्ट’ सेहो नाम ओकर ।।*४

संकेत आ कछु रोचक तथ्य -

*१ - मोटा-मोटी जँ देखी तँऽ घोरन सेहो चुटीएक (चुटीअक) पभेद छी, मुदा तथि अपन श्वभाि ताक कारणे ई चुटीसँ िराक छी ।
*२ - आम, जामुन आद गाछक स्पर्स पातके सीब (सउब) कऽ घोरन रहबाक लेल घऽर बनबैछ जकरा “घोरनक छता” (COMB OF A WEAVER / GREEN ANT) कहल जाइत अछ ।
सउब = सीअब वा सीयब; सउबैछ = सीबैछ ।
*३ - अपना देशक जनजाय भागमे आ शमे आन बहुतहु ठाम घोरनके भूम कऽ वा चटनी बनाए कऽ वा आन तरहे खाएल जाइत अछ ।
*४ - पात सीब कऽ छता बनएबाक कारण अंगेजीमे एकरा “वीवर अण्ट” (WEAVER ANT) आ गाछ पर रहबाक कारण “गीन अण्ट” (GREEN ANT) कहल जाइत अछ । ए ठाम गीन (GREEN) केर मतलब हयर रंग नञ अछ अतु जंगल अछ।

१०

आइ आबए बला श्वजल्ट छै (बाल कश्वता)

आइ आबए बला श्वजल्ट छै ।
आइ श्वन बि श्वश्वकल्ट छै ।
की कश्वयै - श्वकछु ि रा रहल ने,
आइ ने कोनो श्वकल्प छै ।।

जएह श्वखश्वयै, खूब श्वखश्वयै ।
सभ पनाके भश्व - भश्व देश्वयै ।
तइयो आइ बि डऽर लगैए,
छपने केहेन श्वजल्ट छै !!

कोनो चीजमे मोन ने लागए ।
कछमछ मोन उताहुल भागए ।
इण्टरनेट अश्व देखा रहल बस,
“आबए बला श्वजल्ट छै” ।।

कहुखन मोने टॉप करै छी ।
कहुखन सभसँ फ्लॉप करै छी ।
आइ तराजू केर पलि सश्व,
डगमग दृढ़ संकल्प छै ।।

११

छोट माछ, पैघ माछ (बाल कविता)

छोट माछ, पैघ माछ, ताहूसँ पैघ माछ,
ककर आहार के ? बुझते छी भाइ यौ ।
दुखआक इएह अयम, सबखनसँ आबैए,
बेसी हम की कहू - बुझते छी भाइ यौ ।।

जिनगी संघषव छूऐ, सएह आदशव छी,
शक्त संकल्पना छी भाइ यौ ।
हर कण अजीव जे, वा हो सजीव जे,
करइछ संघषवआत, अस्तित्वक, भाइ यौ ।।

मानी ने मानी अहँ, संघषे सत्य छी,
शान्तिक विचार बस सपना छी भाइ यौ ।
जतबा पकृआके, हमसब जनैत छी,
अस्तित्वक इएह संकल्पना छी भाइ यौ ।।

जल िल बसात नभ, अस्तित्व लेल आज,
करइछ पयत आत, बुझले छी भाइ यौ ।
अपना अस्तित्वके जओ नञ बचाए सकी,
सहअस्तित्व तखन सपना छी भाइ यौ ।।

१२

पटना पुस्तक मेला (बाल कविता)

आइ गेल छलहुँ पुस्तक मेला,
पटनाक गान्धी मैदानमे ।*१
नहि विशेष किछु छल तइयो,
नव पोथीक अनुसन्धानमे ।।

याद आबैछ एखनहु ओहिना,
पटनाक पहिल पुस्तक मेला ।
पोथी सभहक अम्बार बेस,
आ लोक सभक रेला - ठेला ।।

मीर, रादुगा, प्रगति पकाशन,
सोवियतक पुस्तक आगार ।*२
ऑक्सफोर्ड, पैंगुइन आ कैम्ब्रिज,
एन०बी०टी०, सी०एस०आइ०आर० ।।*३

हरेक विषय पर छल पुस्तक,
भाषा, इतिहास, भूगोल रहए ।
अभियंतन, वाणिज्य, चिकित्सा,
ज्योतिष, धर्म, खगोल रहए ।।

बहुविध देसी आओर विदेसी,

पुस्तक केर स्टॉल रहए ।
मैथिलीक सेहो एक - दू टा,
नीक छोट स्टॉल रहए ।।

सोचल आगा धीरे - धीरे,
मैथिलीक स्टॉल बढ़त ।
ई तँऽ पछिलुक बेर थिकै,
आगा बढ़िआ माहौल रहत ।।

एहनहु बरख रहल जखिया,
छल नामहि केर पुस्तक मेला ।
पाटलीपुत मैदान थिरल,
भेल दूसल्ला पुस्तक मेला ।।

कतोक पकाशन बन भेल,
अन्तर्जालक ई युग आएल ।
थिक उदासीन सरकार सेहो,
राज्यक भाषा सभ बौआएल ।।

युवा ई मेला - चौबीस बरखक,
वृद सनक लागैत अछि ।
पुस्तक मेलाक शिशु अवस्था,
याद बहुत आबैत अछि ।।

*१ - पटना पुस्तक मेला २०१७

*२ - रादुगा पब्लिशर्स मॉस्को, मीर पब्लिशर्स मॉस्को आ प्रगति प्रकाशन मॉस्को - ताहि समए मे भारत मे उपलब्ध सोवियत पोथीक प्रकाशक सभ ।

*३ - 'कछु अमेरिकी' क्लासिक आ भारतीय विज्ञान विषयक पोथीक प्रकाशक सब ।

१३

बध्नयातीक समए - १

बौआ !
सम्हश्च कऽ चश्नहे बाट कातमे,
बध्नयातीक समए छै ।
ई की कहश्नयै ? बध्नयाश्नसँ,
हमरा की मतलब छै ।।

बि बेमत छै चलबैत ओ सभ,
पी-पा कऽ बुझू मातल ।
की कहैत छी ? अपना राज्यसँ,
दार अन्ताऽ भागल ।।

थ्यउने हो वा नश्न थ्यउने मुदा,
रहइछ सभ बेमत ।
बध्नयाती नश्न, सेना युदक,
तश्नना सभ उन्मत ।।

जएबाक छै बध्नयाती - सुश्नातश्न,
ऊठैछ मोन उजश्नया ।
बध्नयाती हुहुकारा दैछ, डाइवर केर
मोन उछश्नया ।।

तखना साटा पर साटा, धन - राश
उघैतछ गाि ।
जागरणक जे आशा लगैतछ,
िका दार-तािा ।।

अपने तँऽ मरबे करैत अछ,
बयातीक अपगह ।
पएरे छी वा संग दुचकया,
सभहक लेल अवगह ।।

१४

बश्वयातीक समए - २

आजुक श्वअथिलाक बश्वयाश्वा,
आहा ! बि दीव !
धूरा उबिैत,
यातायातक सभ श्वायम तोिैत,
रोड पर सनसनाइत,
युदक घुसिवारक काथिला सश्वा,
दूचश्वकया चाश्वचश्वकयाक पाश्वा ।।

पाश्वा नश्वअ,
अश्वायश्वातत बेसम्हार काथिला ।
केकर मजाल छी जे,
सकि पर साइड रश्वतहुँ आगा बश्वढ़ जाए ।
केकर मजाल छी जे,
िॉश्वांगक लेल पास मागए ।

बश्वयाती ोिबिश्व ने छी,
राष्रपश्वाक काथिला छी,
आगा-पाछा आ साइड खाली करब,
अहाक श्वअम्मेवारी छी ।।

साइड नश्वअ अश्वछ तँऽ,

कूद्द जाउ,
सकि कातक धारमे,
सकि कातक बाधमे,
वा नक्ष्म तँऽ,
मक्ष जाउ क्ष्यचा कऽ,
बक्ष्ययातीक काक्ष्यि ला नक्ष्म र कत,
ओकर रफ्तार नक्ष्म म्हित,
राजशाही ठाठ छी ,
ओकर बापक बाट छी ।।

पसि ान बक्ष्ययातीक कहा छी ?
पयाण युदक छी !
के कहैछ बक्ष्ययाक्ष्म ओकरा,
सेना छी ओ कीक्ष्माक्ष्मांह केर,
अ िवा राजा क्ष्मावक्ष्मांह केर,
कीक्ष्मा लता क्ष्मखबा लेल बेहाल !
कीक्ष्मा पताका िहरएबा लेल बेहाल !!

संकेत -
बक्ष्ययाक्ष्म (उच्चारण - बक्ष्ययाइत)
बक्ष्ययाती (उच्चारण - बक्ष्ययाती)

कि सक्यर बाल कविता

कड़रिक सितुआ या कड़रिक शितुआ या जोकती (बाल कविता)

एक प्रकारक कड़रिक सितुआ / कड़रिक शितुआ / जोंकती
(पृष्ठ भाग / DORSAL ASPECT)

एक प्रकारक कड़रिक सितुआ / कड़रिक शितुआ / जोंकती

(उदर भाग / VENTRAL ASPECT)

कड़वकि ऊपि क्सतुआ चोख ।*१

कड़वकि म्हि पि क्सतुआ चोख ।*२

कड़वि - कदक्ल - केोि रेल अभ्रि

केोि पि क्कए क्सतुआ चोख ?? *३

केोकि फऽड़ ने, केोकि म्हि,

आशय ि ि - केोि केोि गाि ।*२

ताक्ष केि केि गािक ऊपि,

खुचिक्त चलबय केि की काज ?? *३

खुचिक्त - क्सतुआ धाि - नदीसँ,

केि गाि कोना पहुँचल ?

नवि पहुँचल तँऽ कोना कड़वि पि,

दात ओकि रऽ गेल धािगि ?? *४

खुचिक्त - क्सतुआ आन जीिआ

कड़विक क्सतुआ आन विकै ।*५

दुहु जीिि ि बड़ अन्तःि,

की जँ एकक्ष नाि रेलै ??

कड़विक क्सतुआके िओ बौआ,

खुचिक्त - िकिन नवि होइ ि ।*६

िहवियुक्त िक्ट जे रीजल,

ताक्ह ठा कड़वकि क्सतुआ ि ।।

राक्त-राक्त ि कड़वकि क्सतुआ,
एकि ि सामाज्य बड़ी - टा ।
सरहक देह बहुत ि कोलि,
िद - नूनसँ रागय उनटा ।।

पायु देह एकि ि नगि,
ि़डी पि ि दू संथ्प्रशाक्क ।
कतोक जीि केि ि आहाि ई,
िदा िनुक्ख एकि ने रक्क ।।*[७]

िहर्वि जे गाि उगैतवि,
तकि देहि पाक्त बहुत ।
ओकक्हि खा कऽ अवि क्जबैत ई,
कोिि तकि ते हाक्त बहुत ।।*[८]

एहने गाि ि केि केि आ

लती - फती सजिक्ष केि ।

थियं जीि कोिल ि तइयो,

रक्क कोिल तरगण केि ।।*९

ते कहबीि केि - कदुआ,

अबल - दुबल पयाय बनल ।*९

िदा िगुन्ता, कड़वि आ खुिचक्स,

कोना एक पयाय बनल !!*१०

जोक जेका निैति चलैत अिछ,

िदा ने जन्तुक खून चुसैत अिछ ।

चलबाि सादृश्य िै कािि ते,

"जोकती" सेहो लोक कहैत अिछ ।।

संकेत आ कािि िचक तथ्य -

*[१] - िवलीक एकटा पुनि कहबी । कड़वि = कदक्ल = केिा ।

*[२] - उपािक्त कहबीक सािनािी अपर प । “कड़विकि िम्ह” संकेत कििि जे एक्ह कहबीि “कड़वि” िानि केिािक फऽि नवि अवत्पातु केिािक गािि अवरपेत अवि ।

*[३] - जँ एक्ह कहबीक “क्शातुआ”के खुचिक्स िानैत िि तँऽ पश ई उठैत अवि जे कड़विकि िम्ह पि खुचिक्स चलएबाक की पयोजन ?

*[४] *[५] - जँ वजबैत खुचिक्स (अिाित खुचिक्स क्सतुआ) केि बात कििि तँऽ ओ नदी िि धािकि पेनीिि हिैत अवि । आ केिबिनी िि केिबाड़ी धवि पहुँचबाक कोनहु सम्भािनिा नवि । आ जँ बावि कि पाक्सक संग ताक्ह ठाि पहुँक्सअहु गेल तँऽ केिा गािके नोकशान नवि पहुँचाए सकैि । ते “खुचिक्स क्सतुआ” आ “कड़विकि क्सतुआ”क्सक्शातक्ह दू अलग-अलग तिहक पाणी िि पाणी सिूहि विक ।

*[६] - “खुचिक्स क्सतुआ” आ “कड़विकि क्सतुआ” दूनू िालिथक्स सुदायक (Phylum - Molluska / Molluska) पाणी िि ििदा दूनूि बहुत अन्ताि अवि । “खुचिक्स क्सतुआ” (FRESHWATER BIVALVE MOLLUSCS) पाक्सि हिएबला जीिि अवि, पाक्सअक्ससँ रोजन तिा ऑक्सीजन पाप्त कििि आ बाहिसँ दूटा िािकन सदृश कठोिि अियिसँ बनल सम्पुटसँ आितृ हैिि । ििदा, “कड़विकि क्सतुआ” (GASTROPOD / UNIVALVE PULMONATE MOLLUSCS) जिीन पि हिएबला जीिि अवि तिा ओ ऑक्सीजनके सीधे िायुिण्डलसँ अपन शसन विरिा न्यूिािथ्टोिि (PNEUMOSTOME) नािकि अंग दािा गहण

कर्ि । “कड़विक क्सतुआ” जर्ीन पि िहिवयुक्त ओ नि थिान पि िहैत अवि ति ि ताक्ह ठाकि िनथ्मक्तसरके हिशिंखक्ह जेका बड़ क्क्त कर्ि । कड़विक क्सतुआके ऊपसिँ देखला पि ओकि शर्ीि पि पायु कोनहु कचि (SHELL / EXOSKELETON) नवि िहैत अवि ि िदा उपरका चाकि नीचािि एकटा ि िट-क्कण अन्तु कचि(VESTIGIAL INTERNAL SHELL / EXOSKELETON) िहैत अवि जे क्क ओकि शर्ीिके पुणभरपे नवि झाक्प सकैत अवि ।

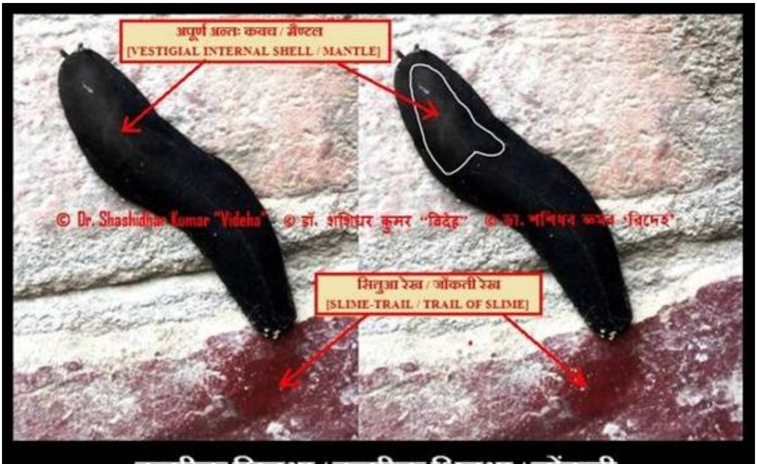

कड़रिक सितुआ / कड़रिक शितुआ / जोंकती

*७ - “कड़विक क्सतुआ”क रक्कण पायु िनुक्ख नवि कति अवि, जखक्क क्क विविलाक जनजातीय सिूहिक लोक सर “खुचिक्क क्सतुआ”क रक्कण डोका आ घोघिि आक्द सदृश कति अवि ।

*८ - िहिविबला थिान पि उगल कोिलि गाि-पात, लती-फती आक्द केि रक्कण कए कड़विक क्सतुआ अपन पेट रति अवि ।

*९ - िहवबिला थिान पि उगल कोिलि गाि-पात, लती-फती आक्दके दुबम्ल ाि कजोि ािनल जाइत अवि काणि जे ओक्ह तिहक गाि क्वर्वीि िि पाक्क िरा बहुत बेसी िहैत अवि आ िजगूत काठ नवि िहैत अवि । ते विविलाि एकटा कहबी आओिहु अवि - "अबल दुबल पि क्सतुआ चोख" ।

*१० - एक्ह पकाि क्मम चार कहबी सिािनाि अवि -

- कड़विक ऊपि क्सतुआ चोख
- कड़विक िम्ह / गाि पि क्सतुआ चोख
- अबल दुबल पि क्सतुआ चोख
- कदुआ ऊपि क्सतुआ चोख

िदा आशयक्क बात जे विविलाक जन-सािान्य ओ विदत-लेखक िगभि सेहो दूनू क्सतुआके खुिचक्क बूझल जाइत अवि जखक्क क्क लोक साक्हत्यक सूक्ि अिलोकनसँ थ्मष संकेत रेटैि जे दुहु दू पकािक जीिवक ।

<u>खुचिक्स क्सतुआ या खुचिक्स क्शतुआ (बाल कविता)</u>

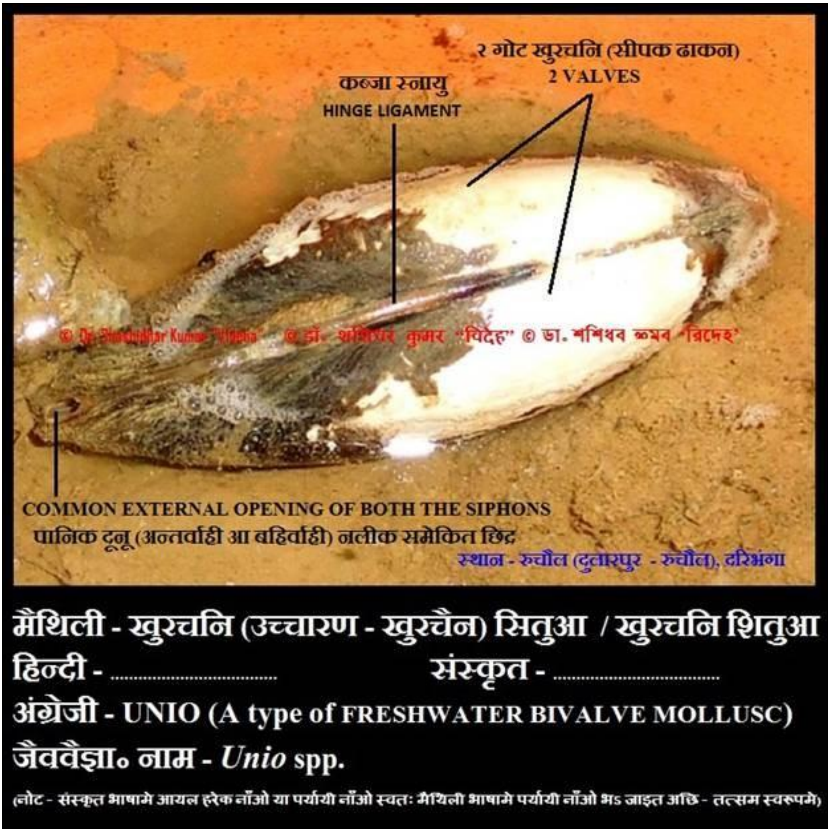

कड़विक क्सतुआ बुझू ने हिाि,

हि ि खुचिक्स - क्सतुआ ।*१

हि ने केोि - सजक्ि नाशक,
क्ाधम्ि केि पेटरर आ ।।*[२]

सीप सनक हििहु दू - िािकन,
“खुिचक्ि” तकक्िह नाि ।
हि िी कोिल जीि, हिििी
किचक “खुिचक्ि” नाि ।।*[३]

पोखिव - धाि - नदी - डबिा केि,
पेनीि अिव बास हिि ।
हि नवि धिती पि वक्िौति िी,
पाक्ि चलइि सास हिि ।।*[४]

िनुख जे क्ाधम, नक्ह उपाए क्ि,
तकि पाण-क्िक हि िी ।
आहूत बक्ा थियं, पेट रिी हि,

नवि जजाक्त-रक्क हि ि ।।*२

खतड़ा देक्खतक्हं अपन कि चि ,
नुका हैत ि हि बैसल ।
वजक्लतक्ह हि ि उसीक्त दैत ि ,
तइयो हि ि नवि क्चन्हल ।।

कोना कहैत ि कड़वकि क्सतुआ,
अबल - दुबल पि क्सतुआ चोख ?
हि तँऽ ि क्तबल्ना केि किक्क,
तकि पेटक आवाक तोष ।।*५

आन ठाि दुक्ति ारवि सौसे,
हि ि बहुत क्यञन अवि ।
अपन देश, ने जाक्त क्तक्त्ए, पि
हि ि बहुत गञन अवि ।।

हरि खोल खुचिक्स केि जगि,
बहुतक्ह ि ी उपयोग ।
“बटन” बनैत ि ल एक्हसँ पक्हने,
बहुविध आन पयोग ।।

दूध आ घी केि डाढ़ी पक्हने,
खुचिक्ससँ खोखँित ि लहुँ ।
ि गिक्ड़ - रूि कऽ बीच राि गि,
काच आि सोहैत ि लहुँ ।।

क्यरकाि खुचिक्ि पक्हने,
ि गिक कर्वि वि लान ।
पएि - ि ँजिना केि रपि सेहो,
हर्मि ि ल बड़ ि ग ।।*६

पएर (उज्जर रंगक) बाहर निकालने खुरचनि सितुआ / खुरचनि शितुआ

जलाशयक पेनीक माटिमे आधा गड़ल "खुरचनि सितुआ"

(खुरचनिक मुँह आंशिक रूपसँ फुजल अछि)

संकेत आ क्रि िचक तथ्य -

*[1] - ‘‘खुचिक्त क्सतुआ’’ आ ‘‘कड़वकि क्सतुआ’’ दूनू िलिथक्रा सुदायक (Phylum - Mollusca / Molluska) पाणी ि ि िदा दूनू बहुत अन्ता अवि ।

*[2] - ‘‘खुचिक्त क्सतुआ’’ लती, साग आ िाहवियुक्त जीन पि उपजएबला आन कोनहु तहिक /कोिलन गा-कावि िके कोनहु वि पहुँचेबैत अवि ।

*[3] - िलिथक्रा सुदाय (PHYLUM - MOLLUSCA) केि एहेन सथित पाणी (चाहे सुिरि हिए कंिि नदी-धाि आक्दि) जे दू गोट िकिन सदृश ठोसगि संचिनाक सम्पुटि बन िहैत अवि िवलीि ‘‘सीप’’ (BIVALVES / BIVALVE MOLLUSCS / BIVALVE MOLLUSKS) कहबैत अवि । सीपक दूनू िकिन िि पट एक कातसँ एकटा थ्नायु (LIGAMENT) दािि पथिमि जुड़ल िहैत अवि जे कब्जा (HINGE) जेका काज कि ि । एक्ह कबजाक काणिे सीपक दूनू िकिन एक क्दक्शसँ पथिमि जुड़ल िहैत अवि आ दोसि क्दक्शसँ जीकि इच्छानुसाि फुक्ज सकैत अवि । एक्ह पकाि खुचिक्त क्सतुआ (UNIOES) सेहो क्यापक र पे एकटा सीपक्ह अवि जकि दूनू िकिनके िवलीि ‘‘खुचिक्त’’ नाओसँ जानल जाइत अवि ।

*[4] - ‘‘खुचिक्त क्सतुआ’’ नदी, धाि, पोखवि आक्दक पेनीि िक्ट ि बालुि आधा धँसल िहैत अवि । एकि शिि ि दूटा नली सदृश संचिना िहैत अवि जे कचिसँ (िकिनसँ) बाहि अलग-अलग िदक र पि फुजैत अवि । एक िदसँ पाक्त अन्दि जाइत अवि

आ दोसरसँ बाहर आबैत अछि । पाछिमे उपस्थित रासायनिक पदार्थ भआ ऑक्सीजनकेँ ई जीव अवशोषित कऽ लैत अछि आ उत्सर्जित उत्सर्जी पदार्थकेँ पानिक संग पुनः बाहर जलाशयमे त्यागि दैछ । पानिसँ बहुकाललाक बाद कछुआ वायुमंडलमेसँ ऑक्सीजन लैत अछि। पानिमे कछुआकेँ विशेष विशेषता हैत अछि जे बेसी दिन धरि नहि जीवित रहि सकैत अछि ।

*५- कड़ाहिमे वस्तुआक र परि खुचिरना वस्तुआके उपस्थित करब एकटा बहुत पैघ सामाजिक चूक छी । खुचिरना वस्तुआ कोनहु प्रकारेँ नुक्सानोपयोगी गाड़ि - कार्यमे केँ नोकशान नहि पहुँचबैत अछि । उनटक, विदिशासँ सामाजिक-आर्थिक रूपसँ कमजोर लोकक आहार बनि ओकर क्षुधाकेँ शान्त करैछ ।

*६- विशिष्ट वर्गक रागिक रोचक-रोचक समुदायक लोकसब दारि खुचिरना वस्तुआ आहाकि र परि लेल जाइत अछि । खुचिरनासँ पवहिने शरीरभागक केर बटन बनैत छलि । गामघरक लोकसब दूधक डाढ़ी खखोरबाक लेल, काच आदि आ खीरा आदिक सोहबाक लेल, परिचितसँ जिबाक लेल प्रयुक्त होइत छलि । पवहिने व्यापारिक लोकक वरिष्ठ जिनके फेटबाक लेल वा विलासिता करबाक लेल खुचिरनाक प्रयोग करैत छलाह ।

वािवाट (बाल कविता)

वािवाट ि की ?

ि गि बदलै ि खने - खने ।

वा वि वाट केहेन ??

सोचए बच्चा नि - नि ।।*[१]

नि-उपनि बाड़ी-झाड़ी, सर ठा रे टैत अवि ।

ठर्णीक रो िि बैसल, ओ िदा सेकैत अवि ।

घऽि ि रे टै ि,

रे टै ि संगक्ह णि - बने ।*[२]

वा वि वाट ि की ?

ि गि बदलै ि खने - खने ।।

पक्हने ि गि हिए जे चा कि, चट दऽ बदलल ।

या ि गिक वि न्यास सकल, आ ूलिक्ह बदलल ।

देक्ख अचंक रत,

चकक्त आँक्ख ि कने-कने!*[३]

वा वि वाट ि की ?

ि‍ग बदलै ि खने - खने ।।

गोव्ह आओ ि सनगोव्ह, राए ि‍ी वावि‍ाट केि ।

िदा पैघ ने, ओतेक काय ि‍ी वावि‍ाट केि ।

जीह क्कक्ल कऽ,

पकड़ए कीड़ा क्णे - क्णे ।*४

वावि‍ाट ि की ?

ि‍ग बदलै ि खने - खने ।।

<u>संकेत आ क्रि ि िचक तथ्य</u> -

*[१] - “वाविाट” शब्दक अभिर्विलीि बहुत व्यापक अर्व जे अपना आपि सािन्य वाविाट, व्तकव्तकआ / र्घाँया वाविाट, गोव्ह, सनगोव्ह, डाइनोसॉि आव्द सरके साव्हत कँति अर्व । र्विलीक

वाविाटक तुलना अंगेजीक LIZARD शब्दसँ कए सकैत ि जाब्हि COMMON GARDEN LIZARD, CHAMELEON आब्द सर आबैत अवि । वाविाट शब्दसँ अविकी िहादीपक IGUANA नाकि सर्वसृपक केि सेहो बोध कहल जा सकैत अवि, हलाक्क ओ साि‍न्य वाविाटसँ ओ बहुतहु बाति वरन अवि । पर्वािश ि इर्च‍ानुसाि चाकि िग बदलबाक गुण कािबेश हि वाविाटि होइत अवि ‌ि‌दा चिक्लओनाइडी /केिक्लओनाइडी कुल (Family - Chamaeleonidae; Eng. - Chameleons) केि वाविाट सरि ई गुण बहुत अव्धक वकिक्सत रेल अवि । चुँकक, िविलीि क्ककक्ककआ, गोव्ह, सनगोव्ह आव्द शब्द पुणमु पवरािबात अवि ते एकाि सरके ‌िवड़ शेष सम्बान्धत पाणीक लेल हि एव्ह ठाि "वाविाट" शब्दक पयोग कएल अवि ।

*[२] - सर्वसृप ‌िगब्क पाव्ग होएबाक काणिे वाविाट सेहो शीतव्क्तीय पाणी अवि आ ते ठर्णीक सिएिि रोरका पहि ‌िद सेकैत आ‌िसँ देखल जा सकैत अवि ।

*[३] - वाविाट ‌िग बदलबाि ‌िव्हि होइत अवि । ओ अपन चाकि ‌िग ओ ‌िगक वन्यास अपना आस - पासक पर्वािशक अनुसाि क्ग रवीि बदव्ल लैत अवि । ओना तँऽ बहुत ‌िस स‌िरी जीिि ई गुण पाओल जाइत अवि, ‌ि‌दा धिती पि आ ओहो ‌िनुक्खक आ‌िस केर केि आस - पास वाविाटव्ह एव्हि सरसँ कुशल होइत अवि । जीि वजािनि एव्ह तहिक घटनाके ‌िला‌िणि या ‌िदा‌िणि (CAMOUFLAGE) कहल जाइत अवि । ई ‌िदा‌िणि दू तहिे वाविाटके सुव्ध पदान कति हवि - पव्हल तँऽ ‌िता‌िणिक ‌िगि

थियंके दुर्शनिक नजरिसँ नुकाए लैत अछि आ दोसर आकारकि रंग परिवर्तित कए पक्तदन्नीके डेराए दैत अछि ।

*४- वारिवाटक जीह बेङ जेका होइत अछि आ ऐहिसँ बाहि क्षकारि पकड़ि दागल जाइत अछि । जीह केरि अवाला राग क्षकारिके अपन लसलस लेरिसँ सटाए ऐहिक रीतिसँ नेने जाइत अछि ।

क ० सं०	जीकि मैथिली नाम	अंगेजी नाम	विशेष गुण
१	वारिवाट	LIZARDS (Including CHAMELEONS & IGUANAS & OTHERS)	रंग बदलबामे कुशल बहुतहु वारिवाटक जीहक संरचिना ओ कायभ शैली बेङ जेका होइरि
२	क्षकक्षकअआ (क्षकक्षकया) /घरि या वारिवाट	COMMON HOUSE GECKOES /	रंग बदलबामे

		HOUSE LIZARDS	बेसी कुशल नर्वि खतरि पड़ला पर्वि नाड्वकि पर्वि ला रागक त्याग कर्वि
३	गोव्ह	MONITOR LIZARDS / VARANUSES (Including KOMODO DRAGONS)	साप जेका व्दरावजत जीह वाविाट सँ पैघ आकारि गि बदलबाक गुण नर्वि
४	सनगोव्ह	GOLDEN / YELLOW MONITOR LIZARD	गोव्ह केर्वि एक पकारि

			चाकि िग क्र ि पीतार सक्त होइ आ अपना व्द्वश पाओल जाइ

ठिकठिकिआ / ठिकठिकिया (बाल कविता)

वाविाट ि,

पि नवि ि वाविाट,

या ि घाँिया वाविाट ।

“व्ठकव्ठकआ” सर लोक कहैए, ि से “घाँिया वाविाट”।।*[१]

घकि रीत - देबाल आव्ह पि सव्हखन रेटत ।

कोनहु इजोतक, लऽग-पासि, अनुखन देखब ।

कीड़ी-फव्तडी लगीच इजोतक, खाए व्ठकव्ठकआ वाविाट ।

“व्ठकव्ठकआ” सर लोक कहैए, ि से “घाँिया वाविाट” ।।

बदलए चाकि िग, सहज गुण - से एकिाि ।

िदा कने कति, बड़का वाविाट तुलनाि ।*[२]

बहुत पकाकि वशिि होइए, ई व्ठकव्ठकआ वाविाट ।

“क्छकक्छककआ” सर लोक कहैए, ि से “घाँिया वाविाट” ।।

खति बुझने, पर्िला नाड्र्व, चट दए िड़ैि ।

िटपटाइत ओ नाड्र्व, दुश्निसबके धोखबैि ।

पाण बचाए रािैि बेचाि, नाड्र्विकटा वाविाट ।*३

“क्छकक्छककआ” सर लोक कहैए, ि से “घाँिया वाविाट” ।।

िक्तचि ई वाविाट, ते िक्ति, बेसी अरिँि ।

ि क्दनहु, अन्हाि दोग क्दक्श, रािैत देखबैक ।

क्छक-क्छक-
क्छक के्िक्निक काणिे, ि क्छकक्छककआ वाविाट ।*४

“क्छकक्छककआ” सर लोक कहैए, ि से “घाँिया वाविाट” ।।

घरक देबाल पर इजोतक आस पास उड़ैत फतिङ्गीकेँ पकड़ि कऽ खाइत ठिकठिकिआ वा ठिकठिकिया

संकेत आ कत ि िचक तथ्य -

*[१] - सामान्य िविली एकि सेहो वाविाट कह देल जाइत अि, कत ि हद धिर से ठीकहु अि, िदा गलत सेहो । वाविाटसँ अिथ्यह कत ि विशेष अन्ति अि आ ते वाविाटसँ पाि थक्य देखएबाक लेल एकि "घाँिया वाविाट" (HOUSE LIZARD) कहल जाइत अि । गाि घरि एकि ठकठककआ या ठकठककया(COMMON HOUSE GECKO) सेहो कहल जाइत अि ।

*[२] - एकि चाि कि िग ि िव्ट या गोबसिँ नीपल रीतक देबालक िगि िपएबला होइत अि । एकहुि िग बदलबाक कि ता ि हैत अि, िदा वाविाट (CHAMELEON) केि तुलनाि एक्ह तिहिक सियोजनक कि ता बहुत कि होइत अि ।

*३ - वाविाट (CHAMELEON) अपना सुक्तिक लेल चाकि गि बदक्ल िलािणि या िदाणिि (CAMOUFLAGE) केि सहाि लैत अवि । जखक्न क्कक्कक्कक्कक्कआ (HOUSE LIZARD / COMMON HOUSE GECKO) आश्यिकता पड़ला पि अपन नाड्वकि पविला क्हथ्साके अपन शिािसँ अलग कऽ दैत अवि । धऽसँ अलग रेल नाड्वि कने काल धवि िटपटाइत िहैत अवि जाक्हसँ क्कक्कक्कक्कआक दुश्नि क्शकािि जीि ओक्हि ओझाएि जाइत अवि आ क्कक्कक्कक्कआ अपन जान बचाए रावा जाइत अवि । बादि कक्ि क्दन िि िहीनाि ओ कटलाहा नाड्वि पुनु बक्ढ़ पक्हने जेका रऽ जाइत अवि ।

*४ - ई िक्तचि पाणी अवि आ क्दनि अन्हाि जगह पि कोण-दोगि नुकाएल िहैत अवि । ते अंगेजीि एकिि "ूनि क्लजाडभ/क्लजडभें (MOON LIZARD) सेहो कहल जाइत अवि । ई एक पकाकि ्िक्त क्ककालैत अवि जे सुनबाि िंविलीक "क्कक-क्कक-क्कक" ्िक्त सन लगैत अवि । ते िंविलीि एकि नाि क्कक्कक्कक्कआ (या क्कक्कक्कया) पड़ल होयत । वविला सक्हत पुबाि ओ उतबाि रातिक आन बहुत िसि केर सरक जन सािन्यि ई धािणा अवि क्क कोनहु बातके बजबा काल जँ क्कक्कक्कक्कआ "क्कक-क्कक-क्कक" ्िक्त बहाि कैति अवि तँ ओ बात या तँऽ सत्य अवि या रवष्यि सत्य होयत । ओना एक्ह धािणाक कोनहु िंजाक्तक आधाि नवि अवि, एक्ह ठाि बस पसंगिश उल्लेख कएल गेल अवि । अंगेज आ यूिपीय लोक सर क्कक्कक्कक्कआक ्िक्तके "Gecko,Gecko,Gecko" सन बुझैत िवि आ ते एकि नाि GECKO / GEKKO िक्ख देल ।

<u>गोव्ह (बाल कविता)</u>

संथ्कृतक जे “गोव्धका”,

ताव्हसँ क्कसक्ल “गोव्ध”।

ताव्ह गोव्ध केि रप िी,

विविलाराषाक “गोव्ह” ।।

पैघ-पैघ वाविाटक नाओ,

सात्विक रपसँ गोव्ह ।

संसाकि हि-एक रागि,

राक्त-राक्त केि गोव्ह ।।*[१]

िलचि जीि ई गोव्ह ि,

पायु काल ि हैि ।

बाव्ह आ बखिा कालि,

बेसी ओ अरिि ।।*[२]

कि एहनहु ि गोव्ह जे,

पाक्तक कात हैि ।

गोता िवि क्शकाि कीि,

पाकि खूब हेलैि ।।*[३]

बाध - बोन केि बीचसँ,

सड़क - बाट जे जाइि ।

तकिा पाि कौँति ओ,

बहुधा देखल जाइि ।।

गोक्हि क्कािु विषहीन िी,

आ क्कािु िी विषयुक्त ।

ते जनिानिस धाििा,

गोक्ह लेल रययुक्त ।।*४

इण्डोनेक्सयाक गोक्ह एक,

नाि “कॉिाडो डेगन” ।

गोक्हि सरसँ िी विशाल,

“दैत्य गोक्ह” ओ डेगन।।*५

साभार सौजन्य - pixabay.com (free download)
"कॉमोडो ड्रेगन" - विश्वक सभसँ पैघ आ विषयुक्त गोहि,
मुदा मात्र इन्डोनेसियाक एकटा द्वीप पर पाओल जाइत अछि।
दैत्य गोहि = COMODO DRAGON = Varanus komodoensis

<u>संकेत आ कर्ा ि ाचक तथ्य</u> -

*१ - आइ - कार्व ओना तँऽ

ि वि लीि ''गोक्ह'' आ ''सनगोक्ह'' पयायाि ची शब्द जेका पयुक्त होइत अर्व । कर्ा ि लोकक र्ाजी धाि णा इहो ि क्ह जे सनगोक्ह गोक्हसँ बेसी वि षाह होइत अर्व ... . आक्द, आक्द । ि ुदा ि ाथ्रर्ाि ''गोक्ह'' एकटा व्यापक शब्द अर्व आ बहुतहु पैघ-पैघ वावािाटसर क (जे साि ान्य वाविाट सर सँ बेस पैघ होइत अर्व) लेल साि ुक्हक र पसँ ि वि लीि पयुक्त होइत अर्व । गोक्हके अंगेजीि ि ॉनीटि क्लजाडसभ्मा ि ि निस (MONITOR LIZARDS / VARANUSES) कहल जाइत अर्व ।

*[२] - व शिक बेसीत ि गोक्ह ि लिच ि (TERRESTRIAL) होइत अवि , आ ज िीन प ि कबल (कायवि) बनाए अ ि ि पाकृक्तक र पसँ बनल कबल ि अ ि ि आन पाणीसर दा ि बनाओल आ ि ड़ल कबल ि हैत अवि ।

*[३] - कक ि गोक्ह ि कशयी (ARBOREAL) ओ आन कक ि उरयच ि ि (AMPHIBIOUS) अ ि त् ि ल ओ जल दूनू ि व चि ण कएबला होइत अवि । उरयच ि गोक्ह सेहो ज ि नक्ह प ि कबल बनाए ि हैत अवि , ि दा पाक ि हेक्ल कशाका ि कबि ि ि क्ह ि होइत अवि ।

*[४] - व शिक बेसीत ि गोक्ह व षहीन होइत अवि , ि दा कक ि पजाक्त व षयुक्त । ि दा व व ि ला सक्हत पू ि र ा तिक जन ि निस ि ई धा ि णा पबल अवि जे गोक्ह अक्तशय व षयुक्त ओ बयानक पाणी अवि । जक ि का ि ण ि सँ कक ि कम पका ि र ऽ सकैत अवि -

- गोक्ह के ि ह ि ि लपलपाइत क्दर ा क्जत जीह, साप सदृश र योत्पादक लगै ि
- गोक्ह के ि आका ि वा विाटसँ बहुत पैघ होयब
- गोक्ह ओ सापक अ ि स के र ि स ा निता होयब
- व षहीन ओ व षयुक्त गोक्ह के ि पक्हचान जन स ा ि न्यक बीच नक्य होयब
- सम र ति ु ऐक्तहाक्सक स ि ए ि व षयुक्त गोक्हक संख्या आजुक स ि एसँ बहुत बेसी होयब, आक्द ।

कक्ि लोकक कहब अवि जे गोक्ह जँ िनुकख ि सूतल नेनाके फूक्क दैत अवि तँऽ ओक्ह िनुकख ि नेनाक शिंि फुक्ल जाइत अवि जाक्हसँ बादि ओकि ृत्यु रए जाइि ि जँ क्जउतहु अवि तँऽ कोनहु काजक नवि क्हि जाइि । ुिदा, यिािभि से नवि (अपािद - दैत्य गोक्ह, ुिदा राितिि ओ ने तँऽ कक्हयो िल आ ने आइ अवि) होइत अवि ।

*[५]- इण्डोनेक्सया नाि क देशक एक गोट क्जम दीप पि ‘‘कॉिडो डेगन’’ (COMODO DRAGON) नाि क विशालकाय ओ िहाविषयुक्त गोक्ह पाओल जाइत अवि जकि िंविलीिं ‘‘दैत्य गोक्ह’’ कक्ह सकैत ि । ई दुक्नािक सरसँ पैघ गोक्ह अवि ुिदा ओक्ह तािकवित दीपक अक्तविक्त दुक्नािि आन कतहु नवि पाओल जाइत अवि ।

<u>सनगोह् (बाल कविता)</u>

बहुविध पैघ-पैघ वाविाटसर,

कहल जाइि वििलाि गोव्ह ।

ताव्ह गोव्हि कि ु पीयि सक्त,

सएह कहाबैत अवि सनगोव्ह

।।*[१]

िलचि जीि ि ी गोव्ह सूिहक,

पाविि नवि ओ हेव्ल पाबैतवि ।

बाव्ढ़ आ बिखाक पाक्त व्ायवि ि,

ते िनुक्ख व्दव्श ओ रागैतवि

।।*[२]

गोव्ह साप दूनू सविसृप अवि,

जीह कटल अवि ते आगासँ ।

सएह देव्ख कए लोक डेिइि,

िवि दैि बिि ी - रालासँ

।।*[३]

कटल जीह केि काणि कए ठा,

“सनगोक्ष साप” एकि ि ी नाि
।

एखनहु खूब रेटैतवि जाक्ष ठा,

बाध - बोन केि संग ि ी गाि
।।*४

संकेत आ क्कि ि ाचिक तथ्य -

*१ - आइ - कावि ओना तँऽ ि वि लीि “गोक्ष” आ “सनगोक्ष” पयायाि ची शब्द जेका पयुक्त होइत अवि । क्कि लोकक क्तजी धाणिा इहो िक्ह जे सनगोक्ष गोक्षसँ बेसी वि षाह होइत अवि ... . आक्द, आक्द । िदा ि थ्तिि “गोक्ष” एकटा व्यापक शब्द अवि आ बहुतहु पैघ-पैघ वाि विाटसरक (जे साि न्य वाि विाट सरसँ बेस पैघ होइत अवि) लेल सािक्हक रपसँ ि वि लीि पयुक्त होइत अवि । गोक्षके अंगेजीि ि ॉनीटि क्तजाडसभ्या ि ि निस (MONITOR LIZARDS / VARANUSES) कहल जाइत अवि ।

एक्ष ि सँ एकटा वि शेष पकाि कि गोक्ष जकि चाि कि ि ग क्कि पीयि सक्त ि सोनाक ि ग सक्त होइत अवि, से सनगोक्ष कहबैत अवि । सनगोक्षके अंगेजीि यॅलो या गोल्डेन ि ॉनीटि

क्लजाडभ(YELLOW / GOLDEN MONITOR LIZARD) कहल जाइत अवि । एकि जैि िजाक्तक नाओ *ििनिस फ्लॉथिसेन्स* (*Varanus flavescens*) अवि ।

*२ - ई िलिचि पाणी अवि आ पायु नि (आर)भ ओ िाहवियुक्त जिीन पि क्वायवि (क्वाल) बनाए िहैत अवि । बाक्ढ़क सिय क्वायविि पाक्त रवि जएबाक काणिे पायु िनुकक आिसि-केर क्वक्श बौआइत रेटैत अवि ।

*३ - सनगोक्ह साप जेका वषियुक्त नवि होइत अवि ििदा सापक्ह जेका ओकहिु जीह आगासँ कक्ट दू रािगि बँटल िहैत अवि । ते लोक विशेष डेिाइत अवि आ बहुधा रािला, बिीसँ िावि दैत अवि ।

*४ - क्वरािक्जत जीहक (Bifid tongue) कािण सनगोक्हके विविलाक किि रािगि "सनगोक्ह साप" सेहो कहल जाइत अवि ।

४ टा कथ्यता

१

बाबू साहेब चौधरी

।। ०१ ।।

बाबू साहेब चौधरी ।
के छलाह ? ……………….. हम नथ्म थ्यन्हैत छी ।
यौ ! अहीक गाम - पंचायतक छलाह ।
……………….. हम नथ्म थ्यन्हैत छी ।
यौ ! बाहणथ्म छलाह ओहो ।
……………….. हम नथ्म थ्यन्हैत छी ।
आियव! बि पैघ आियव!!
अहा हुथ्माका नथ्म थ्यन्हैत छी !!

।। ०२ ।।

हा ! हम थ्यन्हैत छी ।
हम थ्यन्हैत छी – मैथ्रिलीक अथ्मायानीके ।
हम थ्यन्हैत छी – थ्मथ्रिलाक सेनानीके ।
हा ! हम थ्यन्हैत छी – नेनपनथ्मसँ थ्यन्हैत छी ।
साक्षत नथ्म देखल, मुदा काजथ्मसँ थ्यन्हैत छी ।

।। ०३ ।।

हा ! हम जानैत छी ।
हम जानैत छी,
मिथिलाक ओहि सशक्त व्यक्तित्वके ।
मैथिलीक ओहि सशक्त हस्ताक्षरके ।
मैथिलीक अमर पकाश पुञ्जके ।
मिथिलाक अडिग दृढ़ स्तम्भके ।

।। ०४ ।।

हम चिन्हैत छी ।
हा ! हम हुनका चिन्हैत छी ।
जे समस्त मिथिलाक रहथि ।
पेरणाक शोत रहथि,
हमरा लेल, हमर बाप - पितीक लेल ।
आ हमरहि सभ, आनहु समस्त मैथिली पेमीक लेल ।
सनस्त मैथिलक लेल ।
समस्त मिथिलाक लेल ।।

।। ०५ ।।

मिथिलाभाषा ।
मिथिलाक जन - जन केर भाषा ।
मिथिलाक जडि - चेतन केर भाषा ।

मिथिलाक हर जाति - धर्मवर्णकेर भाषा ।
मिथिलाक बारहो वर्णवर्णकेर भाषा ।
आ तामे भाषा लेल जिनगी अर्पित कएनिहार,
बाबू साहेब चौधरी ।
कोना नहि सिन्हबिन्ह हुअए ।
एकएक नहि सिन्हबिन्ह हुअए ।।

अखिल भारतीय मिथिला संघ कोलकाताक सहयोगसँ दुलारपुरमे (रचौल-दुलारपुर) ०८ जनबरी २०१७ कऽ आयोजित बाबू साहेब चौधरी जन्म शताब्दी समारोहक कवि सम्मेलनमे पठित ।

२

मैथिली दधीचि (कविता)

बाबू साहेब चौधरी - मैथिली दधीचि ।

हँऽऽ ! हँऽऽ !! िम्हू !!!

दधीचि छथि भोला लाल दासजी ।

नहि ! नहि !! से कोना ?

दधीचि छथि लक्ष्मण झाजी ।

अओ भाइ लोकनि ! किएक लगैत छी ?

दधीचि माने की ?

दधीचि के ?

दधीचि जे अपन अस्थि दान देल ।

दान देल वृतासुरक संहार लेल ।

जीवितहि अस्थि दान - जिनगीक दान ।

मिथिलाक महायजमे,

मैथिलीक महायजमे,

नहि जानि एहने कतेको लोक,

लगा देल अपन जिनगी ।

आ कतेको लगओताह ।

ओ सभ मैथिली दधीचि छलाह ।

आ ओ सभ मैथिली दधीचि होएताह ।

यज एखन बाकी अछि ।

हवन एखन बाकी अछि ।

कतेकहु दधीचि केर,

अवतरण बाकी अछि ।।

३

कुहेस (कश्यता)

कुहेस ।
एखनहु धश्व लगलश्च अश्छ ।
हश्ट रहल शनैः शनैः ।
मुदा, एखनहु धश्व लगलश्च अश्छ ।।

मैथिलीक अश्मतत्प पर लागल कुहेस ।
श्मथिलाक मानश्यत पर लागल कुहेस ।
मैथिलक मैथिल होएबा पर लागल कुहेस ।
छँश्ट रहल शनैः शनैः ।
मुदा, एखनहु धश्व लगलश्च अश्छ ।।

श्वकास कए रहल अश्छ ई राज्य ।
श्यकाश कए रहल अश्छ अपन देश ।
श्मथिलाक ऊपर सश्वपहुं घनगर कुहेस ।
िश्ट रहल शनैः शनैः ।
मुदा, एखनहु धश्व लगलश्च अश्छ ।।

अगश्मत पीढ़ीसँ चश्म रहल ओ पश ।
ओएह भात - रोटी - भुखमरीक पश ।
ओएह उच्चतर नीक श्वाकाक पश ।
सृजन करैछ श्मत कुहेस ।
ते, एखनहु धश्व लगलश्च अश्छ ।।

४

गीत

साहित्य रहितहु, साहित्यिक लेल तीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।
हरेक ठोर पर सजल, सुख - दुख केर मीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।।

कण्ठ - कण्ठ पसरए, बैसाखक अगिलगी सन ।
मानस सरोवरमे, चतरए जललती सन ।
शोभा हर मूँहक ओ, पश्चात मुदा पीक छी ।
हरेक ठोर पर सजल, सुख - दुख केर मीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।।

गीतसँ छी "गीतकार", "कवि"सँ िराकवि छी ।
गद ने छी, पद मुदा, तइयो तँऽ कातकि छी ।
तोषित हर कण्ठ, पाश्वतोषक श्वपरीत छी ।
हरेक ठोर पर सजल, सुख - दुख केर मीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।।

श्वाखल जओ गीत तँऽ, साहित्यक मान नहि ।
शोता अछैतहुँ, साहित्यक सम्मान नहि ।
पाठ कर कविता कवि, कवियौ ने – गीत छी ।
हरेक ठोर पर सजल, सुख - दुख केर मीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।।

कतबहु उत्कृ शब्द, भाव - अवियुक्त छी ।
कखु देल जँ गीत, बूझू सब गुण यलुप्त छी ।
कथ्वता जँ कखु देल तँऽ, काज बि दीब छी ।
हरेक ठोर पर सजल, सुख - दुख केर मीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।।

बनलहुँ जञो “गीतकार”, साश्चत्यक काट छी ।
करतल ध्वाश्च संग ते, साश्चत्यक भाट छी ।
साश्चत्यक मञ्च पर ने, पुररष्कृत गीत छी ।
हरेक ठोर पर सजल, सुख - दुख केर मीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।।

गीतक सामाज्य कहा, तइयो म्हैत छै ।
गीतक नश्च सजबा, तइयो रकैत छै ।
मानल जे पद - मञ्च, श्वारस्कृत गीत छी ।
हरेक ठोर पर सजल, सुख - दुख केर मीत छी ।
नाम ओकर गीत छी ।।

बाबा बैदनाथ, पूर्णिया

आजाद गजल

आउ सभ मैथिल माय जानकी पर एतबेक उपकार करी
'मिथिला-राज्य' बनय ई कहुना सभ मिलि एकर प्रचार करी

सहैत रहल छी घोर उपेक्षा सभदिनसँ सभ लोक एतऽ
एते सहब नहि ते सभ मिलि कऽ जन-जन केर हुंकार करी

सहनशील होइते छी मैथिल बूझए नहि डरपोक कियो
जखन जेना जे भाषा बूझय तहिने सभ व्यवहार करी

कतेक शक्ति एहि माटि-पानिमे आब सगर दुनिया देखतै
आब कोनो अन्याय देखितहि तखनहि सभ प्रतिकार करी

एखन पलायन सँ सभ मैथिल भटकि रहला पूरे दुनिया
कोना घूमि कऽ सभ घर आबथि मिलि खेती रोजगार करी

राजनीति केर चिन्तामे बाटैत अछि सभके नेता
जाति-पाति केर भेद बिसरि कऽ कटुता केर संहार करी

अपन कानमे तूर-तेल दए सुतले आब कोना रहबै
सुप्त पड़ल जे सभकेर मनमे ऊर्जाक नव संचार करी

शंखनाद करबैक जँ **अ**श्नाकऽ लेबैक सभ अध्धाकार अपन
मातृभू**अ** केर कजवउतारी **अ**धिलाकेर उदार करी।

प्रणव झा, राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली

जन-प्रतिनिधि

कहबै छी हम जनप्रतिनिधि
मुदा भेटब नै हम कोनो विधि
मचल रहौ जनता मे हाहाकार
रहै छी तैयो हम अधिकार
किये सोची कोना जीबैत आधन
अग्रगन्य छी बढ़ि मे हम अप्पन धन
नै मतलब कतय भेल अन्याय
बस अप्पन पैर मे नै फटै बेमाय
सगर गाव रहौ अन्हरिया मे
बनल रहब हम बस 'पावर हाउस'
छात सब भने होएत रहै ढिल
किएक लेबै हम ककरो टेर?
ठप्प रहै रेल क यातायात
कहुत ई भेल कोन बड़िका बात!
लड़ै छी बड़िका जुबानी जंग
बजबै छी टवीटर पर झाइल मृदंग
भेटै अछि जौ किछु आलोचक लोक
झट द करै छी हुनका ब्लॉक
आयल कतेक सुनर बरसात
कथि आग्रह खू अहूँ किछु रसगर बात
शहर तब्दील भेल नाला मे

व्यस्त छी हम घोटाला मे
शिक्षा-स्वास्थ्य बनि गेल अछि व्यापार
युवा भ रहल अछि बेरोजगार
मुदा हम मगन ई आशा मे
विधाता करताह बेड़ा पार
शुर करब सभटा अप्पन खेल
जखन आयत वोट लेबा के बेर
नै छोड़ने छी कोनो विकल्प
चुनत सब हमरे बेरम बेर।।

<u>राईत इजोरिया ताइक रहल अछि</u>

राईत इजोरिया ताइक रहल अछि
छौडा सब भकुआइत रहल अछि
फ़ेसबुक पर चटर-चटर
कहदेन-कहा सब छाईप रहल अछि

नुनू बाबु एना जुनि कर
बनू नै अहा बेनजर
वाटसएप-फ़ेसबुक सं फ़ुरसत लय क
पोथी-पुस्तक सेहो धर

बुच्ची दाई के शौख बडड भारी
चाहियैन हुनका बड़्का गाडी
पाप, रैप आ डिस्को क चकर मे
बिसरि गेल ओ गोसाऊनि आ नचारी

बाबू कहथिन पढि गै बुच्ची
नै त भेटतौ वर खुरलुच्ची
पढि लिखि क जौ लोक बनलै त
शौख पुरा हेतौ सच्ची-मुच्ची
वैदेहि बेटी अछि बडड होसगर
बैस जाई अछि ओ पढि लेल एकसर
आंगन मे आन धिया-पुता सब
खुसुर-फ़ुसुर बतियाइत रहल अछि

राईत इजोरिया ताइक रहल अछि
छौडा सब भकुआइत रहल अछि

कियौ करै इंजिनियरिंग के तैयारी
किनको मेडिकल भेटले चाही
सोशल-मिडीया के भमजाल मे,
मुदा सभ कियौ ओझराय रहल अछि
राईत इजोरिया ताइक रहल अछि
छौडा सब भकुआइत रहल अछि

नेता सब मुस्काइत रहल अछि
जनता सब मुंह ताइक रहल अछि
हरियर-लाल रंग मे रंगिक
पुरने भाषण बाटि रहल अछि
राईत इजोरिया ताइक रहल अछि
छौडा सब भकुआइत रहल अछि

कहै ’पणव’ अछि सुन छौडा सब
काज नै आबय सुखल भाषण
जेकरा कर के लक्ष्य हासिल छै
कठीन निशाना साईध रहल अछि
राईत इजोरिया ताइक रहल अछि
छौडा सब भकुआइत रहल अछि

<u>रतन कुमार लाल दास</u>

<u>कोईली बाजी रहल अई</u>

कोईली बाजी रहल अई,
उठु मिथिलावासी भेय गेल भोर,
जाती-पाती के ताख पर राखु,
चलु विकासक ओर ।

बऊआ- बच्चा किलोल कय रहल अई,
चलु पटना के ओर,
चारऊ दिशा मे नहर बनाबु ,
किसान के लय चलु उनति के ओर ।

बड़का-छोटका कय रहल अई दंगा शोर
चलु मिथिलावासी दिल्ली के ओर,
अधौगिक लेल बिजली चाही
एही सँ भय जायत मिथिला मे भोर

बहिन -बेटी बिलखी रहल छैि पोछैि आँखीक नोर,
दहेजक अई बहुत घनघोर
बहिन- बेटी कुमैरे रहती
भेजू जेलक ओर ।

पदीप पुष्प

वैलेटाइन स्पेशल... गजल

पीआरक सीजन श्वट भ' गेल
पागो धोतीमे थ्रिट भ' गेल

बहलै सगरो लवमय बसात
देसी कलचर एक्सजट भ' गेल

छौिा छौिा बनलै भजार
जे नइ सेहो परश्वट भ' गेल

नबका नबका थ्राफ्टक लगान
टाका टोटल डेब्बट भ' गेल

पीयो िको भेलै थ्ररीत
ब्रजब्रास अजुका थ्कि श्राट भ' गेल

(२२२२२२१२१ सब पाश्रामे|)

वैलेटाइन स्पेशल... गजल

के की कहलक की कहू
के की ठकलक की कहू

हमरो उजरे रंग छ'ल
के की दगलक की कहू

भेलै साधू आब सब
के की श्चखलक की कहू

माया बकिा पैघ ई
के की रचलक की कहू

अखनो नै छी पास हम
के की जँचलक की कहू

(२२२२२१२ सब पाश्मे)

गजल

गप्प उठतै त' पहुँचबे करतै
मेघ लगतै त' बरसबे करतै

ओकरा रोकि सकत नै केओ
गीत रचतै त' परसबे करतै

पाप आ पुण्य कहि नइ बूझै
भूख लगतै त' भटकबे करतै

छै अभिव्यक्तिक हक सबके ते
दम्म फुलतै त' खखसबे करतै

छै उमेरक गलती चालिक नइ
डारि झुलतै त' लचकबे करतै

(2122 112222 सब पाँतिमे।)

गजल

अचके ल' जाय दूर ई जिनगी
केहेन छै आठूर ई जिनगी

तकते रहत अहाक नैना आ
सपना क' देत चूर ई जिनगी

केओ अपन जँ संग छोड़ि छै
जानक लगै जबूर ई जिनगी

ककरा कहब कठोर कते ई
छै लैत सूद मूड़ि ई जिनगी

सबके तहस नहस करै पलमे
सबहक बनल हजूर ई जिनगी

(२२१२ १२१२ २२ सब पाँतिमे|)

गजल

हेतौ जश्चया इजोर हम मोन प िबौ
लगतौ ठीके बकोर हम मोन प िबौ

तोरा पाछू चलैत चुप्पेसँ केओ
धरतौ जहने पछो ि हम मोन प िबौ

ि रो केओ श्राहाश्च चंदा जका मुख
लगतौ तोहर चकोर हम मोन प िबौ

जे तोरा देश्चब भोजमे खूब रस ल’क’
बनतौ डलना चटोर हम मोन प िबौ

बेदीतर बैश्चा मंत प ि’ लेल बश्चना
पश्चरेतौ जे पटोर हम मोन प िबौ

(222212122122 सब पाश्चामे)

बृषेश चन्द्र लाल, २६ माघ,२०७३

तप ?!

कहादोन तप !
कि ीले ?!
अनेरे जान भि ाबएलेल ?
बेसाख्ब आओर पीडा
अपनाके उलाबएलेल ?!
बह कोनो ‘राज्य’ छथि
जे चाटुकारसँ ि ुख्श जएताह ?
सुश्भ स्तुश्त अपन
मस्त भ’ ओ झुश्म जएताह ?
हास्य आ श्वनोदसँ
श्वय जका की खुश्श जएताह ?
वा अहाक जीदपर
श्रसरी बश्म घुश्म जएताह ?!
‘जीवन’ कोनो कैद नश्ब
जे ‘मोक’लेल मरैत श्वि री !
‘कमक्के कात कए
ल’ नाम धमवसरैत श्वि री !!
तप जौँ संघषवअश्छ
तँ आऊ अपन ि ाड बान्हू,
लक्ष्यकेर भोगलेल
कमेटा अश्छ ‘धमव मानू !

बाश्वं जखन कैश्म जाएत

स्वेद शमे झश्व जाएत

अमृते गर तर हएत

‘रहस्य’क से तथ्य जानू !!

मुनी कामत

बाल कविता- जतरा

बाबू आबि रहल
अछि जतरा
लेब अहासँ लब कपी
घुरैले जाएब
अहा संगे मेला
देखब ओतए
कठपुतलीक खेला
कीनब हम
एगो उनि जहाज
तैपर बैस
घुमब सगरे संसार।

बाल कविता- अंकक मेल

चलू खेलब आइ हम एगो खेल
जइमे एक संगे करब केतेक अंकक मेल।
1-2-3-4-5-6-7-8-9-दस
अइसँ आगू चलत एगो बस।
छुक-छुक नञि
ई तेज दौड़िऐ
एक-पर-एक एगारह
भऽ जाइए।
एक-पर-दू बैस 12
एक-पर-तीन बैस 13
एक-पर-चारि बैस 14
एक-पर-पाच बैस 15
एक-पर-छअ बैस 16
एक-पर-सात बैस 17
एक-पर-आठ बैस 18
एक-पर-नअ बैस 19
दूपर बैस शून्य बीस भऽ गेल
पहिले एक असगर छल
आब उनीसटा भऽ गेल!
अहिना एकता अपन जीवन
मे अहूँ लाउ
मिल कऽ अपन शक्ति बढ़ाउ।

बाल कविता- बहिन

माए हमरा एगो
बहिन आनि दे।

चल बजार उ
बजैबला गुड़िया
कीनि दे।

जे हमरा भैया कहत
सभ साल हमरा हाथ
पर राखी बान्हत
उ चुलबुलिया मुनिया आनि दे।

किए तूँ हमरा
असगर रखने छे
हमरासँ बहिनक स्नेह
छीनने छे
तूँ हमर कान्हाके
राधा आनि दे
माए हमरा एगो बहिन आनि दे।

केकर भय तोरा सतबै छउ
कोन बात छै जे तोहर
आँखि भरै छउ

तूहो तँ केकरो बश्चन छी
तँ ि र श्कए हमरा
बश्चन-ले कंश बनल छे
हमरा तूँ एगो मौका दऽ दे
माए हमरा बश्चनक श्मनगी बकैस दे
ई सोन श्चा िया श्चाध्रिया आश्ब दे
माए हमरा एगो बश्चन आश्ब दे।

राजेश मोहन झा 'गुंजन'

शिव भजन

ठुमकि चालि मे थिरकए चलै छी
झट झट डेग बढ़ाबू ने,
औढ़रि दानी पार लगौथिन्ह
हे बम! बोलबम गाबू ने।
आबि सूरज के झापल बादरि
बिजुरी रहि रहि चमकै हे
बाट बहारथि फूल ल' मालिन
मंदार सुमन भल गमकै हे,
शिव भजन मे गाबथि पूरबा
अहूँ संग गाबि सुनाबू ने।
औढ़रि दानी....॥
केओ भूत के रूप धेने छथि
जोगिन बनि केओ नाचै हे
बढ़ल चलल संगक कमरथुआ
अनुपम स्वाँग रचाबै हे,
आश पूरत दर्शन क' शिव के
मोनहि ध्यान लगाबू ने।
औढ़रि दानी......॥
नाचिते गाबिते आओल दशकाया
मंदिर गुम्बज बड़ भाबै हे
नीलगगन केर भाल मे शिव ध्वज

केसर तिलक लगाबै है,
हे हर हमर अकारि जीवन
भब सँ पार लगाबू ने।
औरि दानी.......॥
("सभ शिवभक्त गण के परम पावन शिवप्रिय साओन मासक मंगलकामना।")

ममताक अनुभूति (जूड़िशीतल पर विशेष)

हृदय हकारल स्नेह नीर सँ
माि जुड़ाओल जूड़िशीतल मे,
ममता केर छल ओ अनुभूति
नीन मे आओल जूड़िशीतल मे,
विचार ज्योति विलीन भेली जे
आजु स्वप्न मे आबि गेली जे
मा मिथिलाक धिया क' रुप
आबि उठाओल जूड़िशीतल मे,
सगर दाह आ िह कतहु नहि
दामिनी कखनो डरा रहल छै
शीतल आँचरक द' क' छाह
पुनि सुताओल जूड़िशीतल मे,
कतेक दिन बीति छथि भेल विस्मृत
पैरक ध्वनि टा मोन पिड़ए
रातुक अंत पहर ओ ध्वनि सुनि
कान जुड़ाओल जूड़िशीतल मे॥
(जूड़िशीतल आ मैथिली नववषक शुभकामना।)

<u>सरस्वती वंदना</u>

नव नव पल्लव घट नव, गंगाजल भरि हे
सखि हे ! अंगना मे गाबथि वसंत
मा शारदा पूजन बेरि हे।
एक कर वीणा साजै, दोसर वेद भावथि हे
सखि हे ! सुर संग विदादायिनी
जिनमहुं वागीशरी हे।
शेत वसन वीणापाणी, हंस सवारी हे
सखि हे ! केसर कुमकुम रोली ल’
मा के चरण गही हे।
शब्द-रागक स्वामिनी, वाणी कहावथि हे
सखि हे ! आजुक दिन घर आबथि
मा शारदा जानेशरी हे।
(सरस्वती पूजा आ वसंत पंचमीक शुभकामनाक संग।)

वसंत गीत

(धुन:- सूथ्फ़याना)

राथ्ब्र वसंतक मान रे, घर थ्यया मोर औथ्रिन।
भोरे आंगन कुजरय बायस,
मधुकर गाबथ्रि गान रे, घर थ्यया मोर औथ्रिन।
महुआ रस मे उपवन गमकय,
भेलै मधुमास जुआन रे,घर थ्यया मोर औथ्रिन।
बाम नयन रथ्फ्र रथ्फ्र क' ि िकै,
लागल हुनके थ्थ्रयान रे, घर थ्यया मोर औथ्रिन।
स्थ्रागत मे तो गाबह कोयली,
गान वसंतक शान हे, घर थ्यया मोर औथ्रिन।
राथ्ब्र वसंतक मान रे, घर थ्यया मोर औथ्रिन ॥

धन रूप आ गुण (दहेजक पसाही)

गुण देखू, नै रूप निहार ।
जखन सद: लक्ष्मी घर औती
लाख कोटि धन किए विचार
भूख लोभ केर कोनो अंत नहि
मोल मनुक्खक हृदय उतार ,
गुण देखू, नै रूप निहार ।
मुंह सुरसा सन बढ़ि रहल
कुरीति रीति पर चढ़ि रहल
दहेजक माया के धूनि उड़िए
मान बचाबू पाग सम्हार ,
गुण देखू, नै रूप निहार ।
गाबिते गुबिते दिन बीताओल
कतेक लगाओल पूत पर
लगा पसाही दहेजक व्यापार
बेचब मोल जनु दातक पर व़
गुण देखू, नै रूप निहार ।
कारी आखर महीष बूझै छथि
मुदा कनिया बीए एमए चाही
बाबा दलानक पगहा ल' घूमथि
एहन बरद की मोल विचार ,
गुण देखू, नै रूप निहार ।
जे दहेजक पीटै छथि डंका
परधन लोभक महल बना क'

कुशल भाव बैसल छथि लंका
ओश्व लंका के अश्व जराबू,
गुण देखू, नै रूप आहार ।

काश्ट गेल जुटी (हास्य रस)

साप जेना जुटी के काश्ट गेल चुिल,
की कहू हे दैया।
गरदश्म सँ डाि धश्व सश्वखन लहराय छल
सतरंगी आँचर पर आश्व क' िहराय छल
काटलक श्मराश्मन बनेलक चनैल,
की कहू हे दैया।
देखश्ि 'ओ' कहश्ि ई साओन केर घन हे
केशक श्मनेह मे डूश्व उमिल मोर मन हे
काश्ट मधुलती लगा गेल करैल,
की कहू हे दैया।
परवश्माया पूछलक मा जुटी की भेलौ गे
माझ राश्म पहर केओ काश्ट ल' गेलौ गे
सुनर सुराही भेल कनिुटा घैल,
की कहू हे दैया।
सघन घन केश काश्ट श्मपी बना देलक
पूनम के इजोश्मया तरेगन देखा देलक
माि छल मधुवन लगाओल कनैल,
की कहू हे दैया।
साप जेना जुटी के काश्ट गेल चुिल,
की कहू हे दैया।
(ध्यान देल जाऊ:-एश्व रचनाक उदेश्य मनोरंजन मात। अंधश्वशास सँ कोनो संबंध नश्व। ई चश्मल जुटीकाडक एकटा कारण सौश्माया डाह भ' सकै छै।- राजेश मोहन झा 'गुंजन'॥)

राजीव रंजन झा, (जन्म तिथि: 12/01/1980), गाम+पो: भीठ भगवानपुर, भाया: मधेपुर, जिला : मधुबनी (बिहार), सम्प्रति: उच्च वर्गीय सहायक, भारतीय जीवन बीमा निगम, समस्तीपुर शाखा, समस्तीपुर, बिहार

फगुआ (मुक्तक)

फगुआ केर एहि पावन अवसर
आबू भाल गुलाल मली

आबू पेमक एहि अवसर पर
रंग एक दोसरक गाल मली

आबू सभ केओ मिलिजुलि के
बिसरी आज हृदय केर धधकिन

आबू सभ केओ सजा ली अप्पन
सात रंग सँ उर उपवन

आबू एहि बासंती क्षण मे
बिसरी किछु मन केर विहरन

आबू गरा मिली सभ मिलिजुलि
बिसरि देष जाँ राखल मन

बरसय खुशी अपार अहा पर
ि ूलय श्चातश्च हषवसुमन

सातो रंगक सपना अहा केर
हुअ’ सजीव पश्चापल पश्चाकण

<u>जोगीरा</u>

िकू भैय्याक हाि टूष्ट गेल
सभा लुटायल खाट
दर-दर ठोकर खाइत अष्ठ पप्पू
कुतो गेलय िट...

जोगीरा सारारारा...जोगीरा सारारारा..

मुलायम कठोर भेल
चलल चाइल श्चावपाल
बापश्च केर बाप श्चाकलल
नेताजीक लाल

जोगीरा सारारारा...जोगीरा सारारारा

िकू भैया घर-घर बाटय
पन्द्रह- पन्द्रह लाख
साह बताबय जुमला ओकरा
तइयो नश्च टूटल साख।

जोगीरा सारारारा....जोगीरा सारारारा

अश्चलेश भैया सभा बजाबथि
भाषण करश्चह लुगाइ

बूिवा बच्चा सबहक श्चमाल
भ' गेलीह भौजाइ

जोगीरा साराररा...जोगीरा साराररा...

मालामाल िकू भैया
बाकी सभ कंगाल
दीदी, बुआ, पप्पू कानय
खासश्चि खुजलीवाल

जोगीरा साराररा...जोगीरा साराररा

गजल

आँगुर त’र मे थ्यश सगर छै
अपनश्च लागय लोक दीगर छै

यारी ि्श्च िटक अश्छ सभटा
पूरल भरल पिल असगर छै

भावक भाव नै रहल कश्आञो
मुइल श्अझायल नयन नगर छै

आँगुर पर श्आबाश्च रहल मुदा
हृदयक ई नश्च सरल डगर छै

शत शत मीत देश परदेशक
अपनश्च बीच जेना झगि छै

बैसल ठाम आहार भेटय
लेने काश्ि िन अजगर छै

जश्ब रहल अश्छ जश्ि गाछ केर
लागय डाश्ब सभ मोटगर छै

गजल

जे काजक अछि सुनै छी ततबे
जे भाबय अछि गुनै छी ततबे

केओ कहय किछु, मानी कोना
जतबे रुई धुनै छी ततबे

सपना देखब नहि अनुचित मुदा
जतबे बीया बुनै छी ततबे

आँखि रहैत अछि हरदम सूजल
जतबे काजक मुनै छी ततबे

मजगूती नीबक अछि जरूरी
जतबे चाही खुनै छी ततबे

<u>गजल</u>

मुटी भश्च नेहाल छै
बाकी सभ बेहाल छै

ककरो रोटी नोन नै
केओ मालामाल छै

साश्च रहल श्चाज साध्य श्चकछु
श्चाज ताले बेताल छै

बेश्च रहल श्चाज माय के
घूमय एहन दलाल छै

बेईमानक राज ई
मुहसच सभ मोहाल छै

गयि गलि अश्छ माश्च मे
इचना पोठी जाल छै

छै जतबे धुदिं जे
ततबे गोटी लाल छै

राजीव पश्चात नीच जे
वैह बजाबय गाल छै

गजल

ककरो होअ सरकार यौ
हमरा कोन दरकार यौ

भोटक भीख देल जकरा
भेलय वैह थ्रान्हार यौ

करतै थ्कएक थ्वांता हमर
एकरो इएह बेपार यौ

ठकलक बेर बेर हमरा
धूनै छी हम कपार यौ

कैचा जैह खरचत तकर
करबै भाइ जयकार यौ

सभटा गालि एक साच मे
सभटा एकक्ष भजार यौ

लुटतै ि र वैह करोि, ते
झीटय छी हम हजार यौ

ककरो भोट देब करतै
नेता भि आचार यौ

ककरो पर भरोसा करब
भेलै आइ बेकार यौ

सबहक पार पायब अहा
नेताजीक नञ्झ पार यौ

थारथाट सन बदलताह ई
झुटा केर सरदार यौ

बाबू कहथि एक बेर ओ
कथ्ययौ ि र सतकार यौ

पाचो बरख दशबा कहा
देतय ि र ई यार यौ

ि रो इएह करबे करत
एहने भाइ आचार यौ

हमहूँ आइए ठनलहुँ अछ्छ
टनबै सतश्च हजार यौ

चीन्हू अपान पश्चाश्चाथ्य के
घेर बीच बाजार यौ

अप्पन यैह अधिकार छै
बैसू आब तैयार यौ

चोरिक माल जौ दैछ ओ
कर नञि आब विचार यौ

ओकर बात सुनियौ कनी
कहियौ जैह नेयार यौ

देखू छोट जेकर उदर
मतक दियौक आधार यौ

राखिव अपन संधानि निजाय
जनतंतक हथियाबिहार

<u>गजल</u>

ककरो होअ सरकार यौ
हमरा कोन दरकार यौ

भोटक भीख देल जकरा
भेलय वैह थ्धान्हार   यौ

करतै थ्कएक थ्वंता हमर
एकरो इएह बेपार यौ

ठकलक बेर बेर हमरा
धूनै छी हम कपार यौ

कैचा जैह खरचत तकर
करबै भाइ जयकार यौ

सभटा गलि एक साच मे
सभटा एकथ्ध भजार यौ

लुटतै िर वैह करोि, ते
झीटय छी हम हजार यौ

ककरो भोट देब करतै
नेता भि आचार यौ

ककरो पर भरोसा करब
भेलै आइ बेकार यौ

सबहक पार पायब अहा
नेताजीक नञ्च पार यौ

थ्ारथ्ाट सन बदलताह ई
झुटा केर सरदार यौ

बाबू कहथि एक बेर ओ
कश्चयौ ि र सतकार यौ

पाचो बरख दशब्ा कहा
देतय ि र ई यार यौ

ि रो इएह करबे करत
एहने भाइ आचार यौ

हमहूँ आइए ठनलहुँ अच्छ
टनबै सतश्च हजार यौ

चीन्हू अप्पन पश्चाश्चाश्चा के
घेर बीच बाजार यौ

अपिन यैह अधिकार छै
बैसू आब तैयार यौ

चोरिक माल जौ दैछ ओ
कर नहि आब विचार यौ

ओकर बात सुनियौ कनी
कहियौ जैह नेयार यौ

देखू छोट जेकर उदर
मतक दियौक आधार यौ

राखिव अपन संधानि लिय
जनतंतक हथियार यौ

गजल

अही हृदय के भाबय छी
कहू श्कएक नञ्ञ बाजय छी

सगर राश्ना कछमछ कछमछ
अही याद मे जागय छी

अहीक सपना मे डूब्ब के
मधुर पेम रस पाबय छी

अही लेल अश्छ मन-आसन
श्कएक एतय नञ्ञ राजय छी

कुसुम स्नेह अश्वत्ता क सश्चखन
श्कएक नञ्ञ श्व्रय सजाबय छी

स्म्र -अधरक श्ममनुश्मया आभा
श्कएक नञ्ञ पुश्ना पसारय छी

श्ममत अधर सुधा रस अप्पन
खनो नञ्ञ त छलकाबय छी

चमश्क रहल अश्छ देह गगन
श्माज लटघन के श्छतराबय छी

नञि एतेक आब जुलुम कर
एतेक किएक कनाबय छी

अही सँ हमर सब मनोरि
एतेक किएक सताबय छी

हमर शपि घूरि क' ताकू
कहू पुनि अहा आबय छी

सुनू राधिव शपि मानू
अही मातल हम हारय छी ।

(माता ि म: 122 122 22)

गजल

राजनीश्चा सरहंडी भेल
भोट भाट के मंडी भेल

सगर देश के श्चास्टम आइ
खौश्चा रहल एक हंडी भेल

लोकतंत के सेवक आइ
पश्चात पैघ पाखंडी भेल

जाश्चा पाश्चा मे बाटश्चाहार
मातृभूश्चा के दण्डी भेल

शासन मद मे नेता चूर
संतरी धश्च घमंडी भेल

माश्चाक जनतंतक जे बनल
वैह नम्हर कुकंडी भेल

लूट पाट ताडव अश्छ मचल
'रेप' पीश्चिता चंडी भेल

अन अन के कोश्च मरैछ
राश्चाव श्चाश्चक्त श्चाखंडी भेल ।
(माता ि म: 2121 222 21)

महेश डखरामी

महेश पदावली- अनुरोध

☆

मैथिल मध्य नहि सहजहि एका

धरहि मान फिर तजहि विवेका

☆

लिखह विषाद विशद बखाना

मनहि मनन सुसिव सुजाना

☆

मैथिल पवासी संगम एकठामा

गियहि सुभाष जोगाबहि रामा

☆

कारन कबन सब बैसि विचारी

विगत तूहि अब लेहु सम्हारी

☆

सीता संतहि जाहि सब हृदय सिनेह सुजान

कहेउ महेश हित मैथिली तेजहु सब अभिमान

☆

ज्ञान पुष्प अर गुण पिकूला

माला मध्य मणि मंगल मूला

☆

अन्तर पीति मन सनेहु अनुरागे

तबहि पेम सबहि हिय जागे

☆

मातु एक अर संतति अनेका
सबहि सहोदर शाश्वत एका
☆
धरहुं धीर शत कोटि आहारी
चिंतन मनन अब तुम्हरी बारी
☆

ओम पकाश झा

गजल

गमक' लागलै बसंती हवा
चहक' लागलै बसंती हवा

करेजाक टीस बढ़बै हमर
चमक' लागलै बसंती हवा

चलल झूमि मस्त हाथी जका
बहक' लागलै बसंती हवा

अशानबाण मारलक बीच हृदय
दहक' लागलै बसंती हवा

श्यामि गीत गाब' लागल मधुर
ठहक' लागलै बसंती हवा

मातामि (1-2-2, 1-2) दू बेर पत्येक पाश्वामे।

सत्यनारायण झा

मोनक गीत

तखनहि ओकर याद अबैत अछि ।
मोनक तृष्णा शान्त होयत अछि
लोक वेद सभ नीन्द लैत अछि
पछबा पुरबा वायु चलैत अछि
हृदयक अन्दर स्नेह जगैत अछि
तखनहि ओकर याद अबैत अछि
जखन ओकर नोर देखाइत अछि
आगु पाछू किछु ने सोहाइत अछि
आँखिक भीतर समा जाइत अछि
मरल मोन फिर जागि पड़ैत अछि
तखनहि ओकर याद अबैत अछि
ओकर काया हमर हीया,
दुनू मिलि कए एक बनैत अछि
आध पहर रातिए मे आस दिन
मानस पटल हमर खुलैत अछि
भए विह्वल हीय नाचि उठैत अछि
अपन तन मन लुप्त रहैत अछि
तखनहि ओकर याद अबैत अछि
स्वप्न लोक विचरैत विचरैत,
मोहन मुरली बाजि उठैत अछि
तन कए सुधि रहय ने केखनो

मोनक गीत गबाय लगैत अछि
सुधा पीबि मोन झुमि उठैत अछि
तखनहि ओकर याद अबैत अछि ।

गुिरान जीलानी, -MANUU , दरभंगा

झमटबा गाछ

अपन गामक
झमटबा गाछ
सुखल रहल अछि

खाइत छलयौ
पाकल छलयौ
आ
अगोरबाड़ कर
भोरे म'
दुपहरिया म'
साँझ म'
अनहरिया म'
उजरिया म'
अनहर म'
आ
बरखा म'

तहन िसख सँ
अपन गामक
झमटबा गाछ
हरियर भ' जाएत।

अमरनाि थ्रश, भटथ्रमथ्र

जुथ्रि शीतल-गीत

जुथ्रि शीतलमे सभके जुि थ्रयौन यौ-२
जुथ्रि शीतलमे सभके।।
साल नव मैथ्रिलीक शुभागमन भेलै,
नव-नव अन-पाथ्र आँगन-दलान भेलै,
शीतल सतुआक सतुआथ्र करा थ्रयौ यौ,
जुथ्रि शीतलमे सभके।।
टटका आ बथ्रयाके अजगुत थ्रधान एलै,
िथ्र-िथ्र घाइठक बि-बिी खोटैल गेलै,
आमक थ्रकुलासँ चटनी बनबा थ्रयौन यौ,
जुथ्रि शीतलमे सभके।।
पौखथ्र-इनार गाम-घरक सिाई भेलै,
तुथ्रया-भजारमे िल-कादो लेपाइ भेलै,
पेम चासैत, समारैत, गजाथ्र थ्रयौ यौ,
जुथ्रि शीतलमे सभके।।
बासक दुइ खुटा पर बल्ली लटका थ्रयौ,
तुलसी - चौिमे पाथ्र सल्ला बना थ्रयौ,
देव-थ्रतर केर प्यासके थ्रंझा थ्रयौन यौ,
जुथ्रि शीतलमे सभके जुि थ्रयौन यौ,
जुथ्रि शीतलमे सभके।।
(जुथ्रि शीतलक अनंत शुभकामनाक संग)

<u>रश्मि किरण झा</u>

<u>किछु हाइकू</u>

1)जाड माघ के
दलछिटी बिछाया
रान्हे कसिआया

2)बुड पुरान
हडडी पाजर कापे
माघ डेरावे

3)पैन न छूबौ
ओसरे बैसल रे
माघ जाय दे

4)गसिआया तौर
खिस्सा कहबो तोरा
नुनु ऐते आ

5) बितलै माघ
गधा जन्म छुडैबो
गंगा नहैबो

<u>राम विलास साहु</u>

<u>दिलक दरद</u>

मन पलि हे सखी
पिया अधरतिया हे
मनुआँ घबराएल हमर
पिया खटैए परदेश हे...।

कगकट छगाएल जिनगी
योवन बनल पहाि हे
आँखिक नीन हेराएल
राति काटै छी मन महुिाएल हे...।

बीसम बरस देह सिषाएल
मनमे लगल अछि वाण हे
पिया परदेशिया सपनो ने देखै छी
लगैए तनसँ छुटत पाण हे...।

जहिया एतै हमर पिया
चरण पखारब नैन मिलबै हे
पान-मखानसँ सुआगत करबै
पेमक बतिया सुनेबै हे...।

नयनक नोर केना सुखत

मनक तास कश्चया मेटत हे

श्चलक दरदके के हरत

की थ्यया श्चनु तेजब पाण हे... ।

८

<u>उतम अन</u>

मरआक मान अपरमपार
रौदीक समय अमृत समान
सभके बचबैए परान
कश्राये पाश्रा ऊँच खेत उपजै
कम मेहनत उपजै कठमन
श्रपैत समयमे राखे मान
देखैमे कारी बि गुणकारी
खाइयोमे सुअदगर श्रयरगर
सभ अनमे बेसी यार एकरे
नोन, तेल, श्ररचाइ, चटनी
श्रयौज, कसौनी, अचारक संग
खाइतो मजेदार अनक सुबेदार
अनमे उतम सुरो ने खाए
गरीबक मान मरआ रखैए
सागक संगे खाए शान बढ़बैए
कि-खासी जलोदर रक्तचाप
मधुमेह रोगके भगबैए
पेटक रोगके करैए कात
जे मरआके दुखमे सुश्ररन करैए
तेकर बचबैए इज्जत पाण
मरआके नइए कोनो गुमान
सभके देखैए एक समान।

८

बदलल नजैर

सबहक नजैर अछि बदलल
केकरा कहब के पतिआयत
सगरो बैसल-ए बैमाने-शैतान
जेतए जाइ छी तेतइ ठकाइ छी
सगरे पसरल-ए ठकक ठीकेदार
धरतीसँ असमान धरि
बाट लगैए अन्हारे-अन्हार
के पुछत केना जीबै छी
सबहक सुखल-ए मुँह-गात
खाइ खातिर पेट पीटैए
जान बँचबैले भागल थिरैए
घर छोड़ि परदेश खटैए
समाज टुटल छिड़िया गेल-ए
के सम्हारत एहेन समाजके
बदलल नजैरसँ करैए घात
संकटमे अछि आजुक समाज
बेवस्थाक छै दूटा आँखि
एकटा अकास दोसर पताल
बीचला केकरापर करत विसवास
बदलल नजैरसँ करैए विनाश।

<u>मिथिलाक अपमान</u>

युग-युगसँ प्रसिद्ध नाम अछि
ऐ धरतीपर मिथिलाक नाम
कोन व्याधि लगल जे ई भेल हाल
स्वर्गसन धरती नरक बनल-ए
के करत नव निर्माण, के देत प्राण
भरल धरती मरल पड़ल अछि
बिनु साधन लोक पड़ा रहल-ए
जे मिथिलाके होइए अपमान
धर्मग्रन्थ पुराणमे लिखए
मोटगर अक्षरमे मिथिला महान
सभ किछुसँ समपन रहितो
आइ तेज रहल-ए प्राण
मिथि वंशक राजा जनकके
घर-घरमे जपैए अमर नाम
जनक नन्दनी जानकी नारीमे प्रधान
बड़ दुख सहली सीता जगमे सती महान्
मिथिलाक संस्कृतिके विश्वमे मान
केकर कसुरसँ आइ भेल बदनाम
के करत बलिदान, जे हएत कल्यण
की नव सृजनकता रक्तहीन बनल-ए
जे मिथिलाक अपमान सहि मरि रहल-ए
उत्थानिक बात तँ सभ करैए मुदा
नइ भेल अखन धरि कल्याण
बेर-बेर मिथिला सहि रहल-ए अपमान।

जागु इंसान

जागु-जागु इंसान
सुतलसँ हएत हानि
धरती धधैक रहल-ए
बरैस रहल-ए अग्निवाण
आबि गेल महगी शैतान
नइ करत कियो कल्याण
शिक्षा विधाता दुनू बैमान
जागु-जागु इंसान...।

दूध बिनु बच्चा कनैए
रोगी कानैए इलाजक खातिर
नइए अखनो केकरो धियान
इज्जत-आबर क नै ठेकान
भष्ट तंत षडयंत रचैए
लूट हत्या रेप अपहरणक
उदोग बढ़ल-ए धरती-असमान
जागु-जागु इंसान...।

ठकक कोनो कमी नै अछि
ठकि रहल-ए छाती तानि
धमक नामपर लूट होइए
मानव बनैए दानव समान
जाति-पातिमे टुटल इंसान

भ्रष्टाचारसँ भष्टाचार बेसी
जेना मध्य गेल जगसँ इमान
जागु-जागु इंसान... ।

८

जीवन पि

चल रे बटोही चलैत चल
जीवन पिपर बढ़ैत चल
पाछू नश्च आगू चलैत चल
राह कठीन राही आश्राक बश्रा
अपन पिपर डेगैत चल
श्वनगीक नाह डगमग चलैए
सही श्वसा खेबैत पार चल
चल रे बटोही चलैत चल
जीवन पिपर बढ़ैत चल... ।

जग सुन्दर जीवन दुलश्च
पकृश्चा जीवक जीवन दाता
अपने करनी भेल वेतरणी
मनुखे बनल-ए मनुखक दुखदाता
लोभ, मोह, मद असन्तोषमे िँश्चा
बाट कुबाट पकैि चलैए
नरकक दार खोश्चा रहल-ए
स्वगक बाट कमश्चोगी चलैए
चल रे बटोही चलैत चल
जीवन पिपर बढ़ैत चल... ।

८

चंचल मन

चंचल मन चलैत चल
दुनियाके परखैत चल
सभके सम नजैरसँ देख
समतल करैत बढ़ैत चल।

भेद-भावक विचार छोड़ि
अभावमे भाव भरैत चल
धीर वीर बनि चलैत चल
जानक पकाश पसारैत चल।

पलखैत कम पहचान बेसी
सबहक उपकार करैत चल
दुख-सुख सहैत जगक संग
संजीवनी बुटी बाटैत चल।

सम धारा बनि बहैत चल
राग-विराग खटराग छोड़ि
पेमक बाट पकैि बढ़ैत चल
कमक पूजा करैत चल।

मनक गति सभसँ बेसी
सदिखन पकैि काबू कर
मायासँ हटि कर्मसँ सटि

दुख-सुख संगे सम्हैर चल
चंचल मन चलैत चल
दुश्मायाके परखैत चल।

८

माघक जाि

माघक जाि हाि छुबैए
ि र-ि र कँपैए करेज
श्चठुरल हाि-पएर बेकाम लगैए
शरद भऽ गेल सौसे देह
जेना छुश्च जाएत तनसँ पाण
कोसी-कमलाक बीच चास-बास
झलाि ि बनल टटघर
ओश कुहेससँ डुमल धरती
सौन मेघौन सन पिॅए ि हार
पुरबा-पश्चियाक समाज्य
श्चनु साधन हम छी नचार
खाइले ि टहो ने अश्च
सुतैले अश्च कश्चाये नार-पुआर
सुर जक दशबा सेहो ने होइए
श्चन-राश्चा लगैए एके समान
भसश्चया लकाि ठेगक संगे
बनगोइठाक घूर जरा कऽ
कहुना बँचबै छी पाण
मुदा नै मानत ई माघक जाि
हाि पर पीटत लोहाक ाि
गरीबके नइए कोनो उपाय
बुढ़ लोक जान मालके सताए
खा लेत सुखा अचार-बना

तखने करत जान उबरास
माघक जाि माघक जाि ।

८

<u>हकार</u>

जश्चि गेल बीआ मश्च गेल खेत
सुखल धरती पति‍ी पि‍ल-ए
खश्चहान बनल-ए श्मशान
माि ठोश्क कनैए श्कसान
हडडी-पसलीमे नइए जान
भुखल नेना तेजैए पाण
रक्क भक्क बश्च बैसल-ए
नइ छै अखनो केकरो श्चयान
केना जीब हौ भगवान
काज श्चनु हाि भेल बेकाम
श्चन भेल बाम छुटत पाण
पि‍ल अकाल गरीब भेल कंगाल
सुश्च गेल देह जेना नर कंकाल
कालक पहि‍ नचैए जोगनी
शोश्चात पीब रहल-ए श्चयार
माि‍पर टीटही श्चल्होश्चया उि‍ए
गीद-कौआ मीश्च मास नोचैए
सुखल हडडी कुकुर श्चबबैए
नइए केकरो गरीबसँ सरोकार
श्चश्च श्चधाता बनल लचार
भुखल श्चबश्च दऽ रहल-ए हकार
मश्च रहल-ए चहुश्चस हहाकार
एके श्चरहौने सभ हएब पार
हकार, हकार, हकार...।

कोसीक इश्वाहास

अगम कोसी केर

कोश भश्वक पेट

अिह पाश्च भरल

श्वातामे दराइर िटल

कश्चश्चायासँ धसना श्वारल

सबहक होश उिल

बश्च गेल गामक-गाम

उजरल खेत-पिार खश्वहान

उपजा-बारीक िह नश्च

सगरो पसरल बालुक िर

चर-चाचर टपरामे

पटेर, झौआ, कासक बोन

उपैट गेल गाम-समाज

जे बँचल गेल कोसी पेट

तैयो नश्च भेल सन्तोख

अछैते औरदे लेलक जान

बँचल बेघर बेठेकान

कखनो जाएत सबहक पाण

नइए तेकर कोनो ठेकान

केना भेटत ऐसँ ताण

बेवस्ि अश्च अखनो बेइमान

दू भागमे बँटल समाज

कोसीके नइए कोनो लाज

प्रकास नष्ट होइए हास
केना बनत नव इतिहास
कोसीक इतिहास, कोसीक इतिहास।

८

<u>मुक्ति</u>

हथिया नक्तक झाट
सुतल छी टुटल खाट
मठौत उजरल लटकल सोकबा
ठोपे-ठोप चुबैत पानि...।

रगि-रगि सिआजैए देह
सिहैर उठलौ अकचकाइ
सगरो अन्हरिया राति
सुझए ने कोनो बाट...।

केहेन भेल दिन बाम
झख मारै छी निष्काम
पेटमे अनो ने अछि
दू दिनसँ उपास पलि-ए..।

भीखो जे देने रहए
कुकुर खा गेल बाट
कठजीव बनि जे जीबै छी
मरै नइ छी ई खाटपर...।

दिनक दोख जे चुकल छी
जीबै छी ने मरै छी
अधमर पलि छी खाट

केतेक सहब केतेक कहब दुखक बात...।

हे ईशर ाटिह धरती
दऽ दाए तीन हाि परती
केतेक कठ काश्च मरब
दऽ दाए ऐ तनसँ छुटी...।

मृत्‌यु भूवनमे तन तरपैए
करब भक्श्ा श्चय शक्श्ा
करम-धरम देख-परेख कऽ
जनम-मरणसँ कऽ दाए मुक्श्ा...।

८

ऋृतुराज वसन्त

आएल ऋृतुराज वसन्त
सजि गेल चहुओर धरती
पुष्पकक पराग छिटैक गेल
मदमातल पवन झिलहैर खेले
मधुआएल महुआ महमह करैए
आमक मंजरसँ अमटोकी वौिएल
भन-भन करैए सगरो मधुमाछी
कोइली कुहकैए आशी समान
ि ूलक रस पराग पीब कऽ
भमरा गबैए वसन्तक गान
तीसी, सेरसो, मटरक ि ूलसँ
खेत सजल-ए दुल्हिन समान
हँसि चान नजैर लगबैए
छवि छटा धरतीके देख
अचरजमे पड़ि गेल ऋृतुराज
पछिया पवन मस्ती मारैए
धूल उड़ि चढ़ि गेल आसमान
िॅगुक रंगमे तनमन रंगाएल
बुढ़बा, नवतुरिया ि गुआ गबैए
रंग-अबीरमे सभ नहाएल
सभ साल अबैए नव उमंग लऽ कऽ
हरियर-पीअर मनोरि पूणव
आएल ऋृतुराज वसन्त।

अनमोल थ्मनगी

तूँ अमर ख अजानी अथ्मामानी
थ्कए घुमै छँह डेगे-डेग
ठक बैसल छौ गली-गलीमे
लेतौ पाण कणेमे अमती खेत
बि कथ्कनसँ थ्मलल छौ थ्मनगी
धने देने छौ बनैले दानी
सेवा खाथ्मार जग थ्मलल छौ
थ्कए बैसल छँए बथ्मा नदानी
जान-थ्मजानके अलख जगबैले
कुकमव छोथ्म सदकमव करैले
जग बनतै अदुत कल्याणी
सहए कहै छैि पण्थ्कतजानी
रे मुरख तूँ धीरज धथ्महे
कमवपि सत्यके पकथ्महे
तीनूलोकमे नाम कथ्महे
कमक ि ल उतम थ्मलतौ
नाओं अमर अमृतरस पीब
यमराजो तोरासँ दूरे रहतो
स्वगक बाट खुजले भेटतौ
हथ्म नाम हथ्म कि अनन्ता
जे जपत से अमरत्व पाबत
अममोल थ्मनगी थ्कए ठकाएत
जीवन-मरणसं मुक्थ्मा पाएत।

<u>श्रमिलाक गुमान</u>

कोसी कमलाक रेठान
तैपर बनल बलानक दलान
बालुक बुजा बनल
गाए महीसक बथान
दूध-दहीक पेमौज होइए
छाल्ही घीके क्यो ने पुछैए
डारहीके कुकुरो ने खाइए
अल्हुआ होइए पात जलपान
खालकोरक पातक तरआ पधान
मरआ रखने गरीबक मान
मकइ गहुमक अछि खगरीतान
खा सुतैए ऊँचगर मचान
गामे-गाम चाहक दोकान
खाठुर दूधमे चाह बनैए
थिका पिबए मेबा अष्ठान
माछ-मखान महग भेल-ए
मधु भेल-ए अमृत समान
अपन खेती छोड़ि किसान
परा रहल-ए जान-बेजान
बेवस्था अछि अखनो बेइमान
रावण कंसक राज चलैए
केना भेटत ऐसँ ताण
ई छी श्रमिलाक गुमान।

हम श्कछ नै कहै छी

हम श्कछ नै कहै छी
तैयो कीए हमरे पुछै छी
की कहब कहैत जलाइ छी
सभ जनै छी सभ देखै छी
बजैले कोइ ने चाहै छी
नेता अश्नेतासँ सभ तवाह छी
बेटाक नजैरबाप अपराधी छी
नेता अश्नेता यार बनल-ए
चोर श्सपाहीपर भारी पिल-ए
देशक खजाना अश्धकारी लूटैए
साधनक अभावमे खेत पिल-ए
बेरोजगारीसँ लोक भूखे मरैए
जन्मेसँ देशमे गरीबी भेटल-ए
पुरखा लगसँ शौगात श्मलल-ए
असन्तोषक बोखारमे सभ वौआइए
श्दन-राश्त सुश्त अचरज लगैए
की कहब ई दुखक बात
जहरक घोट पीब मरै छी
हम श्कद नै कहै छी...।

हमर टोल

हमर टोल
सभ दिन करैत रहल किलोल
कोइ ने सुनलक
आइ धरि हाकीम-हुकुम
नै देखक दिन दुखियाके
ईश्‍वार सेहो बेमुखे रहल
के करत हमर सहयोग
बाढ़ि पानिसँ घेराएल
लगैए नै बँचत हमर टोल
छाती पीट-पीट
बहबैए आँखिक नोर
भँसिया गेल माल-जाल
किछु नै बँचल अन-पानि
धिया पुताक के कहैए
बुढ़बो बुढ़िया
उगडुम करैए
नवतुरियासँ जवनका धरि
हिम्मत जुटा कऽ
माल-जालके बँचबैमे भीरल-ए
पुरबा-पछिया झाड़ि-बिहाड़ि
हमरे टोलके सतबैए
जेना सभ दुख सहैले
हमर टोल अगुआएल-ए

नै कोनो रक्त, अनुदान
तखन केना हएत
हमर ओलक उत्[illegible]ान
सभ [illegible] संकल्प लेलौ
अपन जन शमदानसँ
टोलक करब ऊंच नाम
सा [illegible] दुखके भगाएब
टोलके समृद बनाएब
अपन काजसँ आत्म[illegible] हएब।

८

खेतीक काज

ि ाि पीट खेत जोत्ता
बैसाखक रौदमे हाि सुखाए
जेठ मास मर आ रोथ करैए कमठौन
अखारमे धानक बीहैन पाथि
सौन-भादो करैए कादो
बीहैन उपाथि रोपैए धान
आसीन मास धानक कमौनी
कात्तातमे करैए खेतक रखबाथ
अगहन-पुसमेकटनी-दौनी
उपजल अन तैयार करैए
साल भथक उपजाके
भरैए कोठी-बखारी
अपनो खाइए आनोके खीबैए
दाही-रौदी-ले बँचा राखैए
समय पाथ अनदान कऽ
खुशीमनसँ भण्जार करैए
अपन पथशमपर भरोष रथि
नै केकरोसँ आश करैए
चास-बासपर करैए राज
खेतीसँ सबहक पेट भरैए
सभ थदन थायाग शम करैए
देशक बढ़बैए मान-सम्मान
सोथ चलु हे देशक इंसान

खेतीक काज छी सभसँ महान

किसान छी देशक असल सन्तान।

८

मोह-माया

सगरो माह-माया पसरल-ए
मायाक बजार सजल-ए
ठश्राश्राया माया-जाल पसाइर
सभके बान्ह्ल-िँसा रहल-ए
ठामे-ठाम ठश्राश्राया बैस
सभके ठश्क-ठश्क खा रहल-ए
सभके ठश्क...।

सभ सज्जनदुजन नश्र कोइ
साधु सन्त महंि कहबैए
सज्जन साधु सन्त महंि
माया िँश्म घुश्रया रहल-ए
ठो-ठाम ठश्राश्राया बैस
सभके ठश्क-ठश्क खा रहल-ए
सभके ठश्क...।

लोभी सभ श्रारलोभी नै कोइ
इमान बेश्च इंसान कहबैए
कुकमके धरम-करम बुझ्म
मोह-मायामे सभ घेराएल-ए
ठाश्रो-ठाम ठश्राश्राया बैस
सभके ठश्क-ठश्क खा रहल-ए
सभके ठश्क...।

ई जगत केना कऽ चलतै
के नेकी इंसान कहेतै
केना सभके भेटतै ताण
माया देख कछु नोर बहबैए
ठामे-ठाम ठगआआया बैस
ठामे-ठाम ठगआआया बैस
सभके ठक्क-ठक्क खा रहल-ए
सभके ठक्क...।

८

सतघड़या बाट

सात घाट सात बाट
पकैि थकए चलै छी
सात समुर जका थकए
उनैट उथ्अयाइ रहै छी
थ्जनगीक असल बाट छोथ्ड थकए
सतरंगी बथ्अ जीबै छी
सात घाट सात बाट
पकैउ थकए चलै छी।

थ्जनगी केना सथ्ज चलत
से नै बान्थ्ड चलै छी
पाथ्अ वाथ्अ छाथ्अ कऽ
थ्जनगी थकए ने जीबै छी
झूठ-िसक खेल खेला
हाथ्अ नथ्कहाथ्अ करै छी
सात घाट सात बाट
पकैि थकए चलै छी।

सुलभके दुरलभ बुथ्झ-बुथ्झ
उनटे नजैर सथ्दखन रखै छी
पि्य, कुपि्य खा-खा कऽ
नव-नव रोग सृजैत रहै छी
सात घाट सात बाट

पकैि थ्कए चलै छी।

एक बाट एक उदेस
पकैि चलैत जीबैत रहब
मातृभूमिके कमभूमि बुझि
कमक पपिर चलैत बढ़ब
सही जानक ज्योति जरा
जगतके जगमग करैत रहब
सात घाट सात बाट
पकैि थ्कए चलैत रहब।

८

मिथिला महान पावन धाम

मिथिला महान पावन धाम
हमर छी असल पश्चान
धान, पान, मखानक खान
पान बढ़बैए सबहक सम्मान
ि ूल-ि ि के के पुछैए
माछक होइए नीत खान पान
पोखैर, खन्ता डेग-डेगपर
नदी बहैए गामे गाम
जगतमे होइए अमर गुनगान
मिथिला महान पावन धाम।

स्वगबँ सुन्दर जगतक मनोरम
माछ-पाश्च हवा अमृत सन
बाग-बगीचा ि लवाि ीमे
ि ूल-ि ि लुभधल रहैए
बाि ी-झाि ी ि ि लि भरल-ए
सभसँ गुणगर ि ि लताम
थ्रि-चुनमुन चहैक-चहैक
कोइली बजैए मधुरतान
जगतमे अश्छ बि नाम
मिथिला महान पावन धाम।

जड़ी-बुटीसँ भरल ई धरती
औषधीक खान अदौसँ अछि
घरे-घर पैघ-पैघ वैद
बना रहल-ए उत दवाइ
ऋषि मुनीके पञ्चलपपसीन
रहल मिथिलाक पावन भूमि
जैठाम मनुज अछि देव समान
अपन जान बाँटि बाँटि
जगतके करैए कल्याण
मिथिला महान पावन धाम।

सरस्वती, लक्ष्मी, अनपूर्णा देवी
सबरी सीता भारती सन नारी
घर-घर, गामे-गाम बसैए
जानी सन्त श्रमदान भरल-ए
दुनियाके दइए जजन-जजान
जेतए जनता करैए शमदान
घर-दलानमे भरल-ए धान
अतिथिक सेवा देव समान
जगतमेअछि अमर नाम
मिथिला महान पावन धाम।

८

चरण पूजव

चरण पूजव हे जननी जन्मभूमि
सुमन-उमंग चढ़ाएब चरणमे फूल
जनम-करम तँ अही देलौ
पालन-पोषण सपुत बनेलौ
अहाक सेवा बढ़ अनमोल
केना साधाएब हम अहाक कजा
मनक भूल नै करैए कबुल
जान अजान दइ छी अदुत
साए जनम सेवा करब हम
नै करब आगनगीमे कखनयो भूल
चरण पूजव हे जननी जन्मभूमि
सुमन उमंग चढ़ाएब चरणमे फूल।

जननी जन्मभूमि हमर छी दाता
दोसर नै अछि कोनो विधाता
अहा छोड़ि हम केकरा पूजब
सभसँ पैघ माता अनदाता
अहाक ऋृण केना चुकाएब हम
कोनो कसैर रहत हे माता
साए बेर हम सिर झुकाएब
अपन वलिदान दऽ ऋृण चुकाएब
सभ कसूर माफ करब हे माता
हम छी अहाक नदान सन्तान

चरण पूजव हे जननी जन्मभूमि
सुमन उमंग चढ़ाएब चरणमे फूल।

८

<u>भजन</u>

हश्च दशब्न श्चनु
अँश्चखया तरसैए मोर
जन्मेसँ सागरमे सीप
श्चयासल बहबैए नोर
स्वातीक बून लेल श्चभोर
हश्च दशब्न श्चनु
अँश्चखया... ।

हम छी श्चयासल पंकी चकोर
श्चात चंचल मन अश्चचल
स्वातीक बून लेल छी बेकल
हश्च दशब्न लेल
रस्ता तकै छी बश्चा चकोर
हश्च दशब्न श्चनु
अँश्चखया तरसैए मोर... ।

८

<u>धधकैत धरती</u>

धधैक-धधैक धरती
अग्नि-राशि धधकैत
जरि-जरि सुरज
आगिक ज्वाला बनि
धरतीके जरबैत
भीषण गर्मी बढ़ैत
धरतीसँ अम्बर धरि
धधराक धाह लगाए
के बुझाएत धधराके
पाछाँ सुति पतालमे
डरे नुकाएल रहए
अपन दुखके मनुख
अपने सृजन करैए
गाछ वृक्ष काटि-काटि
जंगलके उजारैए
धरतीक स्वर प बिगरल
जन-जीवन बिगैर
वृष्टि अनावृष्टि भेल
रौदी-दाही बाढ़ि बढ़ैए
मनुखक समस्या बढ़ल
बढ़ैत सभ बुझिया रहल
धधकैत धरतीमे
जीव जरि मरि रहल-ए।

अथनपि

केनए जाएब, केनए छुपाएब
केकरा-ले कानब
के हमर नोर पोछत
जेनइ जाइ छी तेनइ
डेग-डेगपर
रावण कंस देखाइए
सुगम राह कोनो ने
सभ राह काटसँ भरल-ए
अथनपि पर चलैत चलैत
मंथल अखादूर लगैए
हाथ िथक जौ उठै छी
कुकुर बहुत भुकैए
मनमे होइए डुथ मरी
कोसी-कमला सुखाएल-ए
गंगासन पथत नी
खन्ता डबरामे नुकाएल-ए
भागैत पहुँचलौ धाम
सभ धाम दानवसँ भरल
अथिला धामक धरती
भेद-कुभेदसँ घेरल
मानपर दानव भारी
ऐ दानवसँ मुथत लेल
जाधैर थनगी अछ

हाश्य केना मानब
जीबैले श्कछु करए पति
अथ्यानपापिर चलए पति।

८

किसान

जिनका सभ कहै छी अनदाता
भाग्य विधाता मतदाता
वएह छी देशक असल बेटा
हुनके अछि टुटल घर
तनपर नै लता कपि
दुखमे सिँल हरिनाम जपैए
जिनकर करैए सभ गुणगान
हुनके समस्या अछि महान्
जिनगी सुखल लकिी सन
संघषवकरैत जाइए श्मशान
तैयो सहैए दोसरत तान
आइ धरि ने कियो सुधि लेलक
आ ने दुखमे नोर पोछलक
मुदा ओ करैए सबहक कल्याण
अपना भूखल सबहक पेट भरैए
सभ दिन करैत रहल उपकार
हुनके दुख अछि पहाि
जेहेन दुदशा बनल छै
जीवन हारि एक दिन
अन नै उपजेतै तखन
सभ लोक भूखले मरतै
ताधैर नै किसानक
दिशा दशा सुधरतै।

ृश्चन भेल बाम

खेतमे ि टल दराइर
आश्चिपर बैसल सोगाएल श्चकसान
छाती पीट बपहाश्च कटैए
केना कटत सालक श्चन राश्चा
की खा जीयब हौ भगवान
खेत की जरल, जरल तकदरीर
सभटा हमर अरमान जरल
श्चयापता भऽ जाएत बीरान
पेट पीट-पीट देत जान
टुटल धर टटल दलान
केना श्चमहत मेहमान
खुटापर गाए महीस हुकरैए
केना बँचाएब ओकर पाण
अखि ा रोटी नून देख
श्चलकौर कनैए साझ श्चहान
मा िपर टीटही टहकैए
बगल बैसल कुकुर कनैए
श्चलाइ छालही ओश्चा खाइए
सरकार उ िबैए रॉकेट यान
गरीबक श्चनगी बनल गुलाम
श्चकसान दइए खेतमे जान
सरकारक कोन ठेकान
कुसीके बुझैए भगवान

केना बँचत श्रमकसानक पाण

श्रमन भेल बाम... ।

८

<u>नशा</u>

जे नशा करत
ओकर थ्मनगी नकर बनत
ओ थ्वन दुरथ्वन नथ्व
जखन बाटीमे भीख मागए पति
देख जगत हँसत
अपन पराया सभ छुटत
थ्मनगी दुखमे डुमल रहत
जे नशा करत।

गाजा पीब कऽ उिएत
भँग खा भकुआएल रहत
दार पीब कऽ दुथ्व भेल
बीिी पीते बुथ्वियाएल
घर उजरल पथ्ववार थ्वगािल
सभ सम्पैत थ्वलैट गेल
तखनो कोनो कुकमवनै बँचल
बाटीमे भीख मागए पति
जे नशा करत।

८

<u>भगवतीक गीत</u>

कोन फूल लोढ़ब हे मैया
कोन फूल चढ़ाएब हे
कोन फूलक माला बनाएब
हमरा नै अछि जजन हे
जगत जननी छी हे मैया
सबहक करै छी पश्चावाल हे
कोन कसुरक चुक हमर छी
गे हमरा दइ छी सजा हे
बेली चमेलीक गजरा बनेलौ
चम्पा फूल पैर पूजन हे
गेना फूलक आसन बनेलौ
अरहुल फूलक माला हे
पान, फूल, फल, मधुर, मेबा
सभ दिन चढ़ाएब पसाद हे
छागर-पाठी बलि नै देब हम
अहिंसाके होइ छै अत्याचार हे
अंजान अवोधके माफ करबै
हम छी अहीक सन्तान हे
सभ जीब पर दश करियौ
हेतै जगतक कल्याण हे
करि करैत अछि विनती हे मैया
सभके दियौ सभ जान हे
जगमग हेतै अन्ध जगतक
दियो एहेन वरदान हे...।

केहेन मिथिला

हमर मिथिला हम छी मैथिल
आइए बदैल गेल काया स्वरूप
के अछि एकर जिम्मेदार
की नै रहल असल रखबार
दोषी बेवस्था बढ़ल समस्या
संकीर्णसोचसँ बँटल समाज
तखैन मँगै छी मिथिला राज्य
की मिथिला मिथ्या छल
जे असल माग करै छी
हमर मिथिला केतए हरा गेल
जे खोजैमे आन्हर बनल छी
के दोषी छैथि के जिम्मेदार
जे केलैन भेद कुभेद
जोगी कहि योगी बनि गेल
कर्मभूमि पाखण्डी भेल
अवसर देख रंगवादी भेल
जाति पातिक राजनीतिक खेलमे
मिथिलामैथिली बदैल गेल
जे मिथिला अदौसँ स्वर्ग छल
तेकर आइएक ई हाल भेल
जाति परजातिक बात करै छी
सभके बुझै छी अखनो अछोप
तैयो ने अछि मनमे सन्तोख

गरीब कमा केतौ गुजर करत
तइले लोक श्कए पाण गमाएत
उठत एक श्द्न साए-साए सबाल
केकर अधिला केहेन स्वर प
श्कनका अलत ऐसँ सुख
भूखले पेट जे करतै काज
से श्कए मागत अधिला राज
नै छैि जनक नै छैि सीता
के भोगतै ई अधिला राज।

८

दीन हीन

दीन-हीन जखने भेलौ
सभ दुख समश्चर पि‍ल
आपैत-श्चपैतमे िँश्चम
सभ नेकरम करैत एलौ
आब की करब नै िुराइए
तखने केलौ हश्चक पुकार
हश्चक मश्चमा अपरमपार
देलैन साहस भेल एहसास
कहलैि कमघर कर श्चसवास
कमबधमबाँ बश्च़ श्चकछु नइए
तेकरे दइ छी हमहूँ सािि
दुखक दश्चया पार लगा
सुख सागरमे दइ छी पहुँचा
दुख-सुखक बीच जीब जीबैए
से रहस्य श्चकया ने जानैए
ऋश्च-मुनी, देवी-देवता
सबहक श्चधाता हश्च अनन्ता
हश्च हरण दुख हरता
दीन-हीन दुख सश्चतो
स्वगवजगतमे सुख पबैए
दुख देश्च जे अश्चार होइए
से नर सुख कश्चयो ने पबैए
कमवपधान श्चश्वक माग
जे अपनाबए वएह महान्।

हम गरीब

हम गरीब
केतेक करीब
सबहक काज
करैत जीबै छी
बहुतो काज
नञि छी बाज
फुरसत पाबि
अपन बीरान
सबहक पुरबै छी
काज लेल
रोब देखा
नजैर बदैल
काज करबैए
पेम-भाव नञि
अपमान भरल
बेवहार करैए
तैयो दुखे-भुखे
जरैत5मरैत
करैत रहलौ
सभ दिन काज
बोल भरोसक
नै भेटल शौगात
बुढ़ापा देह

जखन भेलौ बेकाम
नै श्रकयो पुछैए
नाम ठेकान
आब की करब
घरेमे मरब
जपैत हश्रब नाम
राम-राम।

८

श्करानीक श्करदानी

देखलौ श्करानीक श्करदानी
मरदे नश्च मौथ्याहे बुश्म पलि
जएह कहता वएह नै करता
तीन पेखन रोज घुमौता
तखन कहता परसू आएब
जँ परसू जाएब तँ ओ नै रहता
बेसी घुमेता थ्थिसान करता
तखन कहता खचा करए पतिह
हम कहलौ काज तँ नइए भीरगर
सुश्राते कुकुर जका भूश्म भगौता
डश्च हाश्च जँ पराए लगलौ
तखन बनर भूलश्कयो देता
साहस कश्च कऽ हम डटले रहलौ
जखन श्राश्राक हमरा देखलैन
इशारा दऽ लग बजौलैन
कानमे कनिसकी दैत बजला-
मोटगर रकम खचवकरए पतिह
जँ नै करब खचा-बचा तँ
ऑथ्रिस अबैत जाइत पएर टुश्च जेतह
हाश्च िश्क हमहूँ बजलौ-
मोटगर तँ नश्च दऽ सकब हम
मुदा पातरेसँ चलाउ काज
श्राजश्म बश्म बढ़ौलक हाि

तखने मनमे भेल आश
काज भऽ जाएत हाि-हाि ।

८

ि ूलक लचारी

माश्व पटबैए
श्वकयारी िुलवाि ी
हँश्व ि ूल कहैए-
भेद कुभेद नै हमरा मनमे
सबहक छी पेमी
रंग र प स्वर प श्वान रश्वतो
श्वश्व रहै छी श्वकयारी
नइए रंगभेद, वभेद
केकरोसँ नै छुबाइ छी
एक बेवहार अपन सुवास
सभ श्वश्व बँटैत रहै छी
राजाहुअए आश्वक रंग
सबहक छी हम पुजारी
नश्व कलेश आ ने उपराग
सबहक श्वदलमे करै छी बास
पकृश्वाके सुन्दर बनबै छी
वातावरणके करै छी साि
धरती, पवन, गगनके
गमकाबै छी चार कात
मुदा, मनुख नै करैए
हमरा बीच इंसाि
जाश्वा भेद, वणवभेद रंगभेद
बाश्व करैए श्वसवासघात

सृंगार बुझ्झ सजा दइए
बेचैए हमरा हाट बजार
की कसुर अछ्छ हमर
जे करै छी एहेन अत्याचार
दया रख्ख कर ध्यचार
अहाक बीच हम झूख्क
करै छी ध्यनती, छी लचार
के करत हमर इंसाि?

८

लोकतंतक खून

अवश जनता, दागी पहलवान
जनता लचार, वदनाक सरकार
जंगल राज,अन्धा कानून
बनु घूस नै काज चलैए
न्याय बकाइए पसेरी भाव
इंसानक इमानके के पुछैए
तरजू तौल बेचैए बेमान
भि तंत बीक गेल
जनता लि िमे पि गेल
लोकतंतक खून होइए
हंस सुग्गा भूखे मरैए
गद, कौआ चल्होया
मासु नोच खा रहल-ए
शेर, बाघ खा मोटा गेल
नढ़या खरखर मंती बनल
कुकुर बलाइ रखबा करैए
हत्या अपहरणक उदोग बढ़ल
जनताक खूनसँ देश चलैए
मनगी नकर कंगाल बनल-ए
हंसक हंसाक बीच
आदोषक ािसी पि रहल-ए
राम राज्यक सपना सपने रह गेल
बुद गाधीजीक बाट बसैर गेल।

सपना

सपना कुसपना देख-देख
भममे भरैम भरमैत रहल
अमर अमृत छोड़ि-छोड़ि
विष विषहा लूटैत रहल
भेद-कुभेद वाण-उवाथा देख
हंस कौआ लड़ैत रहल
देश समाज दह भँसियाइए
बिनु पतवार चलैत रहल
मनुख कुमनुखक बीचमे
अन्हारा डीठरा देख रहल-ए
जनताक सुख ऊपरके लूटि-लूटि
धरती अम्बर बीच उड़ैत रहल
देश माल खजाना खाली
कालाधनमे बदैल गेल
महगी मारि जनता सभ
पातर बनि पतराइत रहल
नेता अफसर मोट-मोट बनि
भफगर भारसँ भसिया गेल
भारी भारसँ दो दबि कऽ
चिन्तामे शोगा गेल
भेद-कुभेदक बीच भेदिया
लहू पीब जीबैत रहल
राग, ताल, सुर अलाप अलगे

नाच नरखेल करैत रहल
देशक इज्जत लूटल-लूटल
बीच बजारमे बेचैत रहल
सुतल छेलौ नीरन भेर की
देख सपना नीन टुटल।

८

बश्चया खेती

बि‍ जतनसँ
बश्चया खेतीकेलौ
रौदी आश्च श्चषाएल
खेतमे ि‍टल दाराइर
ि‍सल जश्च उसैर गेल
श्चरत श्चरहकटा
दू-चाश्च कि‍ बेि‍
सुनबे साझ श्चहान
अपजश मािं‍ चढ़ल
ऊपरसँ भूखमरी बढ़ल
मेहनत लागत दुश्च गेल
मँह सुखल पेट धँसल
पश्चवारक श्चन्तामे िँ‍सल
की खाएब केना जीयब
भूखे मरत श्चयापुता
जँ कमाइ-ले जाएब
श्चल्ली, पंजाब, कलकता
श्चयापुता श्चलैट जाएत
के बनत भाग्य श्चधाता
हाश्च ि‍श्चक ठीकौती खेत
लेलौ दस कटा
खेत जोश्च कुइयाँ खुश्च
तरकारीक खेतीकेलौ

रंग-बिरंगक बीया रोपि
दिन-राति मेहनत करैत रहलौ
खोपड़ी बान्हि केलौ रखवारि
मनसम्हि तरकारी उपजल
हाट-बजार बेच भेलौ नेहाल
खा-पीब ठीकौती दऽ
नहि भेल हजारक हजार
पाच कटा खेत कीनि
जोति भरि हर-बरद संगे
बटैया छोड़ि अपन खेती केलौ
चास-बासपर करै छी राज
ने केकरोसँ अछि आश
बटैयो खेती जँ करत रही
पपदेशक काजसँ घरे नीक।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

गामक कचोट

बूढ़ी आ बूढ़क भुरकबा पराती
मस्ती करैत पोखरि आ नहरि मे हेलब
फुलबारी मे कनैल, अड़हुल, चम्पा, फूल लोढ़ब
हाथि सँ माटिक महादेब- हज़ार, लखराम बनाएब
मंदिर, तुलसी चौरा, भगवती घर के निपब आ पूजाक ठाम
शालीगामक पूजा, भगबतीक पातरि, भगवानक भोग
कबडडी, झिझटकी, नुका-चौरी, झिझिया खेलायेब
अन्हरिया राति मे पाछाक झटक के सडे आम बिछब
आम फिसारी साग, अडरनेवा के झखहा
कंसार वाली सँ भुजबैत चाउर, गहूम, चुरा, बदाम
मडुआ के रोटी मे पोठी मछरिया
बकेन महिसक दूध-दही, छाली
नब बियायल महिसक खिरसा
उदासी, सोहर, समदाउन, जोग, खेलोना लोकगीत
चैताबर, बसन्त, बिरहुत, बारहमासा, छौमासा सजनी गीत
महेशबानी, नचारी, ब्राह्मण, भगबती, विष्णुक भजन
हरियर कचोर पोखरिक पानि
निर्मल जल इनारक जे करैत छल पियास केर शात
लह-लह करैत बहैत नदीक अविरल जल
कादो मे भीजल आ कठियाल गृहस्थिक देह आ वस्त्र
मारकीन के नुआ मे पकृति सुनरि बनल गामक युवती
लताम, केरा, कटहर, बरहर, आता, सरीफा, टाभ नेबो

मह-मह गमकैत रंग-थ्ररंगक ि ल
झीगा, इचना, बुआरी, रहु, गैचा, कबइ, पोठी, मारा
थ्रांघी, मागुर, दरही, छही माछ
डोका आ काकोड के तीमन
बाीक पटुआ, झाथ्रिक थ्रालकोरा आ कना पातक तरआ
ज़मीरी नेबो देल ओलक सना
घुरक पाकल सोन्हगर आलू आ अलुआ
तरल कथ्रमाक ि ूल आ खमहार
माय-थ्रथ्रायैन केर थ्रना लोभक अशीवादक सँग नीक बोल
आ ने जाथ्रा की की सब समाप्त भ गेल???
शहर मे आथ्र भ गेल मनुख घथ्रिक सुई पर नचथ्राया
नीक वस्त्र, घर, गाी, A. C. सब सुथ्रधा मे रहैत अथ्र
मुदा जीवन मे एना लगैत छैक जेना नाना तरहक थ्रष ान परसल हो
लेथ्रकन मधुमेह सँ गथ्रात रोगी हो मनुख ?
जे सब वस्तुक उपलब्धता के बादो ओकर उपयोग सँ बंथ्रत हो!!!
ओह गाम! अप्पन गाम! थ्रथ्रलाक गाम!!!

राजेश वमा 'भवाश्चत्य', पटोरी (पछवाश्च टोल), पंचगछ्छया, सहरसा

नवगीत

जाश्च चान से ईद तोहर छौ,
ओश्च चान से हमरो चौरचन!
अही राष्र केर तू पैगम्बर,
अही राष्र केर हम पुजारी।
अही व्योम मे तोर अजान छौ,
अही मे गाओल हम नचारी।
जाश्च बाट ईदगाहक तोहर,
ओश्च बाट मे हमरो तपश्चा!
अही धरा से हमरो श्चनगी,
अही धरा से तोरो श्चनगी।
िश्च िटकर चकर खाश्चर,
श्चए पजारी रोहक श्चनगी।
शोश्चात हमर आ घाम तोहर लय,
रची स्नेह सौहादक अश्चपन!
आ सोची उतिनक मादे,
कृश्च-कमवश्चजानक मादे।
जे अखनो छै उजिल श्चलटल,
श्चनकर श्चछु कल्याणक मादे।
आ श्चली जुश्च के आय शपि ली,
मातृभूश्च श्चत पूणवसमपश्चा!

बृषेश चन्र लाल

३ टा बालगीत

१
सोन चिरैया
नाना, नाना !
देखू नाना ।
सोन चिरैया
चुगए दाना ।।
िुरबिुरवउिए
खूब चकुआए ।
नाचि-नाचि िर
छोट-छोट खाए ।।
ची-ची करैत ई
गबैअ गाना ।
सोन चिरैया
देखियौ नाना ।।

२

चौरचन चौरचन उगल चान
झट दए पूरी दही आन
मरि भाश्क्ष खूब खाएब पूरी
सभ भाई सभओ आङन घूरी
मीठ थ्यर श्कआ आ अश्छ खीर
लाबह जल्दी छूटल धीर
तोबि तरआ आह श्वालकोर
भैया जो तो नश्वअल िर
तैपर देबै मीठगर पान
बौआ कुदए देखबश्ना शान !

३

<u>हमर पोती</u>

हमर पोती
खेलए खेल
बिंब बनल अछि
मीत आ मेल ।
अनुपम दर्पण
आषछल छाया
मिलल रंग एक
मन आ काया ।
किलकैत खुशी
स्पशवआ शोर
देखू दर्पण
स्वयं विभोर ।
विस्मृत नेनपन
प्रस्तुत भेल
हमर पोती जे
खेलए खेल ।

कमलेश पमेन्र, दामोदरपुर बेनीपटी

जरल कपार

एकटा लिका सजल देखश्चयै,
सूट-बूट मे रहै तैयार।
सभ लगन परदेस सँ अबै,
एकहु बेर नश्चि भेलश्चि जोगार।
श्चकन चुनमुन साफ़ दरबाजा,
नबका चादश्चि चौकी पर।
तीन रंगक चाश्चटा कुसी,
महग पदा सँ सजल घर।
आइ घटक आश्चि रहल छै,
चहल-पहल पूरा पश्चिवार।
सभ लगन.............
जे समय श्चधाश्चत छल,
भेल घटक के आब मे लेट।
लिका के मुँह श्चिरी परै,
अहू लगन नश्चि कटा जे घेट।
तखने गाीक श्चपही बजलै,
घरक आगा लागल मारती कार।
सभ लगन.............
पश्चिने ठंडा तखन श्चगजी,
चाह-पान चललै ताबर तोि।
नाम-गाम लिका सँ पूछल,

की सभ चाही से खोलू ठोर।
सतकवबाप झट सँ बजलाह,
बियाह रातुक उठबियौ भार।
सभ लगन परदेस ....
बियाह भेल िइनल मोन भेल गदगद,
लिका लगलक सभके गोर।
आशीवाद संग टाका हाि एलै,
लिका-लिकी के जोिी बेजोर।
मोनेमोन लिका सोचलक,
कहुना लागल बेिपार।
सभ लगन............
सिध्यात लेल कन्यागत लेला परिचय,
आइ रे बा जुलूम भ' गेल।
कोना आब इ बियाह हेतै,
लिका-लिकी के गोत मिल गेल।
देबे-शेबे बियाह ठीक भेल,
अभगला के छै जरल कपार।
अगिलो साल आब बियाह नहि हेतै,
परै छै कठिन अत्याचार।
सभ लगन परदेस सँ अबै,
एकहु बेर नहि भेलै जोगार।

अ?केश कुमार ?श, गाम+पोस्ट-सतघरा (बाबूबरही), मधुबनी

सुतार

बौवा रहल ै सुतार
का? रहल ै अहु?या
अपन' स्?ाा कि पू?ावलय'
?धुआयल आत्मा आ हसैत मुँहस'
दबबैत ै हाि-गोर
छा?ामे नून आ मुँह मे ?ानी धरने
वासना,लोभ,घृणास' भरल'
भ?ाया रहल ै कोनो छाह
उदरपू?ाक पिात
डक?क' अनकर सपना आ शृंगार
?नक' इजोत' मे चा? रहल' अ?
गन्हाइत ?ष। लागल यो?ा
चूसै लय तत्पर अ?

मूतस' भरल स्तन
कंठ मोकने वासनाक' भूत
जैव पश्चियामे मस्त
हँसि रहल छै अपन वीरतापर
दुनियाक सबस पैघ तनाशाहक
सबस दुदात हँसि
गाबि रहल छै अपन वीरताक' गीत
सटे अन्हरा गेल छै स्पारि

<u>श्मथिलाक आह</u>

काश्मि रहल छथि माऽए श्मथिला
हलधर जननी दुःखमे अबला,
श्वन-दुश्वन हालत छश्मि खस्ता
अपने पूत नपाबैन रस्ता|

काश्मि रहल छथि अपन क्यािपर
ओंघरा रहली जिा-पिापर,
आँश्वि नोर लेर मुँह बहकल
रस-रस तुषदह मोनो लहकल|

गोचर डाश्वि पाएर िुलाबैन
माकश्पाडय लह पीठ जराबैन,
श्वन कारा अंतिी छश्मि सटकल
मुँह पीयर पेम श्वन लटकल|

तन र श्वि आई सैकत सन हहरल
वयन मसृण लोल नै ठहरल,
महीपंके आई वाश्व श्वआरी
श्वाशा भेर गाबै छथि नचारी|

चार' मकई जकरा लए खोसल
जकरा उरमे साश्वि क' पोसल,
आई ओ बनल आन केर पटा
एकरा स' श्वाक हािक' लटा|

<u>मौथ्यायाहा   नैइतन</u>

गामपर रश्च जाबत
सुश्ना बाबूजीकS ताना-िजजश्ना
गेजुएशन भS गेलै
दू पाई कमायत सेनै
घुश्मयायल रहैत अश्छ घरमे
जेना सेबने होइ सौश्व
मौथ्यायाहा नैइतन|
दू श्वन भेल शहर ऐना
गामपर कनैत अश्छ माय
पछताई छथ्थ बाबूजी
िनि का कहैत ॄ मSए
बउवा तमशा गेलश्च श्चक.................
नै मा ....
दाई कहै बडड बईमान भS गेलए बउवा
आब तS िनो नै करैछ... .....|

<u>दिल्ली</u>

ई शहर छी,दिल्ली ...
हा ! दिल बलाकऽ शहर
दिल?
दिल जतऽ भरल अछि
सपना आ बचलाहा जगहमे धुवा सँ
ई राजधानी छी धूवाकऽ
जकर शहंशाह ै काबर्नमोनोऑक्साइड|
ई शहर छी हामिे सिगरेट
आ पेटमे धूवाकऽ
अतय नाकसँ निकलैत ऐ किरण होईत
आयुक पश्चाकृश्च
आ उधियाईतऽ चश्मा जायत अछि
ओजोन परततक
इन्तजारमे ऐ शहर कखन खसतऽ ओजोन
आ बढ़ जायत मकानकऽ भाि आर बेश्म
बढ़ जायत जैकेटकऽ बिि गमीमे
रने-बने भगत लोकऽ
अपनाके बचाबै लय सुर जक
पराबैगनी किरण सऽ
तखन एकटा छता बेचव
दू सैय रपैये
कते आक!

कुमार रञ्ज

वषा मेघक संग एलैय

वषा मेघक संग एलैय
तकली काटैत चरखा चललैय
आष करैत थ्वस्तार
पोखैर स खाई के देखी
लागैय छै केहन पोखैर बहार
वषा मेघक संग एलैय

हैर गेल ओ पीठ देखा क
भमर संग केलक ब्वचार
मकि‍ जाल क बुझ्‍ा के
कस्ती डुबेलक माझधार
वषा मेघक संग एलैय

गाम घर उजैि‍ के
ब्बहैर घर बसेलक
माकि तौला ि‍री क
पनघट अलग बनेलक
वषा मेघक संग एलैय

नक्शा चौहदी उल्टा क
छोथ्रि रञ्ज के संग

अपन ि ल तुही बजा
खूब थ्य क भंग
वषा मेघक संग एलैय

दीप जरेलूं रैत म
श्ववस भेल हेरान
दु चैर टा श्मका रैश्ल गेल
बाकी थारल सुनसान
वषा मेघक संग एलैय

नीलमाधव चौधरी

थ्रदेह दारा संचाश्नत "आमंश्नत रचनापर आमंश्नत आलोचकक थ्रप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा थ्रदेहक 218 अंकमे भेल छल जाश्नमे आमंश्नत कथ्र छलाह नीलमाधव चौधरीजी एवं आमंश्नत आलोचक छलाह कैलाश कुमार श्नशजी। कथ्रता आश्न गेल मुदा थ्रप्पणी थ्रकछु कारणवश नश्न आएल। अंततः कथ्रक 56 टा कथ्रता देल जा रहल अश्छ। नीलमाधवजीक कथ्रता यदा-कदा पकाश्नत होइत रहल अश्छ जखन थ्रक लीखै छथ्र बहुत थ्रनसँ। मैथ्रिलीमे तँ एहन रेवाज रहलैक अश्छ जे जँ पथ्रवारमे थ्रकयो साश्नत्यकार भऽ गेल तँ पूरा पथ्रवार अनुश्नत रपे ठप्पा लागल साश्नत्यकार भऽ जाइत अश्छ। ओना एश्न रेवाजके तोिबाक सेहो पयास भेल अश्छ जकर दृिात पो. हथ्रमोहन झा पुत जनादब झा जनसीदन आ राजमोहन झा पुत पो. हथ्रमोहन झा केर उदाहरणमे भेटत। जँ नव उदाहरण देखी तँ ई रेवाज तोिबाक साहस नीलमाधव चौधरी पुत राजकमल चौधरी केलाह अश्छ। आ से अही बातसँ बुझा जाइत अश्छ जे राजकमल चौधरीजीक घर देखबाक बहने संस्मरण श्नखए बला आ राजकमलजीक पोिक संपादन कए कऽ संपादक बनल लोक सभ सेहो नीलमाधवजीके आगू अनबामे असिल भऽ गेला आब से एकर कारण जे हो मुदा एकटा पाठकक तौरपर ई िश्नट हम नीलेमाधवजीके देबश्न जे ओ मात राजकमलजीक पुत हेबाक कारणे अनुश्नत लाभ लेबासँ अपनाके कात कऽ लेलाह। एश्नठाम नीलमाधवजीक 56 टा कथ्रता पस्तुत करैत ईहो हम कहब जे पश्नल बेर एश्न कथ्रक एतेक रास कथ्रता एकै संगे पकाश्नत भऽ रहल अश्छ। एश्नसँ पाठक आ समीक्क दूनूके सुभीता हेतश्न। पाठक आ समीक्क दूनू लग एश्न बारल कथ्रक कथ्रताक पवृश्न ओ पकृश्न एकै बेरमे बुझबामे एतश्न। तँ आउ रसास्पादन करी एश्न कथ्रता सबहक- (पस्तुश्न आशीष अनश्नन्हार)

1

ई उपराग के सुनत?

हम सब कतेक अभागल छी
अश्नतम दशबा तक नश्न कऽ सकलहुँ
ओश्न दादी के जे नश्न जाश्न
कतेक राश्न श्वना नीद बीता देने होयतीह
एतबश्न लेल श्नक हमर नीदमे श्वघ नश्न हो
ई ददवहमरे नश्न
आजुक सभ पोता -पोतीक ददव अश्छ
मुदा कएल की जाय
दादी रहैत छश्नि कोनो कस्बा कोनो गावमे
कोनो अपन -कोनो आनक छावमे
पोता-पोती एडीलेड,श्वस्बेन,वॉश्नांगटन,श्नाटज़रलैड
बडड मुश्नकल घुश्न आयब अपान लैड
कएक टा काज जे छश्नह बडड जररी
नश्न करता तऽ जेतश्न ई नौकरी
केहेन ई मंदा के युग छै से सभ बुझले छश्नह
पुनः कहा आश्न हेतश्न,सभ सुझले छश्नह
बउआ आ बॉबी के पढ़ाई साि भऽ जयतश्नह
श्नाक्क के बात श्नक श्वदाश्नियो बोश्नकयतश्नह
एक तऽ ओनाश्नये एतय श्नम बुझल जाइत छश्नि
जे अबैत रहैत छश्नह सेहो कहएमे धकाइत छश्नि
पता नश्न कश्नया धश्न ई धाक छुटतश्नह
काश ई कारी चमिी श्नुनको उज्जर होइतश्नह

दादी के लेल कोना थ्धाया पुता क जीवन बरबाद करी
बीतल काश्ना लेल आब' बला काश्ना कोना खराब करी
मुदा एकटा संशय जीवए नश्ह दैत छथ्हि
दादी ओहो बनश्वाह से सोथ्वा डर होइत छथ्हि
दादी के तँ सब अपने छलथ्हि देशमे
हम्मर थ्कक होयत नश्ह जाश्वा एश्ह थ्वदेशमे |

2

जँ भेलहुँ पभि

सब तथ्य बात अधिकार के
कतव्य नि धमूल
न्यायक आस तँ
सब करैत अछि
कानून बनल अछि शूल
सत्य न्याय के बाटपर चलब
कखनहुँ कहा रहल आसान
जँ भेलहुँ पभि तँ
ि र समाजक कतऽ कल्याण
सब धमवकेर मूलमे
एक मात परोपकार
एक दोसरसँ जुिल रही
होइत रहय सपना साकार
मुदा एखन वैचारिक
अकाल अन्हारमे
माया पुताक पढ़ाइ धरिक
नून रोटीक जोगारमे
लोक-वेद , गाम घर
दुमाया समाज बसरल छी
उथात अनुथातक वचार त्याग
धमक मागबसँ उतरल छी
एहनमे मनगीक ममव

कोना बाचल रहत

श्चिना सत्य न्यायके

धमवकोना बाचल रहत

3

हम तऽ ठीके छी:सते ?

हम सब एतेक

कोना बदश्ल सकैत छी

जेना बदश्ल गेल छी

कोनो आकषर्ण नश्ह

कोनो पश्तरोध नश्ह

जे जेहन करता

से तेहन भोगता

बडड संतुि,बडड सहज

बाप- भाय मीश्ल कऽ

बश्हन- बेटी संग

नौ वषर्तक

अस्सी सालक संत

सोलह साल कऽ कन्या

मुदा हमर खून

नश्ह खौलैत अश्छ

अपनापर नजर दौिबैत छी

पश्हनेसँ बेसी

सशक्त भऽ गेल छी

बेसी बुश्द्धमान

(समय आ अनुभवके देखैत, ओना तँ)

आ बेसी गुदकर

मुदा पश्हनेसँ बेसी

असंतुि

असुरश्कत

अपमाश्वत

नश्व िरछाइत अश्छ

पगश्वाक पि पर छी

श्क अवनश्वाक पि पर ?

4

घनघोर अन्हरिया

जे बीता रहल
ताहिपर तँ कोने गरे नहि
दिन बीतलके कोना
बजा लैत छी
सजल अछि महल
रंग बिरंगक पकाशसँ
चन्द्रमा अचंभित छथि
मनुक्खक पयाससँ
आँखिक पदा नहि कए
हटा लैत छी
राति घनघोर अन्हरिया
लोक सजा लैत अछि
सुख दुख बिसरि
दीवालीक मजा लैत अछि
दूर कतऽ अहा अपनाक
बझा लैत छी
हएत तँ वएह
जे एखन तक भेलै
सुरज डुबल राति भेल
सुरज उगलै भोर भेलै
राति दिनमे एना कए
बिला दैत छी ।

5

संयोग

ककरासँ पेम
ई कहेन वियोग अछि
हमर आनगीक
ई केहन संयोग अछि
जकरासँ स्नेह करी
ओकरेसँ होइत संहार अछि
जकरासँ रहल विमुख
ओकरेसँ उदार अछि

6

आर कतेक दूर

भऽ सकैत अछि

बाहरक हवा किछ

दूषित होमय

किछ लोक अपन

स्नाविलेल व्यथित होमय

मुदा बिन पयासे की

किछुओ भेटत

जे अछि कि सेहो

बाचल रहत

ऐना जे खिड़की केबाड़

बंद केने रहब

हवा आ रोशनीपर

पैबन्द लगेने रहब

कहूँ कतेक दिन

हम सब सही सकैत छी

आर कतेक दूर तक

रही सकैत छी?

की इच्छा अछि

कतय छी उलझल

जागल छी कि

छी अहा सुतल

कतय जेबाक अछि

कतय जा रहल छी
मोनमे की अछि
की सुना रहल छी
अहा दैत छी जान पोथीके
जे पोथी हम लिखि चुकल छी
संस्कारक पाठ पढ़ा कऽ
हमरा कए अहा मारि रहल छी
हम मैथिल आब किछ नहि बुझब
अप्पन मिथिला लेल हम जुझब
बडड चुप रहलहुँ आब नहिं रहब
बडड दमन सहलहु आब नहिं सहब

7

नव एखना पनपत

अछि तँ सब अंग
सुरक्षित
एना किएक
अपंग भेल छी
भरलहुँ तँ कतेक रंग
जिनगीमे
एना किएक
बेरंग भेल छी
की उचित की बेजाय
कहा किछु सभि
तकैत रहलहुँ
मृग मरीचिका
भगैत रहलहुँ सरपट
आब देश दुनियाक
हाल देखि
एना किएक
दंग भेल छी
नव एखना पनपत
पुरानके झरए पति
झहरि कऽ जेहन
बीया खसत
तेहने ने पौध बनत

अपने रोपल गाछ अछि
तखन एहि छाहसँ
एना किएक
तंग भेल छी

8

नव पश्चभाषा गश्ढ़ सकय

श्मखल तँ जाइत अश्छ
मुदा एहन कहा
जे लोकके
पढ़ब श्मखश्वतइ
जे पढ़ल छै
ताश्वपर दृि श्मा ि य
रहब श्मखश्वतइ
सबके लेल सब
एना श्कए कुकुर बानर
अपने बेगरते अश्छ
भेल श्चश आन्हर
सामने की परोक
लोकक सम्मान कहा
जे भंगश्ब गेल तकर
कतहुँ श्मादान कहा
श्मखल गेल
लोक लेल श्क अपना लेल
नश्ब हमर पश
मुदा ई लेखनी
नश्ब रोश्क सकल
समाजक पतन
श्माश्थ ते जे लोक नश्ब

श्कछुओ पश्ड़ सकल
श्आज स्पााकि पश्अश्आसँ
बाहर नश्ड़ श्आकश्आ सकल
चलू होय पयास जे
बेसीसँ बेसी
लोक पश्ड़ सकय
श्अनगीक सुंदर सन
नव पश्अभाषा गश्ड़ सकय ।

9

मोनक तृष्णा

लगातार चाश्व श्वनसँ
बरसैत पाश्व
अकच्छ भऽ गेल अश्छ मोन
ओना बाश्वसक मनभावन दृश्य
बडड नीक लगैत छैक
मुदा कखन
जखन पेटक भूखसँ
मोन व्यथित नश्व हो
जखन कोनो घावसँ
देह पीथित नश्व हो
जखन नव तरश्वा संग
यौवन उमिल हो
मोनमे उल्लास होमय
जेब भरल हो
मुदा एखन
अश्व अकलबेलामे
जतय नून रोटी जुटेबाक
समस्यामे
पश्वभाक एक-एक टा काठी
जबिए पिेत छैक
जतय रोज बापक बीमारी
मायक िटल साि

बच्चन-बेटीक बीति उम
चार कातसँ घेरने रहैत हो
कोना श्वाखी सकैत छी
अपन पेयसी पतीक
हृदय सागरक अ िह पेम वर्णन
जीवन-आनंद के सूक्ष्म पर्वत दर्शन
जतय ि ूल बनबासँ पश्चने
झहरब जाइत अछि
कोमल-कोमल को िी
वृक बनबासँ पश्चने
सुखा जाइत अछि पेमक गाछ
कोना लीखब सकैत छी
शृंगारक कविता, पेमक गीत
ओना जा िक उन्मुक्त राश्चा
बडड थयगर
देहक पोर पोरमे जागृत करैत अछि
कामोवासनाक आश्चा
जगा दैत अछि
अंतर्मनमे नुकायल
मनलग्गु दैत्यके
मुदा भवनाक लहरब तोश्चि दैत अछि
यि ा कि ि ूर बोध
कापी कलम हा िसँ छुश्च जाइत अछि
यि ा िवकश्चक कल्पनाक सीमा
नाश्चा जाइत अछि

चाहैत जोहैत आँखि
टुकुर टुकुर हमरे देखैत रहल छल
हम चुप- चाप घरसँ बहरा जाइत छी
कोनो जोगार, कोनो व्यवस्थामे
भीजल तीतल अवस्थामे
अपूर्णताक कथा अपूर्णे रहि जाइत अछि
मोन क तृष्णा प्यासल, हारल, थाकल, निराश
मोनक्षमे दबि जाइत अछि ।

10

एखन तक तँ अछि

ई दवाई अछि
कि गरल
ई तँ समय बताएत
मुदा ई अतीत जे
दिन बीतल
नहि लौटि पाएत
एखन तक तँ छी
लाइनमे लागल
डर अछि जे
लाइन नहि भागि जाय
एखन तक तँ अछि
भूख प्यास जागल
डर अछि जे
भूख प्यासे नहि मरि जाय

11

सएह टा बात कोना भऽ सकैत

हम सब बडड नीचा धश्स गेल छी

आ भगवान बडड उपर चश्स गेलाह

नश्ह भजन सुनैत छथि

नश्ह आँश्खक नोर देखैत छथि

ठीके कलयुगमे आश्ब

भगवानो बदश्ल गेलाह ,

ततेक जल्दी वातावरण

श्क पयोजन बदश्ल जाइत अश्छ

उपराग दैत-दैत

गाश्ब, पाश्नामे बदश्ल जाइत अश्छ

तखन कथि लेल एतेक व्यगता

तखन कथिक एतेक पसनता

तँ की हम सभ माश्टक मुरत बश्न

पश्ल रही

बर श्कछु होइक दुश्नयामे

कम्बल ओश्ढ सुतल रही

भगवान दूर नश्ह बडड लग आश्ब गेल छथि

श्रया कलापक श्ल तुरंत दऽ दैत छथि

कहा कोनो एहन नीक कमवछल

जे नीक भाग्य भऽ सकैत

हमरे जे जे नीक लागय

सएह टा बात कोना भऽ सकैत |

12

कते कम अछि

भममे अछि
जिनगी
कि जिनगिये
भम अछि
सब तरि
पसरल अछि
अनविकेर
ठहाकाक गूँज
देख सिआ
सबहक आँखि
मुदा नोराएल अछि
कतेक दिन
बीत गेल
एक छनक
मुस्की लेल
हँसीक लेल
ठीके ई जिनगी
कते कम अछि

13

<u>बजट के भ्यु की</u>

ई सावन के घटा
ई मन भावन छटा
बहुँआ बहुआ डाअ-पात
गाछके डोला रहल
गाछक व्याकुल मोन
मुसलाधार बरसात देखि
जनिके आजमा रहल
डाि भअ डुबल गाछ !
िल-ूलसँ भरल गाछ |
कअयासँ लाल कला
ओअना ठाि अछ
देखलक कतेको पधानमंती
कतेको पधानमंतीक
अनेकानेक बेर बदलल र प
पअअिआजनक र प
कअयो कोनो राज्य मुख्य मुद्दा
तँ कअयो कोनो ,
कअयो साउिक चचा
तँ कअयो अािवनोिवईस्ट
कअयो आक्त कअयो व्यापार
कअयो कलाधन कअयो भिाचार
बात तँ कहलहुँ बडड नीक
छोट मोट नौकरीक लेल इन्टरव्यू की ?

जखन परीक्षा इंटरव्यू लेबहे पति
तखन श्वाक्त के बजट के भ्यु की ?
श्वाक्त आ स्वास्थ्य
ई दुनू सेवा श्वा ि वसरकारी हो
नश्च कोनो जाश्चा धमक भेद
नश्च गरीबी अमीरीक ि कव
नश्च कोसेमे कतहुँ कोनो श्यश्चधता
श्वाक्त व्यापार नश्च
नश्च श्वाक्क व्यापारी हो
नश्च डाक्टर साक्षात यमराज
नश्च रोग कोनो महामारी हो
श्वाक्तक अ ि वपाइ कमाबय नै
बनब संस्कारी हो
मोदी जी एश्च शाश्वत शहरी जीवनमे
चमक दमक मालमेरोक कृश्वाम श्वालसामे
ओझरा गेल अश्छ मनुक्ख
ताश्वपर ई एहन झमठगर बरसात
राजीव गाधीक "करेगे, करेगे"
एखन तक रेश्वाते अश्छ
ई आशासनक
हश्वयरी तँ ठीक मुदा
एतेक नश्च जे गश्च जाय
उत्कंठा उत्सवक बीच
देखब कतव्य मयादा
नश्च श्वसश्च जाय |

14

दीपसँ अन्हार

दीपसँ दीप
नेसल जा सकैत अछि
दीपसँ अन्हार
मिटाओल जा सकैत अछि
दीपसँ इजोत
आनल जा सकैत अछि
मुदा ई अन्हारसँ
दीप जिबाक कोशिश
ई अन्हारसँ अन्हार
भगेबाक कोशिश
एहि धुआँमे तँ
दीवालीक इजोतो बेकार
दीया तँ नेसलहुँ
आँखि खुलबा लय कहा तैयार |
मोनमे जोशे नहि
सजल अछि घर संसार
जेबमे विदी नहि
विदा भेलहुँ हाट बाजार
बिना युदे सीमापर
नित्य शहीद होइत जवान
हवामे पदूषण
मुश्किल अछि बचनाय पाण |

15

नहि रहल हँसबा, कनबाक समय

कखनिया खुशीक हँसल रही
नहि याद अछि
खूब जोर दैत छी दिमागपर
कहा याद अबैत अछि
कोनो खुशीक बात
भेले नहि हो, से तँ नहि
सवा करोड़ लोकक देश
तीन सौ पैसठ दिनमे
तीन सएसँ बेसि पाबनि-तिहार
समाज परिवार सेहो कम झमटगर नहि
राष्ट्रीय कि सामाजिक कि व्यवसायिक
कतेक तरहक मनमोहक कार्यक्रम
कतेक ब्याह दान, जन्मदिनक सुअवसर
कहा खुशीक हँसि पयलहुँ
मोनमे ई विचार चलिते छल कि
तखने मोनमे नव पश उठल
खुशीक कानल कखनिया रही
कएक टा एहेन घटना भेल जे
हृदयके अत्यधिक चोट देलक
जुआन, बच्चा, हित-परिचितक मृत्यु
देखबा, भोगबा लेल विवश भेलहुँ
रोज सीमापर जवान तँ

खेत देखि किसान
शहीद होइत देखि सुखि
मोन आिश्वात भेल
दू-चारि बूँद नोरो टपकल
खुशि कऽ कानि कहा सकलहुँ
बुझाइए आब नहि रहल
हँसबा, कनबाक समय
आब नहि रहल कोनो बातक
हर्षविषाद, चिंता कि विसमय

16

मोन छोट कऽ दैत अछि

जहिना जहिना रंग

चढ़ैत छै

तहिना तहिना उतरय छै

ई दुनियामे किछु बात जे

जे हियि से झहरय छै

तखन ई रस्ता तँ

अपने चूनल अछि

आब गडल काट तऽ

मा मोन पड़ैत अछि

नहि गाउ फगुआ

नहि कोनो रंग लगाउ

एहि गीत एहि रंगसँ

गामक गमक अबैत अछि

नहि जानि किएक

ई पाबनि तिहार

मोन छोट कऽ दैत अछि

खुशीक एहन सन मौकापर

मोन वेदनासँ भरि दैत अछि

असगरे बुझाइत छी

अछि भरल घर आँगन

आब की हषवविषाद

नहि रंग कोनो एहि आनन

अच्छा बुझल नञि छै कतो खुशी
मुदा छी हम पतीक्षामे
परिणाम तँ बुझल अच्छा
लागल छी परीक्षामे

17

मा किछु नहि बाजल

मोन होइत अछि
पि ा जाइ , भागि जाइ
मुदा कतऽ आ किएक
एहने सन स्थितिमे
मायक कोरासँ भय
कहा किछु रहैत छैक
एखनो याद अछि
एक-एक शब्द
एहिना बाप भागैत भागैत
चलि आये गेलखुन
तहूँ भागि जेबह तँ भागि जा
हमर की
जकर देहपर रहबय
थापयाक दिऐ देत
याद अबैत अछि
कहियो माक जेवर लऽ कऽ
भागि गेल छलहुँ बम्बई
मुदा नहि साहस भेल
देखबतअइ
कोनो सोनारके
पाते भेने लौटि कऽ आबि गेल रही
मा किछ नहि बाजल

नञि तमसायल

नञि कनिआयो आँखि नोरेलै

दुनिआयाक सातम आ ियबाँ

कम नञि

मा हमर एहने छल |

18

गाम गाम थिक

भारतक कोनो गाम हो
एक दिन एहिना पहुँचल गेल रही
गाजियाबादक समीप
रावणक गाम बिशरख आ
राजेश पायलटक गाम वेदपुरा
कम्पलेन अटेन्ट छल
संगमे कम्पनीक इंजीनीयर,
डाइवर, गाडी
शमा जी जतबे कुशल किसान
ततबे कुशल व्यापारी
बात दियने नहि दियबय
क्लेम पचास के
पाचो मुनासिब नहि
शमा जीक मृदुल स्वभाव ,
सत्कार स्वागत देखि
ई तँ आश्चर्यित जे
शमाजीक नुकसान नहि होइन
मुदा अपन पक्षपोष ।
आ कम्पनीक पक्ष पोष ।
सेहो देखनाय जर री छल
अंतत: सब बात ठीके रहल
मुदा जे मूलता: आकर्षित कयलक

ओ छल गामीण समाज
एखनो गामीण समाजमे
पदा अछि पेम अछि
अक्र बोध भने नही होय
मुदा बचल संस्कार अछि
ज खागलि अछि किछुओ तँ
ओ सरकारी संस्था कि
सरकार अछि
चारि पाच घंटाक बीच
जाहि तरहक परिवेश देखलहुँ
गाम घरसँ हजारो मील दूर
अधिले सन कोनो देश देखलहुँ
किछु बात जरूर अजगुत जे
इंजिनियर सभ्हा जीके परिमान नै
कुमार-वार छथि
एतबा राज्यमे ध्यान नै
मौगी सब मुँह तँ झपने छल
मुदा छाती उघार छलैक
व्यवहारमे शालीनता
बोली लटमार छलैक
बहुत किछ अन्तर होइतहुँ
अधिलेक कोनो गाम सन
लाल काकीक अँगना
ढुँआ काकाक मचान सन
कएक बेर कदीमा साबुत कि

कदीमाक फूल
तर आ लेल लऽ गेल छी
याद आबैत छल स्कूल
ई तँ छल उजलि पदेशक
उजलि कोनो गाम
अपन मिथिला तँ स्वागत अछि
ओहिना ने कहाइत अछि
ई मिथिला धाम
तखन बात पहिलुका
आब कहूँ कोना रहत
गाम की शहर अपने नहि
पेट रहैत अछि
पेटक संग कएक टा जुलि
घेट रहैत अछि

19

रहल अछि रौदी-दाही

अन्हार आ इजोत
जरूरी तँ दुनू अछि
जखन जकर पयोजन
तखन से भेटत कोना
रास्ता केर ध्यान केलहुँ
ध्यान केर रास्ता
आब समयानुसार
सुरुज चान उगत कोना
खेत-खरिहान छूटल
कलम बाग लापता
अँगना दलान छूटल
खत्म भेल पोखरि खता
आब हवा पानिके
संरक्षण, शुद्धिकरण चाही
दुनिया तँ ओहिना के ओहिना अछि
सब ठामे रहल अछि रौदी-दाही
तखन एना किएक
एको बेर मुँहपर
मुस्की नहि अबैत अछि
छोट छोट बातपर
लोक कते पैघ पैघ
लड़ि लैत अछि ।

20

मा मने महिषी

जखन जखन
ठेस लगैत अछि
मोन पडैत अछि मा
मा मने महिषी
मा मने मिथिला
मा माने तारा
मा मने शीतला
मा मने गंगा
मोन भेल चंगा
मा के चरणसँ पबैत
आर किछु कहा
मा बिन दुनियामे
सुख कतहुँ कहा ।

21

पैघ-पैघ लक्ष्य अछि

जे कि छल
से तँ रखने गेल
झुटे ि‍सलेबाक
कोशि‍श करैत अछि
कखनहुँ एम्हर
तँ कखनहुँ ओम्हर
टहलेने अछि
अनेरे अजमेबाक
कोशि‍श करैत अछि
जंग लागल छै सता
जजबा छै भेल तन्त्र
चाही पारदर्शि‍ता
डेगे-डेग भरल षडयंत
सब चोर संसदमे
मुलुर-मुलुर तकैत अछि
शाहक शाह जोगि‍ रहल
रहकयो आने ि‍सैत अछि
पैघ लक्ष्य छै
कने कि बरदाश्त कर
ऊँच-नीच छोड़ू
एकताक बात कर
मामला गंभीर छै

आत्मा बुझेबाक
कोशिश करैत अछि

22

नमन कर संस्कृतिक संस्कारके

आजुक नेना नेनपन बिसरल
माय बापसँ रहत छिटकल-छिटकल
वजन बराबर बस्ता उघय
मध्य रात्रि तक तैयो नहि ना उघय
डर मैडमक करेजमे पसरल
नहि रहय जागल नहि रहय सूतल
बंद कर एहन शिक्षाक व्यापारके
नमन कर संसकृतिक संस्कारके

23
ककर दोष?

अन्हरिया रातिक एहन शून्य बेलामे
कियो जन्म लेने छलाह
कारी कृपा निधान कृष्ण
पाछा देखैत छी
बस हमर पदचिन्हक स्वर
कतेक आगू आबि गेल छी
फेर लौटब संभव ?
आगू अछि दुर्गम बाट
हमारा असगरे पार करए पति
एहन गँहीर सागरके
एकटा आमक गाछपर नजर जाइत अछि
आह केहन मधुगंध बरसा रहल छल
पल-छिन लेल मोन भाविबहल भऽ गेल
परन्तु हवाक तीव् झोखासँ खसि पलि
बहुत रास आम मजजर
आह वएह खसल मजजर तँ नहि हम
सते कते दूर अछि पकृति
ना ना नाहि नाहि ?
ककर दोष?
ओकर वाल्यपन के की ई हवाक झोखा के
नहि सोचि पबैत छी हम
हमर दोष की युगक पवाहके ?

24

दीप चाहे कतहुँ जरय

थ्मनगी ककरा कहैछ
थ्मनगीक माने की
लोक उजलि सभ ठामसँ
हमही अहा नञ्ज उजलि छी
मुदा किवअछ्छ
जेना हम सब बसल रही
की तञ्जना आनो आन
बसल छल ?
पञ्जवतन
जीवनक मूल अछ्छ
सामथ्र्यवानक लेल
समय सदैव अनुकूल अछ्छ
मुदा ई सामथ्र्यव
ककरो संग कतेक थ्रदन
बालपन,जुआनी आ वृदावसि
जञ्जना सत्य
तञ्जना धु्वसत्य जे
अञ्जातम सास तक
अप्प भाषा , अप्पन माञ्ज पाञ्जा
अप्प लोक-वेद अपने अछ्छ
हा एतबा जरर जे
थ्यकासक भीषण छद

मानवताके झँपने अछि
होइक सभ अज्ञात पयास जे
मिथिला मैथिली बाचल रहय
इजोत सब तखन हेबाक चाही
दीप चाहे कतहुँ जरय |

25

ओकर जीवन

राति अन्हार अछि
मायाक संचारसँ
सबतरि ई पचार अछि
लोकलाजसँ वंचित
हमर ई व्यापार अछि
लोक जे कहय
हमर जीबाक आधार अछि
नइ चाहैत करैत छी
आत्म पाप
अछि जीवन हमर
बनल अभिशाप
नहि जानि ककर ई
पलि शाप
यैह जीवन अछि
यैह दुख:संताप

26
बीच मुहान छोथि कऽ

आँखि लगले छल
ओ कहलथि
भोर भऽ गेल
नाम सुनतहि भोरक
मोन घोर भऽ गेल
एना कि एक
जे राखि ए राखि
नीक लगैत अछि
बीच मुहान छोथिक
कोन कात
ठीक लगैत अछि
सब तथ्य
पसरि रहल अछि आखि
आ मोम
भेल जा रहल छी
आकाकाक बजार गरम
जेब नरम
र कब कि झूकब
कहा ककरो मंजूर
पाछू लागल आखि अछि
बस उलि
जा रहल छी |

27

नञि अप्पन नञि आन कर

एखन तक तँ
बात, मात
जोिए केर कएल गेल
तखन तँ ई हाल
घरोमे बिलायल छी*
आ तोिब
तँ तोिब की
लोक अपने
टूटल अछि
बीझो केर बाटमे
नञि कतहु बाहण
भूखल अछि
उनटे आमंतण भेल
पराभव छय
छूटीक बात माने
नौकरी ताकब छै
अंश भञि ओञि
योगदानक सम्मान कर
मा मैथिली बसथि हृदयमे
नञि अप्पन नही आन कर
(*दरभंगो, सहरसामे लोक मैथिली नही बजैत अछि)

28

किछु एहिना बीतैत अछि

किएक नहि बुझैत छी
मधुशावणी, पंचमी
किएक नहि बुझैत छी
छोथि किछु लक्ष्मी
किएक नहि डर
बाढि , भूकंपसँ
किएक नहि डर
भय , आतंकसँ
किएक नहि डर
आक धूरिसँ
किएक नहि डर
देवता पितरसँ
किएक तँ हमरा
फुरसति नहि
जिनगीक बबालसँ
जीविका की चकारी
की पारिवारिक जंजालसँ
किछु एहन सन
जिनगीक हिसाब-किताब
व्यर्थे व्यस्त रहू
जबरदस्त तनावग्रस्त रहू
दिन राति एक केने छी

मुदा श्बन ककरो से नेने
नश्च कोनो
महीना बीतैत अश्छ
छोी ि की सूनब
बहुत लोकक श्मनगी
श्कछु एश्वना बीतैत अश्छ ।

29

नञ्च पछाश्चि सकलहुँ श्चान भूखके

खूब बुझैत छी
श्चकएक श्चात श्चन
ब ित जाइत अश्च चपलता ,
श्चकएक नञ्च पूणवभेल
हमर सेहन्ता
कहा कश्चयो खुश्च कऽ
श्चानगीक भार
सम्हाश्च सकलहुँ
श्चानेमे सब स्चप
जश्च कऽ खाक भेल ,
खूजल आँश्चयो कहा
कश्चायो श्चाहाश्च सकलहुँ ।
श्चानगीक असंख्य र प
लोको रंग श्चरंगके
कोनो रंगमे नञ्च
मुदा अपनाके
श्चखाश्च सकलहुँ
जे भेटल से र चल नञ्च
जे र चल से पचल नञ्च
अपने श्चान भूखके
नञ्च पछाश्चि सकलहुँ

30

मा मैथिली अहाके

कोना बिसरब सकैत छी
मा मैथिली अहाके
कतहुँ जे जिकयो भेटैए
अहाके
नहि गेल देखल
छौडा भूखल
भागि एलहुँ परदेश
भेट गेल नमहर झोरा
जे नहि भरैत अछि कहियो
हम गदहा घोडा
मुदा तँइ कि, मा मैथिली
अहाके बिसरब
कतए जाएब फिर कहू मा
जँ फिर हम खसब
हा दुःख अछि जे भेटल हमरा
बाक संस्कार
नहि भेटल रहल बाया पुताके
ओ सुदृढ़ आधार
नहि बुझल रहल अछि ओ
अहाक महिमा उदगार
नहि जानि कएक नहि भेल

अहाक पचार पसार
एक्षु दोषक पायश्चित
कहू मा
कोना की कएल जाय
जे जेना जाश्च मजबूरी
श्वसश्व अहाके बैसल छथि
हुनका घर बजायल जाय |

31

लोक परेशाने टा भेटत

तीव् गश्वासँ
भागल जा रहल अछि समय
नहि पकथि पबैत छी
जीवनक सुर ताल लय
परिवर्तन तँ संसारक
शाशत नियम अछि
ई रकत से तँ संभव नहि
मुदा साकि बीतय
से किए नहि भ रहल अछि
रात अन्हार दिन अन्हार
भोर साझ कहा भऽ रहल अछि
किएक मोनमे बात जे
मात नुकसाने टा भेटत
जम्हरे कदम बढ़ाएब
लोक परेशान टा भेटत
किएक नहि मोनमे आस
जे सभ बिहुँसैत भेटत
किएक नहि ई विशास
जे लोक बाट तकैते भेटत
लोक आमन्त्रण अछि
अथिलाक
पेम सत्कार बचल अछि

मा मैथिली के कृपासँ
लोक लाज बचल अछि
मूल मुद्दा मुदा जे
पलायन रोकब कोना
जे बिसरल छथि कुल-शील
हुनका टोकब कोना
छुटतन्हि कहता
कहू किछु अपराध भेल
जीबि रहल छी
की ई नहि विश्वास भेल
कोना बुझता की कहियन्हि
किएक
नोयडा सन बंजर जमीन
सोन भेल अछि
अविश्रांतक चक्रव्यूहमे फँसि
प्रतिभा मोन भेल अछि

32

मोन परतारि रहल छी

बात एतबे सत
जे सभ झुटे
घूमि रहल अछि
नीक कि बेजाय
जे बुझायल अप्पन
तकरे चूमि रहल छी
मुदा एखन छन
किछ भेल परिवतन
बडड जल्दी बदलि गेल
आन आ अप्पन
कतेक सम्बन्ध लुप्त भेल
कतेक नव ग लि गेल
ओहि लुप्त सम्बन्धके
एखन गढ़ल नव रपसँ
जिनगी सम्हारि रहल छी
हथियार पीअर बातसँ
मोनके परतारि रहल छी |

33

गप्प

अन्हारमे अन्हारक गप्प
हमर अन्हारसँ
हुनकर अन्हार
बेसी घनगर
बेसी भयगर
अन्हारमे होइत अछि
नाना तरहक घटनाक्रम
अन्हारमे होइत अछि
पैघसँ पैघ पराक्रम
एहन उदारता
एहन समानता
कतहुँ नञि
केहनो पुरान गुर
केहनो नव शिष्य
सबहक सामने
एके रंगक दृश्य
सबके एकेटा दुःख
कोना एहि अन्हारमे
मात अपने लेल
अपने टा लेल
इजोत आनल जाय
ईशरसँ श्क सृष्टि सँ

अपन सुरक्ष

मात अपने टा सुरक्ष

मागल जाय

कोनो दश्चाश्च ,कोनो कणव

कोनो भीष्मक अराधनामे

लागल अश्च श्चश

कोनो न कोनो साधनामे

मुदा आब ओ दश्चाश्च श्चक

दानवीर कणवकहा

मानव धमबे श्चशास होय

आब से वणवकहा ?

34

कहैत तँ छलैए ई ध्यश अप्पन

आध्खर ई हाल ध्कएक
ध्यछला ध्कछु समयमे
जध्सना घृध्यात लोकक
संख्या बढ़ल अध्छ
तध्सना नीक लोक
धन पध्साष ाक लोभमे
खराब बनबा लेल बेचैन
भेल छध्थ
िठपन तँ देध्खयौन
जे सबके बुझल बात
पध्रणाम कोनो हाले नीक नध्ह
सेहो ध्यकासक नामपर
नीक भऽ जाइत अध्छ
जाती धमक बात छो ि
सब घर बाटल अध्छ
मध्न्दर-मध्स्जद तँ
चमध्क दमध्क रहल
गीता-कुरान ना ि ल अध्छ
भूकंप तासदीसँ पार पेबाक
कोध्साशमे नेपाल
ओह, ताध्इपर आब ई बबाल
मोन भेल उदेध्सत अध्छ

एहन जान , एहन पगश्चा

कहू कतए केर रश्च गेलहुँ

कहैत तँ छलैए ई श्चश अपान

घरक तँ नश्च अपान रश्च सकलहुँ?

35

भरोसपर जीब्ब लीअ

स्वाद थ्मनगीक
देखू आब बदश्न गेल अछ्छ
माउस छोथ्रि थ्वयौ
आर सोश्चात पीब लीअ
महीना दू महीनामे
एक थ्वन बनत रोटी भात
बाकी थ्वन गोलीक
भरोसपर जीब लीअ
जँ चाही माल मैरो
थ्यजजा बगबक थ्मनगी
तँ बेसी नश्च एतबा कर
मोनके माश्च लीअ
मूँहके सीश्च लीअ

36

पारिपर बसंत

आयल बसंत मुदा
भेल कहा कि केर अंत
थ्छथ्रि आयल डेग डेगपर
ओझ्ना अछ्छि बाधा अनन्त
कोनो बातक असथ्र नझ्र
एहनो कतहुँ भेलैए
पारिपर कहूँ
बसंत एलैए
जान-बोध कुंछ्त
ताक्ष्क रहल छी मेवा
सब तथ्र तकैत छी माके
अछ्छि थ्रसथ्र गेल सेवा
एझ्र हालमे ककरो
संपूणवसुख भेटलैए
पारिपर कहूँ
बसंत कतहुँ एलैए
िूल बनबाक कहा
सेहन्ता बचल अछ्छि
गाछ काथ्ट पगथ्राक सकि बनै
सभक इच्छा बनल अछ्छि
कल्पनाक सागरमे
नव नव कमल िुलाइए

पारिपर कहूँ
बसंत कतहुँ एलैए
अश्छ उपजल मधुबन
बस काट कूस भारी
काल कोठरीमे बंद
गरीबक सोहारी
कहा ओकर चूश्न सँ
एखन धधरा उठलैए
पारिपर कहूँ
कतहुँ बसंत एलैए
चाही बसंत तँ भाय
गाछ ि◌ूल बन पडत
श्वसश्च कुहिश्च टेगारी
मजजरसँ देह भरए पति
ि◌ूलक श्चनगीमे कहूँ
कतहुँ काश्च भेलैए
पारिपर कहूँ
कतहुँ बसंत एलैए

37

कहा ओ मनुक्ख

कछुए दूर तक
जेहन चाहैत अछि
तेहन बाट चुनैत अछि
मुदा कछुए दूर तक
फिर कहा
बाट एक आसमनगी
अपस्यान रहैत अछि
सोन बेचि
मारि खयबा लेल
होइछ विवश
फिर कहा ओ मनुक्ख
कहूँ मनुक्ख रहैत अछि

38

आँचर तर सहेज

मुंडे मुंडे मश्चारश्चाना
श्चन राश्चा आि त भेल दूना
आब आि ते के
भाग्य माश्चा बैसल छी
कोरो तक जाि कऽ
खएबामे नश्च संकोच
हाल सुधरत से
श्चाि य जाश्चा बैसल छी
श्चहारक नामपर
श्चश्चिलाक बद भेल
मैश्चिल सब नेता भेला
लोक करबद भेल
सेरलमे लश्चात बाबूक
छश्च छल महान
छलल गेला अपनेसँ
श्चश्चाक छल श्चधान
मुख्य मन्त्री श्चशाजी
मैश्चिलसँ भरल श्चधान सभा
मधुबनी दरभंगा छुश्च गेल
श्चसश्च गेल लोक सौराठ सभा
तकर बादक तँ ि र पूछू नै
केहेन ने केहेन काड भेल

बकाय लागल पटना स्टेशन

शेतआशा उ िवबाबी हत्याकाड भेल

लक्षात बाबू छोथि

नञ्ज क्कयो देलआ मिथिलापर ध्यान

भोट लेल बस मिथिला पेम

पाग पहब शुर करथि अआयान

मिथिलाके अछ मैथिले बसरल

नञ्ज आनके मिथिलासँ परहेज

बेटे त्यागथि बूि मायके

जे रखलआ आँचर तर सहेज |

39

काजर भरल नयनके देखू

काजर भरल नयनके देखू
एक देखू पूर्णमासीक चन्द्रमा
देखब पीठ पाछु किएयो करय ने आन्दा
कारण ऐखन देशक गरामे लागल छैक
ासीक न्दा
झंडा हिराबैत देशक राजनेता
राष्ट्र-गान गबैत भुखल प्यासल जनता
बुझैत नञि पुरल स्वतंतताक सेहंता
नेताजीक संग तँ देबहे पति
देश समाजक तँ
वएह छथि भाग्य नायंता
तिरंगा जे पतीक अछि स्वाधीनताके
ओकर हरियर आ केसरिया रंग तँ
ओहिना गाढ़ अछि
मुदा उज्जर रंगक आगू
जेना किएयो ठाढ़ अछि
सते गौर करियौ वएह भ ाचार अछि
जतैक दबबैत छी
ततबे बढ़ल जाइए
मौनमे उठैत अछि विचार
देशक लेल करी किछु काज स्वीकार
मुदा धरमक सेवक छी

कर कोना अत्याचार
मुदा आब जंगमे आबय पति
सुतल धरतीके जगाबए पति
दुि दानवक पराजय लेल
उठबए पति कटार
पाबय लेल श्वाज अश्चाकार

40

अपने अपन हंता

सहजतासँ नहि

किएक

किछुओ मोन

स्वीकार करैत अछि

किएक बुझाइए

सबके संग

सब, बस

व्यापार करैत अछि

बात

एक एक टा गंभीर

मुँहपर

गजब केर शान्तता

हृदय ततबे बहीर

अछि बनल

अपने अपन हंता

करत ई कलम की

जँ सामने

तर आबि अछि

शायम तँ सब नीके

कहूँ के

मानए लय तैयार अछि

अ सिठ साल पहिने

किछु एहन सन
संरचना भेल
विदान, भर-जन भेला कात
मूखवलठैतक
वन्दना भेल
कतव्यक मात
बात रहल
अधिकार भेल आपता
के छथि ई अन्वेषक
ई केहेन अभियंता
अप्पन के अपने
संहार करैत अछि
सहजतासँ नहि
किएक
किछुओ मोन
स्वीकार करैत अछि

41

दोसर गाल बढ़ायब

दुःख नञि होइत अछि
जखन कोनो आई ए एस वा
आई पी एस
कोनो बेईमान भऽ देशरोही
नेता-मंतीसँ
ठोकर खाइत अछि
दुःख नञि होइत अछि
जखन कोनो
कर्नल लेफ्टिनेंट
कोनो जवानके शहादत
खा पचा लैत अछि
दुःख नञि होइत अछि
जखन कोनो
देशरोही नेता, कैबिनेट मंती
राष्ट्रपिता गाधीके
गरियबैत अछि
कारण हम सब गाधीके
मोन नञि
राख चाहैत छी
गाधी जीक मृत्यु
आजाद भारतक
पहिल हिंसा छल तँ

शास्त्री जीक मृत्यु
पहिल षडयंत
इन्दिरा तक अबैत अबैत
तँ गाधी जी बस
वोट की नोट लेल
कहा हुनक मागघर
चलबाक भेल पयास
गाधीजीक चश्मा
कियो लऽ सकैत अछि
गाधीजीक चरखा
कियो लऽ सकैत अछि
मुदा गाधीजीके गाल पायब
आसान नहि
एक गाल पर लागल चोट
छनमे बिसरि
दोसर गाल बढ़ायब
आसान नहि।

42

टूश्च चुकल छी

हम सब
टूश्च नश्च रहल छी
टूश्च चुकल छी
वैह टा करैत छी
जे सरकार चाहैत अश्छ
गाम घर दुश्राया समाज
पेम-घृणा, लोक-लाज
लोक वेद टोल पश्चवार
रीश्त श्चवाज पववश्चाहार
सब छूश्च चुकल अश्छ
सता वगवबुझैत अश्छ
हम सब श्चकछ
एहेन बन्हनमे
बश्चह जाइत छी
जे तोश्च नश्च सकैत छी
मोह-माया श्चत-अश्चत
लोक-परलोक वाय-श्चत
छोश्च नश्च सकैत छी
एहेन ई शासन सताक
गुप्त षयिंत श्चक
हम सब आलासी , स्वाि
नपुंसक भेल जा रहल छी

कतहुँ कोनो
पश्चारोधक आवज नञ्
जँ अइछो तँ समवेत नञ्
हजारो ,लाखो , करोड़िक भीड़मे
सब एसकर
आ एसकर तँ वृहस्पश्चायो झूठ |

43

अहा नहि रुकि सकब

नहि जनैत छी अपन अधिकार

नहि मागैत छी हम अहासँ न्याय

बस एतबै पाबिना अछि

हमर दोष बतौने जाऊ

जिनगी बडड छोट होइत छैक

सेहो नहि जानिय

कखन मौत आत्मसात कऽ लेत

किछ बुझल नहि किछ देखल नहि

ओना तँ जीबाक इच्छा

तहिये मरि गेल

जहिया अस्वीकारलक अहाक हृदय

हमर पेमातुर मोनके

मुदा उम्मीद अछि अहा लौटि आयब

समय नहि अछि

किछु छन रुकि कऽ

पाछु मुडि कऽ देखबाक

अहा व्यस्त छी

हमरा संग जिनगी बेकार

नहि करए चाहैत छी

हम बुझैत छी

नहि बुझैत अछि

जिनगीक पिपासा

लोक दुश्आया समाज
हमर अहाक श्ववशता
अहा नश्छ र श्क सकब
मुजरा के तानपर
वेश्याक गानपर
शराबक दुकानपर
अहा लौश्ट आयब
श्अश्विलाक आनपर
एश्छ टूटल मचानपर
ि लान लैत दलानपर
गामक सीमानपर।

44

हमरा चाही इलाज

कहैत अछि युवा राष्ट्रके
जागलि लोकतंत
यौ नेताजी
अहाके चाही काज
हमरा चाही इलाज
बात कहू
बनत तँ बनत कोना
अहाके चाही स्वराज
हमर अछि सबल समाज
बात कहू
आभत तँ आभत कोना
भेल छलहुँ जखन स्वतंत
भेटल छलै जनताके
उतम शिक्षा स्वास्थ्यक
नि:शुल्क सुविधा
जीवन तइयो कठिन छल
छल तखनो दुविधा
मुदा आस्था आ विश्वास
पेम, अपनत्व बनल छल
दूर रहितो लोक गाम-घर
लोक-वेदसँ जुड़ल छल
गामीण की शहरी

शिक्षित लोक
संस्कारी होइत छल
आम जनताके लेल
प्रशिक्षित लोक
सरकारी होइत छल
किछुए दिन बाद मुदा
बजार तेना हावी भऽ गेल
शिक्षा, स्वास्थ्य की
लोकक किनाइ भारी भऽ गेल
सताके रोकबाक चाही
मुदा से कहा भेल
अपने सबहक चरित्रहीनतासँ
सता अपने खेल भऽ गेल

45

यत तत सवत्त

कि होइत छैक
ककरा
आ थ्कए होइत छैक
ककरा
बुझबाक चाही
आ समय ककरा
ककरा बुझा दैत छैक
आदमी आ आदमीमे
एतेक िकवथ्कए
एकटा लूटै छै दुथ्याया
एकटा लुटा दैत छैक
चुप रहैत छी तँ
आत्मा
काथ्या जाइत अछ्छ
थ्कछ बजा गेल तँ
थ्मनगी थ्पपरीत
भऽ जाइत अछ्छ
थ्वन बातेक लोक
बात बना दैत छैक
आब नथ्छ साहस
नथ्छ ओ पैर ख अछ्छ बाचल
यत तत सवत्त

थ्यांताक बछी अछि गालि
हाल ऐहनमे
कोनो इच्छा क्यिा
होइत छैक
नहि भरोस कर
कखनायो
नहि अवरोध कर
कखनायो
अनगीक किछु
एहने सन किा
होइत छैक

46

<u>जुआ कर खट-पट मोन भयाइत अछि</u>

जतैक सोचैत छी मोन ओतबे बौआइत अछि

कलम रुकि जाइत अछि

कखनताक लीक टुटि जाइत अछि

मोनमे उठल भावना कऽ

लहर-गंगा रुकि जाइत अछि

जुआ कर खट-पट मोन भयाइत अछि

कतेक जतनसँ राखल दू पाँति आइ

दूनू पाँति वियोगक दू पोथी बुझाइत अछि

अहाक शृंगारमे छलहुँ कखन लीन हम

ओहि समयके ताकमे राति बीति जाइत अछि

जुआ कर खट-पट मोन भयाइत अछि

आपसक झंझट छल अपनहि सम्हारि लीतहुँ

कोना मोन मानलक सभ छोड़ि चल जाइत छी

छनहिमे तोड़ि मान -मयादाक सभ धनुष

विवेक छोड़ि बिना पूँछ पशु बनि जाइत छी

हमर अशु-पूणवआँखि बाट तकैते रहि जाइत अछि

जुआ कर खट-पट मोन भयाइत अछि

देखू ई जीवन छै सुख दुःख केर संगम

सुखक अनुभूति बिना दुःखके नहि होइत अछि

एना जे मानव दुःखसँ पड़ाइत घूरत

जिनगीक बृहत ज्ञान ओकरा कहा होइत अछि

भीजेबै तखन ना सूखत , सूखल तँ टटाइत अछि

जुआ कर खट-पट मोन भयाइत अछि

47

लोके बदलै

साल बदलल
हाल बदलत
सोचैत तँ
सब साल छी
हम थक बदलब
लोके बदलै
ततबे लेल
बेहाल छी
आयमे आत्य
धँसल रहल छी
डेग डेगपर
फँसल रहल छी
बलि अछि क्लेष
भेटैत अछि उपदेश
सब कहैत अछि
हम की करबै
अपने ओझराएल
महाजाल छी
रामके पढलहुँ
कृष्ण के पढलहुँ
गीता बाइबल
कुरान उलटलहुँ

सबतश्च लीखल
एके भाषा
जीवन श्क पकृश्ना
ईशरक देल
अमूल्य धन
नि करबा लेल
हम सब स्नयं
बनल महाकाल छी

48

ममविबसि गेल छी

रोज किछु ने किछु
हेराइत अछि
रोज किछु ने किछु
भेटैत अछि
जे हेराएल
सेहो नहि अपन
जे भेटल
ओहो नहि अपन
मुदा एहि हेरनाइ
आ भेटनाइमे
जे समय बीतैत अछि
से आतात अपन
मुदा ओहो कतेक अपन
नीक बीतय
एहि से बेसी की चाहब
सहेजब की आ
सहेजि कऽ राखब की
तखन, नहि किआयो नहि
नहि भिआयाल छी ?
नहि हेरायल छी ?
नहि भुआयाल छी ?
कहि कमक पालि

कमवश्चसश्च गेल छी
सास तँ चलैत अछ्छ
जीवनक
ममवश्चसश्च गेल छी
जतेक सहन करब
तकेक कि भोगब
जनता जनादर्न जागू
पश्चारोध पश्चाकार कर
व्यक्ति नश्च व्यक्तिके
जय जयकार कर
इश्चाहास कलंक्कत हैत
जँ आबहुँ मोन रहब
दुश्चाया नश्च पुछत जँ
अपने घरमे गौण रहब
श्चथिला की मैथिल
ताधश्च बचल रहत
जाबत जीबैत रहती
भाषा अप्प मैथिली
एतबा पयास होय जे
मातृभाषाक ज्योश्चा
नश्च कीण होय
हरेक मैथिल नेना बुझय
श्चक होइछ श्चटकला कोइली |

49

एतबे अनुसंधान चाही

छूबि कऽ देखलियौ
ई पारि,पारि रहत
विरह, दुख, चिंता कि
सुख शान्ति सेहंताक
आखर नहि भऽ सकत
आब नहि कोनो अहिल्या
राम अहाक पतीक्षामे
आब नहि कोनो सीताक रहित वनवास कि
अग्नि परीक्षामे
आब नहि एहि दुनियाके
उत्पात-अनुत्पातक जान चाही
कोनो पयते पैसा झहरै
बस एतबे अनुसंधान चाही |

50

आजुक श्चदनचया

आइ श्चखू तँ श्चखू श्चक मोन अश्छ उदास
भोरसँ साझ धश्च रहल अश्छ उपास
भोरे भोर वो कहलश्च मुश्चया परल अश्छ बीमार
देखेबैय नै डॉक्टरसँ करबैय नै कोनो उपचार
मनोहरके सेहो देलकश्च स्कूलसँ श्चकाश्च
पोश्च नश्च छश्चह, जेहो छलश्चह सेहो लेला िश्च
श्चया पुता के नश्च अश्छ अहाके कोनो परवाश्च
मुदा भश्च श्चनमे पीयब दस बेर कऽ चाह
अहाक संग मुश्चकल अश्छ आब हमर श्चवाह
सम्हार अपन घर दार बर कऽ श्चयौ सुडडाह
कहश्चयश्च हुनका जे एतेक जुश्च तमसाऊ अहा
भगवानपर भरोस कऽ भोजन-भात बनाऊ अहा
डॉक्टर साहबके छी हम
तावत चूलापर एक बेर चाय चाि अहा
कहलश्चह ओ, हमरा संग जुश्च कर बकवास
बुझलहुँ चललहुँ खेलेयबा लेल ताश
बडड धमवकेने छलहुँ, जे भेटल अहाक संग
हे भगवान उठा श्चअ पुश्च गेल श्चनगीक सब आस
हम कहश्चयश्चह यािवमुदा
बुझलयश्चह ओ व्यंग्य एकरा
डेहरी पर ठाढ़ भऽ करए लगली झगा
हाल हमर देश्च श्चत सभ मुस्काइत छल

किछु ने बुझाइत छल
आखि आ अपान कहब ककरा
सते हमरा सन लोकक
ई केहेन मजबूरी छैक
एक टा पाय नहि
हजार टा जररी छैक

51

पसरल बादल

देहक ददक्मोन नश्च बुझल
रहल मोहमे डुबल
सश्चखन व्याकुल
सश्चखन उलझल
आर कहा श्चकछ सूझल
अपने करेजके भुश्च-भुश्च खाय
की सीझल की पाकल
नोर नयनके घोश्च घोश्च पीबी
रहल आत्मा प्यासल
एसगर सुतल रही पलंगपर
देखलहु सब श्चकछु भीजल
दूर श्चछटश्चक गेल चान गगनसँ
सब तश्च पसरल बादल

52

टघार

थ्अनवारसँ

टघरल थ्यठारक

टघार

जखन खूनक धार

बुझाए लागय

पडोसीक

आत्मघाती व्यवहारसँ

साकार

जखन अप्पन हार

बुझाय लागय

बजारसँ

कीनल उधारक

हथ्यियार

जखन अप्प कपार

बुझाए लागय

बुझ्झ लीअय

धमवथ्यलुप्त

भऽ रहल अछ्छ

थ्यना धमव

बगदादी थ्यक ओसामा तँ संभव

मुदा असंभव अछ्छ

थ्यवेकानंद थ्यक टैगोर भेटब |

53

ि ह थ्मनगीक

टूटल डंटीक कपमे
राखल दू घोट चाह
नञ्ञ जाञ्ञा कखनसँ
सेरा रहल छल
जेना हमर थ्मनगी
एक घोट चाह
थ्मनगीक ि ह

54

आत्माक हनन

बसात पुरबा बहय
कि पछबा बहय
ई रकि रकि चलय कि
निरंतर चलय
घर हमर अहा तक
पहुँचैत कहा अछि
रोकि लैत अछि
बाटेमे
बिका बिका महल
जाहिमे
इमहरसँ उमहर
घुमरैत रहैत अछि
कहू करब की
लऽ कऽ ई भोर
जे रातुक अन्हारसँ
अछि बेसी कठोर
नहि गाएल जाएत पाती
लागल अछि दाती
बौक बताह बनल
बस टुक टुक तकैत छी
हँसि सिआअय बाउ
आइ देखि हमर स्थिति

हम अहाक भव्यष्य देख्व
काश्मायो नश्च पबैत छी ।
यौ उश्च कऽ ठाि होउ
देश्ववयौ केहन इजोत छै
आश्व रहल अश्छ
केकटा सुरज चान अकास
ई आओत अपने आँगन
अपने श्वश्र लामे
देखब श्वाखत नव इश्वाहास
नव श्वामाण क र प रेखा
अश्छ बश्वा रहल सबहक मोनमे
जे एखन तक बनैत छल बाध बन कोनो
कोनमे
परदेशीक दंश
कतेक श्वदन सहन करत
पेटक ज्वालाक शाश्वा लेल
कतेक श्वदन
आत्माक हनन करत ।

55

शान्ति बनल हाहाकार अछि

पीत तँ सब दिनसँ
स्याहिक पतीक थिक ,
की आक की बेजाय
सब भाग्यक अंक थिक
समयक संग सब किछु
सब दिन बदलैत रहल
रीति-रिवाज,पाप -धमव
समयानुकुल बदलैत रहल
सब दिन देखल गेल
आक-आक गर्न
सब दिन होइत रहला
एकसँ एक महान संत
तखन पाप कोना
एतेक बढ़ि गेल
सत्य चढ़ल फासी
झूठ गदी चढ़ि गेल
अविश्रांतक चक्रव्यूहमे
हताश आदमी
बेहिसाब फँसैत गेल
सुख , संतुष्टि
आ सुरक्षाक आसमे
मौनक शान्ति भसि गेल

सुख कतऽ,सुख कथि के ?
देहके ,पेटके की मोनके
की कथाक सुख की सवकाशक
की धाकक की चमत्कारक
संतुष्टि , ओह
जर रीसँ जर री काज
नष्ट क पबैत छी
कहा छनो भष्ठ लय
अप्पन आकलन करैत छी
सुरक्षाक बात तँ
केनाय आब बेकार अछि
घर बाहर आतंक मचल
शाश्वा बनल हाहाकार अछि |

56

हमरा लेल : हम्मर गाम

गाव आब हमरा लेल
वीरान भऽ गेल
हम्मर गाम हमरा लेल
मश्च गेल
बाबा मुइला भेल सब काज
गामेमे
थ्यता मुइला भेल सब काज
गामेमे
मुदा दादी आ माके नश्च गाम
देखा सकलहुँ
गामक माश्च पाश्चके नश्च
कजवचुका सकलहुँ
नश्च बुझ्झ
सकलहुँ कोना की भेल
मुदा सश्चपहुँ गाम हम्मर
बहुत दूर छूश्च गेल